सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज

भाग–II

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज

भाग—II

संपादक
डॉ प्रभाष कुमार

भव्या पब्लिकेशन
ए—21 ओल्ड भिलेज जसोला
नियर शिव मंदिर, न्यू दिल्ली, पिन—110025

भव्या पब्लिकेशन
ए–21 ओल्ड भिलेज जसोला
नियर शिव मंदिर, न्यू दिल्ली, पिन–110025

मुद्रक : दीपक ऑफसेट, दिल्ली-110093

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

पत्र

दिलीप कुमार राय को

एस. एस. गंगे
5 मार्च, 1933
प्रिय दिलीप,

एक लंबे समय से मैं तुम्हें कोई पत्र नहीं लिख पाया यद्यपि तुम्हारे पत्र निरंतर मुझे मिलते रहे हैं। जनवरी और फरवरी माह के दौरान मैं सरकार की प्रताड़ना के कारण अंतहीन मानसिक यातना का शिकार रहा हूं और अंत तक आश्वस्त नहीं हो पाया था कि उपचार के लिए मैं यूरोप जा भी पाऊंगा या नहीं। सरकार की प्रताडित करने वाली नीतियों के कारण मेरा अपने माता-पिता एवं मित्रों से मिल पाना भी संभव नहीं हो पाया। केवल कुछ निकट के रिश्तेदार ही जबलपुर जेल में मुझसे मिलने की अनुमति पा सके। मेरे कई मित्र मुझसे मिलने दूरदराज के इलाकों से बंबई आए थे किंतु उन्हें भी निराश ही वापिस लौटना पडा। जहाज तक मुझे ले जाने वाले पुलिस अधिकारी तक मुझे शिकारी कुत्तों की तरह घेरे रहे, जब तक कि जहाज बंदरगाह से रवाना नहीं हो गया। बंबई से प्रस्थान करने तक के क्षणों में यंत्रणा ने मुझे बहुत कष्ट पहुंचाया।

यद्यपि, मेरे विचार में, इन क्षुद्र बातों का वर्णन कर मुझे तुम्हें चिंतित नहीं करना चाहिए। मेरी गिरफ्तारी के दौरान, तुम्हें जो मेरी चिंता रही उसके बारे में जानकर अच्छा लगा। फिर यह बात अप्रत्याशित भी थी, क्योंकि तुम तो विश्वमोह त्यागकर योग ले चुके हो। प्रिय दिलीप, सच तो यह है कि योग और अध्यात्म से परे मेरे प्रति तुम्हारी मानवीय संवेदना ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। क्योंकि तुमसे, जिससे सभी सांसारिक बातों और अपने सांसरिक मित्रों को भूल जाने की अपेक्षा थी मेरे जैसे व्यक्ति के लिए इतना चिंतन कल्पना से परे की बात है।

तुमने अपने किसी पत्र में शिव या ऐसे ही किसी विषय के संबंध में मुझसे प्रश्न किया था। सच तो यह है कि, शिव, काली और कृष्ण के प्रति अपने प्रेम के कारण मैं एक विभक्त व्यक्तित्व हूं। यद्यपि मूलतः ये तीनों एक ही हैं, किंतु व्यक्ति को एक की अपेक्षा दूसरा प्रतीक अधिक प्रिय हो सकता है। मेरे स्वयं के अनुभव के आधार पर मेरी मनोदशा परिवर्तित होती रहती है और वर्तमान मनोदशा के अनुसार मैं शिव, काली और कृष्ण तीनों रूपों में से किसी एक का चुनाव करता हूं। इन तीनों में से फिर शिव और शक्ति का संघर्ष है। शिव एक योगी होने के कारण मुझे आकर्षित करते हैं तो काली मां होने के नाते मुझे सम्मोहित करती है। तुम तो जानते ही हो कि पिछले दिनों (अर्थात पिछले चार-पांच वर्ष से) से मैं मंत्र शक्ति होती है, इससे पहले मेरी दृष्टि तार्किक थी और मैं मानता था कि मंत्र केवल प्रतीक मात्र हैं जो ध्यान में सहायक होते है। किंतु

तंत्रशास्त्र पढने के बाद मुझे विश्वास हुआ कि कुछ मंत्रों में शक्ति अंतर्निहित होती है और कुछ विशिष्ट मंत्रों के अनुरूप ही मानसिक संरचना भी होती है। तभी से मैं इस खोज में हूं कि मेरी मानसिक संरचना किस मंत्र के योग्य है और मैं किस मंत्र को सही रूप में अपना सकता हूं। किंतु अभी तक मैं इसमें असफल रहा हूं क्योंकि मेरी मानसिकता परिवर्तित होती रहती है और मैं कभी शैव, कभी शक्ति और कभी वैष्णव बन जाता हूं। मेरे विचार में ऐसी दश में ही हमें गुरू की आवश्यकता रहती है क्योंकि सच्चा गुरू हमसे अधिक हमें पहचानता है। वहीं हमें तत्काल बता सकता है कि हमें किस मंत्र को अपनाना चाहिए और पूजा की किस विधि का अनुपालन करना चाहिए।

अब पुनः इहलोक में वापिस आता हूं। कल मैं वेनिस पहुंच जाऊंगा। वहां से विएना के लिए प्रस्थान करूंगा जहां चिकित्सकों से परामर्श करूंगा। उसके पश्चात शायद किसी सैनिटोरियम में जाऊंगा।

सईद बंदरगाह तक की यात्रा बहुत सुखद रही क्योंकि समुद्र बिल्कुल शांत था। सईद बंदरगाह के पार करते ही खराब मौसम से सामना हुआ। मेरी परेशानियां (पेट दर्द आदि) अभी भी ज्यों की त्यों बनी हैं फिर भी पहले की अपेक्षा बेहतर अनुभव कर रहा हूं। सईद बंदरगाह तक पहुंचने से पहले तो मैं निशचित रूप में ही बेहतर अनुभव कर रहा था, किंतु मध्यसागर के खराब मौसम ने मुझे काफी कष्ट पहुंचाया।

मैं यहीं समाप्त करता हूं क्योंकि लहरों के कारण डगमगाते जहाज में लिख पाना काफी कठिन हो रह है।

प्रेम सहित,

तुम्हारा अपना
सुभाष

कांतिलाल पारीख को,

होटल रायल डैनियेली
वेनेजिया
7 मार्च, 1933

मेरे प्रिय कांतिलाल,

मैं कल दोपहर यहां पहुंच गया था। जहाज से एक मोटरबोट में हम यहां होटल में पहुंचे। जेटी में मुझे मेरा भतीजा (शरत बाबू का पुत्र) मिला जो पिछले डेढ़ वर्ष से म्यूनिख में अध्ययन कर रहा है।

कल से ही मौसम धुंधला और बरसाती बता हुआ है और अभी तक हम इटली का सूर्यास्त नहीं देख पाए हैं। इस बार मैं वेनिस और यहां की कला देख नहीं पाऊंगा और यह सब मुझे स्वास्थ्य लाभ होने तक स्थगित ही रखना पड़ेगा।

तुम्हारा 27 फरवरी का पत्र मुझे आज प्रातः मिला।

जैसा कि आप जानते ही है कि वेनिस, नहरों का शहर है। नहरें ही यहां यातायात का मार्ग है और 'नाव' तथा 'गोन्डोलाज' यहां के वाहन और घोड़ागाड़ियां हैं।

तुम्हारे 27 तारीख के पत्र में, जो मुझे आज ही प्राप्त हुआ, अपने श्री अरविंद घोष के लिए कोई फूल आदि नहीं भेजा। न ही कोई प्रेस कटिंग (फ्री प्रेस या अन्य अखबारों से) ही भेजी। मैं भारतीय पत्रों में अत्यधिक रूचि रखता हूं। अखबारों की कटिंग्स आप एयरमेल से भिजवा सकते हो, किंतु कुछ मुख्य भारतीय पत्रों की मानार्थ प्रति मैं लगातार देखना चाहूंगा। कृपया मुझे इस पते पर लिखिए–द्वारा–द अमेरिकम एक्सप्रेस कंपनी, 14–कैरंटनेरिंग, वियेना।

कल मुझे इटली के समाचार–पत्रों के कुछ प्रतिनिधियों को साक्षात्कार देना है। मैं शीघ्र ही आपकों इटली के कुछ अखबार भेजूंगा। कृपया उनको अंग्रेजी में अनुवाद कर भारतीय पत्रों में छपवाने का प्रयास करना। बंबई में इटली के कंस्यूलेट और लॉयड ट्रियेस्टिनों के एजेंट इस में प्रसन्नतापूर्वक आप को सहाता करेंगे।

इटली सरकार के आदेशानुसार लॉड ट्रियेस्टिनों के एजेंट्स ने वेनिस में मेरे जहाज से उतरने पर कुछ विशेष व्यवस्थाएं की है। जहाज में भी उन्होंने मेरा विशेष ध्यान रखा जिसके लिए मैं उनका बहुत आभारी हूं।

आपके पत्रों को प्राप्त करने के पश्चात मैं आपको केबल करने की सोच रहा था किंतु फिर मैंने सोचा कि मुझे आपका टेलिग्राफिक पता मिलने तक इंतजार करना चाहिए। इस बीच मैं आपको एयरमेल अथवा साधारण डाक द्वारा पत्र लिखता रहूंगा।

यात्रा प्रारंभ होने से लेकर आज तक मैंने एसोसिएटेड प्रेस और फ्री प्रेस को कुछ संदेश भेजे हैं। 24, 25, 27 फरवरी और 2 मार्च तथा 6 मार्च को मैंने रेडियो एवं केबल से कुछ संदेश भेजे थे। फ्री प्रेस को मैंने 23 फरवरी और 6 मार्च को संदेश भेजे। कृपया पता करें कि उनका उपयोग हुआ और वे प्रकाशित हुए या नहीं।

पोर्ट सईद में रायटर के प्रतिनिधि ने मेरा साक्षात्कार लिया। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं मिस्त्र जाऊंगा। यदि नहीं तो मेरा रास्ता और लक्ष्य कहां जाने का है। अभी तक किसी अन्य स्थान पर रायटर के प्रतिनिधि ने मुझसे कोई मुलाकात नहीं की। इससे

तुम स्वयं अंदाज लगा सकते हो। कृपया इसी संदर्भ में भविष्य के लिए मेरा मार्गदर्शन करो।

धन के मामले में, मुझे विश्वास है कि आप पूरा प्रयत्न करेंगे।

कृपया जगमोहन को बता दें कि आपके पत्र के साथ उनका पत्र पा मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। मुझे आशा है कि अलग से उन्हें पत्र न लिख पाने के लिए वे बुरा नहीं मानेंगे।

कृपया मुझे निरंतर पत्र लिखते रहें। मेरा विश्वास है कि जब तक डाक्टर मेरे परीक्षण एवं निदान के लिए यहां रखना चाहेंगे तब तक मैं यही रहूंगा, उनके कहने पर ही मैं सैनिटोरियम जाऊंगा।

आशा है वहां सब ठीक–ठाक होगा।

आपका अपना
सुभाष

कांतिलाल पारीख को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
14, कैरंटनेरिंग
वियेना–1
8 मार्च, 1933

प्रिय कांतिलाला,

तुम्हारा 27.2.33 का पत्र वेनिस में मिला था। मैंने वेनिस से ही साधारण डाक द्वारा पत्र का उत्तर दे दिया था। यह पत्र मैं एयरमेल से भेज रहा हूं।

मैंने 24, 25 और 27 फरवरी तथा 2 मार्च को एसोसिएटेड प्रेस को केबल पर संदेश भेजे थे। मैं यह जानने को उत्सुक हूं कि उन्होंने उनका क्या किया।

मैं तुम्हारे टेलिग्राफिक पते के इंतजार में हूं, सईद बंदरगाह पर रायटर का प्रतिनिधि मेरे लक्ष्य स्थान और मार्ग के बारे में पूछताछ करने आया था। अन्य किसी भी स्थान पर रायटर ने मेरे बारे में कोई पूछताछ नहीं की। 6 तारीख को वेनिस में मुझसे इटली के पत्रकारों ने संपर्क किया था। कृपया मुझे बताएं कि मुझे भविष्य में भारतीय प्रेस से क्या व्यवहार करना चाहिए। यदि संभव हो तो मुझे इस प्रकार लिखें।
बोस, द्वारा ट्रैवामैक्स

वियेना,

शेष अगले पत्र में,

तुम्हारा अपना
सुभाष

कांतिलाल पारीख को,

लार्येड ट्रीस्टीनो
द्वारा द अमेरिकन एक्सप्रेस कं0
14–कैरंटनेरिंग
वियेना–1

15 मार्च, 1933

प्रिय कांतिलाल,

तुम्हारा 27 फरवरी का पत्र मिलने के बाद मैंने वियेना से तुम्हें एयरमेल द्वारा और वेनिस से 7 तारीख को साधारण डाक द्वारा पत्र भेजा था।

11 फरवरी को मुझे होटल से हटाकर शहर के फ्यूरेथ सैनिटोरियम में भेज दिया गया। अब मेरी गहन एक्सरे और चिकित्सकीय प्रयोगशाला जांच हो रही है। जांच पूरी होने पर मैं तीन या चार विशेषज्ञों की राय लूंगा और सैनिटोरियम शायद स्विटजरलैंड के सैनिटोरियम में दाखिल होना चाहूंगा।

पता नहीं तुम कुछ पैसा एकत्र कर पाए या नहीं। यदि धन एकत्र हुआ तो कृपया इस पत्र के मिलते ही केबल से मुझे कुछ धन शीघ्र ही भेज दो। यहां अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी का टैलिग्राफिक पता इस प्रकार है–ट्रैवामैक्स, वियेना। यहां विशेष रूप से सैनिटोरियम में रहने का खर्च जितना मैंने सोचा था, उससे बहुत अधिक है। मैं यह पत्र एयरमेल से भेज रहा हूं, ताकि तुम्हें शीघ्र मिल सके।

मैं तुम्हारी राय जानना चाहता हूं कि मुझे फ्री प्रेस अथवा एसोसिएटेड प्रेस में से किसे अपने समाचार भेजने चाहिए। कृपया मुझे अपना टैलिग्राफिक पता तत्काल भेजो।

अभी तक मैंने तुम्हें कोई केबल नहीं भेजा है क्योंकि लंबे पते पर खर्च अधिक आएगा।

तुमने अपने पत्र में लिखा है कि समाचार–पत्रों की कटिंग्स भेज रहे हो किंतु मुझे आज तक कोई कटिंग नहीं मिली है न ही मुझे श्री अरबिंदो घोष की ओर से फूल

आदि ही प्राप्त हुए हैं।

जैसा कि मैं अपने पहले पत्र में भी लिख चुका हूं कि सईद बंदरगाह के अतिरिक्त रायटर ने मेरे बारे में और कहीं कैसी भी पूछताछ नहीं की। मैं फ्री प्रेस और एसोसिएटेड प्रेस दोनों को ही अपने संदेश भेज चुका हूं और यह जानने को उत्सुक हूं कि उन्होंने उनका क्या उपयोग किया। 23 फरवरी को 6 मार्च (वेनिस से) और 8 मार्च को (वियेना से) मैंने फ्री प्रेस को केबल किया था। 24, 25 और 27 फरवरी तथा 2 मार्च को मैंने एसोसिएटेड प्रेस को भी केबल किया था।

यदि तुम कुछ धन एकत्र कर पाए हो तो कृपया केबल द्वारा शीघ्र ही भिजवा दो।

सभी को मेरा प्यार,

तुम्हारा अपना
सुभाष

कांतिलाल पारीख को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं
14—कैरंटनेरिंग
वियेना—1
30.3.33

प्रिय कांतिलाल,

21 तारीख का तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। मुझे 22, 23, और 24 तारीख के फ्री प्रेस जर्नल प्राप्त हुए हैं। कृपया देखो कि मुझे लगातार अखबार और संदर्भ सामग्री प्राप्त होती रहे।

पैसे के बारे में तुमने क्या किया? यदि कुछ एकत्र कर पाए हो तो कृपया अमेरिकन एक्सप्रेस में केबल के जरिए शीघ्र भिजवा दो। यदि ऐसा कर पाना संभव न हो तो बिना किसी झिझक के मुझे साफ—साफ लिखो। ऐसे मामलों में किसी प्रकार की हिचकिचाहट उचित नहीं है। कृपया मुझे अनिश्चय की स्थिति में न रखो; बल्कि मुझे ठीक—ठीक सूचित करो कि क्या मैं तुमसे कोई करूं या नहीं।

जैसे ही तुम स्वस्थ हो जाओ, श्री हैरीमन से मिलो और परिणाम से मुझे भी सूचित करो।

कृपया बंबई एसोसिएट प्रेस के श्री निखिल सेन से कहो कि वे मेरे पत्रों का उत्तर शीघ्र दें। मैं यूरोप में रायटर के प्रतिनिधियों की जानकारी तुमसे चाहता हूं।

कोशिश करो कि प्रत्येक डाक से तुम पत्र–बेशक चंद पंक्तियां ही, लिख सको।

सभी को स्नेह

तुम्हारा

सुभाष

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं
14–कैरंटनेरिंग
वियेना
28.4.33

प्रिय मित्र,

समय–समय पर तुम्हारे पत्र मिले। उत्तर नहीं दे पाया इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूं। मैं बहुत कुछ कहना और लिखना चाहता हूं, किंतु शारीरिक क्षमता इसकी इजाजत नहीं दे रही, वैसे भी कुछ कहने का समय नहीं आया है। यदि मैं अभी कहना शुरू करूं तो क्या तुम ध्यान दे पाओगे?

मेरे जीवन का एक अध्याय समाप्त हो चुका है। दूसरे की शुरूआत करने की कोशिश में हूं, और अब पूरी तरह इस कार्य में व्यस्त हूं। आज मैं समुद्र पार विदेशी भूमि विएना में रह रहा हूं किंतु मेरा तन–मन सब तुम्हारे साथ है। हर क्षण एक ही विचार, एक ही प्रयत्न, एक ही साधना में लगा हूं कि किस प्रकार, किस शक्ति के स्फुरण से किस विधि से यह अर्धजाग्रस्त देश आत्मनिर्भर और विजयी हो पाएगा।

हमारे राष्ट्रीय इतिहास का भी पुराना अध्याय समाप्त हो चुका है। सन 1920 में प्रारंभ हुआ अध्याय समाप्त हो गया है। सत्येन बाबू, मुझ पर विश्वास करें, पुराना समय वापिस नहीं लौटेगा। आज एक नई विधि, एक नए संदेश की कामना हम उनके लिए करते हैं, उसकी खोज हमें अपनी आत्मा में करनी होगी।

जब सन् 1921 में मैंने अपनी आत्मशक्ति के आधार पर सभी सम्मानजनक पदों का त्याग किया था, उसी दिन मैंने अपने जीवन के पुराने अध्याय को भी समाप्त मान लिया था, तब एक मित्र ने मेरे इस व्यवहार पर शंका व्यक्त करते हुए टिप्पणी की थी– "अरे! यह तो राजनैतिक दांव है।"

मैंने दुखी होकर उत्तर दिया था–"भविष्य ही बताएगा।" लोग कुछ भी कहें लेकिन मैं जानता हूं कि समाप्त हुआ अध्याय पुनः नहीं लौटेगा।

आज जो मैंने कदम उठाया है, वहां मैं बिल्कुल अकेला और मित्रविहीन हूं।

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

अपने चारों ओर दृष्टिपात करने पर पाता हूं कि मैं एकांत के रेगिस्तान से घिरा हूं। मैं उस लंबे मार्ग पर चल पड़ा हूं, जिस पर अकेला यात्री यह गीत गाता चलता है–'यदि कोई तुम्हारी पुकार न भी सुने तो भी अकेले चलते रहो।'

लेकिन यह अकेलापन अधिक समय तक टिकने वाला नहीं। जीवन में समृद्धि और पूर्णता पाने के लिए सब कुछ त्याग कर अकेला होना ही पड़ता है। इसी कारण व्यक्ति को अकेलापन महसूस होता है। यदि तुम व्यक्ति निर्माण करना चाहते हो, लौह से भी शक्तिशाली संगठन बनाना चाहे हो तो ऐसी स्थिति में यह अति आवश्यक है कि तुम नितांत एकाकीपन से शुरूआत करो। जहां दाल–रोटी का संघर्ष हो या निजी स्वार्थों का द्वंद्व हो, जहां मानवीयता और दृढ चरित्र का अभाव है वहां विशुद्ध रूप में कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता और वह स्थाई भी नहीं होता। क्रॉमवेल की विजय का राज यही था कि उसने लौह सेना का निर्माण किया था। हमारी लौह सेना कहां है? अभी हम स्वराज्य प्राप्त नहीं कर पाए हैं, क्योंकि हमारे देश में वे व्यक्तित्व कहां है जिन्हें हम वास्तविक व्यक्ति कह सकें, अभी हम उनका निर्माण नहीं कर पाए है, अभी हमारे पास शक्तिशाली सेना नहीं है। जिस शक्ति नहीं है। जिस शक्ति का अभाव है वह हमें पैदा करनी होगी तभी हम विजयी हो पाएंगे अन्यथा नहीं। इसीलिए आज से मैंने नई खोज प्रारंभ कर दी है। क्या कोई मेरे साथ आएगा? यदि वे आएंगे तो मुझे भय है कि, हर कदम पर खतरों और रूकावटों का सामना करना होगा। प्रत्येक चीज का परित्याग कर, व्यक्ति को एकाकी निकल पड़ना होगा और वह भी किसी संसाधन के बिना यहां किसी पुरस्कार या उपहार मिलने की आशा नहीं है। उसने कहा था। 'मैं तुम्हें भूख, प्यास, अभाव, प्रयाण और मृत्यु दूंगा' जिसे ये सब बातें मंजूर हो सही साथ चल सकता है। ऐसे सहयात्री को या तो मृत्यु प्राप्त होगी या फिर स्वतंत्रता और अमरत्व प्राप्त होगा। बंगाल की राजनीति दूषित है। अनंत त्याग एक बार फिर बंगाल के वातावरण को स्पष्ट और साफ कर देगा। कार्य दुष्कर अवश्य है किंतु असंभव नहीं। मुझ पर विश्वास रखें, दो वर्ष के भीतर ही बंगाल में अद्भूत परिवर्तन आएगा। वर्तमान में चल रहे निजी स्वार्थी के झगड़े अधिक समय तक बंगाल की वायु को प्रदूषित नहीं कर पाएंगे। आनेवाली भोर की तैयारियां क्यों न अभी से शुरू कर दी जाएं। यह मेरी सच्ची प्रार्थना और इच्छा है।

आशा है तुम सब लोग पूर्ण स्वस्थ हो। हृदय से प्रेम युक्त!

तुम्हारा अपना
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु, मेयर कलकत्ता को,

11 मई, 1933

महोदय

विएना के लार्ड मेयर (बर्गरमिस्टर) ने कल 10 मई को मुझे राथूस (म्युनिसिपल कार्यालय) में आमंत्रित किया था। आपका पत्र उन्हें दे दिया गया था। मैंने स्वयं भी उन्हें तथा म्युनिसिपल कार्पोरशन को कलकत्ता के मेयर एवं म्युनिसिपल की ओर से शुभकामनाएं दे दी थी। निजी रूप से भी विएना की म्युनिसिपल एडमिनिस्ट्रेशन की तथा समाजवादी सत्ता के अधीन हुई प्रगति की प्रशंसा की।

लार्ड मेयर ने धन्यवाद दिया और कलकत्ता के मेयर तथा म्युनिसिपल कार्पोरेशन को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। वे मुझसे कांग्रेस के कार्पोरेशन में आने के बाद वर्ष 1924 से लेकर आज तक हुई कलकत्ता की प्रगति के बारे में जानने को बहुत उत्सुक थे।

मैंने लार्ड मेयर को कलकत्ता म्युनिसिपल गजट (वार्षिक अंक और हाल ही में प्रकाशित स्वास्थ्य अंक) की दो प्रतियां भेंट की और उन्होंने अत्यधिक प्रसन्नता जाहिर की। मैंने उन्हें बताया कि मैं विएना के म्युनिसिपल प्रशासन का अध्ययन करना चाहता हूं। उन्होंने मुझे भरसक सहायता देने का आश्वासन दिया। उन्होंने मेरे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की और इस बांत पर अपना संतोष व्यक्त किया कि मैं अच्छे चिकित्सकों से परामर्श ले रहा हूं।

मेयर साहब, आप जानते ही हैं कि विएना म्युनिसिपैलिटी का प्रशासन पिछले बारह वर्ष से समाजवादी पार्टी के अधीन है। इन वर्षों में उन्होंने आवास, शिक्षा, चिकित्सा और सामाजिक भलाई जैसे सामान्य कार्यों में पर्याप्त प्रगति की है। इस दौरान उन्होंने लगभग दो लाख लोगों का आवास सुविधा उपलब्ध कराई है और वह भी बिना धन उधार लिए। यही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि भी है। यह सब धन मनोरंजन एवं ऐश्वर्य के सामान पर लगे कर से प्राप्त किया गया।

कुछ आस्ट्रियाई मित्र, जो म्युनिसिपैलिटी से संबद्ध थे, मुझे म्युनिसिपैलिटी द्वारा बनाए गए आवास और वे संस्थाए, जो बच्चों की भलाई और शिक्षा के लिए बनाई गई हैं, दिखाने भी ले गए। जो कुछ मैंने देखा, उससे मैं काफी प्रभावित हुआ। मेरी इच्छा है कि ऐसा ही प्रयास कलकत्ता म्युनिसिपल द्वारी भी किया जाना चाहिए।

मैंने विएना के बर्गरमिस्टर सीट्ज को आपके कार्यों का लेखा–जोखा भी दिया, जो कि वास्तव में एक समाजवादी कार्य ही है। रूस के अलावा विएना म्युनिसिपल, पूरे यूरोप में, अत्याधिक महत्त्वपूर्ण समाजवादी म्युनिसपैलिटी है। यदि कलकत्ता कार्पोरेशन चाहे और उसे प्रकाशित करने का इच्छुक हो तो मैं विएना पर

(भारतीय दृष्टि से) एक पुस्तक, जो कुछ मैंने यहां देखा और सीखा, लिखना चाहूंगा। विएना पर तो मैं एक पुस्तक लिखूंगा ही, लेकिन म्युनिसिपल काउंसलर्स और कार्यकर्ताओं के लिए यह पुस्तक अधिक विस्तार में होनी चाहिए। अतः मैं आपका अति आभारी होऊंगा यदि आप मुझे सूचित कर सकें कि कार्पोरेशन मुझे इस कार्य को करने की अनुमति देता है। यदि आवश्यक हो तो आप यह पत्र कार्पोरेशन के सम्मुख रख सकते हैं।

मेयर साहब, आपको तथा कार्पोरेशन को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और धन्यवाद।

भवदीय
सुभाष चंद्र बोस,

जे.टी. सुंदलैंड को,
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं
14–कैरंटनेरिंग
वियेना (आस्ट्रिया)

18 मई, 1933

प्रिय महोदय सुंदरलैंड,

आपका पत्र पाकर मुझे अतीव प्रसन्नता और गर्व का अनुभव हुआ है। मैं क्षमा चाहता हूं कि मैं तत्काल आपको पत्रोत्तर नहीं दे सका। मुझे आशा है कि मेरे स्वास्थ्य को देखते हुए आप मुझे क्षमा करेंगे।

आपकी हस्ताक्षरित पुस्तक मेरे लिए एकक और सुखद आश्चर्य थी। जब से वह मुझे मिली है तभी से उसको लेकर मेरे मित्रों में छीना–झपटी चल रही है। जैसा कि आप जानते ही हैं कि पुस्तक भारत में उपलब्ध नहीं है, क्योंकि भारतीय सरकार ने उसे पर रोक लगा दी है।

अतः यह पुस्तक एक खजाने के रूप में है।

श्री वी. जे. पटेल आजकल विएना के ही एक सैनिटोरियम में हैं और हम लोग प्रायः मिलते रहते हैं। आपने सुना होगा कि अमरीका से लौटने के बाद उनका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो गया था। चिकित्सकों की राय है कि उन्होंने वहां क्षमता से अधिक कार्य किया। फिर भी जिस दशा में वे यहां आए थे उससे अब बहुत बेहतर हैं और ऐसी आशा है कि आराम और उपचार के परिणामस्वरूप वे पुनः पहले जैसे स्वस्थ हो जाएंगे। श्री पटेल ने अमरीका के अपने अनुभव मुझे बताए।

आपके पत्रों में जो मेरे प्रति आपकी सदाशयता व्यक्त हुई है उससे मुझे जो प्रसन्नता मिली मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। आपने पत्राचार प्रारंभ किया है और मुझे आशा है भविष्य में भी इसे कायम रखेंगे।

मैं आपकी पुस्तक को खजाने की भांति संभाले हूं। एक बार पुनः आपको धन्यवाद देता हूं।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः पहले की अपेक्षा मैं काफी बेहतर अनुभव कर रहा हूं, यद्यपि प्रगति बहुत धीमी गति से हो रही है।

सु. च. बो.

श्री संतोष कुमार बासु, मेयर, कलकत्ता को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं
14–कैरंटनेरिंग
वियेना –1
23 मई, 1933
सेवा में,

मेयर साहब,
कार्पोरेशन ऑफ कलकत्ता

प्रिय महोदय,

पिछले सप्ताह आपको लिखे अपने पत्र में मैंने विएना नगरपालिका पर भारतीय दृष्टि से एक पुस्तक लिखने की इच्छा व्यक्त की थी। मैंने यह भी सुझाव दिया था कि कलकत्ता निगम उसे प्रकाशित करने का कार्य कर सकता है। यदि यह संभव हो तो, मैं उस पुस्तक को और अधिक विस्तृत आकार देने का प्रयत्न करूंगा।

क्योंकि विएना के मेयर ने मुझे रार्थोस में (टाउनहॉल) मिलने के लिए आमंत्रित किया था, इसलिए मुझे पिछले बारह वर्ष में नगरपालिका द्वारा निर्मित कुछ भवनों को देखने का अवसर मिला। अभी तक मैं नगरपालिका द्वारा बनाए गए कुछ मकानों को ही देख पाया हूं। उनकी योजना में अद्भूत वैविध्य है। एक ओर शहर के मध्य में बड़े–बड़े मकान हैं जिसमें लंबे चौड़े अपार्टमेंट्स हैं और दूसरी ओर छोटे–छोटे कुटीर हैं सब सुविधाओं से युक्त जिनके साथ बगीचे जुड़े हैं जिन्हें गार्डनसिटी के अनुरूप बनाया गया है। इन दोनों प्रकार के अलग–अलग आवासों के बीच शिल्पकारों ने मिले–जुले मकान बनाने का प्रयोग किया है।

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

मुझे किंडरगार्टेन आवासों को भी देखने का अवसर मिला, जहां, निर्धनों के बच्चे, या उन लोगों के बच्चे जो दिन में कार्य पर जाते हैं, की देखभाल और शिक्षा का प्रबंध है। निर्धनों के बच्चों को वे सुविधाएं देने का प्रबंध है कि उसे देख धनवानों को भी ईर्ष्या हो जाए।

लोगों के लिए तैरने की संस्थाओं को देखने का अवसर भी मिला जिन्हें युद्ध के बाद बनाया गया है। ऐसे जनसाधारण के लिए निगम द्वारा बनाए गए स्नानागारों के कारण विएना के लोगों को सूर्य की रोशनी में नहाने की सुविधा मिली और परिणामस्वरूप तपेदिक के रोग में आश्चर्यजनक रूप से गिरावट आई। स्नानागारों में नहाने की सुविधा इतनी अच्छी है कि हजारों लोग बिना किसी हिचक और असुविधा के प्रतिदिन स्नान कर सकते हैं। निरंतर पानी फिल्टर होता रहता है जिसकी वजह से स्विमिंग का पानी पूरी तरह स्वच्छ और साफ रहता है बच्चों के लिए बिल्कुल अलग स्नानागार बनाए गए हैं।

इस सप्ताह मैं बड़े–बडे बिजली और गैस के संस्थान देखने जाऊंगा। ये संस्थान नगरपालिका के अधीन ही हैं। जहां तक मेरा स्वास्थ्य साथ देगा, मेरी कोशिश रहेगी कि मैं ऐसे प्रत्येक विभाग को देखूं, जिस क्षेत्र में हम अभी पिछड़े हुए हैं। मैं जिस भी संस्था को देखना चाहता हूं उसमें नगरपालिका मुझे पूरी सुविधा उपलब्ध करा रही है इसके लिए मैं उनका आभारी हूं।

अंत में मैं वित्त विभाग की चर्चा करना चाहूंगा जिसके सक्षम कार्य द्वारा ही पिछले 12 वर्ष में इतनी अद्भुत सफलता इन्हें प्राप्त हुई है। मेयर साहब, आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सभी नए कार्य इन्होंने करों से प्राप्त राशि द्वारा किए हैं अतः किसी प्रकार का उधार नहीं लिया। इसके लिए इन्होंने मनोरंजन एवं ऐश्वर्य के साधनों पर कर लगाए ताकि धनी वर्ग से पैसे लेकर निर्धनों पर व्यय हो सकें ताकि पहले की अपेक्षा उनकी अधिक देखभाल संभव हो सके।

मेयर साहब, जैसा कि आप जानते ही हैं कि विएना समाजवादी नगरपालिका का व्यावहारिक उदाहरण है और इस दृष्टि से इसका यूरोप में अलग स्थान है।

मेरे विचार में कलकत्ता के प्रथम मेयर का कार्यक्रम भी समाजवादी कार्यक्रम हैं फिर भी इस बात में कोई दो राय नहीं कि विएना की नगरपालिका से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

मेयर साहब। यदि आप मेरे कार्य को निगम के सम्मुख रख सकें और उनके निर्णय से मुझे सूचित कर सकें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।

धन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चंद्र बोस

एल्फ्रेड टायरनौर को,

होटल डि फ्रांस
27 मई, 1933,
प्रिय श्री टायरनौर,

पत्र के साथ कुछ समाचार हैं जिनमें शायद आपकी रूचि हो। यदि आप इन समाचारों का जहां तक संभव हो, विस्तृत प्रचार कर सकें तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। यदि आप इन्हें आस्ट्रियन एजेंसी को दे सकें तो अच्छा रहेगा क्योंकि इससे यह विएना के पत्रों में स्थान पा सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप इन्हें इटली, फ्रांस और जर्मनी के समाचार पत्रों में भेजने का प्रयास भी कर सकते हैं। अमरीका के पत्रों को भी भेजे जा सकते हैं। यदि वहां इसका विस्तृत प्रचार हो सका तो मुझे विश्वास है कि उन्हें मुझे इंग्लैंड के लिए पासपोर्ट देने पर विवश होना पडेगा। अतः कृपया मेरे लिए इतना कष्ट अवश्यक करें।

धन्यवाद

शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
नाओमी सी. वैटर को.
होटलडी फ्रांस, विएना
28 मई, 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

मेरे एक मित्र भारत से कुछ आम लाए हैं। क्या मैं उनमें से कुछ आम डा. वैटर और आपके लिए भिजवा सकता हूं। मैं चाहता हूं कि काश मेरे पास कुछ और होते ताकि मैं अधिक से अधिक आप तक भेज पाता।

जैसा कि आप जानती ही हैं कि, आम एक भारतीय फल है और अच्छे फलों में से एक है। मुझे आशा है कि यह बहुत मीठी किस्म का आम है।

डा. वैटर और आपको शुभकामनाओं सहित

शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
नाओमी सी. वैटर को

होटल डी फ्रांस,
31 मई 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आज शाम के भाषण की एक प्रति भिजवा रहा हूं। यद्यपि मैं भाषण पढ़ूंगा नहीं बल्कि सीधे भाषण दूंगा ही। किंतु संलग्न प्रति से आपको यह पत्ता लग जाएगा कि मैं क्या बोलूंगा। अतः आप को उसे तत्काल जर्मन भाषा में अनुवाद करने में सुविधा रहेगी।

धन्यवाद,
शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु मेयर कलकत्ता को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं
14–कैरंटनेरिंग
वियेना –(आस्ट्रिया)
18 जून, 1933

सेवा में,

मेयर साहब,
कलकत्ता नगर निगम,

महोदय,

आपको दूसरा पत्र लिखने के पश्चात मैंने विएना की कुछ अन्य निगम संस्थाओं को देखा है। विएना के मेयर ने मेरी सुविधा के लिए एक अंग्रेजी बोलने वाला व्यक्ति और कार मुझे उपलब्ध करवा दी। पिछले पंद्रह दिनों में मैं बिजली विभाग, गैस विभाग और जल विभाग देखने गया। सभी विभागों के प्रमुख बहुत सदाशय थे और उन्होंने ऐसी कोई भी सूचना, जो कलकत्ता के लिए उपयोगी हो, उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। अगले सप्ताह मैं जल–मल–व्ययन संस्थान तथा सड़क निर्माण व सड़कों को साफ़ रखने की व्यवस्था का अध्ययन करूंगा जिनकी व्यवस्था नगर निगम करता है। मेरी इच्छा है कि यहां जो कुछ मैं देख और अनुभव कर रहा हूं इसका उपयोग हमें भी करना चाहिए।

मेयर सायब, आप जानते ही होंगे कि बिजली, गैस, ट्राम आदि जैसे सभी जनोपयोगी विभाग विएना नगर निगम के अधीन हैं। यूरोप में अन्य किसी भी स्थान की अपेक्षा बिजली और गैस यहा सस्ती है।

पिछले बारह वर्षों में निगम ने लगभग 2 लाख लोगों को आवास की सुविधा उपलब्ध कराई है वह भी बिना धन उधार लिए, केवल मनोरंजन और ऐश्वर्य के साधनों पर कर लगाकर राशि एकत्र की है। मुझे इसमें शंका नहीं कि निगम भी कलकत्ता के निवासियों को सस्ती गैस और बिजली उपलब्ध कराने की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति करती रहेगी। इन जैसी अन्य समस्याओं के समाधान खोजने के लिए हम विएना निगम के कार्यों व अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

मेरा साहब को अनेकानेक शुभकामनाओं सहित!

आपका
सुभाष चंद्र बोस

बिभावती बोस को

विएना
21.6.33

प्रिय मेजोबोवदीदी,

एक लंबे अरसे से आपको पत्र नहीं लिख पाया, इससे आप अवश्य नाराज होंगी। बहरहाल! मैं क्षमा प्रार्थी हूं। जब पत्र लिखने का समय मिलता है तो आलस्य घेर लेता है, जिसके परिणामस्वरूप मैं पत्र नहीं लिख पाता। इसी प्रकार कई सप्ताह बीत गए।

मेरा स्वास्थ्य धीरे–धीरे सुधर रहा है। यद्यपि मेरा वजन तो बहुत अधिक नहीं बढ़ पाया है, फिर भी मैं अधिक चिंतित नहीं हूं, क्योंकि पेट बढाने का कोई लाभ नहीं। शारीरिक रूप से मैं स्वयं को पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली महसूस कर रहा हूं। अभी उपचार चल रहा है और खानपान पर बहुत सी बंदिशें हैं। सबसे मजेदार बात तो यह है कि कुछ लोग जो मेरी उम्र का अंदाजा लगाने का प्रयास करते हैं उनका कहना है कि मेरी उम्र 32 वर्ष से अधिक नहीं। कुछ कहते हैं मैं 28 बर्ष का हूं। इसलिए जो मुझे शक होने लगा था कि मैं उम्र से पहले ही बूढ़ा हो रहा हूं, वह शंका समाप्त हो रही है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मेजदादा का स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। आप कैसी हैं? 'नेरी–नेरी' कैसे हैं? मैंने उन्हें पत्र नहीं लिखा इस बात से नाराज़ होंगे। अशोक से पता चला कि अब वह ठीक है। कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

आपका
सुभाष

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

नाओमी सी. वैटर को

पैलेस होटल
इन्ड्रिस्क
प्राग
29 जून 1933

प्रिय श्रीमती वैटर

मैं विएना से वायुमान द्वारा आज दोपहर यहां पहुंचा हूं और अभी तक होटल में ही हूं। वायुयान की यात्रा अच्छी नहीं लगी, क्योंकि हल्का–हल्का सिर चकराने सा लगा। यहां पहुंच कर स्वस्थ महसूस कर रहा हूं। अभी तक शहर की कोई जगह नहीं देखी है।

प्रेजीडेंट वैटर व आपको सादर प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

श्री संतोष कुमार बासु, मेयर, कलकत्ता को,

पैलेस होटल
प्राग
9 जुलाई, 1933

प्रिय श्री मेयर साहब

मैं यहां (प्राग) में एक सप्ताह पहले आया था। यहां पहुंचने पर मैं प्राग के प्राइमेटर (मेयर) डा. बाक्सा से उनके कार्यालय टाउनहॉल में मिला। हम दोनों में लंबा वार्तालाप हुआ और उन्होंने कलकत्ता और प्राग के बीच निकट संबंधों पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की।

प्राग के प्राइमेटर ने कलकत्ता के मेयर और वहां के निवासियों के लिए अपने आटोग्राफ चित्र और शुभाकामनाएं भेजी है। इस सप्ताह के अंत तक वह सब भिजवा दी जाएंगी।

मुझे निगम कार्यालय दिखाया गया, जो प्राचीन और कलात्मक ढंग से बना हुआ है। बाद में मैं समाज सुधार संस्थाओं को देखने भी गया जिनमें से सबसे प्रसिद्ध मसारिक होम है जहां अनाथ और बच्चे रहते हैं। जल संस्थान, मल व्ययन संस्थान और गैस संस्थान भी मैंने देखे। बिजली संस्थान को देखने की व्यवस्था भी की गई थी। किंतु मैं वहां जा नहीं पाया । अपने अगले पत्र में मैं उन बातों के बारे में चर्चा करूंगा जिन्होंने

मुझे काफी प्रभावित किया। मैं आपको बताना चाहूंगा कि यहां निगम ने कूड़ा–करकट खत्म करने के लिए भस्मकारी यंत्र का निर्माण किया है इसी की सहायता से बिजली का उत्पादन किया जाएगा। इस कार्य को सकोडा वर्क्स कर रहा है।

प्राइमेटर ने मुझे गाड़ी की सुविधा उपलब्ध करा दी थी और जिन संस्थानों को मैं देखने गया वहां की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए अंग्रेजी बोलने वाले अधिकारियों की व्यवस्था भी करवा दी थी।

मेयर साहब, प्राग के प्राइमेटर के संदेश के उत्तर में आपके पत्र को पाकर यहां के प्राइमेटर निश्चित रूप से प्रसन्न ही होंगे। यदि निगम, कोई सदस्य या अधिकारी प्राग की निगम संबंधी समस्याओं की जानकारी चाहेंगे तो यहां के अधिकारी प्रसन्नतापूर्वक अपना सहयोग देंगे।

प्राग नगर निगम आजकल एक नए किस्म की सड़कों (टार–मैकेडम) के निर्माण का कार्य कर रही है जो कि डामर की सड़कों जैसी ही सस्ती और अच्छी होंगी। जिस इंजीनियर ने मुझे यह सब दिखाया मैंने उसे बताया कि कलकत्ता निगम भी इस विषय में रूचि लेगा।

मेयर साहब, आपको व निगम को हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

श्री नाओमी सी. वैटर को,

होटल ब्रहल
फ्रेड्री नं. 12
वारसा, (पोलैंड)
10.7.1933

प्रिय श्रीमती वेटर,

उपरोक्त पते से आप अनुमान लगा लेंगी कि मैं कितना घुमक्कड़ हो गया हूं।

प्राग में मैं अत्यधिक व्यस्त रहा। दिनभर घूमते रहने के बाद, शाम को मैं इतना थक जाता था कि मुझमें इतनी शक्ति भी शेष नहीं रहती थी कि पत्र भी लिख सकूं। शीघ्र पत्र न लिख पाने के लिए कृपया मुझे क्षमा करें।

आपके दोनों पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। विएना से जब मैंने आप

लोगों से विदा ली तो मन काफी दुखी था और आपके तथा श्री वैटर के आभार को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मानव होने के नाते, हम बहुत भावुक हैं यद्यपि बाहर से मैं बहुत कठोर प्रतीत होता हूं। कम से कम मेरे कुछ मित्र तो मुझे ऐसा ही मानते हैं।

इस तथ्य को जानकर कि आपको मेरे देश के प्रति इतनी रूचि है मुझे बेहद प्रसन्नता हुई और मैं आप लोगों के प्रति कृतज्ञ हूं। आप तो जानती ही हैं कि मैंने अपने छुद्र जीवन को अपने देश के प्रति समर्पित कर दिया है। परिणामतः जो भी मेरे देश के प्रति रूचि दर्शाता है वही मेरी श्रद्धा का पात्र हो जाता है।

मुझे विश्वास है कि यदि आप निर्णय कर लें तो आप भी भारत के लिए बहुत कुछ कर सकती हैं।

भारत के संबंध में पुस्तक लिखने का आपका विचार, यूरोप के पाठकों की दृष्टि से, बहुत अच्छा और उपयोगी है। यदि मेरी सेवाओं की आवश्यकता पड़े तो अवश्य कहें।

मैं अभी वारसा पहुंचा हूं और जब यहां के लोगों और जगहों को देख लूंगा तब आपको लिखूंगा।

प्राग में एक विशेष आकर्षण है—विशेषकर पुराने भवनों और मध्ययुगीन व कृतियों में—किंतु विएना निश्चय ही अद्भूत है। प्राग में मैं बहुत अधिक समय तक रूक नहीं पाया और मैत्री भी स्थापित नहीं कर पाया। किंतु जिन लोगों से भी मिला वे बहुत सहृदय थे। सरकार ने (विदेश विभाग और वाणिज्य मंत्रालय ने) ही व्यवस्था की कि किन—किन पड़ा। मैं विदेश मंत्री डां. बैनेस से भी मिला और दिलचस्प वार्तालाप हुआ। कुल मिलाकर मेरी यात्रा सफल रही और अब हम चेकोस्लोवाकिया और भारत के बीच संबंध स्थापित करनें के लिए एक संगठन प्राग में बना सकेंगे।

यहां मेरे आठ दिन रूकने का विचार है। यहां से बर्लिन जाऊंगा जहां एक सप्ताह या 10 दिन रहूंगा। बर्लिन के बाद का कार्यक्रम अभी तय नहीं कर पाया हूं किंतु जैसे ही कोई निर्णय लूंगा आपको तत्काल सूचित करूंगा।

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

होटल ब्रुहल

वारसा
15.7.1933
शनिवार, रात्रि,

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके कई पत्र मिले, समझ नहीं पा रहा किन शब्दों में धन्यवाद करूं। मुझे देख है कि मैं इतना समय नहीं निकाल पा रहा कि जो कुछ कहना चाहता हूं वह सब लिखते हुए एक लंबा पत्र लिख पाऊं। आज रात्रि में मैं केवल यही कह सकता हूं कि मुझे प्रसन्नता है कि मैंने विएना में इतने महीने बिताए और बदले में मुझे अपने देश का आप जैसा सच्चा मित्र मिला। मुझे आशा और विश्वास है कि आप सदा भारत के प्रति ऐसी ही रूचि रखेंगी। मैं तो अपने देश का एक अदना–सा प्रतिनिधि मात्र हूं। यदि मुझमें कोई खूबी है तो वह मेरे देश की खूबी हैं। मुझमें जो बुराई है वह केवल मेरी अपनी है किसी और की नहीं।

सोमवार प्रातः (17 जुलाई) मैं बर्लिन के लिए रवाना हो रहा हूं और मेरा विचार है वहां कुछ दिन आराम कर पाऊंगा। प्राग और वारसा में तो मैं लगातार भ्रमण करता रहा। आपको बताने में प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूं कि दोनों स्थानों की मेरी यात्रा एक सफल यात्रा रही।

कृपया, स्पेन के राजदूत से पत्र लेकर आप अपने पास ही रख लें। मैं स्पेन जाने से पूर्व आपसे ले लूंगा।

बर्लिन में मेरा पता होगा–द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी। बर्लिन से मैं आपको पुनः लंबा पत्र लिखूंगा। अपने कार्यक्रम निर्धारण में मुझे कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है इसलिए पक्के तौर पर आपको कुछ कह नहीं सकता। मुझे यह सुनकर बहुत गर्व और आनंद हुआ कि यदि मैं विएना लौटा तो आप मुझे वहां मिलेंगी। जैसे ही किसी निर्णय पर पहुंचूंगा आपको तत्काल अपना कार्यक्रम लिखूंगा।

प्रेजीडेंट वैटर साहब व आपको मेरी अनंत शुभकामनाएं

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

ग्रैंड होटल एम नी
बर्लिन

27.7.1933

प्रिय श्रीमती वेटर,

मुझे खेद है कि मैं वायदे के अनुसार बर्लिन पहुंचकर आपको लंबा पत्र नहीं लिख पाया।

मेरे विचार में मैंने स्वयं को प्राग और वारसा में अत्यधिक थका लिया जिसका प्रभाव मैं अब महसूस कर रहा हूं। अपने आप को पूरी तरह थका हुआ और कुछ–कुछ बुखार का भी अनुभव कर रहा हूं। किंतु आशा है दो–तीन दिन बाद पूर्ण स्वस्थ हो पाऊंगा।

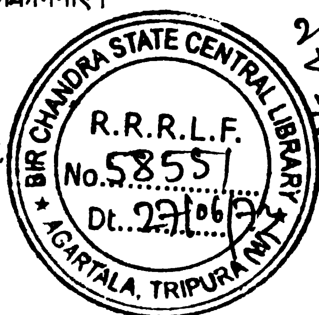
अभी तक मैं कुछ विशेष स्थान देख नहीं पाया हूं। इसलिए एक सप्ताह और यहां रूकने का विचार बना रहा हूं। कुछ परिचितों को पत्र लिखने के लिए मैं आपका आभारी हूं।

वारसा में जिन मित्रों से आपने मेरा परिचय कराया था उन्होंने मेरे पत्रों के उत्तर नहीं दिए। शायद गर्मियों की छुट्टियों में वे वारसा से बाहर गए हुए हों। मैं स्वयं उनके घर जाकर उनसे व्यक्तिगत रूप में संपर्क नहीं कर पाया।

सोमवार या मंगलवार को मैं आपको पुनः पत्र लिखूंगा। शेष अगले पत्र में। डां. वैटर और आपको शुभकामनाएं।

आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

श्री नाओमी सी. वैटर को,



ग्रैंड होटल एम नी
4.8.1933
शुक्रवार

प्रिय श्रीमती वेटर,

आपने जो खूबसूरत फूल भेजे हैं उनका किन शब्दों में आभार व्यक्त करूं? इतना सुंदर और सटीक उपहार आपने मेरे लिए भेजा, जिसके बारे में मैं सोच भी नहीं सकता था। फूल अभी तक बिल्कुल ताज़ा हैं और वे ताज़ा रहेंगे।

फूलों के संदेश को आप बेहतर समझती है। मंगलवार से मैं कुछ बेहतर अनुभव कर रहा हूं और मैंने कुछ कार्य भी प्रारंभ कर दिया है आजकल मैं विभिन्न निगम

संस्थाओं को देख रहा हूं। मंगलवार को मैंने बर्लिन के ओबर बर्गरमिस्टर से साक्षात्कार किया।

बर्लिन के विषय में आपको अपनी राय बताना अभी जल्दबाजी होगी। किंतु इतना अवश्य कह सकता हूं कि प्राग और वारसा दोनों ही स्थानों पर अधिकारियों ने पर्याप्त स्वागत किया और भारत के प्रति रूचि भी दिखाई।

मैं कलकत्ता के मेयर और डिप्टी मेयर के पत्र संलग्न कर रहा हूं। दोनों ही मेरे परम मित्र हैं। दोनों को विएना के प्रति रूचि हो गई है। जब आपको सुविधा हो कृपया पत्र मुझे लौटा दें क्योंकि मुझे उन्हें उत्तर भेजना होगा।

मुझे पर्वत बहुत पसंद हैं और मुझे खेद है कि बंगाल में अधिक पर्वत नहीं हैं। पर्वतों पर जाने के लिए हमें उत्तर की ओर जाना पड़ता है। अर्थात हिमालय की ओर। किंतु विश्व का प्रसिद्ध बर्फीला स्थान कंचनजंघा जो 27,000 फीट की ऊंचाई पर है हमारे यहा है। आपके दो अगस्त के पत्र, जो मुझे आज ही प्रातः मिला, मैं पर्वतों और फूलों के बारे में पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई।

डा. वैटर और आपको शुभकामनाएं।

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को

होटल ग्रांड एम नी
बर्लिन
18.8.1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

कलकत्ता यूनिवर्सिटी के डां. हरीशचंद्र सिन्हा जो मेरे परम मित्र हैं आजकल विएना में हैं। 13 तारीख की प्रातः वे म्यूनिख कि लिए विएना से रवाना होंगे। यदि वे विएना में आप से मिल सकें तो मुझे बहुत प्रसन्नता और गर्व होगा।

डां. सिन्हा इकोनामिक्स के ज्ञाता हैं और कलकत्ता में बैकिंग और कामर्स पढाते हैं। वे आल इंडिया स्टैटिस्टिकल सोसायटी के सचिव भी हैं।

मैं चाहूंगा कि डा. सिन्हा राथौस का डा. न्यूरथ म्यूजियम भी देखें। उसे देखकर वे प्रसन्न भी होंगे और लाभान्वित भी होंगे। क्या आप ऐसी व्यवस्था कर पाएंगी?
मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है।
शेष अगले पत्र में।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

बर्लिन
25.8.1933
शुक्रवार, रात्रि

प्रिय श्रीमती वैटर,

मुझे खेद है कि मैं लंबे समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया।

डा. सिन्हा यहां कुछ दिनों के लिए आए थे। मुझे प्रसन्नता है कि आपने वहां उनकी पर्याप्त सहायता की।

रविवार को मैं फ्रैंजेंसबाद के लिए निकलूंगा। कुछ दिन वहां रहूंगा। वहां से मैं ब्लैक फारेस्ट जाना चाहता हूं।

कृपया यथाशीघ्र मुझे सूचित करें कि 4 या 5 दिन बाद आप कहां होंगी। आपका पत्र मिलने पर ही मैं आपको सूचित करूंगा किफ्रैंजेंसबाद जाते हुए मैं विएना जाऊंगा या नहीं।

कृपया निम्न पते पर पत्र लिखें–

विलां डा. स्टींसबर्ग
फ्रैंजेंसबाद

सी.एस आर.

डां. वैटर व आपको हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर
फ्रैंजेंसबाद सी. एस. आर
31.8.1933
बृहस्पतिवार

प्रिय श्रीमती वैटर,

पिछले रविवार को मैं बर्लिन से यहां पहुंच गया था। कल (शुक्रवार) मैं श्री पटेल के साथ विएना के लिए रवाना होऊंगा, श्री पटेल आजकल यहीं हैं।

यहां आने से पहले बर्लिन से मैंने आपको पत्र लिखा था। शायद आप विएना से बाहर गई थीं तभी आपका उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

मैं विएना में कुछ दिन रूकूंगा और शायद यहीं से स्कवर्जवाल्ड या किसी अन्य स्वास्थ्य केंद्र में जाऊंगा। फिलहाल मैं विएना में एक सप्ताह रूकने का विचार रखता हूं।

विएना में मुझसे मिलने के लिए कृपया आप अपना छुट्टियों का कार्यक्रम परिवर्तित न करें। मैं अभी भारत वापिस नहीं लौट रहा हूं। कुछ माह अभी यूरोप में रहूंगा और एक बार विएना अवश्य आऊंगा। ऐसी संभावना है कि नवंबर के अथवा दिसंबर के प्रारंभ में मैं विएना आऊंगा।

बर्लिन में मैं लगभग तीन सप्ताह अस्वस्थ रहा। अब काफी स्वस्थ अनुभव कर रहा हूं। आशा है आप भी स्वस्थ होंगे। डा. वैटर और आपको शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
नाओमी सी. वैटर
ज्यूरिख
16.9.1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आज प्रातः बहुत सुहावना मौसम है, बादल भी नहीं हैं, किंतु मौसम ठंडा है।

स्विटजरलैंड और आस्ट्रिया के जिस भाग से आज प्रातः मैं गुजरा हूं बहुत ही मोहक है। जगह–जगह पर्वत बर्फ से आच्छादित थे।

एक दिन के लिए मैंने यात्रा रोकी। मेरा जिनेवा का पता रहेगा–
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
जिनेवा,
कल सायं मैं जिनेवा पहुंचूंगा।
डा. वैटर और आपको मेरा नमस्कार

सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को

पैंशन सर्जी
केमिन करिंग
जिनेवा
21.9.1933

श्रीमती वैटर,

आपका 18 तारीख का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई।

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

यहां आने के बाद से मैं बहुत व्यस्त रहा हूं। सम्मेलन पूर्णतः सफल रहा। शाम को लोगों की काफी भीड़ थी, मैं भी वक्ताओं में से एक था। लोगों का मानना हैं कि यह सम्मेलन जिनेवा में भारत के लिए आयोजित अब तक के सभी सम्मेलनों में सबसे बड़ा था।

यहीं आकर पहले से कुछ बेहतर अनुभव कर रहा हूं। दो दिन मौसम बिल्कुल साफ था, फिर बादल आए और मौसम बरसाती हुआ।

श्री पटेल बीमार हैं और उन्हें यहीं सैनिटोरियम में जाना होगा।

सम्मेलन में पारित निर्णय की प्रति भिजवा रहा हूं।

अभी यहा कितने दिन रहूंगा तय नहीं कर पाया हूं। यदि मौसम साफ़ रहा तो कुछ दिन और रूकना चाहूंगा।

आप अपनी पुस्तक लिखनी कब प्रारंभ करेंगी। डा. वैटर व आपको प्रणाम।
वहां का मौसम कैसा है?
हां, मैं विएना अवश्य आऊंगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

इस्टैब्लिशमैंट फिज़िक थेरैपिक
डू लमन
ले लिग्नीयर
ग्लैंड (जिनेवा के निकट)
25.9.1933
सोमवार, सायं

प्रिय श्रीमती वैटर

मैं यह पत्र आपको इस सैनिटोरियम से लिख रहा हूं जहां आजकल श्री पटेल दाखिल हैं। जब से श्री पटेल ने विएना छोडा है; उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही जा रहा है। आजकल उनकी स्थिति बहुत गंभीर है। भगवान ही जानता है कि वे इस हार्टअटैक से उबर पाएंगे या नहीं। हम केवल उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना और प्रार्थना ही कर सकते है।

अगले कुछ दिन तक मैं आपको पत्र नहीं लिख पाऊंगा इसीलिए जल्दबाजी मैं कुछ पंक्तियां लिख रहा हूं।

जिनेवा में मेरा पता है पैंशन सर्जी, चेमिनकरिंग, जिनेवा। मैं अभी अगले तीन

चार दिन यहीं रहूंगा ताकि श्री पटेल के निकट रह सकूं। कृपया मुझे जिनेवा के पते पर ही पत्र लिखें।

मैं आपको पहले भी लिख चुका हूं कि भारतीय सम्मेलन एक सफल सम्मेलन रहा। एक सफल आयोजन था।

भारतीय चाय आपको पसंद आई, जानकर अच्छा लगा। काश यहां मेरे पास कुछ अधिक चाय होती।

मुझे आशा है कि जिनेवा में कुछ और दिलचस्प लोगों से मेरी मुलाकात होगी। यदि मौसम ने मेरा साथ दिया तो मैं अंचलों में जाने की अपेक्षा जिनेवा में ही रहना चाहूंगा। अब साफ मौसम नहीं है और आजकल यहां बरसात हो रही है।

प्रेजीडेंट वैटर और आपको नमस्कार

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

पैंशन सर्जी
कैमिन करिंग
जिनेवा
30.9.1933

प्रिय श्रीमती वैटर

आपको सूचित कर रहा हूं कि श्री पटेल अब पहले से बेहतर हैं। किंतु खतरा अभी टला नहीं है। मुझे आपके सभी पत्र प्राप्त होते रहे हैं और जैसे ही मैं कुछ समय निकाल पाऊंगा तो आपको विस्तृत पत्र अवश्य लिखूंगा।

श्री पटेल के स्वस्थ होने पर शायद मैं सैनिटोरियम में दाखिल होऊंगा और आपरेशन करवाऊंगा। अभी तक दर्द ज्यों का त्यों है।

जल्दबाजी में लिखे इस पत्र के लिए कृपया क्षमा करें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कांतिलाल पारीख को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
जिनेवा
3.10.1933

प्रिय कांतिलाल,

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

खेद है कि लंबे अरसे से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। जून के अंत में मैंने एक छोटी सी यात्रा के लिए जिनेवा, छोड़ दिया था। वहां मुझे दर्द नहीं हुआ। मैं चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और जर्मनी गया। सभी स्थानों पर खूब स्वागत हुआ और लोगों ने भारत के प्रति पर्याप्त रूचि भी दिखाई।

यात्रा से पुराना कष्ट पुनः शुरू हो गया और बर्लिन में मुझे तीन सप्ताह तक पूर्ण विश्राम करना पड़ा। अगस्त के अंत में मैं बर्लिन से रवाना हुआ और रास्ते में चेकोस्लोवाकिया में फ्रैंजेंसबाद में एक सप्ताह रूका। वहां से मैं विएना आया। यहीं चिकित्सकों को दिखाया।

15 सितंबर को मैं विएना से रवाना हुआ और रास्ते में ज्यूरिख रूकता हुआ जिनेवा आया। 19 सितंबर को जिनेवा में भारत पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसमें हमने भी भाग लिया। काफी भीड़ थी।

पिछले लगभग बारह दिनों से मुझे डा. पटेल के स्वास्थ्य की बहुत चिंता है। पहले से बेहतर तो हैं किंतु खतरा अभी टला नहीं है। पिछले कुछ दिनों से रात–दिन मैं उनके साथ हूं। वे आजकल ग्लैंड के क्लीनिक ला लिग्नीयर में दाखिल हैं जो जिनेवा से लगभग एक घंटे की रेलयात्रा की दूरी पर है।

कल मैं भी उसी क्लीनिक में एक रोगी के रूप में दाखिल होऊंगा। बर्लिन के बाद से मेरा दर्द पुनः शुरू हो गया है और अभी तक जारी है बल्कि कुछ दिन से बढ़ ही गया है। यदि उस क्लीनिक में मुझे आराम आया तो मैं दो माह वहीं ठहरूंगा। सर्दियों में स्विटजरलैंड का मौसम जिनेवा की अपेक्षा अधिक सुहावना है।

आप सब लोग कैसे हैं। सभी को मेरा प्यार व शुभकामनाएं। यदि मैं पत्र व्यवहार निरंतर न भी कर पाऊं तब भी कृपया तुम लगातार पत्र लिखते रहो।

तुम्हारा अपना
सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

क्लीनिक ला लिग्नीयर
ग्लैंड
सूइस
5.10.1933

महोदय, प्रैजीडेंट वैटर साहब,

वेहरिंगर स्ट्रासे 41
विएना–9.

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

(आस्ट्रेख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आगंतुक से मैं इस क्लीनिक का एक रोगी बन गया हूं। देखता हूं यहां का उपचार मुझे लाभ पहुंचाता है या नही।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पटेल अब पहले की अपेक्षा बेहतर है यद्यपि अभी पूर्णतः खतरे से बाहर नहीं हैं। हर बीते दिन के साथ मुझे आशा बंधती है कि वे इससे उबर जाएंगे। आशा है आप सभी पूर्ण स्वस्थ होंगे। प्रेजीडेट वैटर और आपको शुभकामनाएं।

सदैव आपका अपना

सुभाष चंद्र बोस

साथ हूं। वे आजकल ग्लैंड के क्लीनिक ला लिग्नीयर में दाखिल है जो जिनेवा से लगभग एक घंटे की रेलयात्रा की दूरी पर है।

कल मैं भी उसी क्लीनिक में एक रोगी के रूप में दाखिल होऊंगा। बर्लिन के बाद से मेरा दर्द पुनः शुरू हो गया है और अभी तक जारी है बल्कि कुछ दिन से बढ़ ही गया है। यदि उस क्लीनिक में मुझे आराम आया तो मैं दो माह वहीं ठहरूंगा। सर्दियों मे स्विटजरलैंड का मौसम जिनेवा की अपेक्षा अधिक सुहावना है।

आप सब लोग कैसे हैं। सभी को मेरा प्यार व शुभकामनाएं। यदि मैं पत्र व्यवहार निरंतर न भी कर पाऊं तब भी कृपया तुम लगातार पत्र लिखते रहो।

तुम्हारा अपना

सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

क्लीनिक ला लिग्नीयर
ग्लैंड
सूइस
5.10.1933

महोदय, प्रैजीडेट वैटर साहब,
वेहरिंगर स्ट्रासे 41
विएना—9.
(आस्ट्रेख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आगंतुक से मैं इस क्लीनिक का एक रोगी बन गया हूं। देखता हूं यहा का उपचार मुझे लाभ पहुंचाता है या नहीं।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पटेल अब पहले की अपेक्षा बेहतर है यद्यपि अभी पूर्णतः खतरे से बाहर नहीं हैं। हर बीते दिन के साथ मुझे आशा बंधती है कि वे इससे उबर जाएंगे। आशा है आप सभी पूर्ण स्वस्थ होंगे। प्रेजीडेंट वैटर और आपको शुभकामनाएं।

सदैव आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

क्लीनिक ला लिग्नीयर
ग्लैंड
सूइस
10.10.1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका 27 तारीख का पत्र, उसी दिन का भेजा पोस्टकार्ड और तत्पश्चात 2 अक्तूबर का पत्र सभी आज ही मिले।

भारत से प्राप्त जो पत्र आपने साथ भेजे हैं मैंने बहुत दिलचस्पी से उन्हें पढा। श्री श्रीकृष्ण का पत्र मैं आपको लौटा रहा हूं किंतु श्री अग्निहोत्री का पत्र नहीं लौटाऊंगा, क्योंकि आपको उसकी आवश्यकता नहीं है। श्री अग्निहोत्री का पता है–

के.बी.एल. अग्निहोत्री
बिलासपुर,
सी.पी.
इंडिया

बर्गर मिस्टर सिट्ज का पत्र अच्छा है और मुझे उसकी प्रति पाकर प्रसन्नता हुई।

क्या आपने देखा कि हेस्टिंग्स, इंग्लैंड में आयोजित लेबर पार्टी कांफ्रेंस में आस्ट्रिया की समाजवादी पार्टी द्वारा विएना में पिछले 15 वर्षों में किए गए कार्यों की प्रशंसा की गई।

पंडित का वास्तविक अर्थ हमारे यहां उस व्यक्ति से है जो दर्शन और साहित्य (संस्कृत) का ज्ञाता हो। आधुनिक युग के हमारे स्कूलों, कालेजों में संस्कृत क अध्यापकों को पंडित ही कहा जाने लगा है। भारत के कुछ क्षेत्रों में, विशेषरूप से कश्मीर में ब्राह्मण

स्वयं को पंडित कहलाना पसंद करते हैं। सामान्य रूप में जब पंडित शब्द का प्रयोग होता है तो वह ब्राह्मण के संदर्भ में होता है जिसका उसके संस्कृत ज्ञान अथवा भारतीय दर्शन से कोई संबंध नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि ज्यूरिखर जीटुंग में प्रकाशित, भारत के संबंध में लिखे गए लेख, को क्या ब्रिटिश दृष्टि से लिखा गया है मुझे आशंका है कि यह भी भारत के विरूद्ध प्रचार का ही एक हिस्सा तो नहीं, जैसे कि प्रायः जर्मन प्रेस में प्रकाशित होता रहता है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वहां का मौसम पिछले कुछ अर्से से अच्छा चल रहा हैं। यहां भी पिछले कुछ दिनों मौसम बहुत साफ था और प्रायः बरसात भी होती रहती है।

श्री पटेल को पुनः हृदय संबंधी परेशानियां उठ खड़ी हुई हैं और मुझे इससे बहुत निराशा हुई है क्योंकि मुझे पूर्ण आशा थी कि वे शीघ्र स्वस्थ हो जाएंगे। मैं नहीं जानता क्या होगा यद्यपि अभी भी पूर्ण आश्वस्त हूं कि वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

मेरा दर्द (खाना खाने के बाद) अभी भी वैसे ही हैं, मैं समझ नहीं पा रहा कि क्या करूं। मुझे शक है कि वे मेरे रोग का ठीक निदान भी कर पाए हैं या नहीं। बहरहाल, दर्द सहने के अलावा कुछ नहीं किया जा सकता। मैं यहां के लोगों को अवसर दे रहा हूं कि स्विस चिकित्सक मुझे स्वस्थ कर पाते हैं अथवा नहीं। अब मैं इस क्लीनिक (सैनिटोरियम) का रोगी बन चुका हूं।

साथ में अमेरिका से डा. सुंदरलैंड का लिखा पत्र भी भेज रहा हूं। कृपया यह पत्र आवश्यक कार्यवाही के बाद लौटा दें। आशा है अब तक आपको उनका पत्र व उनकी पुस्तक मिल चुकी होगी। अब आप उसका अनुवाद प्रारंभ कर सकती हैं।

डा. वैटर को व आपको नमस्कार

आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

क्लीनिक ला लिग्नीयर
ग्लैंड
स्विटजरलैंड
12.10.1933
प्रिय श्रीमती वुड्स,

श्री वी. जे. पटेल नाम आपका 4 तारीख का पत्र मिला। आपका संदेश पाकर **वे बहुत प्रसन्न हैं और उनकी इच्छा थी कि मैं उनका** धन्यवाद आप तक प्रेषित कर **दूं। खेद है कि वे अस्वस्थता के कारण स्वयं पत्र नहीं** लिख पाए।

पुनः– दुख के, साथ सूचितकर रहा हूं कि, उनका स्वास्थ्य अभी बहुत खराब है। हम केवल उनके स्वस्थ होने की कामना ही कर सके हैं किंतु ईश्वर ही जानता है कि वे इस हार्ट अटैक से उबर पाएंगे या नहीं।

चिकित्सक भी अभी कुछ कह सकने में असमर्थ हैं।

शुभकामना सहित,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु, मेयर कलकत्ता को,

एस.सी. बोस
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
रू डू मोंट ब्लैंक
जिनेवा
ला लिग्नीयर, ग्लैंड
स्विटजरलैंड
17 अक्तूबर, 1933

सेवा में,

मेयर साहब
कलकत्ता निगम,
मेयर साहब,

पिछले सप्ताह, विएना के मेयर (बर्गरमीस्टर) का स्वयं का लिखा मूल पत्र और एक चित्र विएना से आपको प्रेषित किया गया था। उस पत्र की एक प्रति मैं आपको भेज रहा हूं। मुझे आशा है कि इस प्रेमपूर्वक भेजे गए सदेश से कलकत्ता निगम, कलकत्तावासी और उनके प्रतिनिधि होने के नाते आप भी प्रसन्नता अनुभव करेंगे और यथाशीघ्र उत्तर भी प्रेषित करेंगे।

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
जिनेवा
19.10.1933

प्रिय सत्येन बाबू,

एक लंबे अरसे मैंने आपको पत्र नहीं लिखा। इसीलिए निराश होकर आपने

भी लिखना बंद कर दिया। दोष आपका नहीं मेरा हैं। खैर! विजय के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं व प्रेम स्वीकार करें।

श्री सेनगुप्ता के असामयिक निधन से मुझे गहरा आघात पहुंचा है। बंगाल का दुर्भाग्य है कि राजनीति के क्षेत्र से धीरे–धीरे एक–एक कर व्यक्तित्व कम हो रहे हैं। श्री सेनगुप्ता की कमी पूरी नहीं होगी।

मैं आजकल जिनेवा के निकट ग्लैंड नामक शहर (गांव) के ला लिग्नीयर नामक सैनिटोरियम में हूं। श्री पटेल भी यहीं हैं। उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हैं, शायद अधिक समय तक उन्हें जीवित रख पाना संभव नहीं।

मेरे पेट का दर्द फिर शुरू हो गया है, बल्कि अब और तेज़ है। समझ नहीं पा रहा क्या करूं। कभी सोचता हूं कि आपरेशन करवा लूं। बहरहाल, आजकल मुझे अपने से अधिक श्री पटेल की चिंता रहती है।

आप सब लोग कैसे हैं? काश! विस्तृत समाचार मिल पाते। आप लोग कब तक महात्मा गांधी का अंधानुकरण करते रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि देश गलत दिशा में जा रहा है, जबकि अभी समय है, कृपया नया संदेश दीजिए और नया आंदोलन शुरू कीजिए अन्यथा देश को जगाने में बहुत अधिक समय लग जाएगा।

इसके अतिरिक्त, कृपया बंगाल को पुनः संयोजित कीजिए। यदि श्रीमती नेली सेनगुप्ता प्रयास करेंगी तो परिणाम बेहतर होंगे। मैं इस विषय में उन्हें लिखने की भी सोच रहा हूं। कुछ दिन पहले मुझे उनका पत्र मिला था।

आज इतना ही काफी है। कृपया विजयदशमी की शुभकामनाएं सभी को दें।

आपका अपना

सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

ला लिग्नीयर

ग्लैंड

स्वूस

20.10.1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

लंबे अरसे से आपका कोई समाचार नहीं, चिंतित हूं। प्रतिदिन आपके पत्र की प्रतीक्षा रहती है क्या आपको मेरा पिछला लंबा पत्र नहीं मिला, जिसके साथ मैंने डा. सुंदरलैंड का पत्र और वे सभी पत्र भेजे थे जो आपने मुझे भिजवाए थे।

श्री पटेल की स्थिति बहुत नाजुक है। मैं भी यहां अपना उपचार करा रहा हूं किंतु कोई लाभ नहीं हो रहा। पेट के अंदर का दर्द बहुत परेशान कर रहा है।

श्री वैटर और आपको प्रणाम।

आपका अपना

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः– अब तक आपको सूचना मिल ही चुकी होगी कि डा. सुंदरलैंड पुस्तक के अनुवाद के लिए राजी हो गए हैं।

सु. च. बोस

नाओमी सी. वैटर को

पैंशन सर्जी

कैमिन करिंग

जिनेवा

1 नवंबर, 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका 23 अक्तूबर का पत्र पाकर निश्चिंत हुआ। डा. वैटर और आपको बहुत धन्यवाद!

श्री पटेल की अंतिम इच्छा के अनुसार हमें उनका पार्थिव शरीर अंतिम संस्कार हेतु भारत भिजवाना होगा। मैं मर्सिलेज गया था और मृत देह को जहाज़ में चढ़ाने के बाद ही एक दिन बाद यहां लौटा हूं।

फिलहाल मैं उपरोक्त पते पर ठहरा हूं और भविष्य की योजना के बारे में निश्चित रूप से कुछ कह नहीं सकता।

वारसा के आपके मित्र का पत्र मुझे मिला जो मैं साथ में भेज रहा हूं। क्या आप उनका नाम व पता मुझे लिखने का कष्ट करेंगी। उन्होंने भारत पत्र भेजा था जहां से मुझे प्रेषित किया गया है।

मैं एक तार भी भेज रहा हूं जिसे भेजने वाले का नाम बहुत कोशिश के बावजूद मैं जान नहीं पाया। शायद कोई चीनी नाम है। आश्चर्य नहीं यदि ये वियेना में चीनी राजदूत हों जो शायद श्री पटेल को निजी रूप में जानते हों।
क्या आपको डा. सुंदरलैंड के पत्र और पुस्तकें प्राप्त हुई?
वहां मौसम कैसा है? यहां तो अभी सर्दी है।
डा. वैटर व आपको प्रणाम।

शुभेच्छु

प्रोफ़सर वी लैस्नी को,

द्वारा द अमेकिन एक्सप्रेस कंपनी
जिनेवा
10 नवंबर, 1933
सेवा में,
प्रबंधक
ओरिएंटल इंस्टीट्यूट
प्राग,

महोदय,

आपका पत्र संख्या 1397/33, दिनांक 3 नवंबर को प्राप्त हुआ। ओरिएंटल इंस्टीट्यूट के भारतीय केंद्र के उद्घाटन समारोह के निमंत्रण के लिए धन्यवाद।

अस्वस्थता के कारण आजकल मैं उपचार करवा रहा हूं और शीघ्र ही दक्षिणी फ्रांस के लिए रवाना होऊंगा। ऐसी स्थिति में मेरा नवंबर के मध्य तक प्राग आना संभव नहीं हो पाएंगा। इसीलिए मैंने आपका निमंत्रण मिलते ही आपको तार भेजा था जिसमें दिंसबर के मध्य कोई तिथि निश्चित करने की सलाह दी थी। यदि आपके लिए उस समय की कोई तिथि निश्चित कर पाना संभव हो तो मैं अवश्य आपका निमंत्रण स्वीकार कर सकता हूं और प्राग आ सकूंगा।

यहां मेरा यह कहना आवश्यक नहीं कि मैं दोनों देशों के मध्य सांस्कृतिक एवं वाणिज्य संबंध स्थापित होने की बात से अत्याधिक प्रसन्न हूं। आपको जानकर प्रसन्नता होगी की अपने हाल ही के प्राग दौरे के पश्चात मैंने भारत में इसका काफी प्रचार किया है। जब पुनः प्राग आऊंगा तो इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर संभव प्रयत्न करूंगा और यदि संभव हो सका और आयोजन हो सका तो कुछ भाषण आदि भी दूंगा। एक बार पुनः आपका धन्यवाद।

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस
नाओमी सी. वैटर,
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी जिनेवा
13.11.1933
फ्रॉ प्रेजीडेंट वैटर
वहरिगर स्ट्रीट 41
विएन–9

(आस्ट्रेख)

प्रिय श्रीमती वैंटर,

मुझे खेद है कि काफी समय से मैं आपको पत्र नहीं लिख पाया। इस बीच आप सोचती रही होंगी कि न जाने मुझे क्या हो गया।

आपके दोनों पत्र मिले–धन्यवाद। तीन–चार दिन बाद लबा पत्र लिखूगा। एक दो दिन के बीच मैं दक्षिणी फ्रास की यात्रा पर निकलूगा।

मेरा स्वास्थ पहले जैसा ही है। आजकल मै विएना के प्रोफेसर न्यूमन की बताई दवाइयों को ही ले रहा हूं।

आप सब लोग कैसे हैं? डा. प्रैजीडेंट वैटर व आपको नमस्कार।

सदैव आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

प्रोफेसर फ्रांसिस जजतीं को,

होटल दि लग्जमबर्ग
प्रोमैंडे डोस एंग्लैस
नाईस
टेलि–839.45–839–46
फ्रास
6 12 1933

आदरणीय प्रोफेसर साहब,

विएना में मेरे श्रद्धेय मित्र श्रीमती एवं श्री फ्यूलप–मिलर से आपके और भारत एव हंगरी के संबंध में आपके कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

भारत और हगरी के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधो की इच्छा रखने के नाते मैं आपके इस कार्य की प्रशंसा करता हू।

मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूं जब आपके दर्शनो का लाभ व सुख प्राप्त कर सकूंगा। अगले वर्ष गर्मियों से पहले मेरा बुडापेस्ट आने का विचार है।

इस वर्ष कई महीने मैं विएना में रहा। उसके बाद से स्विटजरलैंड और फ्रास की यात्रा पर हूं।

शुभकामनाओं सहित
सदा आपका

शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
नइस (फ्रांस)
7.12.33

प्रिय श्रीमती वुड्स,

आपके 3 नवंबर के पत्र के लिए धन्यवाद पत्र लिखने में देरी के लिए क्षमा चाहता हूं।

आयरिश मित्रों के सहानुभूति संदेश भारतीय प्रेस में भेजने के लिए आपका धन्यवाद। मुझे आशा है कि वे काफी पसंद जाएंगे। मुझे याद है लाहौर जेल में श्री जतीनदास के भूख हडताल के कारण हुई मृत्यु पर सितंबर 1929 में टैरेस मैक्सकीनी परिवार ने महत्वपूर्ण संदेश भेजा था। उस संदेश का भी बहुत स्वागत हुआ था।

आयरलैंड आने के लिएं निमंत्रण भेजने के लिए धन्यवाद। कई वर्षों से आरलैंड आने को उत्सुक था और भारत लौटने से पूर्व एक बार वहां अवश्य आऊंगा। देश के एक हिस्से (बंगाल) में आजकल स्वतंत्र प्रेमी पुरूष व स्त्री आयरिश इतिहास को बहुत रही है। फिलहाल मुझे यूनाइटेड किंगडम जाने की आज्ञा नहीं मिली है किंतु शीघ्र ही मुझे आयरिश फ्री स्टेट गवर्नमेंट से आयरलैंड (स्वतंत्र राज्य) जाने की अनुमति मिलने वाली है। किंतु मैं इस तथ्य को गुप्त ही रखना चाहता हूं। लंदन के मेरे कुछ मित्र इंग्लैंड यात्रा की अनुमति प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। किंतु यदि ब्रिटिश सरकार को पता चल गया कि मेरी आयरलैंड जाने की योजना है तो वे पलट जाएंगे और कभी भी मुझे इंग्लैंड जाने का पासपोर्ट नहीं देंगे। जब तक मेरे इंग्लैंड जाने का निर्णय–हां या ना–नहीं हो जाता तब तक मैं आयरलैंड जाने की अपनी इच्छा को गुप्त ही रखना चाहता हूं।

यूरोप से निकलने से पहले जेल में मुझे मेरे भाई मिले थे, जिन्होंने मैडम गोने मैकब्राइड के लिए एक संदेश भिजवाया हैं। मेरे भाई वर्ष 1914 में पेरिस में मैडम से मिले थे और तभी से वे उनके प्रशंसक हैं। संभव है मैडम को अब मेरे भाई की याद ही न हो। फरवरी 1932 में उसका देहांत हो गया। मेरे भाई श्री मुखर्जी, जो उनके मित्र थे, के साथ मैडम से मिला था।

आपके बुलेटिन की प्रति मिल गई थी, काफी पसंद आई। क्या आपको भारतीय समाचार–पत्र (अंगेजी में) निरंतर मिल रहे हैं? यदि मिल रहे हैं तो क्या आप उनमें

से उपयोगी समाचार निकाल लेती है या कि आपको समाचार तैयारशुदा ही भिजवाए जाएं। बुलेटिन कब–कब प्रकाशित करती हैं? मैं आपको भारत के विषय में कुछ सूचनाएं भेजना चाहता हूं।

कृपया मुझे बताएं कि आयरलैंड के कौन–कौन से पत्र मुख्य खबरें प्रकाशित करना चाहेंगे विशेषकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद का पर्दाफाश करने वाले समाचार मेरे ख्याल से डब्लिन का आयरिश अखबारों व पत्रिकाओं के पते भेज सकें तो मैं समय पर आपको कुछ समाचार उपलब्ध कराने का प्रयत्न करूंगा।

मुझे आशा है कि आजकल भारत की तरह आयरलैंड में पत्र सैंसर नहीं किए जाते होंगे। मेरे लिए यह जानना अति आवश्यक है।

शुभकामनाओं सहित,
मैं,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

स्थायी पता
द अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
14, कैरंटनेरिंग
विएना
नइस (फ्रांस)
7.12.33
प्रिय सुनील,

तुम्हारे बहुत से खत मिले। उत्तर नहीं दे सका क्षमा चाहता हूं। हाल ही में विजयादशमी के उपलक्ष्य में लिखा तुम्हारा पत्र मिला, प्रसन्नता हुई।

अपने पहले पत्रों में तुमने बंगाल में वाद को कम करने के प्रयास के बारे मे लिखा था। मैं यहां स्पष्ट आकाश और सूर्य की रोशनी की तलाश में आया हूं। मध्य सागर के ये विश्रामगृह बहुत खूबसूरत हैं।

मेरा मुख्य कष्ट पेट–दर्द अभी भी कष्ट दे रहा है। पिछली जून में दर्द खत्म हो गया था। जुलाई में पुनः शुरू हुआ और तभी से अभी भी है। कुछ दिन पहले दर्द बहुत अधिक बढ़ गया था। अब कुछ कम है किंतु प्रगति बहुत धीमी है। कह नहीं सकता कि पूर्णरूप से स्वस्थ होने में कितना समय लगेगा। पिछले आठ माह से यूरोप में हूं किंतु अभी तक ठीक होने के ठोस लक्षण महसूस नहीं हूए। और यदि मैं ठीक नहीं हो पाया तो घर वापिस लौटकर क्या करूंगा? अस्वस्थता की हालत में कोई कार्य संभव

नहीं है।

बहरहाल! आशा है तुम सब लोग ठीक–ठाक हो। प्रेम व शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा अपना
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

होटल डि लग्जमबर्ग
नइस (फ्रांस)
9.12.33

प्रिय श्रीमती वैटर,

जब मैं विएना में था तब आस्ट्रिया और भारत के संबंध में मेरी श्री रोकोवन्स्की से लंबी बातचीत हुई थी। श्री रोकोवन्स्की ने मेरा परिचय निदेशक ओटो फाल्टिस से करवाया था। श्री फाल्टिस मुझे योग्य और व्यापारिक दृष्टि वाले व्यक्ति लगे और हमने दोनों देशों को निकट लाने के लिए कुछ व्यावहारिक योजना भी बनाई। वे यहां कार्य करेंगे और मैं भारत लौटने के पश्चात वहां कार्य करूंगा। हम वास्तव में कोई व्यापार नहीं करेंगे। हम केवल व्यापार तथा दोनों देशों के संबंधों को प्रगाढ़ करने का प्रयत्न करेंगे। बाद में यदि हम व्यापार करना चाहेंगे तो नई दिशा में नए रूप में उस पर पुनर्विचार करेंगे। हाल ही में निर्देशक ओटो फाल्टिस ने मुझे नए संगठन का प्रारूप भेजा है। इससे पहले मैंने इस विषय में डा. वैटर व आपकी राय नहीं ली थी, क्योंकि आवश्यकता महसूस नहीं हुई। किंतु अब चूंकि योजना मूर्त रूप ले रही है और यदि ठीक प्रकार कार्यरत हुई तो लाभकारी भी होगी, मैं निम्न मुद्दो पर आपकी राय लेना चाहूंगा।

1. क्या वे लोग जिनके साथ मुझे कार्य करना है, विश्वसनीय हैं?

2. क्या योजना सही दिशा में है?

मैं कहना चाहूंगा कि पूरे वार्तालाप और पत्राचार के दौरान मुझे श्री फाल्टिस सज्जन और विश्वसनीय व्यक्ति लगे है। किंतु परम मित्र होने के नाते मुझे आगे बढ़ने से पहले आप लोगों से परामर्श लेना ही चाहिए। कृपया इस बात को पूर्णतः गुप्त ही रखें और यथाशीघ्र मुझे पत्रोत्तर दें।

एक कटिंग भेज रहा हूं, जिसमें आपको भी दिलचस्पी होगी। ब्रिटीश का एक और उदाहरण।

मैंने आपको एक लंबा खत लिखा था जो अब आपको मिल चुका होगा। आप

दोनों को शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

होटल एक्सैल्सियर
रोम
21.12.1933

प्रिय श्रीमती वैटर

रोम से मेरे इस पत्र को पाकर आप आश्चर्यचकित रह जाएंगी। 19 तारीख को अचानक मुझे इंडियन ओरिएंटल इंस्टीट्यूट के उद्घाटन–समारोह का सरकारी निमंत्रण मिला, 19 की शाम जल्दबाजी में मैंने नाइस से प्रस्थान किया और दोपहर यहां पहुंचा कल की यात्रा दुखद रही। आज यहां रोम में मौसम बहुत साफ है बल्कि कहना चाहिए कि सबसे अच्छा है।

विएना बैच के लगभग 22 विद्यार्थी भी यहां आए हैं। यूरोप के विभिन्न केंद्रों से लगभग 90 भारतीय विद्यार्थी और 150 चीनी विद्यार्थी यहां पहुंचे हैं।

ओरिएंटल इंस्टीट्यूट का औपचारिक उद्घाटन आज प्रातः हुआ हम सभी वहां उपस्थित थे। कल और उसके बाद एशियाटिक स्टूडेंट्स कांफ्रेंस को श्रीमान मुसोलिनी संबोधि करेंगे,

नाइस आने के बाद से मेरा स्वास्थ्य कुछ बेहतर था तभी मेरा यहा आ पाना संभव हुआ। वहां मुझे आपके दो पत्र मिले थे। धन्यवाद। शेष अगले पत्र में। श्री वैटर व आपको प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नेताजी संपूर्ण वाङ्‌मय
नाओमी सी. वैटर
मिलान
12.1.1934
होटल
प्रिंसिप 7. सवोला,

प्रिय श्रीमती वैटर

आप हैरान होंगी कि जब से मैं रोम आया हूं मुझे क्या हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने अब तक आपको सब कुछ बता ही दिया होगा। अतः रोम में क्या हुआ मैं संक्षेप में आपकों बताऊंगा।

1. ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ रोम (बल्कि, इटली कहना चाहिए) का 21 दिसंबर को उद्घाटन समारोह था।

2. 22 से 28 दिसंबर को एशियाटिक स्टूडेंट्स की मींटिग थी जिसमें यूरोप के विभिन्न केंद्रों के लगभग 600 एशियाटिक स्टूडेंट्स ने भाग लिया।

इटली की गाड़ियों में यात्रा निःशुल्क थी और रोम में एक सप्ताह तक रहने व खाने–पीने की सुविधा भी निःशुल्क उपलब्ध कराई गई थी। 22 दिसंबर को संगठन को मुसोलिनी ने संबोधित किया। वक्ता के बारे में हमारी राय कुछ भी हो, किंतु भाषण अच्छा था। उन्होंने कहा––यह सोचना मूर्खता है कि पूर्व और पश्चिम कभी एक नहीं हो सकते। पहले भी यूरोप और एशिया के मध्य रोम ने कडी का काम किया था वैसा ही वह अब भी करेगा। इसी पुनर्मिलन में विश्व की गति है। रोम ने यूरोप में पहले उपनिवेशवाद फैलाया था किंतु एशिया के साथ उसके संबंध मैत्रीपूर्ण और सहयोग के रहे हैं।

3. इंडियन स्टूडेट कन्वेशन रोम में तीसरी बार एकत्र हुई, इससे पहले वर्ष 1931 में लंदन में और 1932 में म्यूनिख में हुई थी। यह निर्णय लिया गया कि यूरोप में फेडरेशन ऑफ इंडियन स्टूडेंटस के आफिस को लंदन से विएना में स्थानांतरित कर दिया जाए। मैंने इस विचार था का हार्दिक स्वागत किया और अपनी सहमति भी दी और मेरे मन में यही विचार था कि विएना में हमारे पास आप जैसे भले मित्र भी हैं। यह भी निर्णय हुआ कि इंडियन स्टूडेंट्स की चौथीकन्वेंशन विएना में वर्ष 1934 में आयोजित की जाएगी। इस सब का अर्थ है कि न केवल विएना में रह रहे भारतीय विद्यार्थियों बल्कि उनके मित्रों पर भी काफी जिम्मेदारी आन पड़ी हैं। मैं जानने को उत्सुक हूं कि आपकी राय में हमें क्या करना चाहिए।

बैठक व सम्मेलन के पश्चात मैं रोम में लगभग पंद्रह दिन रूका रहा। बहुत–सी बातों को जानने की दृष्टि से तथा भारत के लिए कुछ मित्र बनाने की दृष्टि से। संक्षेप में मैं अपने अनुभव लिख रहा हूं–

1. रोम में कुछ लोग ऐसे हैं जो वास्तव में भारत के प्रति रूचि रखते हैं।

2. सामान्यतः लोग भारत के विषय में कुछ नहीं जाने किंतु जानना चाहते हैं।

भारत के प्रति कोई पूर्वाग्रह नहीं बल्कि सहानुभूति है।

3. सामाजिक दृष्टि से इटलीवासी एकांतप्रिय हैं। जब त कवे विदेशियों को भलीभांति जान नहीं लेते तब तक उन्हें अपने घर आमंत्रित नहीं करते। मुझे पता चला है कि ऐसी ही फ्रांस के लोगों की भी स्थिति है। किंतु यूरोप के अन्य स्थानों पर मैंने जर्मन बोलने वाले लोगों में इसके विपरीत आचरण अनुभव किया है।

4. मेरे विचार में मैंने रोम में जिन लोगों से परिचय स्थापित किया उनमें भारत के प्रति गहरी रूचि जगाने में सफलता पाई है। किंतु अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी कि वे इस दिशा में कितना कार्य करते हैं। अधिकारियों का रवैया भी अब ठीक है और वे पूर्व के साथ संबंध स्थापित करने के इच्छुक भी हैं। यदि ऐसा ही रवैया विएना और बर्लिन के अधिकारियों में भी होता तो मुझे विश्वास है कि हम वहां कुछ उपयोगी कार्य करने में सक्षम होते।

नववर्ष पर सुंदर उपहार भेजने के लिए अनेकानेक धन्यवाद। इससे अच्छा और कोई उपहार हो ही नहीं सकता।

आपने अपने पिछले पत्रों में यह जानना चाहा है कि घर वापिस लौट कर मेरा क्या होगा। आपको चिंतित होने की आवश्यकता नहीं। वे मुझे बंबई पहुंचने से रोक नहीं सकते और यदि वे वहा पहुंचने पर मुझे जेल में डालते हैं तो भी मुझे कोई चिंता नहीं । जब तक भारत में ऐसी दशा रहेगी जैसी कि आजकल है, वे मुझे बबई पहुंचत ही जेल में डालेंगे—किंतु इस विषय में कुछ नहीं किया जा सकता। अत जब तक मैं यूरोप में हूं मुझे अपनी स्वतंत्रता का पूरा—पूरा उपयोग कर लेना चाहिए।

आपको श्रीमती एव श्री एन. के. बोस का स्मरण होगा जो कुछ सप्ताह पूर्व विएना में थे। श्रीमती बोस एक दिलचस्प परिवार से संबंध रखती हैं। उनकी एक बहन पिछले 9 वर्ष से, सन् 1932 में दीक्षांत समारोह में बंगाल के गर्वनर को मारने के प्रयास के आरोप में जेल में हैं। वह उस समारोह में अपनी स्नातक की उपाधि लेने गई थीं किंतु कुछ गोलियां, जो निशाने पर नहीं लगीं, चलाने के बाद गिरफ्तार कर ली गई। वह लडकी प्रकृति से बहुत शांत व शर्मीली हैं। दूसरी बहन स्नातकोत्तर उपाधि लेने के पश्चात बिना किसी वजह जेल में है। यह हमारी नई पीढ़ी है। अब मैं समाप्त करता हूं। 18 जनवरी को मैं जिनेवा पहुंच जाऊंगा। जिनेवा में मेरा पता होगा—!

• द्वारा श्रीमती होर्प, 23 एवेन्यू बीयू सेजोर, जेन्फ, स्वीज,

सदर,

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

सुभाष चंद्र बोस

बिवाबती बोस को

मिलान, इटली

16.1.1934

प्रिय मेजो बोवदीदी

मैं 20 दिसंबर को रोम पहुंच गया था और लगभग तीन सप्ताह वहीं व्यतीत किए। अशोक आया था और लगभग आठ नौ दिन यहां रहा। मैंने रोम से एयरमेल द्वारा मेजदादा को एक लंबा पत्र लिखा था।

अब मैं जिनेवा की यात्रा पर हूं। तीन–चार दिन पहले ही मिलान पहुंचा हूं और परसों जिनेवा के लिए रवाना होऊंगा। वहां मेरा पता रहेगा–द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी।

क्या आप बता सकती है कि परिवार में बार–बार पैराटाइफायड का आक्रमण क्यों हो रहा है? मेरे विचार में इस पर कुछ विचार और खोज की जानी चाहिए। अब तक शायद कोई भी सदस्य इससे बचा नहीं, इसलिए इसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होंगा। पुतुल अब कैसा है? मिलान में खींचे दो चित्र भेज रहा हूं। कृपया एक मंजदादा को भिजवा दें । साथ में गोपाली और मेजदादा के पत्र भी भेज रहा हूं। कृपया डाक द्वारा दोनों को यथास्थान भिजवा दें।

आपका

सुभाष

पुनश्चः– श्री पी.सी. बासु ने लिखना बंद क्यों कर दिया?

सुरामा दे को

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी

जिनेवा

21.1.34

प्रिय महोदया,

आपका 5 अक्तूबर का पत्र समय पर मिल गया था किंतु पत्रोत्तर देने में देरी हो गई। कृपया क्षमा करें।

इस बीच, बूडापेस्ट के चित्र आपको भिजवा दिए गए थे। पता नहीं आपको मिले या नहीं, आशा है मिल गए होंगे। यदि नहीं मिले तो कृपया मुझे सूचित करें ताकि मैं पूछताछ करूं।

मेरा स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा बेहतर है। पेट दर्द भी पहले से कम है और वनज भी कुछ बढा है। किंतु अभी भी स्वस्थ होने में कुछ समय लगेगा। अब मैं अपने स्वास्थ्य की देखभाल भी खूब करता हूं।

इस पत्र के साथ मैं अमिया के लिए भी एक पत्र भेज रहा हूं। कृपया उसे बुला कर यह पत्र उसके हवाले करा दें।

आशा है आप सभी पूर्णतः स्वस्थ हैं।

सादर प्रणाम,
आपका
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

23, एवेन्यू बीयू सेजूर
जिनेवा
6 2.1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

• पिछले कई दिनो से आपका कोई समाचार नही।

मेरे ख्याल से अतिम पत्र मैंने ही लिखा था।

तीन सप्ताह पूर्व मैं इटली से यहां आया हूं। रोम आते हुए मैं कुछ दिन मिलान रूका था। भारतीय विद्यार्थियों का एक दल मिलान मे अध्ययन हेतु आया हुआ है।

यहा आने के पश्चात मैं श्रीमती होरप की, उनके द्वारा भारत पर प्रकाशित बुलेटिन मे, सहायता करने मे व्यस्त था । वे भारत पर तीन भाषाओं मे बुलेटिन प्रकाशित करेंगी यानी कि—अग्रेजी, फ्रेच और जर्मन मे। कल मैंने आपको जनवरी के बुलेटिन की जर्मन कापी भेजी थी। आशा है इस माह की प्रति आपको जल्दी मिल जाएगी।

मेरे बडे भाई जो आजकल भारत में हैं, पिछले आठ वर्षों से कलकत्ता नगर पालिका के एल्डरमैन थे। उन्होंने मुझे पत्र लिखकर पूछा है कि क्या विएना नगरपालिका की कार्य पद्धति पर अग्रेजी में कोई पुस्तक है। मैंने श्री कटयार को भी लिखा है कि वे आपसे ऐसी किसी पुस्तक का नाम पूछकर उसकी एक प्रति मुझे भिजवाए जो मैं अपने भाई साहब को भिजवा सकूं।

श्री सुंदरलैंड की पुस्तक 'इडिया इन बाडेज' के अनुवाद कार्य में कुछ प्रगति हुई? ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मैं आपको लिखना चाहता हूं किंतु उन्हे अगले पत्र के लिए रखूंगा। आशा है इस बीच आपका पत्र मुझे मिलेगा। श्री वैटर व आपको सादर नमस्कार।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

23, एवेन्यू बीयू सेजोर
जिनेवा
14.2.1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

आज के शाम लंदन के अखबारों में आस्ट्रिया के विषय में दुखद समाचार पढा। मैं 'टाइम्स' की कटिंग साथ में भेज रहा हूं जिससे आपको अनुमान होगा कि आस्ट्रिया के बाहर क्या कुछ छप रहा हैं।

इन परिस्थितियों में आप कैसा अनुभव कर रहे होंगे मैं समझ सकता हूं। यह कहना आवश्यक नहीं कि मैं आस्ट्रिया में विशेषरूप से विएना के मित्रों के प्रति अत्यधिक चिंतित हूं।

लंबे समय से आपका समाचार व खत न मिलने से चिंतित था और उस चिंता का श्री रोशोवास्की के पत्र ने आपकी अस्वस्थता की सूचना देकर और बढ़ा दिया है। मैं आपको तार भेजने ही वाला था कि आपका चिरप्रतीक्षित पत्र मिला।

आज मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगा। कृपया इतना अवश्य लिखें कि आप सब कैसे हैं। श्री वैंटर की ओर से भी बहुत चिंतित हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक,
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
जिनेवा
15 फरवरी, 34

प्रिय सुनील,

यहां लौटने पर 24 जनवरी 34 को तुम्हारा पत्र मिला। रोम और मिलान की यात्रा के पश्चात मैं 18 जनवरी, 34 को नाइस पहुंचा था। पहले की अपेक्षा अब मेरा स्वास्थ्य ठीक है और कुछ वनज भी बढ़ा है। प्रगति बहुत ही धीमी है और दिनचर्या से थोड़ा भी इधर--उधर होने से पेट का दर्द असहनीय हो जाता है। दर्द पहले से कम तो है किंतु हल्का--हल्का दर्द हमेशा बना रहता है पता नहीं कब पहले की तरह स्वस्थ हो पाऊंगा।

पृथकतावादी झगडों को समाप्त करने के विषय में तुम्हारा विचार पढ़कर अच्छा लगा। श्रीमती सेनगुप्ता कैसी हैं और इस विषय में उनके क्या विचार हैं। कुछ समय पूर्व मैंने किया था किंतु आज तक उनका जवाब नहीं आया।

सबको एकत्र करने के लिए तुमने एक सम्मेलन का उल्लेख किया था। इस विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने को मैं उत्सुक हूं।

तुमने जिस पुस्तक का जिक्र किया है वह भेजने की कोशिश करूंगा। इस कार्य में कुछ विलंब हो सकता है, क्योंकि उसकी अतिरिक्त प्रति मेरे पास नहीं है।

पिछले माह मिलान में खींचे एक चित्र की प्रति भेज रहा हूं।

एक लंबे समय से, शायद पांच या छः माह से तुम्हे पत्र नहीं लिख पाया।

अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी का तार का पता सभी जगह यही है– अमैक्सको। केवल विएना के लिए तार का पता हैं–ट्रैवामैक्स लगभग सभी बडे शहरों में अमेरिकन एक्सप्रेस के उप कार्यालय हैं।

आजकल मेरी अपनी पार्टी कोई नहीं हैं। नई नींव पर नई पार्टी बनाने की आवश्यकता है। मैं डरपोक लोगों के साथ कार्य नहीं कर सकता। इस संगठन से दो किस्म के लोगों को अलग रखने की आवश्यकता है–डरपोक और स्वार्थी।

फिलहाल मैंने आपरेशन की सलाह ठुकरा दी है। पिछले तीन–चार माह से मैं विएना के प्रोफेसर न्यूमान के उपचार में हूं जिससे मुझे काफी लाभ हुआ है। आजकल मैं श्यामदास कविराज द्वारा बताई गई मकरध्वज भी ले रहा हू।

रोम और मिलान में बिताए दिन आनंददायक रहे। वहा के मुख्य समाचार पत्रों में मैंने भारत के संबंध में लेख लिखे, मिलान में सबसे बड़ी सोसायटी (सिसलो फिलोलोगियों सोसायटी) में 'इटली व भारत' विषय पर भाषण भी दिया। गणमान्य व्यक्ति वहां एकत्र हुए थे।

आशा है तुम ठीक–ठीक हो।
शुभकामनाओं सहित
तुम्हारा शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

23, एवेन्यू बीयू, सेजूर
जिनेवा
17.2.1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

विएना में पिछले कुछ दिन से जो कुछ हो रहा है, उसके लिए मैं काफी चिंतित हूं। पहले भी आपको पत्र लिख चुका हूं। जब तक आपका कोई समाचार नहीं मिलता मैं चिंतित रहूंगा। कृपया तुरंत सूचित करें कि आप सब लोग कैसे हैं।

सदैव आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

श्रीमती एन. सी वैटर
द्वारा प्रेजीडेंट डा. वैटर
वेहरिंगर स्ट्रासे–41
विएन–9
(आस्ट्रिख)

ई. वुड्स को,

23, एवेन्यू बीयू, सेजूर
जिनेवा
29.2.1934

प्रिय श्रीमती वुड्स,

12 जनवरी का आपका कृपापत्र पाकर प्रसन्नता हुई। आपके पत्र का उत्तर देने में विलंब हुआ, क्षमा चाहता हूं। आशा है इस बीच आपका पुत्र पूर्णतः स्वस्थ हो गया होगा।

कृपया मुझे सूचित करें कि भारत से कौन–कौन से दैनिक अंग्रेजी राष्ट्रीय समाचार–पत्र आपको प्राप्त हो रहे हैं। संभव है मैं सहायता कर सकूं कि वे आपको निरंतर प्राप्त हो सकें।

मैडम मैकब्राईड के पत्र का उत्तर देने में विलंब हुआ, क्षमा चाहता हूं। मैंने अभी उन्हें सब कुछ बताते हुए एक विस्तृत पत्र लिखा है।

बुलेटिन आपने मुझे भेजा उसके लिए धन्यवाद। मेरी उसमें बहुत दिलचस्पी थी। कुछ दिन पूर्व यहां से प्रकाशित बुलेटिन की प्रति आपको भिजवाई थी। हम प्रतिमाह तीन भाषाओं–अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन–में बुलेटिन प्रकाशित करेंगे।

भारत में सरकारी दबाव के विषय में आप द्वारा सुझाए गए मुद्दों पर मैं लेख लिखना चाहूंगा। शायद अब तक लिख भी चुकता लेकिन यहां के कुछ विषयों के कारण में बहुत व्यस्त था। किंतु आशा है शीघ्र ही लिखूंगा। मैं आपको भेज दूंगा और आप उसे सबसे अच्छे समाचार–पत्र में प्रकाशित करा सकेंगी। प्रचार की दृष्टि से, मेरे विचार में,

आइरिश प्रेस सबसे अच्छा रहेगा।

हम आपके आभारी हैं कि आपने श्रीमती कजिन के नेक अनुभवों पर प्रकाशित लेख पर तत्काल टिप्पणी भेजी। मुझे पढकर बहुत आश्चर्य हुआ। सच कहूं तो मैं उनकी मानसिकता समझ नहीं पाया हूं।

कृपया आयरलैंड के कुछ परिचित अखबारों के पते भिजवाएं। हम उन्हें भी अपना बुलेटिन सीधे भेजेंगे। जनवरी का अंक केवल आयरिश प्रेस व फ्री प्रेस जर्नल और अमृत बाज़ार पत्रिका आदि के मिल रहे हैं। क्या ये आपको लगातार यानी ह सप्ताह प्राप्त होर ही हैं? आपको इन पत्रों के दैनिक संस्करण या साप्ताहिक संस्करण में से कौन से मिल रहे हैं।

मैडम मैकब्राइड ने लिखा है कि धनाभाव के कारण आई. आई लीग का कार्य समाप्त करना होगा। आशा है जैसे भी संभव होगा आप उसे जारी रखेंगी। मेरी ओर से, मैं इस अनुबंध को पूर्ण करने का हर संभव प्रयास करूंगा।

यहीं भारतीय समिति की सचिव डेनिश महिला–मैडम होरप है, मैंने उनसे आई. आई. लीग और आयरलैंड के मित्रों संबंध में बात की थी। उन्होंने काफी दिलचस्पी ली।

शुभकामनाओं सहित
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सत्येंद्रनाथ मजूमदार

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी,
जिनेवा
22.2.34

प्रिय सत्येन बाबू,

आपका 23 नंवबर का पत्र मुझे 11 दिसंबर को प्राप्त हुआ, पढकर प्रसन्नता हुई। आपकी सब बातों से मैं सहमत नहीं हूं, किंतु मुझे प्रसन्नता है कि आप मुद्दों की जड तक तो पहुंचे।

देश की वर्तमान स्थिति का जो खाका आपने खींचा है, वह बिल्कुल सही है। किंतु क्या आपने कारण का सही संकेत है? आपने लिखा है–

"यह कहना कठिन है कि जिम्मेदार कौन है–राष्ट्रीय चरित्र की कमजोरी या फिर लोक अवज्ञा में खामी होना।" मेरा कहना है कि यदि नेतागण सफलता का श्रेय

लेना चाहते हैं तो असफलता का कलंक भी झेलना होगा। यह कहने से काम नहीं चलेगा कि–"देश के लोगों ने साथ नहीं दिया–देश के लोगों में चारित्रिक दृढ़ता नहीं है। आदि–आदि" जब नेता अपने कार्यक्रम की घोषणा करता है तो, उसे अपना कार्यक्रम बनाना होगा और मानवीय पक्षों को ध्यान में रखकर ही कार्यक्रम तैयार करना होगा। मेरा कहना इस प्रकार है:

(1) नेताओं ने जिस मार्ग को अपनाया है, उससे सफलता मिलना संभव नहीं।

(2) उन्होंने देश के सम्मुख आत्म–बलिदान के संदेश को क्षुद्र कर दिया है। आप कह सकते हैं कि नेताओं ने देश, समय और उद्देश्यों का आकलन करने के पश्चात जानबूझकर ऐसा किया है और अपेक्षाकृत नरमाई का रूख अपनाया है। इसके उत्तर में मैं कहना चाहूंगा कि यदि ऐसा है तो होने दें। जो बीत चुका उसे लकर मैं झगडना नहीं चाहता। किंतु अब नेताओं के सामने आकर देशवासियों को बता देना चाहिए कि कठोर निर्णय लेने का समय आ गया है और अब हमें मध्यम मार्ग अपनाना होगा। मैं नेताओं को अपमानित करने या उन्हें छोटा करने के लिए आलोचना नहीं कर रहा बल्कि भविष्य के मार्ग का निर्णय करने की दृष्टि से यह सब कह रहा हूं। किंतु आपको लगता है कि आलोचना का अर्थ उनकी बुराई करना है और उनके पूर्ण कार्य व आंदोलन की निंदा करना है। किंतु जिस आंदोलन से मेरा अस्तित्व अभिन्न रूप से जुड़ा है, मैं उसकी अवज्ञा कैसे कर सकता हूं।

आपने लिखा है कि – "हम लोग महात्मा गांधी का अंधानुकरण नहीं कर रहें।" किंतु मैं पूछता हूं कि प्रतिदिन आनंद बाजार पत्रिका पढने वाला व्यक्ति क्या राय कायम करेगा? क्या आपने कभी किसी रूप में महात्मा गांधी का, उनके आंदोलन की आलोचना की है? पाठक नहीं जानते कि आपके मस्तिष्क में क्या है। वे तो केवल आनंद बाज़ार पत्रिका पढ़ते हैं। कब तक अंधानुकरण होता रहेगा, नेताओं की आंखें नहीं खुलेंगी।

फिर आपने लिखा है –" आज बंगाल में कोई ऐसा नेता नहीं जो बंगाल को, एकत्र कर सके और राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बना सके।" किंतु मेरे प्रिय पत्रकार मित्र मैं आपसे पूछता हूं कि क्या आपने लोगों के सम्मुख ऐसे किसी व्यक्ति की छवि रखने का प्रयत्न किया है? बंगाल के लोगों बंगाल की प्रेस से जैसा व्यवहार मिल रहा है वैसा देश के किसी अन्य प्रात में नहीं है। हम अपने लोगों को नीचा दिखाते हैं और फिर स्वयं को कोसते हैं। आपने देखा होगा कि अन्य प्रातों के पत्रकारों नें अपने लोगों की छवि कैसे निर्मित की है। मैं अपने ही विषय में कह सकता हूं कि. 1927 और 1928 के कुछ महीनों के अलावा, मुझसे भी अधिक सहयोग प्राप्त नहीं हो पाया। और मेरे पिछले बारह तेरह वर्षों के लोक जीवन के दौरान बंगाल की राष्ट्रीय प्रेस ने मेरे साथ जो

दुर्व्यवहार किया वैसा तो ब्रिटिश पत्रकारों के हाथों भी नहीं हुआ। ब्रिटिश उत्पीड़न ने मुझे हानि नहीं पहुंचाई बल्कि मेरे देशवासियों की दृष्टि में मुझे ऊंचा ही उठाया है, इसके विपरीत राष्ट्रीय प्रेस के अत्याचारों ने मुझे मेरे देशवासियों की नजर मे गिराया ही है। मुझे इसका दुख नहीं है। मेरी चिंता केवल आनंदबाजार पत्रिका के महात्मा गाधी के प्रति अपनाए गए रवैये को लेकर है–वही रवैया बंगाल के लोगों के प्रति क्यों नहीं? खैर! इस विषय को यहीं छोड़ दें।

एक और टिप्पणी के साथ मैं समाप्त करूगा। मैं जवाहरलाल नेहरू को समझ नहीं पा रहा–वे एक ही समय पर गांधीवाद और साम्यवाद का समर्थन कैसे करते है मेरी समझ से परे है। पिछले वर्ष जून में लंदन के अपने भाषण में मैंने अपनी राय जाहिर की थी। हाल ही में भारतीय प्रेस के लिए अपनी सम्मति भेजी। मैं नहीं जानता कि वह प्रकाशित भी होगी या नहीं। मैं नहीं जानता, कि आप इसे अभिमान भी कह सकते हैं, किंतु मेरा पूर्ण विश्वास है कि, जिस मार्ग का सकेत मैंने दिया है उसके अतिरिक्त कोई मार्ग सम्मुख नहीं है। एक–न–एक दिन तो हमारे देशवासियों को यह मार्ग चुनना ही होगा। मेरा मूल उद्देश्य साम्यवादी सघ का निर्माण करना है और साम्यवाद के उद्देश्य लोगो तक पहुंचाना है। इस प्रकार जो पार्टी बनेगी वही देश को स्वतत्र करा पाएगी। मेरा हार्दिक स्नेह स्वीकार करे। मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। आशा है आप सभी स्वस्थ्य हैं। क्या 'देश' का प्रसारण हो रहा है। आनंद बाजार मुझे लगातार मिल रहा है।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

किट्टी कुर्टी को,

23, एवेन्यू बीयू सेजूर
जिनेवा
23 2 1934

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

विएना से भेजा आपका कार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। वास्तव में मुझे तो आश्यर्च ही हुआ, क्योकि मुझे उम्मीद नही थी कि आप वहां होंगी।

आपका 22 दिसंबर का लंबा पत्र समय पर मिल गया था जो बहुत दिलचस्प था। मुझे खेद हैं कि पहले उसका उत्तर नहीं दे पाया।

साम्य का अर्थ बराबरी है और साम्यवादी, का अर्थ है जो बराबरी में विश्वास रखता है। संघ का अर्थ समूह या संगठन है।

'साम्य' एक बहुत प्राचीन भारतीय विचार है। जिसे ईसा से लगभग 500 वर्ष पूर्व बौद्धों ने प्रचारित किया था। इसीलिए यूरोप में प्रचारित अन्य नामों की अपेक्षा यह मुझे अधिक प्रिय है।

भारत की युवा पीढ़ी में धैर्य नहीं है। मेरी भांति उनका भी विचार है कि गांधी अपने विचारों में व कार्यों में आवश्कता से अधिक भले और मध्यमार्गी हैं। हम अधिक परिवर्तकारी आक्रामक नीति में विश्वास करते हैं। नेहरू के विचार हमारे पक्ष में अधिक हैं। किंतु व्यवहारिक रूप में वे महात्मा गांधी को समर्थन देते हैं। उनका मस्तिष्क उन्हें एक ओर खींचता है किंतु हृदय दूसरी ओर आकर्षित करता है। हृदय से वे गांधी के साथ हैं।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी यदि आप मुझे वे सभी लेख भिजवा सकें जो आपने भारत के संबंध में यूरोपीय पत्रों में पढ़े हैं।

मेरे विचार में जापानी पूर्व के अंग्रेज हैं एक जाति के रूप में चीनी अधिक अच्छे हैं, क्योंकि वे मानवीय, दयालु और सुरूचिपुर्ण हैं।

आप जानना चाहती हैं कि मैंने क्या—क्या पढ़ा है। मैंने दर्शन—जिसे इंग्लैंड में मनोविज्ञान एवं नैतिक विज्ञान कहते हैं पढ़ा है। उसके पश्चात मैंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा पास की, जिसके लिए मुझे अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, विधि आदि जैसे कई विषयों का अध्ययन करना पड़ा। बाद में मैंने सेवा से त्यागपत्र दे दिया, क्योंकि मैं विदेशी सरकार की सेवा करना नहीं चाहता था।

मनोविज्ञान में मेरी बहुत रूचि थी अतः कुछ समय तक मैंने प्रायोगिक मनोविज्ञान भी पढ़ा। यदि राजनीति में नहीं आया होता तो शायद आज एक मनोवैज्ञानिक होता।

एग्नेस स्मैडली की किस पुस्तक की आप चर्चा कर रही हैं? वे बहुत योग्य और चतुर लेखिका हैं।

शीघ्र ही मैं आर. आर. से मिलूंगा। उनकी बहन से मैं मिला था। वे जिनेवा में इंडियन कमेटी के लिए कार्य कर रही हैं।

अब आपका स्वास्थ्य कैसा है? क्या आपने सुंदरलैंड लिखित पुस्क 'इंडिया इन बांडेज' पढ़ी है?

पहले की अपेक्षा मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है, किंतु पूर्ण स्वस्थ्य नहीं हूं। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः—कृपया विएना के समाचार दें। चेक प्रेस के लिए मुझे किस विषय पर लेख लिखना चाहिए?

संतोष कुमार बासु, कलकत्ता को,
प्रिय मेयर साहब,

14 3.34

आशा है आपको मेरा, क्लिनिक ला लिग्नीयर स्विटजरलैंड से 19 अक्तूबर को लिखा, पत्र समय पर मिल गया होगा जिसके साथ मैंने कलकत्तावासियो व मेयर के लिए वारसा के मेयर (प्रेजीडेंट) का संदेश और वारसा के संबंध मे एक ब्रोशर भी भेजा था।

प्राग जाने के बाद पिछली जुलाई में मैं वारसा भी गया था। सिटी हाल में वाइस प्रेजीडेंट (डिप्टी मेयर) ने मेयर की अनुपस्थिति में मेरा स्वागत किया, क्योंकि वे उन दिनों गर्मियो की छुट्टियों में शहर से बाहर थे। अंतरंग बातचीत के बाद उनके कमरे में चित्र भी खींचा गया जो बाद में पोलिश अखबार में प्रकाशित भी हुआ और जिसकी प्रति मैंने 19 अक्तूबर के पत्र के साथ प्रेषित भी की थी।

पहले रूसी पोलैंड की राजधानी वारसा थी। पिछले युद्ध के बाद स्वतंत्र संयुक्त राज्य पोलैंड का गठन हुआ और नए पोलैंड की राजधानी वारसा बनी। पोलैंड स्वतंत्रता की उत्साह से वारसा शहर की प्रगति को बहुत लाभ हुआ। पिछले चौदह वर्षा में शहर ने बहुत प्रगति की और चारों ओर शानदार इमारतें बनी हैं। वारसा की सडकों पर चलने से नए जीवन की उमंग का अनुभव होता है।

शहर की इतनी उन्नति एवं प्रगति से नगर निगम पर काफी दबाव रहा है। मेयर की कृपा से मुझे निगम के कार्यो को देखने की सुविधा प्राप्त हुई। उन्होंने अंग्रेजी बोलने वाले अधिकारी व अन्य सुविधाएं मुझे मुहैया करा दी थी।

यह देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि नगर निगम और सरकार दोनों ही आपसी सहयोग से कार्य कर रहे हैं। जिस पहली चीज ने मुझे आकर्षित किया वह यह थी कि जनसंख्या वृद्धि के साथ—साथ जलापूर्ति की बढती मांग को पूरा करने के लिए इंजीनियरिंग कार्य हो रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वारसा की मुख्य नदी विस्तुला को बांधा जा रहा है। यूरोप के अन्य शहरों में मैंने देखा बिजली, गैस यातायात

आदि जैसे जनोपयोगी साधनों की देखभाल नगरपालिका के नियंत्रण में है। हाल ही में शहर की आवश्यकता को देखते हुए, गैस संयत्र का नवीनीकरण एवं वृहदीकरण हुआ है जिसे देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। सभी कार्य पोलैंड के इंजीनियर्स व अधिकारियों द्वारा किया गया है और जहां तक संभव था मशीनरी भी पोलैंड की ही निर्मित थी। नगर निगम के अधिकारीयों के आत्मविश्वास ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

युद्ध के बाद से वारसा की जनसंख्या दस लाख के लगभग बढी है और अब लगभग पंद्रह लाख के करीब है। दूसरे शब्दों में कलकत्ता की जनसंख्या के आस–पास पहुंच रही है। फिर भी मैंने अनुभव किया है कि निगम की आय कलकत्ता की अपेक्षा वारसा में अधिक है। इस संदर्भ में मुझसे कुछ निगम अधिकारियों ने प्रश्न भी किए और मुझे उन्हें बताना पडा कि कलकत्ता में कुछ लोक उपयोगी विभाग निगम के अधीन नहीं है अतः हमारी आय वारसा की आय की अपेक्षा कम प्रतीत होती है।

वरसा में मै निगम बेकरी भी देखने गया जो शायद पोलैंड, बल्कि पूरे यूरोप में अपने किस्म की सबसे बडी बेकरी है। आधुनिक उपकरणों से युक्त इस बेकरी में प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में डबलरोटी बनती है जो शहर की जनसंख्या की एक तिहाई मांग की आपूर्ति कर सकती है तथा आपात स्थिति में आपूर्ति बढाकर आधी जनसंख्या की पूर्ति की जा सकती है। दूसरे शब्दो में निगम बेकरी सामान्यत. इतनी डबलरोटी का उत्पादन करती है कि 5 लाख लोगो को बिना किसी कठिनाई के डबलरोटी उपलब्ध कराई जा सकती है।

जिस अन्य संस्था ने मुझे प्रभावित किया वह थी वारसा की शारीरिक एवं सांस्कृतिक संस्था, जो यूरोपभर में सबसे बडी संस्था है। कम अवधि में युवा पीढी के स्वास्थ्य निर्माण की आवश्यकता की पूर्ति के कारण इस विशाल संस्था का निर्माण संभव हुआ। शारीरिक प्रशिक्षण का सारा कार्य चिकित्सकीय–वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है और यहां एक प्रयोगशाला व अनुसंधानशाला भी है। प्राधिकरण की योजना यहां अन्य सुविधाओं से युक्त एक विशाल स्टेडियम के निर्माण की भी है जहां भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक खेलों का आयोजन भी हो सके। इसे देख कर मुझे उस योजना की याद आई जो कलकत्ता में निगम स्टेडियम और शारीरिक सांस्कृतिक संस्था के निर्माण के लिए तैयार की गई थी।

मेरी वारसा यात्रा का अंत वारसा के ओरिएंटल इंस्टीट्यूट द्वारा किए गए स्वागत समारोह से हुआ जिसमें गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मैंने उनके स्वागत का यथायोग्य शब्दों में उत्तर दिया। सभी स्थानों पर गर्मजोशी से किए गए मेरे अभिनंदन से मैं बहुत प्रभावित हुआ और लोगों में भारत एवं भारत की संस्कृति के प्रति रूचि ने भी मुझे प्रभावित किया। संस्कृत के विद्वान–प्रो. मिकाल्सकी से भेंट करने का सुअवसर

भी मिला। कुछ लोगों ने तो मजाक में यहां तक भी कहा कि यूरोप के लोगों में पोलिश भाषा की अपेक्षा संस्कृत के प्रति अधिक रूचि हैं।

कुल मिलाकर मेरी यह यात्रा मेरे लिए बहुत उत्साहवर्द्धक थी। यह देखकर मुझे अनुभव हुआ कि वर्षों से दबाए गए लोग भी, समय आने पर कितनी उन्नति कर सकते है और यदि उन्हे अवसर प्रदान किए जाएं तो वे अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करा करने के लिए ऊपर उठकर कार्य भी कर सकते हैं। लोक उत्थान की दृष्टि से यूरोप भर में वारसा को सबसे उत्तम शहर की सज्ञा दी जा सकती है। आधुनिक शहरों में जब तेजी से विस्तार होता है– जैसा कि पिछले दिनों कलकत्ता का हुआ–तब सामने आनेवाली समस्याओं का निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है, के अध्ययन के लिए वारसा शहर के अध्ययन से अच्छा अन्य कोई स्थान नहीं है। सभी उच्चधिकारियों ने मुझे आश्वासन दिया कि यदि कलकत्ता में समस्याओं के निराकरण हेतु आवश्यकता महसूस की गई और उनकी सेवाओं की आवश्यकता महसूस हुई तो वे सहर्ष प्रदान करेंगे।

मेयर साहब मुझे आशा है कि वारसा के निगम द्वारा आपको एव कलकत्तावासियों को भेजी गई शुभकामनाओं सहित मैं,

आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस
14 मार्च, 1934

कांतिलाल पारीख को,

म्यूनिख
24.3 1934
प्रिय कांतिलाल

एक लंबे समय से तुम्हारा कोई समाचार नहीं। अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? मुझ पता चला है कि आजकल तुम अहमदाबाद में हो। कृपया शीघ्र मुझे निम्न पते पर पत्र लिखो–द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, विएना (अथवा जिनेवा)

21 मार्च को मैं यहा आ गया था। अप्रैल के मध्य तक मैं विएना मैं ही रहुंगा।

स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा बेहतर है, यद्यपि प्रगति बहुत धीमी है। आशा है आप पूर्वतः स्वस्थ है।

तुम्हारा अपना
सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

ईडन होटल

बुडापोस्टर स्ट्रीट
बर्लिन
30.3.1934

मानवीय प्रेजीडेंट वैटर
व्हरिंगर स्ट्रासे–41
वीयन–9
(आस्ट्रिख)
प्रिय श्रीमती वैटर

ईस्टर के उपलक्ष्य में हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें। प्रेजीडेंट वैटर तक शुभकामनाएं पहुंचा दें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

इलस्ट्रेट दास हौस तथा ऐसे ही कुछ अन्य पत्र भारत विरोधी लेख प्रकाशित कर रहे है, जिनसे जर्मनी के लोगों के बीच भारतीय लोगों की अवमानना होती है और छवि बिगड़ती है और यह सब उस समय हो रहा है जब जर्मन प्रेस पर पूर्णतः सरकार का नियंत्रण हैं।

पिछले वर्ष जब मैं बर्लिन में था तब मैंने हिटलर (मीन काम्फ) तथा एल्फर्ड रोजे नवर्ग (माइथो ऑफ द ट्वैटीएथ सैंचुरी) जैसी महान हस्तियों द्वारा अपनी पुस्तकों व अन्य लेखों में भारत के प्रति दुर्भावनापूर्ण रवैया अपनाने से, पड़ने वाले दुष्प्रभावों की तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित किया था। किंतु 20 फरवरी, 1934 के लंदन के डेली मेल में प्रकाशित जनरल गोरिंग के साक्षात्कार में महात्मा गांधी के संबंध में की गई टिप्पणी से स्थिति और खराब हुई है। इस साक्षात्कार में जनरल गोरिग ने श्री गांधी को ब्रिटिश विरोधी बोल्शेविक एजेंट बताया है और कहा है कि उन्होंने कई वर्ष पूर्व श्री गांधी के सहयोगी से मिलने से मनां कर दिया था। श्री गांधी को बोल्शेविक एजेंट बताना बिल्कुल गलत है और इस तथ्य से सभी वाकिफ है कि श्री गांधी साम्यवादियों से घृणा करते हैं, वे चाहे भारतीय हों या विदेशी। भारत से अनेकों मित्र मुझे लगातार पत्र लिखकर पूछ रहे है कि भारत ने तो जर्मनी को कोई हानि नहीं पहुंचाई फिर जर्मनी की हिटलर जैसी महत्वपूर्ण हस्तियां भारत के विरूद्ध क्यो हैं? इन प्रश्नों का जवाब देने में मैं असमर्थ हूं, क्योंकि जर्मन नेताओं ने स्वयं भारत के प्रति अपना रूख अभी तक स्पष्ट नहीं किया है।

भारत और जर्मनी के मैत्रीपूर्ण संबंधों को सबसे ज्यादा खतरा जर्मनी द्वारा फैलाए जा रहे जाति–प्रचार के प्रभाव से उत्पन्न हुआ है। एक सप्ताह पूर्व जब मैं

मुनेकन की सड़क पर घूम रहा था तो जर्मनी के कुछ बालकों ने मुझे 'नीगर' कहकर संबोधित किया। यहां के भारतीय विद्यार्थियों ने भी मुझे बताया कि उन सबको भी जर्मन बच्चे 'नीगर' कहकर ही पुकारते हैं। इसके अतिरिक्त वैसे भी आजक़ल जर्मनी का रूख भारत के प्रति पहले जैसा मैत्रीपूर्ण नहीं रहा है। ऐसा ही अनुभव बर्लिन में रह रहे भारतीयों का भी है, किंतु मुनकेन में स्थिति बहुत खराब है जहां कुछ अवसरों पर भारतीय विद्यार्थियों ने यह भी अनुभव किया है कि जर्मनी के स्कूलों व कालेजों में चल रहे वर्तमान जाति–प्रचार के कारा भारतीयों की राय है कि जर्मनी के स्कूलों व कालेजों में चल रहे वर्तमान जाति–प्रचार के कारण भारतीयों के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न हो रहा है। इससे पहले तो जर्मनी में कभी ऐसा वातावरण नहीं रहा।

मैं आप लोगों का ध्यान नेशनल सोजियलिस्टिक स्ट्राफ्रेख्ट में विधि मंत्रालय द्वारा छापे गए प्रारूप की ओर दिलाना चाहूंगा जिसमें कहा गया है कि यहूदी, नीग्रो और कालों के विरूद्ध नियम विचाराधीन है। जर्मनी में रह रहे भारतीयों की राय है कि यदि यह प्रारूप नियम बन जाता है तो राष्ट्र के रूप में भारत की स्थिति सदा के लिए जातिहीनता की हो जाएगी। इस कारण यह प्रारूप भारतीयों के लिए पर्याप्त चिंता व विरोध का कारण बना हुआ है।

मेरी राय में यदि जर्मनी और भारत के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधों की स्थापना करनी है तो निम्न कदम उठाए जाने चाहिए।

(1) जर्मनी के पत्र–पत्रिकाओं में भारत विरोध पर रोक लगाई जाए।

(2) कुछ जिम्मेदार वरिष्ठ नेताओं द्वारा पूर्व प्रचारित विरोध के प्रभाव को निष्क्रय करने के लिए, मैत्रीपूर्ण टिप्पणियां की जाएं।

(3) भारतीयों के विरूद्ध प्रस्तावित जातिगत कानून को रोका जाए। जर्मनी के स्कूलों व विश्वविद्यालयों में जाति–प्रचार समाप्त किया जाए ताकि भारतीयों के विरूद्ध घृणा के भाव पर रोक लंग सके।

सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु, मेयर कलकत्ता को,

7 अप्रैल 1934

महोदय,

मेरी बर्लिन यात्रा व वहां के मेयर (ओबरबर्गर मीस्टर) द्वारा किए गए अभिनंदन के संदर्भ में, यह मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको तथा निगम को वह सब बताऊं जो मैंने वहां के निगम प्रशासन में देखा।

यद्यपि यहां की जनसंख्या चालीस या पचास लाख के लगभग है फिर भी वैसी भीड़–भाड़ नहीं जैसी की अपेक्षा की जा सकती है। इसका कारण यही है कि शहर पूर्णरूप से आधुनिक हे और योजना बनाते समय काफी स्थान घेरा गया है। शहर की घनी आबादी को ध्यान में रखकर, जल, गैस और बिजली की आपूर्ति के स्थान केंद्र में न रखकर, शहर के विभिन्न हिस्सों में रखे गए हैं। सभी जन उपयोगी विभाग, यातायात सहित, नगर निगम के नियंत्रण में हैं।

कलकत्तावासियों की समस्याओं के संदर्भ में मुझे यहां के जल, मलव्ययन, सड़कों, तथा बिजली विभाग जैसे विभागों में विशेष रूचि थी। मैने देखा कि जल आपूर्ति की व्यवस्था के लिए बर्लिन के निकट नहरों पर बांध बना दिए गए और साथ ही भूमि के नीचे से, जैसे हम लोग टयूबवेल के पानी का प्रयोग करते है वैसे ही, पानी पंप करने की व्यवस्था भी की गई। मुझे पता चला है कि शहर में जल आपूर्ति के लिए ऐसे 13 स्टेशन बनाए गए हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यहां जल–मल व्ययन व्यवस्था कके लिए केवल एक निकासी का प्रबंध नहीं, बल्कि कई निकास स्थानों की व्यवस्था है। गंदगी व कूड़ा–कर्कट समाप्त करने के लिए, बडे शहरों के बाहर, आधुनिक संसाधनों के आधार पर उसे जलाने के संयत्र कार्यरत हैं। कूडे को तथा जलाने के बाद बने पदार्थ को खेतीबाड़ी के उपयोग में लाया जा रहा है। इतने बड़े शहर की यह व्यवस्था, कि वह इस गंदगी को नदी या समुद्र में डाले बिना किस प्रकार खत्म करने में सक्षम है, दर्शनीय है। इस विधि से उन्हें प्रतिदिन 8,000 क्यूबिक मीटर गैस की प्राप्ति होती है। मुझे बताया गया कि इससे उन्हें मीथेन गैस की प्राप्ति होती है।

सड़क निर्माण कार्य के प्रयोगों के लिए बर्लिन में आधुनिकतम प्रयोगशालाएं हैं। मुझे कुछ प्रयोगशालाओं में जाकर वहां की कार्यपद्धति को देखने का सुअवसर मिला। प्रयोगशालाओं में जाने के बाद मैंने वे सड़कें भी देखी जिनका निर्माण हाल ही में किया गया था। मैंने देखा कि कंक्रीट के ऊपर डामर बिछाकर उनका निर्माण हाल ही में किया गया था। मैंने देखा कि कंक्रीट और उस पर डामर की परत बिछाने पर, उनका ग्यारह मार्क (लगभग 1 रू.) का खर्च बैठता है, इसमें 5 वर्ष तक मरम्मत का खर्च भी शामिल है।

मैंने यहां के जनसाधारण के लिए बनाए गए स्नानागारों (विशेष रूप से वैंनसी–लक के स्नानागार) तथा शहर के मुख्य अस्पतालों का भी निरीक्षण किया।

मानसिक रोगियों के लिए बने गृह तथा विकलांगों की देखभाल के लिए बने संस्थानों को देखने में मेरी विशेष रूचि थी और मैंने अनुभव किया वहां उनकी देखभाल तथा शिक्षा के लिए आधुनिकतम विधियों का प्रयोग हो रहा है।

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

बिजली आपूर्ति के लिए वहां कम से कम सात स्टेशन हैं कुछ बड़े–बड़े स्टेशनों को देखने मैं भी गया। विद्युत केंद्रों के बायलरों में केवल भट्टियां ही नहीं बल्कि राख की भट्टियों की भी व्यवस्था की गई है, और उन्होंने मुझे बताया कि चूंकि राख बहुत उपयोगी है, इसलिए वे इसको भी प्रयोग में लाते हैं।

कुल मिलाकर मेरी यात्रा बहुत दिलचस्प और ज्ञानवर्धक रही। मेयर साहब की मुझ पर बहुत कृपा रही कि उन्होंने मेरे लिए सब व्यवस्था कर दी। बर्लिन के श्री वोन हेव ने मेरा हर जगह साथर दिया। मुझे विश्वास दिलाया गया कि आवश्यकता पड़ने पर कलकत्ता की समस्याओं को सुलझाने में बर्लिन नगरपालिका अपना पूरा सहयोग देगी।

आशा है आपको तथा कलकत्तावासियों को बर्लिन के मेयर द्वारा भेजे गए संदेश का आप उपयुक्त उत्तर दे चुके होंगे।

सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,
होटल एक्सैल्सियर
रोमा

बुद्धवार
25.4.1934

प्रैजीडेंट वैटर साहब,
वहरिंगर स्ट्रीट–41
विएना–9
(आस्ट्रिख)
प्रिय श्रीमती वैटर,

अपनी यात्रा के दौरान मैं फलोरेंस में रूका और कल यहां पहुंचा हूं। शुक्रवार तक विएना पहुंचने के लिए मैं अपना कार्य पूर्ण नहीं कर पाऊंगा। इसलिए सोमवार की सुबह तक विएना अवश्य पहुंच जाऊंगा। मेरे विचार से डा. वैटर अभी विएना छोड़कर गए नहीं होंगे। यदि वे जा चुके हैं तो आपं अकेली होंगी। आपकी पुत्री लंदन से कब लौट रही है। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

बुडापेस्ट

11.5.1934

ग्रांड होटल
हंगेरिया
बुडापेस्ट
प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। तत्परता से पत्रों के उत्तर देने के लिए व उदार विचारों के प्रति आभारी हूं।

यहां पहुंचने के बाद से, एक मिनट भी आराम नहीं कर पाया हूं। मौसम बहुत गर्म है और मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है। यदि ऐसा ही रहा तो लगता है मैं अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाऊंगा। बहुत थकान महसूस करता हूं और दिनभर का कार्य करने के पश्चात इतनी शक्ति नहीं रह जाती कि कुछ कार्य करूं। सिवाय आराम करने के कुछ नहीं कर पाता।

कल बुखारेस्ट के लिए निकलूंगा और 5–6 दिन होटल कांटीनेंटल में ठहरूंगा।

बुडारेस्ट बहुत पसंद आया। सुंदर दृश्यावाली से युक्त आकर्षक स्थान है। यहां के लोंगो के बारे में राय व्यक्त करना जल्दबाजी होगी।

आपकी क्या योजना है? क्या जून के प्रारंभ तक आपका विएना में रहने का विचार है?

यदि मैं अपना कार्यक्रम पूरा कर पाया तो भी 25 मई से पहले बल्कि कुछ दिन बाद ही विएना नहीं पहुंच पाऊंगा।

शुभकामनाओं सहित,
आपका
शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

नाओमी सी. वैटर को,

एथनी पैलेस होटल
बुखारेस्ट
94, काबा विक्टोरियल
18.5.1934
बुखारेस्ट
शुक्रवार, रात्रि

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

प्रिय श्रीमती वैटर,

पिछले रविवार मैं बुडापेस्ट से यहां पहुंचा हूं। यहां बहुत व्यस्त रहा हूं। बुडापेस्ट की भांति ही मौसम गर्म है और थकान महसूस कर रहा हूं। पता नहीं विएना में आपको यह पत्र मिलेगा भी या नहीं।

कल प्रातः वायुयान से कांस्टैंटीनोपल (इस्तांबुल) जाऊंगा। रेलमार्ग सुविधाजनक नहीं है, इसलिए वायुयान से जाने का विचार बनाया है। वहां पीरा पैलेस होटल, इस्तांबुल, टर्की में रूकने का विचार है। जब विएना से रवाना हुआ था तब इस्तांबुल जाने का कोई विचार नहीं था, वहां जुलाई में जाना चाहता था। लेकिन बुखारेस्ट आने के पश्चात मुझे महसूस हुआ कि मैं अभी इस्तांबुल के इतने पास हूं और बाद में यूरोप के इस भाग तक पहुंचना मेर लिए कितना कठिन होगा। अतः मैंने अपना विचार बदल लिया। अब की योजना के अनुसार मैं इस्तांबुल से सोफिया (बुल्गारिया) फिर वहां से बैल्ग्रेड और जगरेब जाऊंगा।

मुझे आशा है इस्तांबुल पहुंच कर आपका पत्र मिलेगा। वहीं से मैं आपको पुनः पत्र लिखूंगा। यहां से बस यही। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभास सी. बोस

नाओमी सी. वैटर को,

पेरा पैलेस होटल
पेरा पैलस ओटेली
इस्तांबुल
इस्तांबुल (टर्की)
21.5.1934

प्रिय श्रीमती वैटर

बुखारेस्ट से यहां 19 तारीख को वायुयान से पहुंचा। अचानक यहां आने की योजना बनी, क्योंकि मुझे लगा कि पुनः इस दिशा में आना संभव नहीं होगा।

इस्तांबुल के विषय में मुझे बहुत सी आशाएं थीं, किंतु यहां पहुंच कर घोर निराशा हुई। इसे देखकर एक ऐसे राज्य का आभास होता है जो जर्जर हालत में हो। पूर्व जैसा आकर्षण नहीं है और पश्चिम जैसी धन संपदा भी नहीं। किंतु मुझे आशा है कि अंगोरा (अंकारा) भिन्न होगा। क्योंकि टर्की के नए शहर की तुलना कांसटेंटीनोपल से नहीं बल्कि अंगोरा से है।

यहां से अंगोरा जाऊंगा और रास्ते में सोफिया तथा बैल्ग्रेड रूकता हुआ वापिस

विएना पहुंचूंगा। दुख है कि मेरी विएना वापसी में देरी हो रही है।

आपकी क्या योजना है? कब तक विएना में रूकने का विचार है? कृपया उपरोक्त पते पर पत्र लिखें।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

नाओमी सी. वैटर को,

सोफिया ले–29.05.1934
ग्रैड होटल
बुल्गारिया
सोफिया बुल्गारिया,

प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं इस्तांबुल से पिछले बुधवार को यहा पहुंच गया था। पूरा सप्ताह बहुत व्यस्त रहा सोफिया इस्तांबुल की तरह गंदा नहीं बल्कि सुंदर शहर है–मुझे बहुत पसंद आया। लोग भी बहुत मिलनसार हैं।

आज रात बैल्ग्रेड के लिए रवाना हो रहा हूं। मेरा वहां का पता होगा–

होटल सरबस्की क्राल्ज

बैल्ग्रेड

लगभग एक सप्ताह वहां रहूंगा। जब से बुडापेस्ट से चला हूं आपका एक भी पत्र नहीं मिला।

साथ में आपकी बुडापेस्ट से भेजे गए पत्र की रसीद है। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

नाओमी सी. वैटर को,

होटल सरबस्की क्राल्ज
बेल्ग्रेड
3.6.1934
रविवार

प्रिय श्रीमती वैटर,

पिछले बुधवार मैं सोफिया से यहां पहुंच गया था। सोफिया और यहां दोनों

जगह अच्छा समय व्यतीत हुआ। बलकान प्रदेश बहुत दिलचस्प स्थान है।

6 तारीख की सुबह मैं जगरेब के लिए रवाना होऊंगा और चार दिन होटल एस्पलेनेड जगरेब में रहूंगा। वहां से विएना वापिस लौटूंगा। यदि जगरेब में आपके कुछ लोग परिचित हों तो उन्हें मेरे विषय में लिख दें।

प्रेजीडेंट वैटर आजकल कहा है और कैसे हैं? वे वापिस विएना कब आ रहे हैं? डाल्मेशन कोस्ट पर उनका समय कैसा बीता? आपकी क्या योजना है? कब तक वहां रहने का विचार है।

मुझे लगता है मेरे पत्र कहीं इधर–उधर हो गए, क्योंकि जबसे मैंने बुडापेस्ट छोडा है आपका कोई पत्र नहीं मिला।

आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं। क्या सुश्री वैटर लंदन से वापिस आ गई? शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभेच्छु
सुभाष सी बोस

अजित कुमार देव को,
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी

विएना
12 6 1934

आदरणीय अजित बाबु,

आपका 17 मई का पत्र जिसमें श्री प्रभुदयाल ने भी कुछ पक्तिया लिखे हैं, पाकर प्रसन्नता हुई। मैं भोलानाथ दत्त के लिए तत्काल संदेश प्रेषित कर रहा हू। क्या आप यह उन तक पहुंचा देंगे। इस समय मैं यह निर्णय नहीं कर पा रहा कि संदेश सही भी है या नहीं। शब्द संयोजन ठीक नहीं हैं। अतः कृपया एक प्रारूप एवं विचार भेजें ताकि पता लगे कि मुझे क्या लिखना चाहिए।

जुलाई के अंत तक मैं विएना मे ही रहूगा। मेरे चिकित्सकों की राय है कि पिछले वर्ष की अपेक्षा अब काफी प्रगति है, किंतु कुछ माह अभी इलाज और चलेगा।

जानकर प्रसन्नता हुई कि अमि ने प्रथम डिविजन में परीक्षा उत्तीर्ण की है। आशा है कि बी.एस–सी. करेगा और बी.ए. करने की गलती नहीं करेगा।

कृपया प्रभुदयाल बाबू तक मेरी शुभकामनाएं पहुंचा दें। आपको भी शुभकामनाएं। पिछले दो वर्षों के दौरान मैंने बहुत लंबी यात्रा की है और चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, गेमानिया, बुल्गारिया, यूगोस्लाविया आदि देशों में गया। श्रीमती देव को नमस्कार और

आपके माता–पिता को प्रणाम।

आपका अपना
सुभाष

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
विएना
5.7.34

श्री सत्येंद्र नाथ मजूमदार,
प्रिय मित्र,

एक लंबे समय से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। कृपया क्षमा करो। लगभग तीन माह विभिन्न देशों की यात्रा के पश्चात तीन सप्ताह पूर्व ही यहां पहुंचा हूं। अगस्त के अंत तक यही रहूंगा। पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य अच्छा है। किंतु अभी पूर्णतः स्वस्थ नहीं हो पाया हूं। अभी भी कभी–कभी पेट में दर्द होने लगता है। अगले दो–तीन माह तक लगातार उपचार करवाऊंगा। पिछले एक सप्ताह से शार्ट–वेव थैरेपी करवा रहा हूं–बाकी इलाज भी साथ–साथ चल रहा है, किंतु अभी तक कोई विशेष लाभ नहीं पहुंचा है।

देश की दशा पर कुछ कहना और लिखना चाहता हूं। किंतु इतनी देर रह कर अपने विचार व्यक्त कर पाना आसान नहीं। फिलहाल इस कोशिश से दूर ही हूं।

फिलहाल मैं 1920 से 1933 के मध्य घटी घटनाओं पर पुस्तक लिख रहा हूं। यह पुस्तक लंदन में प्रकाशित होगी, मुझे एक अच्छा प्रकाशक मिल गया है। क्या इस अवधि की घटनाओं पर कोई पुस्तक उपलब्ध है? मुझे सभी घटनाएं व तिथियां ठीक से याद नहीं है, इसलिए मुझे एक दो पुस्तकों की आवश्यकता महसूस हुई। यदि आप कुछ शीर्षक सुझा सकें तो मुझे हर्ष होगा। आशा है सभी स्वस्थ है। निगम में कब तक संघर्ष चलता रहेगा। देश के कांग्रेस कार्यकर्ता क्या कर रहे है? वे विद्रोह क्यों नहीं करते? अब यहीं समाप्त करता हूं। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चंद्र बोस

ए.सी.एन. नांबियार को,

पीटर जार्डन स्ट्रीट–28/1
विएना–19
10.7.34

प्रिय श्री नांबियार,

तुम्हारी दीर्घ चुप्पी का कारण समझ नहीं पा रहा। उपरोक्त पते से मैंने पहले भी तुम्हें पत्र लिखा था। अगस्त के अंत तक यहीं रहूंगा। मुझे यहां इलाज करवाना (शार्ट–वेव थेरेपी) है तथा लंदन के प्रकाशक के लिए 1920 से 1933 के मध्य तक की भारत की घटनाओं पर पुस्तक भी लिखनी है। इसलिए मैंने एक भारतीय मित्र के साथ मिलकर उपरोक्त पते पर एक फ्लैट ले लिया है।

पंजाब के एक मित्र, श्री शेर सिंह कल प्रातः प्राग जा रहे हैं। मैंने उन्हें अपने नाम से तुम्हें एक तार भेजने को कहा है जिसमें तुम्हें स्टेशन पर मिलने को कहा है। वे कल 1 बजे वहां पहुंचेगे। मैंने उन्हें पैलेस होटल में ठहरने का सुझाव दिया है। वे केवल एक दिन वहां रूकेंगे।

ड्रेसडन से श्री एस.सी. राय व श्री चटर्जी ने दो फरमाइशें की हैं–

1. श्री एस. सी. राय (इंजीनियरिंग)

वे ड्रेसडन में इंजीनियरिंग के विद्यार्थी हैं। वे एक एप्रेंटिस के रूप में कॉटन मिल और फिर बाद में आर्टिफिशियल सिल्क मिल में कार्य करना चाहते हैं। चेकोस्लोवाकिया एक उन्नत देश है। क्या आपक इसका प्रबंध कर सकते हैं। जो भी हो कृपया श्री राय को सूचित कर दें। उनका पता है–श्री एस. सी. राय, नूरबर्गर, स्ट्रीट 31, ड्रेस्डन ए–24।

2. श्री एन. सी. चटर्जी (फिजिक्स)

म्यूनिख की ड्यूट्शे अकादमी से वजीफा पा रहे हैं। भारत से एम. एस. सी. करने के बाद ड्रेस्डन में पी. एच. डी. कर रहे हैं। उनके प्रोफेसर डा. डी––(पढ पाना कठिन है) को नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि वे यहूदी थे और नए प्रोफेसर डॉ तोममाशक (3) ने उनके पूर्व कार्य को रद्द कर दिया और नए सिरे से शुरूआत करने को कहा है। जिसका अर्थ है कि अब उन्हें लगभग डेढ वर्ष ड्रेसडन में और अधिक रहना पडेगा। इसके इलावा ड्यून्से अकादमी ने वजीफा भी रोक दिया है?

1. क्या प्राग में उन्हें अध्ययन और अनुसंधान की सुविधा मिल सकती है?

2. क्या वजीफा, निःशुल्क शिक्षा और रहने–सहने के स्थान आदि का प्रबंध हो सकता है। श्री चटर्जी एक भद्र पुरूष हैं। उनका पता है। एन. सी. चटर्जी, लिंडेनन स्ट्रीट, 32/1, ड्रेसडन,

कृपया इन दोनों मसलों को यथा ीघ्र सुलझाने का कष्ट करें।

जब मैं पिछली बार प्राग में था तो मैंने अपने फोटो की सात प्रतियों (छः अपने लिए और एक डा. शर्मा के लिए) की मांग की थी और मेरा ख्याल है इसके लिए मैं 150 क्री आपके पास छोड़ आया था। आपने इस विषय में क्या किया?

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

वी. लैस्नी को,

पीटर जार्डन स्ट्रासे 28/1
विएना–19
25.7.34

प्रिय प्रोफेसर साहब,

जर्मनी में कई भारतीय विद्यार्थी प्राग के बारे में बहुत से प्रश्न पूछते हैं। शायद वे आप को भी लिख चुके हैं। जर्मनी में जहां कहीं भी मैं गया हर स्थान पर मैंने प्राग के समाज की चर्चा की और आपका पता लोगों को देता रहा हूं। हाल ही में ड्रेसडन के तीन विद्यार्थियों ने मुझे लिखा है कि वे प्राग जाने को उत्सुक हैं। मेरे विचार से वे आपको व श्री नांबियार को इस विषय में पत्र लिख चुके हैं। तीनों ही अच्छे लड़के हैं।

1. श्री चटर्जी, कलकत्ता से एम.एस.सी. पास है और फिजिक्स में डाक्टरेट लेना चाहते हैं। पहले वे म्यूनिख की ड्यूल्से अकादमी से वजीफा पा रहे थे जो अब बंद कर दिया गया है।

2. ड्रेस्डेन के री के. पी. झा प्राग से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डाक्टरेट करना चाहते हैं। पिछले तीन वर्ष से वे जर्मनी में अध्ययनरत हैं। मेरी उनसे मुलाकात ड्रेस्डन में हुई और यह बताने में मुझे गर्व महसूस हो रहा है कि वे सच्चरित्र और बहुत परिश्रमी युवक है। अभी तक उन्हें दरभंगा के महाराजा से वजीफा मिल रहा था, जो अब बंद हो गया हैं। वे निःशुल्क शिक्षा और रहने–सहने की व्यवस्था चाहते हैं।

3. ड्रेस्डन के श्री एस.सी. राय इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं। अब वे बिना पारिश्रीमिक प्राप्त किए चेकोस्लोवाकिया अपरेंटिस के रूप में कपड़ा मिल या आर्टफिशियल सिल्क मिल में कार्य करने के इच्छुक हैं। यदि वे आर्टिफिशियल सिल्क मिल में स्थान न पा सके तो सूती कपड़ा मिल में कार्य करना चाहेंगे। चेकोस्लोवाकिया में बहुत सी कपड़ा मिलें हैं, अतः उनके लिए अपरेंटिस के रूप में जगह खोजने में अधिक कठिनाई नहीं होगी।

मैं आपका कीमती समय अधिक नहीं लूंगा। आशा है आप इन युवाओं की सहायता कर सकेंगे। अगस्त के अंत तक मैं उपरोक्त पते पर ही रहूंगा।

शुभकामनाओं सहित,
शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस
प्रो. डा. लेस्नी
प्राग

सत्येंद्र चंद्र मित्रा को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
विएना
25.7 1934
प्रिय सत्येन बाबू,

आपका छ· तारीख का पत्र समय पर मिल गया था। मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं? मेरा संबंध किसी पार्टी से नहीं है, इसलिए मैं किसी भी पार्टी को अपना नहीं समझता और मुझे नहीं लगता कि बंगाल में आज मेरी बात का कोई वजन है। मैं अपनी स्थिति के प्रति सचेत तो हूं किंतु अधिक परवाह नहीं करता। मैं देश की सेवा के लिए वचनबद्ध हूं और यथासंभव अपनी तरह सेवा करूंगा भी। चाहे मैं इस विश्व में अकेला ही क्यों न हो जाऊंगा रोटी के टुकडे के लिए लडने वाली वर्तमान दोनों पार्टियों में से एक भी ऐसी नही जिसमें शामिल हुआ जाए। खेद है। यदि मुझे 1929 में ही इस बात का पता चल जाता तो बडे कष्ट से बच जाता।

मुझे नहीं लगता कि अखिल बाबू की दृष्टि में भी मेरी राय का कोई अर्थ है। आप तो अखिल बाबू को अच्छी तरह जानते हैं। एक बार वे जो निर्णय कर लें उससे उन्हें विचलित कर पाना कठिन है। यहां तक कि सन् 1923 मे देशबंधु बाबू भी अखिल बाबू को मना नहीं सके, जबकि उनकी राय थी कि अखिल बाबू को राज्यसभा मे शामिल होना चाहिए।

बंगाल के राजनैतिक बंदियों की ओर से मैं आपके राज्य सभा में किए गए कार्य की सराहना करता हूं। भगवान आपका पथ प्रशस्त करे।

मैं आपकी सहायता करने को कुछ भी कर सकता हूं, किंतु मुझे कलकत्ता की भ्रष्ट पार्टी गत राजनीति से कुछ लेना देना नहीं नहीं है। इस स्थिति में मेरे विचार से आपको सच्चे मित्रों की शुभकामनाओं की बहुत आवश्यकता है।

श्रीमती मित्रा को मेरा प्रणाम व आपको प्यार। आपकी पुत्री अब कितनी बडी हो गई है?

पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य अब अच्छा है। किंतु पूर्व उपचार नहीं हो पाया, दर्द

बार-बार हो उठता है, जिसका वर्णन कर पाना संभव नहीं है। मैं पुनः आपरेशन कराने पर विचार कर रहा हूं, ताकि सदा के लिए इस दर्द से छुटकारा पाया जा सके।

अपने फालतु वक्त में मैं, भारत में पिछले 14 वर्षों के दौरान घटी घटनाओं के संबंध में, लंदन के एक प्रकाशक के लिए पुस्तक लिख रहा हूं। अगस्त तक यह पुस्तक समाप्त हो पाएगी।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः- ढ़ाका के बाबू प्रियनाथ सेन ने भी मुझसे उनकी उम्मीदवारी की अनुगसा करने को कहा है। उन्हें भी मैंने ऐसा ही उत्तर लिखा है।

रवींद्रनाथ टैगोर को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
विएना
3 अगस्त, 1934,

माननीय महोदय,

मैं आपको एक विशिष्ट प्रयोजन से कष्ट दे रहा हूं, आशा है असुविधा के लिए क्षमा करेंगे।

आजकल मैं लंदन के एक प्रकाशक के आग्रह पर एक पुस्तक लिख रहा हूं। पुस्तक का विषय है-द इंडियन स्ट्रगल (1920-34), प्रकाशक हैं-विशार्ट एंड कंपनी, 9 जॉन स्ट्रीट, एडल्फी, लंदन, डब्ल्यू सी-2 । अगस्त के अंत तक मैं पुस्तक लिख कर दे दूंगा और अक्तूबर माह में पुस्तक प्रकाशित होने की आशा है। ज्वाइंट सिलैक्ट कमेटी की रिपोर्ट लोगों के सम्मुख आने के साथ-साथ मेरी पुस्तकें भी तैयार हो चुकेंगी। पुस्तक का पहला अध्याय होगा- हिस्टारिकल बैकग्राउंड। अंत के अध्याय में संभावित घटनाओं का उल्लेख किया जाएगा। प्रकाशक को इंग्लैंड व अमेरिका में पुस्तक के अत्यधिक बिकने की आशा है, वह इसके जर्मन व फ्रेंच अनुवाद की व्यवस्था भी कर रहा है। मैं, अंग्रेजी के प्रतिष्ठित लेखक से इस पुस्तक की भूमिका लिखवाना चाहता हूं।

यदि श्री बर्नाड शॉ इस पुस्तक के संबंध में कुछ पंक्तियां लिख दें तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। आप इस कार्य में सहायक हो सकते हैं। यदि श्री बर्नाड शॉ को आप इस संबंध में लिख दें तो मैं आपका आभारी रहूंगा। किंतु यदिं ऐसा करने मे आपको तनिक भी कठिनाई या हिचक महसूस हो तो मैं नहीं चाहूंगा कि अनुरोध किया जाए।

यदि आप उन्हें लिखने का निर्णय करें तो कृपया ऐसे लिखें कि अनुकूल परिणाम प्राप्त हो। केवल मेरी प्रार्थना हेतु लिखने का कोई अर्थ नहीं है। जब में यूरोप आ रहा था तो आपने श्री रोम्यां रोलां के लिए मुझे एक परिचय पत्र दिया था किंतु वह पत्र ऐसे लिखा गया था जैसे मात्र मेरा मन रखने के लिए लिखा गया हो। परिणामस्वरूप मैं उसका उपयोग नहीं कर पाया और मैंने स्वयं अपने स्तर पर श्री रोलां से पत्र व्यवहार प्रारंभ किया। श्री बर्नाड शॉ शायद मेरे विषय में कुछ नहीं जानते। इसलिए उन्हें सही रूप में लिखना ही श्रेयस्कर होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी पुस्तक का खूब स्वागत होगा, क्योंकि प्रकाशक ने मुझसे अग्रिम अनुबंध कर लिया है। रायल्टी की राशि मिलने पर ही मैंने लेखन कार्य प्रारंभ किया है।

सादर प्रणाम,

आपका अपना
सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

पीटर जार्डन स्ट्रीट 28/1
विएना–19
14.8.1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

10 तारीख का आपका कार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। आशा है पहाडों पर आपका अच्छा समय बीता होगां। भविष्य की क्या योजना हैं?

कुछ नया लिखने को नहीं है। अलग से 'द टाइस' की एक प्रति भिजवा रहा हूं। आपको पसंद आएगी।

अपने कार्य में पूर्णरूप से व्यस्त हूं, किंतु जो कर पा रहा हूं उससे संतुष्ट नहीं हूं। किंतु दूसरा कोई मार्ग नहीं है। अगस्त के बाद शायद कार्ल्सबाद इलाज के लिए जाऊंगा। शार्ट–वेव उपचार बंद कर चुका हूं। यदि इससे भी लाभ नहीं हुआ तो इलाज के लिए कार्ल्सबाद जाऊंगा या फिर यहीं आपरेशन करवाऊंगा, किंतु कार्ल्सबाद जाने में ही मेरी रूचि अधिक है।

यहां का मौसम साफ नहीं है। प्राय: बादल छाए रहते हैं और कभी–कभी बरसात भी होती है।

सदर!
आपका आज्ञाकारी

सुभाष चंद्र बोस

अजित कुमार देव को,

द्वार अमेकिन एक्सप्रेस कंपनी,
विएना
29.8.34

प्रिय अजित बाबू,

आपका 12 जुलाई का पत्र कुछ समय पूर्व मिला।

अपने निजी कार्य हेतु आपको कष्ट दे रहा हूं। शायद आप जानते हों कि आजकल मैं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर पुस्तक लिख रहा हूं। लंदन में मेरे प्रकाश कि इस संबंध में कुछ चित्र चाहते हैं। सबसे जरूरी, यदि संभव हो तो, वालंटियर्स के नेता के रूप में मेरा ड्रेस में एक चित्र चाहते हैं।

ऐसा चित्र 1928 या 1929 में 'लिबर्टी' या 'फारवर्ड' के विशेषांक में प्रकाशित हुआ था। यदि आप यह अंक ढूंढ़कर मुझे भिजवा सकें तो मैं आपका आभारी होऊंगा। शायद गोपाल सान्याल इसे खोजने में आपके सहायक हो सकें, किंतु मैं उन्हें अपने लिए कष्ट देना नहीं चाहता। लिबर्टी का प्रकाशन संभवतः मई (2) 1929 में प्रारंभ हुआ और यह चित्र शायद दिसंबर 1928 में खींचा गया था। अतः लिबर्टी या फारवर्ड में इसका प्रकाशन सभवतः दिसंबर 11928 या 1929 में ही हुआ होगा।

एक और मेरा चित्र (बडे आकार में) पोशाक में कांग्रेस कार्यालय का था। यह चित्र घोड़े पर बैठकर खिंचवाया गया था। यदि उस चित्र को ढूंढ़कर उसकी फोटोग्राफिक प्रति बनवाकर मुझ तक भिजवा पाएं तो आपका आभारी रहूंगा। यह चित्र उसकी अर्पेक्षा अच्छा है। किंतु कांग्रेस कार्यालय के मूल बड़े आकार के, चित्र की फोटाग्राफिक प्रति हीं निकलवानी पड़ेगी।

मैंने अशोक को भी पत्र लिखा है कि वह प्रयत्न कर मुझे महात्मा गांधी, सी. आर. दास तथा लालाजी, पंडित मोतीलाल आदि जैसे प्रमुख नेताओं के चित्र भिजवा दें। यदि आप ये चित्र उपलब्ध कर भिजवा सकें तो मुझे प्रसन्नता होगी। जब मैंने अशोक को पत्र लिखा था तब नहीं जानता था कि प्रकाशक को मेरे चित्र की भी आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए मैंने उन्हें इस विषय में कुछ नहीं लिखा। बहरहाल! यदि आप मेरे चित्र भिजवा सकें तो मुझे संतोष रहेगा।

पुस्तक क्योंकि अक्टूबर में प्रकाशित हो जाएगी, इसलिए कृपया सितंबर के अंत से पूर्व, एयरमेल द्वारा चित्र भिजवाने का कष्ट करें। पूरी पत्रिका एयरमेल द्वारा भेज़ने की आवश्यकता नहीं है।

यदि आप फोटो भिजवाने की व्यवस्था न भी कर पाएं तो भी कृपया एयरमेल द्वारा मुझे सूचित करें, वरना मैं अनिश्चय की स्थिति में रहूंगा। आपको यह कष्ट दे रहा हूं, जो कि आपके कार्य से बिल्कुल भिन्न है, अतः क्षमाप्रार्थी हूं, किंतु मुझे पता है आपको लिखने से कुछ न कुछ व्यवस्था संभव हो ही जाएगी।

मेरे स्वास्थ्य के संबंध में–पहले की अपेक्षा बेहतर हूं, किंतु दर्द अभी भी होता है। मुझे आशंका है कि नवंबर में मुझे आपरेश नही करवाना पड़ेगा। उससे पहले मैं चेकोस्लोवाकिया में कार्ल्सबाद जाना चाहता हूं जहां एक माह जलोपचार कराने का विचार है। कार्ल्सबाद के प्राकृतिक झरने पेट दर्द विशेष रूप से आंतों के कष्ट के लिए वरदान माने जाते हैं। 2 सिंतबर को कार्ल्सबाद जाने की व्यवस्था मैंने की है। कृपया मुझे इस पते पर पत्र का उत्तर अवश्य दें। द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, विएना।

प्रभुदयाल बाबू तक मेरी हार्दिक शुभकामनाएं पहुंचा दें। आपके माता–पिता को प्रणाम। श्रीमती देव को सादर नमस्कार और रेबा को प्यार।

आपका अपना

सुभाष,

पुनश्च :– अशोक कैसे हैं? मेजदादा के चुनाव का क्या रहा।

सुभाष

नेताजी संपूर्ण वाङ्मय

पुनश्चः– श्री दास के अच्छे चित्र के लिए अशोक से कहें कि वह श्रीमती दास के संपर्क करे। संभव हैं वे कोई अच्छा चित्र उपलब्ध करवा सकें।

श्री ए.सी.एन. नांबियार को,
(पोस्टकार्ड)
पोस्ट रेस्टांटे

कार्ल्सबाद

6.9.34

पिछले रविवार मैं यहां पहुंच गया था। स्कालेसबर्ग में किसी बोर्डिंग हाउस की तलाश में हूं, यदि ठीक मिल गया तो एक माह यहीं रहूंगा। अन्यथा किसी और जगह चला जाऊंगा। इस बीच कृपया उपरोक्त पते पर ही पत्र लिखें।

अभी तक मुझे फिलासफिकल कांग्रेस की ओर से कोई आमंत्रण नहीं मिला है जबकि प्रोफेसर लेस्नी ने लिखा था कि वे आमंत्रित कर रहे हैं।

सुभाष सी. बोस

मानननीय री ए.सी. नांबियार
सैस्टिमिरोवा 863/5
प्राग 13
सी. एस. आर.

नाओमी सी. वैटर को,

कुरहॉस कोइनिगि न अलैग्जेंड्रा
स्कासबर्ग, कार्ल्सबाद
अथवा
द्वारा पोस्ट रेस्टांटे
कार्ल्सबाद
सी.एस.आर.
24 9.34

प्रिय श्रीमती वैटर,

विएना से निकलने के बाद से आपको पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा चाहता हूं। जब मैं यहां पहुंचा तो मौसम बहुत अच्छा था, मुझे बहुत अच्छा लगा। पिछले कुछ दिनों से बादल छाए हुए हैं, किंतु आज फिर मौसम साफ हैं, यहां की प्राकृतिक छटा बहुत मनोरम है। एक आघ घंटे में आप पर्वत पर चढ कर ताजी हवा का आनंद ले सकते हैं। गर्मियों में यहा बुरा हाल होता होगा, जब सड़कों पर खूब भीड–भाड हो।

सी. आर. प्रूफर को,

ईडन होटल
बर्लिन
5 अप्रैल, 1934
मिनिस्टीरीयलरट सिकोफ
आस्वेटियम एमट
बिहलमस्टर 74/76

प्रिय महोदय,

मैं आपको ज्ञापन की प्रति, जिसमें मैंने जर्मनी व भारत के संबंधों पर भाषण दिया था, की प्रति भी शामिल है, भेज रहा हूं। आशा है आप इस विषय पर गंभीरता से विचार करेंगे।

सादर,
आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

सुभाष चंद्र बोस
जर्मनी और भारत

जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी के शासन के पश्चात, कुछ तथ्य उभरे हैं। जिन पर यदि जर्मनी व भारत के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधों की स्थापना करनी है, तो विचार करना आवश्यक है। ये तीन तथ्य हैं।

1. पिछले बारह माह के दौरान भारत के प्रति जर्मन प्रेस का रवैया।

2. भारत के संबंध में जर्मनी के नेताओं की टिप्पणियां।

3. जर्मनी में आजकल चल रहा जाति–प्रचार।

1. राष्ट्रीय समाजवादी क्रांति से पूर्व, जर्मनी के पत्र–पत्रिकाओं मे कई लेख प्रकाशित हुए, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति सहानुभूतिपूर्वक लिखा। अब वैसे लेख प्रकाशित होने बंद हो गए हैं। संभव है जर्मन अधिकारियों को महसूस हुआ कि भारत के पक्ष में लेख प्रकाशित करने से ग्रेट ब्रिटेन नाराज हो जाएगा, जिसके साथ आजकल जर्मनी संबंध स्थापित करने को उत्सुक है। यद्यपि भारत के पक्ष में लेख प्रकाशित करने बंद किए जा चुके हैं, म्यूनकेनर न्यूत्से नखरिख्तन, कोरेडल, कोलनिशे जीतुंग, कोलनिशे जाती होगी, यहां की भीड किसी भी बडे शहर की याद दिलाती है। इस दृष्टि से यह स्थान मेरे जैस अजनबी वेश–भूषा वाले व्यक्ति के लिए बहुत अच्छा हैं, क्योंकि लोगों का ध्यान उस ओर नहीं जाता।

दुख के साथ सूचित कर रहा हूं कि अभी तक मैं पुस्तक पूरी नहीं कर पाया हूं और अब चिंतित रहने लगा हूं। इस माह के अंत तक की अवधि और मांग ली है। किंतु अब हर हाल में वह पूरी करनी ही है। 30 सितंबर के बाद मैं आजादी की सांस ले सकूंगा।

विएना लौटने के बाद से आपका स्वास्थ्य कैसा है? डा. वैटर कैसे हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पहाडो से लौटने के बाद से आप लोग बेहतर अनुभव कर रहे हैं।

जो चित्र आपने भेजे हैं वे इतने सुंदर हैं कि मुझे लगता है यदि अगली गर्मियों तक मैं यूरोप में ठहरा तो ग्लेशियर देखने दक्षिणी आस्ट्रिया अवश्य जाऊंगा। मुझे उन्हें देखकर अति प्रसन्नता होगी, क्योंकि हिमालय के ग्लेशियर्स देख पाना मेरे लिए असंभव है।

कभी–कभी घर लौटने की इच्छा होती है, किंतु स्वास्थ्य की दृष्टि से मैं इस योग्य नहीं हो पाया हूं। वैसे भी वे लोग वहां पहुंचते ही मुझे छोड़ने वाले नहीं हैं। मेरा

भाई अभी भी नजरबंद है, और परिवार बहुत परेशान है।

अपनी योजना के अनुसार विएना लौटने से पूर्व मै अभी कुछ सप्ताह और यहां रहना चाहता हूं। यही संभावना है कि मुझे अंततः आपरेशन ही करवाना पड़ेगा। सर्दियों में कहां रहूंगा, कह नहीं सकता। चाहता हूं कि दक्षिण की ओर जा पाता जहां कुछ उष्णता मिलती। जाने से पहले आपरेशन करवाना ही पड़ेगा।

आशा है आप अभी स्वस्थ एंव सानंद हैं। अनंत शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष सी. बोस

सत्येंद्र चंद्र मित्रा को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी

विएना

कार्ल्सबाद

18.10.34

प्रिय सत्येन बाबू,

आपका तीन तारीख का पत्र 16 तारीख को प्राप्त हुआ। आपकी छोटी सी मांग मैं परी नहीं कर सका। यद्यपि आपके लिए बहुत कुछ करना चाहता हूं।

सबसे अच्छा उपाय शायद यही था कि पत्र का उत्तर ही न दिया जाता, किंतु मैं स्पष्टवादी हूं यद्यपि यह स्पष्टवादिता मैत्री संबंधों में बाधक सिद्ध होती है।

महात्मा गांधी के शिष्यों द्वारा संचालित कार्यकारिणी में मेरा बिल्कुल भी विश्वास नहीं है। पार्लियामेंट्री बोर्ड में भी मेरा अधिक विश्वास नहीं क्योंकि देश जब सन् 1932–33 में दुरूह काल से गुजर रहा था तो किसी ने अपना कर्तव्य नहीं निभाया। मुझे अपने उन सहयोगियों से कोई सहानुभूति नहीं, जिन्होंने अपने स्वार्थों की प्रतिपूर्ति के लिए बंगाल की राजनीति में पुनः महात्मा गांधी को खींच लिया है। अंत में मुझे यह कहने में कोई झिझक नहीं कि मेरा उस पार्टी से कोई संबंध नहीं, जिसने यूरोप की सहायता से कलकत्ता के मेयर पद पर नलिनी सरकार को ला बैठाया है।

एक मित्र के रूप में मैं आपको बहुत प्यार करता हूं। अपने प्रमुख लोगों के लिए, ऐसे लोगों के लिए, जो कष्ट में हैं और जिनके इस दुनिया में बहुत कम मित्र है, बहुत कुछ किया है। राष्ट्रभक्त के रूप में मैं आपका सम्मान करता हूं। लेकिन आपकी सहायता कैसे करूं? क्योंकि मेरा उस मशीनरी में बिल्कुल विश्वास नहीं, जिसने आपको एक उम्मीदवार के रूप में खड़ा किया और मुझे विश्वास है कि यदि वे अखिल बाबू को मना पाते तो आपको नहीं चुनते। मैंने उन स्थितियों को निरीक्षण किया है

जिन्होंने आपके और अखिल बाबू के मध्य मुकाबला पैदा कर दिया। किंतु मैं बिल्कुल असमर्थ हूं। मैं आपको उस मशीनरी से अलग कैसे मान लूं जिसने आपका चुनाव किया हैं?

सत्येन बाबू मैं जानता हूं कि आज मै बिल्कुल अलग–थलग हूं लेकिन मुझे उसका तनिक भी दुख नहीं हैं। मुझे जो ठीक लगता है मैं वह कहता रहूंगा, यद्यपि उससे मुझे कितना ही कष्ट झेलना पड़े या बदनामी सहनी पड़े।

जातिवाद के प्रति मैं चुप्पी का रूख नहीं अपना सकता। डा. बी. सी. राय की पार्टी ने इस प्रश्न पर महात्मा गांधी का साथ देकर बंगाल को बहुत बड़ी क्षति पहुंचाई है। इस प्रश्न पर बंगाल को एकजुट रहना चाहिए था।

. मेरे शब्द कठोर प्रतीत हो सकते हैं। क्योंकि मुझे बहुत दुख हुआ है। मैं स्पष्टता से विरोध करता हूं क्योंकि मैं बहुत स्पष्टवादी और सच्चा व्यक्ति हूं। अतः सत्य कहने का साहस रखता हूं। भारत के हित में मैं बंगाल के लिए हो रहे संघर्ष में लिप्त रहूंगा। बेशक एक अकेला ही क्यों न रह जाऊं। मुझे खेद है कि वर्तमान विपत्ति में मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर पाऊंगा किंतु मुझे विश्वास है कि आप मेरे कदम की प्रशंसा करेंगे और मुझे क्षमा कर देंगे। आशा है वह दिन अवश्य आएगा जब विपरीत परिस्थितियों में मैं यह सिद्ध कर दूंगा कि मैं आपका मित्र हूं–एक सच्चा मित्र, केवल मौकापरस्त नहीं।

विजयादशमी की शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
श्री सत्येन सी. मित्रा,

वी. लेस्नी को,

कार्ल्सबाद
1.11.1934
प्रोफेसर डा. लेस्नी
जबोरोवस्था 66,
पराहा 16,

प्रिय प्रोफेसर साहब,

कल (शुक्रवार) मैं प्रातः विएना के लिए रवाना होऊंगा और प्राग में कुछ देर के लिए रूकूंगा। शाम को पहुंच कर रात को ट्रेन द्वारा विएना के लिए रवाना होऊंगा। यदि आपके पास समय हो तो दोपहर बाद, या शाम को मैं आपसे मिलना चाहूंगा। मेरी गाड़ी रात दस बजे चलेगी। अतः शाम छः बजे के बाद का समय ठीक रहेगा।

श्री नांबियार को भी मैं लिख रहा हूं कि वे आपसे मिलने का समय ले लें।

कृपया रात्रि भोज को व्यवस्था न करें। जैसी कि आप हमेशा करते रहे हैं। जब भी मैं प्राग आया हूं। मुझे कुछ अन्य कार्य भी करने हैं, इसके अलावा आजकल मैं बहुत हल्का खाना ले रहा हूं। आपसे बातचीत करके प्रसन्नता होगी,

हम लोग इंडो–चैकोस्लोवाक सोसायटी तथा अन्य सामान्य बातों पर चर्चा करेंगे।

सादर,
आपका शुभेच्छु
सुभाष सी. बोस
सेंसर कर पास की गई
इलीजिबल

नाओमी सी. वैटर को,

10/12
कृते डी.सी.एस.बी.
38/2, एल्गिन रोड
या
1, बुडर्बन पार्क, कलकत्ता
7.12.34

प्रिय श्रीमती वैटर,

29 नवंबर को विएना छोड़ने के बाद 4 दिसंबर को मैं यहा पहुंचा। पहुंचते–पहुंचते बहुत देर हो गई। 2 दिसंबर की मध्यरात्रि में मेरे पिता इस दुनिया से चले गए। मेरे पहुंचने से केवल 40 घंटे पूर्व।

वायुयान की यात्रा बहुत दिलचस्प थी, मुझे बहुत आनंद आता, किंतु मानसिक चिंताओं की वजह से यह संभव नहीं हो पाया। प्रातकालीन सूर्योदय का दृश्य बहुत मनोरम था। सूर्योदय के चमकते और विभिन्न रंगों से युक्त दृश्य से पश्चिम के लोग अनभिज्ञ हैं, इसका मजा और बढ़ता गया जैसे–जैसे हम आकाश में ऊपर गए। ऊपर–नीचे होते जहाज के कारण कुछ असुविधा हुई। शोर, वातावरण के दबाव से उत्पन्न शोर के कारण कानों को भी कष्ट पहुंचा। कुल मिलाकर यात्रा बुरी नहीं थी।

मालूम नहीं भविष्य में आपसे पत्राचार कायम रख पाऊंगा अथवा नहीं। फिलहाल मैं अपने 'घर में बंदी की भांति रह रहा हूं। जहाज से उतरते ही मुझे 'घर

में नजरबंदी' का ओदशा थमा दिया गया। फिलहाल मुझे अपनी माता के साथ एक सप्ताह तक ठहरने की आज्ञा मिली हैं (——2 पंक्तियां सेंसर द्वारा काट दी गई) शायद भविष्य में आपको पत्र नहीं लिख पाऊंगा। उस दशा में आप मुझे अन्यथा न लें।

विएना में गुजारे वक्त में आपको प्रेम व सहानुभूति का आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। प्रेजीडेंट वैटर वे आपको सादर प्रणाम।

मेरी मां बहुत उदास हैं। हम भाई—बहन उन्हें सांत्वना देते हैं। किंतु कोई लाभ नहीं। हिंतू समाज में पत्नी की जिंदगी पति के साथ ऐसी बंधी है कि उसके बिना उसका जीवन असहनीय हो जाता है। यूरोप का जीवन भिन्न है।

मेरे घर का पता हैं 38/2, एल्गिन रोग अथवा 1, वुडबर्न पार्क, फिलहाल मैं पहले वाले पते पर अपनी मां के साथ रह रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

सेंसर द्वारा पास
इलीजिबल 9/1
कृते डी. सी. एस. बी.
38/2 एल्गिन रोड, कलकत्ता
8 जनवरी 1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके सभी पत्र समय पर मिले और सभी पढ़े। उन सबके लिए धन्यवाद।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यूरोप की यात्रा के लिए मैं आज बंबई के लिए रवाना हो रहा हूं। 10 जनवरी को (एम.वी विक्टोरिया, लॉयड ट्रिस्टीनो कंपनी) बंबई से जलयान पकडूंगा। ग्यारह दिन की यात्रा के पश्चात 21 जनवरी को जेनेवा (इटली) पहुंचूंगा।

यहां लौटने के बाद से मेरी तकलीफ बहुत बढ़ गई है और मुझे आपरेशन करवाना ही पड़ेगा।

.... सेंसद द्वारा काट दी गई.. ....

वहां सभी मित्रों को मेरे प्रस्थान की सूचना दे दें। आशा है मेरे जिनेवा पहुंचने से पहले मेरा यह एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र आपको मिल चुकेगा। श्रीमती फ्यूलोप मिलर को भी सूचित कर दें और उन्हें बता दें कि उनके सभी पत्र मुझे प्राप्त हो गए

हैं। मैं उन्हें अलग से पत्र नहीं लिख रहा। आशा है वे बुरा नहीं मानेंगी।

प्रेजीडेंट वैटर व आपको सादर प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

एल्बर्गो प्लैजों एंड एंबैसीएटरी, रोमा

23.1.1935

श्रीमान प्रेजीडेंट वैटर साहम

व्हीरिगर स्ट्रीट–41

विएना–9, (आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कलकत्ता छोड़ने के दिन, मैंने आपको एयरमेल से पत्र भेजा था,. आशा है आपको मिल गया होगा। 20 तारीख को मैं नेपल्स पहुंचा और पहुंचते ही डा. कटियार को कार्ड भेजा कि वे मेरे पहुंचने की सूचना सभी मित्रों को दे दें। कल रात मैं नेपल्स से यहां पहुंचा हूं। दो–तीन दिन यहां रूक कर विएना कके लिए प्रस्थान करने का विचार है। यहां मौसम कैसा है? नेपल्स में खूब बर्फ गिरी। शानदार! कल यहां बर्फ गिरी थी लेकिन अधिक नहीं। आज मौसम साफ है। शाश्वत शहर बहुत सुंदर है। कलकत्ता पुलिस बहुत चिंतित थी, क्योंकि आपके पत्रों में आपका नाम पढ नहीं पा रही थी। मुझे उन्हें बताना पड़ा। आप दोनों को शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– संभव है मुझे यहां दो या तीन दिन से अधिक समय तक रहना पड़े।

सी. आर. प्रूफर को,

होटल डी. फ्रांस

विएना–1

स्काटेनारिंग–3

2 फरवरी 1935

माननीय डा. कुर्ट प्रूफर

आस्वर्टिगेस एमट

विल्हेल मस्ट्रासे 75

बर्लिन

प्रिय डा. प्रूफर,

हाल ही में मेरी 'द इंडियन स्ट्रगल 1920–34' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। लंदन की विशार्ट एंड कंपनी ने इसे प्रकाशित किया है। लंदन प्रेस द्वारा इस पुस्तक की पर्याप्त प्रशंसा हुई है और माना जा रहा है कि किसी भारतीय राजनीतिज्ञ द्वारा भारत पर लिखी गई यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। मुझे विश्वास है कि जर्मन पाठक भी इसे पढ़ना चाहेंगे और इसके जर्मन अनुवाद की आवश्यकता महसूस की जाएगी। क्या आप किसी जर्मन प्रकाशक को इस पुस्तक के बारे में सूचित कर इसे जर्मनी में अनुवाद कराकर छापने के लिए अनुरोध कर सकते है?

मैंने अपने प्रकाशन को आपको एक प्रति भिजवाने के लिए कहा है। तब तक मैं आपको एक नोटिस भेज रहा हूं, जिससे आपको पुस्तक की विषयवस्तु के बारे में पता चलेगा।

कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूं और शीघ्र पत्रोत्तर की आशा करता हूं।

आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

ई वुड्स को,

होटल डी. फ्रांस
स्काटेनारिंग–3
विएना–1
4 फरवरी 1935

प्रिय श्रीमती वुड्स,

दो सप्ताह पूर्व यूरोप और एक सप्ताह पूर्व विएना लौट आया हूं। यहां पहूंच कर आपका 5 जनवरी का पत्र मिला। आपने अपने पत्र में जो सहानुभूति प्रदर्शित की है, मैं उसके लिए आपका आभारी हूं।

दुख के साथ सूचित कर रहा हूं कि यद्यपि मेरा स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा बेहतर है, किंतु अधिक संतोषजनक नहीं है। शीघ्र स्वस्थ होने का प्रयास कर रहा हूं। यह कहना आवश्यक नहीं कि पूर्ण स्वस्थ होते ही मैं आयरलैंड जाने का विचार रखता हूं।

श्रीमती मैकब्राईड कैसी औश्र कहां है? कृपया मेरी हार्दिक शुभकामनाएं उन तक पहुंचा दें। मेरे भाई सरत, (जो अभी तक नजरबंद है) श्रीमती मैकब्राईड से पेरिस में मिले थे, ने भी उन्हें प्रणाम प्रेषित किया है। मेरे भारत निवास के दौरान मुझ पर बहुत से प्रतिबंध थे, फिर भी मुझे अपने परिवार के सदस्यों से मिलने की अनुमति थी।

कृपया सूचित करें कि इंडो–आयरिश लीग का कार्य कैसा चल रहा है?

सादर,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जे. टी. सुंदरलैंड को,

होटल डी. फ्रांस
स्काटेनारिंग–3
विएना–1
12 फरवरी 1935
डा. जे. टी सुंदरलैंड
1510, कैंब्रिज रोड
एन, आर्बर
मिकिंधम

प्रिय महोदय डा. सुंदरलैंड,

आपको जानकर हर्ष होगा कि हाल ही में भारतीय राजनैतिक आंदोलन पर मेरी 'द इंडियन स्ट्रगल, 1920–34' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक वाममार्गी राष्ट्रीय विचारधारा में लिखी गई है। प्रसन्नता का विषय है कि इंग्लिश प्रेस ने इसकी पर्याप्त प्रशंसा की है। लंदन में अपने प्रकाशक को मैंने लिखा है कि वे आपको इसकी प्रति भिजवा दें, यदि आप इसे स्वीकार करेंगे तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

रोम्यां रोला से
विलेनेयूव (वॉड)
विला ओलगा
22 फरवरी, 1935

प्रिय श्री सुभाष चंद्र बोस,

आपकी पुस्तक 'द इंडियन स्ट्रगल 1920–34' मिली। पुस्तक भिजवाने के लिए धन्यवाद। इस पुस्तक के लिए हार्दिक बधाई! पुस्तक इतनी दिलचस्प लगी कि मैंने उसकी एक और प्रति मंगवाई है ताकि मेरी–पत्नी व पुत्री भी इसको पढ़ सकें। भारतीय संघर्ष के इतिहास में यह महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य में आपका एक इतिहासकार के रूप में स्पष्टवादिता और मानसिक संतुलन स्पष्ट झलकता है। ऐसा

कम ही देखने में आता है कि आप जैसा कार्यकर्ता पार्टीवाद से हटकर अपना स्पष्ट निर्णय सामने रख सके। हम जैसे विचारकों का ही यह कर्तव्य है कि अनिश्चित व थकान के समय हमें घेर लेने वाले स्वार्थों के प्रति हम संघर्ष करें और मनुष्यों को ईश्वर, कला, आत्म स्वतंत्रता तथा रहस्यवाद के क्षेत्रों से उत्पन्न संघर्षों से बचाने का उपाय करें। इस संघर्ष में , समुद्र के इस पार मानवीय युद्ध भूमि ही हमारी कर्मभूमि है।

मुझे आशा है कि आपका स्वास्थ्य शीघ्र ही ठीक होगा, क्योंकि भारत को आपकी बहुत आवश्यकता है और मुझे हृदय से आपके साथ सहानुभूति है, कृपया मुझ पर विश्वास रखें।

रोम्या रोलां

अमिय चक्रवर्ती को,

विएना XVIII
कॉटेज गेस 21
7 मार्च, 1935

प्रिय प्रोफेसर चक्रवर्ती साहब,

रोम पहुंचने पर सबसे पहले आपका ही समाचार मिला। प्रारंभ में मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आप यूरोप आए हुए हैं। प्रसन्नता का विषय है कि आपने भारतीय विद्यार्थियों के सम्मेलन की अध्यक्षता की।

डा. सेलिंग से मेरी भेंट हुई और हमने आपस में काफी बातचीत की। एक दिन मैंने उन्हें चाय पर आमंत्रित किया है और फिर उनसे लंबी परिचर्चा करूंगा। उनसे बात करना अच्छा लगा क्योंकि उनकी बात में गांभीर्य है। उन्होंने पहले मुझे पत्र लिखा (आपका पत्र साथ में), अतः मैंने उनसे परिचय किया और यहां बैठक में उनसे मिला। (कुछ दिन पहले 'मैंने भारतीय महिलाएं' विषय पर महिलाओं की सभा में भी भाषण दिया।

मेरी पुस्तक पर आपकी सम्मति से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। री रोम्यां रोलां ने भी मुझे एक बहुत अच्छा पत्र लिखा है।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आपेन 'शांतिनिकेतन' छोड़ दिया है। मेरा विश्वास है कि किसी दूसरे वृक्ष की छत्रछाया में कोई भी वृक्ष अधिक ऊंचाई तक नहीं पहुंच सकता। महात्मा गांधी के शिष्यों को देखकर तो मुझे यही आभास होता है। इसीलिए स्वामी विवेकानंद अपने शिष्यों को अधिक समय तक अपने इर्द गिर्द समेटे नहीं रहते। बहरहाल इस विषय को यहीं छोड़ते हैं।

आप कब तक वहां रहेंगे? जो पुस्तक आपक लिख रहे हैं उसका विषय क्या

है?

मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएं
आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
जिनेवा
21.3.1939

श्री एन. सी. वैटर
व्हीरिंगर स्ट्रीट–41
विएना–IX
(आस्ट्रेख)
प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं यहां ठीक–ठाक पहुंच गया हूं, सूचना देने के लिए पत्र लिख रहा हूं। कल स्मृति समारोह आयोजित की जाएगी। मुझे प्रसन्नता है कि मैं यहां आया।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
जिनेवा
25.3.1935

श्री एन. सी. वैटर,
व्हरिंगर स्ट्रीट–41
विएना–IX
(आस्ट्रेख)
प्रिय श्रीमती वैटर,

जिस दिन में यहां पहुंचा था, उस दिन जल्दबाजी में आपको एक–दो पंक्तियों लिखी थी।

समारोह शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। यदि नहीं पहुंचता तो बहुत दुख होता, क्योंकि उस दशा में लोगों को बहुत निराशा होती। अभी कुछ दिन और यहीं व्यतीत कर यहां के पुराने स्थानों को देखूंगा और पुराने मित्रों से मिलूंगा, फिर विएना लौटूंगा।

जिनेवा की यात्रा बहुत सुखद थी। विशेषरूप से जब हम टायरोल से गुजर

रहे थे। यदि प्रबंध हो पाया तो मैं एक–दो दिन इन्सब्रक और शाल्जबर्ग में रूकना चाहूंगा।

आशा है आप उस विषय के अध्ययन में रत हैं। सपरिवार स्वस्थ एंव सानंद होंगी।

सादर।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

होटल सुसी
जिनेवा
29.3.1935

प्रिय श्रीमती सी. वेटर,

आपका 24 मार्च का पत्र कल प्राप्त हुआ। डा. वी का संलग्नक पढकर अच्छा लगा।

भारत के एक महत्वपूर्ण गैर सरकारी समाचार–एजेंसी तथा एयरमेल पत्र आपको भिजवा रहा हूं। पत्र के उपयोगी हिस्सों पर लाल पेन से निशान लगा दिए हैं। बंगला फिल्म का प्रचार भारत में प्रारंभ हो चुका है और विधायिका हिल चुकी है। (असल में सरकार को मजबूर करने के लिए विधायिका के पास वास्तविक ही नहीं है) जो सूचना वे चाहते हैं क्या आप या आपका कोई मित्र एकत्रित कर सकता हैत्र पत्र में आपक देखेंगे कि वे पता करना चाहते हैं, कि–1 फिल्म–कहानी 2. चित्र–अत्यधिक आपत्तिजनक दृश्यों सहित। चित्रों की कीमत में अदा करूंगा तथा बंगाल कलकत्ता में आनंद बाजार पत्रिका (बंगाल का दैनिक पत्र) सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला पत्र है। संलग्न पत्र फिलहाल आप अपने पास ही रख लें।

अभी एक–दो सप्ताह और यहीं रहूंगा।

डा. वैटर आपको शुभकामनाएं
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

रेगीना पलास्त होटल
मुनकेन
8.4.1935

श्री एन. सी वैटर,

व्हीरिगर स्ट्रीट–या
विएना- IX
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कुछ देर ज्यूरिख में रूकने के बाद पिछली रात मैं यहां पहुंचा। कुछ दिन और यहा रूककर विएना के लिए रवाना होऊंगा। आशा है कहीं और नहीं रूकूंगा लेकिन साल्जबर्ग के बारे में निश्चित रूप सें कुछ नहीं कह सकता।

आशा है आपको मेरा पिछला पत्र मिला होगा जिसमें मैंने बंगला फिल्म से संबंधित भारत से प्राप्त एक पत्र भी भेजा था।

जिनेवा छोड़ने से पूर्व श्री रोम्यां रोलां से मेरी दिलचस्प बातचीत हुई।

शुभकामनाओं सहित
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ए. के. फजलूल हम को,

सैनिटोरियम रूडोल्फीनरहास
बिलरॉथ स्ट्रासे
विएना
10 मई, 1935,

प्रिय श्री फजलूल हक,

लंदन टाइम्स से सूचना मिली कि आप हमारे शहर के मेयर नियुक्त हुए हैं। आपक चुनाव अर्से से लंबित था। खैर, देर आयद दुरूस्त आयद।

आशा है अपना कार्यकाल सफलतापूर्वक पूरा करेंगे तथा आपके कार्यकाल के दौरान बंगाल के विभिन्न संप्रदाय के लोग एकजुट होकर कार्य करेंगे जिसके परिणामस्वरूप निगम के अंदर हमें एक टीमवर्क देखने का मौका मिलेगा। कृपया एक ऐसे व्यक्ति की शुभकामनाएं स्वीकार करें जो ह्रदय से तो आपके निकट है, किंतु हजारों मील दूर है।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

रूडोल्फीनरहॉस
15.5.1935

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

श्री डा. एन. सी वैटर,
विएना– IX
व्हीरिगर स्ट्रीट– 4
प्रिय श्रीमती वैटर,

आशा है आपका पिछल पत्र मिलने के बाद से अब तक आप काफी स्वस्थ होंगी। आज इस स्थान को छोड़कर सैनिटोरियम वेस्टएंड, पुरकरसडोर्फ बी/विएना जा रहा हूं। धीरे–धीरे काफी आराम मिल रहा है। कमरपेटी की सहायता से कुछ थोड़ा बहुत चल लेता हूं। पुराना दर्द तो खत्म हो गया है, किंतु आपरेशन के बाद की पेट की परेशानियों से अभी मुक्त नहीं हो पाया हूं। इसमें अभी समय लगेगा। आपके स्वास्थ्य की हृदय से कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

कुरहास कोनिग्नि अलेक्जैंड्रा
कार्ल्सबाद
17.6.1935
श्री एन. सी वैटर,

विएना– IX
व्हीरिगर स्ट्रीट– 41
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कल रात विएना से यहां पहुंचा। प्राग तक की यात्रा में श्रीमती नेहरू साथ थीं। प्राग से मैंने दूसरी गाड़ी ली और डा. कटियार उनके साथ बर्लिन तक गए। इंडो–चेक सोसायटी के प्रोफेसर लेस्नी स्टेशन पर उनसे मिलने आए थे। तीन घंटे मैंने उनके साथ बिताए और फिर कार्ल्सबाद के लिए रवाना हुआ। आपरेशन करवाने के बाद कल रात पहली बार मैं लगातार सात घंटे सोया। आशा है। आजकल यहां वैसी भीड़भाड़ नहीं, जैसी कि आशा थी।

कल रात डा. वैटर को भ्रमण कैसा लगा? दोनों को सादर प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

कुरहॉस कोनिग्नि अलेक्जैंड्रा
कार्ल्सबाद
21.6.1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

18 जून का आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई।

विएना से मैंने बंगाली फिल्म के संदर्भ में एक अनुस्मारक भेजा था। जवाब में उनके सचिव ने लिखा है कि मालिक ने संबद्ध अधिकारियों को लिखा है किंतु अभी कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। यदि मैं चाहूं तो सीधे उनसे पत्र व्यवहार कर सकता हूं।

मुझे यह जानकर दुख हुआ कि उस सर्दी की रात में बहुत महत्वहीन लोग डा. वैटर के स्वागत क लिए वहां उपस्थित थे।

कोसथ के विषय में आपने एक पुस्तक का जिक्र किया था। क्या आप भारत से प्रकाशित होनेवाली अंग्रेजी (राष्ट्रीय) पत्रिका के लिए लेख लिखेंगी? हमारे पाठक उसे पढना चाहेंगे।

एक पत्र साथ भेज रहा हूं जो फ्रेंच भाषा में भिजवाना चाहता हूं। मेरे लिए क्या आप इसका अनुवाद कर देंगी? शायद आपको ध्यान हो कि आपने प्रो. नाशे के पत्र को मेरे लिए अनुवाद किया था।

यहां का मौसम अच्छा है। वहां कैसा है?

यदि आपका स्वास्थ्य ठीक हो और आपके पास पर्याप्त समय हो तो आप एक छोटा सा लेख लिख दें जिसमें प्रोफेसर हाउर के विचारों का उल्लेख हो।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

कार्ल्सबाद
कुरहास कोनिग्नि अलेक्जैंड्रा
27.6.1935

माननीय एन. सी वैटर,

विएना– IX
व्हीरिगर स्ट्रीट– 41
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आशा है मेरा पिछला पत्र आपको समय पर मिल गया होगा। श्री गोकुलचंद चाहते हैं कि डोजेंट पिल्लट उनकी धर्मपत्नी की जांच व इलाज (यदि आवश्यक हो तो) करें। वे चाहते हैं कि कोई उन्हें श्री डोजेंट से परिचित करा दे। कृपया डोजेंट पिल्लट को फोन करके सूचित कर दें कि मेरे एक मित्र अपनी पत्नी की नेत्र चिकित्सा हेतु उनकी राय लेना चाहते हैं। मुझे लगा कि इस व्यक्ति के विषय में डा. पिल्लट से सहायता लेनी चाहिए, आशा है आप भी मेरी इस बात से सहमत होंगी। ये सज्जन आजकल विएना में ही हैं।

यहां का मौसम गर्म हो रहा है। वहां कैसा है?

मुझे डर है कि गर्म मौसम मेरे लिए अधिक लाभकारी नहीं होगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

कुरहॉस को निलिन अलेक्जैंड्रा
कार्ल्सबाद
8.7.1935

माननीय एन. सी वैटर,

विएना– IX
व्हीरिगर स्ट्रीट– 41
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती व्रैटर,

आपका 26 जून का पत्र फ्रेंच अनुवाद सहित प्राप्त हुआ। बहुत–बहुत धन्यवाद!

श्रीमती हार्ग्रोव का लंबा पत्र भी मुझे मिला है जो आजकल ट्रायोल में हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि शायद आप हॉफगैस्टिन जाएं, जहां वे अभी कुछ दिन बाद पहुंचने वाली हैं।

आप सब लोगों का स्वास्थ्य कैसा है? सादर।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

अमिय चक्रवती को,

आपका और प्रोफेसर लेस्नी का पोस्टकार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। मैं आपका आभारी हूं कि आपने यहां आने का कष्ट किया। मुझे प्रसन्नता है कि मुझे दा तीन दिन

आपके संपर्क में रहने का मौका मिला और आपसे अंतरंग परिचय संभव हो सका। आशा है आप प्रायः पत्र लिखते रहेंगे।

एक बार जब आप इंग्लैंड गए थे, तो कुछ बुद्धिमान लोगों की राय थी कि, यह सोचना गलत है कि मनुष्य के जीवन में बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था में आए परिवर्तनों की भांति ही राष्ट्र के जीवन में भी परिवर्तन होता है। क्या आप इस विषय में कोई पुस्तक मुझे सुझा सकते हैं। मेरी अपनी राय में में राष्ट्र जीवन भी बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था में से गुजरता है। अतः मैं इस विचार के विपरीत तर्क व मतों को पढ़ना चाहता हूं।

आज मैंने एच. जी. वैल्स का 'द न्यू अमेरिका, द न्यू वर्ल्ड पढ़ा'। क्या आपने पढ़ा है?

अभी तक मैंने लंदन कोई पत्र नहीं भेजा है। कृपया अपनी गतिविधियों व पते के बारे में सूचित करें।

सदैव आपका अपना
सुभाष सी. बोस

कुरहास कोनिग्नि अलेक्जैंड्रा
कार्ल्सबाद (चेकोस्लोवाकिया)
24 जुलाई, 1935

श्रीमती एम. ई. वुड्स को,

131, मोरहेंप्टन रोड
डोनीब्रुक
डब्लिन

प्रिय श्रीमती वुड्स,

खेद है कई महीनों से आपको पत्र नहीं लिख पाया। दिसंबर में मैं भारत में था, फिर जनवरी में पुनः यूरोप लौटा हूं। अप्रैल के अंत में मैंने आपरेशन कराया और आजकल कार्ल्सबाद में इलाज कके लिए रह रहा हूं। आशा है अभी कुछ दिन और यहां रहूंगा।

मेरे एक मित्र श्री चालिहा, जो सन् 1920 से इंडियन कांग्रेस के लिए कार्य कर रहे हैं एक दिन मुझे देखने आए थे और उन्होंने डब्लिन जाने की इच्छा व्यक्त की थी।

मैंने उन्हें आपका पता दे दिया था और आपसे संपर्क करने को कहा था। श्री

चालिहा भद्रपुरूष हैं और कई बार जेल जा चुके हैं। उन्हें पोस्त की बुराईयों (दुष्प्रभावों) का विशेष ज्ञान हैं, आप जानती ही होंगी कि ब्रिटिश राज्य इसका अधिक–से–अधिक लाभ ले रहा है। मैं चाहूंगा कि श्री चालिहा न्यू आयरलैंड जाएं और वहां के कुछ लोगों से मिलें, जो आयरिश स्वतंत्रता के लिए कार्यरत है। आप भी उन्हें इंडो–आयरिश लीग के कार्यों के बारे में अवश्य बताएं।

कृपया अपने व मैडम मैकब्राइड के विषय में सूचना अवश्य दें।

आपका शुभकांक्षी

सुभाष सी. बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

कुरहास कोनिग्नि अलेक्जैंड्रा

कार्ल्सबाद

(चेकोस्लोवाकिया)

5.8.35

प्रिय सुनील,

तुम्हारे दो पत्र एक फरवरी में व दूसरा जून में मिले। पत्रों का उत्तर नहीं दे पाया कृपया क्षमा करें।

आपरेशन करवाने के बाद मुझे यहां आए एक माह से ऊपर हो चुका है। पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य अच्छा है, किंतु अभी अंदरूनी कमजोरी (आपरेशन के स्थान पर) है, परिणामस्वरूप प्रायः दर्द होता रहता है। पुराना दर्द तो अब नहीं है किंतु पाचन शक्ति अधिक संतोषजनक नहीं है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि धीरे–धीरे स्वास्थ्य सुधर रहा है।

पहला पत्र तुमने इस प्रकार लिखा है जैसे कोई तीसरा व्यक्ति उसे नहीं देखेगां तुम्हें याद रखना चाहिए कि मेरे पत्र तीसरे व्यक्ति की नजर से बच नहीं सकते।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? आजकल क्या कर रहे हो? मुर्शिदाबाद में सब कैसा है?

आजकल एक अन्य पुस्तक लिखने का प्रयास कर रहा हूं। पहली पुस्तक के जोरदार स्वागत से उत्साहित होकर यह कार्य प्रारंभ किया है। मैं बाहर के लोगों को हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के विषय में बताना चाहता हूं।

तुमने एक फोटो के लिए लिखा था–भिजवा रहा हूं।

पूर्ण स्वस्थ होते ही घर लौटूंगा, यही मेरी इच्छा भी हैं।

तुमने लिखा है कि तुम्हारे पिता का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। कृपया लिखें कि आजकल वे कैसे है?

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ हैं।

प्रेम सहित।

तुम्हारा अपना
सुभाष चंद्र बोस

जे. टी. सुंदरलैंड को,

कुरहॉस कोनिग्नि अलेक्जैंड्रा
कार्ल्सबाद (चेकोस्लोवाकिया)
6 अगस्त, 1935

प्रिय डा. सुंदरलैंड,

आपका 12 मार्च का पत्र प्राप्त हुए बहुत दिन हो गए। पत्रोत्तर देने में विलंब के लिए क्षमा चाहता हूं। अप्रैल के अंत में मेरा एक बड़ा आपरेशन हुआ है। आजकल पहले की अपेक्षा स्वस्थ हूं यद्यपि स्थिति संतोषजनक नहीं है। अभी कुछ माह और यूरोप में ही रहूंगा। भारत पर एक और पुस्तक लिखने का प्रयास कर रहा हूं, जिसमें राष्ट्रीय आंदोलन को विस्तार से लिखना चाहता हूं। कृपया सूचित करें कि आजकल आपका स्वास्थ्य कैसा है।

नया संविधान पारित हो गया है और जबर्दस्ती भारत पर लागू किया जाएगा। मद्रास के श्री सत्यमूर्ति के नेतृत्व में कुछ कांग्रेस संविधान पर कुछ कार्य करना चाहते हैं। फिलहाल कांग्रेस ने इस विषय पर कोई विचार नहीं बनाया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप इस नए संविधान को स्वीकार करने के पूर्ण विरूद्ध हैं।

शुभकामनाओं सहित,

मैं,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

कुरहॉस केनिगिन
अलेक्जैंड्रा, कार्ल्सबाद
17.8.1935

माननीय एन. सी वैटर,

विएना– IX
व्हीरिगर स्ट्रीट– 41

(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके पिछले पत्र का उत्तर, मैंने टायरोल के पते पर, समय पर दे दिया था। उसके बाद से आपका कोई समाचार नहीं मिला। पहले मैंने सोचा कि शायद आप कुछ दिन आराम करना चाहती हैं, इसलिए पत्राचार हेतु आपको कष्ट देना उचित नहीं समझा। श्रीमती हार्ग्रोव के पत्र से ज्ञात हुआ कि आप विएना जा चुकी हैं। उस बात को भी बहुत दिन हो गए फिर भी आपका कोई समाचार नहीं मिला। मैं बहुत चिंतित हूं।

इधर कोई विशेष समाचार नहीं, सिवाय इसके कि लगभग साढ़े तीन वर्ष की नजरबंदी के बाद मेरा भाई छूट चुका है। मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है किंतु कार्य आगे नहीं बढ़ पा रहा।

सदैव आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

कार्ल्सबाद
6.9.1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका 27 अगस्त का पत्र समय पर मिल गया, किंतु जिस मानसिक अवस्था का अपने जिक्र किया उसे पढ़कर दुख हुआ। मैं समझ नहीं पा रहा कि आपने यह निष्कर्ष कैसे निकाल लिया कि आपके पत्रों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं, जबकि मैं प्रायः अपने कार्य में या कुछ अन्य चिंताओं से घिरा हुआ था। मुझे अपने उन मित्रों से, जो घर वापिस जा रहे थे और मुझे मिलने यहां इतनी दूर नहीं आ सकते थे, मिलने जाने को बैगस्टीन की लंबी यात्रा करनी पड़ी। पिछले पंद्रह दिन से एक अन्य चिंता से ग्रस्त हूं क्योंकि श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य चिंताजनक है। यूरोप व भारत के बीच बहुत से तारों के आदान–प्रदान के बाद श्री नेहरू को जेल से केवल दो दिन के लिए छोड़ गया। वे अपनी पत्नी को देखने शायद वायुयान द्वारा यूरोप आएंगे।

यहां ठहरने से मुझे काफी लाभ हुआ है, किंतु आपरेशन के उपरांत पैदा हुई परेशानियों से मैं छुटकारा नही पा सका हूं । परिणामस्वरूप मुझे बैल्ट पहले रहनी होगी और अधिक परिश्रम से बचना होगा। मैंने प्रोफेसर डैमेल से उनकी राय मांगी थी, उन्होंने कहा है कि मुझे 'गैस्टीन' में उपचार कराना चाहिए। बैगस्टीन में मैंने श्रीमती हार्ग्रोव से मेरे लिए कुछ बोर्डिंग हाउस आदि की जानकारी एकत्र कराने को कहा था किंतु अब सोचता हूं कि बैगस्टीन की अपेक्षा हॉफगस्टीन जाऊंगा। कल मैं श्रीमती नेहरू को

देखने बेडनविलर (श्वार्जवाल्ड, जर्मनी) जाऊंगा। संभव है कुछ दिन पश्चात वहां पंडित नेहरू से भी मुलाकत हो सके। वहां से मैं हाफगॅस्टीन के लिए रवाना होऊंगा। अभी कह नहीं सकता कि कितने दिन बैडनविलर में रूकूंगा। यह श्रीमती नेहरू की अवस्था पर निर्भर करता है। वहां का मेरा पता रहेगा—द्वारा पोस्ट लेगंर्ड, बैडनिवलर।

श्रीमती हार्ग्रोव ने लिखा है कि जब आप वहां थीं तो आपने पर्वतों पर चढ़ने का खूब आनंद लिया। आशा है कुछ दिन बाहर रहने के उपरांत आप बेहतर महसूस कर रही होंगी। डा. वैटर कैसे हैं? दोनों को मेरी शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

नाओमी सी. वैटर,

हॉफगैस्टीन
पोस्ट लेगंर्ड
1.10.1935

प्रिय श्रीमती वैटर

खेद है कि लंबे समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया । आपका एक पत्र बेडनविलर में तथा एक दिन एक और पत्र मिला। यहां मैंने आपका संदेश श्रीमती नेहरू को भेज दिया था। दुख का विषय है कि उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं है। यदि वर्तमान स्थिति बनी रही तो शीघ्र ही प्राणांत हो जाएगा। बहरहाल यही संतोष की बात है कि उनके पति इस समय उनके-समीप हैं। संभव है इस माह के अंत में मैं उनसे मिलने एकबार फिर जाऊं। नवंबर के प्रारंभ में मेरा पूर्वी यूरोप जाने का विचार है। किंतु अभी इस विषय में कोई निर्णय नहीं हो पाया है इसलिए कृपया इसे गुप्त ही रखें।

आजकल मैं वहां इलाज करवा रहा हूं और यह इलाज इस माह के अंतिम सप्ताह तक चलेगा। मेरे कार्य में संतोषजनक प्रगति नहीं है। इसलिए शुरू में तो बहुत कष्ट होता था। अब मैं सामान्य रूप से स्वथ होने की कोशिश कर रहा हूं, अपने कार्य की बलि देकर, क्योंकि भविष्य के लिए मेरा स्वास्थ्य अधिक महत्वपूर्ण है। वैसे भी मैं यूरोप स्वास्थ्य की दृष्टि से ही तो आया था। दूसरी ओर यदि यूरोप में रहते हुए में यह कार्य संपन्न न कर पाया तो भारत लौटने पर इतना समय नहीं होगा कि इसे पूरा कर सकूं।

जानकर प्रसन्नता हुई कि मेरे भाई के भाषण से आपको संतोष हुआ। उसकी दिलचस्पी विएना में मेरे उन पत्रों को पढ़कर हुई जो मैंने कलकत्ता के मेयर को लिखे थे जो वहां की प्रेस में प्रकाशित हुए। बाद में उन्होंने मुझे और सूचना भेजने को कहा और मैंने उन्हें विएना निगम पर अंग्रेजी की पुस्तक प्रेषित की (और शायद, वह पुस्तक

आपने ही उन्हें भेजी थी।) ऐसी संभावना है कि शायद अगले वर्ष वे मेयर चुने जाएं, यदि वे ध्यान दें तो। अभी तक तो वे पीछे ही रहे हैं, लोक सम्मान या पद से परे–क्योंकि उनकाक मानना है कि उसी व्यक्ति को पद व सम्मान प्राप्त करने का हक है जो पूरा समय लोक हित में व्यतीत कर सके। इस सप्ताह जब मैं उन्हें पत्र लिखूंगा तो उनके भाषण के संबंध में आपके विचार भी उन तक पहुंचा दूंगा। जिससे निश्चय ही उन्हें प्रसन्नता होगी।

मेरी भविष्य की योजनाएं अभी निश्चित नहीं हैं, सिवाय इसके कि आगामी फरवरी–मार्च में घर लौटना चाहता हूं। नेशनलिस्ट पार्टी का सालाना जलसा (जो भारत की एक महत्वपूर्ण घटना है) मार्च में होगा। मैं उसमें उपस्थित रहना चाहूंगा। हाल ही में भारतीय विधानसभा में मेरे विषय में कुछ पूछताछ हुई। सरकार का कहना है कि मेरे भारत लौटने पर किसी प्रकार की रोक–टोक नहीं है। (यह मैं पहले से ही जानता था।) जब मैं बंबई पहुंचूंगा तो वे मेरे साथ केसा व्यवहार करेंगे इस विषय पर वे चुप हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे बंबई पहुंचते ही सरकार मुझे सीधे जेल मे डाल देगी, और इसलिए मुझे गंभीरता से सोचना है कि उस दशा में मुझे क्या करना होगा। मुझे घर वापिस जाना चाहिए या.......

मुझे आशा है कि हर हाल में इस माह के अंत में मैं विएना में होऊंगा। यदि पूर्व की ओर लंबी यात्रा पर गया, शायद एक माह की, तो। उसके बाद विएना आऊंगा, और यदि स्वास्थ्य ने अनुमति दी तो कुछ स्कीइंग भी करना चाहूंगा।

डा. वैटर का व आपका स्वास्थ्य कैसा है? आप दोनों को प्रणाम,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

वी. लैस्नी को,

द्वारा पोस्ट लैगंर्ड
हॉफगैस्टीन (आस्ट्रिया)
2 अक्तूबर, 1935
प्रोफेसर लेस्नी
प्रैजीडेंट, इंडो–चेकोस्लोवाकियन सोसायटी,
प्राहा

प्रिय प्रोफेसर साहब,

आशा है आपकी सोसायटी की बैठक जल्दी ही होगी। शायद यह नए सत्र की उद्घाटन बैठक हो। इस अवसर पर मै। सोसायटी के लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति

के लिए किय जा रहे निःस्वार्थ प्रयासों के लिए आपको बधाई संदेश देना चाहूंगा और सोसायटी के सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए आप लोगों की प्रशंसा करूंगा। मैं स्वीकार करता हूं कि प्रारंभ में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रगाढ़ करने में भारतीयों की संख्या अधिक नहीं थी, किंतु अब हर्ष का विषय है कि अधिक से अधिक महत्त्वपूर्ण भारतीय विश्व के उन्नतिशील देशों के साथ संबंध प्रगाढ़ करने को उत्सुक हैं। मेरे विषय में तो आप जानते ही हैं कि इंडो–चेकास्लोवाकियन सोसायटी के कार्यों में मुझे प्रारंभ से ही बहुत रूचि थी, जिसका एक कारण यह था कि आपके देश के प्रति मुझमें आकर्षण था। मुझे विश्वास है कि अगले वर्ष जब मैं भारत जाऊंगा। आपको तथा सोसायटी के सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि अधिकांश भारतीय आपके कार्यो का अनुसरण कर रहे हैं और मुझे पूरा भरोसा है कि निकट भविष्य में ऐसे अंतर्राष्ट्रीय अनुबंधों से दोनों ही देशों को समुचित लाभ पहुंचेगा और अच्छे परिणाम सामने आएंगे।

मेरा सहयोग व शुभकामनाएं सदा आपके साथ हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जवाहरलाल नेहरू को,

पोस्ट लैगंर्ड
हॉफगैस्टीन
4 अक्तूबर, 1935

मेरे प्रिय जवाहर,

दो और तीन तारीख का एक के बाद एक लिखा पत्र मिला।

फ्रीवर्ग सर्जन की रिपोर्ट पढ़कर सुख महसूस हुआ। आशा करता हूं कि उनकी मेडिकल साइस रोगों की प्लूरिसी कष्ट के निवारण में सहायक सिद्ध होगी। संभव है आपने श्रीमती नेहरू को किसी अन्य जगह ले जाने की राय मांगी हो। यदि वर्तमान कष्ट में मैं आपके किसी काम आ सकूं तो आशा है आप मुझे कहने से हिचकिचाएंगे नहीं।

मेरी पुस्तक में गलती दर्शाने के लिए आपका धन्यवाद। संभव है, जैसा कि आपने कहा–कई गलतियां रही हों–किंतु मुझे विश्वास है कोई गंभीर गलती नहीं होगी।

दुर्भाग्यवश मुझे अपनी याददाश्त, विशेषरूप से तिथियों के संबंध में, का ही सहारा लेना पड़ा अतः मैं स्वयं को असमर्थ महसूस करता था। उस काल का कोई साहित्य मुझे उपलब्ध नहीं हो सका, और निकट कोई ऐसा व्यक्ति भी नहीं था जो इस विषय में मेरा सहायक सिद्ध हो सकता। पंडित मोतीलालजी की मृत्यु विशेष रूप, से

तिथि के संदर्भ में मैंने अपने मस्तिष्क पर बहुत जोर दिया, किंतु सफल नहीं हो सका। प्रिंटींग की भी कुछ अशुद्धियां आपको देखने को मिलेंगी—खासतौर पर प्रूफ की अशुद्धियों के कारण। केवल एक बार—वह भी कई भागों में—मैं प्रूफ जल्दबाजी में पढ़ पाया क्योंकि मुझे भारत लौटने की जल्दी थी। फिर पुस्तक अत्यंत दबाव में लिखी गई थी और मेरा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं था। आप द्वारा बताई गई सभी कमियों को मैंने नोट कर लिया है और उनमें आवश्यक, संशोधन कर दूंगा, ताकि द्वितीय संस्करण में वे ठीक की जा सकें।

मैनचैस्टर गार्डियन में दिए गए अपने भाषण की प्रति साथ भेज रहा हूं। एक अक्तूबर को यह प्रकाशित हुआ था।

अब तक आपको खबर मिल चुकी होगी कि एबीसिनिया में युद्ध प्रारंभ हो चुका है। प्रश्न यह है कि क्या यह युद्ध इंग्लैंड और इटली के मध्य युद्ध का रूप लेगा।

आपका अपना

सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

पोस्ट लैगंर्ड

हॉफगैस्टीन

12.10.1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आशा है मेरा पिछला पत्र समय पर मिल गया होगा। यहां मौसम बहुत सुहावना है और इस माह की दो तारीख को यहां बर्फ भी पडी। मेरे विचार से विएना में काफी गर्मी होगी। इस माह के अंत में कुछ सप्ताह के लिए मैं रूस जाने की सोच रहा हूं। शायद इस माह के अंतिम सप्ताह में विएना से गुजारूंगा। कृपया इस सूचना को गुप्त रखें क्योंकि अभी विश्वस्त नहीं हूं कि वहां जा पाऊंगा या नहीं।

आर. आर. पर लिखा लेख भारतीय पत्रिका में प्रकाशित हुआ, किंतु वहां के कठोर नियमों के कारण संपादक ने कुछ भाग काट दिए जिसकी वजह से उस लेख का महत्व कम, बल्कि नष्ट हो गया। किंतु उस दशा में कुछ नहीं किया जा सकता।

आपका संदेश पंडित नेहरू तक पहुंचा दिया है। श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य पहले जैसा ही है। यही अच्छी बात है कि हालत और बिगड़ी नहीं है।

जिस पीड़ा से श्रीमती फ्यूलाप मिलर गुजर रही हैं उसके बारे में आपको सूचना मिल चुकी होगी।

आपका शुभाकांक्षी

नाओमी सी. वैटर को,

पार्क होटल
म्यूनेकन
25.10.1935
माननीय एन. सी. वैटर
विएना–IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट–41 (आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कुछ दिन पूर्व आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई । दो दिन पूर्व में हॉफगैस्टीन से निकला था। अब श्रीमती नेहरू से गिलने बेडनविलर आया हूं। 29 या 30 तारीख को विएना पहुंचूंगा। फिर तत्काल पूर्व दिशा की यात्रा पर निकलूंगा। इस अल्पावधि में विएना में आपसे मिलने की उम्मीद रखता हूं। डा. वैटर व आपको शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डा. थिरफेल्डर को,

अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी,
विएना–1
केरंटनेरिंग–14
7 नवंबर, 1935

प्रिय डा. थिरफेल्डर,

आपकी इच्छानुसार म्यूनिख में हम दोनों के बीच हुए वार्तालाप के सार को लिखित रूप दे रहा हूं।

जैसाकि आप जानते ही हैं कि, 1933 में अपनी प्रथम जर्मनी यात्रा के दौरान मैंने जर्मनी और राष्ट्रवादी भारत के मध्य संबंधों को सुधारने का पर्याप्त प्रयास किया था। दुर्भाग्यवश कुछ ऐसी स्थितियां पैदा हो गई जिन्होंने इस मैत्री पर अपना दुष्प्रभाव ही डाला। वास्तव में, नई सत्ता ने, जिसने जर्मनी में प्रगति व उन्नति प्राप्त की, जर्मनी और भारत के पूर्ण मैत्री संबंधों को खराब करने में बहुत योगदान दिया। यहूदियों द्वारा छेड़े गए नाजी–विरोधी उस आंदोलन का सामान्य प्रभाव नहीं था जिसने पूरे विश्व को घेर रखा था। इसके विपरीत, भारतीयों को स्वयं यह महसूस हुआ कि पहले की अपेक्षा अब भारत के प्रति जर्मनी का रूख मैत्रीपूर्ण नहीं है। मैंने जर्मनी की कुछ विशिष्ट

हस्तियों को, स्पष्ट शब्दों में बताने का प्रयास किया है कि भारत के प्रति जर्मनी के इस रूख के कारण क्या हो सकते हैं।

वे कारण निम्न हैं।–

1. जर्मनी सरकार का ब्रिटीश सरकार के प्रति मैत्रीपूर्ण रूख।

2. जर्मनी के सामान्य लोगों के मध्य जातिवाद प्रचार, जिसने रंगभेद को बढ़ा दिया।

3.वर्तमान भारत के प्रति जर्मनी के नेताओं में अवज्ञा का रूख जो उनके लेखन व रिपोर्ट में भी स्पष्ट झलकता है।

4.जर्मन प्रेस में भारत के पक्ष के लेखों को रोकना या सेंसद करना और भारत–विरोधी लेखों का प्रकाशन। जर्मनी में मेर कई मित्र हैं, जिनमें राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी के उत्साही सदस्य भी शामिल हैं। उनसे वार्तालाप के दौरान मैं अपनी राय प्रकट करता रहा हूं कि किस प्रकार आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता लाई जा सकती है। मेरे सुझाव निम्नलिखित हैं।

1.जातिवाद प्रचार को खत्म करना तकि भारतीयों के प्रति विपरीत भावना उत्पन्न न हो।

2. उच्चपदासीन नेताओं द्वारा एक विस्तृत रिपोर्ट जिसमें न्यू जर्मनी के भारत के प्रति रूख का खुलासा किया जाए।

3.जर्मनी प्रेस द्वारा भारत–विरोधी प्रचार पर रोक। इन प्रस्तावों को सामने रखते हुए, मैंने जान बूझक~ ऐसी कोई मांग नहीं रखी जिसे व्यवहार में लाना कठिन हो। उदाहरणार्थ, यदि ब्रिटिश समर्थक नीति जर्मनी के लिए उपयोगी है तो मैं ब्रिटिश विरोधी नीति की मांग नहीं करता। यद्यपि भारतीय होने के नाते हम जर्मनी के ऐसे रूख का स्वागत ही करेंगे। इ~ी प्रकार मैं यह भी नहीं कहता कि आप अपने जातिवादी सिद्धांत को छोड़ दें। हम केवल, इसमें थोड़ा संशोधन चाहते हैं, ताकि जान–बूझकर या अनजाने में यह भारतयों के प्रति दुर्भावना के पक्ष में कुछ लिखें, यदि आप लिखना नहीं चाहते तो, किंतु कृपया विरोध में तो न लिखें।

समाचार–पत्रों द्वारा कि~ा जा रहा प्रचार बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि लोगों की राय को यह प्रभावित करता है। जर्मनी एक प्रभावशाली देश है अतः यहां की प्रेस पूर्णरूप से रीक शासन तंत्र राज्य के अधीन है।

इसके विपरीत भारतीय प्रेस पर न तो ब्रिटिश सरकार का पूर्ण नियंत्रण है नही वह किसी पार्टी के अधीन है। फिर भी, किसी भी जर्मन या जर्मनी के पक्षधर भारतीय

लेखक के लिए, जर्मनी के पक्ष में लिखना और प्रसिद्ध भारतीय–पत्रिकाओं में उसे प्रकाशित करना संभव है। प्रायः ऐसा हुआ भी है कि जब कभी न्यू जर्मन राज्य के विरूद्ध पत्रों में कुछ प्रकाशित हुआ है तो भारत स्थित जर्मन कांस्यूलेट ने या जर्मनी के पक्षधर भारतीय लेखक ने तत्काल उसकी भर्त्सना की है। किंतु जर्मनी में छपे पत्रों की या भारत–विरोधी लेखों की भर्त्सना करन संभव नहीं है। ऐसा मैं अनुभव के आधार पर कह रहा हूं।

भारत जर्मनी के साथ मैत्री संबंध स्थापित करने को तैयार है, यदि जर्मनी भी चाहे तो। अतः यह आवश्यक है कि वे इंडो–जर्मन संबंधों के मार्ग में उपस्थित बाधाओं को जान लें और बेहिचक होकर उन्हें मार्ग से हटाने का प्रयास करें। केवल बातों से कोई लाभ नहीं होंगा। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि सप्रवासी फेडरेशन ऑफ इंडियन स्टूडेंट्स को लिखे अपने पत्र में विदेश कार्यालय ने लिखा है कि जर्मनी प्रेस में हो रहे भारत के प्रति दुष्प्रचार को रोकने के उपाय किए जाएंगे। पत्र में (संख्या 111 सी 3486, विदेश कार्यालय) निम्न पंक्तियां है।

" एन. एस. डी. ए. पी. के जाति संबंधी राजनैतिक कार्यालय को एवं लोक–शिक्षा वं प्रचार मंत्रालय को शिकायतों से अवगत करा दिया गया है और उन्होंने भारत विरोधी प्रचार को रोकने में अपना सहयोग देने की सहमति भी दी है।" किंतु अभी तक इस दिक्षा में कुछ भी नहीं किया गया, क्योंकि आपक जानते ही है कि यह प्रचार अभी भी हो रहा है। इस माह के प्रारंभ में फ्रैकफर्टरजीटुंग के समान लोकप्रिय अखबार ने एक महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित किया था जिसमें भारत के लिए बनाए गए संविधान की प्रशंसा की गई थी। किंतु प्रत्येक भारतीय–राजनीति के विद्यार्थी ने उसका विरोध किया।

समाप्त करने से पूर्व कुछ बातें और कहना चाहूंगा। जर्मनी में अध्ययनरत कई भारतीय विद्यार्थी ये शिकायत करते हैं कि उन्हें जर्मनी की कंपनियों में व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु कोई सहाता प्राप्त नहीं होती। एक उदाहरण ऐसा भी है कि जर्मन फैक्टरी एक भारतीय को अपने यहां रखने को तैयार थी किंतु जर्मन सरकार ने उन्हें आवश्यक आज्ञा नहीं दी। अभी तक जर्मनी भारतीय विद्याथियों को पूरा सहयोग दे रहा था क्योंकि वे सुगमता से जर्मनी की फैक्टरियों में कार्य करने को तैयार रहते थे। किंतु अब यह सुविधा उपलब्ध न हो पाई तो जर्मनी में आनेवाले भारतीय विद्याथियों की संख्या में निश्चय ही कमी आएगी। जिन विद्यार्थियों ने मुझसे सहयोग मांगा मैंने उन्हें चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और इटली भेजने का प्रयास किया और इसमें मुझे सफलता भी मिली।

यदि आपकी ओर से इंडो–जर्मन संबंधों को सुधारने के प्रयत्न किए जाते हैं तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि, हम भी सार्थक प्रयास करेंगे। हम राष्ट्रवादी

भारतीय जर्मनी के लिय वह सब कुछ करेंगे, जो जर्मनवासी हम भारतीयों के लिए करेंगे। यह तो स्पष्ट ही है कि व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्रों में तथा प्रेस-प्रचार की दृष्टि से भारत का रूख जर्मनी के प्रति, जर्मनी के भारत के प्रति रूख की अपेक्षा अधिक मैत्रीपूर्ण है। हम भारतीय ऐसी स्थिति पर पहुंच चुके हैं कि या तो हम जर्मनी से पूर्णरूप से मैत्री-संबंध स्थापित करना चाहेंगे या फिर कोई अन्य मार्ग खोजेंगे। यह सब जर्मनी पर निर्भर है कि वह अपनी ओर से संकेत दे कि हमें किस मार्ग को अपनाना चाहिए।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि जर्मन अकादमी ने भारतीय विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई है। साथ ही मैं यह भी चाहता हूं कि भारतीय विद्यार्थियों को आर्थिक सुविधा देने के साथ-साथ उन विद्यार्थियों की भी सहायता की जाए जो स्वंय के खर्चे पर जर्मनी में अध्ययन के लिए आते हैं और वहों रहकर व्यावहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। जर्मन अकादमी उनकी भी सहायता कर सकती है यदि वह उन्हें जर्मनी की फैक्टरियों में व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिए स्थान उपलब्ध करा सके तो।

कृपया मुझे सूचित करें कि क्या आपक जर्मन-ओरिएंट एसोसिएशन के संपर्क में हैं और क्या, यह एसोकिसएशन, जर्मनी में भारतीय विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण की सुविधा, दिलाने में सहायता सिद्ध हो सकती है।

यदि कोई विषय अस्पष्ट रह गया हो तो क्षमा करें । यह पत्र का अनुवाद है अतः संभावना हो सकती है कि कुछ भाग पूर्णतः स्पष्ट न हो पाए हों।

आपको सादर प्रणाम,
आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी,
कैरंटनेरिंग-14
विएना-1
12 नवंबर, 1935

प्रिय संतोष बाबू,

बहुत दिनों से एक विषय पर आपको पत्र लिखना चाह रहा था। मुझे याद है मैंने कहीं समाचार-पत्रों में यह पढ़ा था कि कलकत्ता की जनता की ओर से आपने स्वामी बॉन के स्वागत में भाषण दिया था। मैं इसी व्यक्ति के संबंध में आपसे कुछ कहना चाहता हूं। लार्ड विलिंगटन और भारतीय उच्च अधिकारियों की अनुसंशा पर ये हिंदू धर्म का प्रचार करने लंदन गए थे। भारतीय कार्यालय में इनका भव्य स्वागत हुआ और

कुछ दिन ये वहां के मुख्य लोगों के साथ रहे। फिर इन्होंने लार्ड जैटलैंड की अध्यक्षता में एक समिति बनाई, ताकि वैष्णव धर्म का प्रचार कर सकें। लंदन के अधिकारियों से इन्हें पूरा-पूरा सहयोग मिला-जिसके कारणों को तलाशने की आवश्यकता नहीं है। मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि जब उन्हें बकिंघम पैलेस की गार्डन पार्टी में आमंत्रित किया गया तो उन्होंने हिज मैजेस्टी, किंग जार्ज पंचम, को बताया कि उनके लाखों शिष्य ब्रिटिश राज्य के प्रति वफादार हैं। इस मित्र ने उन्हें यह राय भी दी कि किसी भारतीय को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए, क्योंकि वे निश्चय ही इस बात से अप्रसन्न होंगे। ग्रेट ब्रिटेन पर विजय पाने के बाद यह मसीहा विश्वयात्रा पर रवाना हुआ क्योंकि महान विश्व-विजय से कम में वे संतुष्ट होने वाले नहीं थे। क्या वे विवेकानंद से महान नहीं? दूसरे दिन में म्यूनिख में गया जहां भारतीयों ने मुझे बताया कि कितना बुरा प्रभाव उन्होंने डाला है। ड्यूटशे अकादमी की भारत संस्था अब कभी उन्हें आमंत्रित नहीं करेगी जिसने कि उनके भाषण की व्यवस्था की थी भारतीय-पत्रों में कुछ टिप्पणियां छपी' जिनसे यह आभास होता था कि जर्मनी और पूर्व के बीच सांस्कृतिक वार्तालाप स्थापित करने के लिए हिटलर स्वामी से परामर्श लेना चाहता है। वास्तव में, म्यूनिख में रहनेवाले कुछ भारतीयों ने मुझे बताया कि, इनकी कुटिलतापूर्ण पद्धति के कारण भविष्य में किसी भी भारतीय के लिए जर्मनी में धर्म-प्रचार करना कठिन होगा। इसके अलावा, विश्व में जर्मनी अंतिम देश था जहां वैष्णव वाद लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर पाता। नाजी जर्मनी का विश्वास केवल शांति में है और वे भारत जैसे गुलाम देश को अवज्ञा की दृष्टि से देखते हैं।

स्वामी विएना में अपना संदेश फैलाने आए थे। उनकी सभा में ब्रिटिश राजदूत उपस्थित थे, जो कि सामान्यतः किसी राजदूत का अप्रत्याशित व्यवहार है, जो इस बात का सबूत है, कि महाद्वीप की यात्रा के दौरान भी उन्हें ब्रिटीश राजनीतिज्ञों का संरक्षण प्राप्त था। जो बात मेरी समझ से बाहर है वह यह है कि एक हिंदू स्वामी जो सब कुछ त्याग चुका है उसे ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में धर्म प्रचार करने की क्या आवश्यकता है।

आपने लिखा है कि समझौते के तहत कंपनी ने एसोसिएशन पर बकाया किराए व वर्तमान किराए के लिए कोई जोर नहीं डाला है। आपके विचार में लेबर एसोसिएशन ने उस समझौते की अवहेलना की है अतः उस छूट को रद्द किया जाना चाहिए। तर्क-कुतर्क से बचने के लिए यह मान भी लिया जाए कि अवहेलना हमारी ओर से हुई थी लेकिन यह बात मेरी समझ से परे है कि उससे पूर्व का किराया क्यों मांगा जा रहा है। मेरी राय में आप जैसी सुप्रसिद्ध कंपनी द्वारा ऐसा व्यवहार सरासर अन्यायपूर्ण है। ज्यादा से ज्यादा आप उस क्षण से छूट रद्द कर सकते हैं, जब से कि

समझौते की अवहेलना हुई है।

अब मैं आपके उस आरोप का उत्तर देता हूं जिसमें आपने कहा है कि अलिखित समझौते की अवहेलना हुई है। आपने बड़े हर्ष के साथ कहा है कि अब एसोसिएशन का कोई अस्तित्व नहीं रह गया है, क्योंकि पिछले चार वर्ष से कोई बैठक संपन्न नहीं हुई है। यह बहुत गंभीर आरोप है और यदि मैं कुछ कटु व स्पष्ट शब्दों में कुछ कहूंगा तो आप मुझे क्षमा करेंगे। शायद आपको याद हो कि 1928 की हड़ताल के बाद, या उसके और कुछ समय राजनीतिक हस्तक्षेप द्वारा ही होमी जीत पाया था। किंतु चूंकि होमी की कंपनी ने अवहेलना की थी, इसलिए होमी कंपनी व उन व्यक्तियों के प्रति, जिन्होंने उसका साथ दिया था और समझौता कराया था दोनों ही के प्रति बेरूखी का व्यवहार करता रहा। जमशेदपुर में सभी जानते हैं कि होमी की पार्टी ने रात में ही नहीं बल्कि दिन के उजाले में भी उन लोगों के प्रति हिंसा का रूख अपनाया था जो समझौते के पक्षधर थे। इस बात का भी सभी को आभास है कि, लेबर एसोसिएशन द्वारा आयोजित सम्मेलन में, जिसकी अध्यक्षता मैंने की थी, होमी की पार्टी के गुंडों ने आक्रमण किया था। उन बुरे दिनों में प्रशासन ने हमें सुरक्षा प्रदान नहीं की थी, किंतु फिर भी हम समझौते के प्रति पूर्ण वफादार रहे थे, जबकि हम जानते थे कि कंपनी समझौते की प्रत्येक शर्त को पूरा नहीं कर रही है। कुछ समय तक यही स्थिति बनी रही थी जब अचानक एक दिन प्रातः कंपनी ने बहुत ही अप्रत्याशित रूप से पिछली हर बात को भुलाकर होमी से समझौता कर लिया और उन सभी लोगों को अधर में लटका छोड़ दिया जो समझौते के प्रति वफादार रहे थे। इसके बाद कंपनी व होमी की पार्टी के बीच अप्रत्याशित दोस्ती स्थापित हो गई तथा जब भी एसोसिएशन ने कोई बैठक आयोजित की, होमी के गुंडों ने आक्रमण किया। इसके बाद नीति में एक और परिवर्तन आया। होनी पर मुकदमा चलाया गया और उसकी अनुपस्थिति में इसे रद्द भी कर दिया गया। होमी की पार्टी अदृश्य हो गई किंतु अन्य एजेंसियों ने उन गुंडों को अपने साथ नत्थी रखा। मैं स्वयं जमशेदपुर की उन बैठकों में उपस्थित था जिन पर होमी की पार्टी के गुंडों ने आक्रमण किया था। मैंने व्यक्तिगत रूप से श्री कीनन से इस विषय में बात की थी किंतु उन्होंने किसी प्रकार की जानकारी से इंकार कर दिया जब कि जमशेदपुर का बच्चा–बच्चा जानता था कि गुंडे किस पार्टी से संबद्ध हैं। वहीं स्थिति आजतक चली आ रही है। यदि इन परिस्थितियों में लेबर एसोसिएशन कोई बैठक आयोजित करने में असफल रहती है तो क्या इसकी सारी जिम्मेदारी एसोसिएशन पर ही है? क्या कोई छाती ठोककर यहकह सकता है कि इस बारे में कंपनी की कोई जिम्मेदारी नहीं हैं?

यह बात मेरी समझ से बाहर है कि कंपनी ने अपनी पहचान अलग क्यों कर दी, सिद्धांत रूप में भी और व्यावहारिक रूप में भी उस प्राचीन ट्रेड यूनियन

आर्गेनाइजेशन से, जिसे जमशेदपुर में सन् 1920 में स्वर्गीय देशबंधु दास, पंडित मोतीलाल नेहरू तथा महात्मा गांधी जैसे प्रतिष्ठित नेताओं ने बनाया था, और जिसने कंपनी के साथ सदैव सद्व्यवहार ही किया था। क्या होमी के संगठन के टूट जाने से ह संभव है कि वर्तमान आर्गेनाइजेशन को भी तोड़ दिया जाए। क्या आप वाकई सोचते हैं कि आपका व्यवहार उन लोगों के प्रति उचित है, जो 1928 के समझौते के प्रति ईमानदार व वफादार हैं? मेरे सम्मुख महात्मा गांधी के उस भाषण की प्रति है, जो उन्होंने 1934 में अपनी जमशेदपुर यात्रा के दौरान दिया था और जिसमें उन्होंने जनसभा में कहा था कि उन्हें यह देखकर अत्यधिक दुख हो रहा है कि मालिकों और श्रमिकों के मध्य लाठी के बल पर समझौता हो रहा है। आप महात्मा गांधी की राजनीति के कितने भी विरोधी क्यों न हों, किंतु जमशेदपुर की अदालतों के नियमों को पढ़कर आपको पता चलेगा कि लेबर एसोसिएशन के सचिव का पठानों द्वारा बहुत अपमान हुआ था, जब वे लेबर एसोसिएशन के कार्यालय में थे तब।

लेबर एसोसिएशन के सचिव ने मुझे बताया है कि सभी उपर्युक्त हानियों व कठिनाइयों के रहते भी, कुछ लोग इसके नियमित सदस्य हैं और एसोसिएशन की आय भी नियमित है। यद्यपि स्थिति अधिक संतोषजनक नहीं है, फिर भी छोटे-मोटे खर्च किराए के अतिरिक्त वहन करने के लिए पर्याप्त हैं, यह स्थिति तो तब है, जब लगातार परेशान किया जा रहा है और मैनेजमेंट द्वारा कुछ विरोधी संगठनों को प्रश्रय दिया जा रहा है। मुझे खेद है कि आपको कभी यह महसूस नहीं हुआ कि, मैनेजमेंट द्वारा नई संस्थाओं को प्रश्रय देना तथा जमशेदपुर की सबसे पुरानी संस्था को सहायता देने से इंकार करना अनुचित ही नहीं बल्कि अन्यायपूर्ण भी है।

आपने बडी प्रसन्नतापूर्वक यह बात बताई है कि श्री जॉन कुछ समाचार-पत्रों के एंजेंट हैं, अर्थात ट्रेड यूनियन के कार्य से उनका कोई संबंध नहीं है। आपको तथा आपकी मैंनेजमेंट को बताना चाहूंगा चाहूंगा, यद्यपि उसे अधिक जानकारी होनी चाहिए, कि सन् 1923 से, जब से देशबंधु दास ने फारवर्ड अखबार प्रारंभ किया था, ही तक लेबर एसोसिएशन समाचार-पत्रों की एजेंट रही है। 20 वर्ष पूर्व जान-बूझकर यह कदम उठाया गया था ताकि लोगों में समाचार-पत्र पढ़ने की प्रवृत्ति पैदा की जाए और साथ ही एसोसिएशन की आय में वृद्धि हो सके। इन समाचार-पत्रों की एजेंसी से होने वाली आय एसोसिएशन की निजी-संपत्ति नहीं है। श्री जॉन संभवतः निर्धन व्यक्ति हैं, किंतु मुझे गर्व है कि वे एक अच्छे कार्यकर्ता हैं तथा बुरे हाल में और अपने जीवन की कीम पर भी वे एसोसिएशन का हर कार्य करने को तत्पर रहते हैं, और समय-समय पर विभिन्न लोगों द्वारा टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी में नौकरी का लालच देने के बावजूद भी वे एसोसिएशन के कार्य में लगे हैं।

आपने बेहद प्रसन्नता से यह सूचना भी दी है कि एक मकान में कुछ समाचार –पत्रों का एजेंट, दूसरे में दो अखबार विक्रेता, एक प्रिंटिंग प्रेस का कर्मचारी , एक होटल का नौकर, एक आम विक्रेता व टैक्सी ड्राइवर रहते हैं। सचिव से प्राप्त जानकरी के अनुसार, उपरोक्त सभी आंकड़े गलत हैं, सिवाय इसके कि कुछ कार्यकर्ता जो अखबार वितरण का कार्य करते हैं वे वहां रहते हैं। लेकिन सारे दिन वे एसोसिएशन का कार्य करते हैं, तथा पिछले कई वर्षों से वे उसी परिसर में रह रहे हैं, क्योंकि यह व्यवस्था एसोसिएशन के लिए लाभकारी है।

आपने आवासों की कमी का जिक्र किया है और इन दो मकानों की आवश्यकता की बात भी कही है। किंतु मैं यह नहीं समझ पा रहा कि, यह कमी लगातार क्यों चली आ रही है, जबकि आपके वार्षिक कार्यक्रम में नए आवासों का निर्माण हो रहा है और श्रमिकों की संख्या में पहले की अपेक्ष, अर्थात जब एसोसिएशन को ये दो मकान आबंटित किए गए थे, तब से, 20 प्रतिशत की कमी हुई है।

आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे क्योंकि इन परिस्थितियों में मेरी राय यही है कि इस सबके पीछे कंपनी का एकमात्र उद्देश्य एसोसिएशन को अंतिम चोट पहुंचाना है। चूंकि जमशेदपुर में आप का आवास–व्यवस्था पर एकछत्र राज्य है, इसलिए आप लेबर एसोसिएशन को आवासीय सुविधा देने से इंकार करके इसके अस्तित्व को समाप्त कर देना चाहते हैं। किंतु मेरी आप से प्रार्थना है कि भूतकाल को बिल्कुल भुला न दें और उन लोगों के साथ ऐसा दुर्व्यवहार न करें जिन्होंने कंपनी के साथ अपने संबंध सदैव सौहार्दपूर्ण रखे हैं। जहां तक भविष्य का संबंध है, मुझे नहीं लगता कि हमारा अस्तित्व खतरे में है।

मैंने प्रारंभ में ही कह दिया था कि मैं स्पष्ट बातें कहना चाहूंगा अतः यदि मैंने ऐसा ही किया है तो आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे। आपो अपनी बातों से सहमत करा पाया हूं इसकी मुझे आशा नहीं। इस तथ्य से मै। अवगत हूं कि आपके कार्यालय की बात का वजन मेरी बात की अपेक्षा निश्चय ही अधिक होगा। मैं केवल यही कह सकता हूं कि मैं भी आपके अधिकारियों की ही भांति एक ईमानदार और भला मनुष्य हूं। इस लंबे पत्र को लिखने का उद्देश्य यही था कि मैं आपको चित्र का दूसरा पक्ष भी दिखाना चाहता था। अपनी बातों से आपको सहमत कराने का जहां तक प्रश्न है, मुझे कोई विशेष आशा नहीं है।

लंबे पत्र के लिए क्षमा चाहता हूं और अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष सी. बोस

नाओमी सी. वैटर,

पेंशन कास्मोपोलाइट
विएन–VIII
29.11.1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपकी इच्छानुसार एक नोट भेज रहा हूं। आशा है आप यही चाहती थीं। यह आवश्यक नहीं था कि डा. वैटर उसे यह नोट देते। वे यदि लिखित रूप में कुछ देना नहीं चाहते थे तो मौखिक रूप में ही अपनी बात कह सकते थे।

मैंने लिखा था कि मैं वह कारण जानना चाहता हूं जिसकी वजह से वीसा नहीं दिया गया। डा. वैटर यह जोड़ सकते है कि भारतीय लोगों को यह महसूस होने लगा है कि नई सोवियत–ब्रिटिश मैत्री के कारण ही वीसा देने से इंकार किया गया है। इससे भारत में सोवियत सरकार की साख पर आपत्ति आएगी। वे यह भी लिख सकते हैं कि, यदि वीसा दिया जा रहा है, संभव है मैं कुछ दिन बाद रूस जाना चाहूंगा। यह आवश्यक नही कि डा. वैटर मेरी तरफ से स्वयं बात कर सकते हैं।

आप दोनों को शुभकामनाएं।
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

पुनश्च :– टाइम्स से एक कटिंग भेज रहा हूं।

डा. थीरफेल्डर को,

अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
कैरंटनेरिंग 14
विएना–1
9 दिसंबर, 1935
जर्मनी अकादमी
प्राप्त की/प्रविष्टि 19.12.1935
सं. जे 3005

माननीय डा. थीरफेल्डर,

6 दिसंबर के आपके पत्र के लिए धन्यवाद । मैं आपका आभारी हूं कि आपने मिस्टर मिनीस्टीरियल–डायरेक्टर डिकोफ की एक मुलाकात की व्यवस्था करा दी। किंतु दुर्भाग्यवश इस समय मैं बुखार व जुकाम से घिरा हूं। खेद है कि मैं आपको फिलहाल यह सूचित नहीं कर सकता कि कब यात्रा कर पाऊंगा, क्योंकि बीमारी पता नहीं कितनी लंबी चलेगी। इसलिए आप से अनुरोध है कि आप मिस्टर

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

मिनिस्टीरियल–डायरेक्टर डिकोफ को एक एक्सप्रेस पत्र डाल दें व बता दें कि किन कारणों से एक बार फिर मैं बर्लिन नहीं पहुंच पाऊंगा। यह निश्चित है कि–6 दिन बाद मैं आपको पुनः पत्र लिखूंगा और सूचित करूंगा कि कब यात्रा करने योग्य होऊंगा। यदि आप श्री डिकोफ से पता कर सकें कि वे क्रिसमस अवकाश से पूर्व या तुरंत उसके बाद बर्लिन पहुंच सकूं।

सभी को सादर।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.

विएना

20.12.35

प्रिय सुनील,

तुम्हारे बहुत से पत्र मिलते रहे हैं, किंतु उनका उत्तर देने में असमर्थ रहा, क्षमा चाहता हूं। कार्ल्सबाद बहुत बड़ा शहर नहीं है अतः अमेरिकन एक्सप्रेस की यहां कोई ब्रांच नही है। यदि तुम केवल मेरा नाम और कार्ल्सबाद भी लिख देते तो भी तुम्हारा पत्र मुझे मिल जाता। 12 नवंबर को तुम्हारा अंतिम पत्र था, जो मुझे मिला। यदि उपर्युक्त पते पर मुझे पत्र लिखोगे तो मैं कहीं भी रहूं तुम्हारा पत्र समय पर मुझे मिल जाएगा।

श्रीमती कमला नेहरू का स्वास्थ्य कुछ ठीक है।

मुझ पर लगाए गए प्रतिबंध अभी लागू हैं। इस ओर अभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

सभी यहां टिकट इकट्ठे करते हैं। अब आगे से मैं भी तुम्हारे लिए टिकट इकट्ठे करूंगा।

महात्मा गांधी की सद्भावना के लिए धन्यवाद। ऐसा प्रतीत होता है कि जवाहरलाल नेहरू ही पुनः अध्यक्ष होंगे। बंगाल की आवाज कौन सुनेगा? स्वर्गीय पटेल की राशि भी व्यर्थ ही जाएगी।

बंगाल में जातिवादी संघर्ष का क्या कोई अंत नहीं हैं? डा. राय का ग्रुप बहुत दिन से मेरी पार्टी होने का दावा कर रहा है। अब तो यह स्पष्ट हो चुका है कि वे अलग नीतियों का पालन कर रहे हैं। दूसरे वे मेरे प्रस्तावों को क्यों नहीं मानते? यदि बंगाली लोग श्री एनी की मध्यस्थता स्वीकार कर सकते हैं तो एक बंगाली की मध्यस्थता क्यों

नहीं स्वीकारते? मुझे केवल यही दुख है कि इतने अपमान, कष्ट और लातें (दुत्कार) सहने के बाद भी बंगाली क्षुद्र मानसिकता से ऊपर क्यों नहीं उठ पाते। आश्चर्य की बात है कि बंगालियों की विशाल हृदयता को क्या हुआ?

पंडित नेहरू से में दो बार मिला हूं। मैं बैडनविलर भी गया था।

पहले की अपेक्षा अब मेरा स्वास्थ्य अच्छा है, किंतु पूर्णस्वस्थ होने में अभी भी समय लगेगा। मेरा पुराना स्वास्थ्य लौट पाएगा, यह कल्पना करना कठिन है। फिर भी कुछ लाभ होने से ही मैं प्रसन्न हूं और फिर घर वापिस लौट पाऊंगा। अब अधिक समय विदेशी भूमि पर रहना नहीं चाहता। इस वर्ष कार्ल्सबाद में अधिक लाभ नहीं हुआ किंतु गैस्टीन मं अपेक्षाकृत अच्छा रहा। इसलिए जनवरी में पुनः गैस्टीन जाना–चाहता हूं ताकि वहां जलोपचार करवा सकूं। आशा है तुम ठीक हो।

प्यार व शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभेच्छु

सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी

कैरंटनेरिंग–14

विएना–1

21 दिसंबर, 1935

प्रिय श्रीमती वुड्स,

बहुत दिन हुए आपका पत्र मिला था, खेद है कि लंबे समय से मैं आपको पत्र नहीं लिख सका। मुझे दुख है कि जिस मित्र के विषय में मैंने आपको लिखा था वह डब्लिन नहीं जा पाया। वास्तव में मेरे देशवासी अक्सर लंदन तो जाते हैं किंतु डब्लिन जाने का प्रयास नहीं करते, जहां हाड़–मांस के स्त्री–पुरूष इतिहास रच रहे हैं। भारत में मेरे प्रांत में–बंगाल में–शायद ही ऐसा कोई पढ़ा–लिखा परिवार हो, जहां आयरिश हीरो की पुस्तकें प्राप्त करना कठिन हो गया है क्योंकि सरकार का मानना है कि आयरिश क्रांतिकारियों के बारे में पढ़कर भारतीयों की आंखें भी खुल जाएंगी। किंतु हम सभी जानते हैं कि, कठिनाई से उपलब्ध होने वाली पुस्तकें अधिक उत्सुकता से पढ़ी जाती हैं। इंग्लैंड जाने की अनुमति की बहुत दिन से प्रतिक्षा कर रहा हूं किंतु कोई आशा नहीं है। फ्री स्टेट गवर्नमेंट से आयरिश फ्री स्टेट जाने की अनुमति मिल गई है अतः महाद्वीप से सीधे आयरलैंड जाऊंगा। फरवरी में मेरा भारत लौटने का विचार है। भारत लौटने से पूर्व आयरलैंड जाना चाहूंगा। जनवरी के अंत में या फरवरी के प्रारंभ में, जब भी संभव हुआ। निश्चय ही वहां के महत्त्वपूर्ण लोगों से मिलना चाहूंगा। आप

समझ ही गई होंगी किन लोगों से। इंडो—आयरिश लीग के भविष्य के बारे में वार्तालाप करना चाहूंगा और इसको पुनर्जीवित किस प्रकार किया जाए? इस पर भी विचार करूंगा। अभी तक अपनी कांग्रेस की आफिशियल पार्टी के नेताओं से संपर्क नहीं कर पाया हूं जो विदेश—प्रचार का कार्य संभाल सकें। फिर भी लोगों को समर्थन के लिए प्रोत्सहित कर पाया हूं। आशा है, बिना आफिशियल पार्टी की सहायता के भी इस दिशा में कदम उठाने में सफल हो पाऊंगा। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कांग्रेस की आफिशियल पार्टी के षड्यंत्रों के कारण, स्वर्गीय श्री वी. जे. पटेल की इच्छा को कार्यरूप देनेवाले, धन दबाकर बैठे हैं। अंतिम इच्छा में अन्य जिन बातों के लिए धन व्यय करने का संकेत किया गया उनके लिए धन उपलब्ध करा दिया गया है किंतु विदेश—प्रचार के लिए मुझे दिए जाने वाले धन को रोक कर रखा गया है। बंबई उच्च न्यायालय ने लगभग चौदह माह पूर्व ही इच्छा प्रमाण पत्र दे दिया था, किंतु अभी तक पैसा व्यर्थ पड़ा है। ऐसा लगता है कि आफिशियल पार्टी को यह बात नापसंद है कि मैं इस कार्य को करूं। श्री पटेल के जीते जी वे उनका विरोध करते रहे, किंतु मैंने नहीं सोचा था वे इतना नीचे भी गिर सकते हैं।

मैं आपका आभारी होऊंगा यदि आप मेरा मार्गदर्शन करें कि आयरलैंड की यात्रा के लिए उपयुक्त समय कौन सा है। आपके पत्र के बाद ही मैं अपनी योजना बनाऊंगा।

श्रीमती मैकब्राइड व आपको शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस,

किटी कुर्टी को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
विएना
22.12.1935

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

27 अक्तूबर का आपका कृपा पत्र मिला! प्रसन्नता हुई! इसके बाद आर. आर. पर लेख भी प्राप्त हुआ। आपके पत्र का उत्तर देने में हुए विलंब के लिए क्षमा चाहता हूं। अपनी पुस्तक आपको भिजवाना भूल गया। क्षमा करें। आज अपने प्रकाशक को लिख रहा हूं। एक सप्ताह तक वह आपको मिल जाएगी।

युवा पीढ़ी में विश्वास के प्रति आपके विचारों से मैं सहमत हूं। भारत में भी वृद्धों व युवाओं के मध्य संघर्ष जारी है। प्रायः मैंने देखा है कि वृद्ध लोग युवाओं को

टोकते है और इस कारण कटुता पैदा होती है। किंतु हम विजयी होंगे।

संभव है मैं जनवरी में बर्लिन आऊं। फरवरी में घर लौटने की योजना बना रहा हूं। यदि आपका यहां आसपास आना हो तो मुझे सूचित अवश्य करें। संभव है हम मिल सकें–जैसे यहां से ब्राटिसलावा तक आसानी से जाया जा सकता है।

डा. कुर्टी व आपको सादर प्रणाम,

आपका शुभेच्छु
सुभाष सी. बोस

पुनश्च :– अक्सर मुझे आश्चर्य होता है कि आप बर्लिन में क्यों रूकी हैं। वहां का वातावरण क्या आपको दमघोंटू नहीं लगता?

अमिय चक्रवर्ती को,

पेंशन कास्मोपोलाइट
अलसेर स्ट्रीट–23
विएना–VIII
23.12.35

प्रिय श्री चक्रवर्ती,

आपका पत्र पढ़ते–पढ़ते मुझे बहुत दुख हुआ और आप जैसे भावुक व्यक्ति को दुख होना स्वाभाविक ही है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति को अंदर से ही शांति प्राप्त हो सकती है, बाहर की कोई चीज उसे शांति नहीं दे सकती। आपके इन दुख के क्षणों में आपको पत्र लिखकर परेशान करन नहीं चाहता किंतु आपको यह सूचना देना चाहता था कि आप द्वारा भिजवाई गई पुस्तक 'ब्रेकडाउन बाय ब्रिफाल्ट' मुझे मिल गई है। धन्यवाद। पुस्तक अद्भूत है। अपने कुछ एशियाई मित्रों को पढ़ने के लिए दी है। पुस्तक पढ़कर उन्हें बहुत संतोष हुआ।

संभवतः जनवरी में इलाज के लिए बैडगस्टीन जाऊंगा। पहले भी वहां मुझे लाभ हुआ था। पेरिस भी जाना चाहता हूं किंतु कह नहीं सकता कब जाना संभव हो पाएगा। आप किन दिनों पेरिस में होंगे कृपया मुझे पूर्व सूचना दें। जवाहरलाल वहां एक सप्ताह रहे किंतु उनकी ओर से कोई सूचना नहीं मिली कि वे अपने उद्देश्य में कितने सफल रहे।

श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य पुनः बहुत खराब है, आज ही वायरलेस संदेश प्राप्त हुआ। मैं वहां जाना चाहता हूं, किंतु पिछले एक सप्ताह से जुकाम और बुखार से पीड़ित हूं। इसी कारण उन्हें देखने जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा, क्योंकि इसके लिए मुझे

वहां पहुंचने तक सत्रह घंटे की यात्रा करनी पड़ेगी।

मुझे आशा है, आपने वह रिपोर्ट देखी होगी जो हाउस ऑफ कामंस में मुझ पर हुई चर्चा पर आधारित है। मैंने 10 तारीख के टाइम्स में प्रकाशित रिपोर्ट पढ़ी है। अभी भी उनका यह विश्वास है कि मैं गुप्त क्रांतिकारी गतिविधियों में लिप्त हूं, इससे भारत पर राज्य कर रहे ब्रिटिश साम्राज्य की मानसिकता का पता चलता हैं सत्य कहूं तो मुझे सैम्युअल होरे के अवसान से प्रसन्नता है। भारत का शाप कार्य कर रहा है। आश्चर्य है कि पार्लियामेंट में व्यक्ति को वास्तव में रोना पड़ा।

भारतीय समाचार–पत्रों में आपके विषय में क्या लिखा गया मुझे इस बारे में कोई सूचना नहीं है। कृपया मुझे समय पर बता दिया करें ताकि मुझे भी जानकारी रहे और इसे आवश्यक कार्य समझ कर करें।

वर्तमान दुख के क्षणों में मेरी हार्दिक संवेदनाएं आपके साथ हैं। आशा है आप स्वस्थ है।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
विएना
23.12.1935

प्रिय मित्र,

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। आशा है तुम स्वस्थ होगे। तुम्हारे पत्र मैंने बहुत रूचि व दिलचस्पी से पढ़े हैं। शायद तुमने जान बूझकर व्यक्तियों के नाम नहीं लिखे। जिसकी वजह से तुम्हारे विवरण में स्पष्टता का अभाव है। फिर भी राष्ट्रीयधारा को समझने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। सबसे पहले हमें बड़ी–बड़ी गलतियों पर आक्रमण करना होगा। हमारे जीवन में, अंदर–बाहर दोनों ही ओर से, अनुशासनहीनता आ गई है। इस अनुशासनहीनता का कारण इज्जत और विश्वास में आई कमी है। इस विषय में तुम्हारा विश्लेषण बिल्कुल सही है। यदि उद्देश्य के प्रति विश्वास में आई कमी है। इस विषय में तुम्हारा विश्लेषण बिल्कुल सही है। यदि उद्देश्य के प्रति विश्वास और इज्जत नहीं होगी तो अनुशासन और प्रतिबद्धता भी नहीं रहेगी।

कृपया आनंद बाजार–पत्रिका की सहायता से इस मूल संदेश का जोरदार प्रचार करो। जीवन में अंदरूनी व बाहय दोनों प्रकार का अनुशासन होना अति आवश्यक है। बंगालियों को एक बार फिर मिलकर कार्य करना होगा। दूसरों के प्रति आदर और

सहनशीलता द्वारा ही हम उन्हें अपने निकट ला सकते हैं। यदि बंगाली एक बार पुनः एकत्रित हो जाएं तो आत्म–शक्ति पैदा हो सकती है। दरअसल अभी हमारे दुर्दिन नहीं आए हैं केवल अनुशासन में कमी आई है। इसके साथ ही आदर्शवाद की लहर भी पैदा करनी होगी। इस आदर्शवाद की लहर से हमें अपने अंदर का कलुष धो देना होगा। बंगाली अन्य लोगों के प्रति अत्यधिक ईर्ष्यालु और दुर्भावनाग्रस्त रहते हैं, हमें अपनी इन कमियों को दूर करना होगा। क्षुद्र ह्रदयता पर आदर्शवाद द्वारा विजय पाई जा सकती है, इसीलिए आदर्शवाद की जोरदार लहर की अति आवश्यकता है।

आशा है आप सभी सानंद हैं। पहले की अपेक्षा मेरा स्वास्थ्य ठीक है, यद्यपि अभी पूर्णतः स्वस्थ नहीं हूं। इसिलए बहुत बेचैन रहता हूं। अपने देश वापिस लौटने का बहुत उत्सुक हूं।

प्रेमपूर्ण शुभकामनाओं सहित
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु को

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
विएना, आस्ट्रिया
3.1.36

प्रिय संतोष बाबू,

आप एक वकील हैं इसलिए आपने मुझसे मुंह फेर लिया है। आपने इतने दिन से कोई पत्र नहीं लिखा, इसका क्या कारण है, और सारा दोष मेरा ही है।

आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आव्हान का जिक्र किया है। किंतु इस वर्ष तो यह संभव नहीं है। इसके अलावा वैसे भी मैं जितनी जल्दी संभव हो भारत लौटना चाहता हूं। विदेश में रहने का कोई मजा नहीं जब ह्रदय से आपक कहीं और हों। मैं मानता हूं कि विदेश में रहकर भी बहुत सा उपयोगी कार्य किया जा सकता है। और मै। भी यहां बेकार नहीं पड़ा हूं। किंतु प्रभावी कार्य करने के लिए कुछ धन और अपने लोगों का प्रोत्साहन चाहिए। अधिक साधनों के बिना, अकेला व्यक्ति, एक सीमा में रहकर ही कार्य कर सकता है।

क्या आप बता सकते हैं कि बंगाल को क्या हुआ है? मुझे तो समझ नहीं आता। छोटी–छोटी बातों के लिए झगड़ने में क्या लोगों को शर्म नहीं आती? किसी भली चीज के लिए झगड़ते तो समझ भी आती! किंतु इन फालतू की चीजो के लिए झगड़ा। आम जनता का क्या हाल है? वे अपने तथाकथित प्रतिनिधियों व प्रवक्ताओं के विरूद्ध आंदोलन क्यों नहीं करते? अनुशासनहीनता बुरी तरह फैल चुकी है। इसी कारण

अनुशासन पालन भी कठिन हो रहा है। हमें प्रारंभ से इसकी शुरूआत करनी होगी।

'लंदन टाइम्स' में समाचार पढ़ा कि मुस्लिम असंतोष के कारण श्री ए. के. फजलूल हक व अन्य मुस्लिम काउंसलरों ने त्याग–पत्र दे दिया है। ऐसे समाचार बहुत जल्दी विदेश तक पहुंच जाते हैं।

मैंने 'एंडवांस' को 'द इनसाइड आफ बंगाल पोलिटिक्स' शीर्षक से एक लेख भेजा था। क्या आपने देखा?

कह नहीं सकता कि कब बंगाल की जनगतिविधियों में कार्य करने योग्य हो पाऊंगा। किंतु यदि यह संभव हुआ तो इस बात पर अवश्य बल दूंगा कि बंगाल से निर्विरोध सहयोग मिले। किसी एक गुट का प्रमुख होकर कार्य करना नहीं चाहता। पिछले अनुभवों ने मुझे एक बात सिखाई है, वह है–धैर्य! मुझमें अनंत धैर्य है और मैं तब तक इंतजार करूंगा जब तक बुराई अपना खेल समाप्त नहीं रक देती। तब तक मैं राजनीति से बाहर रह कर बहुत सा उपयोगी कार्य करूंगा।

आपकी योजनाएं और विचार क्या है,

नया वर्ष हम सब के लिए सौभाग्यदायक हो!

इजीप्टवासी अब पूर्ण जागरूक हैं? वे समय को पहचानकर कार्य कर रहे हैं। किंतु हम कहां हैं? चरखा–हरिजन, पार्लियामेंट बोर्ड–मंत्री की गद्दी—–क्या यही सब मुक्ति का मार्ग है।

सुशीर बाबू और डा. सुधीर बासु कैसे हैं और आजकल कहां हैं? आपके बेटे आजकल क्या कर रहे हैं। सादर!

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

वी. लैस्नी को,

पेंशन कास्मोपोलाइट
एल्सरस्ट्रासे–23
विएना–VIII
9 जनवरी, 1936

प्रिय प्रोफेसर लैस्नी,

आशा है मेरा पहले लिखा पत्र और साथ में इंडो–चेकोस्लोवाक सोसायटी के लिए भेजी पुस्तकों का पार्सल भी मिला होगा। कल यहां विएना में हमने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जुबली का सफल आयोजन किया।

श्री नांबियार ने आपको मेरी प्रेस स्टेटमेंट दिखाई होगी, जिसमें मैंने सिफारिश की है कि चेकोस्लोवाकिया के साथ संतुलित व्यापार संबंध कायम करने के लिए हमें जर्मनी की अपेक्षा चेकोस्लोवाकिया से अधिक खरीददारी करनी चाहिए। उस टिप्पणी से कुछ विवाद उछ खड़ा हुआ और यह दिखाने के लिए कुछ आंकडे भी प्रस्तुत किए गए कि, भारत चेकोस्लोवाकिया से पहले ही से अधिक खरीददारी करता है। मैंने प्राग की एक्सपोर्ट इंस्टीट्यूट को (श्री प्लॉस्कल) आयात–निर्यात के सही आंकड़े भेजने कि लिए लिखा है और उत्तर प्राप्त होते ही मैं भारतीय प्रेस को मुंहतोड़ जवाब दूंगा। शीघ्र ही विएना छोड़ रहा हूं और 14 की प्रातः बर्लिन पहुंचूंगा। बर्लिन से बेल्जियम और पेरिस जाऊंगा फिर वहां से फरवरी में भारत के लिए रवाना होऊंगा। घर लौटने से पहले एक बार प्रेजीडेंट बैनेस से अवश्य मिलना चाहूंगा। आपको याद होगा सन् 1933 में मैं प्राहा यात्रा के दौरान उनसे मिला था, जब वे विदेश मंत्री थे। क्या आप 13 तारीख को मिलने का प्रबंध कर सकते हैं। मैं आपका आभारी रहूंगा। इतने कम समय में आप से कह रहा हूं, इसके लिए क्षमा चाहता हूं किंतु इन असाधारण परिस्थितियों में, जिनमें मैं घिरा हूं, मुझे आशा है आपक पूरा प्रयास कर मुलाकात की व्यवस्था करा ही देंगे। 13 तारीख सोमवार को कोई भी समय ठीक रहेगा। यदि मुलाकात की व्यवस्था हो जाए तो कृपया मुझे तार द्वारा सूचित कर दें।

शुभकामनाओं सहित,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
कैरंटनेरिंग 14
विएना–1
9 जनवरी, 1936

प्रिय श्रीमती वुड्स,

6 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया । अभी तक मेरी आयरलैंड यात्रा की कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है और मैं आपसे इस दिशा में मदद की अपेक्षा करता हूं।

फरवरी मध्य में भारत यात्रा पर निकलना चाहता हूं। अतः 20 जनवरी से 10 फरवरी के मध्य किसी समय मेरी आयरलैंड यात्रा हो जानी चाहिए। मेरे लिए कौन–सा समय सबसे सुविधाजनक रहेगा कृपया सूचित करें। मैं वहां एक सप्ताह अथवा दस दिन व्यतीत कर सकता हूं। कृपया प्रेजीडेंट डी वलेरा, पार्टी नेतागण, तथा मेयर आदि से मेरी मुलाकात की आवश्यक व्यवस्था करा दें। आपको जो समय ठीक लगे वह

मुलाकात के लिए निर्धारित कर सकते हैं। जहां तक मेरा संबंध है मुझे जनता के बीच भाषण देने में कोई आपत्ति नहीं है। कुछ समय पूर्व भारतीय समाचार–पत्रों में समचार छपा था कि डब्लिन की नेशनल यूनिवर्सिटी मुझे मानद उपाधि देना चाहती है। मैं नहीं जानता यह खबर कहां से उड़ी और कितनी सच्चाई है। किंतु आप इसकी सच्चाई तक पहुंच सकते हैं।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः– कुछ ही दिनों में बर्लिन के लिए रवाना हो रहा हूं कृपया मुझे इस पते पर लिखें–द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, अंटर डेन लिंडन बर्लिन।

सु.च.बो.

संतोष कुमार सेन को

द्वारा अमेरिकन एन. डी. जावेरी
एंटवर्प बेल्जियम
(पता अस्पष्ट)
22.1.36

प्रिय डा. सेन,

19 जनवरी को मैं यहां पहुंचा। रास्ते में प्राग और बर्लिन गया था। अभी कुछ दिन यहां रहने का विचार है। फिर यहां से पेरिस के लिए रवाना होऊंगा। 30 तारीख को पेरिस से आयरलैंड के लिए निकलूंगा। कृपया पेंशन कास्मोपोलाइट को फोन कर कह दें कि मेरी डाक इस पते पर भेज दें। मैंने उन्हें 18 जनवरी तक डाक यहां उसके बाद पेरिस भेजने को कहा था।

क्या आप डा. ट्रानवालनर से मिले? क्या अभी भी वे बंगला सीखने के इच्छुक हैं।

यदि आप कांग्रेस जुबली के संबंध में विस्तृत साहित्य बुक–पोस्ट द्वारा श्री नांबियार को भेज सकें तो अच्छा रहेगा। साथ ही आप उन्हें एक पोस्टकार्ड भी लिख दें कि मेरे अनुरोध पर उन्हें यह भेजा जा रहा है और वे इसे पढ़कर मुझे भेज दें। उनका पता है–

श्री ए. सी. एन. नांबियार
प्राग–XIII
सेस्टी मिरोवा, 863–वी. सी. एस. आर.

मेरा एक भारतीय मित्र कुछ उपकरण खरीदना चाहता है। उसका पत्र मैं

आपको भेज रहा हूं। आप ये उपकरण खरीद कर उसे भिजवा सकते हैं? गैरोला को मालूम है ये उपकरण कहां से प्राप्त हो सकते हैं। उसका नाम शायद ब्रैंडनबर्ग है। कुछ माह पूर्व मैंने गैरोला की सहायता से इन सज्जन को कुछ उपकरण भिजवाए थे। आप गैरोला से कहकर, उस व्यक्ति की सहायता से, इन्हें रजिस्टर्ड–पोस्ट द्वारा उपकरण भिजवा सकते हैं।

इसका खर्च मैं आपको भिजवा दूं या मेरा मित्र वहां से आप तक राशि पहुंचा देगा। यदि आप वहां आर्डर दे देंगे तो ब्रैंडनबर्ग चीजें पैक प्रेषित कर देंगे। मेरे मित्र का पता निम्न है–

डा. एस. एन. कौल, एम. बी. बी. एस.
109, हेऊट रोड
इलाहाबाद

आशा है आप समय–समय पर श्री फाल्टिस से मिलते रहेंगे। आपकी सहायता से उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा। यदि श्री माथुर कुछ समय विएना में रूक सकें तो वे श्री फाल्टिस के सहायक हो सकते हैं। मेरे विचार में यह अच्छा रहेगा कि डा. फाल्टिस से कहकर भारत के सांस्कृतिक विषयों पर भाषण आयोजित कराए जाएं। इस दिशा में आगे कार्य करने का कष्ट करें। आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं। पत्र के प्रारंभ में मैंने अपना पता लिख दिया है। सोमवार प्रातः मैं पेरिस के लिए निकलूंगा। वहां मेरा पता होगा–द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, रू स्क्रइब–11 पेरिस

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार सेन को

द्वारा एन. डी. जावेरी
14, एवेन्यू वैन, डेन वैस्ट
एंटवर्प
(बेल्जियम)
23.1.36

प्रिय डा. सेन,

कल मैं आपको डा. कौल का पत्र भेजना भूल गया। अत आज भेज रहा हूं। यदि आपक ब्रैंडनबर्ग को कह देंगे तो वे चीजे बंबई भिजवा देंगे। आपको केवल उपकरणों का चुनाव करना है और उसे कहना है कि चीजें रजिस्टर्ड–डाक द्वारा भेजें। गैरोला से कहें वह आपको ब्रैंडनबर्ग से मिलवा देगा। मुझे ठीक से उनका नाम याद नहीं लेकिन लगता है कि उनका नाम ब्रैंडनबर्ग ही है।

क्या आप मेरा एक और काम कर देंगे। क्या आप किसी ट्रांसपोर्ट कंपनी से पूछकर मुझे सूचित कर सकेंगे कि यदि मैं कुछ सामान विएना से ट्रीस्टे भेजना चाहूं तो इसपर कितना व्यय आएगा। मेरा विचार है हमें मालगाडी का उपयोग करना चाहिए। क्योंकि फरवरी के अंत में मेरा जहाज ट्रीस्टे से रवाना होगा। फिर भी आप मलगाड़ी व पैसेंजर गाडी दोनों का किराया पूछ लें । ट्रीस्टे में जहाज विक्टोरिया में मेरा सामान चढाने की जिम्मेदारी उनकी रहेगी। इस विषय में आप लॉयड ट्रीस्टीनों से भी बात कर सकते हैं कि क्या वे इस कार्य को कर पाएगे, इसके अलावा आप श्रीमती वैटर से भी सलाह ले सकते हैं।

27 जनवरी तक मै। यहा रहूंगा। उस दिन पेरिस के लिए रवाना होऊंगा और 30 तारीख को हावरे से डब्लिन जाऊगा। डब्लिन में मेरा पता होगा–
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
11, रू स्क्राइब
पेरिस
13 तारीख को पुनः पेरिस से डब्लिन पहुंचूंगा। आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

द्वारा एन डी. जावेरी
14, एवेन्यू वैन, डेन वैस्ट
एंटवर्प
23.1.36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

अब तक बर्लिन से भेजा मेरा पत्र आपको मिल चुका होगा। मैंने जहाज में वर्ष (एस.एस.वाशिगटन) बुक करा ली है जो हावरे से 30 को चलकर 31 जनवरी को कोभ पहुंचेगी। आयरलैंड कितने दिन रूकूंगा वहां के कार्यक्रम पर निर्भर करेगा। वापसी के लिए दो जहाज हैं–एक 4 फरवरी को और दूसरा 12 फरवरी को। मैं कोई सी भी ले सकता हूं, लेकिन 12 फरवरी तक मुझे हर हालत में पहुंचना ही है।

26 तारीख तक मैं यहां हूं। 27 तारीख को पेरिस के लिए निकलूंगा। वहां मेरा पता है–
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी

11 रू स्क्राइब
पेरिस–IV

बर्लिन में मुझे आपका 15 तारीख का पत्र मिला। शुभकामनाओं सहित।
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

मेरा टेलिग्राफिक पत्र पता है—केयर दह्याभाई, एण्टवर्प।

पेरिस में मेरा टेलिग्राफिक पता है—केयर अमेक्सको, 96, पेरिस

नाओमी सी. वैटर को,

एंटवर्प
21.1.36
शुक्रवार
माननीय एन. सी. वैटर
विएन—IV
व्हीरिगर स्ट्रीट 41
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका कार्ड आज प्रातः मिला। बहुत—बहुत धन्यवाद। बर्लिन में आपके पत्र (2) मिले। आज हम कार से स्पा जा रहे हैं जहां रास्ते में वाटरलू था अन्य स्थान देखेंगे। कल वापिस लौटेंगे और रविवार को पेरिस के लिए रवाना होऊंगा। वहां भारतीय व्यापारियों की एक छोटी—सी कालोनी है, जो मुझे पर सदा कृपालू रहे हैं। अलग से मैं एंटवर्प पेपर भिजवा रहा हूं जिसमें मेरा वह साक्षात्कार छपा है जो मैंने यहां दिया था। पेरिस में मेरा पता हैं—
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
11 रू स्क्राइब
पेरिस—IX

30 तारीख को मैं हावरे से आयरलैंड के लिए रवाना होऊंगा और वहां से पेरिस वापिस लौटूंगा। 28 फरवरी को पेरिस व जेनेवा होते हुए भारत के लिए रवाना होऊंगा। कृपया कार्ड के लिए क्षमा करें। सादर।
आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

होटल अंबेसेडर

16, बोलेवर्ड हौसमन
पेरिस 9
26.1.36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

20 जनवरी का संलग्नक सहित आपका पत्र मिला। धन्यवाद। एंटवर्प से आज ही पेरिस पहुंचा हूं। आशा है मेरा एंटवर्प से लिखा पत्र आपको मिल गया होगा।

जैसा कि मैं आपको पहले भी बता चुका हूं, मैं 30 जनवरी को हावरे से रवाना होऊंगा। वहां से डब्लिन के लिए गाड़ी लूंगा। जब मैं कोभ पहुंचूंगा तब वहां आपका संदेश पाकर प्रसन्न होऊंगा या आपके स्थान पर आपका कोई मित्र कोभ में मुझे मिल सकता है।

मैंने डब्लिन होटल मरें कोई कमरा बुक नहीं किया हैं। मेरा विचार शैल्बोन के यहां रूकने का है। यदि पहले से कमरा आरक्षित करवाना आवश्यक हो तो कृपया करवा दें।

(' पत्र का यह अंश उपलब्ध नहीं है–संपादक)

नाओमी सी. वैटर को,

होटल अंबेसडर
बोलेवर्ड हौसमन
पेरिस (9)
27.1.36

माननीय एन. सी. वैटर

विएन–IX
व्हीरिगर स्ट्रीट 41
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कृपया इस कार्ड के लिए क्षमा करें। पेरिस के पते पर भेजे आपके दो पत्र मिले, धन्यवाद! कल मैं यहां पहुंच गया था और हावरे से 30 जनवरी को नाव द्वारा डब्लिन के लिए रवाना हुआ था। उसी होटल में ठहरा हूं। कृपया उपरोक्त पते पर ही पत्र लिखें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

यूनाइटेड स्टेट्स लाइंस
वाशिंगटन जहाज पर से
(हावरे के निकट, फ्रांस)
30.1.36

प्रिय श्रीमती वैटर,

मित्रों से कुछ देर के लिए छुटकारा पाकर पत्र लिखने का कुछ समय निकाल पाया हूं। विएना छोड़ने के बाद से आपको कोई लंबा पत्र नहीं लिख पाया। क्षमा चाहता हूं, किंतु दोष सिर्फ मेरा ही नहीं है। जब मैं अकेला होता था तो बेहद थका हुआ होता था। जब लिखने की हालत में होता था तो मित्रों से घिरा रहता था।

पहले प्राग के बारे में, बी. से मेरा बहुत दिलचस्प वार्तालाप हुआ। अतिव्यस्त होने के बावजुद वे मुझे लेने आए। वेटिंग रूम में मुझे पता चला कि फ्रेंच और आस्ट्रियन राजदूत मेरी अगवानी कर रहे थे। उसी रात मैं बर्लिन के लिए रवाना हो गया।

बर्लिन में मैंने पाया कि, पिछले वर्ष की अपेक्षा, इस वर्ष आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। दिलचस्प बात यह थी कि लोग सरकार की आलोचना कर रहे थे, जबकि पहले वे ऐसा करने का साहस नहीं करते थे। 'हाज–फ्रा' जाति बहुत असंतुष्ट थी, क्योंकि मक्खन अंडे आदि मिलने में बहुत कठिनाई हो रही थी। सरकार इन महिलाओं को सुगमता से जेल में भी डाल नहीं सकती थी। बाहर से सब शांत प्रतीत होता था। 1933 या 1935 में जैसी आक्रामक सेना देखी थी वह भी अब नहीं थी। संभवतः कारण यह है कि सैनिक व्यापार रिशव्हर के नियंत्रण में है। कई लोगों से पता चला कि जनता अब शांति चाहती है, क्योंकि आर्थिक दशा बहुत खराब है । जर्मनी पूर्णतः ब्रिटिश साम्राज्य के पक्ष में है। बर्लिन में एक भारतीयों की कालोनी है जहां एक बैठक का आयोजन किया गया है। जनवरी को वे कांग्रेस जुबली समारोह आयोजित करेंगे।

बर्लिन से कोलोन व ब्रसेल्स गया और वहां से एंटवर्प। एटवर्प में भारतीय व्यापारियों की एक कालोनी है जो हीरे–जवाहरात व्यापार करते हैं। मैं उनका अतिथि था अतः उन्होंने मेरा खुब स्वागत किया । वहां से हम लोग ब्रेसेल्स, स्पा, वाटरलू तथा अन्य निकटवर्ती स्थल देखने गए। मैंने आपको एंटवर्प से प्रकाशित होने वाले पत्र 'ले मैटिन' की प्रति भेजी थी जिसमें मेरा साक्षत्कार छपा था।

पेरिस में मेरे पास अधिक समय नहीं था। फिर भी मुझे कुछ विशिष्ट व्यक्तियों

से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिनमें आंद्रेगाइड, फैलिशन चैले (शांतिदूत), श्री डेनरी (यूनिवर्सिटी के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रोफेसर) मैडम ड्रीवर्ट (जिनेवा की अन्तर्राष्ट्रीय महिला लीग की भूतपर्व सचिव) आदि शामिल हैं। पंद्रह दिन बाद जब पेरिस लौटूंगा तो कुछ अन्य लोगों से भी मिलूंगा। वे मेरे लिए ऐसे दो सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं जिसमें मैं ऐसे महानभावों से मिल सकूंगा जो भारत के पक्ष में हैं। बॉश महोदय आजकल मंत्री हैं। अतः उपलब्ध होंगे कहना कठिन है। ब्लम महोदय चुनाव में व्यस्त हैं किंतु जब मैं पेरिस लौटूंगा तो उनसे मिलने का प्रयास अवश्य करूंगा। 14 फरवरी को मेरा पेरिस लौटने का विचार है और फिर एक सप्ताह यहां रहूंगा।

लेटरहैड से आपका पता चल गया होगा कि मैं हावरे में जहाज पर हूं। कल दोपहर या शाम हम आयरिश बंदरगाह कोर्क पहुंचेंगे। अगली सुबह डब्लिन के लिए ट्रेन पकड़ूंगा। डब्लिन के विदेश–विभाग ने मुझे सूचित किया है कि प्रेजीडेंट डी वेलेरा, मेरा वहां पहुचने पर, मेरी अगवानी करेंगे और सबसे पहले प्रेजीडेंट महोदय से मेरी मुलाकात आयोजित की गई है।

मेरी भारत यात्रा स्थगित हो गई है। क्योंकि भारतीय कांग्रेस मार्च के स्थान पर अप्रैल में अधिवेशन आयोजित कर रही है। इसलिए मेरा विचार बन रहा है कि पेरिस और जेनेवा का अपना कार्य पूरा करने के बाद मैं बैडगस्टीन में अपना इलाज करवा लूं। यदि अधिवेशन मार्च में होता तों मैं इटली से ट्रीस्टीनों से रवाना हो जाता किंतु अब सोचता हूं कि मर्सिलेस से पी. एंड ओ. जहाज द्वारा जाऊं। परिणामस्वरूप, मेरा विएना आना संभव नहीं हो पाएगा।

आपके सभी पत्र 13 व 14 तारीख का पत्र, 20 जनवरी के दो पोस्टकार्ड तथा 23 जनवरी के दो पत्र मिल गए थे।

बार–बार मैंने आपके पत्रों को पढ़ा है। आपके कृपा का धन्यवाद किस प्रकार करूं? लोगों को आश्चर्य होता है कि मैंने पिछले तीन वर्षों में सबसे अधिक समय विएना में ही क्यों बिताया, किंतु मुझे कोई आश्चर्य नहीं।

मैं जहां भी गया, मौसम गर्म था, जनवरी के मौसम को देखते हुए पेरिस में तो ओवरकोट में काफी गर्मी महसूस हुई और चलते समय काफी पसीना भी आया।

अभी तक मैंने भारत के लिए अपनी बर्थ बुक नहीं करवाई है। 28 फरवरी की लॉयड ट्रीस्टीनो में बुक करवाई गई बर्थ कैंसिल करवानी पड़ेगी और मुझे ब्रिटिश जहाज जिसे मैं नापसंद करता हूं, से यात्रा करनी पड़ेगी। किंतु इस विषय में कुछ नहीं किया जा सकता, क्योकि किसी अन्य कंपनी का समय मेरे अनुकूल नहीं है।

आज फ्रेंच राजनीति हास्यास्पद स्थिति में है। लेफ्ट और राइट दोनों ही पार्टियां बहुत मजबूत हैं। आगामी चुनाव लेफ्ट पार्टियां उसके पक्ष में हैं तथा ब्रिटिश लेबर पार्टी के अत्याधिक निकट हैं।

डब्लिन से लौटने के बाद पेरिस में एक सप्ताह व्यतीत करने के पश्चात वह पेरिस के संबंध में कुछ लिख पाऊंगा। विएना की भांति पेरिस भी स्वर्गीय राजा जार्ज के लिए शोकग्रस्त है।

पेरिस में मुझे एक भारतीय सज्जन मिले जो मानवीय अधिकारों की लीग को निकट से जानते है। वे ऐसा प्रबंध कर देंगे कि पेरिस लौटने के पश्चात मैं लीग के कुछ महत्त्वपूर्ण सदस्यों (मानवीय बॉश सहित) से मिल सकूंगा।

सेटोन वाट्सन के संबंध में कुछ और जानकारी चाहूंगा। क्या वे चेकोस्लोवाकिया के पक्षधर है? वहां एक चेकोस्लोवाकिया के पक्षधर अंग्रेजी के पत्रकार हैं जिन्होंने आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में चेकोस्लोवाकिया पर भाषण दिया था, उन्होंने कौन सी पुस्तकें लिखी हैं?

मुझे आशा है कि 'माडर्न रिव्यू' खुशी–खुशी डा. वैटर का भाषण प्रकाशित कर देगा। मैंने उन्हें कह दिया है कि जब भाषण प्रकाशित हो जाए तो वे रिव्यू की प्रति आपको आपके पते पर प्रेषित कर दें। विएना में कांग्रेस जुबली समारोह में दिया गया, डा. वैटर का भाषण बहुत ही संवेदनशील, गरिमापूर्ण एवं पांडित्यपूर्ण था। चाय पार्टी (हार्टमान के यहां) में दिया उनका भाषण भावपूर्ण एवं मार्मिक था।

वहां मौसम कैसा है? विएना के बाहर सब जगह मौसम बहुत अच्छा हैं आप दोनों को शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– मेरा लेख इतना खराब है कि आप इसे समझ भी पाएंगी या नहीं!

सु. च. बो.

अमिय चक्रवर्ती को,

डब्लिन
8.2.36

प्रिय अमिय,

7 तारीख का तुम्हारा पत्र आज मिला। 14 तारीख को मैं पेरिस पहुंचूंगा और फिर 5 से 7 दिन तक वहां रहने के बाद जेनेवा के लिए निकलूंगा। मेरा पता है–होटल अंबेसेडर, बोलेवार्ड, हॉसमान, पेरिस 9.

मित्रों ने वहां कई लोगों से मुलाकात का प्रबंध किया है। अभी पूर्ण विवरणों की जानकारी मुझे नहीं है। पेरिस पहुंचकर ही कुछ पता चलेगा। अच्छा रहेगा यदि तुम भी उसी होटल में ठहरो तो चर्चा के लिए समय मिल पाएगा।

अधिक नहीं लिखूंगा। मिलने पर ही सब विषयों पर चर्चा करेंगे

सदैव

तुम्हारा
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

होटल अंबेसेडर
16, बोलेवरा हॉसमान
पेरिस
26.2.36

प्रिय श्रीमती वैटर,

बहुत दिन से पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा प्रार्थी हूं। आयरलैंड और फिर पेरिस में बहुत व्यस्त रहा। क्या आयरिश अखबारों की कुछ कटिंग्स आपको मिलीं?

आज पेरिस से चलकर 29 तारीख को बैगस्टीन पहुंचूंगा। रास्ते में लूसाने मे श्री नेहरू से तथा विलेन्यूव में रौलां महोदय से मिलूंगा।

जब तक मैं बैगस्टीन में निश्चित होकर बैठ नहीं जाता तब तक लंबा पत्र नहीं लिख पाऊंगा। वहां मैं कुरहॉस हॉकलैड में ठहरूंगा।

मैं श्री विक्टर बॉश तथा श्री ग्यूरनेट, शिक्षामंत्री से मिला। आपने परिचय करवाया इसके लिए आभारी हूं।

डा. वैटर वे आपको अनेकों शुभकामनाएं।
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– 20 मार्च के आस–पास भारत के लिए रवाना होऊंगा।

सु. चं. बोस.

संतोष कुमार सेन को,

कुरहॉस हाकलैंड
बैगस्टीन
3.3.36

प्रिय डा. सेन,

आज प्रातः यहां पहुचा हूं। लगभग डेढ़ माह बाद कुछ शांति मिली है। पिछला एक–डेढ़ महीना अत्यधिक व्यस्तता में बीता। प्राग, बर्लिन, ब्रसेल्स, पेरिस, आयरलैंड फिर पेरिस व लूसानने आदि स्थानों की यात्रा करने के पश्चात पुनः आस्ट्रिया लौटा हूं।

हिमालय की भांति ही यहां की दृश्यावाली भी बहुत मोहक है। चारों ओर बर्फ ही बर्फ है और पर्वत श्रृंखलाएं सुदृढ़ता व मजबूती से खड़ी हैं।

फिलहाल मेरा इरादा 20 तारीख को मर्सिलेस से घर लौटने का है। आशा है घर लौटने से पूर्व आपका आधा धन आपको लौटा सकूंगा। फिलहाल मुझे घर से पर्याप्त राशि प्राप्त नहीं हुई है, इसिलए आपका पैसा लौटाने में देर हुई।

22 पौंड का एक चैक साथ में भेज रहा हूं। यदि आप वहीं चैक कैश करवा लें और पैसा मुझे भिजवा दे तो बेहतर रहेगा। आपक जानते ही होंगे कि आस्ट्रिया में रजिस्टर्ड–चैक या पत्र भेजने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। चैक कैश करवाने के बाद आप मनीआर्डर द्वारा या रजिस्टर्ड पत्र द्वारा राशि मुझे भिजवा सकते हैं। रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भेजने पर व्यय कम होग। रजिस्टर्ड पत्र पर ठीक प्रकार मोहर लगाना न भूलें। यदि खुदरा पैसे हो तो उनकी स्टांपस खरीद कर भिजवा दें। कृपया शीघ्र और सावधानी पूर्वक राशि भिजवाने की व्यवस्था कर दें।

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ हैं। अब कुछ थकान सी महसूस कर रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– 27 जनवरी का आपका पत्र बहुत दिन पूर्व मिल गया था।

जवाहरलाल नेहरू को,

कुरहॉस हॉकलैंड

बैगस्टीन, (आस्ट्रिख)

4 मार्च, 1936

प्रिय जवाहर,

लंबी और थका देनेवाली यात्रा के उपरांत कल सुबह यहां पहुंचा। यहां शांत और सुंदर वातावरण है। मैं चाहता हूं कि आप अपने आपको भंवर में डालने से पूर्व यूरोप में कुछ आराम कर लेते।

आपसे मिलने के बद से निरंतर ही विचार कर रहा हूं कि जिन विषयों पर आपसे बात हुई क्या उन पर मुझे कोई मत जारी करना चाहिए। मेरा विचार है कि मुझे

करना चाहिए क्योंकि इस बात की पूरी संभावना है कि मुझे पुनः जेल भेजा जाएगा, और वहां कुछ लोग ऐसे अवश्य हैं जो मेरा मत जानने के इच्छुक हैं। कम से कम शब्दों में मैं अपना मत प्रकट करूंगा और स्पष्ट रूप में कहूंगा कि मैंने आपको सहयोग देने का दृढ़ निश्चय कर लिया है।

आज के मुख्य नेताओं में से आप ही एक ऐसे नेता हैं जो कांग्रेस को प्रगति की ओर ले जा सकते हैं। वैसे भी आपकी स्थिति अलग है और महात्मा गांधी भी, शायद किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा, आपके प्रति अधिक उदार रहेंगे। आशा है आप निर्णय लेने में अपनी लोकछवि की शक्ति का भी उपयोग करेंगे। कृपया कभी भी अपनी स्थिति को कमजोर न समझें। महात्मा गांधी ऐसा कोई कदम नहीं उठाएंगे जो आपके हित में न हो।

जैसाकि मैंने पिछली बातचीत के दौरान भी आपको सुझाया था कि आपका तात्कालिक कार्य द्विपक्षीय होगा। 1. हर प्रकार से कार्यालय पद से स्वयं को अलग रखना। 2. कैबिनेट का अधिक से अधिक विस्तार करना। यदि आप ऐसा कर पाए तो कांग्रेस को नैतिक पतन से बचाकर बर्बाद होने से बचा लेंगे । बड़ी समस्याओं का समाधान बाद में भी खोजा जा सकता है, किंतु कांग्रेस के नैतिक पतन को तत्काल रोकना आवश्यक है।

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप कांग्रेस का विदेश–विभाग खोलना चाहते है। वह विचार मेरे विचारों से मेल खाता है।

पत्र को अधिक लंबा नहीं करूंगा क्योंकि आप जाने की जल्दी में होंगे और जाने से पूर्व कई कार्य निपटाने होंगे। यात्रा के लिए शुभकामनाएं। उस दुरूह कार्य, जो आपकी प्रतीक्षा में है, की सफलता की कामना करता हूं। यदि मुझे लखनऊ आने की आज्ञा मिल सकी तो मेरी सेवाएं भी आपके प्रति समर्पित होंगी।

आपका अपना
सुभाष,

संतोष कुमार सेन को,

कुरहॉस हाकलैंड
बैगस्टीन
4.3.36

प्रिय डा. सेन,

कल आपको पत्र लिखा था और एक चैक भी भेजा था। आशा है आपको जल्दी ही मिल जाएगा।

क्या उदय शंकर का कोई समाचार है? मुझे शक है कहीं वह अग्निहोत्री के हाथों का खिलौना न बन गया हो। आपने शायद उदय शंकर के एजेंट से संपर्क किया हो या उसके पते पर उसे पत्र लिखा हो। विएना से मैंने उदय शंकर को केरो तथ अलैग्जैंड्रा के पते पर पत्र लिखे थे, किंतु उनका कोई उत्तर नहीं मिला। इस कारण मुझे चिंता हो गई हैं।

पेरिस में मुझे एक भारतीय विद्यार्थी ने बताया कि वे उपचार के लिए विएना जाना चाहते हैं। मैंने उन्हें तुम्हारा नाम और पता भी दिया और तुम्हें पत्र लिखने को कहा है। घर पर भी दो तीन लोगों को तुम्हारा नाम व पता दिया है।

आशा है आप सभी स्वस्थ हैं। आपसे विस्तृत समाचार पाने की आशा रखता हूं। मैं ठीक–ठीक हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– क्या कोई नया व्यक्ति वहां आया है।
संतोष कुमार सेन को,

कुरहॉस हाकलैंड
बैगस्टीन
4.3.36

प्रिय डा. सेन,

गैरोला के लिए आज एक पत्र मिला। मुझे विएना आने के लिए आमंत्रित किया है, यही कहने के लिए पत्र लिखा है। मेरा कोई खर्च नहीं होगा, क्योंकि आप, विमलाकीर्ति और गैरोला सारा खर्च वहन कर लेंगे। यात्रा का कारण यह है कि उदय शंकर विएना पहुंच रहा है। कृपया मुझे बताएं कि यह सब क्या है। मैं 20 मार्च या उसके आसपास मर्सिलेस से रवाना होना चाहता हूं। इस दौरान यहां उपचार कराना चाहता हूं। यदि विएना गया तो उपचार में बाधा उत्पन्न होगी। आर्थिक तंगी तो है, किंतु वह बाधा नहीं है। अभी तक आपके तीस पाऊंड लौटा नहीं पाया हूं। फिर गैबरोला की आर्थिक स्थिति को देखते हुए उस पर अतिरिक्त भार डालना उचित नहीं है। विमलाकीर्ति की आर्थिक दशा का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। मैं नहीं जानता कि गैयरोला ने तत्काल व स्पष्ट रूप में लिखा है या नहीं। उदय शंकर का संवाददाताओं का समारोह कब है? पहला प्रदर्शन कब है? एक और बात! ब्रिस्टल होटल में हमारा राष्ट्रीय झंडा छूट गया था। क्या आप उसे वापिस ले आए हैं?

विएना के उदाहरण का अनुकरण करते हुए बर्लिन और पेरिस में रह रहे भारतीय फरवरी में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्वर्ण जयंती मनाना चाहते हैं। अतः आपके

प्रयासी के सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं।

यदि जहाज में प्रथम श्रेणी में यात्रा कर सकता तो अपने घर वायुयान से जाता, क्योंकि मर्सिलेस से बंबई तक का किराया और रोम से कराची तक का वायुयान का किराया बराबर के लगभग ही होगा। वायुयान के किरायों में आजकल कमी आई है और फिर रोम से कराची जाने में डच वायुयान केवल दो ढाई दिन लेता है। किंतु धनाभाव के कारण मुझे द्वितीय श्रेणी में यात्रा करनी पड़ेगी (तथा पी. एंड. ओ.) और लॉयड ट्रीस्टीनो बंबई समय पर नहीं पहुंचेगे।

माथुर ने लिखा है कि शाययद आप भी यहां आएंगे। यदि आपक आ रहे हैं तो कृपया मुझे सूचित करें ताकि मैं मकान मालकिन सेकहकर कमरे की व्यवस्था करा सकूं। मेरा विचार है कि चिकित्सक यहां बिना शुल्क नहा सकते हैं। किंतु आने से पूर्व वैधानिक पत्र प्राप्त कर लें कि आपक पूर्ण चिकित्सक हैं। यदि सस्ता टिकट खरीदना चाहें तो इस प्रकार टिकट खरीदें–विएना बैगस्टीन–बैगस्टीन–विएना–चेकोस्लोवाक फ्रंटियर (ब्राटीस्लावा के निकट)। यदि ऐसे टिकट लेंगे तो पूरे मार्ग पर 60 प्रतिशत कम व्यय होगा। यहां ऐसा नियम है कि विदेशी को फ्रंटियर स्टेशन तक का टिकट खरीदना होगा। यदि बैगस्टीन आ जाए तो विएना लौटने के बाद टिकट फाड दें। आशा है वहां सभी ठीक–ठाक है।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

कुरहॉस हाकलैंड
बैगस्टीन
5.3.36
माननीय एन.सी. वैटर
विएना–IX
व्हीरिगर स्ट्रीट–41

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके दो कृपयापत्र मिले (दूसरा पत्र यहां पेरिस से मिला)। यह बताने के लिए पत्र लिख रहा हूं और अभी तक उनका उत्तर नहीं दे पाया हूं। पेरिस में बहुत व्यस्त रहा और फिर लूसाने में जहां श्रीमती नेहरू ने 28 फरवरी को दम तोड़ा। उनके पति व पुत्री अंतिम समय में उनके पास थे। श्री नेहरू 7 मार्च को वायुयान द्वारा भारत लौटे रहे हैं। यहां का मौसम शांत और सुंदर है (यद्यपि हवाए चल रही हैं) तथा छः

हफ्तों की चिंता के बाद बहुत आराम है। 20 मार्च को मर्सिले से जहाज में बैठना चाहता हूं। डा. वैटर और आपको सादर!

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

कुरहॉस हाकलैंड
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
5.3.36

प्रिय श्रीमती ई. वुड्स,

आप सोच रही होंगी कि डब्लिन छोड़ कर कैसा अजीब व्यक्ति है, गायब हो गया। किंतु मैं अपनी इस गलती के लिए क्षमा भी नहीं मांग सकता। डब्लिन छोड़ने के बाद से भंवर में फंसा हुआ था और अब जाकर कुछ समय निकाल पाया हूं।

डब्लिन से रवाना होकर उसी रात कुमारी मैक्स्वीनी से मिला। अच्छा किया जो मैंने ट्रेन पकड़ ली, क्योंकि नाव अगली प्रातः रवाना होनी थी। अतः मैं कुमारी मैक्स्वीनी को अगली सुबह दुबारा नहीं मिल पाया।

समुद्र चंचल था, अतः रास्ते भर तबियत खराब रही। जहाज पर से आपको लंबा पत्र लिखने का विचार त्यागना पड़ा।

पेरिस पहुंचते ही बहुत व्यस्त हो गया और लोगों से घिरा रहा । रात में जब सोने लगा तो इतना थक गया कि लंबा पत्र लिख पाना संभव नहीं हुआ।

फिर पेरिस छोड़ कर श्रीमती व श्री नेहरू को मिलने लुसाने चला गया। श्रीमती नेहरू गंभीर रूप से बीमार थीं और मैं वहीं था जब श्रीमती नेहरू ने दम तोड़ा। उनके अंतिम संस्कार आदि की व्यवस्था करनी थी अतः सारा दिन व्यस्त रहे। श्री नेहरू शीघ्र ही भारत के लिए रवाना होंगे क्योंकि उन्हें अप्रैल के प्रारंभ में लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय कांग्रेस सम्मेलन की अध्यक्षता करनी है। लुसाने में जलोपचार व कुछ आराम करने के लिए मैं यहां लौट आया। मदिरा की भांति यह स्नान भी अत्यधिक प्रभावी है। लगातार यात्रा के कारण बहुत थक गया हूं और कुछ चिंतित भी हूं। इस आराम से कुछ लाभ पहुंचेगा और फिर मैं 20 मार्च के आस–पास मर्सिलेस से रवाना होऊंगा।

डब्लिन में मेरे आवास के अंतिम दिनों के दौरान पेट के अंदर एक खास किस्म का दर्द होने लगा था जो लगातार रहाता था। ऐसा दर्द पहले कभी नहीं हुआ। इसके

बारे में मैंने किसी को कुछ नहीं बताया, क्योंकि मैं किसी को चिंता में डालना नहीं चाहता था। पेरिस आने के कुछ दिन बाद वह दर्द स्वयं खत्म हो गया।

डब्लिन आवास के दौरान आपकी सहायता का मैं सदैव आभारी रहूंगा, मेरे पास बहुत सी खूबसूरत यादें हैं। आपकी पुत्रियों ने भी मेरा बहुत ध्यान रखा, विशेषरूप से एंडा तो बहुत देखभाल करने वाली बच्ची है। उन सभी को मेरा बहुत–बहुत धन्यवाद।

कह नहीं सकता दुबारा कब मुलाकात होगी। हमारे एक प्राचीन कवि भवभूति ने लिखा है–समय शाश्वत है और पृथ्वी बहुत विस्तृत हैं। –अतः है फिर कभी भेंट हो, किंतु उस स्थिति में नहीं जैसे शेल्बर्न होटल में मैंने जेल सुपरिटेंडेंट को आश्चर्य में डाल दिया था।

कुछ ही दिनों में पुनः आपको लिखूंगा कि हमें क्या करना चाहिए–क्या कर सकते हैं भारत अैर आयरलैंड के आपसी अनुबंध को जारी रखने के लिए। मेरे डब्लिन छोड़ने के बाद क्या आपकी मुलाकात मैडम मैकब्राइड से हुई? उसके बाद से क्या कोई नई प्रगति हुई?

अपने बेटे–बेटियों को मेरी ओर से प्यार दें और आपको सादर प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार सेन को,

बैगस्टीन
(बिना तिथि के)
(पोस्टर्माक में तिथि–5.3.36.संपादक)

गैरोल के पत्र से समझ नहीं पा रहा कि उदय शंकर अग्निहोत्री के शिकंजे से आजाद हुआ या नहीं। यदि आपको उसका (उदय शंकर) पत्र नहीं मिला तो कृपया तत्काल उसे पत्र लिखें, बुडापेस्ट के पते पर और उसे अग्निहोत्री से सावधान रहने को कहें। कृपया यह कार्य अवश्य कर दें। आप उदय शंकर के एजेंट से उसका बुडापेस्ट का पता आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार सेन को,

कुरहॉस हाकलैंड
बैगस्टीन

6.3.36

प्रिय डा. सेन,

आपका एक्सप्रेस पत्र व 587 शिलिंग आज ही मिले। मुझे आशा नहीं थी कि आप इतनी जल्दी भिजवा सकेंगे।

घर लौटने से पहले, विएना आने की मेरी बड़ी इच्छा थी, किंतु यह संभव नहीं हो पाएगा। गैरोला का पत्र मिलने के पश्चात मुझ में काफी उत्साह पैदा हो गया था, किंतु फिर गंभीरता से विचार करने पर इस निर्णय पर पहुंचा कि यह संभव नहीं होगा। विएना छोड़ने के बाद इतनी जगहों की यात्रा करके और तरह–तरह का खाना खाकर बहुत कमजोर और थका हुआ महसूस कर रहा हूं।

डब्लिन में एक दिन अचानक नए किस्म का पेट दर्द शुरू हो गया जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। लुसाने में श्रीमती नेहरू की मृत्यु के कारण बहुत विषाद और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अब घर लौटने से पूर्व दो–तीन सप्ताह तक अपने स्वास्थ्य पर ध्यान करना आवश्यक है। यहां के उपचार में 'स्नान' शामिल है। कुल मिलाकर 29 बार स्नान करना आवश्यक है जिसमें 25–27 दिन लग जाते हैं। मैं 21 'स्नान' नहीं कर पाऊंगा क्योंकि 20 मार्च को मुझे को मुझे मर्सिलेस से रवाना होना है। इसका अर्थ है कि मुझे यहां से 18 को या उसके आस–पास चल देना होगा। इस अवधि में केवल 14 बार स्नान कर पाऊंगा। यदि विएना जाऊंगा तो–तीन दिन ओर छोड़ने पड़ेंगे अतः मेरा बैगस्टीन आना कोई खास उपयोगी सिद्ध नहीं हो पाएगा। इन सब परिस्थितियों के कारण मुझे विएना यात्रा का प्रस्ताव अस्वीकार करना पड़ रहा है। आज गैरोला को भी इसी प्रकार का पत्र भेज रहा हूं।

बहुत अच्छा हो यदि आप सब लोग, जिस दिन वह वहां पहुंच रहा है, उसे लेने स्टेशन पहुंचे। फिर आपकों तो प्रेस द्वारा आयोजित सम्मान में भी उपस्थित रहना चाहिए, मैं यहां से उसके बुडापेस्ट के पते पर अग्निहोत्री के विषय में पत्र लिख रहा हूं। आशा है मेरा पत्र उसे समय पर मिल जाएगा। यदि प्रेस द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में आप सब लोग उपस्थित रहेंगे तो अग्निहोत्री पर स्वतः प्रतिबंध लग जाएगा।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

अमिय चक्रवर्ती को,

कुरहॉस हाकलैंड

बैगस्टीन, आस्ट्रिया

11.3.36

प्रिय श्री चक्रवर्ती,

पेरिस में तुरंत आपका पत्र मिला। खेद है मैं आपसे मिल नहीं पाया। जिन दो व्यक्तियों के नाम व पते आपने दिए थे, उनसे मैं मिला था। वे दोनों ही अद्भूत व्यक्ति हैं।

कई बातें आपको बताने को हैं—आज मैं एक या दो विषय उठाऊंगा। अखबारों से आपको पता चल गया होगा कि हिटलर के भाषण से भारत में कितनी उत्तेजना हैं। मुझे लगता है कि फेडरेशन की ओर से इसका तीव्र खंडन होना चाहिए। बहुत सोच–विचार के उपरांत मैं ऐसा कह रहा हूं। इस प्रकार के खंडन से लाभ ही होगा, हानि नहीं। मैं नहीं जानता कि जर्मनी में रह रहे भारतीय क्या करेंगे, शायद उनके लिए कुछ कर पाना कठिन भी है। हम जो लोग बाहर हैं, उनका कर्तव्य स्पष्ट है। इस विषय में आपको बिल्कुल भी हिचकिचाना नहीं चाहिए। यदि इस खंडन के लिए फेडरेशन की अनुमति लेने में अधिक समय लगे या कोई अड़चन हो तो एक अध्यक्ष के नाते आप फेडरेशन का उत्तर दे सकते हैं। यदि कुछ डरपोक लोग बाद में इस विषय पर कोई प्रश्न उठाएंगे तो आप कह सकते हैं कि अपने देश में मुझे हमेशा लोगों की सहमति मिलती रही है और उसी के अनुरूप मैंने कार्य किया है। इसलिए जब देश के लोग जोरदार शब्दों में विरोध करें। बहुत सोच–विचार कके उपरांत मैंने भारतीय समाचार पत्रों (भारत में) के लिए विरोध–पत्र भेजा है और जर्मनी के साथ व्यापार पर रोक लगाने के प्रस्ताव का समर्थन भी किया है। शीघ्र ही मैं जर्मन नेताओं के पास व्यक्तिगत विरोध भी प्रेषित करूंगा। किंतु क्योंकि मैं किसी संगठन से संबद्ध नहीं हूं इसलिए मेरी आवाज का असर अधिक नहीं होगा। दो वर्ष पहले फेडरेशन ने जो विरोध किया था उसका कुछ प्रभाव पड़ा था क्योंकि विदेश कार्यालय से बहुत नर्म उत्तर प्राप्त हुआ था। अपने विरोध में आप इस तथ्य का संदर्भ भी दे सकते है कि पत्र के भाव को ठीक प्रकार समझा नहीं गया है। बल्कि भारतीय लोगों का और अपमान किया गया है। शायद आपने देखा हो कि जापान में इसका अधिकाधिक विरोध हुआ है।

लखनऊ कांग्रेस का सम्मेलन 8 अप्रैल को होगा। मुझे उससे पहले वहां पहुंचना है। अतः मेरी यूरोप यात्रा समाप्त हो रही है और मुझे चलना ही चाहिए। आपके और अन्य मित्रों के विचारों की दिशा एक ही है, किंतु इन बातों पर विस्तृत विचार–विमर्श पत्रों द्वारा संभव नहीं है। यह कहना व्यर्थ है कि जैसे ही मैं वहां लौटूंगा, गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा। यदि गिरफ्तार नहीं होता तो आपके विचारों से सहमत हूं कि हमें क्या करना चाहिए। घर जाने की जल्दी के कारण कहीं और आना–जाना अब संभव नहीं हैं। कुछ देशों की यात्रा की इच्छा पूर्ण हुए बिना ही रह गई, किंतु कई कारणों से इच्छा पूर्ण कर पाना संभव नहीं था।

अंतर्राष्ट्रीय महिला लीग के प्रकाशन में आपका लेख पढ़कर प्रसन्नता हुई।

आपने मुझे इस विषय पर लिखने को कहा था—किंतु अब लगता है मैंने अच्छा ही किया, नहीं लिखा। क्योंकि मेरे न लिखने की वजह से ही आपका इतना सुंदर लेख प्रकाशित हुआ। असल में मैं बर्लिन, पेरिस और लुसाने में इतना व्यस्त था कि कोई लेख लिखने की स्थिति में नहीं था, यहां तक कि पत्रों के उत्तर भी समय पर नहीं दे पाया।

हिटलर के विषय में और अधिक लिखा जाना चाहिए। क्योंकि यह सच नहीं है कि विरोध के प्रकट करने से फेडरेशन से अलगाव का प्रश्न उठेगा, क्योंकि दो वर्ष पूर्व भी कड़ा विरोध किया गया था और उसका प्रभाव भी बुरा नहीं हुआ था। जर्मनी के विरूद्ध हमें (भारतीयों को) बहुत सी शिकायतें हैं। उन दिनों (जनवरी में) जब मैं बर्लिन में था, मैंने भी विरोध प्रकट किया था। वे ताकत के प्रशंसक हैं न कि कमजोरी के। मैं तो कहता हूं, इसके लिए फेडरेशन से पृथक होने को भी तैयार हूं। इटली से शिकायतें हैं किंतु अन्य कारणों से, भारत के सम्मान या हित के कारण से नहीं। किंतु जर्मनी के विरूद्ध भारतीय दृष्टि से बहुत सी शिकायतें हैं।

हिटलर सरकार के शीघ्र पतन की भी कोई संभावना नहीं है। यदि युद्ध छिड़ जाए और जर्मनी को कमजोर कर दे तभी यह संभव है, वरना नहीं। किंतु यदि हमारे बहिष्कार से जर्मनी के व्यापार पर प्रभाव पड़ता है तो जर्मनी के व्यापारी हिटलर पर जोर डालेंगे। आजकल जर्मनी में दो ग्रुप बहुत सफल हैं और वे हैं—सेना तथा व्यापारी।

आज इतना ही। आशा है आपका स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। बहुत से स्थानों की यात्रा और जगह—जगह का पानी पीने की वजह से बहुत थकान महसूस कर रहा हूं। डब्लिन में पेट में दर्द शुरू हो गया था। आजकल यहां आराम व जलोपचार के लिए आया हुआ हूं। पिछले वर्ष इसी इलाज से लाभ पहूंचा था। आशा है इस बार भी लाभ होगा और स्वास्थ सुधरते ही देश के लिए रवाना हो जाऊंगा। हार्दिक शुभकामनाएं।

सदैव आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस
अमिय चक्रवर्ती को,
महोदय,

ब्रिटिश कॉन्सल से विएना में पत्र प्राप्त हुआ जो इस प्रकार है—

12 मार्च 1936

महोदय,

विदेश मंत्रालय के स्टेटसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए कि आपको चेतावनी दे दूं कि भारतीय सरकार ने समाचार—पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है, और भारत सरकार आपको स्पष्ट करना चाहती है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो स्वतंत्रा नहीं रह सकेंगे।

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

स्टेट सचिव
जे. डब्लयू टेलर
हिज मैजेस्टीज कॉन्सल

सन् 1932 में मुझे 2 जनवरी को भारत में गिरफ्तार किया गया और 22 फरवरी 1933 तक बिना मुकदमा चलाए जेल में डाले रखा गया। मैंने बार–बार मुकदमा चलाने को कहा, किंतु भारत सरकार ने न तो मुझ पर कोई आरोप लगाया और न ही मेरे विरूद्ध कोई शिकायत ही बताई। जब मैं बुरी तरह बीमार हो गया और भारत सरकार द्वारा अनेकों चिकित्सा जांच बोर्ड बैठाए गए तथा उन्होंने कहा कि या तो मुझ छोड़ दिया जाए अथवा इलाज के लिए यूरोप जाने की अनुमति दी जाए तक कहीं जाकर भारत सरकार ने मेरी गिरफ्तारी के आदेश वापस लिए और मुझे इलाज हेतु यूरोप जाने की अनुमति दी। पिछले तीन वर्षों से यूरोप में ही हूं। दिसंबर 1934 में केवल एक बार भारत गया था, जब अपने मर रहे पिता को देखने गया था और केवल 6 सप्ताह वहां ठहरा था। भारत में इस दौरान भी मुझे घर में नजरबंद बनाकर रखा गया था।

अब फिर भारत लौटना चाहता हूं तो इस प्रकार की धमकी दी जा रही है। मेरी पिछली गिरफ्तारी भी, न्यायिक व नैतिक रूप से, दोनों ही तरह गलत थी। किंतु भारत लौटने पर मेरी प्रस्तावित गिरफ्तारी ने तो सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि भारत में क्या इसी प्रकार ब्रिटिश, नियम लागू रहेंगे और नए संविधान के अधीन क्या हमें यही आजादी उपलब्ध होने वाली है?

आपका
सुभाष चंद्र बोस
(अध्यक्ष, बंगाल कांग्रेस कमेटी)
कुरहॉस हॉकलैंड, बैगस्टीन
आस्ट्रिया
17 मार्च

जवाहरलाल नेहरू को,

कुरहॉस हॉकलैंड,
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
13 मार्च, 1936
प्रिय जवाहर,

विएना में ब्रिटिश कान्सल का एक एक्सप्रेस–पत्र मुझे अभी मिला है जो इस प्रकार है–

'विदेश मंत्रालय के राज्यसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए कि आपको चेतावनी

दे दी जाए कि भारत सरकार ने समाचार–पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है। भारत सरकार आपको स्पष्ट करना चाहती है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो स्वतंत्र नहीं रह पाएंगे।

हस्ता/–

जे. डब्ल्यू. टेलर

हिज मैजेस्टीज कान्सल

मैं अपना मार्ग निर्धारित कर रहा था जब मुझे यह नोट मिला। बुकिंग करवाने में इसलिए विलंब हुआ क्योंकि मैं जलमार्ग व वायुमार्ग में होने वाले व्यय की तुलना कर रहा था। वायुयान की यात्रा से मैं उपचार पूर्ण करा सता हूं, क्योंकि उसमें कुल 25 दिन लगेंगे। यहां, बल्कि पूरे महाद्वीप में, ऐसा कोई व्यवि नहीं है जिससे मैं इस विषय में विचार–विमर्श कर सकूं। इस समय, जैसा कि आप अनुमान लगा ही सकते है, मेरी इच्छा है कि चेतावनी की अवहेलना करते हुए कि में देश वापस लौटूं। विचारणीय बात केवल यह है कि देश या जनता के हित में क्या होगा। व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए कुछ महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि मैं लोकहित में कुछ भी करने को तैयार हूं। जन मामलों से मैं एक अरसे से अलग–थलग हूं इसलिए मेरे लिए यह निर्णय कर पाना कठिन है कि जनहित में क्या होाग। मैं जानता हूं इन परिस्थितियों में किसी को राय देना आपके लिए भी कठिन होगा। शायद आप मुझे कुछ सलाह दे सकें। आप व्यक्तिगत तथ्य को भूलकर एक जन कार्यकर्ता को आसानी से वह मार्ग सुझा सकतते हैं जो मार्ग जनहित में हो। लोकजीवन और देश में आपकी जो पोजीशन है, उसके रहते आपकी जिम्मेदारी से इंकार नहीं कर सकते।

इस विषय में गैं आपको कष्ट इसलिए दे रहा हूं क्योंकि मेरी दृष्टी में आपके सिवा अन्य कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिस पर मैं विश्वास कर सकूं। समयाभाव के कारण मैं विभिन्न लोगों से इस विषय में राय नहीं ले सकता। अपने रिश्तेदारी से राय लेना उचित नहीं होगा, क्योंकि शायद वे जनहित में निर्णय लेने में असमर्थ रहें। अतः मेरे पास आप की राय पर निर्भर करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। आपको 20 तारीख तक यह पत्र अवश्य मिल जाना चाहिए। यदि आप तत्काल वायरलेस से संदेश दें तो मुझे समय पर मिल जाएगा। मैं के. एल. एम. जहाज पकड़ सकता हूं जो 22 अप्रैल को रोम सेर वाना होगा। इसलिए अगर मैं 21 को या 22 को भी देश लौटने का निर्णय करता हूं तो मुझे 2 अप्रैल को रोम से रवाना होने वाले जहाज में सीट मिल जानी चाहिए। यह भी संभव है कि 29 मार्च को रवाना होने वाले जहाज में ही सीट मिल ज़ाए।

जब लखनऊ कांग्रेस के लिए समय पर घर पहुंचने की योजना बनाई थी बत भी यह संभावना मन में थी कि हो सकता है वहां पहुंचते ही मुझे जेल में डाल दिया जाए। किंतु यह संभावना भी थी कि संभव है, कुछ समय के लिए ही सही आजाद रहने दिया जाए। दूसरी संभावना तो बिलकुल खत्म ही समझो, बल्कि अब तो घर लौटने का अर्थ है जेल जाना। यद्यपि जेल जाने का भी लाभ है। और ऐसे आदेश का उल्लंघन कर जानबूझ कर जेल जाने में भी फायदा है।

कृपया शीघ्र ही कोई उत्तर अवश्य दें। निम्न पते पर तार भी दे सकते हैं—बोस, कुरहॉस हॉकलैंड, बैगस्टीन, आस्ट्रिया।

आशा है आपकी यात्रा आरामदायक रही होगी और स्वास्थ्य भी संतोषजनक होगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष

पुनश्च :– कल प्रेस संदेश में मैंने यह संकेत दिया था कि इलाज पूरा कराने के बाद वायुयान द्वारा स्वदेश लौटने की संभावना है।

सु. च. बोस

ई. वुड्स को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
17.3.36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

9 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया। कुछ और कहने से पुर्व मैं आपको उस पत्र की प्रति दिखाना चाहूंगा। जो मुझे विएना में ब्रिटिश कान्सल से प्राप्त है–

12 मार्च 1936

'विदेश मंत्रायल के राज्यसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए हैं कि आपको चेतावनी दे दी जाए कि भारत सरकार ने समाचार–पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है। ऐसा करेंगे तो स्वतंत्र नहीं रह पाएंगे।

हस्ता/

जे.डब्ल्यू. टेलर

हिज मैजेस्टीज कान्सल

शायद आप इसे डब्लिन समाचार–पत्रों में, विशेषरूप से आयरिश प्रेस में –व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना कर छपवा सकें। यदि इस कार्य में आपको सफलता मिल जाए तो अन्य बातों के साथ निम्न भी जोड़ सकती हैं।

पहले भी बिना मुकदमा चलाए मुझे अक्तूबर 1924 से मई 1927 तक जेल में डाले रखा गया। अत्यधिक बीमारी की हालत में मुझे असमय छोड़ दिया गया।

जनवरी 1032 से फरवरी 1933 में पुनः बिना मुकदमा चलाए जेल में डाला गयां जब पुनः गंभीर रूप से बीमार हुआ और सरकारी चिकित्सा अधिकारियों के यह कहने पर, कि या तो मुझे छोड़ दिया जाए या इलाज के लिए यूरोप भेजा जाए, ही मुझे विदेश जाने की सरकारी आज्ञा मिली।

जब नवंबर 1934 में मैं मृत्युशैया पर पड़े अपने पिता को देखने भारत गया। बल्कि पिता की मृत्यु के बाद ही पहुंचा–मुझे मेरे घर पर नजरबंद रखा गया। जब तक भारत रहा –यानी 6 सप्ताह तक, इसी हाल में रहा।

वर्तमान गिरफ्तारी का प्रस्ताव इस भय से कि पता नहीं मैं क्या करूं। यह ब्रिटिश राज्य है।

मुझे प्रसन्नता है कि आप आयरिश लोगों को बताने में कामयाब होंगी।

कृपया तत्काल अपने समाचार दें। मैं पुनः आपको लिखने का प्रयास करूंगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस,

नाओमी सी. वेटर को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
17.3.36

प्रिय श्रीमती वैटर,

मेरी लंबी चुप्पी के लिए आपकी भावनाओं को मैं समझ सकता हूं। मैं बहुत अच्छी परिस्थितियों में नहीं था। विएना में ब्रिटिश कांसिल का यह पत्र मुझे मिला है–

विदेश मंत्रालय के राज्यसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए है कि आपको चेतावनी दे दी जाए कि भारत सरकार ने समाचार–पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है। भारत सरकार स्पष्ट करना चाहती है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो स्वतंत्र नहीं रह पाएंगे।

हस्ता/

जे.डब्ल्यू. टेलर

हिज मैजेस्टीज कान्सल

मैंने अकेले ही विषय में गंभीरतापूर्वक विचार किया और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि इस आदेश का उल्लंघन कर परिणामें का सामना करना चाहिए। अभी मैंने यह विचार किसी को नहीं बताया और ब्रिटिश सरकार को तो यह बताना भी नहीं चाहता कि मैं क्या करने वाला हूं। उन्हें स्वयं खोज करने दें। यहां मुझे लग रहा है कि पुलिस मेरे क्रियाकलाप पर नजर रखे हैं। संभव है उन्हें आदेश मिले हों कि मेरी गतिविधियों की सूचना लंदन तक पहुंचाए।

अभी तक मैंने अपनी सचिव, मिस शैंकल के अतिरिक्त किसी अन्य को विएना में सूचना नहीं दी है, मिस शैंकल को मैंने यहां बुलाया है, क्योंकि मुझे कुछ आवश्यक कार्य करवाना है, अपनी पुस्तक के द्वितीय संस्करण सहित, इससे पहले की जेल में जाकर बेकार बैठा रहूं। कृपया इस बात को पूर्णतः गुप्त रखें, जब मैं अन्य मित्रों को सूचित करने योग्य नहीं हो जाता।

मैं ब्रिटिश जहाज की अपेक्षा इटालियन जहाज से जा रहा हूं क्योंकि इनके शिकंजे में नहीं आना चाहता। यदि बर्थ न मिल पाई तो बहुत मुश्किल होगी, किंतु मुझे आशा है कि जेनेवा से 27 तारीख को रवाना होने वाले इटालियन जहाज में मुझे बर्थ अवश्य मिल जाएगी । जब तक लॉयड ट्रीस्टोनो कंपनी से कोई उत्तर नहीं आता, इस विषय में आश्वस्त नही हो सकता, फलस्वरूप आपका कार्ड भरकर नहीं भिजवा सकता। श्रीमती हाग्रोव जानना चाहती है, कि मैं किस जहाज से रवाना होऊंगा। अभी उन्हें कुछ नहीं लिखा है, किंतु कुद दिन बाद अवश्य लिख दूंगा। इस बीच आप उन्हें कुछ न बताएं।

डा. वेटर व आपके विचार जो हाल ही के पत्रों में अभिव्यक्त हुए है मैं उनकी जितनी प्रशंसा करूं, कम है। विशेष रूप से अंतिम पत्र में कृपया इस पत्र को अपने मैत्रीपूर्ण पत्रों का उत्तर न समझें। कुछ ही दिन में एक लंबा पत्र अवश्य लिखूंगा।

आशा है माडर्न रिव्यू डा. वैटर का लेख मार्च अंक में अवश्य प्रकाशित करेगा। पत्रिका यदि जल्दी भी नहीं तो 25 मार्च तक विएना अवश्य पहुंच जानी चाहिए। मैंने उन्हें कह दिया है कि वे सीधे आपके पते पर पत्रिका भेज दें।

फ्रांस में एन्ड्रे गिडे, एन्उे मालरॉक्स तथा अन्य लेखकों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। बॉश का रवैया बहुत सानुभूतिपूर्ण था। ग्वेनेट भी सहृदय है किंतु अधिकारी अधिक

है। शेष अगले पत्र में।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस,

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
17.3.36

प्रिय सुनील,

26 जनवरी का तुम्हारा पत्र समय पर मिल गया था। क्योंकि मैं विभिन्न देशों की यात्रा पर था इसलिए जवाब नहीं दे पाया। फिर इतना विलंब हो गया कि मुझे लगा अब लिखने का कोई अर्थ नहीं है। बहरहाल मैंने पत्र लिखने का विचार बनाया।

तुम्हारी शादी का काम निबट चुका होगा। ऐसा अवसर जीवन में सिर्फ एक बार ही आता है और जिस पर भविष्य का भला–बुरा बहुत कुद निर्भर करता है। मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारी धर्मपत्नी सदा प्रसन्न रहे और तुम लोगों का जीवन देश और देशवासियों की सेवा में व्यतीत हो। व्यक्तिगत एवं पारिवारिक प्रसन्नता का अर्थ भी तभी है जब आपका व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन देश को समर्पित हो। अतः मेरी विशेष प्रार्थना यही है कि तुम्हारा जीवन देश तथा देशवासियों की भलाई में काम आए। इसी में तुम लोगों को भी प्रसन्नता मिलेगी।

पता नहीं दुबारा तुमसे कब मुलाकत होगी, इसलिए इतनी दूर से तुम्हें शुभकामनाएं भेज रहा हूं।

प्यार तथा शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस,

रोमियां रोलां से,

विलेनेव्यू (बॉड) विलाओल्गा
20 मार्च, 1936

प्रिय सुभाष चंद्र बोस,

अभी आपका पत्र मिला और तत्काल उत्तर दे रहा हूं। हम अपनी शुभकामनाएं दिए बिना आपको भेजना नहीं चाहते, ये शुभकामनाएं आपका कष्ट और संघर्ष में साथ देंगी। आप हमारी इस इच्छा, आशा और अपेक्षा को जानते ही हैं कि हम आपके देश को पूर्ण स्वंतत्र और समाजिक प्रगति से भरपूर राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं। इस

द्विपक्षीय वजह से संघर्ष करनेवाले व्यक्तियों के साथ हमारे विचार और शुभकामनाएं सदा रहेंगी। विलेनेव्यू के सभी मित्रों की शुभाकामनाएं।

आपका प्रेमी
रोमियां रोला

संतोष कुमार सेन को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
22.3.36
रविवार
प्रिय डा. सेन,

आपका पत्र मिला, बहुत कुछ बताना चाहता हूं। उनमें से कुछ विषयों पर पत्र में लिखूंगा बाकी बातें मिस शैंकल कके द्वारा प्रेषित करूंगा। आज दो–तीन व्यावहारिक चीजों के लिए तुम्हें परेशान करूंगा।

1. दो चैक भेज रहा हूं। एक चैक पाउंड का है। यह आपको उधार चुकाने के लिए है। बहुत–बहुत धन्यवाद।

2. दूसरा चैक 27–18–6 पाउंड का है।

कृपया इस चैक को कैश कराकर मेरी गाड़ी की टिकट खरीद लें। साथ में अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी के नाम रेल–टिकट के लिए पत्र भेज रहा हूं। टिकट खरीदने के बाद जो राशि बचे कृपया तत्काल मुझे भिजवा दें। यह राशि मनीआर्डर द्वारा या 'वर्ट ब्रिफ' द्वारा भिजवा दें।

इस टिकट पर मुझे आस्ट्रिया में 60 प्रतिशत और इटली में 50 प्रतिशत की छूट मिल जाएगी। यदि वे यह छून न दे तो कृपया टिकट न खरीदें। मैं यह टिकट हॉफगस्टीन से अगले स्टेशन रेस्बरों में खरीद लूंगा। और पूरी राशि मुझे भिजवा दें।

3. संभव हो तो सोमवार दोपहर तक टिकट और पैस भिजवा दें। 25 तारीख बुधवार मैं यहा से रवाना होने की योजना बना रहा हूं। कृपया इस विषय में किसी से बात न करें । यदि पैसा मनीआर्डर द्वारा भिजवा रहे हैं तो टिकट अलग से पंजीकृत डाक द्वारा भिजवाएं।

आज या कल अन्य विषयों पर अलग पत्र लिखूंगा। कृपया मेरे बारे मे किसी को कोई सूचना न दें। यदि मेरे बारे में कोई कुछ पूछे तो कह दें मैं कुछ नहीं जानता। सरकार ने मुझे बता दिया हे कि भारत लौटने पर मुझे अकेला छोड़ने वाले नहीं है।

सरकारी पत्र की प्रति संलग्न कर रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस,

पुनश्च :– यहां की पुलिस मुझ पर निगाह रखे है। वह जानना चाहती है मैं यहा से कब और कहां जाऊंगा। अतः कृपया टिकट के बारे में किसी को कुछ न बताएं।

सुभाष

रोमियां रोलां को,

25 मार्च, 1936
आदरणीय महोदय,

20 मार्च के अपने पत्र के लिए मेरा हार्दिक अभिनंदन स्वीकार करें और पत्र मैं प्रकट भावनाओं के प्रति धन्यवाद स्वीकारें। मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूं कि विलेन्यूव में आपसे दो बार मुलाकात संभव हुई और लंबी बातचीत का अवसर मिला। मेरे व मेरे देशवासियों के लिए यह हिम्मत बढ़ाने और प्रोत्साहित करने की बात है कि आपके विचार और शुभकामनाएं हमारे राष्ट्र व समाज की भलाई हेतु हमारे साथ हैं। भारत की प्राचीन संस्कृति की प्रशंसा तथा उसे विश्वभर में प्रसिद्धि दिलाने के आपके प्रयास का हम आदर करते हैं। उस से अधिक हम भारत के स्वाधीनता संघर्ष में आपके सहयोग की कद्र करते हैं। विलेन्यूव में अदभुत क्षणों की यादगार सदैव मेरे साथ रहेगी।

आपकी ओर से श्रीमती रोलां के इस विचार पर, कि मुझे फिलहाल भारत जाने का विचार स्थगित कर देना चाहिए, बहुत चिंतन किया। इस विषय में आपकी भावनाओं की कद्र करता हूं, किंतु परिस्थितियोंवश, जिनका उल्लेख मैंने भारतीय प्रेस को दी स्टेटमैंट में किया है, भारत लौटना मेरा कर्तव्य है, सरकारी धमकियों के बावजूद भी यह निश्चय ही दुखद स्थिति है कि किसी व्यक्ति के जीवन के बहुमूल्य क्षण जेल की चारदीवारी में बीतें। किंतु इन्हीं कारणों से लोग आजाद नहीं हो पाए और आजादी की कीमत तो चुकानी ही पडेंगी।

श्रीमती रोला और आपको आपकी कृपाओं वे सद्‌भावनों के लिए हार्दिक धन्यवाद

आपका अपना
सुभाष बोस

प्रों. लेस्नी को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, आस्ट्रिया

25 मार्च, 1936

प्रिय प्रोफेसर लेस्नी,

उस दिन आपका कृपापत्र पाकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। मेरे द्वारा इंडो–चेकोस्लोवाकिया सोसायटी की सेवाओं को बढ़ा–चढ़ा कर प्रशंसा कर आपने अपने विशाल हृदय का ही परिचय दिया है और इससे दोनों के मध्य वार्तालाप और आपसी समझ के द्वार ही खुले हैं। जो भी सेवा मैं कर पाया उसने मुऐ अत्याधिक सुख दिया है, क्योंकि यही मेरे जीवन का उद्देश्य भी है। आपको आश्वस्त करता हूं कि भविष्य में भी इसी प्रकार कार्य करता रहूंगा। री नांबियार ने आपको उन परिस्थियितों की सूचना दे दी होगी जिनका मुझे भारत लौटने के बाद सामना करना होगा। फिलहाल जो भी मेरे भाग्य में हो लेकिन मुझे विश्वास है कि अंततः मुझे स्वतंत्रता मिलेगी और मैं आप लोगों के हित में कार्य करने में सक्षम होऊंगा। आपके उपकारों के लिए आपका व श्रीमती लेस्नी का बहुत–बहुत धन्यवाद वे ढेरों शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस,

संतोष कुमार सेन को,

25.3.36
प्रिय डा. सेन,

इस संबंध में मैं कुद नहीं जानता। किंतु मेरा विचार है कि एसोसिएशन की ओर से इन सज्जन को पत्र लिखा जाना चाहिए। यदि संभव हो तो प्रयास करें कि लंदन स्थित कोई भारतीय मित्र इनसे मिलकर एशोसिएशन के दृष्टिकोण से इन्हें परिचित करा दें।

उन्हें यह भी स्पष्ट कर दें कि यदि अग्निहोत्री इसमें शामिल हुआ तो भारतीय इसका बहिष्कार करेंगे और उद्देश्य को हानि पहुंचेगी।

यदि बोर्ड का पता मिल जाए तो कृपया तत्काल एयरमेल द्वारा भारत को सूचित करें। यदि सूचना भारत में पहुंच गई तो उद्देश्य की पूर्ति हो जाएगी। अतः इस दिशा में आपको प्रयत्न करना चाहिए।

कल प्रातः रवाना हो रहा हूं अतः विएना जाना संभव नहीं हो पाएगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस,

(इस पत्र पर कोई पता नहीं लिखा था, किंतु विषयवस्तु से प्रतीत होता है

कि भारत के लिए रवाना होने से ठीक पहले यह पत्र बैगस्टीन से ही लिखा गया —संपादक)

डा. थीरफेल्डर को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
25 मार्च, 1936

प्रिय डा. थिरफेल्डर,

मेरा भारत लौटने का समय आ गया है, किंतु लौटने से पूर्व मैं स्पष्ट किंतु मैत्रीपूर्ण शब्दों में, कुछ कहना चाहता हूं।

जब मैं 1933 में पहली बार जर्मनी आया था तब मुझे आशा थी कि जर्मनी जो स्वयं राष्ट्रीय शक्ति और आत्म–सम्मान के प्रति जागरूक राष्ट्र है वह अन्य देशों के प्रति, जो कि संघर्षरत हैं, सहानुभूति रखेगा। किंतु खेद है कि आज मुझे इस विचार के साथ भारत लौटना पड़ रहा है कि जर्मनी के नए राष्ट्रवाद में संकीर्णता, स्वार्थ तथा घमंड के सिवाय और कुछ नहीं। म्यूनिख में हाल ही में हेर हिटलर के भाषण में नाजीवादी दर्शन के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। मुझे मालूम है कि ड्यूल्से नैकरिक्स्टनबुरो आशा है शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी। यूरोप छोड़ने से पूर्व मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि अभी भी मै। जर्मनी और भारत के मध्य समझौता कराने के प्रति कटिबद्ध हूं। जब हम अपनी स्वतंत्रता और अपने अधिकारों के लिए विश्व के सबसे बड़े राज्य से संघर्ष कर रहें हैं। और हमें सफलता की पूरी आशा भी है, तब भला हम अपने राष्ट्र, जाति व संस्कृति पर किसी अन्य राज्य द्वारा किए गए आक्रमण को कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं।

मैं एक आशावादी व्यक्ति हूं और अभी भी मुझे आशा है कि माहौल में परिवर्तन आएगा तथा अंततः हम लोगों में आपसी समझ पैदा होगी। फिलहाल मैं ड्यूल्से अकादमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा करता हूं। इस पत्र का उत्तर देने का कष्ट न करें क्योंकि कुछ दिन बाद ही मैं यात्रा पर निकल जाऊंगा और भारत पहुंचते ही मेरी गिरफ्तारी की पूरी आशंका है।

शुभकामनाओं सहित
मैं,
आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– ये विचार मेरे व्यक्तिगत विचार ही नहीं बल्कि भारतीय राष्ट्रवादियों के विचारों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी यदि आप यह पत्र किसी मित्र, किसी महकमे को प्रेषित करें। भारत का जर्मनी के प्रति रूख स्पष्ट करने की दृष्टि से।

सु.च. बो.

नाओमी सी. वैटर को,

विलाख स्टेशन
26.3.36
एन. सी. वैटर
विएना–IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट–41

प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं अब अपनी यात्रा में हूं और अगली गाड़ी के इंतजार में हूं। यह यात्रा बहुत थकाने वाली यात्रा है। गैस्टीन छोड़ना पड़ा दुखी हूं, वहां का मौसम बहुत सुहावना था और स्नान मुझे लाभ पहुंचा रहे थे। आशा है आप अब स्वस्थ होंगी। बहुत पहले से सरकार मेर पीछे लगी थी। कुछ घंटों बाद मैं उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर हो जाऊंगा। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें और डा. वैटर तक भी पहुंचा दें। आप से मिले अपनेपन व प्यार के लिए ह्रदय से आभारी हूं। अब धार्मिक यात्रा पर हूं अतः चिंता की कोई बात नहीं

सदैव आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस,

ई. वुड्स को,

लॉयड ट्रीस्टीनो
पिरस्काफो कान्टे वरडे,
30.3.36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

बैगस्टीन छोड़ने से पूर्व 22 तारीख को आपका पत्र मिला । जो कटिंग्स आपने भेजी, वे दिलचस्प थीं।

इस समय हम मध्य समुद्र में हैं। चारों ओर नीला समुद्र है और एकमात्र जहाज लहरों को काटती हवा और लहरों के मध्य चल रही है। जहाज में अधिकांश इटलीवासी हैं जो शायद एबीसीनिया जंगलों की यात्रा पर निकले हैं। कुछ भारतीय हैं, अंग्रेज कोई नहीं।

डब्लिन में बिताए दिनों को प्रायः याद करता हूं। वे दिन एक स्वप्न की भांति थे जो इतनी जल्दी बीत गए। मेरे प्रवास को इतना सुखद व दिलचस्प बनाने के लिए मैं आप सबका बहुत आभारी हूं। जो बात मुझे सबसे अच्छी लगी वह यह थी कि आपके पूरे परिवार में एक ही स्फूर्ति व आत्मा के दर्शन हुए जो प्रायः देखने को नहीं मिलता। आपके पुत्र व पुत्रियां भी बहुत सहृदय हैं।

आपने कहा था कि एंडा पत्र लिखेगा लेकिन उसने अभी तक नहीं लिखा। अब उसे पत्र नहीं लिखना चाहिए क्योंकि पत्र लिखने से वह भारत सरकार की कुदृष्टि का पात्र बनेगा। वैसे भी आयरलैंड से आनेवाले पत्र को भारतीय पुलिस पास नहीं करेगी।

मैंने दो बार मैंडम को पत्र लिखा, किंतु उनकी ओर से कोई उत्तर नहीं मिला। संभव है वे अस्वस्थ हों।

अलग से दो अखबार भिजवाने का भी शुक्रिया।

यदि 'एनल्स आफ एन एक्टिव लाइफ' की सेकेंड प्रति मिले तो कृपया मेरे भाई को निम्न पत पर भिजवा दें—श्री सरत बोस, 5, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। रजिस्टर—डाक द्वारा ही भेजें।

यदि कभी श्री एलेक्स लिन से भेंट हो तो उन्हें अवश्य बता दें कि उनके भाषणों व व्यंग्य क्षमता का मैं प्रशंसक हूं।

बैगस्टीन से आपको लिखा पत्र अब तक आपको मिल गया होगा जिसमें स्वदेश लौटने के अपने विचार के बारे में लिखा था और वहां मेरा जो स्वागत होगा उसका भी संकेत दिया था। स्वदेश लौटने का संदेश मैंने प्रेस में दे दिया है। यदि उस पर अवरोध न लगा तो सभी पत्रों में प्रकाशित हो जाता चाहिए। कृपया उसे अवश्य देखें। आशा है आपको अच्छा लगेगा।

मेरा विश्वास है यदि आप कुछ आलोचना भी जारी रखें तो उपयोगी कार्य कर सकती हैं। शायद हमें मिस एम. से अधिक अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिए। वैसे भी उनका मैडम पर अधिक प्रभाव नहीं है। बहरहाल! आपको अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिए, परिणाम उत्साहवर्द्धक ही होंगे।

फ्रेंच पत्रचार के लिए, जिसके बारे में मैंने बात की थी आपने या मिस एलीन ने उन दो महिलाओं को बता दिया होगा ताकि उन्हें आश्यर्च न हो।

आप भारत की यात्रा पर कब आ रही हैं? यदि स्वयं न आ पाएं तो परिवार के किसी सदस्य को अवश्य भेजें।

कल सईद बंदरगाह पहुंचूंगा वहीं से यह पत्र डाक में डालूंगा। 8 अप्रैल को हम बंबई में होंगे।

मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें और घर में सभी छोटों को प्यार, मेरी संरक्षक देवी सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस,

ई. वुड्स को,

कांटे वरदे
स्वेज कनाल
31.3.36

प्रिय श्रीमती ई. वुड्स,

कल लिखे लंबे पत्र के बावजूद आज फिर लिख रहा हूं, क्योंकि कुछ दिलचस्प बातें बताना चाहता हूं। आज प्रातः जब पोर्ट सईद पहुंचे तो पुलिस अधिकारी मेरी तलाश में जहाज में चढ़े। मेरा पासपोर्ट छीन लिया गया। जब तक जहाज चलने को हुआ तब उसे वहां से हटाया गया, और पासपोर्ट जहाज पर नियुक्त लेखाकर के हवाले कर दिया गया। ब्रिटिश, जो आज भी यहां शक्तिशाली स्थिति में हैं, यह नहीं चाहते कि मैं इजिप्ट में रूकूं और यहां के नेताओं से संपर्क साधूं। पिछली दफा मैं यहां के प्रमुख नेता नाहस पाशा से मिला था। महत्त्वपूर्ण घटना है न? मुझे नहीं मालूम था कि मैं इजिप्ट में भी एक खतरनाक व्यक्ति हूं।

यदि चाहें तो उपर्युक्त घटना का प्रचार करें। इससे आप अनुमान लगा सकती हैं कि बंबई में मेरा कैसा स्वागत होगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– अभी हम स्वेज कनाल से गुजर रहे हैं शाम तक स्वेज पहुंच जाएंगे जहां से यह पत्र डाक में डालूंगा।

सु.च. बो.

संतोष कुमार सेन को,

2.4.36
डा. एस. के. सेन,
एल्सर स्ट्रसे 20/15
विएना–IX आस्ट्रिया

प्रिय डा. सेन,

साथ में एक पत्र है जो विएना के पुलिस प्रेजीडेंट के नाम है। कृपया इस जर्मन भाषा में अनुवाद कराकर टाइप करा लें। टाइप अनुवाद के साथ यह पत्र पुलिस प्रेजीडेंट की एक्सप्रेस व रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें। प्रेषक के बारे में न लिखें, क्योंकि यह आवश्यक नहीं हैं। मुझे आशा नहीं कि वे इसा जवाब देंगे। यदि वे उत्तर दें तो जैसे मैंने अपनी सेक्रेटरी को आदेश दिए हैं वैसे ही डाक के साथ रख लें।

पोर्ट सईद में पुलिस के व्यवहार का आपको पता चल ही गया होगा कि वे मुझे वहां उतरने देना नहीं चाहते थे। मुझे नहीं पता था कि इजिप्ट में मुझमें उन्हें इतना खतरा है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि बंबई में पुलिस का व्यवहार कैसा होगा।

आज और कुछ लिखने को शेष नहीं है। अभी तो समुद्र बिल्कुल शांत था। कल हम मसावा पहुंचगे। वहीं से यह पत्र डाक में डालूंगा। आशा हैं शीघ्र ही यह पत्र आपको मिल जाएगा।

आशा है आप सभी स्वस्थ होंगे। पोर्ट सईद पहुंचने से पहले भी आपको पत्र लिखा था।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,
सेंसर द्वारा पास इलीजिबल
24.4.36
लेफ्टिनेट कर्नल, आई. एम. एस.
सुपरिंटेंडेंट
यरवदा सेंट्रल जेल

पता
द्वारा डी. आई. जी, आई. बी.
सी. आई. डी.
(बंगाल)
लार्ड सिन्हा राय
कलकत्ता
24.4.36

प्रिय श्रीमती वैटर,

भारत पहुंचने पर आपको पत्र लिखने का वायदा था, किंतु परिस्थितिवश

आपको पत्र नहीं लिख पाया। भारत भूमि पर पैर रखते ही गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ दिन बंबई जेल में रहा, फिर पूना स्थानांतरित कर दिया गया जो बंबई से ट्रेन द्वारा चार घंटे की दूरी पर है।

मैं नहीं जानता क्या लिखूं, क्योंकि सेंसर की तलवार मेरी गर्दन पर लटक रही है।

यहा की गर्मी थका देने वाली है। गर्मी मुझे वैसे भी नहीं सुहाती, देश के हिस्से की गर्मी वैसे भी भयानक है विशेषरूप से मेरे जैसे व्यक्ति के लिए क्योंकि मौसम में एकदम परिवर्तन आया है। एक महिने पहले मैं बैगस्टीन की बर्फ में घिरा था। काश हम आपको यहां की कुछ गर्मी देकर वहां की कुछ ठंड यहा ला पाते।

आपको यह जानकर अच्छा लगेगा कि मैं उसी जेल, उसी वार्ड में हूं। जहां महात्मा गांधी ने अपने बंदी जीवन का अधिकांश समय बिताया था।

वहां सभी मित्रों को मेरा नमस्कार कहें जिन्हें मैं अलग से पत्र नहीं भेज सकता, क्योंकि बहुत–सी पाबंदियां है। प्रेजीडेंट वैटर व आपको भी शुभकामनाएं। आशा है आप सभी स्वस्थ हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

यरवदा सेन्ट्रन जेन
पूना
24.4.36

श्रीमती एन. सी. वैटर
व्हीरिंगर स्ट्रीट–41
विएना–IX

पुनश्च :– यदि मुझे पत्र लिखें तो कलकत्ता के पते पर लिखें जहां पत्र सेंसद होते हैं। जेल के पते पर न लिखें

सु.च. बो.

(प्रस्ताव) कांग्रेस अध्यक्ष (राजेंद्र प्रसाद) को,

1 मई, 1936

मेरा ध्यान कांग्रेस अध्यक्ष, बाबू राजेन्द्र प्रसाद व श्री भूलाभाई देसाई के बयान

की ओर आकर्षित हुआ है। भारतीय प्रचार के संबंध में दो बातें आवश्यक हैं– 1. अधीकृत प्रतिनिधि और 2. आवश्यक राशि। यह कहना अनावश्यक है कि जितना अधिक पैसा होगा उतना अधिक प्रचार भी होगा। फिर भी यदि हम कार्य करना चाहें तो अधिक धन के बिना भी बहुत सा कार्य कर सकते हैं। सच्चाई यह है कि यूरोप और अमरीका में कई ऐसे भारतीय हैं जो उपयोगी प्रचार कर रहे हैं, कुछ व्यक्तिगत तौर पर कर रहे हैं, कुछ ऐसी संस्थाओं के नाम पर कर रहे हैं जो संस्थाएं बिना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वार दी गई सहायता के स्थापित की गई हैं। यदि उनमें से कुछ संस्थाओं को राष्ट्रीय कांग्रेस अपना ले और विदेश में उन्हें अपना प्रतिनिधित्व करने की अतुमति दे तो बिना अतिरिक्त राशि के भी वे बहुत कुछ उपयोगी कार्य कर सकती हैं।

स्वर्गीय बिट्ठलभाई पटेल सदा यही कहा करते थे कि यदि वे कांग्रेस के नाम पर बोलते तो विदेश में कुछ अधिक प्रभाव पड़ता। ऐसा ही अनुभव मेरे जैसे कुछ अन्य व्यक्तियों का भी है। यदि कांग्रेस की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक तंगी है तो क्या कांग्रेस मुझे (और मेरे जैसे कुछ अन्य लोगों को) कांग्रेस के नाम पर भाषण देने को प्राधिकृत करती है। इस दशा में बिना किसी आर्थिक सहायता के हम देश की बहुत सेवा कर सकते हैं और अपना अच्छा उदाहरण पेश कर सकते हैं। मैं कांग्रेस अध्यक्ष से सीधा प्रश्न पूछ रहा हूं और उनसे स्पष्ट उत्तर की आशा रखता हूं।

तुषार कांति घोष को,

18 मई 1936

प्रिय तुषार बाबू,

आप यह जानना चाहेंगे कि मैं कैसा हूं। पहली बात कि गर्मी से बहुत परेशान हूं और उसका कोई इलाज भी नजर नहीं आता। दूसरी बात व्यायाम की कमी है। सरकार से जेल के अंदर चारदीवारी में ही सैर की अनुमति मांगी है, उत्तर की प्रतीक्षा में हूं। डर है इस तरह बेकार रहने से मेरा स्वास्थ्य फिर बिगड़ आएगा। अतः आशा करता हूं कि सरकार इस बात की अनुमति दे देगी।

(शेष पत्र उपलब्ध नहीं था—संपादक)

जवाहरलाल नेहरू को,

द्वारा सुपरिटेंडेट ऑफ पुलिस
दार्जिलिंग
30 जून, 1936

प्रिय जवाहर,

22 तारीख का आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। वह पत्र मुझे 27 तारीख को

मिला। समाचार–पत्रों से पता चला कि आप आजकल अत्यधिक श्रम कर रहे हैं। इसलिए मुझे आपके स्वास्थ्य की चिंता हुई। जानकर अच्छा लगा कि आप कुछ दिन आराम करने की दृष्टि से मसूरी गए थे, बेशक कम समय के लिए ही सही। मैं समझ सकता हूं कि आप जैसे व्यक्ति के लिए अत्यधिक श्रम से बच पाना कितना कठिन है। फिर भी आशा करता हूं कि अधिक बोझ स्वयं पर नहीं डालेंगे। यदि आपका स्वास्थ्य खराब हो गया तो सभी को हानि होगी।

आपने अपने बहनोई रणजीत के बारे में लिखा है। वह चिंता का विषय है। यही सुखद बात है कि चिकित्सकों ने किसी गंभीर रोग का संकेत नहीं दिया है। आशा है आराम और परिवर्तन से उनको लाभ होगा।

मैं यहां ठीक–ठाक हूं। आंतों में कुछ गड़बड़ है और फ्लू का भी आक्रमण हुआ है (शायद गले की इंफैक्शन हो) धीरे धीरे ठीक हो जाएगा।

यदि आपके पुस्तकालय में निम्न पुस्तकों में कोई पुस्तक हो तो कृपया सुविधानुसार एक–एक कर मुझे भिजवा दें।

1. हिस्टॉरिकल ज्योग्राफी आफ यूरोप–गोर्डन ईस्ट
2. क्लैश आफ कल्वर्स एंड कांटैक्ट आफ रेशज–पिट रिवर्स
3. शार्ट हिस्ट्री ऑफ अंवर टाइम्स–जे ए. स्पेंडर
4. वर्ल्ड पालिटिक्स 1918–33–आर. पी. दत्त
5. साइंस एडं फ्यूचर–जे.बी.एस. हलडाने
6. अफ्रीका व्यू–हक्सले
7. चंगेज (गन्गेज) खान–राल्फ फाक्स
8. द डूयी आफ इंपायर–बार्नेस

इन पुस्तकों की जगह यदि हाल ही में कोई नई पुस्तक आई हो तो आप इस सूची में परिवर्तन कर सकते हैं। पत्रचार या पुस्तकें भेजने के लिए पता है–द्वारा सुपरिटेंडेंट ऑफ पोलीस, दार्जिलिंग।

आशा है आप स्वस्थ होंगे। प्यार सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष

पंडित जवाहरलाल नेहरू

सेंसर द्वारा पास
हस्ता/–
सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग

नाओमी सी. वैटर को,
सेंसर द्वारा पास
इलीजीबल
6–7
सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग

द्वारा द सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग
बंगाल, भारत
5 जुलाई, 1936

प्रिय श्रीमती वैटर,

पता नहीं आपको पिछले अप्रैल की 24 तारीख का यरवदा जेल पूना से लिखा पत्र मिला या नहीं। उसके बाद से मुझे उत्तरी बंगाल में दार्जिलिंग के निकट में स्थानांतरित कर दिया गया है। श्रीमती हारग्रोव ने लिखा है कि आप आज चेकोस्लोवाकिया में हैं, शायद इसी कारण आपकी ओर से कोई समाचार पाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। इस वर्ष अभी तक विएना का गर्मियों को मौसम सुधरा नहीं होंगा। चेकोस्लोवाकिया में मौसम कैसा है?

यह स्थान समुद्रतल से 1,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। हिमालय पर्वत श्रृंखला पर स्थित होने के कारण मौसम बहुत अच्छा है, हालांकि बरसात बहुत होती है। यहां के लोगों का कहना है यहां केवल दो मौसम –सर्दी और बरसात–ही होते हैं। मैं अपने भाई के घर में नजरबंद हूं। यद्यपि यहां भी बहुत से प्रतिबंध है लेकिन फिर भी जेल के जीवन की अपेक्षा अधिक आराम है।

आजकल हमारे समाचार–पत्रों में आस्ट्रिया के समाचार प्रायः छपते रहते हैं। हिमवर और क्लौरिकल पार्टियों के मध्य चल रही रस्साकशी बहुत रोचक हैं। कुछ पत्रों में समाचार था कि बसंत तक राजा हॉफवर्ग अथा स्कानवर्न पैलेस में लौट जाएगा। आप तो जानती ही हैं कि इन समाचार–पत्रों की भविष्यवाणियां कितनी विश्वसनीय होती हैं।

यहां से कुछ और लिखने को नहीं है, शायद आप वहां के कुछ रोचक समांचार दें। आपका और डा. वैटर का स्वास्थ्य कैसा है।

आप दोनों का सादर,

मैं,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष च. बोस

पुनश्च :– कृपया नया पता नोट कर लें।

सु. च. बोस
श्रीमती एन. सी. वैटर
विएना,

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को

सेंसद द्वारा पास
(अस्पष्ट)
सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग
द्वारा सुपरिटेंडेट आफ पुलिस
दार्जिलिंग
18.7.36

प्रिय मित्र

काफी दिन पहले तुम्हारा 12 जून का पत्र मिला था। पत्रोतर देने में विलंब हुआ क्षमा करें। पहले भी लंबे समय तक तुम्हें पत्र नहीं लिख सका था, तुम्हारी ओर से कभी देरी नहीं हुई, मेरी ही गलती थी। यहां बहुत आराम महसूस कर रहा हूं, विशेष रूप से पूना की गर्मी के बाद । पेट दर्द अभी जारी है और है और गले में इंफैक्शन हो गई है। आंतों के लिए एमीटीन के इंजैक्शन ले रहा हूं और गले के लिए आटोवैक्सीन लेने वाला हूं। देखते हैं कितना लाभ होता है।

प्रायः तुम्हें याद करता हूं। ईश्वर ही जानता है कि पुनः कब मिलना होगा। समय–समय पर तुम्हारे समाचार पाकर प्रसन्नता ही होगी। यदि समय पर उत्तर न दे पाऊं तो, कृपया क्षमा करें।

यहां आने के बाद आनंद बाजार के बारे में पूछताछ की। किंतु मुझे पता चला कि यहां कोई एजेंट आनंद बाजार पत्रिका नहीं लेता। प्रेम सहित!
आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

सुभाष चंद्र बोस
श्री सत्येंद्र एन. मजूमदार

किट्टी कुर्टी को,
सेंसेर द्वारा पास

सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग
द्वारा द सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग
भारत
25 जुलाई, 1936
प्रिय श्रीमती कुर्टी,

आपका कृपा पत्र मिला। 25 मई का आपका पत्र कुछ दिन पहले मिला था। पत्र का उत्तर देने में विलंब हुआ क्षमा चाहता हूं। भारत में मेरे साथ क्या व्यवहार हुआ इसकी सूचना आपको कैसे मिली। आप तो अंग्रेजी समाचार–पत्र पढ़ती नहीं और मैंने बंबई पहुंचने के बाद आपको पत्र लिखा नहीं। क्या बर्लिन के समाचार–पत्रों में कोई समाचार छपा था।

आपके पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप मनोविज्ञान पर अपने लेखों व कविताओं का सग्रह प्रकाशित करवा रही हैं। पता नहीं मैंने आपको बताया था या नहीं कि मैं मनोविज्ञान का छात्र था किंतु बाद में राजनीति में आने के कारण वह सब छोड़ना पड़ा। यहां लौटने के बाद से फिर मनोविज्ञान पर पुस्तकें पढ़ने का प्रयत्न करता रहता हूं। आजकल स्वप्नों पर फ्रॉयड की पुस्तक पढ़ रहा हूं और अपने स्वप्नों पर उसके सिद्धांत लागू करके देख रहा हूं। क्या आप किसी अन्य ऐसे लेखक के विषय में बताएंगी जिसने फ्रॉयड के बाद स्वप्नों के संदर्भ में उसके विश्लेषण के सिद्धांतों को आगे बढाया हो।। यदि ऐसा है तो कृपया मुझे पुस्तकों के नाम अवश्य लिखें और बताएं कि क्या अंग्रेजी में वे पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं? मेरे विचार से तो अंग्रेजी में मनोवैज्ञानिकों ने इस दिशा में कोई कार्य नहीं किया। संभव है जर्मन, फ्रेंच अथवा आस्ट्रियन मनोवैज्ञानिकों ने फ्रॉयड के स्वप्न विज्ञान को आगे बढ़ाया हो।

एक अन्य बात जो मैं जानने को उत्सुक हूं, किंतु आपसे पूछने में झिझकता हूं, क्योंकि यह व्यक्तिगत प्रश्न है। आपके मनोविज्ञान के अध्यापकों के नाम और आपने परीक्षा कहां से पास की जानना चाहता हूं।

इस प्रश्न को पूछने का मेरा एक उद्देश्य है। जिस विषय में, विशेष रूप से शिक्षा मनोविज्ञान, आपकी रूचि है। उसमें विश्व के बहुत से स्त्री–पुरूषों की भी रूचि होगी। यदि आप किसी विश्वविद्यालय के नियमित विद्यार्थी (मेरा ख्याल है आपने मनोविज्ञान की शिक्षा किसी विश्वविद्यालय के नियमित के रूप में नहीं ली) इस विषय में रूचि रखने वाले लोग, जो यूनिवर्सिटी में दाखिला नहीं ले सकते, वे आपके उदाहरण से लाभ उठाकर मनोविज्ञान विषय में पारंगत न हो जाएं।

डा. जुंग, जिन्हें आप जूरिख में मिली थीं, के विषय में आपकी राय जानना चाहूंगा। क्या पहले कभी उनसे मुलाकात हुई थी? क्या आप डा. जुंग की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक या ब्रोशर के बारे में बता सकती हैं जो मनाविश्लेषण विषय से संबद्ध हो। फ्रॉयड के दमन के विचारों और मनोविश्लेषण के विचारों को उन्होंने अपने विचारों में कितना विस्तार दिया है? पिछले दस वर्षों के उनके कार्यो से मैं पूर्णतः अनभिज्ञ हूं।

आर्थर एवलॉन की पुस्तकों से तो मैं परिचित हूं, किंतु हैनरिख जिमर की कोई चीज नहीं पढ़ी हैं। उनकी पुस्तकें कौन सी है और क्या उनका अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है? क्या एवलॉन की पुस्तकें आपने अंग्रेजी में पढ़ी हैं?

आपने सी. जे. जुंग की पुस्तक 'सोल प्रॉब्लम्स ऑफ द प्रैजेंट टाइम' तथा 'रियेलिटी आफ द सोल' का ज़िक्र किया है। क्या ज्यूरिख के मनोविश्लेषक और ये एक ही व्यक्ति हैं। ये पुस्तकें पूर्णतः मनोवैज्ञानिक समस्याओं से संबद्ध हैं अथवा दर्शन से संबद्ध हैं? श्री जुंग कौन हैं और क्या करते हैं? मैं पता करूंगा कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ये दो पुस्तकें उपलब्ध हैं अथवा नहीं।

क्या आपकी रूचि शिक्षा मनोविज्ञान के साथ–साथ शिक्षा पद्धतियों में भी है? यदि है, तो मैं स्विटजरलैंड के कुछ व्यक्तियों के पत आपको दूंगा जिनसे आप अवश्य मिलें, वे लोग शिक्षा की नई पद्धतियों पर कार्य कर रहे हैं।

क्या आपने पिछले वर्ष जर्मन भाषा में छपी श्विट्जर की पुस्तक 'इंडियन मिस्टीसिज्म एंड एथिक्स' पढी? आपको कैसी लगी?

क्या आपने प्रोफेसर हूवर का लिखा कुछ पढ़ा हैं? मेरे विचार से वे गोहिगन विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर हैं और ग्लूबेनसबरगुं से भी संबद्ध हैं। उनके विचारों में लोकहित बढ़ोत्तरी पर है अथवा गिरावट की ओर है?

लंबी चुप्पी के पश्चात काफी लंबा पत्र लिखा है। आशा है आप मेरा लेख पढ़ लेंगी। अनेकों प्रश्न पूछने के लिए कृपया क्षमा करें।

उम्मीद है ओलंपिक खेलों के कारण आप बर्लिन में बहुत व्यस्त रही होंगी।

श्री कुर्टी व आपको शुभकामनांए।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चं. बोस
श्रीमती किट्टी कुर्टी
बर्लिन

पुनश्चः– यदि मेरा वर्तमान पता आपके पास न हो तो मेरे स्थाई पते पर ही पत्र लिखें जो इस प्रकार है– 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता, वहां से डाक मुझ तक भिजवा दी जाएगी।

सु.चं.बोस

जार्ज डी. सिल्वा, उपाध्यक्ष, महाकोशल प्रोविंशियल कांग्रेस कमेटी को,

19 अगस्त, 1936

पिछले पत्र लिखने के बाद दार्जिलिंग के एक जीवाणु विज्ञानी ने मुझे एक रिपोर्ट और आटोवैक्सीन भेजे हैं जो उन्होंने थ्रोट स्वैव (गल की लार) से तैयार किए हैं। उन्होंने मुझे राय दी है कि मैं इसके आठ इंजैक्शन लगवाऊं। इसके अलावा उन्होंने कुछ अन्य दंडाणुओं की भी खोज की है जैसे–न्यूमो बैसिलिस, न्यूमोकोकस, स्ट्रैपोकोकस, माइक्रोकोकस, बैटरहेलिस, स्टैफिलोकोकस तथा कुछ डिप्थीरियाइड बैसिली आदि। इन महाशय ने मुझे यह भी बताया है कि इनमें से कुछ बैसिली एक सामान्य व्यक्ति में विद्यमान होते हैं, अंतः मुझे यह सोचना पड़ा कि ये एंफ्लूएंजा के लक्षण हैं जो गले की इंफैक्शन के कारण है। यदि यह सत्य है तो चिंता की कोई बात नहीं, वरना, मुझे फेफड़ों की जांच पर विचार करना पड़ता, क्योंकि शाम के समय हल्का–हल्का बुखार, हल्का कफ और वजन कम होना आदि उसी ओर संकेत करते हैं। किंतु अब मुझे कुछ आशा बंधी है।

फिलहाल मैंने एमेटीन के इंजैक्शन बंद कर के आटोवैक्सीन के कुछ अन्य इंजैक्शन लगवाने शुरू किए हैं। किंतु मुझे एमेटीन इंजैक्शनों का एक और कोर्स करना होगा, क्योंकि पहले कोर्स से मुझे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है। आंतों की परेशानी अभी भी जारी है।

कलकत्ता के एक मित्र को,

4 सितंबर, 1936,

मेरा स्वास्थ्य अभी भी वैसा है जैसा तब था जब तुमने मुझे देखा था। गले की बीमारी तो ठीक नहीं हुई है बावजूद इसके कि आटोवैक्सीन के इंजैक्शन लगवाए।

तुम्हारे बाद दार्जिलिंग का सिविलसर्जन मुझे देखने आया था। उसका कहना है कि गले की इंफैक्शन ही बीमारी की जड़ है अतः और आटोवैक्सीन तैयार करना होगा। पेट दर्द व लिवर के आस–पास के दर्द के बारे में उनका मानना है कि यह विएना में कराए गए आपरेशन के बाद पैदा हुआ प्रभाव है। उसने एमीटीन इंजैक्शनों का एक और कोर्स करने की राय दी है। किसी माह मैं यह इलाज कराऊंगा और यदि फिर भी प्रगति नहीं हुई तो गंभीरता से इस पर विचार करना होगा।

संतोष कुमार सेन को,
सेंसर द्वारा पास
हस्ता/–
सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग

सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस
दार्जिलिंग
5 सितंबर 1936

प्रिय डा. सेन,

मेरे एक मित्र श्री गिरिजा प्रसन्ना सान्याल के लिए आपको कष्ट दे रहा हूं। ये कलकत्ता हाईकोर्ट में वकील हैं और पुरानी व गंभीर...बीमारी (उनकी बीमारी की इससे ज्यादा व्याख्या में नहीं कर सकता) के इलाज के लिए विएना जा रहे हैं। ये मेरे बड़े भाई सरत के सहपाठी और मित्र हैं। उनका इरादा 'कान्टे वरडे' जहाज से आने का है जो 10 सितंबर को बंबई से रवाना होकर निश्चित स्थान (वेनिस या जेनेवा) पर 21 तारीख को पहुंचेगा। अगले दिन उन्हें विएना पहुंच जाना चाहिए। वे वहां कुछ भारतीय चिकित्सकों से राय लेना चाहते है कि इलाज हेतु किसे दिखाएं। इस विषय में कोई राय देने में मैं असमर्थ हू और विएना में अनुभवी मित्र नहीं हैं। उन्होंने प्रो. वॉन नूरडैन के बारे में सुन रखा है जो आहार विशेषज्ञ के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं, किंतु मुझे नहीं पता कि वे जोड़ों के विशेषज्ञ हैं या नहीं । आप आसानी से पता कर सकते हैं कि श्री सान्याल को किससे संपर्क करना चाहिए।

मैंने उन्हें आपके पुराने घर का पता अल्सर स्ट्रासे तथा द्वारा अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन, दोनों ही दे दिए हैं और उन्हें कह दिया है कि वे आपको विएना पहुंचने के समय की सही सूचना टेलिग्राम द्वारा या पत्र लिखकर सूचित करें। यदि उनका पत्र मिले तो ठिक है। वराना आप विएना स्थित लॉयड ट्रिस्टोनो के कार्यालय से पता कर सकते हैं कि विएना के लिए अगली गाड़ी कब रवाना होगी। आप उन्हें

स्टेशन पर मिल सकते हैं। मैंने उन्हें राय दी है कि यदि स्टेशन पर कोई नहीं मिलता तो वे होटल डी फ्रांस में रूक सकते हैं। उनके वहां पहुंचने पर आप भी वहां पहुंच सकते हैं। यदि कान्ट वरडे में सीट उपलब्ध नहीं हुइ तो वे अगले जहाज से रवाना होंगे।

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे। आशा है उन्हें पूर्ण सहयोग देंगे। सभी मित्रों को मेरा यथायोग्य प्रणाम।

आपका अपना
सुभाष चं. बोस
सेवा में
डा. एस. के. सेन
विएना।

जार्ज डा सिल्वा, उपाध्यक्ष, महाकोशल कांग्रेस कमेटी को,

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस
दार्जिलिंग
11 सितंबर, 1936

प्रिय डॉक्टर,

आपके दो पत्रों का उत्तर न दे पाने के लिए क्षमाप्रार्थी हूं। आपका 6 अगस्त का पत्र मुझे 11 अगस्त को और 16 अगस्त का पत्र 27 अगस्त को मिला।

पिछला पत्र लिखने के बाद मैंने ऑटोवेक्सीन का कोर्स पूरा कर लिया है। उनका कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ अतः और वैक्सीन तैयार करने होंगे। मुझे आशंका है कि क्या ये इंजैक्शन इंफैक्शन को जड से उखाड़ पाएंगे। 9 तारीख को सर नीलरत्न सरकार और दार्जिलिंग के सिविलसर्जन ने संयुक्त रूप से मेरा परीक्षण किया। उन्होंने सरकार को अपनी रिपोर्ट भेजी है, पता नहीं वे किस नतीजे पर पहुंचे हैं। 1जैसे ही मुझे पता चलेगा आपको सूचित करूंगा, एक चिकित्सक के रूप में आपकी भी उसमें रूचि होगी।

आपने मेरे वजन का रिकार्ड मांगा है। जो इस प्रकार है– (1) अप्रैल–15, यरवदा जेल–174 1/2 पाउंड (2) जून मध्य में, कुर्सियांग – 171 पाउंड (3) जुलाई के अंत में कुर्सियांग –168 पाउंड (4) 9 सितंबर कुर्सियांग–164 पाउंड। 1932 में जब से मुझे बीमारी ने घेरा, उससे पहले , मेरा सामान्य वजन, उस समय के वजन से जब मुझे 1921 में जनवरी माह में सियोनी जेल में डाला गया, कहां अधिक था। उस समय मेरा वजन 185 पाउंड था।

अन्य कष्ट जो मैंने अपने पिछले पत्र में लिखें थे वे अभी भी हैं जैसे

हल्का–हल्का बुखार, लिवर के आसपास मीठा–मीठा दर्द। इस दर्द का संबंध खान–पान से नहीं है और उस तेज दर्द से भी अलग है, जो गाल–ब्लैडर में होता था और गॉल–ब्लैडर निकाल देने के बाद से गायब है। मैं एमीटीन इंजैक्शन का कोर्स कर रहा हूं और मेरी बाहें सुइयां चुभने से बेहद दर्द कर रही हैं। मरीज का दुर्भाग्य है कि आप चिकित्सकों के हाथों यह कष्ट सहने के अलावा उसके पास दूसरा कोई रास्ता नहीं।

कुछ दिन मौसम बहुत साफ था किंतु अब फिर बरसात का, बेकार का मौसम शुरू हो गया है। आशा है इस वर्ष की मानसून की यह आखिरी झड़ी होगी। फिर भी कुछ कहा नहीं जा सकता। देश के इस भाग में सिंतबर तक भी बरसात हो सकती है। आशा है आप सभी वहां पूर्णतः स्वस्थ हैं। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चं. बोस
डा. जार्ज डा सिल्वा
जबलपुर

अमर कृष्ण घोष को,

30 सितंबर, 1936

प्रिय अमर बाबू,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप भारतीय रिजर्व बैंक का पुनः चुनाव लड़ रहे हैं। मुझे पुर्ण विश्वास है कि इस बार आप सफल हो जाएंगे। मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें। आप समझ ही सकते हैं कि जिन परिस्थितियों में घिरा हूं, उनमें आपके किसी काम नहीं आ सकता और फिर शायद आपके चुनाव कर्ताओं पर मेरा प्रभाव भी नहीं है। फिर भी आशा करता हूं कि पिछले चुनाव के आपके सहयोगी इस चुनाव में भी आपको सहयोग देंगे और आपको जिताने में सफल रहेंगे। एक बोर्ड के एक सदस्य के रूप में आप बहुत सा उपयोगी कार्य कर सकते हैं। मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

पिछले कुछ दिनों से मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आशा है आप सीाी स्वस्थ होंगे।

तुषार कांति घोष को,

8 नवंबर, 1936

प्रिय तुषार बाबू,

मुझे लग रहा था कि तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर मैंने दे दिया था और तुमने पत्र लिखना बंद कर दिया है, किंतु, तुम्हारी फाईल देखने पर पता चला कि मैं गलत था, बहुत पहले मिले तुम्हारे पत्र का उत्तर नहीं दिया था। किंतु अब मैं उस गलती में सुधार कर रहा हूं तुम्हें पत्र लिखकर।

दुर्गापूजा आई और चली गई और अब तुम पुनः अपने नीरस कार्य में व्यस्त हो गए होंगे। एक कैदी की कोई छुट्टी नहीं होती।

कृपया मेरी ओस से विजयादशमी का प्यार और शुभकामनाएं स्वीकार करो और घर में भी सभी को मेरी शुभकामनाएं देना। आप सब कैसे हैं?

अपने स्वास्थ्य के विषय में बताने को कुछ विशेष नहीं है सिवाय इसके कि वजन कुछ कम हुआ है। सियाटिका का दर्द पहले से ठीक है, अतः घूमन–फिरने लायक हूं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चं. बोस

सरत चंद्र बोस को,

द्वारा द सुपरिंटेंडेट ऑफ पुलिस
दार्जिलिंग
4.12.36
प्रिय मेजदादा,

आपका 27 नवंबर का पत्र मुझे 2 तारीख को मिला। बीच का जो पत्र आपको नहीं मिला वह दार्जिलिंग से समय पर भेजा गया था। होटल सिसिल, शिमला के पते पर भेजा था। शायद होटल वाले आपको देना भूल गए।

श्री कृपलानी ने भी ऐसा ही पत्र मुझे सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस, दार्जिलिंग के पते पर भेजा है। दिसंबर को वह पत्र मिला, तुरंत उत्तर दे दिया है और अपना नाम वापस ले लिया है ताकि निर्विरोध चुनाव संभव हो सके। आशा है उन्हें समय पर पत्र मिल जाएगा।

पिछली बार जब पत्र लिखा था तब से अब तक मौसम में कुछ परिवर्तन है। पिछले 7–8 दिन से प्रातः दो तीन घंटे धूप निकलती है। यह ही काफी है। पुनः सियाटिका दर्द नहीं हुआ है। सभी सावधानियां बरत रहा हूं। काफी सर्दी है किंतु यदि कुछ सूरज की गर्मी भी मिले तो बहुत अच्छा रहे।

उत्तरी कलकत्ता को कोई विकल्प खोजना पड़ेगा क्योंकि मैंने अपना निर्णय

नहीं बदला है। मुझे बंगाल असेंबली की सदस्य बनाना व्यर्थ है जबकि में राज्य–कैदी हूं।

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि श्रीमती फिलिप मिलर शीघ्र ही कलकत्ता आ रही हैं। यह बहुत अच्छा लगेगा कि वे मुझे मिलने यहां आएं, किंतु उन्हें यहां आने में बहुत कठिनाई होगी। अतः आपक उनका ध्यान रखें। यदि वे देश और भाषा को जानतीं तो बात और थी। यदि वे यहां आने को बहुत उत्सुक हों तो कृपया ध्यान रखें कि वे सप्ताहांत यहां पर व्यतीत कर पाएं। इस दशा में अमित और कोई एक लड़की उनके साथ होनी चाहिए। तभी वे यहां और दार्जिलिंग आने का लाभ ले पाएंगी। यदि यह विचार आपको ठीक लगे तो अमि व्यक्तिगत रूप में श्री ब्लेयर, अवर सचिव से मिलकर अनुमति ले सकता हैं। व्यक्तिगत रूप से मिलने से कार्य जल्दी और आसान हो जाएगा। इसके बिना मुझे आशंका है कि श्रीमती फिलिप को अत्यधिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा। सामान्यतः मुलाकात का समय एक घंटा होता है। शेष समय वे कुर्सियांग में क्या करेंगी। और अपना समय कैसे व्यतीत करेंगी। इस विषय में गंभीरता से विचार करें और श्रीमती फिलिप मिलर को भी समझाएं। आशा है आपके आतिथ्य में वे घर जैसा अनुभव करेंगी।

आशा है आप भी स्वस्थ होंगे। मेरा स्वास्थ्य पहले जैसा ही है कुछ पाउंड वजन और कम हुआ है।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष
एस.सी.बोस
कलकत्ता

यह पत्र गिद्धपहाड़, कुर्सियांग, जिला दार्जिलिंग के नजरबंद कैंप से लिखा था।
सीताराम सेक्सरिया को,

द्वारा डी.सी.एस.बीत्र, सी.आई.डी.
14, लार्ड सिन्हा रोड
कलकत्ता
26.12.26

प्रिय सीतारम जी,

आपका 15 तारीख का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई, उसकी विषय–वस्तु की प्रशंसा करता। हूं आप जैसे मित्रों के प्यार के कारण ही मैं अपनी मुसीबतों से उबर पाया हूं। आशंका है कि अभी बहुत देर है, जब मैं एक आजाद व्यक्ति के रूप में आपसे मिल पाऊंगा। जो भी मेरे रास्ते में बाधाएं आएंगी मुझे उनका धैर्यपूर्वक सामना करना होगा।

आप तो जानते ही हैं कि नजरबंद कैदी को किन परिस्थितियों में मुलाकात की अनुमति दी जाती है। उन परिस्थितियों में मुलाकात में न तो मित्रों की दिलचस्पी रहती है और न मेरी। आशा है आप मेरी इस बात से सहमत होंगे। फिर मुझे मुलाकात के लिए कष्ट क्यों उठा रहे हैं।

समाचार–पत्रों से आपको खबर मिल ही गई होगी कि आजकल कलकत्ता मेडिकल कालेज अस्पताल में मेरा इलाज चल रहा है।
सभी मित्रों व आपको प्रेमपूर्ण नकस्कार।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चं. बोस
सीताराम सेक्सरिया
कलकत्ता

किटी कुर्टी को,

कलकत्ता मेडिकल कालेज अस्पताल
5 जनवरी 1937
प्रिय श्रीमती कुर्टी,

कुछ दिन पहले आपका लंबा पत्र मिला, पत्र के उत्तर में हुए विलंब के लिए क्षमा चाहता हूं। आपने जो मनोविज्ञान की पुस्तकों की सूची भेजी वह भी मिली। इस बीच मुझे कलकत्ता अस्पताल में ले आया गया है, क्योंकि दार्जिलिंग के समीप जिस स्थान पर मुझे नजरबंद किया गया था वहां मेरा स्वास्थ्य, बिगड़ रहा था। दिसंबर मध्य से मैं यही ं पर हूं। नहीं जानता अभी कितने दिन और यहां रहूंगा, फिर भी अधिक दिन यहां रूकना नहीं होगा। इसलिए यदि आप मुझे पत्र लिखें तो कृपया मेरे घर के पते पर लिखें 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता, मैं उस समय जहां कहीं भी होऊंगा वे वहीं मुझे पत्र भिजवा देंगे।

जानकर हर्ष हुआ कि आप तातरा पर्वतों की यात्रा पर गई थीं। चित्रों से आभास हो रहा है कि वहां दृश्य बहुत मनोरम रहे होंगे।

यहां आने के बाद से कुछ स्वस्थ महसूस कर रहा हूं। चिकित्सक पूर्ण निरीक्षण कर रहे हैं, पता लगाने के लिए कि मुझे क्या कष्ट है। मुख्य कष्ट गला खराब होने का है अर्थात् सैंप्टिक टांसिल्स।

मनोवैज्ञानिक डा. जुंग से मिलने आप कब जा रही हैं। यदि जिनेवा जाएं तो डा. श्रीमती पी. गहीब को भी मिलने का प्रयत्न करें। वे ओडमवाल्ड जर्मनी में एक स्कूल चलाते थें। जर्मनी छोड़कर अब उन्होंने जिनेवा के निकट स्कूल का नियंत्रण अपने हाथ

में ले लिया है। उस स्कूल का नाम है–मोनीर इंस्टीट्यूट जो वेरसोइक्स में है। जहां जिनेवा से टैक्सी द्वारा आधे घंटे में पहुचा जा सकता है। आप श्रीमती गहीब व उनके स्कूल को देखकर प्रसन्न होंगी। मैं भी वहां उनसे मिला था और मुझे बहुत अच्छा लगा।

अपनी अस्वस्थता के कारण पिछले कई दिनों से कुछ विशेष अध्ययन नहीं कर पाया हूं। किंतु फ्रायड की पुस्तक इंटरप्रेटेशन आफ ड्रीम पढ़ रहा हूं और अपने स्वप्नों का विश्लेषण भी करने का प्रयास कर रहा हूं। क्या विएना में आप वृद्ध फ्रॉयड से मिली? यदि मिली तो आपको वे कैसे लगे और आपने उनसे क्या बातचीत की?

अब यहीं समाप्त करता हूं। श्री कुर्टी व आपको शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चं. बोस
श्रीमती किट्टी कुर्टी
बर्लिन

रवींद्रनाथ टैगोर को,

द्वारा डी.सी.एस.बी. (कलकत्ता)
14, लार्ड सिन्हा रोड
कलकत्ता
30.1.37

माननीय,

आपकी संचयिता पाकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आपने मुझे याद किया यह मेरे लिए अपार हर्ष का विषय है। आपके हाथों आशीवार्द पाकर स्वंय पर गर्व अनुभव कर रहा हूं।

आप जानते ही हैं कि आपके स्वास्थ्य के विषय में हम सभी लोग सदैव चिंतित रहते हैं। कृपया मेरा सादर, प्रणाम स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चंद्र बोस
मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता

नाओमी सी. वैटर को,

सेंसर द्वारा पास
इलीजिबल (अस्पष्ट)

4.2.37
कृते डी.सी.एस.बी.
मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
3 फरवरी, 1937

प्रिय श्रीमती वैटर,

2 जनवरी का आपका लंबा पत्र 28 तारीख को प्राप्त हुआ, प्रसन्नता हुई। पहले भी आपको लिखा था कि मुझे कलकत्ता लाया गया है। पिछले दिसंबर के मध्य से मैं यहा मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हूं। पता नहीं कब तक यहां रहूंगा। इसलिए यदि आप मुझे पत्र लिंखे तो कृपया मेरे घर के पते पर ही लिखें जो इस प्रकार है–1, वुडर्बन पार्क, कलकत्ता। वहां से मेरी डाक मुझ तक पहुंचा दी जाएगी। अभी कह नहीं सकता कि यहां से कब और कहां ले जाया जाऊंगा।

जब से यहां आया हूं लगातार उपचार और परीक्षण चल रहा है। गले और जिगर में कष्ट है, अतः उसका इलाज चल रहा है। आंखे भी कुछ कष्ट देने लगी हैं, कल जांच करवाने जाऊंगा। भारत लौटने के बाद से 10 किला वजन कम हुआ है। डाक्टरों की राय है कि फेफड़ो में कोई कष्ट नहीं है। अतः मैं स्वयं को समझाता हूं कि मैं दुबला हो रहा हूं जैसा कि यूरोप में फैशन है।

शेष ऐसा कुछ नहीं जिसमें आपकी दिलचस्पी हो। यहां मैं अपने रिश्तेदारों से मिल सका हूं, जो मुझे मिलने विशेषरूप से मेरी माताजी, दार्जिलिंग तक जा नहीं सकते। चूंकि मेरी माता चल–फिर सकने में असमर्थ हैं। इसलिए सरकार ने सप्ताह में दो बार उन्हें मिलने की मुझे अनुमति दी है। यद्यपि पुलिस संरक्षण में आता–जाता हूं।

आपकी पुरानी परेशानी व बीमारी को जानकर चिंता हुई। यह तो अच्छा है कि विएना में दस वर्ष अधिक ठंड नहीं पड़ी, और मुझे आशा है कि वसंत ऋतु प्रारंभ होते ही आप बेहतर अनुभव करने लगेंगी। आपके स्वास्थ्य के लिए मेरी शुभकामना स्वीकार करें।

इससे पहले कि भुल जाऊं, एक प्रश्न पूछ लूं? कुछ समय पूर्व भारतीय समाचार–पत्रों में समाचार छपा था कि कुछ माह पूर्व चांलसर स्कूसिंग ने मरिया जेल में चुपचाप विवाह कर लिया है। किसी समाचार एजेंसी की खबर नहीं थी इसलिए कह नहीं सकते कि वह कोरी गप ही थी या नहीं । आजकल यूरोप में लोगों के बारे में, उन लोगों के बारे में जो लोगों की नजर में महत्त्वपूर्ण हैं, के बारे में बहुत कुछ व्यर्थ

कहा और लिखा जा रहा है।

आस्ट्रिया में सेलानियों के आगमन से बढ़ी भीड़भाड़ से आस्ट्रिया रेलवे को तथा आस्ट्रियन सरकार को लाभ ही होगा। यह एक अच्छा शौक है, काश! ळमारे भारतवासियों में भी ऐसा शौक पैदा हो पाता।

मैं जानना चाहूंगा कि आजकल डा. वैटर कौन सी पुस्तक लिखने में व्यस्त हैं। कब तक प्रकाशित होने की आशा है।

विएना के संबंध में आपने जो बुकलेट भेजी है उसके लिए धन्यवाद! दरअसल मुझे दो बुकलेट प्राप्त हुई है—एक में केवल चित्र है और दूसरी में चित्र तथा कैलेंडर है। सेंसरवालों ने मुझे कवर नहीं भेजा इसलिए मैं यह नहीं समझ पाया हूं कि ये बुकलैट मुझे किसने भेजी है। मेरा विचार है कि पहली बुकलेट आपने भेजी है।

कृपया अपने स्वास्थ्य के अन्य समाचार भी दें। आशा है डा. वैटर पूर्ण स्वस्थ हैं, आपके पुत्र व दामाद भी स्वस्थ होंगे। सभी को यथायोग्य!

मैं,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष च. बोस
श्रीमती एन. सी. वैटर
विएना

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

सेंसर द्वारा पारित
हस्ताक्षर, अस्पष्ट
द्वारा डी. सी. एस. बी. (कलकत्ता)
14, लार्ड सिन्हा रोड
कलकत्ता
22.2.37

प्रिय सुनील,

कुछ समय पूर्व तुम्हारे तीन पत्र मिले थे, लिखने को कुछ विशेष नहीं था अतः उत्तर नहीं दिया। सब लोक कैसे हैं?

आशा है तुम शहर छोड़कर ग्रामीण बन चुके हो, यद्यपि पंचथुपी को गांव नहीं कह सकते । वहां स्वास्थ्य कैसा है? कलकत्ता में तो शायद चिकनपॉक्स आदि फैला था।

पिछले दो माह कलकत्ता मेडिकल कालेज अस्पताल में था। यहां आने के बाद से पेट दर्द में सुधार हुआ है और गले की दशा भी पहले से बेहतर है। अन्य लक्षण अभ विद्यमान है यानी वजन कम होना और बुखार रहना आदि। देखते हैं क्या होता है। पता नहीं कितने दिन और यहां रहूंगा।

शुभकामनाओं सहित,
तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
सुनील मोहन घोष मौलिक

पंचथुपी कुर्टी को,
किट्टी कुर्टी को,

कलकत्ता
17 मार्च, 1937

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

30 जनवरी का आपका पत्र 3 मार्च को मिला, पत्र व इलाज के संबंध में दिए गए सुझावों के लिए धन्यवाद! ज्यूरिख के बर्शर बैनर के बारे में मैंने भी सुना है। उनकी पद्धति यूरोपवासियों के लिए ठीक है जो लोग मांस व मदिरा का सेवन करने के आदी हैं, मेरे जैसे व्यक्तियों के लिए नहीं जो मीट कभी-कभार (प्रायः न के बराबर) खाते हैं और मदिरा पीते ही नहीं। फलों, सलाद आदि के विषय में आपके विचारों से मैं सहमत हूं। उसी प्रकार का भोजन ले भी रहा हूं। शेष बातों के लिए मुझे तब तक इंतजार करना होगा जब तक कि अपनी इच्छानुसार भोजन करने को स्वतंत्र नहीं हो जाता।

हां, ज्यूरिख में मेरे कुछ भले मित्र हैं। वे प्राकृतिक चिकित्सा तथा शाकाहारी भोजन में विश्वास करते हैं तथा जीवन के प्रति जिनकी निष्पक्ष दृष्टि है। बासराडॉर्फ में उनकी अपनी कालोनी है जो ज्यूरिख से ट्रेन यात्रा द्वारा 20 मिनट की दूरी पर है। कृपया श्री वर्नर जिम्मरमन से संपर्क करें और उन्हें मेरा नमस्कार दें। उनका पता भेज रहा हूं। आशा है वे अभी वहीं होंगे।

श्री वर्नर जिम्मरमन

विस्काफटरिंग गैनासनशैफट ज्यूरिख, पोस्टबैग 36

हाफटबहनोफ ज्यूरिख

(टेली-एफ 3521)

यदि आप ज्यूरिख जाएं और डा. जुंग से मिले तो उनके मनोविज्ञान पर किए

कार्य तथा उनके बारे में आपनी राय से मुझे भी अवगत कराएं। क्या रोलां की पुस्तक 'द एन्चान्टेड सोल' का अंग्रेजी अनुवाद हुआ है?

आजकल आप हस्तलेख विज्ञान पढ़ रही हैं तो मेरा विश्लेषण क्यों नहीं करती?

कृपया फ्रायड व उनके परिवार के संबंध में तथा अन्य व्यक्तियों, जिनसे आप मिले, के विषय में मुझे अवश्य लिखें

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अब आप चलने–फिरने लायक हो गई हैं। आप उत्तरी अमरीका क्यों नहीं जातीं, इससे यूरोपीय वातावरण से परिवर्तन भी होगा। आखिरकार नया विश्व पुराने (यूरोप) से पृथक है।

मैं समझ सकता हूं कि अब आप कस्बे के जीवन से ऊब चुकी हैं, विशेषरूप से बर्लिन जैसी जगह में। इसिलए कुछ सप्ताह ग्रामीण क्षेत्र में जाना सुखद होगा। जब तक यह पत्र बर्लिन पहुंचेगा, आप शायद स्विटजरलैंड में होंगी, किंतु मुझे आशा है कि यह पत्र आप तक वहां पहुंचा दिया जाएगा।

मैं अभी कलकत्ता अस्पताल में हूं, किंतु शीघ्र ही कहीं और स्थानांतरित कर दिया जाऊंगा–कह नहीं सकता कहां!

स्वास्थ्य पूर्ववत है। श्री कुर्टी को मेरा नमस्कार व शुभकामनाएं।

कविताओं के लिए धन्यवाद।

कृपया मुझे स्थाई पते पर पत्र लिखें–

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता।
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
श्रीमती किट्टी कुर्टी
बर्लिन,

नाओमी सी. वैटर
1. वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
5 अप्रैल, 1937

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके 17 और 22 मार्च के पत्र मझे एयरमेल से प्राप्त हुए। 17 मार्च को मेरी

अचानक रिहाई के बाद से लोगों ने मुझे घेर रखा है और मुझे पत्राचार करने का समय नहीं मिल पाया। इसलिए पहले पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा चाहता हूं। एयरमेल से कुछ पंक्तियां लिख रहा हूं ताकि आप जान पाएं कि आपके पत्र मुझे मिल गए और प्रायः मैं आपके विषय में सोचता रहता हूं।

आपके द्वारा श्रीमती अस्कनासी का समाचार पाकर आश्चर्य हुआ। यह जानकर हैरानी हुई कि यहूदी अब रूस को यहूदी विरोधी मान रहे हैं

आपके बधाई संदेश के लिए धन्यवाद। जिस दिन आपने लिखना प्रारंभ किया–17 मार्च–उसी दिन मुझे आजाद कर दिया गया। सप्ताह पूर्व मैंने अपनी आजादी से संबंधित समाचारों की कटिंग्स तथा कलकत्ता म्यूनिसिपल गजट भिजवाया था। क्या कलकत्ता म्यूनिसिपल गजट आपको आजकल मिल रहा है।

एक अन्य अंग्रेजी के भारतीय समाचार–पत्र की कटिंग भेज रहा हूं जिसमें चांसलर श्चूसिंग का समाचार छपा था।

चिकित्सकों ने मुझे केवल एक जनसभा में जाने की अनुमति दी है। कलकत्ता के लोग कल खुले स्थान पर मेरे सम्मान के आयोजन की तैयारियां जोर–शोर से कर रहे हैं। उसके पश्चात मैं कलकत्ता छोड़ दूंगा। सिविक रिसेप्शन (म्यूनिसिपल) को बत तक के लिए स्थगित कर दिया गया है जब तक मैं कुछ माह बाद पुनः कलकत्ता नहीं लौटता। हार्दिक शुभकामनाएं व सादर प्रणाम।

सदैव आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चं. बोस

पुनश्च :–इस सप्ताह की प्रेस कटिंग्स भेजूंगा। वैसे हर प्रकार स्वतंत्र हूं लेकिन मेरा पत्रचार अभी भी पुलिस द्वारा सेंसर जा रहा है।

सुभाष चंद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

लाहौर

9.5.37

प्रिय सीता,

आशा है उक्त संबोधन से नाराज नहीं होंगी। मुझे पता चला है कि आजकल आप बड़ी हस्ती बन गई हैं –पूर्ण डाक्टर, और कुछ अस्पताल आदि चला रही हैं। इससे मुझे घबराहट हो रही है।

खैर ! मैंने यह पत्र तुम्हें यह बताने के लिए लिखा है कि यहां सब तुम्हें बेहद

याद करते हैं। लीला के बारे में (साड़ी वाली लीला, फ्रॉक वाली नहीं) प्रायः समाचार मिलते रहते हैं, किंतु तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिलता। शायद इसी कमी को पूरा करने के लिए लीला सप्ताहांत हमारे साथ व्यतीत करने आई और हमें इस कृपा के लिए लोंगों का धन्यवाद करना चाहिए। अधिक की अपेक्षा हमें नहीं रखनी चाहिए क्योंकि लीला भी तुम्हारे चरणचिन्हों पर चल रही है और घर पर रहकर, खरीरदारी आदि करने के बजाय उसके पास करने को बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। जब तक मेरी संवेदनाए भी घर में रहने वाले लोगों के साथ हैं।

यहीं समाप्त करूंगा और तुम्हें ढेरों प्यार। शीघ्र ही हम पहाड़ों की यात्रा पर जाएंगे और तुम्हें धूप, गर्मी व धूल की दया पर छोड़ जाएंगे। यदि तुम वहां आओ तो तुम्हारा स्वागत है। यदि नहीं आ पाओगी तो तुम्हारी कमी खलेगी । शेष फिर।

तुम्हारा अपना
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– यहां लोगों में भ्रांति थी कि मुझे तुम्हारा और लीला का साडी पहनना पसंद है अथवा नहीं। इस संदर्भ में विचारों में मतभेत है। तुम क्या सोचती हो। डॉक्टर साड़ी या फ्रॉक किसके पक्ष में है।

डा. सुश्री सीता धर्मवीर

लखनऊ

ई. वुड्स को,

लाहौर

11.5.37

प्रिय श्रीमती वुड्स,

कुछ अपरिहार्य कारणों से भारत लौटने के बाद आपको पत्र नहीं लिख पाया। मेरे समाचार पाने की आपकी उत्सुकता से मन को भला लगा। दो माह तक जेल में रहा और उसके बाद दार्जिलिंग के पास पहाड़ी स्थान में अपने भाई के घर मुझे नजरबंद रखा गया। पिछले दिसंबर में मुझे कलकत्ता अस्पताल में उपचार के लिए लाया गया। तीन माह बाद 17 मार्च को मुझे रिहा कर दिया गया। उसके बाद कई सप्ताह कलकत्ता में रहा और अब उत्तर–पश्चिम में पर्वतों की यात्रा पर जा रहा हूं। मेरा स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं है और इसे सुधरने में कुछ माह लगेंगे। अगले कुछ माह लगेंगे। अगले कुछ सप्ताह तक मेरा पता होगा–

द्वारा डा. एन. आर धर्मवीर

डलहौजी
पंजाब, भारत

पिछले वर्ष कुछ सप्ताह तक मुझे कुछ आयरिश समाचार–पत्र प्राप्त होते रहे। सेंसर द्वारा पास किए जाते थे। फिर अचानक मिलने बंद हो गए। आपकी पुत्री एलीन और डा. डे के विवाह की सूचना मिली। यद्यपि बहुत देर हो चुकी फिर भी मैं वर–वधु को बधाई देना चाहूंगा और उनके सुख–समृद्धि से भरपूर पारिवारिक जीवन की कामना करता हूं। आशा है श्रीमती डे आजकल अपने पति के साथ इंग्लैंड में होंगी।

मैंने अपने सभी समाचार दे दिए हैंअब आपकी बारी है। भारत के विषय में अन्य कुछ लिखने को शेष नहीं है, भारतीय समाचार–पत्रों में पढ़ती ही होंगी, आशा है पत्र आपको मिल रहे होंगे। पिछले चुनाव में कांग्रेस पार्टी की शक्ति का आभास मिला। संविधान की तोड़ो और राज्य करो नीति के बावजूद कांग्रेस पार्टी को 11 में से 6 राज्यों में पूर्ण बहुत प्राप्त हुआ और शेष राज्यों में वह शक्तिशाली विपक्ष के रूप में प्रकट हुआ है। पूर्ण बहुमत प्राप्त राज्यों में भी पार्टी ने सरकार बनाने से मना कर दिया है और शर्त रखी है कि जब तक उसके मंत्रियों को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान नहीं की जाएगी वे सरकार का गठन नहीं करेंगे। ऐसा आश्वासन अभी प्राप्त नहीं हुआ है। संविधान का संघ का हिस्सा अभी लागू नहीं किया गया है केवल राज्यों का भाग लागू हो गया है।

लीग के क्या समाचार हैं? कृपया कुछ आयरिश समाचार–पत्रों, जो आपक समझती हों उपयोगी होंगे, की प्रति भिजवाएं और नया आयरिश संविधान भिजवाने का भी प्रयास करें।

सभी मित्रों को मेरा नमस्कार व स्नेह,

आपका शुभकांक्षी
सुभाष चं. बोस

वी. लेस्नी को,

द्वारा डा. एन. आर. धर्मवीर
डलहौजी, पंजाब
20 मई 1937

.प्रिय प्रोफेसर

दो महीने पूर्व मेरी अचानक रिहाई के बाद से ही मैं आपको पत्र लिखने की सोच रहा था, किंतु पूरे समय अत्यधिक व्यस्त रहा । रिहा होने के बाद कलकत्ता में श्री मजूमदार से भेंट हुई थी, आपकी नमस्ते उन तक पहुंचा दी थी।

· आजकल मैं उत्तर–पश्चिम में समुद्र तल से 6700 फीट (2000 मीटर) की

ऊंचाई पर पर्वतीय स्थल पर हूं। कुछ दिन यही रहने का विचार है, सामान्य क्रिया–कलापों को शुरू करने से पूर्व पहले की तरह स्वस्थ होना चाहता हूं।

यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आप यूनिवर्सिटी के दर्शन विभाग के डीन चुने गए हैं। इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

श्रीमती लेस्नी व आपको शुभकामनाएं। इधर को ओर कब आ रहे हैं? आशा है आप पूर्ण स्वस्थ हैं। कृपया संलग्न पत्र श्री नांबियार तक पहुंचा दें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
प्रो. डा. लेस्नी
प्राहा

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
22.5.37

प्रिय सीता

तुम्हारा पत्र पाकर प्रसंन्नता हुई विशेष रूप से तुमने मुझे जो संबोधन किया। मैं दीदी से विचार–विमर्श कर रहा था कि क्या 'मामा' जो अस्पष्ट था–बंगाली भाषा है या पंजाबी भाषा है? अतः निर्णय नहीं हो पाया। शायद तुम–अस्पष्ट –कुछ रोशनी डाल सको।

शायद तुम्हें सैंडी की वास्तविक कहानी का पता नहीं। दीदी को वह टोकरी उठाए चलते देखने में बहुत आनंद आ रहा था जिसमें से बार–बार बिल्ली सिर उचकाकर झांकती थी। शिष्टतावश मैंने टोकरी उठाने का आग्रह तो किया, किंतु वह संभव नहीं था, क्योंकि दीदी स्वयं ही अपनी पालतू बिल्ली को बड़ी कठिनता से संभाल पा रहीं थीं। एक महिला बोझ उठाए चले और मैं साथ–साथ खाली हाथ चलूं, यह प्रदर्शन करने की अपेक्षा मैंने दीदी को लिला के संरक्षण में छोड़ अपने डिब्बे में जाना बेहतर समझा। उस समय लग रहा था कि एक बार सुरक्षित डिब्बे में पहुंचने के पश्चात सभी तकलीफों का अंत हो जाएगा। यह नहीं पता था कि मुश्किलें तो अब शुरू होंगी। जैसे ही गाड़ी चली, उसके शोर से बिल्ली बुरी तरह घबरा गई और उछलने लगी। यदि उसे अकेला छोड़ दिया होता तो वह निश्चित रूप से डिब्बे के बाहर कूद जाती। किंतु ऐसा नहीं था (पता नहीं उस समय मैं दुखी होता या नहीं) हमें तो कोई कठिनाई नहीं हुई मुझे और डाक्टर को, क्योंकि हम तो खूब डटकर सोए। किंतु दीदी को सारी रात बिल्ली को पकड़े रहना पड़ा। जब किसी स्टेशन पर गाड़ी रूकती तो बिल्ली शांत

होती। पठानकोट पहुंचने तक बिल्ली ने उनकी साड़ी व बदन पर अपने कई निशान छोड़ दिए थे। उनकी साड़ी का तो पता नहीं, किंतु उनकी बाहों पर खरोंचों के निशान मिले जो हमने यहां पहुंच कर देखे, किंतु हम कुछ भी करने में असमर्थ थे। बहरहाल इस किस्से को यही रोकता हूं और कुछ अन्य बातों पर आता हूं।

आशा है तुम पूर्णरूप से सुरक्षित हो जैसा कि तुमने संकेत भी किया है। प्रसिद्ध हस्ती होने के कारण, अन्य लोगों को ही आकलन करना चाहिए।

मुझे डलहौजी बहुत पसंद आया और इससे मुझे लाभ भी होगा। पहले से बेहतर महसूस करने लगा हूं।

दिलीप के जो चित्र तुम्हें भेजे वे पांडिचेरी में खींचे थे।

तुम्हें आवश्यकता नहीं........अस्पताल चलाने की।

अस्पतालों में लंबे समय तक रहने के कारण यह समझ चुका हूं कि हाउस सर्जन अथवा हाउस फिजिशियन ही अस्पताल का कार्य संभालते हैं।

आज यहीं समाप्त करता हूं क्योंकि डाकिया बाहर डाक लिए इंतजार कर रहा है, वह लेने ज रहा हूं। प्रेम सहित!

तुम्हार अपना
सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

द्वारा डा. एन. आर. धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
27.5.37

प्रिय श्रीमती वैटर,

मेरी धृष्टता है कि मैंने बहुत दिन से आपको लंबा पत्र नहीं लिखा जबकि आप मुझे बार लिख चुकी हैं। सच्चाई यह है कि रिहाई के बाद से मैं मित्रों को मिलने मैं अत्यधिक व्यस्त रहा । बहुत से पत्रों का ढेर लग गया है औ कभी–कभी जल्दबाजी में कुछ मित्रों को कुछ पंक्तियां लिख देता हूं। शीघ्र ही सब व्यवस्थित होने की आशा है, तभी पत्रों का उत्तर ठीक प्रकार दें पाऊंगा।

जैसा कि आप जानती ही हैं कि 17 मार्च को मैं रिहा हो गया था। यूरोप में किसी मित्र को केबल से सूचना नहीं दी, क्योंकि समाचार एजेंसी विदेशी समाचार–पत्रों को खबर देगी और एन. अच्छा मित्र होने के नाते विएना के सभी मित्रों को सूचित कर

देगा। उन्होंने यही किया और आपको समाचार की विश्वसनीयता पर शक करने की आवश्यकता नहीं। कलकत्ता म्यूनिसिपल गजट द्वारा यह समाचार आपको एक माह बाद मिल पाता।

कलकत्ता में एक माह से अधिक रहा, एक तो आराम करने की दृष्टि से और दूसरे अपने रिश्तेदारों व मित्रों के संपर्क में रहने की दृष्टि से। फिर अप्रैल के मध्य में इलाहाबाद के लिए रवाना हुआ जहां महात्मा गांधी से मिला और पार्टी की बैठक में भाग लिया। कुछ दिन बाद लाहौर (उत्तर–पश्चिम) चला गया, जहां लगभाग 10 दिन रहा। फिर 12 मई को यहां पहुंचा हूं। डलहौजी लाहौर के उत्तर में, हिमालय पर्वत श्रृंखला पर, 2000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहां कुछ दिन मित्रों के साथ रहना चाहता हूं जब तक पूर्णतः ठीक नहीं हो जाता।

17 मार्च के पत्र में आपने जो लिखा, पढ़कर अच्छा लगा, विशेष रूप से आपको आशा थी कि मैं शीघ्र ही रिहा कर दिया जाऊंगा। जब आप यह पत्र लिख रही थीं तब आपको मालूम भी नहीं था कि ठीक उसी दिन मैं रिहा हो जाऊंगा। मेरी रिहाई अप्रत्यशित थी, क्योंकि मैं और मेरे लोग रिहाई की आशा से थक चुके थे। किंतु मैंने अपनी माताजी को बता दिया था कि या तो मार्च में रिहा हो जाऊंगा वरना फिर कम से कम छः माह और लगेंगे।

इससे पहले कि मैं भूल जाऊं, आपको बता दूं कि डा. बी. सी. रॉय, जो मेरे मित्र भी हैं और कलकत्ता के भूतपूर्व मेयर रह चुके हैं, कलकत्ता के सुप्रसिद्ध चिकित्सक हैं, जून (अगले माह) में किसी समय विएना आने वाले हैं। मैं उन्हें आपके बारे में तथा डा. वैटर के बारे में बताना भूल गया। किंतु मैं चाहता हूं कि वे आपसे अवश्य मिलें, बशर्ते कि आप उन दिनों शहर से बाहर न हों। क्या आप उन्हें गैरोला, होटल डी फ्रांस। मैं चाहता हूं कि डा. रॉय विएना की वास्तविकता को देखें और इसके लिए सही लोगों के संपर्क में आना आवश्यक है। संदेह है कि यहूदी डाक्टर उनको गुमराह न करें, क्योंकि उन्हें पहले सचेत नहीं कर पाया।

श्रीमती अस्कांसी के समाचार पाने को उत्सुक हूं। क्या वे वाकई राज्य जाने की इच्छुक हैं। तब उनके पति के व्यापार का क्या होगा? उनके क्लब का क्या होगा? क्या उनकी अनुपस्थिति में भी वह चल रहा है? यदि वे विएना पहुंच चुकी हैं तो आपको बहुत–सी दिलचस्प बातें सुनने को मिलेंगीं

हाल ही में मैंने ब्रीफाल्ट का यूरोप का अमरीकी (या शायद अंग्रेजी) संस्करण पढ़ा है। मुझे बहुत पसंद आया। अब समझ में आया कि डा. वैटर क्यों उसका अनुवाद कर रहे थे। कुछ पैसेज को, प्राचीन काल की भांति विवादास्पद मानकर रेखांकित किया

आ सकता है, किंतु मेरे विचार में समय और रूचि में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। कुछ दिन पूर्व एल्डास हक्सले का उपन्यास 'आईलेस इन गाजा' भी पढ़ा। उसमें भी कुछ विवादास्पद पैरे हैं, किंतु इंग्लैंड में उसकी अप्रत्याशित बिक्री को देखकर लगता है कि अंग्रेज समाज भी अब उतना रूढ़िवादी और लज्जाशित नहीं रहा है जितना पहले था।

पिछले कई दिन से श्रीमती हार्ग्रोव का कोई समाचार नहीं मिला है, मेरे विचार से अंतिम पत्र मेरी ओर से ही लिखा गया था। क्या आप उन्हें मेरी याद दिला देंगी और उनके स्वास्थ की सूचना मुझे देंगी। शायद वे ध्यानयोग में लीन रहती हैं।

सी.एम.जी. को लिखा आपका पत्र मुख्य रूप से छापा गया, आपने देख ही लिया होगा। जब भी आपके पास समय हो, आप किसी भी विषय पर जो म्यूनिसिपल या लोकहित में हो, लेख लिखकर समाचार–पत्रों को भेज सकता हैं। वे उसे प्रसन्नतापूर्वक छापेंगें।

मेरी रिहाई के बाद भी मेरा स्वास्थ्य बहुत संतोषजनक नहीं है, किंतु आशा है शीघ्र ही प्रगति होगी। पर्वतों के मध्य यह एक शांत और सुदंर स्थान है। मकान के आंगन से दूर–दूर फैले समतल स्थान व नदियां दिखाई देती हैं। दूसरी ओर पर्वत श्रृंखला, जगह–जगह बर्फ से आच्छादित दिखाई देती है। यद्यपि यहां मुझ पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं हैं। फिर भी मेरी गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है और मेरी डाक भी चुपचाप खोलकर देखी जा रही है। जब उन्हें कहता हूं तो वे माना कर देते हैं, किंतु हम सभी इसे जानते हैं। प्रायः निरीक्षण के पश्चात सभी चीजें मुझे सौंप दी जाती है।

जब भी आप अंग्रेजी में भारतीय समाचार–पत्रों में कुछ प्रकाशित करवाना चाहें, मुझे बताएं, मैं पूरी व्यवस्था कर दूंगा।

यह पत्र एसरमेल द्वारा प्रेषित करना चाहता हूं ताकि पत्र का उत्तर देने में हुए विलंब की प्रतिपूर्ति कर सकूं। अलग से लाहौर से प्रकाशित समाचार–पत्र की कटिंग भेज रहा हूं तथा दो चित्र जो 12 मई को डलहौजी पहुंचने के पश्चात खींचे गए हैं। पता नहीं आप मुझे बंगाली वेशभूषा में पहचान पाएंगी अथवा नहीं। पहले की अपेक्षा कुछ दुबला भी हो गया हूं।

पत्र समाप्त करने से पूर्व आपकी भावनाओं का, जो पत्रों का उत्तर देने में हुए विलंब की प्रतिपूर्ति कर सकूं। अलग से लाहौर से प्रकाशित समाचार–पत्र की कटिंग भेज रहा हूं तथा दो चित्र जो 12 मई को डलहौजी पहुंचने के पश्चात खींचे गए हैं। पता नहीं आप मुझे बंगाली वेशभूषा में पहचान पाएंगी अथवा नहीं। पहले की अपेक्षा कुछ दुबला भी हो गया हूं।

पत्र समाप्त करने से पूर्व आपकी भावनाओं का, जो पत्रों में व्यक्त हुई हैं, धन्यवाद करना चाहता हूं। धन्यवाद करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मेरा धन्यवाद स्वीकार करें और डा. वैटर को शुभकामनाएं दें।

आप आजकल अपना समय कैसे व्यतीत करती हैं? क्या आपको कोई और भारतीय साप्ताहिक अखबार या पत्रिका भिजवाऊं?

सदैव आपका शुभाकांक्षी
सुभा चंद्र बोस

संतोष कुमार सेन को

डलहोजी, पंजाब
31.5.37

प्रिय डा. सेन,

तीन–चार दिन पूर्व आपका 18 अप्रैल का पत्र मिला। 12 तारीख को मैं यहां पहुंचा हू अैर कुछ माह यहीं रहना चाहता हूं। देखते हैं यहा स्वास्थ्य कैसा रहता है। प्रारंभ में यहां पहुंचकर बहुत अच्छा लगा, कुछ समय बाद गले की परेशानी उभर आई और वापिस लौटने की इच्छा होने लगी। मेरी रिहाई से पूर्व धर्मवीर मुझे यहां आने का आमंत्रण दे रहे थे, फिर अचानक रिहाई के पश्चात तो इन्होंने बहुत बल दिया। सब सोच–विचार कर मैंने आमंत्रण स्वीकार किय। वे मेरी पूरी देखभाल कर रहे हैं। इनसे मेरा पुराना परिचय है, तथा श्रीमती धर्मवीर को मैं अपनी बहन मानता हूं।

मेरे स्वास्थ्य की दृष्टि से यूरोप यात्रा ठीक रहती। किंतु कई कारणों से वह संभव नहीं । पहली बात विदेश जाना बहुत खर्चीला है, दूसरे, घर से इतने दिन दूर रहा हू कि स्वतंत्र व्यक्ति के तौर पर अपनी इच्छा से अपने देश व लोगों से दूर नहीं जाना चाहता। देश में रहकर सबसे संपर्क बनाए रखना सरल है। बैगस्टीन में स्नान के दो उपचारों से मुझे बहुत लाभ पहुंचा था, अतः मुझे विश्वास है कि यदि मैं लगातार एक माह वह उपचार और करवा पता तो मेरा स्वास्थ्य अवश्य सुधर गया होता। पहले मै। सोचता था कि स्नानोपचार महज प्रचार मात्र है, किंतु बैगस्टीन में स्वयं उपचार कराने के उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि वे बहुत लाभदायक हूं। रेडियोएक्टिव स्नान करने पर ऐसा अनुभव होता है जैसे कोई 'टॉनिक' ले रहा है। खैर, इस विषय में कुछ भी सोचने का कोई लाभ नहीं।

विएना समाज की उन्नति की कोई बड़ी आशा नहीं है। गैरोला समाज को अपने नियंत्रण में रखेगा। जहां भले लोगों का स्थाई अस्तित्व नही वहां नया कुछ संभव नहीं है।

आपके शोधग्रंथ की सूचना से बहुत प्रसन्नता हुई । आप भारत के प्रसिद्ध फिजीसियन के पास उसे भेज सकते हैं (दो प्रतियां पत्रिकाओं के लिए) विशेषरूप से उन क्षेत्रों में जहां आप प्रैक्टिस करना चाहते हैं।

मैनचेस्टर गार्जियन को लिखा पत्र मिला। यदि समय–समय पर आप ऐसे लेख या क्लिपिंग्स भेज सकें तो प्रसन्नता होगी।

विएना में और सब कैसा है? कुमारी शैंकल से समय–समय पर समाचार मिलते रहते हैं। 'मास्टर' का कुछ अता–पता नहीं शायद वह बर्लिन में हों। गैरोला प्रायः पत्र लिखते रहते हैं और श्रीमती मूलर हाल ही में भारत आई थीं। विशेष आज्ञा प्राप्त कर वे मुझसे कलकत्ता अस्पताल मिलने आई। श्रीमती वैटर ने मुझे पिछले सप्ताह लिखा था कि आजकल यहूदियों में बहुत बेचैनी है। विएना में रह रहे हमारे कुछ यदूदी मित्र अमेरिका जाना चाहरहे हैं। सुश्री विस का क्या इरादा है? उन्होंने पैलेस्टीन जाने के विषय में मेरी राय जाननी चाही थी। उसके बाद से वहां कौन सी विध्वंसक घटनाएं घटीं। मेरे विचार से वर्तमान समय में और निकट भविष्य में भी, मध्य यूरोप में , यहूदियों की स्थिति बहुत अच्छी रहने वाली नहीं है।

आजकल आप इंग्लैंड में हैं अतः उपाधि लेने से पूर्व लौटने का विचार न करें। व्यक्तिगत रूप से मैं उपाधि के पीछे भागने के खिलाफ रहा हूं। किंतु क्योंकि आपका दिल्ली में रहने का विचार है और आजकल इंग्लैंड में है इसलिए आपको एडनबर्ग या लंदन से डिग्री की आवश्यकता है ही । यह बात अपना स्थान बनाने की दृष्टि से है, क्योंकि दुनिया में बहुत से दुकानदार हैं। मुझे आशा है भविष्य में विशेषज्ञों के लिए सुअवसर पैदा होंगे।

क्या दिल्ली के आधू बाबू (रासबिहरी सेन) आपके रिश्तेदार हैं?

कल श्रीमती धर्मवीर बता रही थीं कि इंग्लैंड में आपको किसी भारतीय चिकित्सक के स्थान पर तीन–चार माह प्रैक्टिस करने का आमंत्रण मिला है। प्रस्ताव तो अच्छा है, किंतु वहां की प्रैक्टिस का भारत में कोई विशेष महत्व नहीं है। हां आर्थिक दृष्टि से यह उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किंतु यदि पैसे की अधिक आवश्यकता नहीं हो तो अधिक ज्ञान प्राप्त करने में समय बिताना ही श्रेयस्कर है। यह सत्य है, कि वहां प्रैक्टिस करने से आपको कुछ धन तो मिलेगा। किंतु क्या उपयोगी अनुभव पा सकेंगे? फिर भी आप बेहतर जानते हैं, क्योंकि सब ओर जा चुके हैं और विएना, लंदन, एडीनबर्ग जैसी जगहों पर घूम चुके हैं। व्यक्तिगत अनुभव से जान सकते हैं कि उच्च शिक्षा कहां पा सकते हैं।

एक बात और को बहुत झिझक के बाद कह रहा हूं। श्रीमती धर्मवीर को तुम्हारी

सीता से मैत्री की जानकारी है, किंतु डा. को शायद नहीं मालूम। यदि मेरी ओर से कुछ सहायता चाहो तो कृपया बेझिझक होकर कहो। शेष तुम्हारी भविष्य की योजना पर निर्भर करता है।

आशा है वहां आप ठीक–ठाक हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

किट्टी कुर्टी को,

खेद है एक लंबे समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया और आपके कई महीने पूर्व प्राप्त पत्रों का उत्तर भी नहीं दे पाया। अब तक आपको मार्च में मेरी रिहाई की सूचना मिल ही चुकी होगी। मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने की वजह से मैं यहां आराम करने और मौसम परिवर्तन के लिए आया हूं। कुछ माह अभी यहीं रहूंगा। यह भारत के उत्तर–पश्चिम में, समुद्र तल से 2000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, एक पर्वतीय स्थल है।

श्री कुर्टी व स्वयं के बारे में कृपया विस्तार से लिखें। भविष्य की क्या योजना है? प्राग कब जा रही हैं? वहां की कोई योजना है? क्या डा. जुंग से मिलने ज्यूरिख गईं?

क्या आपको पूर्ण विश्वास है कि एनेट ही आर. आर. की पत्नी है?

फ्रॉयड़ परिवार के बारे में अपने विचारों से अवगत कराएं। आपकी ओर से एक लंबे पत्र की इंतजार में हूं। कुछ अधिक लिखने को शेष नहीं है।

कविताओं के लिए धन्यवाद–मैं उन्हें शब्दकोष की सहायता से समझने का प्रयास कर रहा हूं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

राम मनोहर लोहिया को,

द्वारा डा. एन. आर. धर्मवीर
डलहौजी, पंजाब
27.6.37

प्रिय डा. लोहिया,

बहुत दिनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था विशेष रूप से एक विषय के संबंध में—फ्रेंच इंडिया के बंदियों के बारे में, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटिश इंडिया में बंदी बनाकर रखा हुआ है। अखबार वाले लिखते हैं कि आपका फ्रेंच—इंडिया तथा फ्रेंचलीग आफ ह्यूमन राइट्स से पत्राचार चल रहा है। मैं वहां से प्राप्त उत्तर जानने को उत्सुक हूं।

आपकी फाइल लौट फ्लट कर देखने पर पाया कि एक पत्र में आपने मेरे दर्जन के लगभग चित्र मांगे हैं। मेरे पास अच्छे चित्र नहीं है। एक चित्र संभव है, किंतु विदेश में प्रकाशित होने लायक नहीं है। बहरहाल, अलग से भिजवा रहा हूं। यदि आपको लगेगा कि वह चल सकता है तो कृपया मुझे सूचित करें मैं उसकी प्रतियां बनवाकर आपको भिजवा दूंगा।

मेरे विचार से यह आवश्यक है कि पूरे भारत में राजनैतिक बंदियों की रिहाई के लिए जर्बदस्त अभियान छेड़ा जाय। यह समय अपयुक्त है। आपकी इस विषय में क्या राय है?

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे। पहले की अपेक्षा अब मैं स्वस्थ हूं यद्यपि प्रगति बहुत धीमी है।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
राम मनोहर लोहिया
इलाहाबाद

सुधीर कुमार बासु को,

द्वारा डा. एन. आर. धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
29.6.37

प्रिय सुधीर बाबू,

रिहाई के तुरंत बाद आपका टेलिग्राम पाकर प्रसन्नता हुई। उत्तर देने में देर हुई, कृपया क्षमा करें।

आप अब कैसे है? क्या अभी उसी घर में रह रहे हैं? क्या अर्जुन अभी आपके साथ है और आपके लिए चाय, लूखि तथा फाउलकारी तैयार करता हे?

आपका बेटा कैसा है? अब तो छुपन–छुपाई नहीं खेलता होगा।

वहां सभी मित्रों को मेरी नमस्ते कहिएगा। क्या अभी भी आप मिलानी क्लब की देखरेख करते है? विवेकानंद समिति और महिला समिति का क्या हुआ? शायद मिलानी के विषय में कुछ भ्रम में हूं। क्या सिनेमा का नाम मिलानी नहीं है?

यहां आने के बाद से कुछ बेहतर महसूस कर रहा हूं यद्यपि जितनी तीव्रता से स्वस्थ होगा चाहता हूं उतनी बाबू से भेंट हैं।
कलकत्ता में संतोष बाबू से भेंट हुई।
आशा है वहां सभी स्वस्थ हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

द्वारा डा. एन. आर. धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
2.7.37

प्रिय सुनील,

क्या मैंने तुम्हारे 19 मार्च के पत्र का उत्तर दे दिया था? मुझे ठीक से याद नहीं। खैर! हार्दिक स्नेह प्रेषित करता हूं। सभी ग्रामवासियों को मेरा प्यार व शुभकामनाएं दे देना। पत्र के उत्तर में इस अत्यधिक विलंब के लिए क्षमा चाहत हूं।

आप सब कैसे है? मेरे विचारानुसार आजकल तुम कलकत्ता क्षेत्र की ओर कम ही आ पाते हो। पढ़ते रहने की आदत सबसे बढ़िया है वरना मानसिक पटल सिकुड़ जाएगा और दृष्टि भी क्षुद्र हो जाएगी।

यहा आने के बाद से मेरे स्वास्थ्य में प्रगति है। वहां सभी को मेरी शुभकामनाएं। सभी को यथायोग्य,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
7.7.37

प्रिय सीता,

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। क्षमा चाहता हूं। आलस्यवशह देरी हुई।

आमों के लिए धन्यवाद! उनके साथ पूर्ण न्याय कर रहे हैं। डा. साहब तो खराब होने वाले आमों को पसंद करते हैं। अतः तब तक इंतजार करते हैं। जब तक कि वे गलने न लगें। कभी–कभी सोचता हूं कि सड़ने–गलने वाले आमों का चिकित्सा में कही कोई विशेष महत्व तो नहीं है। डा. साहब का कहना है कि शक के बिना पर किसी चीज़ को बर्बाद नहीं कर देना चाहिए। वे कहते हैं कि जब गला–सड़ा मीट या मछली गंभीर रोग पैदा कर सकती हैं तो, फल ज्यादा से ज्यादा डायरिया आदि......

खाने की मेज पर एक और परेशानी होती है। डा. साहब हमें खरबूजा खाने पर मजबूर करते हैं दीदी को चुपचाप खाना पड़ता है, और वे कर भी क्या सकती हैं। किंतु मीरा बहन और मैं बच जाते हैं। हमारा मानना है कि खरबूज पेट के लिए भारी है। कभी–कभी जब मेरी प्लेट में रख दिया जाता है तो मैं गुस्से में खा लेता हूं। फल के विषय में डा. 'खरबूजा' के शब्द अंतिम शब्द है।

साखले जाति के लोग अधिक नहीं देखें। कल पहली बार मैंने देखा। दीदी ने डा. मैंडल को दोपहर चाय के लिए आमंत्रित किया है। कल शायद डा. मैंडल चली जाएंगी। पंजपुला रोड अब काफी साफ है किंतु तुम्हारी इस राय से मैं सहमत हूं कि शाम की सैर के लिए थांडराइट रोड सबसे अच्छी है। सूर्यास्त के सम हम लोग प्रायः वहीं होते हैं। मैं उसे प्रेमियों की सड़क कहता हूं। कई अंग्रेज जोड़े उस सड़क पर नजर आते हैं।

बच्चों के विषय में जो तुमने में जो तुमने लिखा पढ़कर बहुत आनंद आया। मेरा भी विचार यही है कि विश्व में भारतीयों ने बहुत से बच्चों को जन्म दिया पर किसलिए? केवल मरने के लिए क्योंकि कम ही बच्चे युवावस्था तक पहुंचते हैं। यह बातं हमें जनसंख्या नियंत्रण के प्रश्न पर विचार करने को मजबूर करती है, जो भारत के लिए अति आवश्यक है। महात्मा गांधी का मानना है कि आत्मनिंत्रण सबसे अच्छा हैं, किंतु क्या लोग उनकी बात मानेंगे इसके बावजूद डा. मैंडल का कहना है कि वे भारत के उपयोगी संत हैं।

अब यहीं समाप्त करता हूं क्योंकि कुछ मिलने वाले लोग आ गए हैं। आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो। मेरा स्वास्थ भी ठीक है। यहां परिवार में सब ठीक है, मौसम भी, प्यार सहित।
तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष

किट्टी कुर्टी को,

डलहौजी,
पंजाब, भारत
10.7.37

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

20 जून का आपका कृपा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई, पत्रोत्तर में विलंब के लिए क्षमा चाहता हूं। रिहाई के पश्चात स्वास्थ्य सुधारने की दृष्टि से मैं यहां आ गया। भारत के उत्तर–पश्चिम में लगभग 2000 मीटर की ऊंचाई पर यह एक शांत पर्वतीय स्थल है। यहां से उत्तरी हिमालय की बर्फ से आच्छादित पहाड़ियां दीखती हैं। स्वास्थ्य बेहतर है किंतु पूर्णतः नहीं। दो माह अभी और यहां रहूंग फिर वापस अपने कार्य पर लौटूंगा। अब भारत छोड़कर जाना संभव नहीं है, क्योंकि यहीं पर बहुत सा कार्य करने को है।

आपने अपने पिछले पत्र में लिख था कि आप मां बनने वाली हैं। आशा है अब तक आप मां बन चुकी होंगी और मां और बच्चे दोनों का स्वास्थ्य ठीक होगा।

मनोवैज्ञानिकों के विषय में आपने जा लिखा, बहुत दिलचस्प था। यह सत्य है कि यूरोप का वातावरण स्वार्थ से परिपूर्ण हैं आत्मिक शांति नहीं है अैर प्रायः लोग तंत्रिकावसाद से ग्रस्त हैं। इसका एकमात्र इलाज एकमात्र आध्यात्मिक और नैतिक जीवन है। आध्यात्मिक औरं नैतिक जीवन का मूल निःस्वार्थ भावना है। यूरोप में निःस्वार्थ भावना मिलना कठिन है। आप अमरिका कब जा रही हैं। आशा है वहां रह कर भी आप पत्राचार जारी रखेंगी।

यहां भारत में हमारा कार्य धीमी गति से चल रहा है। एक कठिन कार्य हमारे समक्ष है, किंतु हम बहुत आशावान है। हमारी पार्टी की स्थिति पिछले साल की अपेक्षा काफी सुदृढ़ है। अब पार्टी की बहुत इज्जत है और प्रभाव भी है। किंतु हमें पता है कि जो हम चाहते हैं, इंग्लैंड हमें वह आसानी से देने वाला नहीं है।

श्री कुर्टी को तथा आपको शुभकामनाएं।

मैं,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
31.7.37

प्रिय सीता,

20 तारीख का तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। तब से दोनों ओर बहुत सी महत्वपूर्ण घटनाएं घटी हैं। पिछले कई दिनों से मैं डॉ. साहब से लीला और तुम्हारी पढ़ाई के भविष्य की योजना पर बात कर रहा हूं। यह जोर दे रहा हूं कि बिना समय बर्बाद किए तुम लोगों को आगे पढ़ाई के लिए विदेश जाना चाहिए। सिद्धांत रूप से वे मान गए हैं कि भारत में काम समाप्त करने के बाद तुम लोग विदेश जा सकती हो। तुम्हारी कलकत्ता नियुक्ति के बाद एक बार फिर नए सिरे से चर्चा हुई। डॉ. साहब ने तब भी विचार व्यक्त किए कि कलकत्ता जाने की अपेक्षा आप लोग–तुम और लीला–इंग्लैंड जा सकती हो। तब मैंने कहा कि इसका अर्थ है तुम लोगों को सितंबर में यहां से रवाना होना होगा। डॉ. साहब ने माना कि उन्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं है। तब यह निर्णय हुआ कि डॉ. साहब को तत्काल तुम्हें पत्र लिख देना चाहिए। डॉ. साहब आज लाहौर गए हैं और इस विषय में आज या कल लीला से बात करेंगे।

अब स्थिति यह है–तुम अब (सितंबर में) कलकत्ता जाने के बजाय इंग्लैंड जा सकती हो, यदि लीला मान गई तो वह भी तुम्हारे साथ जाएगी। अब तुम्हें स्वयं निर्णय लेना है कि तुम्हें क्या करना है। यदि मैं तुम्हारी जगह होता तो प्रसन्नता से इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता।

डॉ. साहब सोमवार प्रातः वापस लौट आएंगे। दीदी भी जितनी जल्दी हो सके, विदेश जाने के पक्ष में हैं जितना मैं उन्हें समझ पाया हूं।

हमारा पत्र मिलते ही, यानी कि सोमवार प्रायः तुम डॉ. साहब को अपना निर्णय वायरलेस पर क्यों नहीं भेज देती?

आलुओं के प्रति पूर्ण मैत्रीभाव निभाता हूं, प्रायः खाता रहता हूं, यद्यपि डॉ. साहब इसके पक्ष में नहीं हैं। उनसे प्रायः झगड़ा हो जाता है। क्योंकि उनकी राय है कि मुझे अधिक सूप नहीं पीना चाहिए, जो हानिकारक है। पिछले कुछ दिन से खरबूजा कम मिल रहा है, भगवान का लाख–लाख शुक्रिया।

जून–जुलाई के बावजूद यहां का मौसम अच्छा है। देखते हैं अगस्त में कैसा रहता है। कभी–कभी खालीपन के कारण बेचैनी अनुभव करता हूं।

आज लखनऊ में विद्यार्थी सम्मेलन हो रहा है, मैंने केवल शुभकामानाओं का तार भेज दिया हैं।

सूर्यास्त बहुत बढ़िया होता है, किंतु कभी—कभी बहुत बादल होते हैं। सोचता हूं कब रंगीन चित्र ठीक प्रकार डेवलप हो पाएगा।
संतोष के पत्र प्रायः आते रहे है। प्यार सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु को,

डलहौजी
पंजाब
31.7.37

प्रिय संतोष बाबू,

क्या आप इस विषय में कुछ सहायता कर सकते है? निगम के अनुभवों के आधार पर आप बता सकते है कि इस विषय में आगे क्या किया जाए। यहां से परामर्श देना मेरे लिए कठिन है। कृपया इस पत्र के लेखक से संपर्क कर दोनों मिलकर विचार कर लें। पहले से बेहतर हूं। आशा है आप भी स्वस्थ होंगे।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कामर्शियल गजट
(स्थापना—1920)
वीकली जरनल आफ कामर्स, इंडस्ट्री एंड फाइनेंस
2 रॉयल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता
7 जुलाई, 1937

प्रिय बोस,

कामर्शियल गजट की एक प्रति तथा 'टोल आफ हाईटेंशन आल्टरनेटिंग करंट' लेख की प्रति आवश्यक कार्रवाई हेतु भिजवा रहा हूं।

आप तो जानते ही है कि पिछले तीन वर्ष के विरोध के बावजूद भी सरकार ने कलकत्ता विद्युत निगम लि. की दरों पर एक जांच समिति बैठा दी है। इस विरोध के पक्ष में कामर्शियल गजट का रूख अधिक लाभप्रद नहीं है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जांच समिति जब लोगों से प्रमाण एकत्रित कर रही थी तब लोक कल्याण चाहने वाले कुछ संगठनों ने अपने प्रमाण समिति के सम्मुख पेश किए, कुछ लिखित रूप में ओर कुछ मौखिक रूप से। कलकत्ता विद्युत निगम की ओर से कार्रवाई

देखने और पक्ष में बोलने वाले थे श्री डब्ल्यू. डब्ल्यू के पेज, बार–एट लॉ, समिति के अध्यक्ष थे सर नलिनी रंजन चटर्जी, हाईकोर्ट के पूर्व जज।

समिति की बैठक के समापन से पूर्व, आपके भाई श्री शरत चंद्र बोस ने मेरे आग्रह पर, अपने अन्य आवश्यक कार्य छोड़कर, लोगों की ओर से उनका पक्ष प्रस्तुत किया, निर्णय फिलहाल अपभोक्ताओं के पक्ष में हुआ है, अन्यथा इसके विपरीत ही होना था। यद्यपि उन्हें विद्युत की तकनीकी जानकारियां नहीं थी फिर भी उन्होंने 14 घंटे में सब कुछ जान–समझ लिया और अल्पवधि में ही समिति के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत करने को तत्पर हो गए।

यह बात तो मैं वैसे ही बता रहा था, वास्त्व में जो सुझाव आपको देना चाहता हूं वह केस संगत और न्यायपूर्ण है तो, मेरे विचार में आपका मानना भी यही है, इसलिए चूंकि आप कलकत्ता विद्युत निगम लि. की कार्यप्रणाली से पूर्व परिचित हैं, तो अप बी. पी. सी. सी. के अधिकारिों से आग्रह करें कि आगामी 29 जुलाई को विधानसभा की बैठक में वे इस मुद्दे को उठाएं।

आपके स्वास्थ्य को देखते हुए यह पत्र यद्यपि बेकार है, किंतु मुझे पूर्ण विश्वास है कि जनहित के मामलों में बात करते समय आपकी थकान आडे नहीं आती। इन परिस्थितियों में क्य किया जाना चाहिए? क्या आप करेंगे? पत्र के साथ मैं समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया अपना पक्ष भेज रहा हूं। इस आग्रह के साथ कि कृपया 9, 10 और 18वें मुद्दे पर अवश्य कार्यवाही करें।

इस लंबे पत्र के लिए आपसे क्षमा चाहता हूं तथा आपके स्वास्थ्य की पूर्ण कामना करता हूं।

आपक शुभाकांक्षी
के. घोष
श्री सुभाष चंद्र बोस
द्वारा डॉ. धर्मवीर
डलहौजी (पंजाब)

राम मनोहर लोहिया को,

डलहौजी
5.8.37

प्रिय डॉ. लोहिया,

आपके पांच जुलाई के पत्र सं. एफ. डी. 9/264 का उत्तर समय पर नहीं

दे पाया, इसके लिए क्षमा चाहता हूं।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने फ्रेंच–इंडियन बंदियों के लिए कार्यवाई शुरू कर दी है। अंतिम सूचना से आभास होता है कि कालीचरण घोष को किसी हद तक स्वतंत्रता मिल गई है। पक्के तौर पर नहीं जानता कि क्या पूर्णरूप से वे स्वतंत्र हुए हैं या नहीं।

मेरी इच्छा है कि पूरे भारत में राजनैतिक बंदियों की रिहाई के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिए। आपने लिखा है कि अध्यक्ष श्री नेहरू से आपकी बात हुई। काश! वे हमारा नेतृत्व करते।

आपकी इच्छानुसार कुछ चित्र अलग से भेज रहा हूं। आशा है आप सभी स्वस्थ होंगे। मैं पहले से बेहतर हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
डॉ. राम महोहर लोहिया,

अनिल चंद्र गांगुली को,

डलहौजी
(पंजाब)
8.8.37

प्रिय अनिल,

आपका प्यार भरा पत्र मिलने के बाद से तुम्हें पत्र लिखने की सोच रहा हूं। किंतु आलस्य आड़े आता रहा। इन दिनों निष्क्रिय ही नहीं रहा बल्कि जब व्यक्ति का स्वास्थ्य साथ नहीं देता तो वह केवल अति आवश्यक कार्य जैस–तैसे निपटा लेता है, अतः पत्र बहुत दिन तक मेरे इंतजार में ऐसे ही पड़े रहे।

आपकी शारीरिक परेशानियों को जानकर कष्ट हुआ। युवावस्था में तो आप बहुत स्वस्थ थे, प्रसन्न और क्रियाशील। आपसे बहुत सी आशाएं थीं। किंतु अभी तक आपने कुछ नहीं किया। किंतु अभी भी समय है।

ईश्वर में मुझे बहुत विश्वास है। प्रार्थना में भी विश्वास रखता हूं यद्यपि स्वयं नहीं करता हूं। मानसिक (आप इसे आध्यात्मिक भी कह सकते है) श्रम जो मैं कर रहा हूं वह दो प्रकार का है– जो मेरे मूड पर निर्भर करता है। इनमें से एक है–आत्म निरीक्षण। शांतिपूर्वक बैठकर मैं सोचता रहता हूं कि मैंने मानवीय दुर्बलाओं, अर्थात लोभ, लालच, भय और गुस्से पर, नियंत्रण किया है या नहीं। इस क्रिया से मुझे बहुत शांति

मिलती है और इसी के द्वारा मैंने अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त की है। दूसरी क्रिया है–आत्मसमर्पण। मैं चुपचाप बैठकर सोचता हूं–उस दिव्यशक्ति के विषय में जो कुछ बर्गन्स की 'अलान–वाइटल' जैसी है और अपने अस्तित्व को उसमें मिला देने का प्रयास करता हूं। आत्मसमर्पण के पश्चात मुझे आभास होता है कि वह दिव्यशक्ति मुझमें भी है और मैं उस दिव्यशक्ति का एक उपकरण मात्र हूं। भौतिक वस्तु की कभी मैंने कोई चाह नहीं की। वे तो क्षुद्र और व्यर्थ की चीजें हैं। इसके विपरीत मैं अपने मन को समझाता रहता हूं कि आत्मसर्पण द्वारा तुम भी शक्तिशाली बनोगे।

जीवन एक अंतहीन द्वंद्व है, जब तक आप सब मनोविकारों पर विजय नहीं प्राप्त कर लेते तब शांति नहीं मिल सकती। धीरे–धीरे संघर्ष में आनंद आने लगता है और जब किसी इच्छा (विचार) पर विजय मिल जाती है तो बहुत संतोष और आत्म विश्वास पैदा हो जाता है।

दर्शन में मेरी रूचि अभी भी है, किंतु आजकल अधिक समय नहीं निकाल पाता। मनोविज्ञान से अभी संपर्क बनाए हुए हूं। आजकल राजनीति पढ़ रहा हूं–यानि कि राजनीतिक दर्शन और अंतर्राष्टीय राजनीति। सब जनता पढ़ने की कोशिश भी करता हूं, क्योंकि लोक–सेवा करने वाले व्यक्ति को सभी समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए। यह कमी खलती है और विशेषज्ञता के रास्ते में बाधक है। इसमें कोई कुछ कर नहीं सकता, क्योंकि जीवन बहुत छोटा है और व्यक्ति की क्षमता संकुचित है। मैंने अनुभव किया है कि अनिश्चय और खतरे से भरी जिंदगी जीने का अपना सुख है, यदि यह जीवन किसी कारण के प्रति समर्पित किया गया है। वह आपके सभी दुखों व कष्टों की प्रतिपूर्ति कर देता है और जीवन को रोमांटिक बना देता है। सबसे अधिक कष्ट मुझे व्यक्ति के व्यवहार से पहुंचता है, प्रायः अपने मित्रों से, जिनसे कुछ अच्छे व्यवहार की आशा है।

तुम्हारी पुस्तकें पाकर प्रसन्नता हुई। खेद है उन्हे अभी तक पढ़ नहीं पाया हूं। केवल एक दृष्टि डाली है। मेरी शुभकामनाएं सदैव तुम्हारे साथ है। क्या आजकल उच्च न्यायालय में प्रैक्टिस कर रहे हो? क्या शादी की?

अक्सर पत्र लिखते रहा करो। प्रायः तुम्हारे और तुम्हारे भाइयों के विषय में विचार करता रहता हूं। तुम्हारे प्रति कष्ट होता है कि तुम देश के प्रति बहुत अधिक कार्य नहीं कर पाए। किंतु अभी भी समय है और संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है। मेरे अनुभव सदैव आपके साथ है आपको यह बताने के लिए कि उपयोगी कार्य क्या है, कुछ भी छिपाने के लिए मेरे पास नहीं है। अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहें।

ढेरा प्यार सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– एक बात तुम्हें बताना भूल गया। मानसिक व्यायाम से मुझे बहुत लाभ पहुंचा है, आत्म विश्लेषण । जब भी मुझे समय मिलता है मैं अपने मन में झांककर देखने का प्रयास करता हूं और तलाश करने का प्रयास करता हूं कि क्या मुझमें कोई कमजोरी है? इस प्रकार मुझे बहुत सी व्यर्थ की चीजें मिलीं जिन्हें मैंने जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न किया। कमी को ढूंढ लेने का अभिप्राय है आपने आधी विजय पा ली। गलत और अनुपयोगी बातों का पता लगा लेने पर आत्म–निरीक्षण सरल हो जाता है और आप मानवीय कमजोरियों को आसानी से दबा सकते हैं। मानसिक परेशानियों का मुख्य कारण यही है कि हम लोग यही नहीं जान पाते कि हमारा मन क्या है। मन ऐसी अजीब चीज है कि वह स्वयं को ही धोखा देता है। अतः निरंतर आत्म–विश्लेषण आवश्यक है मानसिक व्यायाम की दृष्टि से। असामान्य मनोविज्ञान और साइकोपैथोलोजी ने विश्वेलषण में मेरी बहुत सहायता की है।

सुभाष चंद्र बोस

क्षितीश प्रसाद चट्टोपाध्याय,
डलहौजी
(पंजाब)
9.8.37

प्रिय क्षितीश,

20 जून का आपका पत्र समय पर मिला। बहुत उसुकता से उसे पढ़ा। जानकर प्रसन्नता हुई कि वर्तमान कार्य में तुम्हें शांति और संतोष प्राप्त हुआ है। आखिरकार हम सब लोग विभिन्न प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में संतुष्टि प्राप्त करने की दृष्टि से ही कार्य करते हैं। यदि व्यक्ति को वह मिल जाए–तो और क्या कहना।

खेद है कि दिलीप नहीं आए। मुझे आशा थी कि हम लोग इन शांत पर्वतों में कुछ अंतरंग बातचीत कर पाएंगे। किंतु पिछले 8 वर्ष से वे बहुत शांतिपूर्ण वातावरण में रह रहे थे और फिर कलकत्ता में उन्हें संतोष प्राप्त होता है तो मुझे कुछ नहीं कहना। आशा करता हूं कि शीघ्र ही वे पंडिचेरी से वापस लौट आएंगे। मुझे उनका वहां व्यस्त हो जाने का विचार भला नहीं लगा।

मुझे तो आगे बढ़ना ही है। रास्ता लंबा और नीरस है। कभी–कभी चिंतित महसूस करता हूं। घोर निराशा के बादल घेर लेते हैं किंतु कभी–कभी आशा की बिजली भी चमक उठती है, किंतु उससे क्या होगा? यात्रा में बहुत आनंद है। अभी तक घर

के बिना घूमने वाला बंजारा हूं। शांति! शांति! अभी तक मुझे शांति और संतोष नहीं मिला है केवल रोशनी मुझे बहकाती नहीं है, बल्कि अनिश्चित उदासी भी अपनी ओर खींचती हैं। यदि रोशनी क पहुंचने से पहले गिर गया तो क्या? यात्राओं में सुख है– लोगों से मिलने में उसी प्रकार गिरने में, भी आनंद है।

तुम्हारा शुभेच्छु
सुभाष

कलकत्ता निगम के एक कार्यकर्ता को,

9 अगस्त, 1937

आपने मेरी सहायता पाने की इच्छा व्यक्त की है। यदि मैं कुछ कर पाऊंगा तो अवश्य करूंगा। किंतु मुझे अपनी असमर्था का भान है। आपकी धारणा मेरे प्रभाव के प्रति कुछ गलत है। लोगों पर मेरे प्रभाव का अर्थ यह नहीं कि निगम की चारदीवारी के अंदर भी मेरी पहुंच है। यदि ऐसा होता तो पिछले दो वर्षो में जो कुछ हुआ वह नहीं होता। 1924 में देशबंधु के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ता निगम में इसलिए सम्मिलित नहीं हुए थे कि उच्चधिकारियों के वेतनमान बढाए जाएं और बेचारे कर्मचारियों को वर्तमान वेतनमान में ही छोड दिया जाए। पिछले कुछ वर्षो में भाई–भतीजावाद इतना बढ़ा है कि, उस संस्था के विषय में सोचकर, जिसमें कांग्रेस कार्यकर्ता हों या अपना प्रभाव रखते हों, मेरी गर्दन शर्म से झुक जाती है। पिछले कुछ माह पूर्व चीफ एक्जीक्यूटिक ऑफिसर ने जब अवकाश हेतु आवेदन किया तो उसे असाधारण तवज्जों दी गई। यह एक ऐसा ही उदाहरण है। बेचारे कर्मचारियों द्वारा अपने वेतनमाान की बढ़ोत्तरी की मांग के विरोध में जो तर्क दिए जा रहे हैं वे अधिकारी वर्ग को लाभ पहुंचाने के लिए हैं। मनुष्य के रूप में इस न्यायपूर्ण बात के लिए और कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में मेरी आत्मा इसका विरोध करती है। किंतु फिलहाल मैं असमर्थ हूं।

जब से मैं रिहा हुआ हूं तभीसे मै निगम की आंतरिक कार्य पद्धति के प्रति चिंतित हूं। तो अफवाहें और समाचार मुझ तक पहुंच रहे हैं यदि उसका कुछ प्रतिशत भी सही है तो जनता को आघात पहुंचाने के लिए काफी है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि वर्तमान मेंयर के संरक्षण में कुछ बुराई कम हुई हैं जिसने निगम कार्यालयों को घेर रखा था। किंतु जितना कार्य हुआ है, यह उस कार्य की अपेक्षा जो अभी नहीं हो पाया, बहुत कम है।

मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूं कि निगम की आंतरिक कार्य पद्धति के प्रति चिंतित हूं। जो अफवाहें और समाचार मुझ तक पहुंच रहे हैं यदि उसका कुछ प्रतिशत भी सही है तो जनता को आघात पहुंचाने के लिए काफी है। यह देखकर प्रसन्नता होती

है कि वर्तमान मेयर के संरक्षण में कुछ बुराई कम हुई है जिसने निगम कार्यालयों को घेर रखा था। किंतु जितना कार्य हुआ है, यह उस कार्य की अपेक्षा जो अभी नहीं हो पाया, बहुत कम है।

मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूं कि निगम में जो कुछ हो रहा है उसके लिए कुछ जिम्मेदारी, एक कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में, मेरी भी है। बेचारे कर्मचारियों के साथ हो रहे अत्याचार तथा अन्य ऐसे ही कई मुद्दे हैं जिनके लिए मुझे अपनी जिम्मेदारी का अहसास है। शीघ्र ही इस समस्या का हल खोजा जाना चाहिए। अभी आपको बता नहीं सकता कि जब वापस कार्य करने में जुटूंगा तो क्या करूंगा। यदि मैं बंगाल की राजनीति में उतरूंगा तो कलकत्ता निगम के एजीन स्टेबलस को साफ करना होगा अन्यथा निगम जो भी करता है उससे कांग्रेस को अपने आपको पृथक करना होगा।

मेरे विचार से कलकत्ता निगम में जो कुछ भी हो रहा है वह बंगाल की सामान्य जनजीवन की झांकी है। हमारे लोगों को जड़ता ने घेर रखा है। आदर्शवाद की कमी हो गई है, जो भी आदर्शवादी हैं वह या तो जेलों में बंद हैं या नजरबंद है और जो बाहर हैं व समय व्यतीत कर रहे हैं या फिर जिम्मेदारी से मुंह मोड़ रहे हैं । चारों ओर छोटे—छोटे झगड़े, छोटी—छोटी बातों के लिए माथापच्ची हो रही है और वास्तविक व मूल समस्याओं की ओर किसी का ध्यान नहीं। इन सब बातों से राज्य को बचाने के लिए नैतिक उत्थान और आदर्शवाद की आवश्यकता है जो हर क्षुद्र, दुखदायी और अवरोधी वस्तु को हटाकर हम लोंगो के मन में, तथा लोगो के जीवन में, विश्वसनीयता, सत्यनिष्ठा और लोभ रहित सेवाभाव पैंदा कर सके। मेरे विचार में ऐसे दोषपूर्ण दौर के पश्चात ही हम लोगों में जागरूकता आएगी।

संतोष कुमार बासु को,

डलहौजी
पंजाब
17.8.37

प्रिय संतोष बाबू,

अनिल की शादी का आमंत्रण अभी मिला। आशा है समारोह ठीक—ठाक संपन्न हो गया। मुझे आशा है कि आपने उन लोगों को भोजन कराने में, जिन्हें आवश्यकता नहीं है, पैसा व्यर्थ नहीं गंवाया होगा यद्यपि यह आशा करना बेकार है। हमारी सामाजिक प्रथाओं को सुधारने के लिए डिक्टेटर से कम में कम नहीं चल सकता। उपदेश बंद करता हूं। नवविवाहितों को मेरी शुभकामनाएं। वधु ने जब आपके घर में कदम रखा होगा तो सास की कमी उसे खली होगी, हालांकि सास प्रायः नहीं होतीं इसलिए उसे

इस विचार से स्वयं को राहत देनी चाहिए।

अपनी रिहाई के बाद से मैं कलकत्ता निगम की कार्यविधि से चिंतित हूं। एजीन स्टेबलस को साफ करने के लिए, आपकी राय में, क्या कदम उठाया जाना चाहिए।

पहले की अपेक्षा मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। किंतु अभी कुछ दिन और यहीं रहूंगा।

आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं। सादर।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
26.8.37

प्रिय सीता,

यदि तुम्हें जल्दबाजी में कलकत्ता के लिए रवाना होना ही तो मेरे भाई श्री शरत चंद्र बोस को तार दे दो। उनका तार का पता है—ई. एस. सी. आई. बी. ओ. एस. कलकत्ता। हावड़ा पहुंचने का अपना समय सूचित कर दो। हावड़ा स्टेशन नदी के दूसरी ओर है और कलकत्ता पहुंचने के लिए तुम्हें पुल पार करना होगा। आशा है मेरा भतीजा अशोक, जिससे तुम प्राग में मिल चुकी हो, स्टेशन पर तुम्हें मिल जाएगा, यदि किसी वजह से उससे मिलना न हो पाए तो टैक्सी लेकर 1 वुडबर्न पार्क पहुंच जाना। यह जगह फ्रेंच मोटर कार कंपनी परिसर के निकट है जिसे सभी टैक्सी चालक जानते हैं। हावड़ा स्टेशन से वुडबर्न पार्क 4 किलोमीटर की दूरी पर है, वहां पहुंचने के लिए तुम्हें मैदान और शहर के यूरोपियन इलाके से गुजरना होगा।

कभी ऐसा होता है कि जहाजों के लिए मार्ग देने के कारण पुल खोल दिया जाता है। यदि तुम्हारे पहुंचते ही ऐसा हो, और कुली तुम्हें बताएं कि कुछ देर लगेगी तो तुम नदी तक पहुंच जाओ, जो प्लेटफार्म से कुछ कदमों की ही दूरी पर है। रेलवे निःशुल्क स्टीमर नाव उपलब्ध कराता है, जिसमें बैठकर तुम नदी के कलकत्ता वाली साइड में पहुंच जाओगी। वहां टैक्सियां खड़ी होंगी। कई नावें भी किराए पर चलती हैं किंतु स्टीमर फेरी से जाना ही सुरक्षा की दृष्टि से उचित है। आशा है तुम्हारी पहली यात्रा में तुम्हें ये अनुभव नहीं होंगे।

मेरी भाभी का कुछ दिन पूर्व आपरेशन (गाल—ब्लैडर व अपैंडिक्स का) हुआ है! अतः घर कुछ उथल—पुथल हो सकती है। आशा है तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।

वहां पहुंचकर, आशा है, कलकत्ता तुम्हें पसंद आएगा और कुछ बंगला भी सीख

जाओगी। आशा है पूर्ण स्वस्थ हो। प्रेम सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– लीला आजकल यहां है, तुम जानती ही होगी। एक दिन हम लंबी सैर पर गए थे। मैं ठीक हूं, यद्यपि पूर्णरूप से नहीं। लोग मुझे तत्काल बंगाल में देखना चाहते हैं। किंतु संभवतः मैं सितंबर के अंत तक वहां पहुंचूंगा।

सुभाष चंद्र बोस

सरीश चंद्र चटर्जी को,

28 अगस्त, 1937

आपके पत्रों का उत्तर देने में विलंब हुआ, क्षमा चाहता हूं, विलंब इसलिए हुआ क्योंकि जो विचार आपकी दृष्टि में हैं। मैं उन्हें आगे नहीं बढ़ा सका। भारतीय वास्तुशिल्प के पुनरूद्धार के विषय में मेरे रवैये से आप परिचित ही हैं कि मैं इसे राष्ट्रीय पुनरूत्थान के लिए कितना महत्वपूर्ण मानता हूं। कला और वास्तुशिल्प राष्ट्र की आत्मा की पहचान है। जब लोगों की आत्मा जाग्रत होती है तो वह विभिन्न कलाओं और वास्तुशिल्प में ही अभिव्यक्ति पाती है। मुझमें भी कुछ ऐसी ही प्रतिबद्धताएं है इसलिए मुझे आपकी गतिविधियों में अत्यधिक रूचि है। उत्साह और जोश के प्रति मेरा भी आग्रह है, जो उस कार्य के लिए अति आवश्यक है, जिसे आपने अपनाया है और मुझे आशा है कि कितनी ही बाधाओं व अड़चनों के बावजूद, जो आपके मार्ग में आएंगी, आपका विश्वास खंडित नहीं होगा, यही आपकी सफलता का राज है।

आपके पत्र के मुद्दे पर आता हूं, और यह कहता हूं कि भारतीय वास्तुशिल्प को निश्चय ही कलकत्ता निगम आगे बढ़ा सकता है। मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि यदि निगम पर मेरा नियंत्रण होता तो मैं आपके विचारों को कार्यरूप अवश्य देता। पता नहीं आप मुझ पर विश्वास करेंगे अथवा नहीं किंतु यह सत्य है कि मेरा उस पर कोई प्रभाव नहीं है। यह बात आपको समझ से परे लग सकती है कि कांग्रेस पार्टी का सदस्य होने के बावजूद मैं असमर्थ हूं, जबकि कांग्रेस पार्टी के लोग निगम में हैं। किंतु यही सत्य हैं।

मैं नहीं जानता कि वास्तुशिल्प के लिए अलग से स्थान निर्धारित किया जा सकता है, क्योंकि कई संवैधानिक कठिनाइयां होंगी, क्योंकि निगम किसीको विशेष प्रकार के स्थापत्य के लिए बाध्य नहीं कर सकता। लोगों को स्थापत्य की निःशुल्क राय देने की दृष्टि से किवे कैसा स्थापत्य अपनाएं, अलग अनुभाग बनाया जा सकता है।

इस अनुभाग में नागरिकों के प्रयोग के लिए डिजाइन वे हैंडबुक्स का स्टॉक रखा जा सकता है तथा भारतीय वास्तुशिल्प का प्रचार किया जा सकता है। कलकत्ता में लोगों के बीच भारतीय वास्तुशिल्प को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा सकता है। यदि कलकत्ता उदाहरण पेश करे तो भारत के अन्य शहर भी अवश्य इसे अपनाएंगे।

मुख्य बात तो यह है कि मेरी बात मानेगा कौन? लोग तो छोटी–छोटी व्यर्थ की बातों के झगड़ों में व्यस्त हैं। परिणामतः किसी बात क आशा मुझे नहीं है। आप कह सकते हैं कि ऐसी स्थिति में कांग्रेस की उपस्थिति निगम मेंकिस काम की नहीं। शायद आपकी बात ठीक है और यही बात मुझे मेरी रिहाई के बाद से चिंतित किए हुए है। जब अपना सामान्य कार्य प्रारंभ करूंगा तो क्या करूंगा अभी कह नहीं सकता। किंतु इस समस्या का समाधान तो देर–सबेर खोजना ही होगा। तब तक मैं अपनी शुभकामनाएं आपको भेज सकता हूं और आशा करता हूं कि आप कभी निराश नहीं होंगे।

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
31.8.37

प्रिय सीता,

तुम्हारे तार से पता चला कि तुम सुरक्षित कलकत्ता पहुंच गई हो, जानकर प्रसन्नता हुई।

वहां तुम्हें.......क्योंकि मेरी भाभी आजकल नर्सिंग होम में हैं और मेरे भाई भी आजकल बहुत व्यस्त हैं। फिर भी आशा करता हूं कि तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी, तुम घर जैसा ही अनुभव करोगी। कृपया मेरे भतीजे अशोक को ठीक–ठीक बता देना कि तुम्हें कैसा भोजन पसंद है क्योंकि वे शाकाहारी नहीं हैं अतः तुम्हारी आवश्यकताओं को, यदि तुम नहीं बताओंगी तो समझ नहीं पाएंगे। इस विषय में कृपया कोई संकोच न करना। कलकत्ता में हर प्रकार की सब्जी और फल सकता है।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

वी. लेस्नी को,

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

डलहौजी
(पंजाब) भारत
6.9.37

प्रिय प्रोफेसर,

जब श्रीमती व श्री मेहता आपसे मिले तब आपका, स्ट्राज पी. राल्स्कीन से, पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। आशा है गर्मियों में वहां आराम कर आपको अच्छा लगा होगा। अब तक आप पुनः प्राहा पहुंच चुके होंगे। कृपया सूचित करें कि पुनः भारत कब आ रहे हैं। मैं यूरोप आना चाहता हूं लेकिन खेद है कि यह संभव नहीं है। इसलिए आपको भारत आजा होगा। टैगोर पर लिखी आपकी पुस्तकों के लिए हार्दिक बधाई । आशा है आपकी पुस्तक से कवि व भारत को सेंट्रल यूरोप में पर्याप्त प्रसिद्धि मिलेगी। श्रीमती लेस्नी व आपको शुभकामनाएं। आशा है आप सब पूर्णतः स्वस्थ हैं। मैं बिल्कुल ठीक हूं।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस
प्रोफेसर डॉ. लेस्नी
प्राहा

ई. वुड्स को,

डलहौजी
(पंजाब) भारत
9.9.37

प्रिय श्रीमती वुड्स,

2 जून के आपके पत्र व अखबारों के लिए बहुत—बहुत धन्यवाद। नए संविधान की प्रति भी मुझे मिल गई है।

अपनी रिहाई के बाद तत्काल मैं यहां परिवर्तन की दृष्टि से आ गया था। भारत के उत्तर—पश्चिम में 7000 फीट की ऊंचाई पर यह एक पर्वतीय स्थल है। अभी दो माह और यहीं रहूंगा। पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य ठीक है, किंतु पूर्णतः नहीं।

जब मैं बंधक था तो जो समाचार—पत्र आपने भेजे थे वे पुलिस ने मुझ तक पहुंचा दिए थे।

मेरी गिरफ्तारी के बाद आपने जो तार भारत को भेजा था वह लगभग सभी समाचार—पत्रों में मुख्यता से छापा गया। आपकी अति कृपा थी।

शायद अगले वर्ष मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना जाऊंगा। चुनाव

(पार्टी शाखाओं द्वारा) जनवरी 1938 में होगा।

कृपया श्रीमती एवं डॉ. डे को मेरा प्रणाम कहें तथा एंडा व परिवार के अन्य सदस्यों को मेरी याद। मैं प्रायः आप सब लोगों को तथा वहां बिताए प्रेमपूर्ण दिनों को याद करता हूं।

मैडम को भी मेरी शुभकामनाएं दें।

आपका स्वास्थ्य अब कैसा है?

वहां के विभिन्न गुटों की सूचना दें। (फिना फेल के आतिरिक्त) पिछले चुनावों की अपेक्षा इस बार एफ. एफ. को अधिक बहुमत मिलेगा। इस बार वे क्यों हारे?

भारत में गतिविधियां जारी हैं। 11 राज्यों में से 7 राज्यों में कांग्रेस का शासन है। किंतु इससे हमें अधिक लाभ नहीं है, क्योंकि केंद्रीय सरकार तो अभी भी प्रतिकूल है। आगे कठिन परीक्षा है, किंतु आज कांग्रेस की स्थिति पहले की अपेक्षा सुदृढ़ हैं। हम आशावादी हैं और आशावान हैं।

परिवार के लोगों के अतिरिक्त, अन्य मित्रों को, जिनसे वहां मुलाकात हुई थी, मेरी नमस्ते दें। आजकल मेरी संरक्षिका क्या कर रही हैं?

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जवाहरलाल नेहरू को,

गिद्धपहाड़
कुर्सियांग
17.10.37

प्रिय जवाहर,

आपके पत्र सं. जी–83/4101 तथा जी 60 (पपप) 4126 दिनांक 8 और 9 के समय पर मिल गए थे।

'बंदे मातरम्' के संदर्भ में हम कलकत्ता में बात करेंगें और यदि आप मुद्दा उठाएंगे तो कार्यकारिणी की समिति में भी इस उठाएंगे। मैंने डा. टैगोर को भी लिखा है कि जब आप शांति निकेतन आएं तो वे आपसे इस विषय में चर्चा करें।

मैं आप से इस विषय में सदा सहमत रहा हूं कि हिंदू–मुस्लिम एकता के प्रश्न पर आर्थिक प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सांप्रदायिक मुसलमानों को बार–बार हौआ खड़ा करने की आदत है, कभी मुसलमानों को नौकरियों में कम जगह मिली है, और

अब बंदे मातरम को लेकर। अचानक ही बंदे मातरम का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है शायद इसिलए कि लोकसभा में इसे गाया गया और यह कांग्रेस की विजय का प्रतीक बना। राष्ट्रवादी मुसलमानों द्वारा उठाई गई कठिनाइयों व मुसीबतों पर हम सहर्ष विचार करने को तैयार हैं, किंतु संप्रदायवादी मुसलमानों की उठाई किसी बात को अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता। यदि आज उनकी 'बंदे मातरम' की बात पर उनकी तुष्टि करने का प्रयत्न किया गया तो कल वे कोई और नई बात उठा देंगे, केवल सांप्रदायिक भावनाओं को उभारने के लिए और कांग्रेस को दुविधा में डालने के लिए।

टिप्पराह के विषय में आपने जो लिखा है उसे पढ़कर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। आपको शायद याद होगा कि कुछ समय पूर्व मैंने टिप्पराह जिले में गुटवाद के विषय में लिखा था और संकेत भी किया था कि केवल वैधानिक दृष्टि से इस समस्या का हल खोजना अत्यधिक कठिन कार्य हैं। बंगाल के तीन जिलों टिप्पराह, सिलहट और फरीदपुर में इस समस्या की जड़ें बहुत गहरी हैं। मुझे भय है कि इस दिशा में कोई स्थाई समझौता नहीं हो सकता जब तक कि मैं इन जिलो में जाकर लोगों से विनती न करूं। मैं दोनों गुटों से (फरीदपुर में कई गुट हैं) मैत्री स्थापित करने तथा कार्यकर्ताओ व कार्यकारिणी के सदस्यों आदि की, सहमति द्वारा, एक सूची बनाने का आग्रह करूंगा, यदि यह संभव नहीं हुआ तो एक पार्टी से अपने आप को पीछे हटा लेने का आग्रह करूंगा, जैसा कि 1931 में मैंने सिलहट में किया था। इन सब विषयों पर हम कलकत्ता में विचार करेंगे।

संदर्भ—अनुशासनिक कार्यवाही, कलकत्ता में मैं इस विषय में स्पष्ट निर्देश दूंगा। यदि आप नरम नीति अपनाना चाहेंगे तो वैसा ही करेंगे। अतः आपके लिए वे कार्यकारिणी के लिए यह आवश्यक है कि वे यह स्पष्ट करें कि आप अनुशासन भंग करने वालों के प्रति नरम या कड़ा रूख अपनाना चाहते हैं। जो जुर्माना हमने निर्धारित किया है क्या वह निर्णय वापस लेना होगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

गिद्धपहाड़
कुर्सियांग
19.10.37

प्रिय सुनील,

तुम्हारे दो पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। पत्रोत्तर में देरी हुई, बुरा नहीं मानना।

विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

मेजदादा व परिवार के अन्य सदस्य आजकल यहां हैं। मैं (और मेजदादा) अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में एक सप्ताह के लिए कलकत्ता जा रहा हूं। मेरा स्वास्थ्य पहले से बहुत बेहतर है।

तुम्हारी पत्नी की बीमारी सुनकर चिंता हुई। आशा है वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएगी।

स्वर्गीय श्री पालित द्वारा छोड़ी गई राशि के विषय में अभी तक कोई निर्णय नहीं हो पाया है।

आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं

शुभकामनाओं सहित,
शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

ए. सी. बनर्जी को,

6 नवंबर, 1937

प्रिय श्री बनर्जी,

19 तारीख के तुम्हारे लंबे पत्र के लिए धन्यवाद, बहुत ध्यान से पढ़ा। तुमने जो कहा है मैं उससे पूर्णतः सहमत हूं।

विजयादशमी की शुभकामनाएं।

मैं।
शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
17.11.37

प्रिय सीता,

कल प्रातः मैं एक माह के लिए यूरोप यात्रा पर विमान द्वारा रवाना हो रहा हूं। शाम के समय एक बार तुम्हें मिलना चाहता हूं। क्यों नहीं, 1 वुडबर्न पार्क में? मैं वहीं होऊंगा यदि तुम वहां आ सको तो। एक पंक्ति में उत्तर अवश्य देना या टेलिफोन पर अशोक (यदि मैं न मिलूं तो) को सूचित कर देना।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

श्रीमती जे. धर्मवीर को,

वायुयान से
18.11.37

प्रिय दीदी,

मुझे याद नहीं कि पिछले पत्र में मैंने आपको यूरोप जाने के विषय में लिखा था या नहीं। संभव है भूल गया होऊं। अब तक तो समाचार–पत्रों से आपको खबर मिल चुकी होगी। सीता को कल प्रातः मैंने ही बताया। रात्रिभोज पर वह हमारे साथ थी। उसने आपका पत्र और कटिंग्स मुझे दी जो मेरे पास हैं। बैगस्टीन पहुंचने पर उन्हें पढ़ूंगा, यानी की 22 तारीख को। मेरा पता होगा–द्वारा पोस्टे रेस्टान्टे बैगस्टीन, आस्ट्रिया। मेरे लेख से आपे अनुमान लगा सकती हैं कि जहाज कितने आराम से उड़ रहा रहा है। इस समय हम इलाहाबाद वे जोधपुर के मध्य आधे रास्ते में हैं। रात हम यहीं बिताएंगे। अगली रात हम बगदाद में बिताएंगे। 25 दिन लगातार अत्यधिक व्यस्त रहने के बाद मैं शांति महसूस कर रहा हूं। आप सब लोग कैसे है? नारंग और सैंडी का क्या हाल है? रघु मेरे पास परिचय पत्र लिखवाने के लिए आया था। मैंने उससे शाल व साड़ी की बात की उसने मना कर दिया। मेरी अनुपस्थिति में (जब मैं कुर्सियांग में था) उसने मेरी मां से धृष्टता की थी, इसलिए उसे वहां से निकाला गया। सीता ठीक–ठाक है और जल्दी ही वह कलकत्ता वालों जैसी बन जाएगी। जब भी विएना के प्रोफेसर डेमेल लाहौर जाएं आप उन्हें चाय पर अवश्य आमंत्रित करें तथा डा. साहब व अन्य मित्रों से भी मिलवाएं। डॉ. लीला व आपको सादर।

आपका
सुभाष चंद्र बोस
सेवा में
श्रीमती जे. धर्मवीर
पेडिहम ग्रुव
लाहौर

ओरिएंटूरिस्ट लिमिटेड को,

स्टेट होटल
(जोधपुर राजपूताना)

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

जोधपुर व कराची के बीच
19.11.37
सेवा में,
प्रबंधक
ओरिएंटूरिस्ट लिमिटेड
कलकत्ता

प्रिय महोदय,

इससे पूर्व कि मैं भारत की सीमा पार करूं मेरी कलकत्ता से नेपल्स की हवाई जहाज की यात्रा की व्यवस्था के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। एयरपोर्ट पर भी मेरी पर्याप्त देखभाल की गई। कई उलझनों व कष्टों से बच गया। यह प्रसन्नता का विषय है कि ऐसे कार्यों के लिए कोई भारतीय कंपनी है। मैं आशा करता हूं कि आपको अपने इस कार्य में पूर्ण सफलता मिलगी और लोग अपना पूरा सहयोग आपको देंगे।

आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

हॉज एरिका
बैगस्टीन
25.11.37

प्रिय श्रीमता वैटर,

नेपल्स से बैगस्टीन जाते हुए मैंने रोम से आपको पत्र लिखा था जो आपको अवश्य मिल गया होगा।

22 तारीख की रात यहां पहुंच गया था और अगले दिन स्नानोपचार शुरू कर दिया। यहां प्रवास के दौरान एक पुस्तक लिखने का विचार है। इस बार यूरोप में कम दिन रह पाऊंगा, क्योंकि मुझे जनवरी के प्रथम सप्ताह में हर हाल में वापस पहुंचना है। स्वदेश लौटने से पूर्व विएना जाकर सभी मित्रों से मिलना चाहता हूं।

आशा है आप व डा. वैटर पूर्णतः स्वस्थ होंगे। आप दोनों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

मैं,
तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :– आशा है कि आगामी जनवरी में मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना जाऊंगा। मेरे स्वदेश लौटने के कारणों में एक कारण यह भी है।

सुभाष चंद्र बोस

मैगियोर रैपिकावोली को,

पोस्ट रेस्टांटे
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
25.11.37

प्रिय मैगियोर रैपिकावोली,

नैपाली से बैगस्टीन जाते हुए रास्ते में रोम से मैंने आपको पत्र लिखा था जो आपको अवश्य मिल गया होगा। उस पत्र में मैंने आपको सूचित किया था कि 1937 में 21 नवंबर को प्रातः नैपोली में जब मैं वायुयान से एयरपोर्ट पर उतरा तो इटली पुलिस ने मुझे काफी परेशान किया। किसी अन्य यात्री का सामान खोलकर नहीं देखा गया। किंतु मेरे सभी संदूक आदि खोलकर उलट–पुलट कर दिए गए और एक–एक वस्तु का निरीक्षण किया गया। उसके बाद वे मुझे कमरे में ले गए और मेरी जेबें देखी गई। उसके पश्चात मैं कहां और किस मार्ग से जा रहा हूं, के बारे में पूछताछ की गई। आप अनुमान लगा सकते हैं कि मुझे कितना गुस्सा आया होगा और मैंने के अल. एम. कंपनी, जिनके वायुयान में मैं यात्रा कर रहा था, के एजेंट को इस विषय में शिकायत की। उन्होंने मुझसे क्षमा मांगी और विश्वास दिलाया कि सामान्य कस्टम अधिकारियों के कारण यह परेशानी नहीं हुई है बल्कि इटली की पुलिस की वजह से यह सब हुआ है।

टरवीसियों पहुंचने पर पुनः मेरे सामान, पासपोर्ट आदि का निरीक्षण किया गया और अनेकों प्रश्न पूछे गए। इटली की सीमा पार करने के पश्चात मैं सुख की सांस ले पाया।

यह अनुभव मेरे लिए बिल्कुल नया था। क्योंकि पहले जब कभी भी मैं इटली आया हूं ऐसा व्यवहार मेरे साथ कभी नहीं हुआ। इस अनुभव के विषय में मैं भारतीय प्रेस को भी लिखने की सोच रहा हूं, किंतु मैंने सोचा कि लिखने से पूर्व आपको इस विषय में कोई कार्रवाई करने का मौका अवश्य दे दूं। मैं आपको केवल यह बताना चाहता हूं कि मैं इस विषय में बहुत गंभीर हूं।

अपना उपचार कराने के बाद, लगभग एक माह में मैं भारत वापस लौटूंगा। यदि मेरा पुनः इसी प्रकार अपमान होना है तो मैं इटली के मार्ग से जाना नहीं चाहूंगा। मैं किसी अन्य एयरपोर्ट से रवाना होऊंगा, यदि इटली की सरकार मुझे विश्वास नहीं

दिला देती कि मुझे मामलें में उन्हें कष्ट देना उचित नहीं होगा।

पहले मेरा विचार सरकार के प्रमुख को सीधे पत्र लिखने का था, किंतु फिर मैंने अपने इस मामले में उन्हें कष्ट देना उचित नहीं समझा।
कृपया यथाशीघ्र उत्तर देने की व्यवस्था करें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
(भारत से)

मारक्विस आफ जेटलैंड को,

पोस्ट रेस्टांटे
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
21.11.37

महोदय,

बहुत अल्पावधि के लिए मैं उपचार की दृष्टि से बैगस्टीन, यूरोप आया हूं और शीघ्र ही स्वदेश रवाना होऊंगा ताकि जनवरी मध्य में कलकत्ता अवश्य पहुंच जाऊं। वैसे तो जल्दी जाने की कोशिश करूंगा।

यहा उपचार में एक माह या पांच सप्ताह का समय लगेगा और स्वदेश लौटने से पूर्व मैं कुछ समय के लिए इंग्लैंड भी आना चाहूंगा ताकि मित्रों व अपने भतीजे से, जो लंदन में अध्ययनरत है, मिलने जाना चाहता हूं। सन 1933 से 1936 के मध्य जब मैं यूरोप में था तब मेरे लंदन जाने पर प्रतिबंध था। मेरे पासपोर्ट पर इस प्रतिबंध का कोई जिक्र नहीं हैं किंतु मौखिक रूप में मुझे आदेश दिए गए हैं कि मुझे इग्लैंड विशेष अनुमति लिए बिना नहीं जाना होगा, मैं उन आदेशों की कद्र करता हूं। मैं नहीं जानता कि वह प्रतिबंध क्या अभी भी लागू हैं। यदि हैं तो मैं प्रार्थना करता हूं कि वह प्रतिबंध हटा लिया जाए और मुझे इंग्लैंड जाने की अनुमति प्रदान की जाए।

यदि मुझे इंग्लैंड जाने की अनुमति दे दी जाती है तो में वहां ज्यादा से ज्यादा एक सप्ताह या दस दिन बिताना चाहूंगा। यदि मेरा उपचार लंबी अवधि तक चला तो वहां मेरा रूकना और कम समय के लिए भी हो सकता है, क्योंकि 10 जनवरी को मुझे भारत लौटना ही है और मैं यहां अधिक समय तक रूक नहीं सकता।

यदि आप मेरी इंग्लैंड यात्रा पर से प्रतिबंध हटाने के आदेश यथाशीघ्र जारी कर देंगे तो मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा।

आपका हृदय से धन्यवाद।.

मैं,

सुभाष चंद्र बोस

माननीय मारक्विज आफ जेटलैंड

सैक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया

व्हाइटहॉल

एस. डब्ल्यू–1

श्रीमती जे. धर्मवीर को,

बैगस्टीन

आस्ट्रिया

6.12.37

प्रिय दीदी,

आपका 23 नवंबर का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र 30 तारीख को मिला। मैंने ट्रिब्यून को एयरमेल द्वारा एक अपील प्रकाशित करने के लिए भेजी थी और यह भी कहा था कि संपादक भी उस पर अपनी टिप्पणी करें। उसकी प्रति आपको भी भेज रहा हूं। यदि वह प्रकाशित न हो तो आप उन्हें अनुस्मारक भिजवा दें और संलग्न प्रति भी।

गांधीजी की कलकत्ता यात्रा के दौरान, विशेष रूप से 1 नवंबर को उनकी असफलता के पश्चात, मेरा वहां होना असंभव था, क्योंकि हमने उन्हें 2000 बंदियों व राजनैतिक बंदियों की समस्या सुलझाने के लिए आमंत्रित किया था। स्पष्ट रूप से मै उस वृद्ध व्यक्ति के विषय में यही कह सकता हूं कि उसने मुझे वहां से हटने पर मजबूर किया और मेरे स्वास्थ्य को सुधारने का मौका दिया। उनके आग्रह के बिना मेरा वहां से हटना कठिन था।

क्षमा रखें, आपको श्री जुत्शी का समाचार कहां से मिला? मेरे विचार से आपका उनसे पत्राचार नहीं है। यदि आपका समाचार वाहक सही है तो मुझे श्री जुत्शी की परेशानी पर आश्चर्य है।

यहां मौसम बहुत अच्छा है, सब ओर बर्फ है, सूरज भी चमक रहा है। सूखी सर्दी पड़ रही है। मैं आजकल स्नानोपचार कर रहा हूं। इस माह के अंत तक करता रहूंगा। जनवरी मध्य तक वायुयान द्वारा कलकत्ता पहुंचने का प्रयास है। इस बीच यदि अनुमति मिल गई तो कुछ समय के लिए लंदन भी जाऊंगा। अभी इस विषय में अनिर्णय की स्थिति बनी हुई है।

आपने प्रोफेसर डेमेल को चाय पर आमंत्रित किया, जानकर प्रसन्नता हुई। वे भले आदमी हैं और साथ ही एक अच्छे सर्जन भी हैं।

मेरे कलकत्ता से रवाना होने से पूर्व सीता ने मुझे आपका खत दिया था, किंतु सामान में न जाने कहां इधर–उधर हो गया। वह मेरे साथ नहीं आ पाया जैसा कि मैंने चाहा था।

सीता के विषय में एक बात आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उसमें आत्मविश्वास आ गया है जो अच्छी बात हैं उसे देखकर प्रतीत होता है कि उसमें अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता है और दुनिया में बिना भय और उत्सुकता के विचार कर सकती है। (पता नहीं अपनी बात व्यक्त कर पाया हूं अथवा नहीं)।

आपके पत्र से पता चला कि सीता शायद सुश्री नायर के साथ गांधीजी से मिलने गई थी। मैंने उससे नाराज हूं। मैं उसका परिचय करवाता तो बात कुछ और होती। मैंने इस विषय में उससे बात की थी तब उसने गांधीजी से मिलने की कोई उत्सुकता नहीं दिखाई, मैंने भी उस पर जोर डालना उचित नहीं समझा।

मेरी मां तथा भाभी सहित परिवार के सभी सदस्य तब ठीक–ठाक थे, जब मैं कलकत्ता से रवाना हुआ। कृपया मेरी ओर से सीता को कह दें कि जब भी उसे नौकरों से काई परेशानी हो तो वह 1 वुडबर्न पार्क, अथवा 38/2 एल्गिन रोड में लोगों से संपर्क करे या वहां चली जाए। इसमें झिझके नहीं। वहां सभी उसे बहुत चाहते हैं और प्रसन्नतापूर्वक उसकी सहायता करेंगे।

कृपया (अस्पष्ट), नौकरों तथा सैंडी को मेरी नमस्ते कहें। सोमनाथ तक मेरी संवेदनाएं पहुंचा दें। साहब व लडकियों को तथा आपको प्यार।

वी.
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

कुरहॉस एरिका
बैगस्टीन
आस्ट्रिया
18.12.37

प्रिय श्रीमती वुड्स,

कुछ सप्ताह पूर्व परिवर्तन के लिए जब मैं यहां आया तभी से आपको पत्र लिखने की सोच रहा हूं। जनवरी में पुनः भारत लौट जाऊंगा। स्वदेश लौटने से पूर्व लंदन जा रहा हूं, वहां 10 जनवरी को पहुंचूंगा। ब्रिटिश सरकार ने अंततः मेरे इंग्लैंड

जाने पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया है इसलिए मैं वहां आ रहा हूं।

क्या आप गुप्त रूप से यह पता लगा सकेंगी कि इग्लैंड यात्रा के दौरान मेरी मुलाकात प्रैजीडेंट डी वलेरा से हो सकेगी? यह औपचारिक मुलाकात होगी। अनुमानित तिथि 16 से 19 जनवरी के मध्य हैं कृपया इस विषय को बिल्कुल गुप्त रखें और प्रेजीडेंट व उनके सचिव के अतिरिक्त किसी को इसका आभास न होने दें। पत्र का उत्तर देते समय पता लिखें–सुश्री ई. शैंक्ल पोस्टे रेस्टान्टे, बैगस्टीन और इस बंद रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजें। यह सावधानी आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे डब्लिन पहुंचने से पूर्व किसी को इस बात का पता भी चले।

परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं व आपके सादर प्रणाम!

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

कुरहॉस हॉकलैंड
(अथवा पोस्टे रेस्टांटे)
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
30.12.37

प्रिय श्रीमती वुड्स,

22 तारीख का पत्र 26 तारीख को मुझे मिला, धन्यवाद।

मैं आपको अपना कार्यक्रम भेज रहा हूं जिससे आपक सब व्यवस्था कर सकेंगी। 10 जनवरी को लंदन पहुंच रहा हूं और 17 जनवरी तक वहां रहूंगा। 18 जनवरी को निश्चय ही डब्लिन में मुलाकात की व्यवस्था हो जानी चाहिए। डब्लिन आना और जाना ही हो पाएगा। 17 की रात लंदन से चलूंगा और 18 को प्रातः 6.45 पर डब्लिन पहुंचूंगा। उसी रात 8 बजकर 10 मिलट पर वापस लौटूंगा। 19 की प्रातः लंदन पहुंचूंगा और साथ 5:30 पर कुछ घंटे रूकने के पश्चात उपद्वीप के लिए रवाना होऊंगा, जहां से वापस भारत की यात्रा पर चल दूंगा।

यह आवश्यक नहीं कि होटल में मेरे ठहरने की व्यवस्था हो लेकिन पत्रकार मिलने आएंगे इसलिए ठीक रहेगा । शैलबर्न ठीक रहेगा, यदि वही सबसे अच्छा होटल है तो। यदि मुझे होटल जाना ही है तो सबसे अच्छे में ही क्यों न जाऊं। आप जैसा उचित समझें वैसी व्यवस्था कर दें।

8 जनवरी की प्रातः मैं यह स्थान छोड़ दूंगा।

भारतीय समाचार–पत्र प्रेसीडेंट देव और मेरा चित्र, जब मैं उनसे मिलूं तब, चाहते हैं। जब पिछली बार मैं डब्लिन आया था तब वे बहुत निराश हुए थे। क्या आप ऐसी व्यवस्था कर पाएंगी? इसका उत्तर देने की आवश्यकता नहीं, यदि प्रेसीडेंट महोदय को काई आपत्ति न हो तो कृपया व्यवस्था कर दें। मैं उसी शाम डब्लिन पहुंच सकता हूं और जहाज ले सकता हूं तो मुझे गांव जाने में भी कोई आपति नहीं होगी।

फिलहाल इस मुलाकात को गुप्त ही रखें क्या आपने पत्र को इसी प्रकार सील किया था, जिस हालत में वह डब्लिन से रवाना किया था।

सुभाष चंद्र बोस

मैगियोर रैपिकावोली को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
31.12.1937

प्रिय मैगियोर रैपिकावोली,

दो पत्रों के साथ आपके द्वारा भेजे गए तार के लिए शुक्रिया। मैं आपको पहले पत्र नहीं लिख पाया, क्योंकि अपने कार्यक्रम के बारे में निश्चित नहीं था। यद्यपि अभी भी मेरा कार्यक्रम निश्चित नहीं है, लेकिन फिर भी प्रोविजनल प्रोग्राम भेज रहा हूं।

सबसे पहले तो आपको यह बताना चाहता हूं कि नेपल्स की घटना समाप्त हो चुकी है। इस विषय में आपको जो असुविधा हुई उसके लिए क्षमा चाहता हूं।

12 जनवरी को मैं नेपल्स से डच के. अल. एम. वायुयान लूंगा। 11 या 20 जनवरी को मैं रोम से निकलूंगा। यदि सीधे भारत रवाना होऊंगा तो 12 तारीख को जहाज पकडूंगा। यदि स्वदेश लौटने से पूर्व इंग्लैंड गया तो 21 तारीख को जहाज लूंगा। इस बात को मद्देनजर रखते हुए कि संभवतः जनवरी में मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया जाऊं, ब्रिटिश सरकार ने इंग्लैंड जाने पर मुझ पर लगाए गए प्रतिबंध को हटा दिया है। लंदन के मेरे मित्र मुझ पर दबाव डाल रहे हैं कि स्वदेश लौटने से पूर्व मैं लंदन अवश्य आऊं। मेरा वहां जाना न जाना भारत वाले निर्देशों पर निर्भर करता है। फिलहाल भारत से पत्राचार कर रहा हूं और चार पांच दिन में अंतिम निर्णय ले पाऊंगा।

रोम से निकलने समय मैं चाहूंगा कि सरकार के प्रमुख से भेंट संभव हो सकें। कठिनाई सिर्फ यह है कि इस बात को पूर्ण गुप्त रखा जाना चाहिए। इसमें शक नहीं

कि यदि यह बात खुल गई तो भारत में मुझे सरकार की ओर से कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। क्या आप समझते हैं कि मुलाकात को पूर्णतः गुप्त रख पाना संभव हो सकेगा। यदि हां तो कृपया अतिशीघ्र मुझे सूचित करें। यहां यह भी बता दूं कि सारे प्रयत्नों के बावजूद भी यदि यह समाचार फैल ही गया तो मैं साफ इंकार कर दूंगा और आपकी ओर से भी इंकार किया जाना आवश्यक है। नवंबर में जब मैं इटली से गुजर रहा था तो इटली के समाचार–पत्रों में टिप्पणी सहित यह खबर प्रकाशित हुई कि मैं सरकार प्रमुख से मिलने जा रहा हूं। लंदन द्वारा पूछताछ की गई और मुझे यह कहना पड़ा कि मैं तो इटली के अधिकारी तक से नहीं मिला, और यह सत्य भी था।

यदि पहले जहाज से लौट आया तो 9 तारीख या 10 तारीख को रोम के लिए अवश्य हो रवाना हो जाऊंगा। बाद का जहाज लेने पर मैं प्राग से जहाज द्वारा 20 तारीख को दोपहर 4 बजे रोम पहुंचूंगा और रात की गाड़ी से नेपल्स के लिए रवाना होऊंगा ताकि अगली सुबह जहाज पकड़ सकूं। अतः मुलाकात 11 तारीख अथवा 20 तारीख की दोपहर या सायं 5:30 या 8 बजे निश्चित होनी चाहि।

यदि सीधे यहां से नपल्स गया तो ट्रेन पकड़ूंगा। यदि इंग्लैंड से नेपल्स गया तो वायुयान द्वारा प्राग, वेनिस, विएना और रोम होता हुआ जाऊंगा। यदि किसी कारण से मुलाकात संभव न हो पाए तो कृपया मुझे सूचित कर दें ताकि मैं अमैस्टरडम से मर्सिलेस होता हुआ नेपल्स के लिए रवाना हो जाऊं।

यदि स्वदेश रवाना होने से पूर्व इंग्लैंड गया तो हर हालत में 8 जनवरी की प्रातः यह स्थान छोड़ दूंगा।
नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित!

मैं,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जिन्ना को

26, मैरीन ड्राइव, बंबई
15 मई, 1938

प्रिय श्री जिन्ना,

पिछली रात मैंने अपनी स्थिति को साफ करते हुए एक पत्रक आपको दिया था। आपने मुझसे पूछा था कि वे कौन से रचनात्मक प्रस्ताव हैं, जो हमें तैयार करने हैं। मैं सोचता हूं कि वह पत्रक स्वतः स्पष्ट है। आपके सुझाव पर कांग्रेस की प्रतिक्रिया की जानकारी देने के बाद मेरी समझ से अब अगले कदम की तरफ बढ़ना ही बचता है– यानी ऐसी प्रतिनिधि समिति की नियुक्ति, जो समझौते की शर्तों को संयुक्त रूप

से तय करे।
सद्भावना सहित आपका,

सुभाषचंद्र बोस
जिन्ना की ओर से
लिटिल गिब्स रोड
मालाबार हिल, बंबई
16 मई, 1938

प्रिय श्री बोस

14 मई को कांग्रेस की तरफ से मुझे भेजा गया आपका पत्रक मिल चुका है और 15 मई, 1938 को लिखा गया आपका पत्र भी। अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की कार्यकारी परिषद् तथा कार्यसमिति की जून के पहले सप्ताह में होने वाली बैठक में यह मामला रखा जाएगा और जितना जल्द संभव हो, मैं निर्णय से आपको अवगत कराऊंगा।
सद्भावना सहित आपका

एम. एम. जिन्ना
जिन्ना की ओर से
6 जून, 1938

प्रिय श्री बोस

15 मई को जारी आपके पत्र तथा कांग्रेस की तरफ से मुझे दिए गए आपके पत्रक पर अपने वायदे के मुताबिक मैं अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की कार्यकारी परिषद के निर्विरोध निर्णय को इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूं।

सद्भावना सहित आपका
एम. एम. जिन्ना
प्रस्ताव सं. 1

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की कार्यकारी परिषद ने कांग्रेस की तरफ से अध्यक्ष श्री सुभास बोस द्वारा अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के अध्यक्ष श्री जिन्ना को 14 मई को भेजे गए पत्रक तथा 15 मई को जारी उनके पत्र पर विचार किया है। परिषद के लिए मुस्लिम लीग को हिंदुस्तान का मुसलमानों के आधिकारिक तथा प्रतिनिधि संगठन मानने के आधार के अतिरिक्त हिंदू–मुसलमान समझौते के मसले के सवाल पर अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के लिए कांग्रेस से बातचीत कर पाना या कोई हल निकालना संभव नहीं हैं।

प्रस्ताव सं. 2

22 मई, 1938 को जारी री गांधी के पत्र पर भी परिषद ने विचार किया है और उसकी राय मैं प्रस्तावित समिति के सदस्यों में ऐसे किसी मुसलमान को शामिल करना संभव नहीं, जिसकी नियुक्ति कांग्रेस करे।

प्रस्ताव सं. 3

कार्यकारी परिषद अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की घोषित नीति को स्पष्ट करना चाहती है। कि अन्य सभी अल्पसंख्यकों के अधिकारों तथा हितों को सुरक्षित रखना चाहिए, ताकि उनके बीच सुरक्षा–बोध कायम किया जा सके तथा उनके विश्वास को जीता जा सके। अखिल भारतीय मुस्लिम लीग अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधियों से तथा आवश्यकता पड़ने पर अन्य दूसरे हित'–समूहों से राय–मशविरे के लिए तैयार रहेगी।

जिन्ना को

निम्नलिखित तार 21 जून, 1938 को कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा श्री जिन्ना को भेजा गया:

कल लौटा। पत्र मिला। धन्यवाद। पावती सूचना में देरी के लिए खेद है– सुभाष बोस

जिन्ना को

38/2 एल्गिन रोड, कलकत्ता
27 जून, 1938

प्रिय श्री जिन्ना,

मुस्लिम लीग की कार्यकारी परिषद के प्रस्तावों को स्पष्ट करते हुए इसी महीने की 6 तारीख का लिखा आपका पत्र समय से कलकत्ता पहुंच गया था; लेकिन मैं यात्रा पर था, इसलिए इस महीने की 20 तारीख को हुई वापसी से पहले उन्हें नहीं देख सका। मैंने आपके पत्र के मिलने की सूचना आपको अगले दिन ही तार द्वारा दे दी थी।

9 जुलाई को वर्धा में कांग्रेस की कार्यसमिति बैठक करेगी। आपका पत्र और मुस्लिम लीग के प्रस्ताव समिति के सामने रखे जाएंगे और उसके बाद मैं इसके निर्णय से जितना जल्दी हो सके, अवगत कराऊंगा।

शुभकामनाएं
सद्भावना सहित आपका
सुभाषचंद्र बोस

जिन्ना को

वर्धा
25 जुलाई, 1938

प्रिय श्री जिन्ना,

6 जून, 1938 को लिखे आपके पत्र के साथ संलग्न मुस्लिम लीग की परिषद के प्रस्ताव के संदर्भ में कार्यसमिति इस पर हर संभव ध्यान दे चुकी है। लीग–परिषद का पहला प्रस्ताव लीग के महत्व को परिभाषित करता है। यदि इसका अर्थ है कि संप्रदाय के सवाल पर समझौते की शर्तों पर विचारार्थ किसी समिति के गठन से पूर्व ही प्रस्ताव में परिभाषित महत्व को कांग्रेस को स्वीकृति दे देनी चाहिए तो यह निश्चित ही कठिन है। यद्यपि प्रस्ताव में 'सिर्फ' विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है, पर प्रस्ताव की भाषा से विशेषण की मौजूदगी समझ में आ जाती है। कार्यसमिति को पहले ही लीग को विशेष महत्व देने के खिलाफ चेतावनी मिल चुकी है। मुसलमानों के ऐसे भी कई संगठन हैं, जो मुस्लिम लीग से स्वतंत्र रहकर सक्रिय हैं। उनमें से कुछेक कांग्रेस के निष्ठावान समर्थक भी हैं। इसके अतिरिक्त कुछ मुसलमान व्यक्तिगत तौर पर कांग्रेसी हैं, जिनमें से कुछ लोग देश में महत्वपूर्ण असर भी रखते हैं। फिर सीमांत प्रांत भी है, जहां मुसलमान बहुतायत में हैं और मजबूती से कांग्रेस के साथ हैं। आप देखेंगे कि इन तथ्यों की रोशनी में कांग्रेस के लिए लीग–परिषद के पहले प्रस्ताव को स्वीकार करना अंसभव ही नहीं, बल्कि अनुचित भी है। सुझाव यह है कि संगठन के सेवाभाव की निजी निष्ठा से तय होती है। इसलिए कार्यसमिति आशा करती है कि लीग–परिषद कांग्रेस से अंसभव को क्रियान्वित करने के लिए नहीं कहेगी। क्या यह पर्याप्त नहीं है कि लीग के साथ कांग्रेस दोस्ताना संबंध रखने तथा काफी विवादास्पद हो चुके हिंदू–मुसलमान समस्या पर सम्मानजनक समझदारी स्थापित करने की इच्छा ही नहीं रखती, बल्कि उत्सुक भी है? इस मौके पर शायद कांग्रेस का दावा सही है। यद्यपि यह स्वीकार किया जा चुका है कि कांग्रेस की विभिन्न पंजिकाओ में दर्ज लोगों में अधिकांशतः हिंदू ही हैं, फिर भी कांग्रेस में मुसलमान तथा विभिन्न मतों में विश्वास रखनेवाले अन्य समुदायों के सदस्यों की संख्या भी अच्छी–खासी है। हिंदुस्तान को अपना घर मानने वाले सभी समुदायों, सभी जातियों, सभी नस्लों तथा सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व कांग्रेस की अटूट परंपरा रही है। इसके गठन के समय से ही प्रतिष्टित मुसलमान इसके अध्यक्ष तथा महासचिव रहे हैं, जिनमें कांग्रेस और देश का अटूट विश्वास निहित था। कांग्रेस की परंपरा रही है कि जिस मत में किसी कांग्रेसी का पालन–पोषण हुआ है, यद्यपि वह उसमें विश्वास रख सकता है, लेकिन इस मताग्रह के आधार पर कोई कांग्रेस का सदस्य नहीं बनता है। वह कांग्रेस के बाहर या भीतर कांग्रेस के राजनीतिक सिद्धांतों तथा नीतियों की स्वीकृति के आधार पर है। इसलिए कांग्रेस किसी भी तरह सांप्रदायिक संगठन नहीं है। सच तो यह है कि इसने सांप्रदायिक भावना के खिलाफ हमेशा ही संघर्ष

किया है, क्योंकि यह भावना पवित्र और निष्कलंक राष्ट्रीयता की प्रगति के लिए हानिकारक है।

लेकिन जब कांग्रेस दावा करती है और कमोबेश सफलता के साथ अपने दावे को पूरा करने की बातें कर भी चुकी है; तो यदि आपकी परिषद कांग्रेस के साथ समझ बना पाए ताकि हम राष्ट्रीय भाईचारा कायम कर पाएं तथा अपनी साझी नियति की अनुभूति के लिए लगनपूर्वक काम कर सकें, तो कार्यसमिति को प्रसन्नता होगी।

परिषद के दूसरे प्रस्ताव के संदर्भ में मुझे डर है कि इसमें व्यक्त इच्छा के अनुसार चलना कार्यसमिति के लिए संभव नहीं है।

तीसरे प्रस्ताव को समझने में कार्यसमिति असमर्थ है। जहां तक कार्यसमिति का विचार है, सिर्फ मुस्लिम–हिंतो को पूरा करने तथा इसकी सदस्यता भी सिर्फ मुसलमानों को मुहैया करवाने की दृष्टि से मुस्लिम लीग पूर्णतः एक सांप्रदायिक संगठन है। यह हिंदू–मुसलमान समस्या पर कांग्रेस के साथ समझौता नहीं चाहती है। जबकि अन्य अल्पसंख्यकों को प्रभावित करने वाले मसलों पर समझौता नहीं चाहती है। जहां तक कांग्रेस की बात है; यदि अन्य अल्पसंख्यक कांग्रेस के प्रति कोई शिकायत रखते हैं, तो यह उनके साथ विचार–विमर्श के लिए हमेशा तैयार है। क्योंकि कांग्रेस अपने संविधान में जाति और संप्रदाय में भेद किए बिना पूरे हिंदुस्तान की प्रतिनिधि होने के कारण ऐसा करने के लिए बाध्य है।

अपने पूर्वानुमान से मैं आशा करता हूं कि समझौते तक पहुंचने के लिए हमारी बातचीत में नया मोड़ लाना हमारे लिए संभव होगा।

एक सुझाव है– जैसा कि पूर्व पत्राचार पहले ही प्रकाशित हो चुका है– जनता को विश्वास में लेना और हमारे बीच के पत्राचारों को प्रकाशित करना अच्छा होगा। यदि आप सहमत हों, तो इन दस्तावेजों को शीघ्र ही प्रकाशन के लिए जारी कर दिया जाएगा।

सद्भावना सहित आपका

सुभाषचंद्र बोस

जिन्ना की ओर से

मालाबार हिल, बंबई
2 अगस्त, 1938

प्रिय श्री बोस,

25 जुलाई, 1938 के आपके पत्र को मैंने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की

कार्यकारी परिषद के सामने रखा।

कार्यकारी परिषद ने आपके तर्कों पर समुचित ध्यान दिया और गंभीरतापूर्वक विचार–विमर्श किया, जिसमें प्रस्ताव नं0 1 में व्यक्त महत्व के दावे पर जोर न देने के लिए कहा गया है। मैं बताना चाहता हूं कि महत्व को परिभाषित करते हुए स्वीकृति के लिए परिषद किसी मंशा से प्रेरित नहीं थी, पर सिर्फ एक स्वीकृत तथ्य को ही व्यक्त किया था।

परिषद् पूर्णतः स्वीकार करती है कि मुस्लिम लीग हिंदुस्तान के मुसलमानों का आधिकारिक तथा प्रतिनिधी संगठन है। इस स्थिति को 1916 में लखनऊ में हुए कांग्रेस–लीग समझौते में भी स्वीकार किया गया था और तब से 1935 में हुए जिन्ना–राजेंद्र प्रसाद वार्तालाप तक इस पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया गया। इसलिए अखिल भारतीय मुस्लिम लीग को न तो कांग्रेस से किसी स्वीकृति या पहचान की आवश्यकता है और न इस बंबई में कार्यकारी परिषद् के प्रस्ताव से। लेकिन तथ्यों की रोशनी में लीग के महत्त्व वास्तव में इसके अस्तित्व– पद ही कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू द्वारा उनके ही एक वक्तव्य में प्रश्नचिन्ह लगाया गया था, जिसमें उन्होंने जोर दिया था कि देश में सिर्फ दो दल हैं—अंग्रेज सरकार तथा कांग्रेस। कार्यकारी परिषद् द्वारा इसी आधार पर कांग्रेस को सूचना देना आवश्यक समझा गया, ताकि इन दो संगठनों की बातचीत आगे बढ़ सके।

हिंदू–मुसलमान समस्या के समाधान की खातिर बातचीत में शामिल होने के लिए कांग्रेस ही मुस्लिम लीग के पास गयी थी। इस महत्वपूर्ण तथ्य के अतिरिक्त इसने लीग के आधिकारिक और प्रतिनिधि चरित्र तथा इसी तरह हिंदुस्तान के मुसलमानों की तरफ से समझौता करने के अधिकार का पूर्वानुमान कर लिया था।

परिषद् इस तथ्य से परिचित है कि एन. डब्ल्यू. एफ. पी. में कांग्रेस गठजोड़ से बनी सरकार है तथा अन्य प्रांतों में भी कांग्रेस संगठन में कुछ मुसलमान हैं। लेकिन परिषद् का यह दृष्टिकोण है कि कांग्रेस के ये मुसलमान अपनी संख्या नगण्य होने के नाते हिंदुस्तान के मुसलमानों का न तो मुसलमान अपनी संख्या नगण्य होने के नाते हिंदुस्तान क मुसलमानों का न तो प्रतिनिधित्व करते हैं और न ही कर सकते हैं। कांग्रेस का सदस्य होने के नाते वे मुसलमान समुदाय की तरफ से प्रतिनिधित्व करने या बोलने के लिए अयोग्य बन चुके हैं। ऐसा न भी हो, लेकिन राष्ट्रीय चरित्र के बारे मे आपके पत्र में किया गया कांग्रेस का पूरा दावा धराशायी हो जाएगा। आपके पत्र में उल्लिखित लेकिन बेनाम 'अन्य मुसलमान संगठनों' के संदर्भ में परिषद् सोचती है कि यदि उनके बारे में चर्चा नहीं हुई होती, तो अधिक उचित होता। यदि वे हिंदुस्तान के मुसलमानों की तरफ से सामूहिक या व्यक्तिगत तौर पर बोलने की स्थिति में रहते तो हिंदू–मुसलमान

समस्या के समाधान के लिए मुस्लिम लीग के साथ बातचीत कांग्रेस–अध्यक्ष तथा श्री गांधी के जरिए नहीं शुरू हुई होती।

जहां तक मुस्लिम लीग की सोच है, वह यह नहीं समझती कि किसी मुस्लिम राजनीतिक संगठन ने हिंदुस्तान के मुसलमानों की तरफ से अब तक बोलने या बातचीत कर सकने का दावा किया है। इसलिए यदि आपने इस सिलसिले में अन्य मुस्लिम संगठनों को भी पत्र लिखा है, तो यह बहुत ही अफसोसनाक है।

परिषद् भी समान रूप से 'काफी विवादास्पद हो चुके हिंदू–मुसलमान समस्या' का समाधान निकालने और इस तरह सारे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मजबूती देने के प्रति उत्सुक है। लेकिन यह सूचना पीड़ादायक है कि मुद्दे को ढंकने तथा बातचीत की प्रगति को धीमा करने के लिए उपयुक्त तर्क दिए जा रहे हैं।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर परिषद् यह बताना चाहती है कि कांग्रेस द्वारा गठित की जाने वाली समिति में मुसलमानों के प्रवेश को वह अवांछनीय मानती है, क्योंकि यह समिति हिंदू–मुसलमान समस्या के निराकरण के लिए बैठक बुलाएगी और इस तरह इस मुद्दे की प्रकृति के कारण वह न तो हिंदुओं का विश्वास जीत पाएगी और न ही मुसलमानों का, बल्कि वास्तव में उसकी स्थिति काफी हास्यास्पद हो जाएगी। इसलिए परिषद् उपरोक्त बातों की रोशनी में इस समस्या पर विचार करने का अनुरोध करती है।

तीसरे प्रस्ताव के संदर्भ में 15 मई, 1938 के आपके पत्र में अन्य अल्पसंख्यकों की चर्चा के मद्देनजर, अपनी घोषित नीति के समर्थन में जब कभी आवश्यक हुआ, तो मुस्लिम लीग ने उनसे विचार–विमर्श के लिए इच्छा जाहिर की। प्रकाशन के लिए पत्राचारों को जारी करने की आपकी इच्छा के संबंध में परिपद् को उनके साथ इस पत्र के भी प्रकाशन में कोई आपत्ति नहीं है।

सद्भावना सहित आपका
सुभाषचंद्र बोस

जिन्ना को

38/2 एल्गिन रोड, कलकत्ता
16 अगस्त, 1938

प्रिय श्री जिन्ना,

2 अगस्त, 1938 के आपके पत्र के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। इसके जवाब में हुई देरी के लिए खेद है। मुद्दा काफी महत्वपूर्ण है, इसलिए मैं इसे कांग्रेस कार्यसमिति के सामने सितंबर में होने वाली बैठक में रखना चाहूंगा। इसके बाद ही

मैंआपको जवाब दूंगा।

हार्दिक शुभकामनाएं।

सद्भावना सहित आपका

सुभाषचंद्र बोस

जिन्ना को

दिल्ली

2 अक्तूबर, 1938

प्रिय श्री जिन्ना,

2 अगस्त, 1938 को लिखा गया आपका पत्र कार्यसमिति के सामने रखा गया। आवश्यक विचार–विमर्श के बाद निम्नलिखित उत्तर को प्रस्तावित किया गया:

यद्यपि आपके पत्र में गलतियां हैं, इसलिए उन पर केंद्रित होने से कोई उद्देश्य पूरा नही होगा। आपके पत्र का सार तत्व यही है कि हिंदुस्तान में मुसलमानों के आधिकारिक संगठन के रूप में मुस्लिम लीग अपना महत्व स्वीकार किए जाने के मामले में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर कांग्रेस से उम्मीद नहीं करती । यदि लीग द्वारा यही नजरिया अपनाया जाता है, तो मैं यह कहने के लिए अधिकृत हूं कि समझौते की शर्तों को तय करने में लीग द्वारा नियुक्त होने वाली समिति से वार्ता के लिए कांग्रेस कार्यसमिति तैयार है। वार्ता में कार्यसमिति तैयार है। वार्ता में कार्यसमिति का प्रतिनिधित्व इसके पांच सदस्य करंगे।

पूर्व पत्राचार पहले ही प्रकाशन के लिए जारी कर दिए हैं। इसलिए अब मैं इस पत्र को भी प्रेस के लिए जारी करने की छूट ले रहा हूं।

सद्भावना सहित आपका

सुभाषचंद्र बोस

जिन्ना की ओर से

कराची; 9 अक्तूबर, 1938

प्रिय श्री बोस,

2 अक्तूबर को लिखा गया आपका पत्र मुझे मिल चुका है जो लीग की कार्यकारी परिषद् के समक्ष रखा गया। उसके उत्तर में मैं यह कहने के लिए अधिकृत हूं कि 2 अगस्त को लिखे मेरे का कांग्रेस की कार्यसमिति द्वारा गलत अर्थ निकाले जाने के लिए कार्यकारी परिषद् को काफी अफसोस है। यह पत्र काफी स्पष्ट था। इसे समझने के लिए किसी व्याख्या या पुनर्व्याख्या की आवश्कता नहीं हैं । मेरे उपरोक्त पत्र में कहे गए आधार पर हिंदू–मुसलमान समस्या के समाधान के लिए मुस्लिम लीग अब भी

बातचीत के लिए तैयार है। 5 जून को जारी हमारे पूर्वोक्त तीन प्रस्तावों में निर्दिष्ट आधार पर कांग्रेस द्वारा तय समिति के लिए लीग अपने प्रतिनिधि भेजेगी।

सद्भावना सहित आपका
एम. ए. जिन्ना

जिन्ना को

कांग्रेस कार्यसमिति ने वर्धा में 11 से 16 दिसंबर, 1938 तक चले विचार–विमर्श में श्री जिन्ना के 9 अक्तूबर, 1938 को लिखे गए पत्र पर विचार किया और पत्राचार बंद करते हुए निम्नलिखित शर्तों के साथ श्री जिन्ना को पत्र लिखने के लिए अध्यक्ष को अधिकृत किया:

16 दिसंबर, 1938

प्रिय श्री जिन्ना,

9 अक्तूबर, 1938 को लिखे गए आपके पत्र पर कार्यसमिति ने विचार किया और समिति उसमें उल्लिखित निर्णय पर दुख प्रकट करती है। बातचीत के आधार के संदर्भ में कांग्रेस मुस्लिम लीग की परिषद् से सहमत नहीं हैं और परिषद् चूंकि कांग्रेस और लग के बीच किसी भी बातचीत के लिए समझौते के आधार को अनिवार्य करने पर जोर देती है, इसलिए यह समिति दुख प्रकट करती है कि हिंदू–मूसलमान समस्या के समाधान की दिशा में वह कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं है।

आपके पत्र का जवाब देने में हुई देरी के लिए क्षमाप्रार्थी हूं, लेकिन कार्यसमिति की बैठक तथा मुद्दे पर उसके विचार करने से पहले मैं कुछ भी कहना नहीं चाहता था।

पूर्व पत्राचार पहले ही प्रकाशित हो चुका है, इसलिए मैं इस पत्र को भी प्रेस में देने की छूट ले रहा हूं।

सद्भावना सहित आपका

सुभाषचंद्र बोस
बोस–गांधी पत्र–व्यवहार
(दिसंबर 1938–मई 1939)

महात्मा गांधी को

26, मैरीन ड्राइव, बंबई

21 दिसंबर, 1938

मेरे प्रिय महात्माजी,

वर्धा से सार्जेंट जी.डी. बिड़ला द्वारा लाया गया पत्र मेरे लिए एक बड़े सदमे की तरह था। मुझे याद है कि मैंने आप से बार-बार बंगाल की स्थिति पर बातचीत की है। वर्धा में दूसरे दिन एक बार फिर हमारे बीच इस पर बातचीत हुई थी। मेरे भाई शरत ने भी इस मुद्दे पर आपसे बात की थी। हम दोनों की यह समझ बनी है कि बंगाल में साझा मंत्रिमंडल के विचार से आप हमेशा सहमत रहे हैं। मैं नहीं जानता कि मेरे वर्धा छोड़ने के बाद ऐसा क्या हुआ, जिसने आपके दृष्टिकोण को इतना बदल दिया कि आप अब लिखते हैं–मैं पहले से कहीं अधिक समझता हूं कि उन्हें मंत्रिमंडल आदि को बहिष्कृत करने का निर्णय नहीं करना चाहिए इत्यादि। पत्र बताना है कि मेरे वर्धा छोड़ने के बाद सार्जेंट एच. आर. सरकार, सार्जेंट जी.डी. बिड़ला तथा मौलाना आजाद साहब ने आपसे भेंट की थी। स्पष्ट तौर पर आपने उनसे बातचीत के बाद अपनी राय बदली है। इसलिए स्थिति यह है कि अब आप इन तीन महानुभावों की राय को बंगाल में कांग्रेस संगठन चलाने वालों की राय की तुलना में अधिक महत्व देते हैं।

कोई भी बात हल्के तौर पर लिखने की आपकी आदत नहीं है, इसलिए मैं आपके सुविचारित दृष्टिकोण को पूरा महत्व देना उचित समझूंगा। आपके पत्र ने एक संकट खडा कर दिया है और इसलिए अब स्पष्ट शब्दों में कहना मेरे लिए आवश्यक हो गया है और ऐसा करने से पहले मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूं।

तो सीधे मुद्दे पर आएं– इस समस्या को लेकर मौलाना साहब तथा मेरे बीच मौलिक मतभेद हैं। यह मतभेद असम में मंत्रिमंडलीय संकट का सामना करते वक्त ही स्पष्ट हो गया था। शायद अब मैं कह सकता हूं कि मैं सही था और मौलाना साहब गलत। लेकिन यदि सरदार पटेल सौभाग्यवश मेरे बचाव में नही आए होते, तो मौलाना साहब ने शिलांग में मुझे झुका दिया होता और शायद जब दिल्ली में कार्यसमिति की बैठक हुई थी, तब आपने भी मौलाना साहब के खिलाफ मेरे दृष्टिकोण का समर्थन नहीं किया होता, तो ऐसे स्थिति में असम में गठजोड़ नहीं बना होता।

सिंध के मसले पर एक तरफ मौलाना साहब तथा दूसरी तरफ मेरे सहित कार्यसमिति के कई सदस्यों के बीच मतभेद रहा है और अब बंगाल की समस्या है, जिस पर हमारे दृष्टिकोण पूर्णतया विरोधी हैं।

ऐसा लगता है कि मौलाना साहब का दृष्टिकोण बंगाल जैसे मुसलमान-बहुल प्रांतों में सांप्रदायिक मुसलमान मंत्रिमंडल को बने रहने देने का है। हक मत्रिमंडल तथा सिकंदर हयात मंत्रिमंडल को सरकार में बने रहने की अनुमति दे देनी चाहिए। मौलाना साहब सिंध में अल्लाबख्श मंत्रिमंडल को हमारे समर्थन देने से स्पष्टतया अप्रसन्न हैं।

इसके विपरित मैं समझता हूं कि जितना जल्द हो सके, हक मंत्रिमंडल को हटा देना ही राष्ट्र–हित में है। जितने दिनों तक यह प्रतिक्रियावादी मंत्रिमंडल सरकार में बना रहेगा, बंगाल का वातावरण उतना ही सांप्रदायिक होता चला जाएगा तथा मुस्लिम लीग के सामने कांग्रेस उतनी ही कमजोर होती चली जाएगी। यही बात सिकंदर हयात मंत्रिमंडल के लिए भी सच है।

काफी पहले नवंबर की शुरूआत में ही हम मंत्रिमंडल को छोड़ने के लिए सार्जेंट नलिनीशंकर तैयार हो चुके थे। वर्धा के लिए कलकत्ता से मेरे रवाना होने से पहले 9 दिसंबर को अंतिम बार मुझे विश्वास था कि अगले बजट–सत्र से पहले ही वे सरकार से इस्तीफा दे देंगे। लेकिन किस बात ने उनाके एक ही सप्ताह में अपनी जगह से हटा दिया, मैं नहीं जानता। सरकार से नलिनीबाबू के निकलने की बजाय आपके प्रभाव का इस्तेमाल उनको सरकार से चिपके रहने देने में होने जा रहा है, जबकि उनके कई नजदीकी मित्र भी हम मंत्रिमंडल से उनका बाहर निकल आना पसंद करते हैं। इससे मुझे आश्चर्य हुआ कि ऐसे गंभीर मसले पर अपने निर्णय पर पहुंचने से पहले आपने मुझसे राय–मशविरे की भी जरूरत नहीं महसूस की।

इन परिस्थितियों में हमारे सामने दो ही विकल्प हैं। यदि आप अब भी अपने पत्र में लिखे हुए निर्णय को सही मानते हैं और उसका पालन करना चाहेंगे, तो मुझे आपनी स्थिति पर सावधानीपूर्वक विचार करना होगा। स्पष्टतया मैं किसी ऐसी नीति का समर्थक नहीं हो सकता, जिसे मैं पूरी तरह गलत मानता हूं। विकल्प के तौर पर, बंगाल में कांग्रेस संगठन चलाने के लिए जिम्मेदार लोगों को गंभीरता से लेना चाहिए और उनका कार्य ऐसे लोगों द्वारा बाधित नहीं होना चाहिए, जो अवसर मिलने पर प्रांतीय अधिकारियों को नजरअंदाज कर आनंदित होते हैं।

बंगाल जैसे प्रांत में गठजोड़ मंत्रिमंडल को इतना महत्व देने के कारणों की विस्तृत चर्चा करना मेरे लिए आवश्यक है। आप याद कर सकते हैं कि इस विषय पर मैंने आपसे शेगांव में बातचीत की थी, लेकिन मुझे जो कहना है, मैं फिर दुहराता हूं।

आज स्थिति यह है कि सिंध, बंगाल तथा पंजाब में गठजोड़ मंत्रिमंडल व्यावहारिक राजनीति के दायरे में है। यदि यह बदलाव किया जा सके (और मेरी विनम्र राय में ऐसा हो सकता है) तो कांग्रेस ग्यारह प्रांतीय सरकारों की तरफ से अंग्रेज सरकार से बातचीत करने की स्थिति में आ सकती है। इसका अर्थ होगा कि हिंदू–मुसलमान समझौते के बिना भी कांग्रेस अग्रेज सरकार से बातचीत के लिए ब्रिटेन–शासित हिंदुस्तान की जनता का अधिकृत तौर पर प्रतिनिधित्व कर सकेगी और इस तरह मुस्लिम लीग से समझौता न हो पाने की स्थिति में भी हम अपंग नहीं होंगे।

शेष तीन प्रांतों में गठजोड़ मंत्रिमंडल बनाने की कोशिश के दौरान हमें उन हिंदू–मुसलमान समस्याओं पर अपने निर्णय की घोषणा में देरी नहीं करनी चाहिए; जो कांग्रेस और मुस्लिम लीग की बातचीत यदि हुई होती, तो विचार–विमर्श के लिए सामने आए होते। साथ ही, कांग्रेस सरकार के खिलाफ मुसलमानों की शिकायतों की जांच भी करनी चाहिए। ये दो कदम समझदार मुसलमानों को यहबताने में सहायक होंगे कि हम उनकी शिकायतों को समझने तथा मनुष्य के नाते जहां तक संभव हो, उनको दूर करने के लिए उत्सुक हैं।

यदि हम उपरोक्त कार्यक्र कांग्रेस की त्रिपुरी बैठक से पहले ही क्रियांवित कर लेते हैं, तो हम अंग्रेज सरकार के सामने पूर्ण स्वराज की अपनी राष्ट्रीय मांग रख सकते हैं ओर एक निश्चित अवधि के अंदर निश्चित उत्तर की मांग भी कर सकते हैं। गहरे अंतर्राष्ट्रीय संकट की पृष्ठाूमि में अंग्रेज सरकार के लिए हमारी मांग को आसानी से अस्वीकार करना संभव नहीं होगा और यदि वे इसे अस्वीकार करते हैं या हमें असंतोषजनक उत्तर देते हैं, तो हम एक आवश्यक नोटिस देकर अपना सत्याग्रह अभियान शुरू कर सकते हैं। कोई भी अनुमान लगा सकता है कि वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय संकट अगले 12 या 13 महीनों तक जारी रहेगा। ऐसी संकटकालीन स्थिति में अंग्रेज सरकार भारत में किसी संघर्ष के जारी रहने की अनुमति नहीं देगी। यदि उनको यूरोप में कमजोर नहीं होना है, तो उन्हें भारत के साथ शांति बनाए रखनी पड़ेगी। परिणामस्वरूप 1939 में बडे पैमाने पर सत्याग्रह अभियान कांग्रेस और अंग्रेजी सरकार के बीच शांति–सभा की तरह हमारी विजय के प्रस्थान–बिंदु जैसा अपरिहार्य हो जाएगा।

उपरोक्त तरीके से इस योजना में शेष तीन प्रांतो के गठजोड़ मंत्रिमंडलों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। व्यक्तिगत रूप से मेरे दिमाग में कोई संदेह नहीं है कि बंगाल और पंजाब में गठजोड़ मंत्रिमंडल बनने तथा राज्यों की प्रजा में व्यापक जागरूकता होने से कांग्रेस के साने अंग्रेज सरकार की स्थिति काफी कमजोर हो जाएगी (हम सभी जानते हैं कि वे ब्रिटीश भारत में बंगाल तथा पंजाब तथा भारतीय हिंदुस्तान में राजकुमारों के सहयोग से वर्तमान समय में टिके हुए हैं)। 1939 में आंतरिक तथा बाहरी दृष्टिकोण से बहुत अनुकूल स्थितियों में एक सत्याग्रह अभियान चलेगा।

उपरोक्त तर्कों के आधार पर मैं शैष तीन प्रांतो के गठजोड़ मंत्रिमंडों में अतिरिक्त महत्व देने के पक्ष में हूं, लेकिन इन तर्कों के बिना भी मेरी निगाह में गठजोड मंत्रिमंडल आवश्यक है।

मैं कह सकता हूं कि यदि कार्यसमिति के कुछ सदस्य अभी शामिल कर लिए जाएं, तो त्रिपुरी में कांग्रेस के एकत्रित होने के पहले ही हमारे पास तीन और गठजोड़ मंत्रिमंडल होंगे। यदि कार्यसमिति के सुयोग्य सदस्यगण इसे आगे कुछ मतभेद जैसा

न समझें, तो मैं इस जिम्मेदारी को उठाने के लिए तैयार रहूंगा। अंत में कह सकता हूं कि इस मोड़ पर सिकी नीति को मैं अपने लिए आत्मघाती मानता हूं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस मामले में पुनर्विचार के बाद उपरोक्त दिशा में ही हमें चलते रहने देना तथा हमें अपना आशीर्वचन देना आपके लिए संभव होगा। इसके विपरीत यदि आप पत्र में लिखे अपने निर्णय पर डटे रहेंगे, तो मैं आपसे निवेदन करूंगा कि शीघ्र ही मुझे अपने वर्तमान उत्तरदायित्व से मुकत होने की आज्ञा दें—क्योंकि मैं उस नीति का एक हिस्सा नहीं हो सकता, जिसे मैं राष्ट्र—हित में गंभीरतापूर्वक हानिकारक मानता हूं।

मैं इस महीने की 19 तारीख को ही मद्रास चला गया होता, लेकिन गले में खराबी के कारण 2 या 3 दिनों के लिए रूक गया।

प्रणाम सहित—

आपका स्नेहाकांक्षी,

सुभाष,

महात्मा गांधी के लिए

झीलगड़ा; 24 मार्च, 1939; महात्मा गांधी, बिड़ला हाउस, नई दिल्ली।

कांग्रेस के कार्य के संबंध में शुरूआत करने के लिए आपकी सलाह तथा निकट भविष्य में मेरी आपसे भेंट न हो पाने की दृष्टि से मैं डाक द्वारा आपसे परामर्श आरंभ कर देना जरूरी समझता हूं। मैं लिख रहा हूं—सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली 25 मार्च, 1939 अध्यक्ष बोस, झीलगुड़ा।

आपका तार। कल मैं मौलाना आजाद को देखने हेतु इलाहाबाद में था, क्योंकि वह मुझसे किसी बातचीत के लिए उत्सुक थे। ट्रेन से पत्र डाला है। आपके उत्तर की प्रतीक्षा में। आशा करता हूं कि आपकी प्रगति जारी रहेगी। प्यार—बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 25 मार्च, 1939, महात्मा गांधी, बिड़ला हाउस, नई दिल्ली।

आपका आज का तार। आपका पत्र न मिलने तक मैं अपने पत्र को डाक में डालने से रोक रहा हूं—सुभाष।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 25 मार्च; 1939 महात्मा गांधी—नई दिल्ली।

आपका पत्र नहीं मिला। इसलिए मैं अपना पत्र डाक में डाल रहा हूं—सुभाष।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा,
25 मार्च, 1939

मेरे प्रिय महात्माजी,

मुझे उम्मीद है कि आपने आज शनिवार 25 तारीख को जारी मेरा वक्तव्य पढ़ा होगा, जो मैंने अपने ऊपर कांग्रेस के मामले में व्यवधान डाले का आरोप लगाने वालों के जवाब में लिखा है। हमारे सामने नई कार्यसमिति बनाने की तात्कालिक और महत्वपूर्ण समस्या है। इस समस्या का संतोषजनक समाधान पहले कुछ अन्य बड़े महत्व की समस्याओं पर विचार की मांग करता है, तो भी मैं पहली समस्या को पहले रखूंगा:

इस समस्या के संदर्भ में यदि आप मेरे निम्नलिखित विचारों पर अपनी राय देते हैं, तो आपका आभारी रहूंगा।

(1) कार्यसमिति के गठन के लिए आपकी वर्तमान धारणा क्या है? इसे समांगी होना चाहिए या कांग्रेस के ही विभिन्न समूहों तथा खेमों को मिलाकर बनाना चाहिए, ताकि समिति पूर्णता में जहां तक संभव हो कांग्रेस की आमसभा की संरचना का प्रतिनिधित्व कर सके?

(2) यदि आप इस दृष्टिकोण को ही मानते हैं कि समिति आपने चरित्र में समांगी होनी चाहिए, तो दृष्टिकोण एक तरफ मेरे जैसे लोग यथा दूसरी तरफ सरदार पटेल और अन्य जैसे लोग, एक ही समिति मं नहीं हो सकते। मुझे यहां कहना पड़ेगा कि मैंने समिति के समांगी होने के विचार का हमेशा विरोध किया है।

(3) यदि आप सहमत है कि विभिन्न समूहों या दलों का कार्यसमिति में प्रतिनिधित्व होना चाहिए, तो उनका संख्यात्मक प्रतिनिधित्व कितना होगा? मेरी समझ से कांग्रेस में दो प्रमुख दल या खेमे हैं। वे कमोबेश समान रूप से संतुलित हैं। अध्यक्षीय चुनाव के दौरान हमारे पास बहुतमत था। त्रिपुरी में वह स्थिति नहीं थी, लेकिन यह ऐसा कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के रवैए के चलते हुआ। यदि सी.एस. पी. तटस्थ नहीं रही होती, तो सारे व्यवधानों के बावजूद (उनके बारे में मैं अगले पत्र में लिखूंगा या जब हम मिलेंगे, तो बताऊंगा) हमने खुले सत्र में बहुमत बना लिया होता।

(4) यदि मैं सात लोगों का नाम सुझाऊं और आप सरदार से भी सात नामों को पूछें तो मेरी समझ से वह न्यायसंगत व्यवस्था होगी।

(5) फिर यदि मुझे कांग्रेस–अध्यक्ष बने रहना है और सुचारू रूप से कार्यरत रहना है, तो मेरी पसंद का कांग्रेस सचिव होना आवश्यक हैं।

(6) कोषाध्यक्ष के नाम का सुझाव सरदार दे सकते हैं।

अब मैं पंडित पंत के प्रस्ताव के एक या दो मुख्य आशयों का जिक्र करूंगा (इस विषय पर मैं दूसरे पत्र में विस्तार से लिखूंगा)। सबसे पहले तो यह कि क्या उसे आप मुझमें अविश्वास के प्रस्ताव के रूप में लेते हैं और क्या आप चाहेंगे कि मैं इसके परिणामस्वरूप त्यागपत्र दे दूं? मैं इस सवाल को इसलिए उठा रहा हूं, क्योंकि इस प्रस्ताव की नई व्याख्याएं इस प्रस्ताव के समर्थकों द्वारा भी हो चुकी हैं।

फिर दुसरे यह कि पंडित पंत के प्रस्ताव के पारित होने के बाद कांग्रेस–अध्यक्ष की वास्तव में क्या स्थिति है? कांग्रेस के संविधान की धारा 15 कार्यसमिति की नियुक्ति के संदर्भ में अध्यक्ष को कुछ अधिकार देती है और संविधान में वह धारा आज भी मौजूद है। साथ ही, पंडित पंत का प्रस्ताव कहता है कि कार्यसमिति आपकी इच्छा से मेरे द्वारा गठित की जाएगी। परिणाम क्या होगा? क्या मेरा कोई स्थान है? क्या आपको ही अपनी स्वतंत्र रूचि और इच्छा के अनुसार कार्यसमिति के सदस्यों की पूरी सूची बनानी है और मुझे सिर्फ आपके निर्णय की घोषणा कर देनी है? यह प्रयास कांग्रेस के संविधान को बदले बिना ही धारा 15 को निष्प्रभावी बना देगा।

ऐसी स्थिति में पंडित पंत का प्रस्ताव स्पष्टतः असंवैधानिक तथा अधिकारातीत है। वास्तव में पंडित पंत का प्रस्ताव काफी देर से मिलने के कारण स्वयं ही निरर्थक हो गया था। जिस तरह कांग्रेस के खुले सत्र के दौरान राष्ट्रीय मांग–प्रस्ताव में श्री शरतचंद्र बोस के प्रस्ताव को अनुचित कहने का अधिकार मेरे पास है। फिर भी विशुद्ध रूप से संवैधानिक दृष्टिकोण के गठन के संबंध में मैं अतिम हिस्से को अनुचित कहगा चाहूंगा, क्योंकि वह संविधान की धारा 15 के प्रतिकूल है। लेकिन स्वभावतः लोकतांत्रिक होने के नाते मैं तकनीकी तथा संवैधानिक मामलों को अधिक महत्त्व नहीं देता। इसके अतिरिक्त, मुझे संविधान का सहारा लेना उस वक्त कायरतापूर्ण लगा, जब मुझे अपने विरूद्ध मतदान की संभावना का अहसास हुआ था।

इस पत्र को खत्म करने से पहले मैं एक और बात का जिक्र करूंगा। सारी बाधाओं कमियों, कठिनाइयों के बावजूद अगर मुझे अध्यक्ष बने रहना है, तो आप मेरा किस प्रकार से काम करना पसंद करेंगे? मुझे याद है कि पिछले 12 महीनों के दौरान आपने अवसर मिलने पर (शायद प्रायः) मुझे सलाह दी थी कि आप मुझे एक कठपुतली अध्यक्ष के रूप में नहीं देखना चाहते और आप मुझे सक्रिय देखना चाहेंगे। 15 फरवरी को वर्धा में जब मुझे लगा कि आप मेरे कार्यक्रम से सहमत नहीं हैं, तो मैंने आपसे अपने

दो विकल्पों–या तो हट जाने या फिर अपनी ईमानदार सोच पर टिके रहने–की चर्चा की थी। यदि मैं ठीक से याद कर पा रहा हूं, तो आपने अपने उत्तर में कहा था कि जब तक मैं स्वेच्छया ही आपके दृष्टिकोण को स्वीकार न कर लूं, आत्म–विलोकन वास्तव में आत्म–दमन होगा और आपको आत्म–दमन की अनुमति नहीं दी जा सकती। यदि मुझे अध्यक्ष बने रहना है, तो पिछले साल दी गई सलाह की तरह इस साल भी आप मुझे कठपुतली अध्यक्ष की तरह कार्य न करने की ही सलाह देंगे।

मेरी उपरोक्त सभी बातों का मतलब यही है कि अध्यक्षीय चुनाव तथा खासतौर से त्रिपुरी कांग्रेस की सारी घटनाओं के बावजूद कांग्रेस के सभी समूहों तथा खेमों का साथ काम करना अब भी संभव है। अगले पत्र में मैं आम समस्याओं के बारे में लिखूंगा, जिनमें से कुछ आज मेरे प्रेस वक्तव्य में भी जा चुका है।

मेरा स्वास्थ्य लगातार, लेकिन धीरे–धीरे सुधर रहा है। पर्याप्त नींद का अभाव ही तीव्र स्वास्थ्य–लाभ में मुख्य बाधा है।

मैं आशा करता हूं कि भारी चिंताओं के बावजूद आपकी सेहत में लगातार वृद्धि होती रहेगी।

प्रणाम।

आपका स्नेहाकांक्षी
सुभाष

महात्मा गांधी की ओर से

ट्रेन में
(बिड़ला हाउस, नई दिल्ली)
24 मार्च, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

मैं उम्मीद करता हूं कि पूर्ण स्वास्थ्य–लाभ की तरफ तुम लगातार प्रगति कर रहे होगे। इस पत्र के साथ मुझे लिखें गए शरत के पत्र की प्रतिलिपि तथा अपना उत्तर भी मैं संलग्न कर रहा हूं। यदि यह तुम्हारी भावनाओं को भी व्यक्त करता है, तब और सिर्फ तभी, मेरी सलाह काम आएगी। किसी भी तरह केंद्र में अराजकता खत्म होनी चाहिए। तुम्हारे अनुरोध पर मैं पूरी तरह मौन हूं, यद्यपि इस संकट पर अपनी राय देने के लिए मुझ पर दबाव डाला जा रहा है।

मैंने पहली बार इलाहाबाद में इस प्रस्ताव को देखा था। प्रस्ताव मुझे काफी स्पष्ट लगता है। पहल करना तुम पर निर्भर करता है। मैं नहीं जानता कि इस राष्ट्रीय कार्य में भागीदारी के लिए तुम कितने दुरूस्त हो। यदि तुम नहीं हो, तो मैं सोचता हूं

कि सिर्फ संवैधानिक कार्यों की देखरेख करनी चाहिए।

अभी मुझे कुछ दिनों के लिए दिल्ली में ही रहना होगा।

प्यार सहित,
बापू

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा से अध्यक्ष बोस का तार संदेश : 26 मार्च, 1939

आपके पत्र की प्रतीक्षा है। आपने वक्तव्य में जैसा कहा है, हमारा मिलना आवश्यक है—सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

गांधीजी का सुभाष बोस को तार संदेश : 26 मार्च, 1939

राजकोट प्रसंग ने मुझे दिल्ली में बांध रखा है, अन्यथा अपनी कमजोरी के बावजूद मैं आपसे मिलने चल देता। मेरी सलाह में आप ही यहां आ जाएं और मेरे साथ रहें। थोड़ी—बहुत बातचीत के साथ ही मैं आपके स्वास्थ्य की देखभाल भी चाहता हूं।

प्यार—बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा
29 मार्च, 1939

मेरे प्रिय महात्माजी,

मैं आपको एक—दो दिन में फिर पत्र लिखूंगा। इस बीच एक आवश्यक मामला सामने आया हैं। ए. आई. सी. सी. के कार्यकारी महासचिव श्री नरसिंह लिखते हैं कि ए. आई. सी. सी. की बैठक के लिए वे 20 दिनों पहले का नोटिस चाहते हैं।

नियमों के अनुसार, ए. आई. सी. सी. सदस्यों को 15 दिनों पहले ही सूचित कर दिया जाता है। उनके अनुसार तब सिर्फ देश के दूर—दराज के इलाकों में सूचना पहुंचाने के लिए 4 या 5 दिन शेष रह जाते हैं। इसलिए हमें कुल 20 दिनों की आवश्यकता है।

अगर आप चाहें, तो मैं सोचता हूं कि 20 अप्रैल के आस—पास की तारीख उपयुक्त रहेगी। लेकिन एक समस्या है। मुझे पता चला है कि 20 अप्रैल को ही बिहार में गांधी सेवा संघ की बैठक होने वाली है। इसलिए इन दोनों बैठकों की तारीखें आपस में टकराएंगी। ए. आई. सी. सी. की कार्यसमिति की बैठक भी कलकत्ता में हो रही है।

वहां आपकी उपस्थिति अति आवश्यक है। क्या मैं ए. आई. सी. सी. की बैठक गांधी सेवा संघ की बैठक के पहले या बाद में करने की सलाह दे सकता हूं? पहली स्थिति में आप पहले कलकत्ता आ सकते हैं और फिर बिहार जा सकते हैं। दूसरी स्थिति में आप बिहार पहले जो सकते हैं और उसके बाद कलकत्ता आ सकते हैं। पहली स्थिति में संघ की बैठक को एक सप्ताह के लिए स्थगित करना होगा।

कृपया मामले पर विचार करें ताि ए. आई. सी. सी. को कब बैठक करनी चाहिए इस बारे में अपना 'उपदेष' दे। अंत में. ए. आई. सी. सी. की बैठक के दौरान आपकी उपस्थिति आवश्यक है।

मेरे स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। मुझे यह जानकर चिंता हुई कि आपका रक्तचाप फिर बढ़ गया है। आपके अधिक काम करने से मुझे भय होता है।

आपका स्नेहाकांक्षी

सुभाष

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा,
29 मार्च, 1939

मेरे प्रिय महात्माजी,

इस महिने की 24 तारीख को लिखा पत्र संलग्नकों के साथ प्राप्त हुआ। पहली बात; मेरे भाई शरत ने आपको अपनी ओर से पत्र भेजा है। आपको उनके पत्र से पता चलेगा कि यहां से कलकत्ता लौटने पर उनको आपका तार मिला और तब उन्होंने आपको पत्र लिखा। यदि उनको आपका तार नहीं मिला होता, तो मुझे संदेह है कि उन्होंने आपको पत्र लिखा होता।

निस्संदेह उनके पत्र में कुछ ऐसी बातें हैं, जिनमें मेरी भावनाएं भी प्रतिध्वनित होती हैं । लेकिन, वह अलग मामला है। मेरे लिए मुख्य समस्या यह है कि क्या दोनों दल अतीत को भूल कर साथ–साथ काम कर सकते हैं। यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है। यदि आप वास्तव में पक्षपात–रहित रूख अपनाते हुए दोनों दलों को विश्वास में लेते हैं, तब आप कांग्रेस को बचा सकते हैं और राष्ट्रीय एकता बनाए रख सकते हैं।

स्वभावतः मैं प्रतिरोधी व्यक्ति नहीं हूं और मैं शिकायतें भी नहीं करता । एक तरह से मेरी मानसिकता एक मुक्केबाज की है–यानी मुक्केबाजी का दौर खत्म होने के बाद हाथ मिलाना और परिणाम को खेल–भावना से स्वीकार करना।

दूसरी बातः मुझे मिलने वाले तमाम प्रतिनिधिंडलो से मिलने के बाद मैं पंत

प्रस्ताव को कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्ताव की तरह लेता हूं। हमें इसके प्रभाव में लाना चाहिए। आधिकारातीत होने की शर्त के बावजूद मैं स्वयं ही प्रस्ताव को प्रभाव में लाने की अनुमति देने तथा उस पर बातचीत कराने वाला हूं। फिर कैसे मैं इससे इंकार कर सकता हूं?

तीसरी बात: आपके सामने दो विकल्प हैं, या तो नई कार्यसमिति की संरचना के संदर्भ में आप हमारे विचारों को जगह दें या आप अपने विचारों को उनकी समग्रता में रखें। दूसरी स्थिति में हमारे रास्ते अलग हो सकते हैं

चौथी बात; कार्यसमिति तथा ए. आई. सी. सी का आव्हान करने तथा नई कार्यसमिति के शीघ्र गठन करने के लिए मानवीय आधार पर मेरे लिए जो भी संभव हैं, मैं करने को तैयार हूं। लेकिन दु:ख है कि अभी मेरा दिल्ली आना संभव नहीं है। डॉ. सुनील ने आज ही सुबह इस सदर्भ में आपकों तार भेज दिया है। मुझे आपका तार–संदेश कल ही मिल पाया।

पांचवी बात; मुझे आपके पत्र से यह जानकर आश्चर्य हुआ कि पंत के प्रस्ताव की प्रतिलिपि ए. आई. सी. सी. ने नहीं भेजी है, जबकि इसे भेजा जाना है। मुझे अब भी आश्चर्य है कि इलाहाबाद आने से पहले आपको प्रस्ताव के बारे में जानकारी नहीं थी। त्रिपुरी में यह अफवाह काफी जोरों पर है कि प्रस्ताव को आपका पूर्ण समर्थन प्राप्त था।

छठी बात; पद पर बने रहेन की मेरी जरा भी इच्छा नहीं है। लेकिन अपनी बीमारी की वजह से मेरा त्यागपत्र नहीं दिया। मैं आपसे कह सकता हूं कि त्यागपत्र देने के लिए मेरे ऊपर भारी दबाव डाला जा रहा है। इसका मैं विरोध कर रहा हूं, क्योंकि मेरे त्यागपत्र का अर्थ है कांग्रेस–राजनीति में एक नई शुरूआत, जिसको अंत तक मैं टालना चाहता हूं।

पिछले दिनों मैं ए. आई. सी. सी. के काम में व्यस्त रहा। मैं आपको कल या परसों फिर पत्र लिखता हूं। मेरा स्वास्थ्य सुधर रहा है। आशा करता हूं, आपका रक्तचाप शीघ्र ही कम हो जाएगा।

प्रणाम सहित–

आपका स्नेहाकांक्षी,

सुभाष

पुनश्च: यह पत्र आपके पत्र का जवाब नहीं है। कल जो बातें मेरे दिमाग में थीं, उनको मैंने लिख दिया है। मैं उनका जिक्र आपसे करना चाहता था।

महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली
30.3.39

मेरे प्रिय सुभाष,

मेरे तार के जवाब में इसी महीने की 26 तारीख के आपके पत्र का उत्तर देने में देर हो गई। पिछली रात मुझे सुनील का तार मिला। अभी मैं सुबह की प्रार्थना से पहले इसका उत्तर को लिखने के लिए उठा हूं।

आप सोचते हैं कि पंत का प्रस्ताव अनुचित है और कार्यसमिति से संबधित धारा पूर्णतः गैर–संवैधानिक और अधिकारातीत है, इसलिए आपका दृष्टिकोण पूरी तरह स्पष्ट है। समिति के प्रति आपकी पसंद मुक्त रहनी चाहिए। इसलिए इस संबंध में आपके कई सवालों को किसी उत्तर की जरूरत नहीं है।

फरवरी में आपसे मिलने के बाद मेरी धारणा मजबूत हुई है कि जब मूल बातों को लेकर ही मतभेद है—और जैसा कि हम इस बारे में सहमत भी हैं कि एक संयुक्त समिति हानिकर होगी तब यह मानते हुए कि आपकी नीति को ए. आई. सी. सी. का बहुमत समर्थन देता है, आपको ऐसी कार्यसमिति बनानी चाहिए, जो आपकी नीति में विश्वास करने वालों से ही बनी हो।

हां, शेगांवें आपसे फरवरी में हुई मुलाकात के वक्त व्यक्त किए गए इस दृष्टिकोण पर स्वैच्छिक आत्म–विलोकन से स्पष्ट है, आपके किसी आत्म–हनन का भागीदार होने का अपराधी मैं नहीं बनूंगा।

देश के हित में आपके दृढ़ विचारों की अवहेलना आत्म–पीड़न ही होगा। इसलिए यदि आपको अध्यक्ष के रूप में कार्य कना है, तो आपके हाथों में बेड़ियां नहीं होनी चाहिए। देश के सामने जी स्थिति हे, उसमें मध्यम–वर्ग की कोई गुंजाइश नहीं है।

जहां तक गांधीवादियों का प्रश्न है (यह शब्द मजबूरी में प्रयोग करना पड़ रहा है) वे आपके मार्ग में बाधा नहीं डालेंगे। जहां उनसे संभव होगा, वे आपकी सहायता करेंगे और जहां नहीं कर पाएंगे, वहां संयम से काम लेगें। यदि वे अल्पसंख्यक भी हों, तो भी ऐसी कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। यदि वे बहुमत में भी होते, तो भी वे अपने आपको दमित न करते।

फिलहाल जिस बात की मुझे बहुत चिंता है; वह यह कि कांग्रेस चुनाव बेकार

है, इसलिए बहुसंख्या और अल्पसंख्या का अर्थ ही नहीं रह गया। जब तक हम कांग्रेस में स्वच्छाता न ला पाएं; तब क हमें जो हथियार हमारे हाथ में है, उसी से काम लेना होगा। दूसरी बात जो मुझे चिंतित किए हुए है, वह यह है कि हमलोगों में अविश्वास पनपता जा रहा है।, जहां कार्यकर्ताओं में अविश्वास हो वहां मिलकर कार्य कर पाना असंभव है।

मेरे विचार से आपके पत्र में अन्य ऐसा कोई मुद्दा नहीं, जिसका उत्तर देना आवश्यक हो। अंत में यही कहूंगा कि आप कार्य करें, ईश्वर आपका मार्गदर्शन करेगा। डॉक्टरों की राय मानकर शीघ्र ठीक हो जाओ।

प्यार,

बापू

नोट– जहां तक मेरा संबंध है, हमारा पत्राचार प्रकाशित होना आवश्यक नहीं है। किंतु यदि आप चाहें तो मेरी ओर से स्वीकृति है।

अपने 24 तारीख के पत्र में जो आपने मुझे लिखा (ट्रेन से) तथा इसी तारीख को शरत को लिखे पत्र के विभिन्न मुद्दों पर तथा सामान्य स्थिति पर मैं लगातार विचार कर रहा हूं। यह मेरा दुर्भाग्य ही है कि ऐसी दुविधाजनक स्थिति में मैं बीमार पड़ गया हूं। किंतु घटनाक्रम इतनी तेजी से बदला कि मेरा स्वास्थ्य शीघ्र ठीक नहीं हो पाया। इसक अलावा त्रिपुरी से पहले और बाद में मुझे कुछ प्रभावशाली लोगों से–मैं स्पष्ट कर दूं, यहां आपका संदर्भ कदापि नहीं है–वह व्यवहार नहीं मिला, जिसका मैं पात्र था किंतु अपनी अस्वस्थता की वजह से ही त्यागपत्र देने का कोई कारण नहीं है। जैसा कि मैंने आपको अपने कल के पत्र में लिखा था (मेरा दूसरा पत्र) कि मेरे विचार से तो किसी भी अध्यक्ष ने तब भी त्यागपत्र नहीं दिया, जबकि वह जेल में था–यहां तक कि लंबी अवधि के लिए जेल में रहा । संभव है कि मुझे अंततः त्यागपत्र देना ही पड़े। किंतु बाद में ऐसा हुआ, तो उसके करण कुछ और ही होंगे।

मेरे विचार से मैंने अपने दूसरे पत्र में भी लिखा था कि यद्यपि मुझ पर त्यागपत्र देने के लिए दबाव डाला जा रहा है, फिर भी मैं इसका विरोध कर रहा हूं। मेरे त्यागपत्र से कांग्रेस की राजनीति में नए युग की शुरूआत हो जाएगी, जिसे मैं अंत तक बचाने का प्रयास कर रहा हूं। यदि हम अपने अलग–अलग मार्ग अपनाते हैं, तो घोर गृह–कलह होने की आशंका है। उसका परिणाम कुछ भी हो, कांग्रेस तो कमजोर होगी ही और इसका सीधा लाभ ब्रिटिश सरकार को पहुंचेगा। अतः कांग्रेस और देश को इस दुर्भाग्य से बचाना आपके हाथ में है। विभिन्न कारणों से जो लोग सरदार पटेल और उनके गुट के विरोधी हैं, वे भी आप में विश्वास रखते हैं और उनका मानना है कि आप किसी भी मुद्दे पर निष्पक्ष व शांत रूप से विचार करने में सक्षम हैं। उनके

लिए आप पार्टी या गुट से ऊपर अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व हैं, अतः आप विभाजन करने वाले तत्वों में समन्वय और एकता कर सकते हैं।

यदि वह विश्वास खंडित हो जाता है—ईश्वर क्षमा करे—और आपको विभाजन का कारण माना जाता है, तब तो फिर ईश्वर ही हमें और कांग्रेस को उबार सकता है।

इसमें शंका नहीं कि आज कांग्रेस के दो गुटों में बहुत गहरी दरार है। उस दरार को अभी भी भरा जा सकता है—वह भी आपके द्वारा। अपने राजनीतिक विपक्षियों की मानसिकता के विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता—त्रिपुरी में हमें उनके बारे में बहुत कटु अनुभव प्राप्त हुए। किंतु अपने पक्ष की ओर से मैं कुछ कह सकता हूं। हम लोग प्रतिशोध में विश्वास नहीं रखते और न ही शिकायतों का पोषण करते हैं। हम लोग क्षमा करों और भू जाओ की नीति में विश्वास रखते हुए सार्वजनिक हित में यानी भारत के राजनीतिक व आर्थिक उत्थान के लिए हाथ मिलाने को पुनः तैयार हैं। जब मैं 'अपने पक्ष' की बात करता हूं, तो उसमें सी. एस. पी. शामिल नहीं है। त्रिपुरी में ही हमें पहल बार यह आभास हुआ कि सी. एस. पी. को मानने वालों की संख्या कितनी अल्प हैं। सी. एस. पी. में उच्च पदों पर विवाद है तथा कई प्रांतीय शाखाओं ने कार्यकारी नेताओं के विरोध में आंदोलन

अपने 24 तारीख के पत्र में जो आपने मुझे लिखा (ट्रेन से) तथा इसी तारीख को शरत को लिखे पत्र के विभिन्न मुद्दों पर तथा सामान्य स्थिति पर मैं लगातार विचार कर रहा हूं। यह मेरा दुर्भाग्य ही है कि ऐसी दुविधाजनक स्थिति में मैं बीमार पड़ गया हूं। किंतु घटनाक्रम इतनी तेजी से बदला कि मेरा स्वास्थ्य शीघ्र ठीक नहीं हो पाया। इसके अलावा त्रिपुरी से पहले और बाद में मुझे कुछ प्रभावशाली लोगों से—मैं स्पष्ट कर दूं, यहां आपका संदर्भ कदापि नहीं है— वह व्यवहार नहीं मिला, जिसका मै पात्र था। किंतु अपनी अस्वस्थता की वजह से ही त्यागपत्र देते का कोई कारण नहीं है। जैसा कि मैंने आपको अपने कल के पत्र में लिखा था (मेरा दूसरा पत्र) कि मेरे विचार से तो किसी भी अध्यक्ष ने तब भी त्यागपत्र नहीं दिया, जबकि वह जेल में था— यहां तक कि लंबी अवधि के लिए जेल में रहा। संभव है कि मुझे अततः त्यागपत्र देना ही पड़े। किंतु बाद में ऐसा हुआ, तो उसके कारण कुछ और ही होंगे।

मेरे विचार से मैंने अपने दूसरे पत्र में भी लीखा था कि यद्यपि मुझ पर त्यागपत्र देने के लिए दबाव डाला जा रहा है, फिर भी मैं इसका विरोध कर रहा हूं। मेरे त्यागपत्र से कांग्रेस की राजनीति में नए युग की शुरूआत हो जाएगी, सिजे मैं अततं तक बचाने का प्रयास कर रहा हूं। यदि हम अपने अलग—अलग मार्ग अपनाते हैं, तो घोर गृह—कलह होने की आशंका है। उसका परिणाम कुछ भी हो, कांग्रेस तो कमजोर होगी ही और इसका सीधा लाभ ब्रिटिश सरकार को पहुंचेगा। अतः कांग्रेस और देश को

इस दुर्भाग्य से बचाना आपके हाथ में है। विभिन्न कारणों से जो लोग सरदार पटेल और उनके गुट के विरोधी है, वे भी आप में विश्वास रखते हैं और उनका मानना है कि आप किसी भी मुद्दे पर निष्पक्ष व शांत रूप से विचार करने में सक्षम है। उनके लिए आप पार्टी या गुट से ऊपर अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व है, अतः आप विभाजन करने वाले तत्वों में समन्वय और एकता कर सकते है।

यदि वह विश्वास खंडित हो जात हैं– ईश्वर क्षमा करे–और आपको विभाजन का कारण माना जाता है, तब तो फिर ईश्वर ही हमें और काग्रेंस को उबार सकता है।

इसमें शंका नहीं कि आज कांग्रेस के दो गुटों में बहुत गहरी दरार ह। उस दरार को अभी भी भरा जा सकता है–वह भी आपके द्वारा। अपने राजनीतिक विपक्षियों की मानसिकता के विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता–त्रिपुरी में हमें उनके बारे में बहुत कटु अनुभव प्राप्त हुए। किंतु अपने पक्ष की ओर से मैं कुछ कह सकता हूं। हम लोग प्रतिशोध में विश्वास नहीं रखते और न ही शिकायतों का पोषण करते हैं। हम लोग क्षमा करो और भूल जाओं की नीति में विश्वास रखते हुए सार्वजनिक हित में यानी भारत के राजनीतिक व आर्थिक उत्थान के लिए हाथ मिलाने को पुनः तैयार हैं। जब मैं 'अपने पक्ष' की बात करता हूं तो उसमें सी. एस. पी. शामिल नहीं हैं। त्रिपुरी में ही हमं पहली बार यह आभास हुआ कि सी. एस. पी. को मानने वालों की संख्या कितनी अल्प हैं। सी. एस. पी. में उच्च पदों पर विवाद हैं तथा कई प्रांतीय शाखाओं ने कार्यकारी नेताओ के विरोध में आंदोलन छेड़ दिया है, क्योंकि उसकी नीतियां ढुलमुल हैं। सी. एस. पी. का मुख्य वर्ग भविष्य में हमारे साथ होगा, उसके मुख्य नेतागण चाहे कुछ भी करें। यदि इस विषय में आपको कोई शंका हो तो आपको इंतजार करना होगा, सब सामने आ जाएगा।

मेरे भाई शरत द्वारा आपको लिखे पत्र से स्पष्ट है कि उनका मन कितना दुःखी है। मेरा अनुमान है कि इसका कारण त्रिपुरी में हुए कटु अनुभव हैं, क्योंकि वह ऐसे नहीं थे। यह स्वाभाविक है कि मेरी अपेक्षा उन्हें त्रिपुरी की घटनाओं का ज्यादा पता हो, क्योंकि वे आजादी से लोगों में घूम–फिर सके; उनसे मिल सके और सूचनाएं एकत्र कर सके। हालांकि मैं बिस्तर पर ही रहा, लेकिन फिर भी राजनीतिक रूप में हमारा विरोध करने वालों के व्यवहार की जानकारी तो मुझे भी कई स्वतंत्र सूत्रों से मिली ही; और मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब मैंने त्रिपुरी छोड़ा, तो मैं कांग्रेसी राजनीति के प्रति इतना निराश और अवसादग्रस्त था; जितना कि पिछले उन्नीस वर्षों में कभी नहीं हुआ। भगवान का शुक्र है कि मैं अब उन भावनाओं से उबर चुका हूं और अवसाद के क्षणों से छुटकारा पा चुका हूं।

जवाहर ने अपने किसी पत्र में (शायद प्रेस को दिए बयान में) यह टिप्पणी

की है कि मेरे नेतृत्व में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय की जितनी अधोगति हुई, उतनी कभी नहीं हुई। मैं इस टिप्पणी को गलत और अन्यायपूर्ण मानता हूं। शायद उन्होंने यह महसूस नहीं किया कि मेरी आलोचना करने के प्रयास में उन्होंने कृपलानीजी और अन्य सहयोगियों का भी अपमान किया है। कार्यालय वस्तुतः सचिव तथा उसके अधिकारियों के हाथों में होता है और यदि उसकी अधोगति हुई है, तो उसके जिम्मेदार भी वही हैं। मैं जवाहर को इस विषय में एक लंबा पत्र लिख रहा हूं। इन सब बातों का जिक्र आपसे इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि शायद अपने शरत को लिखे अपने पत्र में आंतरिक प्रशासन के विषय में कुछ लिखा है। कार्यालय को सहायता करने का एकमात्र उपाय यह है कि यदि कार्यकारिणी समिति की नियुक्ति में देरी हो भी रही हो, तब भी हमें तत्काल एक स्थाई सचिव की नियुक्ति तो कर ही देनी चाहिए। यदि शीघ्र ही कार्यकारिणी समिति की नियुक्ति की जाने वाली है, तो महासचिव की अग्रिम नियुक्ति की कोई आवश्यकता नहीं है।

पंत–प्रस्ताव के संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया से यदि आप मुझे अवगत कराएंगे, तो आपका आभारी रहूंगा। आप ऐसी लाभप्रद स्थिति में हैं कि हर स्थिति पर निष्पक्ष रूप से विचार कर सकते हैं, बशर्ते कि आपको त्रिपुरी के सभी तथ्यों का पता हो। समाचारपत्रों के निष्कर्ष के अनुसार आपसे जो भी लोग मिले हैं, वे एक पक्ष के हैं–अर्थात वे लोग, जो पतं–प्रस्ताव के समर्थक हैं। किंतु उससे कोई फर्क नहीं पडता । जो लोग आपके पास आएं उनसे प्रभावित हुए बिना आप सही संदर्भों में विचार कर सकते हैं।

पंत–प्रस्ताव के विषय में मेरी विचारधारा का आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। किंतु मेरे निजी विचार अधिक महत्व नहीं रखते । राजनीतिक जीवन में हमें लोकहित में निजी विचारों को प्रायः दबाना ही पडता है। जैसा कि मैं अपने पहले पत्र में भी लिख चुका हूं कि संवैधानिक दृष्टि से कोई पंत प्रस्ताव के विषय में कुछ भी क्यों न सोचे, लेकिन चूंकि कांग्रेस इसे पास कर चुकी है, इसलिए मैं भी से स्वीकार करता हूं। क्या आप उस प्रस्ताव को मेरे प्रति अविश्वास का प्रस्ताव मानते हैं और आज यह अनुभव करत हैं कि मुझे उसके परिणामस्वरूप त्यागपत्र दे देना चाहिए? इस विषय में आपके विचारों का मुझ पर अत्यधि प्रभाव पड़ेगा।

शायद आप इस तथ्य से परिचित हों कि त्रिपुरी में जो कुछ हुआ; वह उन्हीं लोगों के कारण हुआ, जो पंत–प्रस्ताव का प्रचार कर रहे थे और उनका कहना था कि राजकोट में आपसे टेलीफोन पर बात हो गई है और आप उस प्रस्ताव को अपना पूर्ण समर्थन दे रहे हैं। इसी आशय की एक रिपोर्ट एक दैनिक समाचारपत्र में प्रकाशित भी हुई थी। बाद में गुप्त रूप से वार्तालाप मं यह बात स्पष्ट हुई कि ऐसे किसी भी प्रस्ताव को आपका और आपके रूढ़िवादी अनुयायियों का समर्थन प्राप्त नहीं है। व्यक्तिगत रूप

से मैं ऐसी रिपोर्टों में विश्वास नहीं करता, किंतु उनके लिए तो वह वोट प्राप्त करने के लिए उपयोगी विधि थी। जब पहली बार सरदार पटेल ने मुझे पंत का प्रस्ताव दिखाया (वहां राजेन बाबू और मौलाना आजाद भी उपस्थित थे) तो मैंने सुझाव दिया था कि यदि इसमें कुछ परिवर्तन कर दिए जाएं, तो संशोधित प्रस्ताव को कांग्रेस सामूहिक रूप में पास कर देगी। संशोधित प्रस्ताव सरदार पटेल के पास भिजवाया भी गया था, किंतु उन्होंने इस विषय में कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की। उनके व्यवहार से लग रहा था कि कोई शब्द, कौमा तक भी परिवर्तित न किया जाए। मेरा विश्वास है कि राजकुमारी अमृत कौर ने आपको संशोधित प्रस्ताव दिया होगा। यदि पंत–प्रस्ताव आपके सिद्धातों, नेतृत्व और मार्गदर्शन में विश्वास व्यक्त करता है; तो वह संशोधित प्रस्ताव मं ही है। किंतु यदि उनका उद्देश्य, अध्यक्ष पद के चुनाव के परिणाम का बदला लेना है; तो संशोधित प्रस्ताव का कोई मूल्य नहीं। व्यक्तिगत रूप से मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि पंत–प्रस्ताव आपके सम्मान, प्रभाव और अधिकार में वृद्धि मैसे कर रहा है। विषय समिति में 45 वोट आपके विरोध में थे और खुले अधिवेशन में, अन्य गुट कुछ भी क्यों न कहें, किंतु इस विषय में मुझे स्वतंत्र सूत्रों से जो सूचना मिली है उसके अनुसार कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के तटस्थ रहने पर भी यदि अधिक नही तो भी 2200 में से 800 वोट आपके विरुद्ध थे। यदि कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी अपना मत देती, जैसी कि उसने विषय समिति में किया, तो प्रस्ताव में थोड़ा–सा संशोधन कर देने मात्र से प्रस्ताव के विरोध में कोई मत नहीं पंड़ता और सभी कांग्रेसी भी एक स्वर में आपका नेतृत्व स्वीकार करते। इससे ब्रिटिश सरकार के समक्ष एवं पूरे विश्व में आपका सम्मान आसमान को छूता। इसके उलट; अब जो लोग हमसे बदला लेना चाहते थे, उन्होंने आपकी छवि को हानि ही पहुंचाई है। परिणामस्वरूप आपके सम्मान और प्रभाव को बढ़ाने की अपेक्षा उन्होंने आपके सम्मान को अकल्पनीय हानि पहुंचाई है– क्योंकि अब पूर विश्व को यह लग रहा है कि यद्यपि आप और आपके समर्थकों को त्रिपुरी में बहुमत प्राप्त हुआ; किंतु आपके विरोधी भी पर्याप्त मात्रा में हैं। यदि इन विषयों को यूंही छोड़ दिया गया, तो इनकी संख्या और शक्ति बढ़ने की संभावना है। उस पार्टी का क्या भविष्य होगा; जिसमें युवा, तर्कशील और प्रगतिशील लोगों को दबाया जाए। उसका भविष्य भी ग्रेट ब्रिटेन की लिबरल पार्टी जैसा ही होगा।

पंत प्रस्ताव के विषय में अपनी प्रतिक्रिया से मैंने आपको काफी परिचित करा दिया है। यदि आप भी अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करांएगे, तो आभारी रहूंगा।

क्या आप पंत प्रस्ताव को स्वीकृति देते हैं या फिर आप उस संशोधित रूप में, जैसा कि हमने किया था, एक स्वर में स्वीकृति प्राप्त करते देखना पसंद करते हैं?

एक और विषय है, जिसका जिक्र अपने इस पत्र में करना चाहूंगा—वह है हमारा कार्यक्रम । वर्धा में 15 फरवरी को भी मैंने अपने विचार आपके समक्ष व्यक्त किए थे। तब से अब तक की घटनाओं ने मेरे विचारों को मजबूत किया है और मेरी भविष्यवाणी को भी सही सिद्ध किया है। कई महीनों से मैं अपने मित्रों से कह रहा हूं कि वसंत ऋतु में यूरोप में संकट उत्पन्न होगा, जो ग्रीष्मकाल तक चलेगा। पिछले आठ माह से अंतर्राष्ट्रीय स्थितियां और हमारी घरेलू परिस्थितियां मुझे प्रेरित कर रही हैं कि अब समय आ गया है, जब हम पूर्ण स्वराज के मुद्दे पर बल दे सकते हैं । यह हमारा और देश का दुर्भाग्य है कि हमारे आशावाद में आपने विश्वास नहीं किया। आप कांग्रेस के आंतरिक भ्रष्टाचार के विचार से घिरे हैं। अहिंसा की भी आपको अत्यधिक चिंता है। यद्यपि मैं भी आपके इस विचार में पूर्ण रूप से आपके साथ हूं कि कांग्रेस क आंतरिक भ्रष्टाचार को हमें जड़ से दूर करना है; किंतु यदि हम पूरे भारत पर दृष्टि डालें—तो मेरे विचार से ऐसा नहीं है कि आज पहले की अपेक्षा भ्रष्टाचार और हिंसा बढ़ी है, बल्कि पहले की अपेक्षा आज कम ही हुई है। पहले बंगालख पंजाब और संयुक्त राज्यों में योजनाबद्ध क्रांतिकारी हिंसा का बोलबाला था, किंतु आज वहीं अहिंसा का विचार पनपा है। बंगाल के विषय में तो मैं आधिकारिक तौर पर कह सकता हूं कि इस प्रांत मं आज जैसी अहिंसा पिछले तीस वर्षों में कभी देखने में नहीं आई। इन कारणों से या अन्य कारणों से हमें ब्रिटिश सरकार के सम्मुख एक अल्टीमेटम के रूप में अपनी राष्ट्रीय मांग रखने में देरी नहीं करनी चाहिए। अल्टीमेटम का विचार आपको व पंडित जवाहरलाल नेहरू को उचित नहीं जान पड़ता, किंतु अपने राजनीतिक जीवन में आप ने सरकार के समक्ष लोकहित में असंख्य अल्टीमेटम दिए हैं। उस दिन राजकोट में भी आपने यही किया था। फिर भला अपनी राष्ट्रीय मांग को सामने रखने के लिए अल्टीमेटम देने में क्या बाधा है? यदि आप ऐसा करते हैं और साथ ही आने वाले संघर्ष की भी तैयारी करते हैं, तो मुझे विश्वास है कि हम शीघ्र ही पूर्ण स्वराज प्राप्त कर लेंगे। ब्रिटिश सरकार या तो बिना संघर्ष हमारी मांग को मान लेगी या फिर यदि संघर्ष हुआ, तो हमारी वर्तमान परिस्थितियों में वह अधिक लंबा नहीं चलेगा। इस विषय में मैं पूर्ण आश्वस्त और विश्वस्त हूं कि यदि पूर्ण हिम्मत से आगे बढ़ेंगे, तो ज्यादा—से—ज्यादा 18 माह में हम स्वराज पा जाएंगे।

इस विषय के प्रति मैं इतना आश्वस्त हूं कि इसके लिए कोई भी बलिदान देने को तैयार हूं। यदि आप संघर्ष प्रारंभ करते हैं, तो मैं यथायोग्य आपकी सहायता करूंगा। यदि आपको महसूस होता है कि कांग्रेस किसी अन्य अध्यक्ष के पदासीन होने पर अधिक अच्छी प्रकार संघर्ष कर पाएगी, तो मैं प्रसन्नतापूर्वक पद त्याद दूंगा। यदि आपको यह महसूस हो कि आपकी इच्छानुसार चुनी गई कार्यकारिणी समिति की सहायता से संघर्ष अधिक प्रभावशाली रूप में चलाया जा सकता है, तो मैं आपकी आज्ञा

स्वीकारने को तैयार हूं। मैं तो केवल यह चाहता हूं कि आपक और कांग्रेस इस कठिन स्थिति में उठ खड़े हों और पूर्ण स्वराज्य के संघर्ष को छोड़ दें। यदि स्वयं को मिटाकर राष्ट्रीय लाभ प्राप्त होता है, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं पूर्ण रूप से स्वयं को हटा लूंगा । मेरा विचार है कि मैं मातृभमि को इतना प्यार तो करता हूं कि उसके लिए यह सब कर सकूं।

क्षमा चाहते हुए मै। यह कहना चाहूंगा कि हाल में राज्य–जन–संघर्ष को आपने जिस प्रकार चलाया, वह मुझे अच्छा नहीं लगा। राजकोट के लिए आपने आपना अमूल्य जीवन दांव पर लगा दिया और राजकोट के लोगों के हित में संघर्ष करते समय आपने शेष सभी राज्यों के संघर्ष को रोक दिया। आपने ऐसा क्यों किया? भारत में 600 के लगभग प्रांत हैं और राजकोट उनमें से सबसे छोटा प्रांत है। यदि राजकोट संघर्ष को बिच्छू–दंश की संज्ञा दी जाए, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हम पूर देश के लिए एक साथ संघर्ष क्यो न करें? इस उद्‌देश्य से एक समान योजना क्यों न बनाएं? आपके देश के लाखों–करोंड़ो लोग यही सोचते हैं किंतु आपके व्यक्तिगत सम्मान के कारण खुलेआम विचार व्यक्त नहीं करते।

अंत में मैं यह कहना चाहूंगा कि मुझे जैसे बहुत–से लोग राजकोट समझौते को उचित नहीं मानते । हम सभी ने, यहां तक कि राष्ट्रीय प्रेस ने भी, इसे एक महान विजय बताया है–किंतु इससे हमें क्या लाभ पहुंचा है? सर मौरिस ग्वेर न तो हमारे पक्ष के व्यक्ति हैं और न ही वे स्वतंत्र एजेंट हैं। वे सरकारी व्यक्ति हैं। उन्हें एंपायर बनाने की क्या तुक है? हम आशा लगाए हैं कि वे हमारे पक्ष में निर्णय देंगे–किंतु कल्पना कीजिए कि यदि वे हमारे विपक्ष में निर्णय देते हैं, तो हमारी क्या दशा होगी?

इसके अलावा की मौरिस ग्वेर फेडरल योजना के अभिन्न अंग हैं, जिसके विपक्ष में हमने अपनी राय व्यक्त की है। ब्रिटिश सरकार से विवाद होने की स्थिति में किसी हाई कोर्ट के जज को अथवा सेशन जज को मध्यस्थ बनाने की अपेक्षा उचित होगा कि ह म ब्रिटिश सरकार से ही समझौता कर लें। किंतु ऐसे समझौते से हमें क्या लाभ होगा? फिर कई लोग अभी तक यह समझ नहीं पा रहे हैं कि वायसराय से मुलाकत कर लेने के पश्चात भी आप दिल्ली में ही क्यों टिके हुए हैं? शायद आपकी अस्वस्थता के कारण लंबी यात्रा करने से पूर्व कुछ दिन आराम कर लेना आवश्यक हो, किंतु ब्रिटिश सरकार और उसके समर्थक यह सोच सकते हैं कि आप फेडरल चीफ जस्टिस को अत्यधिक महत्व दे रहे हैं और उसकी प्रतिष्ठा में इजाफा कर रहे हैं। मेरा पत्र बहुत लंबा हो गया है, अतः मुझे यहीं समाप्त करना चाहिए। यदि मेरी कोई बात आपको गलत प्रतीत हो, तो मुझे आशा है कि आप क्षमा कर देंगे। मुझे मालूम है कि आपको स्पष्टवादी लोग पसंद हैं। इसी कारण मैं इतना स्पष्ट और लंबा पत्र लिखने का दुःसाहस कर

पाया। मेरे स्वास्थ्य में निरंतर सुधार हो रहा है– हालांकि बहुत ही धीमी गति से। आशा है कि आपका स्वास्थ्य भी ठीक होगा और आपका ब्लड प्रेशर भी कम हुआ होगा।

आदर सहित प्रणाम–

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 1 अप्रैल, 1939; महात्मा गांधी, नई दिल्लीं

कार्यकारिणी की बैठक 28 को और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की 30 को, ताकि गांधी सेवा संघ सम्मेलन में व्यवधान पड़े। तारीख पहले घोषित हो चुकी है–सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

बिड़ला हाउस, नई दिल्ली; 2 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

तुम्हारा पहला और 31 मार्च का पत्र मिला। तुम बहुत स्पष्टवादी हो और मुझे तुम्हारे विचारों की स्पष्टवादिता बहुत अच्छी लगती है। जो विचार तुमने व्यक्त किए हैं, वे अन्य लोगों के विचारों से और स्वयं मेरे विचारों से बिल्कुल विपरीत हैं। अतः मुझे इस दरार के भरे जाने की कोई आशा नजर नहीं आती। मेरे विचार में प्रत्येक वर्ग का यह अधिकार है कि वह बिना विचारों के सम्मिश्रण के अपने विचार स्पष्ट रूप से देश के सम्मुख रखे और यदि ईमानदारी के साथ यह किया जाए, तो मुझे नहीं लगता कि इतनी कडवाहट पैदा होगी कि गृह–युद्ध में उसका अंत हो।

हम लोगों में मतभेदों का होना बुरा नहीं है, किंतु आपसी इज्जत और विश्वास का समाप्त होना बुरा है। यह सब समय के साथ ठीक होगा, क्योंकि वही सबसे अच्छा उपाय है। यदि हम लोगों में वास्तव में अहिंसा की प्रवृत्ति है तो गृह–युद्ध और कड़वाहट की जगह ही नहीं बचती।

सभी बातों पर विचार करने के पश्चात मेरी राय यह है कि तुम्हें तत्काल अपना विचार व्यक्त करने वाला मंत्रीमंडल बना लेना चाहिए। अपना कार्यक्रम भी निश्चित कर लो और आगामी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष उसे रख दो। यदि समिति उसे स्वीकार कर लेती हैं, तो तुम्हारा मार्ग सुगम हो जाएगा और अल्पसंख्यक गुट भी तुम्हारा मार्ग अवरूद्ध नहीं कर पाएगा । दूसरी ओर यदि तुम्हारा

कार्यक्रम समिति द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है, तो तुम्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए और तब समिति को अपना अध्यक्ष चुनने दो फिर, तुम स्वतत्र रूप से अपने विचारों के अनुसार देश को शिक्षित कर सकोंगे। मैं यह राय पंडित पंत के प्रस्ताव से बिल्कुल पृथक रूप में दे रहा हूं।

अब तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर। उन दिनों मैं बीमारी की हालत में बिस्तर पर पड़ा था, जब पंड़ित पंत का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। मथुरादास ने, जो उस दिन राजकोट में ही थे, मुझे यह संदेश दिया कि पुराने नेताओं के विश्वास के प्रति एक प्रस्ताव पारित किया जा रहा है। मेरे पास उसकी प्रति नहीं थी। लिहाजा, मैंने कहा– जो भी है, ठीक है; क्योंकि मुझे शेगांव में यह सूचना मिली थी कि तुम्हारे चुनाव के प्रति लोगों का तुम पर उतना अधिक विश्वास नहीं था, जितना कि पुराने नेताओं के प्रति था–विशेष रूप से सरदार के प्रति। इसके बाद मैंने प्रस्ताव की प्रति देखी।

मेरे सम्मान का कोई प्रश्न नहीं हैं, क्योंकि उसकी स्वतंत्र कीमत कुछ भी नहीं है। यदि मेरे उद्देश्य या मेरी नीतियों या कार्यक्रमों के प्रति अविश्वास पैदा हो और देशवासी उसको खारिज कर दें, तो मेरे सम्मान को खत्म होना ही चाहिए। भारत की उन्नति या पतन यहां के लाखों लोगों पर निर्भर है। व्यक्तिगत रूप में कोई व्यक्ति कितना भी महान क्यों न हो, उसकी कोई कीमत नहीं–यदि लाखों लोग उसके प्रतिनिधि नहीं है। अतः इस पर विचार करने का कोई प्रश्न ही नहीं।

तुम्हारे इस विचार से-कि देश जितना अहिंसा–प्रेमी इस समय है, उतना कभी नहीं था–मै। पूर्णतः असहमत हूं। जिस हवा में मैं सांस ले रहा हू, उसमें मुझे हिंसा की गंध आती है। हां, हिंसा बहुत सूक्ष्म रूप में हैं। हमारा आपसी अविश्वास भी हिंसा का ही बिगड़ा रूप है। हिंदुओं और नुसलमानों के बीच बढती दरार इसी बात का प्रमाण है। मैं और भी कई उदाहरण दे सकता हूं।

कांग्रेस–भ्रष्टाचार के विषय में भी हम लोगों के विचार भिन्न हैं। मेरे विचार में तो यह बढ़ रहा है। पिछले कई माह से मैं मूल रूप से छंटाई की बात कर रहा हूं।

इन परिस्थितियों में मुझे किसी अहिंसक आंदोलन की आशा नहीं है। प्रभावी स्वीकृति के बिना अल्टीमेटम बिल्कुल अर्थहीन है।

जैसा कि मैंने तुम्हें बताया कि मैं बूढ़ा आदमी हूं। शायद अधिक चौकन्ना और भीरू स्वभाव का हूं। तुम जवान हो और जवानी में अनंत आशाएं होती हैं। मुझे आशा है कि तुम ठीक हो और मैं गलत हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कांग्रेस की आज जो दशा है, वह कोई भला काम नहीं कर सकती और नाम को भी अवज्ञा आंदोलन नहीं चला

सकती। अतः यदि तुम्हारा पूर्वानुमान ठीक है, तो मैं पीछे चलने वालों में से हूं और सत्याग्रह का सेनापति हूं।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने राजकोट के मुद्दे की भी चर्चा की है। इससे सुखानुभूति हुई कि हम तथ्यों को किन–किन दृष्टिकोण से देखते हैं। इस संदर्भ में मैंने जो भी कदम उठाए, उनके बारे में मुझे कोई अफसोस नही हैं। मेरे विचार से इसका राष्ट्रीय महत्व है। राजकोट की वजह से मैंने अन्य स्थानों पर अवज्ञा आंदोलन को नहीं रोका। किंतु राजकोट ने मेरी आंखें खोल दी। उसने मुझे मार्ग दिखाया। दिल्ली में रूके रहने की वजह मेरा स्वास्थ्य नहीं है, बल्कि मैं मजबूरी में यहां एक चीफ जस्टिम के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा हूं। तब तक दिल्ली में बने रहना मैं अपना नैतिक कर्तव्य समझता हूं, जब तक कि वायसराय के तार के मुताबिक उस कार्य की पूर्ति के लिए कदम न उठा लिए जाएं। मैं कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता। यदि मैंने सत्ता का कर्तव्य–पूर्ति के लिए आव्हान दिया है, तो मैं भी उस कर्तव्य की प्रति–पूर्ति तक दिल्ली में बने रहना अपना कर्तव्य समझता हूं। ठाकूर साहब ने जिस दस्तावेज के अर्थ को शंका में डाल दिया था, उनके मध्यस्थ के रूप में चीफ जस्टिस के अर्थ को शंका में डाल दिया था, उनके मध्यस्थ के रूप में चीफ जस्टिस के चुनाव को मैं गलत नहीं मानता। वैसे भी सर मौरिस उन दस्तावेजतों को एक चीफ जस्टिस की हैसियत से नहीं देखेंगे, बल्कि वायसराय के विश्वस्त ज्यूरिस्ट के रूप में देखेगें । वायसराय द्वारा नामित जज को स्वीकार करके मैंने केवल बुद्धिमत्ता का ही नहीं, बल्कि सहृदयता का भी प्रमाण दिया है; जो बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार मैंने वायसराय की जिम्मेदारी को और बढ़ा दिया है।

यद्यपि हमने आपसी मतभेंदों पर व्यापक चर्चा की है, किंतु मेरे विचार से हमारे व्यक्तिगत संबंध इससे प्रभावति नहीं होंगे। यदि ये उद्गार हृदय से निकले हैं, तो इन मतभेदों का भी हम सहजता से स्वीकार कर लेंगे।

प्यार सहित,
बापू

महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली; 2 अप्रैल, 1939

पत्रों का विस्तृत उत्तर भेजा है। पंडित पंत के प्रस्ताव से मेरी राय का दूर का भी रिश्ता नहीं है। दो वर्गों के विपरीत मतों के कारण तुम्हें अपनी नीति के अनुसार मंत्रिमंडल बना लेना चाहिए। अपने कार्यक्रम और नीति को प्रकाशित कराकर अ.भा. कां. कं. के समक्ष पेश करो। यदि बहुमत प्राप्त हो, तो निर्विरोध कार्य करो। यदि बहुमत

प्राप्त न हो, तो त्यागपत्र देकर समिति को नया अध्यक्ष चुनने को कहो। ईमानदारी और शुभेच्छा से कार्य करो। मुझे गृह–युद्ध आशंका नहीं है। प्यार–बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 3 अप्रैल, 1939

मेरे पत्रों के उत्तर में आपका तार व पत्र मिला। विचार कर रहा हूं। इस बीच मुझे महसूस हो रहा है कि पंत प्रस्ताव के संदर्भ में मेरी स्थिति के विषय में आपको तथा अन्य लोगों को गलतफहमी है। अंतिम उपखंड असंवैधानिक है। मैं कांग्रेस की राय से बंधा हूं। इस स्थिति को स्पष्ट करने के लिए मै। एक प्रेस बयान जारी करना चाहता हूं। कृपया तार द्वारा सूचित करें कि आपको आपत्ति तो नहीं । प्रणाम–सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली; 4 अप्रैल 1939

पत्रकार हमारे पत्राचार के विषय में हर प्रकार के प्रश्न पूछ रहे हैं। मैंने सभी को आपकी ओर भेज दिया है। मैंने सहयोगियों व सहकर्मियों के अलावा किसी को कुछ नहीं बताया है। प्यार–बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुडा; 5 अप्रैल, 1939

कल एसासिएटेड प्रेस ने आधिकारिक रिपोर्ट के लिए प्रार्थना की और कहा कि यूनाइटेड प्रेस भविष्यवाणी प्रकाशित कर रहा है। उन्हें सूचित कर दिया कि कुछ भी कहना असंभव है। एक व्यक्ति को कागजात दिखाया है और शायद इस सप्ताह तीन और मित्रों को दिखाऊंगा। मेरे विचार से हमारे आपसी समझौते के उपरांत ही प्रचार होना चाहिए। नई दिल्ली के समाचारपत्रों की रिपोर्ट है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक 25 को होगी। अभी तक आपका जवाब नहीं आया–सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली; 5 अप्रैल, 1939

तुम्हारा तार। इधर से कोई तिथि नहीं दी गई। तार पाने की सूचना नहीं दी। क्षमा। आज पता चला कि प्लेग के कारण गांधी सेवा संघ की बैठक स्थगित हो गई।

सुविधानुसार कोई तिथि निश्चित कर लो। प्रकाशन के बारे में सब कुछ तम पर छोड़ता हूं। प्यार–बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीगुड़ा; 5 अप्रैल, 1939

पिछले तार के बाद मैंने कुछ समाचारपत्र देखे। जैसे लीडर पूर्णतः स्पष्ट है कि हमारे पत्राचार की बातें दिल्ली से लीक हो रही हैं। कृपया आवश्यक कार्रवाई करें– सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली; 5 अप्रैल, 1939

समाचारपत्र सच्चाई छुपाने में दक्ष हैं। वे नाम, जगह आदि बना लेते हैं और कल्पनाएं कर लेते हैं। मैं नहीं जानता क्या हुआ है। तुम्हें भरोसा दिला सकता हूं कि यहां ऐसे समाचारों का जिम्मेदार कोई नहीं है। बताओं, मुझसे क्या करने को कहते हो। प्यार–बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 6 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय महात्माजी,

मेजदाद, मेरे भाई शरत, को लिखें पत्रों में से एक में आपने सुझाव दिया हे कि भविष्य की संयुक्त योजना की स्पष्ट भूमिका बनाने के लिए दोनों गुटों के नेताओं की ह्रदय से बातचीत होनी चाहिए। मेरे विचार में यह अद्भूत विचार है और मैं पुरानी बातों को भूलकर इस विषय में अपना पूर्ण सहयोग देने को तत्पर हूं। क्या आप मुझे बताएंगे कि इस विषय में आप मुझसे क्या अपेक्षा रखते हैं? निजी रूप से मेरा मानना है कि एकता के इस प्रयास में आपका प्रभाव और व्यक्तित्व बहुत कुछ कर सकता है। एकता की आशा को छोड़ने से पूर्व क्या आप एक बार सभी को एकत्र करने का अंतिम प्रयास नहीं चाहेंगे? मेरी आप से प्रार्थना है कि कृपया आप एक बार पुनःविचार करें कि पूरा राष्ट्र आपको किस दृष्टि से देखता है। आप पृथकतावादी नहीं हैं, इसलिए लोग अभी भी सबको जोड़ने की आशा में आपकी ओर ही देखते हैं।

कार्यकारिणी समिति बनाने का जो सुझाव आपने मुझे दिया है, उस पर मैं

गंभीरता से विचार कर रहा हूं। मेरा विचार है कि आपका सुझाव निराशा का पोषक है। वह एकता की आशाओं को समाप्त करता है। वह कांग्रेस को विखंडन से नहीं बचा पाएगा, बल्कि वह आपास स्थिति का सुलभ मार्ग होगा। वर्तमान परिस्थितियों में समरूप संसद का निर्माण करने की राय का अर्थ है कि गुटों को पृथक होने की सलाह दी जा रही है। क्या यह दुःखद उत्तरदायित्व नहीं है? क्या आप पूर्णतया आश्वस्त हैं कि मिल–जुल कर कार्य करना असंभव है? हमारी ओर से ऐसा हीं है। हम पूरी तरह भूलने और क्षमा करने और लोकहित में मिल–जुलकर कार्य करने को तैयार हैं और आपसे आशा रखते हैं कि आपसी समझौता करवाने में आप सक्षम होंगे। मैंने आपसे बात भी की है और पत्र भी लिखे हैं कि कांग्रेस का निर्माण चाहे जैसे भी हुआ हो, फिलहाल उसे बदलने की कोई संभावना नहीं है। सबसे अच्छा तरीका यही है कि मिली–जुली संसद हो, जिसमें सभी गुटों के प्रतिनिधि यथासंभव शामिल किए जाएं।

मैं जानता हूं कि आप संयुक्त संसद के विरूद्ध हैं। क्या आपका विरोध सिद्धांतों पर आधारित है (अर्थात आपके विचार में संयुक्त रूप में कार्य असंभव है) अथवा आपका विचार है कि गांधीवादी (यह शब्द मैं इस कारण इस्तेमाल कर रहा हूं क्योंकि कोई अन्य शब्द मुझे नहीं मिला। आशा है कि आप मुझे क्षमा करेंगे) लोगों का प्रतिनिधित्व अधिक होना चाहिए? यदि दूसरी बात है, तो कृपया मुझे स्पष्ट रूप में बताएं, ताकि मैं इस विषय पर पुनर्विचार कर सकूं। यदि पहला कारण है; तो कृपया इस पत्र में मैंने जो बातें कहीं हैं, उसके प्रकाश में स्थितियों का एक बार पुनः अवलोकन कर लें। हरिपुरा में जब मैंने आपको सुझाव द्रिया था कि समाजवादियों को भी प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए, तो आपने स्पष्ट रूप में अपनी सहमति जाहिर की थी। अब क्या परिस्थितियां इतनी बदल गई हैं कि आप मुझे मेरी इच्छा से संसद का चुनाव करने को कह रहे हैं?

आपने अपने पत्रों में दो गुटों का जिक्र किया है, जो एक दूसरे के पूर्णतः विपरीत हैं। इस विषय में आपने विस्तार से कुछ नहीं लिखा और यह भी स्पष्ट नहीं किया कि जिस विरोध का जिक्र आपने किया, वह कार्यक्रम आधारित है अथवा व्यक्तिगत संबंधों पर आधारित है। व्यक्तिगत संबंध मेरे विचार से खत्म हो जाने वाली घटन है। हम झगड़ा भी कर सकते हैं और अपने मतभेदों को मिटाकर हाथ भी मिला सकते हैं। उदाहरण के लिए हम कांग्रेस के इतिहास में स्वराज आंदोलन की घटना को ही ले सकते हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, देशबंधु और पंडित मोतीलालजी के काफी दिनों तक परस्पर विरोधी संबंध रहने के बाद भी उनके संबंध आपके साथ अत्यधिक मधुर और मानवीय रहे। ग्रेट ब्रिटेन में आपातकालीन स्थिति में तीन मुख्य दल साथ मिल कर संसदीय कार्य को अंजाम देते हैं। फ्रांस जैसे देश में संयुक्त संसद ही है। क्या हम

अंग्रेजों व फ्रांसीसियों की अपेक्षा कम देशभक्त हैं? यदि ऐसा नहीं है तो फिर संयुक्त संसद के रूप में हम कार्य करने में अक्षम क्यों हैं?

यदि आपको लगता है कि आपका विरोध कार्यक्रम आदि पर आधारित है, न कि व्यक्तिगत संबंधों पर; तो कृपया इस विषय में अपने विचारों से मुझे भी अवगत कराएं। क्या आपको लगता है कि हमारे कार्यक्रमों में भिन्नता है? वह भी क्या मौलिक रूप में इतनी कि हमारे लिए मिलकर कार्य करना असंभव हो गया है? मैं जानता हूं कि कुछ मतभेद हैं, किंतु कार्यकारिणी के सदस्यों के त्यागपत्र के उत्तर में भी मैंने यही लिखा है कि हमारे मतभेंदों की अपेक्षा हमारे मतैक्य के बिंदु अधिक है। अभी भी मेरी यही राय है। त्रिपुरी का इससे कोई वास्ता नहीं है।

स्वराज मुद्दे पर अल्टीमेटम देने के मेरे विचार पर आपने अपने किसी पत्र में राय व्यक्त की है कि अभी वृहत रूप में अहिंसक आंदोलन छेड़ने का वातावरण नहीं है। किंतु क्या राजकोट में वृहद अहिंसक आंदोलन नहीं था? क्या अन्य राज्यों में आप ऐसा नहीं कर सकते? इन प्रांतों के लोग सत्याग्रह के विषय में अपेक्षाकृत कम प्रशिक्षित हैं। ब्रिटिश भारत में हमें अधिक अनुभव और प्रशिक्षण प्राप्त है– चाहे कहने को ही हो। यदि प्रांत के लोगों को लोक–स्वतंत्रता तथा सरकारी जिम्मेदारी के विरूद्ध संघर्ष के लिए आज्ञा दी जा सकती है, तो ब्रिटेन शासित भारत को क्यों नहीं?

अब गांधीवादियो के सहयोग से त्रिपुरी कांग्रेस में राष्ट्रीय मांग प्रस्ताव पारित किए जाने के विषय को लें। यद्यपिइ समे वहीं व्यर्थ की बातें और घिसे–पिटे नारे हैं; फिर भी कुछ अर्थों में मेरे अल्टीमेटम के विचार और आगामी संघर्ष के लिए तत्पर रहने की बात से मेंल खाती है। क्या आप इस प्रस्ताव को स्वीकृति देते हैं? यदि हां, तो एक कदम और आगे बढ़कर आप मेरी योजना को क्यों स्वीकार नहीं करते?

अब मैं पंडित पंत के प्रस्ताव पर आता हूं। इसके महत्वपूर्ण हिस्से में (मेरा मतलब अंतिम भाग से है) दो मुद्दे हैं। पहली बात में कार्यकारिणी समिति को आप पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए । दूसरे, उसकी संरचना आपकी इच्छानुसार होनी चाहिए। यदि आप स्वेच्छा से निर्मित संसद की सलाह देते हैं और वह बना दी जाती है, तो लोगों को यही महसूस होगा कि वह आपकी इच्छानुसार ही बनाई गई है। किंतु क्या यह कहा जा सकेगा कि उसमें आपका पूर्ण विश्वास है? क्या अ. भा. कां. क. की सभा में सदस्यों को मैं यह बात कह सकूंगा कि आपने ही ऐसी संसद के निर्माण की राय दी थी और आपको इस पर पूर्ण विश्वास है? यदि आप ऐसे संसद के निर्माण की सलाह देते हैं, जिस पर आपको पूर्ण विश्वास नहीं है; तो क्या आप पंत प्रस्ताव को ही प्रभावी नहीं बना रहे? अपनी राय में आप क्या ठीक काम कर रहे हैं? आपसे प्रार्थना करता हूं कि कृपया इस प्रश्न पर भी विचार कर लें। यदि आप पंत प्रस्ताव से सहमत हैं; तो आपको न

केवल कार्यकारिणी समिति के विषय में अपनी राय व्यक्त करनी होगी, बल्कि आपको एक ऐसी समिति के गठन की राय भी देनी होगी, जिसमें आपको पूर्ण विश्वास हो।

आपने अभी तक पंत प्रस्ताव के गुणों के विषय में कुछ नहीं कहा है। क्या आप उसे स्वीकृति देते हैं? या फिर आप उस एकमत से पास प्रस्ताव को स्वीकृति देना चाहेगें, जो हमने सुझाया है और जो आप के सिद्धांतो में विश्वास व्यक्त करता हो साथ ही आपके दिशा–निर्देश में भी विश्वास रखता हो और जिसमें कोई विवादास्पद मुद्दा भी न हो? ऐसे प्रस्ताव को पारित करने के पश्चात कार्यकारिणी की समिति की नियुक्त करने में अध्यक्ष की क्या स्थिति होगी? मैं यह प्रश्न आपसे पुनः इसीलिए पूछ रहा हूं, क्योंकि वर्तमान संविधान आपकी ही कृति है और आपकी राय मेरे लिए बहुत महत्व रखती है। इसी संदर्भ में एक और प्रश्न मैं आपसे पूछना चाहता हूं। क्या आप इस प्रस्ताव को मेरे प्रति अविश्वास मानते हैं? यदि ऐसा है तो मैं बिना शर्त तत्काल पद त्याग दूंगा। प्रेस बयानों में मेरे इस प्रश्न पर कुछ समाचारपत्रों ने टिप्पणी की है कि मुझे स्वयं निर्णय लेना चाहिए कि इस प्रस्ताव का महत्व क्या है। इसे समझने की बुद्धि मुझमें है; किंतु कई मौके ऐसे भी आते हैं, जब व्यक्तिगत निर्णय उसके मार्गदर्शक नहीं बन सकते। स्पष्ट रूप से कहूं, तो अध्यक्षीय चुनाव से मेरी मान्यता को बल मिला है। किंतु अब मैं इस पद पर एक दिन भी और बने रहना नहीं चाहता–जब तक कि मैं लोकहित कार्य को आगे न बढ़ाऊं। मेरी ओर से जो देरी या हिचक हो रही है, उसका केवल एक ही कारण है और वह यह है कि निर्णय करना आसान कार्य नहीं है। मेरे सहयोगियों के दो गुट हैं । पहले वालों का मानना है कि मुझे किसी समझौते की बातचीत किए बिना अपना त्यागपत्र दे देना चाहिए। दूसर गुट मुझ पर बने रहने का दबाव डाल रहा है, जिसका मैं विरोध कर रहा हूं। मेरी आत्मा स्पष्ट करना चाहती है कि मैंने अंतिम क्षण तक उच्च पदों में एकता बनाए रखने का पूरा–पूरा प्रयास किया । मुझे मालूम है कि वर्तमान परिस्थितियों में मेरे त्यागपत्र का क्या अर्थ लिया जाएगा और इसके क्या परिणाम होंगे। यहां मैं यह भी बताऊं कि पहले गुट के समर्थकों को अर्थात वे लोग जो मुझे समझौते की अंतिम लड़ाई तक लड़ने को प्रेरित करते हैं विश्वास है कि आप बिना पक्षपात के इन मुद्दों पर पूर्ण विचार करेंगे और दोनों पक्षों को एक करने में सफल हो जाएंगे।

मैं यह स्पष्ट कर दूं कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं कि यदि आप यह कह देते हैं किं पंत प्रस्ताव का अर्थ अविश्वास है, तो मैं तत्काल त्यागपत्र दे दूंगा। आप भलीभांति जानते हैं कि आप जो भी कहते हैं, या करते हैं; तो फिर मुझे त्यागपत्र क्यों देना चाहिए, जबकि आप स्वीकार करते हैं कि प्रस्ताव का अर्थ अविश्वास है? कारण सीधा और स्पष्ट है: मेरी आत्मा इस बात की गवाही नहीं देती कि भारत का एक महान व्यक्ति यह

स्वीकार करे–यद्यपि शब्दों में न कहे– कि प्रस्ताव स्वीकृति के द्वार मुझे त्यागपत्र दे ही देना चाहिए। ऐसा व्यवहार शायद आपके प्रति व्यक्तिगत आदर और इस विषय में आपकी राय के कारण ही कर पाऊंगा।

शायद –जैसा कि कुछ समाचारपत्रों ने भी सुझाया है–आप भी यही मानते हैं कि पुराना व्यक्ति ही पुनः कार्य–भार संभाल ले। ऐसी स्थिति में मैं आप से प्रार्थना करूंगा कि आप पुनः राजनीति में उतर आएं, कांग्रेस के सदस्य बन जाएं और कार्यकारिणी की बागडोर संभाल लें। यह सब कहने के लिए मुझे क्षमा करें। इससे मैं किसी को आघात पहुंचाना नहीं चाहता। आप में और आपके लेफ्टिनेंट्स और चुने गए लेफ्टिनेंट्स में जमीन–आसमान का अंतर है। ऐसे बहुत से लोग हैं, जो आप के लिए कुछ भी कर देंगे; किंतु उनके लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं होंगे। क्या आप मेरी इस बात पर विश्वास करेंगे कि पुराने नेता के निर्देशों के बावजूद कई गांधीवादियों ने अध्यक्षीय चुनाव में मेरे पक्ष में अपना मत दिया? यदि आपके व्यक्तित्व को खींचकर बीच में न ले आया जाए, तो मुझे उनका समर्थन मिलता रहेगा। पुराने नेता की कोई नहीं मानेगा। त्रिपुरी में वह पुराने नेता सामने नहीं आए और बहुत चतुराई से उन्होंने मुझे आपके विरूद्ध इस्तेमाल किया। किंतु आप में और मुझ में कोई झगड़ा नहीं था। तत्पश्चात उन्होंने कहा था कि त्रिपुरी में वह पुराने नेता सामने नहीं आए और बहुत चतुराई से उन्होंने मुझे आपके विरूद्ध इस्तेमाल किया। किंतु आप में और मुझ में कोई झगड़ा नहीं था। तत्पश्चात उन्होंने कहा था कि त्रिपुरी में उनकी जीत हुई । वत आप की विजय थी। (बिना किसी संघर्ष के) किंतु नाशकारी विजय, जो सम्मान खोकर प्राप्त की गई हो।

मैं विषयांतर कर रहा हूं। मैं आप से निवेदन करना चाहता हूं कि आप सीधे और स्पष्ट रूप में साम्ने आएं और कांग्रेस के मामलों में हस्तक्षेप करें। इससे समस्याएं सुलझेंगी और जो पुराने नेतृत्व के विरोधी हैं– निस्संदेह विरोधी हैं–स्वतः ही खत्म हो जाएंगे।

यदि आप ऐसा नहीं कर सकते, तो मेरे पास एक वैकल्पिक सुझाव भी है। कृपया हमारी इच्छानुसार आजादी के संघर्ष को चलाते रहें और इसकी शुरूआत ब्रिटिश सरकार को अल्टीमेटम देकर करें। इस दशा में हम सभी अपने पदों से कार्यमुक्त हो जाएंगे। यदि आप चाहेंगे, तो हम आपकी पसंद के लोगों को अपनी इच्छानुसार ये पद थमा देंगे–किंतु एक ही शर्त है कि स्वतंत्रता का संघर्ष जारी रहना चाहिए। मेरे जैसे कुछ लोगों का विश्वास है कि जो परिस्थितियां व मौके हमें आज उपलब्ध हैं, वे बार–बार नहीं मिलते। इसलिए संघर्ष जारी रखने की खातिर हम लोग कोई भी बलिदान देने को तत्पर है।

यदि अंत तक आपका मानना यही है कि संयुक्त उचित नहीं, समजातीय मंत्रिमंडल के अतिरिक्त हमारे पास कोई विकल्प नहीं–और यदि आप चाहते हैं कि मैं अपनी इच्छानुसार मंत्रिमंडल का चुनाव करूं, तो मैं चाहूंगा कि आगामी कांग्रेस तक आप अपना विश्वास मुझ पर व्यक्त करें। इस बीच यदि हम स्वयं को सेवा करने के योग्य सिद्ध नहीं कर पाए, तो कांग्रेस के समक्ष व्यर्थ सिद्ध हो जाएंगे और स्वतः ही कार्यभार से मुक्त कर दिए जाएंगे। वर्तमान परिस्थितियों में आप के विश्वास–मत का अर्थ है अ. भा. कां. कं. का विश्वास –मत प्राप्त कर लेना। किंतु यदि आप हममें अपना विश्वास व्यक्त नहीं करते और हमें समजातीय मंत्रिमंडल बनाने की सलाह देते हैं तो आप पंत प्रस्ताव को तरजीह नहीं दे रहे हैं।

एक बार पुनः मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि कृपया मुझे यह अवश्य बता दें कि संयुक्त मंत्रिमंडल के खिलाफ आपका सिद्धांतों के कारण विरोध है अथवा आपकी इस इच्छा के कारण कि पुराने नेताओं का जितना प्रतिनिधित्व मैंने अपने 25 मार्च के पत्र में लिखा था, उसकी अपेक्षा अधिक होना चाहिए।

पत्र समाप्त करने से पूर्व एक–जो निजी बातों पर भी बात करना चाहूंगा। आप ने अपने एक पत्र में इशारा किया है कि चाहे कुछ भी हो जाए, हमारे व्यक्तिगत संबंध विगडेंगे नहीं। मैं भी ह्रदय से यही चाहता हूं । मैं इस विषय में कुछ कहना चाहूंगा कि जीवन में यदि मुझे किसी बात पर अभिमान है, तो वह यही है कि मैं एक सज्जन पुरूष का पुत्र हूं–अतः स्वयं की एक सज्जन पुरूष हूं। देशबंधु दास प्रायः हमें कहा करते थे कि जीवन राजनीति से बड़ा है। यह शिक्षा मैंने उन्हीं से पाई है।

मैं एक दिन भी उस राजनीति में रहना नहीं चाहूंगा, जहां रहकर मुझे सज्जनता के उन मानदंडों से नीचे गिरना पडे; जो बचपन से मेरे दिलोदिमाग में भरे गए हैं और जो मानदंड मेरे खून में बसे हों। मेरे पास यह जानने का कोई मार्ग नहीं है कि एक व्यक्ति के रूप में मेरे विषय में आपकी क्या राय है, क्योंकि आप मुझे बहुत कम जानते हैं । फिर, मेरे राजनीतिक प्रतिद्वंदियों ने भी मेरे विरोध में बहुत धीमी गति से एक व्यक्ति द्वारा दुसरे व्यक्ति तक प्रचार किया जा रहा है। यह बात मैं बहुत पहले आप आप को बताना चाहता था, किंतु उस समय मेरे पास पर्याप्त प्रमाण नहीं थे कि कौन मेरे बारे में क्या प्रचार कर रहा है। बाद में मुझे काफी सूचनाएं प्राप्त हुई कि क्या कहा जा रहा है–यद्यपि अभी मैं इस बारे में आश्वस्त नहीं हूं कि मेरे विरूद्ध प्रचार करने वाले कौन लोग हैं।

एक बार फिर मैंने विषयांतर कर दिया । एक पत्र में आपने आशा व्यक्त की है कि ईश्वर मेरा मार्गदर्शन करेगा। महात्माजी! मुझ पर विश्वास करें, इन दिनों मैं यही प्रार्थना करता रहा हूं कि ईश्वर मुझे अपने देश को स्वतंत्र कराने और देशवासियों के

भलाई क मार्ग पर ले जाने की चेतना दे। मैंने सदा आवश्यकता पड़ने पर ईश्वर से शक्ति और प्रेरणा की मांग की है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि वह देश सदैव जीवित रहता है, जिसके देशवासी उसके लिए आवश्यकता पड़ने पर जीवन–दान को भी तैयार हों। यह नैतिक (अथवा आध्यात्मिक आत्माहुति आसान नहीं हैं) किंतु जब भी मेरे देश को मेरे बलिदान की आवश्यकता पड़े, ईश्वर मुझे शक्ति प्रदान करें।

आशा है, स्वास्थ्य सुधर रहा होगा। मैं भी धीरे–धीरे स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूं। आदर सहित प्रणाम–

आपका स्नेहाकांक्षी
सुभाष

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; अप्रैल 7, 1939

राजेनबाबू से हुई टेलीफोन पर बातचीत में आगे मैं यह चाहता हूं कि आप दिल्ली से राजकोट के लिए रवाना होने से पहले एक बैठक हमारे साथ अवश्य करें। इससे आपको अधिकाधिक तीन दिन की देरी होगी। पत्राचार से कोई परिणाम नहीं निकल रहा और मेरा विचार है कि व्यक्तिगत रूप से मिलकर बहुत–सी बाते हल हो सकेंगी। रही स्थान की बात, तो यदि आप के लिए स्वास्थ्य के कारण यहां आना संभव नहीं, तो मैं डॉक्टरों की राय को न मानते हुए दिल्ली पहुंच जाता हूं। जैसा कि मैंने त्रिपुरी जाने क लिए भी किया था। मुझे लगता है कि मुझे अपने स्वास्थ्य की कीमत पर भी कार्यकारिणी समिति की समस्या और कांग्रेस की एकता के लिए यथासंभव प्रयास करना चाहिए। यदि आगामी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तक के लिए बात स्थगित कर दी गई; तो स्थिति बहुत खराब हो जाएगी तथा रहस्य बना रहेगा, जिससे लोगों के मन में भ्रांतियां पैदा होंगी–सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली; 7 अप्रैल, 1939

तुम्हारा टेलीफोन–संदेश मिला। राजकोट के कार्य से आज रात ही राजकोट जा रहा हूं। तात्कालिक कर्तव्य की बलि दिए बिना उसे स्थगित करना संभव नहीं था। जिस क्षण राजकोट से कार्यमुक्त होऊंगा, तुम्हारे लिए उपलब्ध रहूंगा। तब तक मेरी राय मानकर अपना मंत्रिमंडल बनाओं और अपना कार्यक्रम प्रकाशित करवाओ। रविवार प्रातः राजकोट पहुंच जाऊंगा। प्यार–बापू।

महात्मा गांधी की ओर से

अप्रैल 7, 1939

तुम्हारा तार। मैं असमर्थ हूं। मेरा राजकोट जाना आवश्यक है। मेरी राय है कि शरत और अन्य प्रतिनिधियों को राजकोट भेज दो वह वायुयान से आ सकते हैं। राजकोट से दस दिन पहले निकल पाना संभव नहीं है। प्यार–बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 10 अप्रैल

मेरे प्रिय महात्माजी,

अनेक तारों और छोटे पत्रों के अतिरिक्त मैंने आपको 4 और महत्त्वपूर्ण पत्र लिखे हैं, जो मैंने 25 मार्च (26 को डाक में डाला) 29 मार्च और 31 मार्च तथा 6 अप्रैल को लिखे हैं, जिनमें कांग्रेस की सामान्य दशा पर व विशेष रूप से कार्यकारिणी की समिति पर विशेष रूप से चर्चा की है। मुझे खेद है कि पत्राचार इतना लंबा चला कि मै। चाहता था किएक ही लंबे पत्र लिखने में थकान और श्रम तथा दूसरा, आपके पत्रों में नए मुद्दे, जो मेरे उत्तर की अपेक्षा रखते थे। मुझे आशा है कि इस श्रृंखला का यह मेरा आखिरी पत्र होगा। यहा मैं कुछ बातें स्पष्ट करना चाहूंगा, जहां मुझे गलत समझे जाने की संभावना है। अपने पिछले पत्रों के मुख्य मुद्दों को याद करते हुए आपसे अंतिम अपील करता हूं।

1. संदर्भ : भ्रष्टाचार एवं हिंसा –यदि मैं आपको ठीक से समझ पाया हूं, तो आप अल्टीमेटम और शीघ्र ही राष्ट्रीय संघर्ष शुरू करने के विचार का विरोध कर रहे हैं; क्योंकि आप यह महसूस करते हैं कि ह म लोगों में अत्यधिक भ्रष्टाचार और हिंसा फैली है। पिछले कई माह से हम कार्यकारिणी में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं और मेरे विचार से सभी इस बात पर एकमत भी हैं– सिर्फ इसके कि मैं नहीं मानता कि ये बातें इतनी अधिक हैं कि हम तत्काल पूर्ण स्वराज के संघर्ष को छेड़ न पाएं। इसके विपरित हम जितना ही संवैधानिक मार्ग से भटकते रहेंगे, लोगों को पद व प्रतिष्ठा की भूख में लिप्त रहने देंगे; उतना ही भ्रष्टाचार बढ़ने की संभावना अधिक रहेगी। मैं यहां यह कहना चाहूंगा कि मुझे आज के यूरोप की कुछ राजनीतिक पार्टियों का व्यक्तिगत रूप से ज्ञान है और बिना किसी विरोधाभास के नैतिक दृष्टि से भी निर्णय करें; तो हम उनसे किसी भी रूप में कम नहीं हैं, बल्कि कुछ मामलों में उनसे बढ़कर ही होंगे। इसलिए भ्रष्टाचार का मुद्दा मुझे उचित नहीं जान पड़ता। फिर देश की आजादी के लिए संघर्ष और बलिदान तो भ्रष्टाचार को खत्म करने में ही सहायक होगा और फिर यदि कोई भ्रष्टाचारी व्यक्ति हमारे बीच उच्च्य पद पर आसीन होगा भी , तो जनता के समक्ष आ जाएगा। फिर, ऐसे उदाहरण हमारे समक्ष हैं कि जब महान

राजनीतिज्ञों ने देश के बाहरी शत्रुओं से युद्ध प्रारंभ किया, ताकि गृहयुद्ध के शत्रुओं को समाप्त कर सकें।

संदर्भ : हिंसा की भावना का होना–मैं अपने पहले बयान पर ही स्थिर हूं। उच्च पदों पर बैठे कांग्रेसियों वे उनके समर्थकों में पहले की अपेक्षा आज हिंसा की भावना बहुत कम हो चुकी है। इस विषय में भी मैं अपने विचार पहले ही व्यक्त कर चुका हूं। अतः तर्क–वितर्क की आवश्यकता नहीं है। यह संभव है कि कांग्रेस विरोधियों में आज हिंसा की भावना हो; उसी के परिणामस्वरूप दंगे भड़क रहे हैं, जिन्हें कांग्रेस सरकार जबर्दस्ती दबा रही है– वह एक अलग मुद्दा है। इससे हमं यह विचार नहीं बनाना चाहिए कि कांग्रेस में तथा उसके समर्थकों में हिंसा की भावना बढ़ रही है। क्या यह उचित है कि हम स्वतंत्रता संग्राम को तब तक स्थगित रखें–जब तक कि अन्य पार्टियां, जिनका कि हमसे कोई संबंध नहीं है (उदाहरण के लिए मुस्लिम लींग) अहिंसक विचारधारा वाली नहीं हो जातीं।

2. संदर्भः पंडित पंत का प्रस्ताव –मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या आप इस प्रस्ताव को जिस रूप में पंडित गोविंद वल्लभ पंत ने पेश किया , स्वीकार करते हैं और अपनी स्वीकृति देते हैं–अथवा हम लोगों द्वारा सुझाए गए संशोधनों के बाद सर्वसम्मति से पास होने देना चाहते हैं। मैं यह भी जानना चाहता हूं कि क्या आप उस प्रस्ताव को मेरे प्रति अविश्वास का मत मानते हैं? आपकी सुविधा के लिए नीचे मैं मूल प्रस्ताव और उसका संशोधित रूप प्रस्तुत कर रहा हूं।

मूल रूप

कांग्रेस में उत्पन्न हुए वैचारिक मतभेदों और अध्यक्षीय चुनाव के संबंध में पैदा हुए विवादों को देखते हुए यह आवश्यक है कि कांग्रेस अपनी स्थिति स्पष्ट करें ओर सामान्य नीति का घोषणा करे।

1. यह कांग्रेस अभी भी उन मूलभूत नीतियों द्वारा निर्देशित व्यक्तियों पर दृढ़ है, जो महात्मा गांधी के मार्ग निर्देशन में बनाई गई थी। इसका दृढ़ विचार यही है कि इन नीतियों में परिवर्तन नहीं आना चाहिए और भविष्य में भी कांग्रेस के कार्यक्रमों को लागू करने के लिए इन्हीं नीतियों का पालन किया जाना चाहिए। यह कांग्रेस पिछले वर्ष कार्यरत कार्यकारिणी के प्रति अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त करती है।

2. आगामी वर्ष में उत्पन्न होने वाली विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह कांग्रेस चाहती है कि महात्मा गांधी का मार्गदर्शन व सहयोग आगे भी मिलता रहे , जैसा कि पिछले वर्षों में मिलता रहा है।

3. संदर्भ : कांग्रेस समाजवादी पार्टी– मेरे 31 मार्च के पत्र में कांग्रेस समाजवादी पार्टी के संदर्भ में जो टिप्पणी थी, वह समाचारपत्रों की रिपोर्टों तथा अनुमानों पर आधारित थी। कुछ मिलाकर जो प्रभाव मुझ पर पड़ रहा है; वह यह था कि कांग्रेस समाजवादी पार्टी के कार्यकारी नेता अपनी दुलमुल नीतियों पर चलते रहेंगे, जिससे कि वे भविष्य में नई नीति पेश कर सकं–अर्थात पुरराने पर्यवेक्षकों को समर्थन दे सकें। मैंने सोचा कि कहीं इससे आप यह अनुमान न लगा लें कि पूरी कांग्रेस समाजवादी पार्टी हामरा साथ छोड़ देगी और भूतपूर्व नेताओं का साथ देगी। परिणामतः मैं आपको यह बताना चाहता था कि मुख्य नेतागण जो भी करें, किंतु कांग्रेस समाजवार्दी पार्टी के अधिकांश लोग हमारे साथ ही रहेंगे। मैं ऐसा इसलिए कह सकता हूं क्योंकि त्रिपुरी में अपने सहयोगियों के प्रति उनके नेताओं ने तटस्थता की नीति अपनाई थी। कुछ प्रांतों ने विद्रोह किया। उच्च पदों पर आसीन लोगों में से अधिकांश लोगों ने नैतिकता के कारण या अनुशासन के कारण नेताओं का अनुपालन किया। जो सूचनाएं मुझे मिलीं; उनके बारे में आपको लिखने का अर्थ यह नहीं है कि यह उस आभास की गारंटी है, जो मुझे प्रेस की रिपोर्टिंग से हुआ; जिसमें कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेताओं के भविष्य की नीति का पता चलता है। अतः इस प्रकार पार्टी में अलगाव का प्रश्न ही नहीं पैदा होना चाहिए।

4. संदर्भ : समजातीय बनाम संयुक्त मंत्रिमंडल–इस विषय में आपके तर्कों को मैंने बहुत ध्यान से पढ़ा और उन पर विचार किया है। किंतु अभी तक मैं संतुष्ट नहीं हुआ हूं। संभव है कि मेरी संतुष्टि के लिए आपके पास अन्य तक भी हों। आपका मूल विचार यह है कि लोगों में मौलिक मतभेद इतने अधिक हैं कि संयुक्त रूप में कार्य करना संभव नहीं है। हरिपुरा कांग्रेस में आपके विचार हमारे विचारों से मेल खाते थे। अध्यक्षीय चुनाव की शाम तक संयुक्त रूप में कार्य करना संभव था। फिर उसके बाद ऐसी क्या बात हो गई, जिससे यह कार्य असंभव हो गया और आपके विचार से मूलभूत सिद्धांतो को लेकर हमारे मतभेद क्या हैं?

मैं यह भी जानना चाहूंगा कि संयुक्त संसद के लिए आपकी आपत्ति क्या केवल सिद्धांतों के कारण ही है अथवा उस 50–50 के अनुपात को लेकर है, जिसका जिक्र मैंने अपने 25 मार्च के पत्र में किया था? उस पत्र में मैंने सुझाव दिया था कि मैं सात व्याक्तियों के नाम सुझा सकता हूं और सात व्यक्तियों के नाम सरदार पटेल द्वारा सुझाए जा सकते हैं, जिन्हें आपकी स्वीकृति से पास किया जा सकता है। आप उपर्युक्त अनुपात के अनुसार चाहें तो चौदह के चौदह व्यक्तियों के नाम सुझाने में सक्षम हैं–यदि आपको यह अनुपात उचित नहीं लगता; यद्यपि यह हमारे संयुक्त संविधान के मार्ग में बाधक होगा, तो कृपया आप मुझे सचित करें: ताकि मैं इस विषय में पुनर्विचार कर सकूं।

5. श्री शरत बोस को सुझाव--आपने मेरे भाई को 24 मार्च के अपने पत्र में लिखा है– "यदि स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि संभलने की गुंजाइश नहीं तो मैं चाहता हूं कि आप सब लोगों की एक बैठक हो जाए, ताकि एक दूसरे के सामने अपने हृदय की बात रख सकें और निष्कर्ष पर पहुंच सकें"–इस विषय में आप ने बाद के पत्रों में जिक्र तक नहीं किया है। मैं आपको एक से अधिक बार लिख चुका हूं कि हमारी ओर से कांग्रेस के उच्च पदों पर बैठे व्यक्तियों में एकता लाने का प्रत्येक प्रयास संभव है। मैंने यह भी लिखा था कि हमारी ओर मेरे जैसे ही अन्य व्यक्ति हैं, जो आपकी पृथकतावादी नहीं मानते और जो एकता के लिए आपकी ओर देख रहे हैं। मैं कहना चाहूंगा कि ऐसा कोई कारण नहीं है कि आप सिर्फ भूतपूर्व अध्यक्ष तथा उसके समर्थकों को ही गांधीवादी मानें, आप हमारे विचारों और योजनाओं को स्वीकार क्यों नहीं करते?

6. संदर्भ : मेरे वैकल्पिक सुझाव–

क. मेरा पहला सुझाव यह है कि स्वतंत्रता संग्राम को जारी रखने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। उस स्थिति में आप हमसे जो भी बलिदान आवश्यक समझें, मागेंगे–जिसमें पदत्याग भी शामिल है, हम दे देंगे। संघर्ष जारी रखने की स्थिति में हम बिना शर्त सहयोग देने का वायदा करते हैं।

ख. यदि आप समझते हैं कि संघर्ष जारी रखना संभव नहीं है और भारतपूर्व अध्यक्ष को गद्दी सौंपना चाहें, तो मेरा सुझाव है कि आप चार आना-कांग्रेस के सदस्य बन जाएं और कार्यकारिणी का नियंत्रण सीधे अपने हाथों में ले लें। ऐसा करने से उन कठिनाइयों से छुटकारा मिल जाएगा, जो आपके द्वारा भूतपूर्व अध्यक्ष को पुनः पद देकर पैदा होंगी।

ग. यदि ये सुझाव भी आपको उचित न जान पड़े अथवा मंजूर न हो और आप मुझे समजातीय कार्यकारिणी बनाने की सलाह देते हैं, तो मैं चाहूंगा कि आप मुझे अपना विश्वास मत आगामी कांग्रेस तक अवश्य दें। आपके विश्वास मत से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आप के रूढ़िवादी समर्थकों को संतोष हो जाएगा। ऐसा करने से विभाजन से बचा जा सकेगा और कार्य करना संभव हो पाएगा। इस संबंध में मैंने अपने 6 अप्रैल के पत्र में भी आप से करबद्ध प्रार्थना की थी कि पंत प्रस्ताव के तहत कार्यकारिणी का गठन आपकी इच्छानुसार ही नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे आपका विश्वास मत भी प्राप्त होना चाहिए। इस प्रस्ताव को देख लेने के पश्चात आप के लिए यह संभव नहीं होगा कि आप ऐसी कार्यकारिणी के गठन की सलाह दें, जिसमें आपका विश्वास न हो।

घ. यदि तीनों सुझाव आपको मंजूर न हों, तो आपके समक्ष एक ही रास्ता है

कि आप कार्यकारिणी के गठन की पूरी जिम्मेदारी स्वयं ले लें और अपने निर्णय की घोषणा के बाद आप मुझे अपने भविष्य का मार्ग चुनने की स्वतंत्रता दें।

7. संदर्भ : आपका मौन– अपने एक पत्र में आपने कहा था कि आप इसलिए मौन हैं, क्योंकि मैंने आप से चुप रहने का अनुरोध किया था। मैं स्पष्ट कर दूं कि मैंने हैं, क्यों कहा था। त्रिपुरी में स्थिति ऐसी थी कि कांग्रेसियों में आपस में दरार बढ़ती जा रही थी और मेरा विचार था कि केवल आप ही एकता ला सकते हैं, तब मैंने महसूस किया कि यह अति आवश्यक है कि आप पूरी स्थिति पर निष्पक्ष रूप से विचार करें। पंत प्रस्ताव के समर्थक नई दिल्ली की ओर भाग रहे थे; अतः मेरा यह विचार स्वाभविक था कि वे आप को उसके एक पक्ष से अवगत कराएंगे, जो त्रिपुरी में घटा। इसलिए मैंने आप से प्रार्थना की थी कि आप तब तक कोई सार्वजनिक बयान जारी न करें, जब तक कि त्रिपुरी की पूरी कहानी अर्थात दूसरे पक्ष की बात भी न जाने लें। आप ने मेरी बात मानी, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। उसी का परिणाम है कि आज समस्त देश उच्च पदस्थ कांग्रेसियों के बीच फिर से एकता स्थापित करने और कांग्रेस को गृह–युद्ध से बचाने के लिए आपकी ओर नजरें लगाए लगाए बैठा है। यदि दुर्भाग्यवश ऐसा होता है– ईश्वर रक्षा करे–कि आप भी विभाजन को स्वीकृति दे देते हैं, तो एकता की सभी आशाएं धूल में मिल जाएंगी और संभव है कि हम लोग गृह–युद्ध में घिर जाएं। किंतु अब मैं अनुभव करने लगा हूं कि अधिक देर तक आप पर यह जिम्मेदारी नहीं डाले रखनी चाहिए। परिणामस्वरूप यदि आप चाहते हैं कि आपको अपनी चुप्पी तोड़ देनी चाहिए तो–और यदि आपको त्रिपुरी की कहानी के दोनों पक्षों की पूरी जानकारी मिल चुकी है–तो आप कोई भी सार्वजनिक बयान या अपना मत देने को स्वतंत्र है। मैं आप को याद दिलाना चाहूंगा कि कांग्रेसियों के सभी वर्ग (केवल पुराने कार्यकर्ता नहीं) आपकी राय जानना चाहते हैं। निष्कर्ष–स्वरूप मैं कहना चाहूंगा कि जब आप अचानक 7 तारीख को राजकोट के लिए रवाना हुए, तो जो तार आपने मुझे भेजा उसे पाकर मुझे बहुत निराशा हुई। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने मेरी ओर से बिड़ला हाउस में टेलीफोन द्वारा सूचित किया था कि मैं आपसे मिलने को कितना उत्सुक हूं। क्योंकि मुझे महसूस हो रहा था कि हमारे पत्राचार से कोई निष्कर्ष नहीं निकल रहा है और आमने–सामने बात होना अति आवश्यक है। फिर दिन में मेरे डॉक्टर ने भी बिड़ला हाउस में फोन पर श्री महादेव देसाई से बात की और उन्हें बताया कि आप यहा आने का प्रयत्न अवश्य करें और कम से कम 8 तारीख के पूर्व दिल्ली छोड़कर हाउस में फोन पर श्री महादेव देसाई से बात की और उन्हें बताया कि आप यहां आने का प्रयत्न अवश्य करें और कम से कम 8 तारीख के पूर्व दिल्ली छोड़कर न जाएं, किंतु खेद है कि राजकोट आपकों खींचकर ले गया। मुझे आशा है कि यह राजकोट के लिए वरदान होगा, किंतु कांग्रेस के लिए अभिशाप नहीं बनेगा। यदि आपको अचानक राजकोट न जाना पड़ता, तो आज

त्रिपुरी की कथा का इतिहास कुछ और होता। आप में स्थिति को संभालने की शक्ति हैं, किंतु आप वहां उपस्थित नहीं थे—यद्यपि मैंने और स्वागत समिति ने बार—बारे आप से उपस्थित रहने का अनुरोध किया था। वस्तुतः जब आपने ठाकुर साहब को अल्टीमेटम दिया था, तो स्वाभाविक था कि संपूर्ण भारत आप पर निर्भर था और आपके देशवासियों के एक वर्ग का विचार था, और आज भी है कि आप राजकोट संघर्ष स्थगित कर सकते थे—कम—से—कम कुछ सप्ताह के लिए, जिससे राजकोट राज्य के लोगों को कोई हानि नहीं होने वाली थी।

(सर मौरिस ग्वेर के निर्णय के संबंध में मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहूंगा कि उन्होंने उस पर हस्ताक्षर चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया की हैसियत से किए हैं, न कि व्यक्तिगत रूप में)।

मेरा पत्र आवश्यकता से अधिक लंबा हो गया है, अतः मुझे यहीं समाप्त करना चाहिए। आशा है, आपकी यात्रा सुखद रही होगी और स्वास्थ्यलाभ भी हो रहा होगा। मैं लगातार स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूं।

प्रणाम साहित—

आपका स्नेहाकांक्षी
सुभाष

महात्मा गांधी की ओर से

राजकोट
10 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

तुम्हारा 6 तारीख का पत्र मुझे यहां के पते पर मिला। मैंने बिना किसी पक्षपात के विरोधियों की मीटिंग का सुझाव दिया था, किंतु उसके बाद इतना कुछ घट चुका है कि मुझे नहीं लगता कि अब कुछ उपयोगी परिणाम निकल सकते हैं। वे लोग एक दूसरे पर दोषारोपण करेंगे और अधिक कड़वाहट पैदा होगी। दरार बहुत गहरी हैं, शंकाएं बहुत हैं, लोगों पर रोक लगाने का कोई मार्ग नहीं। मुझे एक ही मार्ग दिखाई देता है कि प्रत्येक वर्ग को उसकी इच्छानुसार कार्य करने दिया जाए।

विरोधियों से संयुक्त रूप से कार्य करवा पाने में मैं स्वयं को अक्षम समझता हूं। मेरे विचार में वे स्वयं व्यक्तिगत रूप में अपनी नीतियों को लागू कर सकते हैं। यदि वे ऐसा करते हैं तो देश की भलाई ही होगी।

पंत प्रस्ताव की मैं व्याख्या नहीं कर सकता। जितना ही उसे पढ़ता हूं, उतना

ही उसे नापसंद करता हूं। इसे तैयार करने वालों का मकसद ठीक रहा होगा, किंतु वह वर्तमान समस्या का समाधान नहीं है। इसलिए आप उसकी व्याख्या अपने अनुसार करें तथा बिना किसी हिचकिचाहट के कार्य करें।

मैं कोई कार्यकारिणी तुम पर लादना नहीं चाहता, न ही लादूंगा—तुम्हें भी लदवानी नहीं चाहिए। मैं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा तुम्हारी कार्यकारिणी को विश्वासमत दिलाने की गारंटी नहीं देता, न तुम्हारी नीतियों को स्वीकृति दिलाने का विश्वास ही दिला सकता हूं। सदस्यों को स्वयं निर्णय करने दो। यदि तुम्हें मत प्राप्त नहीं होता, तो विपक्ष का नेतृत्व करो—जब तक कि बहुमत प्राप्त न कर लो।

क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जहां—जहां मेरा प्रभाव है, वहां—वहां मैंने आंदोलन को रोक दिया है। त्रावणकोर और जयपुर इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। राजकोट में, मैं यहां आने से पूर्व में आंदोलन समाप्त कर आया। मैं दोहराना चाहूंगा कि वातावरण अहिंसक नहीं है। क्या रामपुर से तुमने कोई सबक नहीं सीखा? मेरे विचार से इसने हमारे लक्ष्य को बहुत हानि पहुंचाई है। मेरे विचार में यह पूर्व नियोजित था। कांग्रेसी इसके उत्तरदायी हैं—जैसे उडीसा में, रामपुर में हुआ। क्या तुम यह महसूस नहीं करे कि हम दोनों व्यक्ति किसी ही एक बात को अलग—अलग दृष्टि से देखते हैं और विरोधी निर्णयों पर पहुंचते हैं, तो फिर हम राजनीतिक धरातल पर कैसे मिल सकते हैं? अतः वहां मतभेद रहने दें—किंतु सामाजिक, नैतिक और निगमों के धरातल पर सहमत हों। मैंने आर्थिक धरातल की बात नहीं की, क्योंकि वहां भी हम लोगों में मतभेद है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि हम विरोधियों को एकमत होकर कार्य करने की राय देने की अपेक्षा उन्हें अपने—अपने मार्ग पर अपने कार्य करने की स्वतंत्रता दे दें, तो देश का अधिक हित कर पाएंगे। दिल्ली में मैंने तुम्हें तार द्वारा सूचित किया था कि मैं धनबाद पहुंचने में असमर्थ हूं। राजकोट की मैं उपेक्षा नहीं कर सकता था।

मैं ठीक—ठाक हूं। बा को मलेरिया ने घेर रखा है। आज पाचवां दिन है। मैं उन्हें अपने साथ ही ले आया था। मुझे आशा है कि तुम निर्णयात्मक कार्य करते हुए अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखोगे। परिणाम ईश्वर पर छोड़ दो। तुमने अपने पिता का जो वर्णन किया, वह दिल को छू लेने वाला है—मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त है। एक बात मैं भूल गया। किसी ने मुझे तुम्हारे विरूद्ध नहीं भड़काया है। जो मैंने शेगांव में कहा, वह मेरा व्यक्तिगत आकलन था। यदि तुम्हें यह लगता है कि पुराने लोगों में से कोई तुम्हारा व्यक्तिगत विरोधी है तो तुम्हारा विचार गलत है।

प्यार,

बापू

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा पो. आ. मानभूम
13 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय महात्माजी,

मैंने सोचा था कि 10 तारीख का पत्र मेरा अंतिम पत्र होगा, किंतु ऐसा नहीं हुआ। आज प्रातः मैं जल्दी उठ गया, क्योंकि नींद ने मेरा साथ नहीं दिया और प्रातःकाल की रोशनी में मैं सामान्य समस्याओ पर विचार करता रहा। फिर मैंने पूरा पत्र–व्यवहार पुनः पढा और इस निर्णय पर पहुंचा कि कुछ विषय अभी स्पष्ट करने शेष हैं।

30 मार्च के पत्र में आपने लिखा है कि शेगांव में 15 फरवरी को हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि हममें मौलिक सिद्धांतों के बारें में मतभेद है। अपनी बातचीत में हम कुछ मतभेदों को खोज पाए थे। किंतु मेरे विचार से वे मतभेद मूलभूत सिद्धांतों को लेकर थे। अपने पत्रों में जिन मतभेदों का जिक्र आपने किया, उनसे अधिक मतभेदों की चर्चा हमने तब की थी। उदाहरण के लिए आपने भ्रष्टाचार, हिंसा आदि प्रश्नों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। आपने अल्टीमेटम देने के मेरे सुझाव और संघर्ष जारी रखने के विचार का विरोध किया है, क्योंकि आपको यह लगा कि वर्तमान हिंसक परिस्थितियों में अहिंसक जन–आंदोलन संभव नहीं है। लेकिन क्या ये मतभेद मौलिक सिद्धांतो से संबद्ध हैं और क्या ये संयुक्त कार्य करने की आशाओं को धूमिल करते हैं? कार्यक्रम के प्रश्न पर कांग्रेस को ही निर्णय लेना होगा। हम व्यक्तिगत रूप से अपने विचार और योजनाएं सामने रख सकते हैं, किंतु यह कांग्रेस पर निर्भर करता है कि वह इन्हें स्वीकार कर ले अथवा अस्वीकार कर दे। मेरा मुख्य मुद्दा अल्टीमेटम देने का और स्वतंत्रता संघर्ष को जारी रखना था, जिसे त्रिपुरी में कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया; किंतु मैंने उसके लिए कोई शिकायत नहीं की थी। आज भी मेरा विश्वास है कि मैं सही कह रहा था। एक दिन आएगा, जब कांग्रेस भी इसे स्वीकार करेगी। उम्मीद करता हूं कि वह दिन जल्दी ही आएगा। इस बात को स्वीकार कर लेने के बाद कि उपर्युक्त मतभेद हैं–फिर भी हम लोग संयुक्त रूप से कार्य करने में अक्षम क्यों हैं? ये मतभेद आज अचानक उत्पन्न नहीं हो गए हैं, बल्कि काफी समय से विद्यमान थे–फिर भी इन सब के बावजूद हम लोग मिलकर कार्य कर रहे थे। ये मतभेद और कुछ अन्य मतभेद भविष्य में भी जारी रहेंगे–तब भी हमें मिलकर काम करना ही होगा। (यानी लोक–हित के लिए एकत्र होना ही होगा)।

आपको याद होगा कि शेगांव में हम लोगों ने संयुक्त मंत्रिमडल व समजातीय मंत्रिमंडल के प्रश्न पर ही लगभग एक घंटे तक बातचीत की थी, किंतु हममें तब भी मतभेद था। तीन घंटे के हमारे वार्तालाप के अंत में मैंने आपसे कहा था कि मैं सरदार पटेल का समर्थन प्राप्त करने का हर संभव प्रयास करूंगा। संभव है कि यदि मैं बीमार

न पड़ा होता और वर्धा में 22 फरवरी की कार्यकारिणी की बैठक में हम लोग मिले होते, तो संयुक्त रूप से कार्य कर पाना शायद आसान हो जाता।

आपके 30 मार्च के पत्र में एक और टिप्पणी है, जिससे मैं सहमत नहीं हूं और जिसका जिक्र मैं भूलवश पहले नहीं कर पाया। आपने कहा है कि यदि मुझे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में बहुमत प्राप्त हो जाए, तो मैं उन लोगों की कार्यकारिणी गठित कर लूं; जो मेरी नीतियों में विश्वास रखते हों। हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट है कि यदि हमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का समर्थन प्राप्त हो भी जाए, तो भी हमें संयुक्त समिति का गठन करना चाहिए—क्योंकि सदन में वही लोग होने चाहिए, जो कांग्रेस की सामान्य समिति के सदस्य हों तथा जिन्हें यथासंभव कांग्रेस का विश्वास भी प्राप्त हो। आज भारत की जो स्थिति है और विश्व की स्थिति को भी देखते हुए मेरी दृष्टि में समजातीय कार्यकारिणी सैद्धांतिक रूप से गलत कदम है। यही समय हे जब हमें अपने नेशनल फ्रंट को विस्तृत करना चाहिए। लेकिन क्या हम लोग संकीर्ण गुटवादी दृष्टिकोण के आधार पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन करेंगे?

भ्रष्टाचार के विषयों पर सामान्यतः हम एकमत हैं—सिवाय इसके कि मेरा विचार है कि आप इसे बढ़ा—चढ़ा कर देख रहे हैं। मैं नहीं जानता कि यदि पूरे भारत पर दृष्टि दौड़ाएं, तो भ्रष्टाचार में वृद्धि हुई दिखेगी? यदि वह बढ़ा भी है, तो भी क्या हम राष्ट्रीय संघर्ष चलाने में अक्षम हो गए हैं? भ्रष्टाचार के कारणों पर विचार करें, तो हमें ध्यान देना चाहिए कि क्या संघर्ष को स्थगित रखना और अधिकारी वर्ग में लालच का बढ़ते चला जाना ही इसके मुख्य कारण नहीं हैं? मैंने अपने पिछले पत्र में लिखा था कि बलिदान और कष्ट शायद इस भ्रष्टाचार को रोकने में कामयाब रहें और हमारा राष्ट्र नैतिक धरातल पर ऊपर उठ सके।

6 तारीख को राजेन बाबू मुझसे मिले थे। हमने श्रमिकों के प्रश्न पर वार्तालाप किया और फिर कांग्रेस के विषय में चर्चा चली। पहले जब मैंने आप से पत्राचार प्रारंभ किया था, तब मुझे आशा थी कि इस प्रकार हम कार्यकारिणी की समस्या को हल कर लें—शेष समस्याएं हमारे मिलने तक स्थगित रखी जा सकती हैं। किंतु जैसे—जैसे हमारा पत्र—व्यवहार आगे बढ़ा, मुझे महसूस हुआ कि इससे भी कोई परिणाम नहीं निकलेगा। अतः जब राजेन बाबू आए, तब तक मेरी आपसे मिलने की इच्छा बहुत तीव्र थी—हालांकि डॉक्टर की राय में यह उचित नहीं था। मुझे आशा थी कि शायद इससे कोई हल निकल आए। राजेन बाबू ने मेरे कहने पर बिड़ला हाउस में टेलीफोन कर मुलाकात करने का आग्रह किया था। किंतु जब राजेन बाबू ने मुझे कोई उत्साहजनक उत्तर नहीं दिया, तो मैंने सोचा—मुझे पुनः प्रयत्न करना चाहिए। इसलिए दोपहर में मेरे डॉक्टर ने पुनः बिड़ला हाउस में फोन किया और मैंने एक्सप्रेस तार भेजा—जिनका आपने उत्तर दिया

कि राजकोट की स्थितियां आपको तत्काल दिल्ली छोड़ने पर मजबूर कर रही हैं। तब मुझे महसूस हुआ और आज भी कहता हूं कि राजकोट ने आपकी आत्मा को खरीद लिया है और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को बहुत हानि पहुंचाई। मेरे जैसे लोगों के लिए कांग्रेस का मुद्दा राजकोट के आमंत्रण की अपेक्षा हजार गुना अधिक महत्वपूर्ण था। कोई भी समझ सकता था कि सर मौरिस ग्वेर के फैसले के पश्चात आपकी अनुपस्थिति में सरदार पटेल राजकोट की परिस्थिति को बखूबी संभाल सकते थे। बहरहाल; अब कुछ भी कहने को कोई लाभ नहीं, जबकि आपने निर्णय लिया और उसी के अनुरूप कार्य किया।

7 अप्रैल के तार में आपने कहा था कि मेरे भाई शरत व अन्य प्रतिनिधि वायुयान द्वारा राजकोट जाकर आपसे मुलाकात कर सकते हैं। यह बात उचित नहीं जान पड़ती यदि सीधे पत्राचार ही संतोषजनक परिणाम नहीं दे पा रहे हैं, तो भला इतनी दुरूह और नाजुक समस्या को प्रतिनिधि कैसे हल कर पाते? नहीं, मेरे विचार में प्रतिनिधियों को राजकोट भेजने से परिस्थितियों में सुधार नहीं हो सकता। केवल हमारी सीधी बातचीत ही काई हल निकाल सकती थी।

आपका 10 तारीख का पत्र अभी मिला है। अभी मैंने उस पर विचार किया। मुझे खेद के साथ बताना पड़ रहा है कि आपके अधिकांश उत्तरों ने मुझे निराश किया है। पूरे पत्र से निराशा की गंध आ रही है, जिसमें मै। सहभागी नहीं बन सकता। मुझे दुःख है कि आपने व्यक्तिगत मुद्दों पर अधिक चर्चा की है। आपको हमारी देशभक्ति पर भरोसा होना चाहिए था कि राष्ट्रीय आपात स्थिति में हम लोग इन मतभेंदो से ऊपर उठ सकेंगे। यदि हम कांग्रेस में एकता नहीं रख सकते, तो भला देश की एकता की कल्पना कैसे कर सकते हैं?

पंत प्रस्ताव के संबंध में आपने मुझे कोई व्यावहारिक राय नहीं दी है। यदि राज्यों में अहिंसक आंदोलन छिड़वाने में आप सक्षम हैं, तो आप जन–साधारण की स्वतंत्रता और राज्यों में जिम्मेदार सरकार की जीत की आशा कैसे कर सकते हैं? आखिरकार हमारा मुख्य उद्देश्य अहिंसक लोक–संघर्ष ही हैं ओर उससे बचकर हमें मध्यम नीति अथवा आपकी आत्मबलिदान की नीति को ही अपनाना पड़ेगा। आप कहते हैं कि जहां–जहां आपका प्रभाव था, वहां आपने अवज्ञा आंदोलन को समाप्त कर दिया है। हम जानते हैं कि ऐसा आपने राजकोट में किया और वहां आपने जिंदगी दांव पर लगाकर सारा बोझ आपने कंधों पर उठा लिया। क्या यह राजकोट के लोगों के लिए और आपके देशवासियों के लिए ठीक था?

आपका जीवन अपना नहीं है कि जब चाहें, उसे दांव पर लगा दें। देशवासी राजकोट की अपेक्षा अधिक विस्तृत क्षेत्र के लिए आपका निर्देशन व मार्गदर्शन मांग

सकते हैं। जहां तक राजकोट के लोगों को प्रश्न है—यदि वे अपने बलिदान और प्रयासों के बिना आपके आत्मबलिदान द्वारा स्वराज प्राप्त करते हैं, तो वे सदा के लिए राजनीतिक रूप से अविकसित रह जाएंगे और वे उस स्वराज प्राप्त करते हैं, तो वे सदा के लिए राजनीतिक रूप से अविकसित रह जाएंगे और वे उस स्वराज की रक्षा करने में भी असमर्थ रहेंगे, जो आप उन्हें दिलाएंगे। अंत में जहा विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न संघर्ष करने हैं वहां आप कितने मामलों में कितनी बार अपना जीवन दांव पर लगाते रहेंगे?

आप हमारे राजनीतिक व आर्थिक धरातल पर एकजुट होने के बारे में पूरी तरह निराश हो चुके हैं। आपने आर्थिक मुद्दे की बात उठाई। शायद आप भारत के लिए हमारी औद्योगिक योजना की नीति को अस्वीकार करते हैं, फिर भी हम औद्योगिकरण के साथ—साथ लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के पक्ष में भी हैं। राजनीतिक मतभेदां के विषय में मैं यह समझ पाने मं असमर्थ हूं कि आप किन मतभेदों को मूलभूत मतभेद मानते हैं। एकता और संयुक्त रूप से कार्य करने के हमारे की बाधाएं क्या हैं? यदि आपकी राय मं कार्य असंभव है, तो ऐसा लगता है—कम—से—कम फिलहाल तो जरूर—कि यह बात कांग्रेस के लिए निराशाजनक है। इन दिनों मैं बराबर यही सोच रहा था कि आपके जरिए हम दरार को पाटने में सफल हो पाएंगे और इस प्रकार एक राष्ट्रीय आपदा को रोकने में समक्ष होंगे।

असहमति के जिन मुददों की चंर्चा आपने की है—वे अच्छे, बुरे अथवा निरर्थक ही क्यों न हों; लेकिन ऐसे मुद्दे हैं— जो सदा बने रहेंगे। परिणामस्वरूप यदि आज संयुक्त रूप से कार्य करना कठिन है, तो हमेशा ही कठिन होगा। इसका मतलब यह है कि भविष्य में हमारे पास निराशा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। अपने युवा और आनंदमय आशावाद के रहते, जो हमें भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त कराता है; भला हम इस बात को कैसे स्वीकार कर सकते हैं?

आपने अपने कई पत्रों में राय दी है कि मुझे अपने कार्यक्रम व नीतियों का निर्धारण कर उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। किंतु कांग्रेस की ओर से मैं एक विशेष विधि से कार्यकारिणी के गठन के लिए नियुक्त किया गया हूं और यही मेरा प्रथम कर्तव्य है। अपने अध्यक्षीय भाषण में मैंने त्रिपुरी कांग्रेस में अपना कार्यक्रम पेश किया था, जिसे स्वीकार नहीं किया गया। वर्तमान समय में मैं यह महसूस नहीं करता कि मुझे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहिए, जबकि कार्यकारिणी का मुद्दा अभी हल नहीं हो पाया है।

अपने पहले पत्र में आपने लिखा था कि पहल मुझे करनी चाहिए। उसी के अनुसार मैंने अपने विचार और आज हमारे समक्ष खड़ी समस्या के संबंध में अपने सुझाव आपको भेजे थे। मैंने महसूस किया कि मेरे सभी सुझाव अथवा अधिकांश सुझाव आपकी

सहमति प्राप्त नहीं कर सके। अतः अब समय है कि पहल आप करें। कार्यकारिणी के सदस्यों के विषय में अपनी इच्छा की जानकारी मुझे दें। पंत प्रस्ताव का मानना है कि कार्यकारिणी का गठन न केवल आपकी इच्छानुरूप होना चाहिए, बल्कि उसमें आपका विश्वास भी व्यक्त होना चाहिए। आपके विचार हेतु मैं कुछ वैकल्पिक सुझाव भेज रहा हूं। सर्वप्रथम मैंने राष्ट्रीय संघर्ष शुरू करने का सुझाव दिया था, जिससे हमारी बहुत सी समस्याए हल हो जातीं। यह सुझाव आपको उचित नहीं लगता। दूसरे, यदि मुझे आपकी राय के अनुसार अपनी इच्छानुसार कार्यकारिणी का चुनाव करना हैं, तो कृपया आप मुझे अपना विश्वास–मत प्रदान करें। आपके अनुसार यह भी संभव नहीं है। तीसरा सुझाव मैंने यह दिया था कि आपको आगे आना चाहिए और कार्यकारिणी का दायित्व संभाल लेना चाहिए, जिससे बहुत–सी कठिनाइयां और समस्याएं अपने–आप हल हो जाएंगी। मेरे इस सुझाव का आपने कोई उत्तर नहीं दिया। यदि आप इसे भी अस्वीकार 'करते हैं, तो आपको कदम उठाना चाहिए और स्वयं ही कार्यकारिणी के गठन का उत्तरदायित्व संभालना चाहिए।

हर प्रकार से एक बात तो स्पष्ट है। मुझे खेद है कि मैं आपकी राय के अनुरूप अपनी इच्छीनुसार अपने पक्ष के लोगों की कार्यकारिणी नहीं बनाऊंगा। यह सलाह कांग्रेस प्रस्ताव के विरूद्ध है, जिसमें कहा गया है कि कार्यकारिणी में आपका विश्वास होना आवश्यक है। फिर, मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि वर्तमान परिस्थितियों में स्वेच्छानुसार बनाई गई कार्यकारिणी देशहित के लिए हानिकारक होगी। यह कांग्रेस की सामान्य सभा का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएगी। इससे भी बढ़कर यह असंतोष को बढ़ावा देगी और हममें आपसी कलह भी शुरू करा सकती है।

मुझे आशा है कि अब आप त्रिपुरी कांग्रेस द्वारा अपने पर डाले गए दायित्व का निर्वहन करेंगे। यदि आप इससे भी इंकार करेंगे, तो मुझे क्या करना होगा? क्या मैं इसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष रखूं और उससे आग्रह करूं कि वह कार्यकारिणी का गठन करे? क्या आप मुझे अन्य राय देना चाहेंगे?

आशा है बा अब पहले की अपेक्षा स्वस्थ होंगी और शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगी। आपका स्वास्थ्य, विशेष रूप से ब्लडप्रेशर कैसा है? मैं धीरे–धीरे ठीक हो रहा हूं।

सादर प्रणाम।
आपका स्नेहाकांक्षी,
सुभाष

पुनश्च :– आपने (10 तारीख) के अपने पत्र में, जिसका अभी मुझे उत्तर देना है। विश्वास–मत लिए मेरी प्रार्थना के उत्तर में कहा है कि मुझ द्वारा गठित कार्यकारिणी

के विषय में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को अपना निर्णय देने दो, उसमें आपकी राय या मत का कोई प्रश्न नहीं। इससे तो मैं यह अधिक उचित मानूंगा कि वे कार्यकारिणी के बैठक संबंधी निर्णय भी स्वयं लें।

यदि मैं आपकी राय को व्यावहारिक रूप नहीं दे पा रहा—क्योंकि वह पंत प्रस्ताव के विरूद्ध है और यदि आप स्वयं कार्यकारिणी के गठन को तैयार नहीं, तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को चाहिए कि वह कार्यकारिणी के गठन दायित्व को उठाए। क्या आप कोई और रास्ता सुझाएंगें?

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 14 अप्रैल, 1939

इस प्रेस रिपोर्ट से मैं बहुत विचलि हूं कि आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में कलकत्ता में उपस्थित नहीं हो पाएंगे तथा गांधी सेवा संघ की बैठक मई के द्वितीय सप्ताह के लिए स्थगित कर दी गई है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में आपका होना अनिवार्य है। क्या मई के पहले सप्ताह में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक आपके लिए सुविधाजनक होंगी? कृपया तार भेंजे—सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

राजकोट: 14 अप्रैल, 1939

मैंने पत्र भेजा है। कोई सहायता नहीं कर सकता। तुम राष्ट्रीय हित में अपनी पसंद की कार्यकारिणी का चुनाव करो और अपना कार्यक्रम तैयार करो—मेरा विश्वास है कि यही उचित होगा। प्यार—बापू।

महात्मा गांधी की ओर से

राजकोट; 14 अप्रैल, 1939

तुम्हारा तार मिला। तीन मई से 10 मई तक गांधी सेवा संघ की बैठक होगी। बेहतर हो, कार्यकारिणी की बैठक 28 को और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक 29 को रहे। भरसक प्रयत्न करूंगा कि उपस्थित रहूं। बा का बुखार ठीक है। कोई खतरा नहीं है। प्यार—बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 15 अप्रैल

आज आप के दो तार मिले। खेद है, आपके कलकत्ता पहुंचने के प्रति आश्वस्त नहीं हो पाया। अ. भा. कां. क.में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है। आपकी सुविधा के लिए बैठक स्थगित की जा सकती है। खेद है, समजातीय कार्यकारिणी के विषय

में आपकी राय नहीं मान सकता। परिणामतः एक ही विकल्प है कि आप कार्यकारिणी नामित करें। मैंने 13 तारीख को पत्र लिखा था। आज पुनः लिख रहा हूं। यदि किसी कारणवश आप नामित नहीं करेंगे, तो इसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष रखा जाएगा। हमें आमने–सामने बैठकर बातची द्वारा समझौते का अंतिम प्रयास करना चाहिए। मेरे 13 और 15 तारीख के पत्रों पर विचार करने के पश्चात कृपया सुविधाजनक तिथि की सूचना दें। प्रणाम–सुभाष।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा
15 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय महात्माजी,

आज ही मैंने आपको तार भेजा है, जिसमें कलकत्ता में आयोजित की जा रही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में आपकी उपस्थिति का जिक्र किया था, जो बहुत जरूरी है। इतना जरूरी है कि यदि आवश्यक जान पड़ा तो अ. भा. कां. कं. की बैठक की तिथि आपकी सुविधाजनक स्थगित भी की जा सकती है। कृपया मुझे सूचित करें कि किस तिथि में आप यहां आ सकते हैं। विभिन्न राजनीतिक दृष्टिकोण वाले कई मित्रों ने मुझे कहा है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक से पहले कार्यकारिणी का गठन अवश्य हो जाना चाहिए । उनका विचार है कि कार्यकारिणी के गठन के बगैर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक आयोजित करना व्यर्थ है। उनका मानना है कि यदि पत्राचार द्वारा हल नहीं निकला, तो हमें व्यक्तिगत वार्तालाप द्वारा अंतिम प्रयास भी करके देख लेना चाहिए। हमारे मिलने के लिए यदि आवश्यक समझा गया, तो आखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक स्थगित भी की जा सकती है।

मैं व्यक्तिगत रूप से इसके स्थगन के विरूद्ध हूं (क्योंकि देरी का सारा दोष मुझ पर ही लगाया जा सकता है), जब तक कि आप स्वीकृति न दे दें। किंतु मै। गहराई से महसूस करता हूं कि यदि पत्राचार हें किन्हीं संतोषप्रद परिणामों तक न पहुंचा पाएं, तो हमें अवश्य मिल लेना चाहिए और हमारी मुलाकात और बातचीत से भी यदि हल नहीं निकलता, तो कम–से–कम यह संतोष तो रहेगा कि हमने सारे प्रयास करके देख लिए।

अब मुझे वर्तमान स्थिति का संक्षिप्त वर्णन करने दें। मुझे खेद है कि समजातीय कार्यकारिणी के गठन की बाबत आपकी राय का अनुपालन नहीं कर सकता (यहां मैं उन कारणों को दुहराऊंगा नहीं, जिनका विस्तार से उल्लेख मैं अपने पिछले

पत्रों में कर चुका हूं)। लिहाजा अब आपको उस उत्तरदायित्व को स्वीकार कर लेना चाहिए, जो पंत प्रस्ताव के परिणामस्वरूप आप पर डाला गया है। दूसरे शब्दों में, आपको कार्यकारिणी के सदस्यों के नामों की घोषना करनी होगी। आपके ऐसा करने से समस्या का अंत होगा–यानी कार्यकारिणी का चुनाव संभव होगा–और कार्यकारिणी के चुनाव के बाद अ. भा. कां. क. की कार्यकारिणी की बैठक संभव हो पाएगी। हम यही आशा कर सकते हैं कि सब ठीक–ठाक हो जाएगा और अड़चन पैदा नहीं होगी।

यदि किसी कारणवश आप कार्यकारिणी के चुनाव से इंकार करते हैं, तो दुविधा में पड़े रहेंगे। अनिर्णय की स्थिति में यहमामला अ. भा. कां. क. के समक्ष ले जाना पड़ेगा। मेरे विचार से सबकी राय यही है कि भार. कां. क. की बैठक से पहले ही कार्यकारिणी की समस्या हल कर ली जानी चाहिए, ताकि वह बैठक की बजाय युद्ध का मैदान बनकर ही न रह जाए।

मैं नहीं जानता कि फिलहाल आपके मतिष्क में क्या है– किंतु मुझे पता है कि अब आप कार्यकारिणी से सदस्यों के नामों की घोषणा करेंगे और यह दुविधा समाप्त हो जाएगी। यदि आप कुछ और सोचते हों, तो मैं आपसे प्रार्थना करूंगा आप उन दुष्पपरिणामों पर गौर करें; जो तब सामने आएंगे, जब हम कार्यकारिणी की समस्या हल किए बगैर कलकत्ता में आयोजित अ. भा. कां. क. की बैठक बुलाएंगे। यदि ऐसी स्थिति पैदा होती है, तो कि हम अ. भा. कां. कं. की बैठक को स्थगित करके उससे पहले ही एक बैठक आयोजित कर लें।

हाल ही में एक विचार मेरे दिमाग में पैदा हुआ है। हम समजातीय कार्यकारिणी के चुनाव पर तो बहुत चर्चा कर रहे हैं, किंतु क्या हम यह जानते हैं कि इसका आशय क्या है? उदारहण के तौर पर लखनऊ, फैजपुर और हरिपुरा कांग्रेस के पश्चात जो कार्यकारिणी गठित की गई, उसे क्या आप समजातीय मानते हैं? फिर समजातीय या संयुक्त कार्यकारिणी के प्रश्न पर झगड़ा करने का अर्थ क्या हैं? यदि उन्हें आप संयुक्त कार्यकारिणी मानते हैं, और यदि वे पिछले तीन वर्ष तक सफलतापूर्वक कार्य कर सकती हैं–तो भला अब यह संभव क्यों नहीं है? इससे मुझे यह सूझा है कि यदि हम समजातीय और संयुक्त कार्यकारिणी की सैद्धांतिक चर्चाकरनी छोड़ दें, तो हम उनके नाम सुझा सकते हैं, जो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के विश्वस्त होंगे तथा जो कांग्रेस की सामान्य सभा के सदस्य होंगे। कृपया समस्या के इस पहलू पर भी विचार करें।

फिर आप भ्रष्टाचार एवं अहिंसा जैसी समस्याओं के प्रति अत्यधिक गंभीर हैं। शायद आप इन्हें मौलिक समस्याएं मानते हैं; फिर, हमारा मतभेद आज उपस्थित भ्रष्टाचार व हिंसक प्रवृत्ति के अनुपात को लेकर तो है ही– लेकिन क्या हम इस बात

पर सहमत नहीं हैं कि भ्रष्टाचार, हिंसा आदि को समाप्त कर आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए? यदि ऐसा है तो फिर आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि हम बिल्कुल एकजुट होकर कार्य नहीं करेंगे और महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहमत नहीं हो पाएंगे?

इस पत्र को मैं अधिक लंबा नहीं करूंगा। मैंने अपना बहुत–सा बोझ आप पर डाल दिया है। मैं पुनः कहूंगा कि हमारे सैद्धांतिक विचार कुछ भी क्यों न हों, पर हमें व्यक्तिगत वार्तालाप के लिए प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। कार्यकारिणी के विषय में हमारे विचार कुछ भी हों, लेकिन हम व्यक्तियों के नाम तो सहमति से चुन ही सकते हैं। महत्वपुर्ण समस्याओं पर हमारा मतभेद हो सकता हैं, लेकिन कार्यवाही के लिए हम एकमत हो सकते हैं।

आशा है कि बा तेजी से स्वास्थ्य लाभ कर रही होंगी और श्रम के बावजूद आपका भी स्वास्थ्य संतोषजनक होगा। मैं तेजी से स्वस्थ हो रहा हूं।

आदर सहित प्रणाम।
आपका स्नेहाकांक्षी
सुभाष

महात्मा गांधी की ओर से

राजकोट; 17 अप्रैल, 1939

तुम्हारा पत्र व तार मिला। अ. भा. कां. क. की बैठक 29 को ही रखो। मैं आऊंगा। तुम पर समिति लादना मेरे लिए असंभव है। यदि तुम गठित नहीं करते तो अ. भा. कां. क. को चुनने दो। संयुक्त कार्यकारिणी मुझे अव्यावहारिक प्रतीत होती है। तुमने रोक हटा ली है, सो समय मिला, तो जनहित में बयान जारी करूंगा। प्यार–बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 18 अप्रैल, 1939

यदि आप बयान जारी करते हैं, तो कृपया मुझे पत्राचार जारी करने की अनुमति दें।

पिछला पत्र 15 को लिखा हैं–सुभाषं

महात्मा गांधी की ओर से

राजकोट; 18 अप्रैल, 1939

पत्राचार प्रकाशित करो, जिससे बयान जारी करना आवश्यक नहीं रहेगा। प्यार—बापू।

महात्मा गांधी की ओर से

राजकोट; 19 अप्रैल, 1939

24 को अवश्य चल दूंगा। 27 को प्रातः कलकत्ता पहुंचूंगा। शायद सोदपुर में रहूंगा। हेमप्रभा देवी सदा आग्रह करती हैं। डॉक्टर रॉय ने चिकित्सक की दृष्टि से एक अन्य राय दी है। कल तक मैं बुखार से पीड़ित था, जो लगातार बढ़ राह है। आशा है रवानगी से पूर्व नियंत्रित हो जाएगा। तुम्हारे पत्र में अनेकों सुझाव के बावजूद भी असहाय हूं। आपसी अविश्वास के इस वातावरण में पंत प्रस्ताव की शर्तें पूरी करो। दोंनो पक्षों में शंका और मतभेद जारी है। मेरी राय यही है कि तुम्हें निडर होकर समिति का गठन कर लेना चाहिए। तुम्हारे जो विचार हैं, वे उचित नहीं है। प्यार—बापू।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; 20 अप्रैल, 1939

अत्यधिक प्रसन्न हूं कि आप 27 को कलकत्ता आ रहे हैं। अपनी निजी सुविधा के लिए व लोक—हित में आप कहीं भी ठहरें, कोई आपत्ति नहीं है। मैं आपको शहर के बाहर नदी के किनारे ठहरने का सुझाव देना चाहता था। बहरहाल, कलकत्ता में सतीशबाबू से विचार—विमर्श करने के पश्चात आपको तार भेजूंगा। कल जवाहरलालजी यहीं थे। हम चाहते हैं कि आप यात्रा के दौरान कलकत्ता के आस—पास एक दिन के लिए रूक जाएं, जहां हम दोनों आपसे व्यक्तिगत वार्तालाप हेतु मिल सकें। यदि आपको यह विचार उचित जान पडे तो आप तार द्वारा अपने मार्ग की सूचना दे दें। मैं किसी सुविधाजनक स्टेशन पर रूकने का प्रबंध करा दूंगा। 21 तारीख को कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हूं—सुभाष।

महात्मा गांधी के लिए

20 अप्रैल, 1939

आपके ज्वर के प्रति चिंतित हूं। शीघ्र लाभ की कामना करता हूं। जवाहरलालजी और मेरा विश्वास है कि हमारे मिलने से अवश्य शुभ परिणाम निकलेंगे। लोकहित में सभी कांग्रेसियों का सहयोग प्राप्त करना संभव हो पाएगा। कलकत्ता में हमारी मुलाकात

को दृष्टि में रखते हुए हम दोनों का विचार है कि मुलाकात से पूर्व पत्राचार को प्रकाशित करना उचित नहीं है। प्रणाम–सुभाष।

महात्मा गांधी के लिए

झीलगुड़ा; पोस्ट ऑफिस
जिला : मानभूम, बिहार
20 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय महात्माजी

आज ही आपको निम्न तार भेजा है :

महात्मा गांधी, राजकोट । आपके ज्वर के प्रति चिंतित हूं। शीघ्र की कामना करता हूं। जवाहरलालजी का ओर मेरा मानना है कि हमारी मुलाकात से शुभ परिणाम निकलेंगे। लोक–हित में सभी कांग्रेसियों का सहयोग करना संभव हो पाएगा। कलकत्ता में हमारी मुलाकात को दृष्टि में रखते हुए हम दोनों का विचार है कि पत्राचार को मुलाकात से पूर्व प्रकाशित करना उचित नहीं है। प्रणाम–सुभाष।

पिछले तीन सप्ताह से हममें लंबा पत्राचार चल रहा है। जहां तक कार्यकारिणी के गठन का संबंध है, उससे कोई ठोस परिणाम नहीं निकला हैं– फिर भी, इसका एक और लाभ यह हुआ कि हम अपने विचार स्पष्ट कर सके। फिर भी वर्तमान समस्या यही है कि हम अधिक समय तक कार्यकारिणी के बिना काम नहीं चला सकते। देश की भीतरी परिस्थितियों व अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि कांग्रेसियों के पदों को समाप्त कर दिया जाए और संयुक्त मोर्चे का गठन किया जाए। हम भली–भांति जानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय स्थिति निरंतर बिगड़ रही है। ब्रिटिश संसद के समक्ष पेश संशोधित बिन द्वारा सरकार प्रांतीय सरकारों को रौंदने की कोशिश में है–ताकि जो अधिकार उन्हें प्राप्त हैं, वे युद्ध की स्थिति में उनके पास न रह सकें। यह बात तो बिना शक निश्चित है कि चारों ओर से कठिनाइयों का घेरा बढ़ रहा है। इसका सामना करने की आशा हम तभी कर सकते हैं, जब हम लोग शीघ्र ही अपने मतभेदों को भुला दें और उच्चपदों में एकता और अनुशासन को कायम कर सकें। यह कार्य तभी संभव होगा, जब आप सामने आकर नेतृत्व संभालते हैं । ऐसी स्थिति में आप अनुभव करेंगे कि हम सभी आपको सहयोग देने और आपका अनुपालन करने का हर संभव प्रयास करंगे। आप देखेंगे कि भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने और हिंसक प्रवृत्ति को समाप्त करने के विषय में हम लोग एकमत हैं–यद्यपि आज के भ्रष्टाचार व हिंसा के अनुपात में हमारे विचार भिन्न हो सकते हैं। जहां तक कार्यक्रम का संबंध है, उसका निर्णय अ.भा.कां.क. द्वारा होगा– हालांकि प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह

अपने विचार और कार्यक्रम इनके सम्मुख पेश कर सकता है। कार्यक्रम के विषय में मेरी राय है कि इसका निर्णय हमारे सम्मुख पेश होने वाली कठिनाइयों पर निर्भर है तथा उस समय इस विषय में मतभेद रहने का प्रश्न ही नहीं रह जाएगा।

कलकत्ता में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक से पूर्व मुलाकात का मैं व्यग्रता से इंतजार कर रहा हूं। अन्य प्रांतों की भांति बंगाल में भी यह मत बन रहा है कि कार्यकारिणी की समस्या को सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद आपसी सहमति से हल कर लेना चाहिए। पंत प्रस्ताव के अंतर्गत कार्यकारिणी के गठन का उत्तरदायित्व आपका है और जब आप यह उत्तदायित्व ले लेंगे, तो आप देखेंगे कि हमारा यथासंभव सहयोग आप के साथ है।

कल जवाहर यहीं थें। वर्तमान परिस्थितियों पर हमने विस्तृत चर्चा की। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि हमारे विचारों में समानता है।

मेरे विचार से कलकत्ता के निकट किसी स्टेशन पर यात्रा में विश्राम करना उचित रहेगा, वहीं हम लोग एकांत वार्तालाप भी कर पाएंगे। यदि आप नागपुर की ओर से आएंगे, तो मिदनापुर (खडगपुर) सबसे उचित रहेगा। यदि आप चोकी की ओर से आएंगे, तो बर्दवान के नजदीक कोई जगह ठीक रहेगा। इस विषय में मैंने आपको तार भी भेजा है। आपके उत्तर का इंतजार रहेगा। यदि यह संभव हुआ तो हम कलकत्ता में मिलेंगे। मैंने जवाहर से प्रार्थना की है कि वे भी इस वार्तालाप में शामिल हों और उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया है।

आपके ज्वर के बारे में चिंतित हूं। प्रार्थना करता हूं कि शीघ्र ही खत्म हो जाए।

प्रणाम।

आपका स्नेहाकांक्षी,
सुभाष

महात्मा गांधी के लिए

कलकत्ता, 22 अप्रैल, 1939

सतीश बाबू से बात हुई, उन्होंने शांत वातावरण में आपके ठहरने का समर्थन किया है। अतः मार्ग में रूकना आवश्यक नहीं । समाचारपत्रों से पता चला कि आप दिल्ली मार्ग से आ रहे हैं। आपके तार के अनुसार आप नागपुर मार्ग से पहुंच रहे हैं। कृपया मार्ग की सूचना दें—सुभाष बोस।

नोट— पत्राचार के बीच के दिनों में अंतिम तार भेजने के पश्चात अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक कलकत्ता में पूर्व निर्धारित तिथि में सम्पन्न हुई। 29

अप्रैल, 1939 को उस बैठक में नेताजी ने अपना त्यागपत्र दे दिया। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष उन्होंने जो बयान दिया, वह इस पुस्तक के पृष्ठ 107 पर है। अपना त्यागपत्र देने से पूर्व बोस ने निम्न पत्र पढ़कर सुनाया, जो उन्हें गांधीजी की ओर से प्राप्त हुआ था—संपादक।

महात्मा गांधी की ओर से

मेरे प्रिय सुभाष,

पंत प्रस्ताव की शर्तों के आधार पर तुमन मुझसे कार्यकारिणी के सदस्यों के नाम सुझाने की बात की है। जैसा कि मैं अपने पत्रों और तारों में भी जिक्र कर चुका हूं—मेरे लिए यह कार्य करना कठिन है। त्रिपुरी के पश्चात बहुत कुछ घट चुका है। तुम्हारे विचार जानने के पश्चात और यह जानते हुए कि किस तरह अनेक सदस्यों में मौलिक मतभेद हैं—मुझे लगता है कि यदि मैंने तुम्हें नाम सुझाए, तो वह तुम पर जबरदस्ती करना होगा। इस संदर्भ में मैं अपने पत्रों में विस्तृत चर्चा कर चुका हूं। तीन—तीन दिनों के व्यक्तिगत वार्तालाप के बाद भी ऐसा कुछ नहीं हुआ, जो मेरी राय बदल सकता। ऐसी स्थिति में तुम अपनी समिति का चुनाव करने को स्वतंत्र हो। मैंने बताया था कि तुम पूर्व—सदस्यों के साथ विचार—विमर्श करके आपसी समझौते की संभावनाएं खोज सकते हो और मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता होगी कि तुम लोग एक हो गए हो। जो कुछ घट चुका है, उसकी चर्चा मैं नहीं करना चाहता । तुम और भूतपूर्व सदस्य अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष स्थिति स्पष्ट कर सकते हैं। मेरे लिए यह बहुत दुःखद विषय है कि आपसी समझौता संभव नही है। मुझे आशा है कि जो भी कदम उठाया जाएगा, वह आपसी सहयोग के आधार पर ही उठाया जाएगा।

प्यार सहित,

तुम्हारा

बापू

सोदपुर, 29.4.39

महात्मा गांधी के लिए

कलकत्ता ; 5 मई, 1939

पत्राचार प्रकाशित कराना चाहता हूं, कृपया अपनी राय तार द्वारा प्रेषित करें—सुभाष।

महात्मा गांधी की ओर से

बृंदावन (चंपारण); 6 मई, 1939

पत्राचार प्रकाशित करें। प्यार—बापू।

बोस—नेहरू का पत्र—व्यवहार
जवाहरलाल नेहरू की ओर से

आनंद भवन
इलाहाबाद, 23 अप्रैल, 1938

मेरे प्रिय सुभाष

मंत्रियों से मुलाकात और कार्यकारिणी के संबंध में तुम्हारे पत्र और तार मिले। क्या तुम हमारे कार्यालय को इस आशय के निर्देश भेजोगे कि वह इन बैठकों के लिए आमंत्रण पत्र जारी करे? मंत्रियों से मुलाकात में किसे आमंत्रित करना है? प्रधानमंत्री ओर संसदीय सदस्यों को मेरा सुझाव है कि कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को मंत्रियों से मुलाकात की सूचना दे देनी चाहिए। यदि वे चाहेंगे, तो उपस्थित हो जाएंग। प्रधानमंत्री को भी कह दिया जाना चाहिए क वे अपने अन्य मंत्रियों को सूचि कर दें कि यदि वे इस बैठक में उपस्थित होना चाहें, तो उनका स्वागत है।

तीन दिन के लिए मैं लखनऊ जा रहा हूं। 27 तारीख को इलाहाबाद लौटूंगा। उसके पश्चात पांच दिन यहा रहूंगा, फिर गढ़वाल जाऊंगा। क्या तुम सहायक सचिव के द्वारा अपना उत्तर कार्यालय के पते पर भेज सकते हो, ताकि तुम्हारे निर्देशो के अनुपालन में देरी न हो सके?
तुम्हारा शुभेच्छु

जवाहर

सार्जेंट सुभाषचंद्र बोस, 38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता।

जवाहरलाल नेहरू के लिए

ट्रेन में
19 अक्तूबर, 1938

मेरे प्रिय जवाहर,

तुम अवश्य सोच रहे होओगे कि मैं कैसा अद्भुत व्यक्ति हूं कि तुम्हारे सभी पत्रों का जवाब नहीं देता, हांलाकि वे सब मुझे प्राप्त हो गए हैं। कार्यकारिणी के सदस्यों को तुमने जो पत्र लिखे हैं, वे सभी ने पढ़े हैं। यहां के समाचारों की सूचना की सूचना तुम्हें कृपलानी व अन्य मित्रों से मिलती ही रहती है। युद्ध संकट के क्षणों में तुम्हारे बयान समयोचित थे और हमारे लिए उपयोगी भी।

इन महीनों मे मैंने तुम्हें कितना याद किया, उसका तुम अंदाजा नहीं लगा सकते। मेरा ख्याल है कि तुम्हें परिवर्तन की अति आवश्यकता है। मुझे खेद है कि तुम स्वयं को पर्याप्त शारीरिक आरम नहीं देते हो। कुल मिलाकर यहां का प्रेस अच्छा है—

रायटर को धन्यवाद। यूरोप में तुम्हारी गतिविधियों और कार्यों के विषय में जनता को सूचित किया जाता रहता है। वे तुम्हारे बयानों में भी दिलचस्पी लेते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि युरोप के प्रवास के दौरान तुमने इतना उपयोगी कार्य किया—हालांकि यहां हमें तुम्हारी कमी खलती रही।

कई समस्याएं तुम्हारे लौटने के इंतजार में है। हिंदू–मुस्लिम प्रश्न है। श्री जिन्ना अनावश्यक रूप से अड़े हुए हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के दोनों पक्षों में दरार पड़ चुकी है। वामपंथीय ने बहिष्कार किया, जिसे महात्माजी ने गंभीरता से लिया है। फिर, अंतर्राष्ट्रीय प्रश्न भी है।

मुझे आशा है कि तुम योजना समिति की अध्यक्षता स्वीकार करोगे। यदि इसे सफल करना है, तो तुम्हें अवश्य स्वीकार करन लेना चाहिए।

प्यार,
तुम्हार शुभेच्छु,
सुभाष

पुनश्च : कल मैं बंबई से कलकत्ता पहुंच रहा हूं।

जवाहरलाल नेहरू की ओर से

व्यक्तिगत और गुप्त
इलाहाबाद
4 फरवरी, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

हमलोगों ने शांतिनिकेतन में लगभग एक सप्ताह तक बात की, किंतु दुःख है कि हम स्थिति स्पष्ट नही कर पाए। वास्तव में यह कठिन कार्य था, क्योंकि अनिश्चय की कई सारी बातें बनी हुई हैं और पता नहीं लग पर रहा कि स्थितियां क्या रूप लेंगी। हमें इन स्थितियों का इंतजार करना होगा, क्योंकि वे हम पर निर्भर करती है—विशेष रूप से तुम पर।

जैसा कि मैंने तुम्हें बताया था, तुम्हारे चुनाव लड़ने से कुछ लाभ हुआ है, तो कुछ हानि भी हुई है। मुझे आने वाले नुकसान का आभास था। अभी भी मेरा मेरा संतुलित विचार यही है कि यह बेहतर कि ऐसा विशेष संघर्ष इस प्रकार न उत्पन्न होता। किंतु यह बात तो बीत चुकी, अब भविष्य सम्मुख है। इस भविष्य को हमें वृहद दृष्टिकोण से देखना है। व्यक्तिगत रूप में निश्चित ही हममें से किसी का भी शेखी में आना उचित नहीं है, क्योंकि जैसा हम लोग चाहते थे वैसी घटनाएं घटी नहीं । कुछ भी हो, हमें अपने लक्ष्य के प्रति सब कुछ समर्पित करना है। इस परिप्रेक्ष्य में सही मार्ग खोजना कठिन है। मेरा मन भविष्य के प्रति चिंतित है।

सबसे पहला कार्य जो हमें करना है, वह यह है कि हमें जहां तक संभव हो, एक दूसरे की विचारधारा को ठक से समझना है। यदि ऐसा होता है, तो वह प्रस्ताव पारित करना सरल कार्य है। किंतु यदि हमारे मन–मस्तिष्क दूसरों के उद्देश्यों व कार्यों के प्रति शंकालु और दुराग्रह से भरे होंगे, तो भविष्य का निर्माण कर पाना आसान कार्य नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में मुझे गांधीजी व वल्लभभाई के सान्निध्य का सुअवसर प्राप्त हुआ था उनके विचारों को जानने का मौका मिला। हम लोगों की बहुत लंबी बातचीत हुई है। हम एक दूसरे का आश्वस्त रकने में असफल रहे। हम लोगों ने काफी हद तक एक दूसरे को प्रभावित किया है और मुझे विश्वास है कि हम लोग एक दूसरे को काफी समझे भी हैं। 1933 तक, जेल से बाहर आने पर मैं गांधीजी से मिलने पूना गया था, जब वे उपवास के पश्चात स्वास्थ लाभ कर रहे थे।

हम लोगों नेअपने संघर्ष के विभिन्न पक्षों पर लंबी बातचीत की, फिर पत्र–व्यवहार किया, जो बाद में प्रकाशित भी हुआ। उस वार्तालाप और पत्र–व्यवहार में हमारे वैचारिक और मूलभूत मतभेद उभर कर सामने आए। वे बों भी उभरीं, जिन पर हम लोग एकमत थे। तभी से कभी कार्यकारिणी में और कभी व्यक्तिगत रूप से विस्तृत चर्चा होती रहती है। कई अवसरों पर मैंने पद से –यहां तक कि कार्यकारिणी से–त्यागपत्र देने का विचार भी किया। फिर मैंने स्वयं को ऐसा करने से रोका, क्योंकि मैंने विचार किया कि वर्तमान संकट की घड़ी में एकता की अति आवश्यकता है। शायद मैं गलत था।

अब वह संकट इस प्रकार उभर कर आया है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे पहले कि मैं अपना कार्य निर्धारित करूं, मुझे यह पता होना चाहिए कि तुम्हारी राय में कांग्रेस को कैसा होना चाहिए और क्या करना चाहिए? मैं इस विषय में पूरी तरह से अंधेरे में हूं। दोनों पक्षों के संबधं में तथा फेडरेशन के विषय में विस्तृत चर्चा हुई है। फिर भी जहां तक मुझे याद है, इन प्रश्नों पर कोई महत्वपूर्ण निर्णय हम नहीं ले पाए। इन पर हमने तुम्हारी अध्यक्षता में कार्यकारिणी में विस्तृत चर्चा की है। मैं नहीं जानता कि किन लोगों को तुम वामपंथी मानते हो, किन्हें उदारवादी। अध्यक्षीय चुनाव के दौरान जिस प्रकार तुमने ये शब्द प्रयोग में लाए, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि गांधीजी व कार्यकारिणी में उनके समर्थक उदारवादी नेता हैं। उनके विरोधी, वे जो भी हों, वाममार्गी हैं। मुझे यह बात ठीक नहीं लगती । मेरे विचार में तथाकथित वामपंथी अधिक उदार हैं। राजनीति में कठोर भाषा, आलोचना करने की क्षमता और पुराने कांग्रेसी नेताओं पर टिप्पणी करना वाममार्ग की पहचान नहीं है। मुझे तो ऐसा लगता है कि भविष्य में जो सबसे बड़ा संकट हमारे समक्ष उपस्थित होने वाला है वह पदों पर बने रहने का और उन व्यक्तियों के उत्तरदायित्व की स्थिति का, जो किसी प्रकार के उत्तरदायित्व से रहित

हैं और वस्तुस्थिति को भली-भांति जानना नहीं चाहते। वे उच्च कोटि की बौद्धिकता से दूर हैं। वे ऐसी स्थिति ला खड़ी करेंगे, जिससे प्रतिक्रिया अवश्य पैदा होगी और वास्तविकता को बहा ले जाएगी। चीन का उदाहरण हमारे सामने है। मैं भारत को उस मार्ग पर चलने देना नहीं चाहता। काश! मैं कुछ कर पाता।

मेरा विचार है कि प्रायः वाममार्ग और सुधारवादी शब्द का प्रयोग गलत या भ्रांति पैदा करने वाला होता है। यदि इन शब्दों की अपेक्षा हम नीतियों के विषय में चर्चा करें, तो उचित रहेगा। आप किस नीति में विश्वास करते हैं? फेडरेशन विरोधी? अच्छी बात हैं। मेरे ख्याल से कार्यकारिणी के अधिकांश सदस्य उसके पक्ष में हैं। इस विषय में उनकी कमजोरी पर अंगुली रखना उचित नहीं है। फिर क्या तुम्हारे लिए यह अधिक उचित नहीं है कि तुम इस विषय को कार्यकारिणी की बैठक में उठाओ? इस विषय पर प्रस्ताव पेश करो और तब प्रतिक्रिया देखो? निश्चय ही अपने सहयोगियों से इस विषय पर विस्तृत चर्चा किए बगैर उनपर उनका पीछे हटने का दोषारोपण अनुचित था। फेडरेशन के मंत्रियों पर तुम्हारे द्वारा लगाए गए दोषों के बारे में मैं जो कुछ तुम्हें कह चुका हूं, उसे दुहराना नही चाहूंगा। अधिकांश लोगों का यही मत है कि कार्यकारिणी के तुम्हारे सहयोगी दोषी पक्ष से हैं।

तुम्हें याद होगा कि यूरोप से मैंने तुम्हें और कार्यकारिणी को लंबी रिपोर्ट भेजी थी। फेडरेशन के प्रति हमारा नजरिया क्या होना चाहिए और तुम्हारे निर्देश कया हैं- इस विषय में हमने लंबी बातचीत की थी। तुमने मुझे कोई सुझाव नहीं भेजा हे, यहां तक कि पत्र-प्राप्ति की सूचना तक नहीं दी। मेरे विचारों से गांधीजी सहमत थे। मुझे बताया गया कि कार्यकारिणी के अन्य सदस्य भी इससे सहमत थे। अभी तक मुझे तुम्हारी प्रतिक्रिया के विषय में कुछ पता नहीं लग पाया है। लेकिन क्या मुझे सूचित करने के अलावा तुम्हारे लिए यह मौका नहीं था कि तुम इस विषय में कार्यकारिणी से विस्तृत बाचीत करते ओर किसी निष्कर्ष पर पहुंचते? खेद है कि इस विषय में और अन्य मुद्दों पर भी तुमने कार्यकारिणी में बहुत निराशाजनक रूख अपनाया – जबकि बाहर कई बार तुमने अपने विचार व्यकत किए हैं। वास्तव में तुमने अध्यक्ष की अपेक्षा प्रवक्ता की भूमिका अधिक निभाई है।

पिछले वर्षों में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय की स्थिति बहुत बिगड़ी है। तुमने इस ओर बिल्कुल ध्यान दिया और भेजे गए पत्रों व तारों का उत्तर भी बहुत कम दिया- जिसके परिणास्वरूप कार्यालय के कई कार्य अनिश्चित काल तक के लिए लटके रहे। इस समय जबकि संस्था पर अत्याधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, तब हमारा मुख्यालय कार्य करने में अक्षम हैं।

हमारे सम्मुख राज्य से संबद्ध प्रश्न हैं। हिंदू-मुस्लिम प्रश्न है। किसानों और

श्रमिकों से संबंधित प्रश्न हैं। इन विषयों पर लोगों के विभिन्न दृष्टिकोण हैं तथा कई विवाद हैं। इनमें से किसी विषय पर तुम्हारी क्या राय है, जिनके बारे में तुम्हारे सहयोगियों में मतभेद हैं? बंबई व्यापार संघर्ष बिल को ही लो। मैं उसकी कुछ बातों से असहमत हूं और यदि उस समय मै। यहां होता, तो निश्चित रूप से उन्हें परिवार्तित करा देता । क्या तुम भी असहमत हो? यदि हां, तो तुमने उनमें परिवर्तन कराया? विभिन्न प्रांतों की सामान्य स्थिति को ही लें। मुझे नहीं मालूम है कि बंगाल सहित अन्य प्रश्नों पर तुम्हारे दिशेष विचार या दृष्टिकोण क्या हैं।

प्रांतीय कांग्रेस सरकारें तेजी से संकट की ओर बढ़ रही हैं। पूरी संभावना है कि राज्यों में जारी आंदोलन एक बड़े संकट का रूप धारण कर लेगा जिसका सामना प्रांतीय सरकारों सहित हम तमाम लोगों को करना होगा। तुम्हारी राय में हमें क्या मार्ग अपनाना चाहिए? बंगाल में संयुक्त सरकार की तुम्हारी मांग का संविधान के प्रति विरोध के तुम्हारे रवैये से कोई समानता नहीं है। सामान्यतः इसे उदारवादी कदम माना जाएगा—विशेष रूप से तब जबकि स्थितियां से बदल रही हैं।

फिर विदेश नीति को, जैसा कि तुम मानते हो, मैं बहुत अहमियत देता हूं। विशेष रूप से इस हालत में । मेरे विचार से तो तुम्हारे लिए भी यह महत्वपूर्ण है। किंतु अभी तक मुझे यह मालूम नहीं हो पाया कि तुम्हारी नीति क्या है। मुझे गांधीजी के दृष्टिकोण की जानकारी है। मैं पूर्णतः उससे सहमत नहीं हूं—हालांकि हम लोगों ने पिछले दो तीन साल तक अंतर्राष्ट्रीय संकट का मिलकर मुकाबला किया है तथा उन्होंने मेरे दृष्टिकोण से पूर्णतः सहमत न होने के बावजूद भी उसे स्वीकृति प्रदान की है।

ऐसे ही अनेक प्रश्न मेरे मन—मस्तिष्क को आक्रांत किए हुए हैं। ऐसे ही कई मुद्दों से वे भी परेशान हैं। इनमें वे लोग भी शामिल हैं, जिन्होंने तुम्हारे पक्ष में अपना मतदान किया था। यह संभव है कि कांग्रेस के समक्ष मुद्दे उठाए जाने पर इनमें से अधिकांश लोग अपना मत बदल भी लें। तब नई स्थिति पैदा हो सकती है।

कार्यकारिणी का गठन कई समस्याएं पैदा करेगी। अंतिम समस्या यही होगी कि गठिनत समिति के प्रति अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का विश्वास व्यक्त होना चाहिए—सामन्यतः कांग्रेस का भी। वर्तमान परिस्थितियों में यह कठिन कार्य है। यह उचित नहीं है कि ऐसे व्यक्तियों की समिति गठित कर दी जाए, जो जिम्मेदारी समझ न पाएं। उनका मूल उद्देश्य यही रहे कि जिसे वे उचित समझें, उसी की आलोचना हो, ऐसी स्थिति के प्रति किसी का विश्वास नहीं होगा, चाहे वे वाममार्गी हो या उदारवादी। या तो समिति को तोड़ दिया जाएगा या फिर वह एक महत्वहीन समिति बन कर रह जाएगी।

संभव है कि प्रांतीय संघर्ष के कारण वल्लभभाई और यहां तक कि गांधीजी भी इसमें अधिकाधिक लिप्त होते चले जाएं। इस प्रकार यह भारतीय राजनीति का मुख्य मुद्दा बन जाएगा। अन्य लोगों से गठित कार्यकारिणी कार्य करने में अक्षम हो जाएगी और महत्व भी खो बैठेगी। पिछले दशक में या उससे अधिक समयपूर्व से कार्यकारिणी की स्थिति बहुत ऊंची रही है–भारत तथा विदेश दोनों ही में। इसके निर्णयों का कुछ अर्थ रहा है और शब्दों में शक्ति रही है। उसने अधिक शोर तो नहीं मचाया, लेकिन उसके प्रत्येक कार्य के पीछे शक्ति निहित थी। मुझे डर है कि हमारे अधिकांश तथाकथित वाममार्गी किसी अन्य बात की अपेक्षा कड़ी भाषा बोलने में अधिक विश्वास रखते हैं। नरीमन जैसे कार्यकर्ता के प्रति मेरे विचार कोई बहुत प्रशंसात्मक नहीं है। ऐसे ही बहुत से अन्य लोग भी हैं।

हम एक व्यर्थ के विवाद में फंस गए हैं और फिलहाल उससे निकलने का कोई मार्ग नहीं है। मैं अपनी ओर से हम संभव प्रयत्न करने को तैयार हूं। लेकिन पहले और स्पष्टीकरण तुम्हारी ओर से होनी चाहिए। तभी दूसरे लोग यह निर्णय ले पाएंगे कि वे इसमें कहां फिट बैठते हैं। मेरा सुझाव है कि इस स्थिति के प्रत्येक आयाम पर विस्तृत विचार करो। उपयुक्त वर्णित कठिनाइयों पर विचार करों, फिर उस पर विस्तृत नोट लिखों। इसका प्रकाशन आवश्यक नहीं है। किंतु उन्हें अवश्य दिखाया जानी चाहिए, जिन्हें तुम सहयोग के लिए आमंत्रित करते हो। ऐसा नोट चर्चा का विषय बनेगा। यह चर्चा हमें वर्तमान संकट से निकलने का मार्ग प्रदर्शित करेगी। केवल बातचीत ही पर्याप्त नहीं है। वे निरर्थक होती हैं और प्रायः गलत दिशा में ले जाती हैं और हम–तुम बहुत–सी निरर्थक बातें कर चुके हैं।

मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि तुम अपनी इस राय का विस्तार करो कि ब्रिटिश सरकार को अल्टीमेटम दिया जाए। इस संदर्भ में तुम आगे क्या कदम उठाना चाहते हो और फिर बाद में क्या करने का विचार है? जैसा तुम्हें पहले भी बताया है कि मुझे यह विचार पसंद नहीं है–लेकिन हो सकता है, विस्तृत रूप में सामने आने पर यह संभव हो सके। शायद मैं इस अधिक भली प्रकार समझ सकूं।

मैंने प्रेस में तुम्हारे बयान देखे। तुम्हारी स्थिति को समझ पाना मेरे लिए कठिन है। फिर भी मेरा सलाह है कि इसकी विस्तृत रूपरेखा तैयार करों।

जनहित के मामलों में सिद्धांत ओर नीतियां शामिल हैं। इसमें भी एक–दूसरे के प्रति विश्वास और अपने सहयोगियों के प्रति आस्था की आवश्यकता है। यदि विश्वास की यह कमी रहेगी, तो भलाई होना असंभव है। जैसे–जैसे मैं बड़ा हो रहा हूं, वैसे–वैसे इस विश्वास के प्रति मेरी आस्था बढ़ी है तथा सहयोगियों में आपसी समझ के महत्व को मैं स्वीकरता हूं। मुझे उन अद्भूत सिद्धांतो से क्या लेना–देना, यदि संबद्ध व्यक्ति

में मुझे विश्वास नहीं है।

कई क्षेत्रों की विरोधी पार्टियों ने यह स्पष्ट कर दिया है तथा हमें लोगों में अत्यधिक कटुता और सम्माननीय व्यक्तियों व स्पष्टवादियों में भी विश्वास की कमी के दर्शन हुए हैं। ऐसी राजनीति मुझे अच्छी नहीं लगती। इसलिए इतने वर्षों तक मैं उन सब लोगों से कटा रहा। बिना किसी गुट के मैंने स्वतंत्र रूप में कार्य किया। कोई दूसरा व्यक्ति मुझे सहयोग देने वाला नहीं था– हालांकि बहुत–से ऐसे लोग हैं, जिनका विश्वास मुझे प्राप्त है। मुझे लगता है कि क्षेत्रीय गिरावट अब अखिल भारतीय स्तर पर फैलती जा रही है। मैं इस विषय में बहुत चिंतित हूं।

पुनः इस बात पर आएं कि राजनीतिक समस्याओं के पीछे मनोवैज्ञानिक समस्याएं भी हैं और उन्हें सुलझाना सबसे कठिन कार्य है। एक यही रास्ता है कि सबसे स्पष्ट बात की जाए और मुझे आशा है कि हम सब लोग स्पष्ट बात कर सकेंगे। इस पत्र के तुम्हारे तत्काल उत्तर की मुझे आशा नहीं है। कुछ दिन लगेंगे, लेकिन कृपया पत्र प्राप्त होने की सूचना अवश्य भिजवा दें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

जवाहर

जवाहरलाल नेहरू को

चौराम, जिला : गया

10 फरवरी, 1939

मेरे प्रिय जवाहर,

कलकत्ता में तुम्हारा लंबा पत्र मिला। तुमने मेरी कमियों की ओर संकेत किया है। मैं उनके प्रति सजग हूं। लेकिन बताना चाहता हूं कि इस हानि का एक अन्य पहलू भी है। फिर किसी को उन कठिनाइयों को भी भूलना नहीं चाहिए, जो मेरे मार्ग में आई हैं। इस पत्र में मैं उनके विषय में कुछ कहना नहीं चाहता। एक तो उससे विवाद उठ खड़ा होगा। दूसरे, इससे दूसरे लोगों पर भी आंच आएगी। मुख्य बात त्रिपुरी कांग्रेस का कार्यक्रम है। जयप्रकाश तुम से 12 तारीख को मिलेंगे और कार्यक्रम के बारे में मेरे विचारों से अवगत कराएंगे। मैं भी तुम से मिलना चाहता था, लेकिन मेरे लिए यह संभव नहीं होगा। फिर भी मैं 20 तारीख को इलाहाबाद में तुमसे मिलने को प्रयास करूंगा।

राजकोट आदि के विषय में तुम्हारा बयान देखा। ब्रिटिश सरकार राजाओं के माध्यम से कांग्रेस से झगड़ना चाह रही हैं, किंतु हमें उनकें जाल में नहीं फंसना है। राज्यों की समस्याओं पर झगड़े हुए राजाओं से अलग, हमें ब्रिटिश सरकार के सामने स्वराज का मुद्दा सीधे–सीधे रखना है। इस विषय पर तुम्हारे बयान में कुछ नहीं कहा गया और मुझे शंका है कि हम कहीं अपने मुख्य उद्देश्य से इधर–उधर तो नहीं भटक

रहे । यदि हम स्वराज की बात छोड़कर ब्रिटिश सरकार से झगड़ा करेंगे और वह भी प्रांतीय राजाओं की समस्याओं को लेकर, तो हम भटक जाएंगे। शेष मिलने पर।

तुम्हारा स्नेहाकांक्षी
सुभाष

जवाहरलाल नेहरू की ओर से

1 मार्च, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

मिस्त्र के प्रतिनिधिमंडल के बारे में आपका 27 तारीख का पत्र मिला। कुछ समय पूर्व मैंने बंबई की प्रांतीय कांग्रेस कमेटी को पत्र लिखकर कहा था कि वे नहाश पाशा व उनके साथियों के स्वागत की समुचित व्यवस्था करें। मैंने सुझाव दिया था कि उनके ठहरने की व्यवस्था ताजमहल होटल में ही जा सकता हैं जबलपुर तक के लिए रेलवे में उनका प्रथम श्रेणी में आरक्षण करा दिया जाए। चूंकि नहाश पाशा आ रहे हैं, इसलिए यह आवश्यक था। अभी भी मेरी राय है कि किसी भी कीमत पर वे जबलपुर तक प्रथम श्रेणी से ही आएं। उसके बाद उनका कार्यक्रम निश्चित किया जा सकता है और आप उनसे चर्चा कर सकते हैं। संभव है कि वे हमारी राय से सहमत हों।

मेरे विचार से उनकी यात्रा का व्यय अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को वहन करना चाहिए, यदि प्रांतीय कांग्रेस कमेटी इस व्यय को वहन करने को तैयार हो, तो ठीक है। नियमानुसार उनके रहने की व्यवस्था उच्चकोटि के होटल में की जानी चाहिए। यहां व्यतीत हो जाएंगे, तीन दिन यात्रा में। अतः वे अधिक स्थानों की यात्रा नहीं कर पाएंगें। दिल्ली तो अवश्य ही आएंगे। यदि संभव हुआ तो वे कलकत्ता और लखनऊ भी जाएंगे। मेरा विचार है कि उन लोगों के पहुंचने के बाद आप उनसे कार्यक्रम के बारे चर्चा कर सकते हैं।

यदि वर्धा में कार्यकारिणी की बैठक हुई, तो शायद मैं अनौपचारिक रूप से इस विषय की चर्चा वहां उठाऊंगा–क्योंकि मिस्त्र के प्रतिनिधिमंडल के व्यय की राशि की स्वीकृति लेनी होगी।

मैंने त्रिपुरी स्वागत समिति के सदस्यों से भी बात की है और मैं समझता हूं कि उन्होंने जबलपुर के होटलों में तथा कांग्रेस कैंप में–दोनों ही जगह उनके ठहरने का प्रबंध करवा दिया है।

आपका शुभाकांक्षी
जवाहर

श्री सुभाषचंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता

जवाहरलाल नेहरू की ओर से

आनंद भवन
इलाहाबाद; 16 मार्च, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

आशा है, आपका स्वास्थ्य अब ठीक हो रहा होगा और त्रिपुरी की थकान भी मिट चुकी होगी

जैसा कि आपने सुना ही होगा, मौलाना आजाद कल इलाहाबाद स्टेशन पर गिर पड़े। उन्हें चोट आई है। आशंका है कि टखने के पास हड्डी में फ्रैक्चर हुआ है। संभव है, उन्हें छः या आठ सप्ताह तक पुर्ण विश्राम करना पड़े। अभी वे यहीं हैं। एक सप्ताह बाद उन्हें कलकत्ता भिजवाया जाएगा। मैं उनके टखने के जोड का स्कीयाग्राम डॉ. विधानचंद्र राय की सलाह व परामर्श हेतु तथा कलकत्ता के सर्जनों की राय हेतु भिजवा रहा हूं।

मिस्त्र का प्रतिनिधिमिंडल फिलहाल लखनऊ में है और आज रात दिल्ली के लिए रवाना होगा—वहां तीन दिन रूकेगा। उसके पश्चात उनका आगरा, लाहौर और पेशावर जाने का कार्यक्रम है। रास्ते में शायद वे अलीगढ़ और बनारस भी जाएं, किंतु अभी निश्चित नहीं है। दिल्ली में वे अपना कार्यक्रम निर्धारित करेंगे। वे दो दिन के लिए कलकत्ता भी जाना चाहते हैं। सही तिथि निर्धारित नहीं, लेकिन संभवतः वे 27 के आसपास पहुंचेंगे। जैसे ही तिथिं निश्चित हो जाएगी, मैं आपको और बंगाल प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी को भी सूचित करूंगा।

कलकत्ता में वे होटल में ठहरें तो उचित रहेगा। लखनऊ और दिल्ली में वे होटलों में ही ठहरे हैं। उनके कलकत्ता के कार्यक्रम के विषय में आप बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी को बता सकते हैं कि क्या किया जाना चाहिएं हम उन्हें मुस्लिम लीग जैसी गैर—कांग्रेसी का मुद्दा सीधे—सीधे रखना है। इस विषय पर तुम्हारे बयान में कुछ नहीं कहा गया और मुझे शंका है कि हम कहीं अपने मुख्य उद्देश्य से इधर—उधर तो नहीं भटक रहे। यदि हम स्वराज की बात छोड़कर ब्रिटिश सरकार से झगड़ा करेंगे और वह भी प्रांतीय राजाओं की समस्याओं को लेकर, तो हम भटक जाएंगे। शेष मिलने पर।

तुम्हारा स्नेहाकांक्षी
सुभाष

जवाहरलाल नेहरू की ओर से

1 मार्च, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

मिस्त्र के प्रतिनिधिमंडल के बारे में आपका 27 तारीख का पत्र मिला। कुछ समय पूर्व मैंने बंबई की प्रांतीय कांग्रेस कमेटी को पत्र लिखकर कहा था कि वे नहाश पाशा व उनके साथियों के स्वागत की समुचित व्यवस्था करें। मैंने सुझाव दिया था कि उनके ठहरने की व्यवस्था ताजमहल होटल में ही जा सकती है। जबलपुर तक के लिए रेलवे में उनका प्रथम श्रेणी में आरक्षण करा दिया जाए। चूंकि नहाश पाशा आ रहे हैं, इसलिए यह आवश्यक था। अभी भी मेरी राय है कि किसी भी कीमत पर वे जबलपुर तक प्रथम श्रेणी से ही आएं। उसके बाद उनका कार्यक्रम निश्चित किया जा सकता है और आप उऩसे चर्चा कर सकते हैं। संभव है कि वे हमारी राय से सहमत हों।

मेरे विचार से उनकी यात्रा का व्यय अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को वहन करना चाहिए, यदि प्रांतीय कांग्रेस कमेटी इस व्यय को वहन करने को तैयार हो, तो ठीक है। नियमानुसार उनके रहने की व्यवस्था उच्चकोटि के होटल में की जानी चाहिए। यहां उनका प्रवास अल्पवधि का है, केवल पंद्रह दिन का—इसमें से तीन—चार त्रिपुरी में व्यतीत हो जाएंगे, तीन दिन यात्रा में । अतः वे अधिक स्थानों की यात्रा नहीं कर पाएंगे। दिल्ली तो अवश्य ही आएंगे। यदि संभव हुआ तो वे कलकत्ता और लखनऊ भी जाएंगे। मेरा विचार है कि उन लोगों के पहुंचने के बाद आप उनसे कार्यक्रम के बारे चर्चा कर सकते हैं।

यदि वर्धा में कार्यकारिणी की बैठक हुई, तो शायद मैं अनौपचारिक रूप से इस विषय की चर्चा वहां उठाऊंगा—क्योंकि मिस्त्र के प्रतिनिधिमंडल के व्यय की राशि की स्वीकृति लेनी होगी। पार्टियों से मिलने के पूरे अवसर देना चाहते हैं—किंतु समारोह कांग्रेस या निजी संस्थाओं द्वारा किए जाने हैं।

कल शाम मै। दो दिन के लिए गांधीजी से मिलने के लिए दिल्ली जा रहा हूं। 20 की शाम तक यहां लौट आने की आशा है।

इस पत्र की प्रति बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव को भी भेज रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी,
जवाहरलाल नेहरू
श्री सुभाषचंद्र बोस
धनबाद, बंगाल

जवाहरलाल नेहरू की ओर से

सुभाषचंद्र बोस

झीलगुड़ा

सोमवार को धनबाद भेजा गया तार मिला होगा। उत्तर की प्रतीक्षा है। मिस्त्र के प्रतिनिधिमंडल के कलकत्ता में 27 को प्रातः पहुंचने की उम्मीद है। वे वहां तीन दिन रूकेंगे।

जवाहरलाल नेहरू
22.3.39

जवाहरलाल नेहरू के लिए

झीलगुड़ा पोस्ट ऑफिस
जिला मानभूमि, बिहार
28 मार्च, 1939

मेरे प्रिय जवाहर,

मुझे लग है कि कुछ समय से आप मुझ से खासे नाराज से हैं। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि आपने मेरे विरूद्ध सभी मुद्‌दों को बहुत उत्साहपूर्वक उठाया है। जो बातें मेरे पक्ष में हो सकती थीं, उनकी आपने उपेक्षा की है। मेरे राजनीतिक विरोधी मेरे विरूद्ध जो कुछ कहते हैं, आप मान लेते हैं— जबकि उनके विरूद्ध जो कहा जा सकता है, उससे आंखें मूंद लेते हैं। आगे मैं उपर्युक्त बातों पर विस्तृत चर्चा करूंगा।

आप मुझे अचानक नापंसद क्यों करने लगे— मेरे लिए यह एक रहस्य बना हुआ है। जबसे मैं 1937 में नजरबंदी से बाहर हुआ हूं, तभी से आपको व्यक्तिगत जीवन व राजनीतिक जीवन में अत्यधिक सम्मान व इज्जत की दृष्टि से देखता रहा हूं। राजनीति के क्षेत्र में मैंने आपको सदा बड़ा भाई और नेता माना है। समय—समय पर आपसे सलाह भी लेता रहा हूं। पिछले वर्ष जब आप यूरोप से वापस आए, तो मैं इलाहाबाद आकर आपसे मिला और आपसे पूछा था कि आप हमारा नेतृत्व किस प्रकार करेंगे? जब भी इस दृष्टि से मैंने आपसे बात की, तो आपके उत्तर अस्पष्ट और गैर—जिम्मेदाराना थे। उदाहरण के तौर पर पिछले वर्ष जब आप यूरोप से लौटे, आपने मुझे यह कहकर चुप करा दिया कि मुझे गांधीजी से परामर्श करना चाहिए—फिर मैं आपसे बात करूं। गांधीजी से आपकी मुलाकात के बाद जब हम वर्धा में मिले, तो भी आपने निश्चित तौर पर मुझे कुछ नहीं बताया। बाद में कार्यकारिणी के सम्मुख कुछ प्रस्ताव रखे, जो न तो नए थे और न ही देश को कोई दिशा देने वाले थे।

अध्यक्ष पद का पिछला चुनाव नितांत कटु व विवादास्पद था, जिसके विषय में बहुत—सी बातें कही गईं। कुछ मरे पक्ष में और कुछ विपक्ष में । आपके शब्दों और बयानों में प्रत्येक बात मेरे विरूद्ध ही कही गई । दिल्ली में एक भाषण के दौरान आपने

कहा था कि मेरे लिए मत प्राप्त करने हेतु लोगों को आश्वस्त करना आपको पसंद नहीं है। मैं नहीं जानता कि आपके मस्तिष्क में वास्तव में क्या है, किंतु आप इस तथ्य से भली–भांति परिचित थे कि मेरी चुनाव अपील डॉ. पट्टाभि की अपील के बाद ही प्रेस में प्रकाशित हुई। आप जान–बूझकर या अनजने में इस बात से पूर्णतया थ कि दूसरे पक्ष की ओर से प्रचार अधिक था। डॉ. पट्टाभि के लिए मत प्राप्त करने हेतु कांग्रेस–मत्रिमंडलों के तंत्र का अधिकतम इस्तेमाल किया गया। दूसरे पक्ष के पास बाकायदा संगठन (गांधी सेवा संघ, कांग्रेस मंत्रालय और शायद चर्खा संघ तथा ए. आई. वी. आई. ए) थे, जो तत्काल प्रचार–कार्य में जुट गएं फिर उनके साथ, आप सहित बड़े–बड़े नेता थे–जो मेरे खिलाफ थे; फिर महात्मा गांधी का नाम और प्रभाव भी उनके साथ था। प्रांतीय कांग्रेस कमेटियां भी उन्हीं के हाथों की कठपुतलियां थीं। उनके विरूद्ध मेरे पास क्या था–केवल मैं एक व्यक्ति! क्या आप जानते हैं–जैसा कि मुझे व्यक्तिगत रूप से मालूम है कि कई स्थानों पर तो डॉ. पट्टाभि की अपेक्षा गांधीजी तथा गांधीवाद के पक्ष के में प्रचार हुआ– हालांकि कुछ लोग तो इस प्रकार के दुष्प्रचार से अचंभित भी हुए। फिर भी जनसभा में खड़े होकर आपने मेरे विरूद्ध आवाज उठाई और वह भी झूठी बातों के आधार परं

अब मुझे त्यागपत्रों की बात बनाने दें। 12 सदस्यों ने त्यागपत्र दिया। सभी ने सीधा स्पष्ट पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने अपनी स्थिति पूर्णतः स्पष्ट कर दी। मेरी बीमारी की सोचकर उन्होंने मेरे विषय में एक भी शब्द गलत नहीं कहा–हालांकि यदि वे चाहते तो मेरी कड़ी आलोचना कर सकते थ। किंतु आपका बयान–कैसे उसकी व्याख्या करूं? कटु शब्दों से बचना चाहता हूं। केवल यही कहूंगा कि यह आपके लिए उचित नहीं था। (मुझे बताया गया कि आप चाहते थे कि आपके बयान को त्यागपत्र के साथ शामिल किया जाए, किंतु यह बात मानी नहीं गई) फिर आपके बयान से यह लगता था कि आपने त्यागपत्र दे दिया है–जैसा कि अन्य सदस्यों ने किया है–किंतु अभी तक जनसामान्य के लिए आपकी स्थिति रहस्यमय बनी हुई है। जब संकट आता है, तो आप अपने मन को किसी एक दिशा में स्थिर नहीं रख पाते। परिणामतः जनसामान्य को यह आभास होता है कि आप दो नावों पर सवार हैं।

आपके 22 फरवरी के बयान पर फिर लौट आएं। आपका विचार है कि आप जो भी कहते या करते हैं, उसके पीछे सही तर्क होता है। किंतु विभिन्न परिस्थितियों में जब आप कदम उठाते हैं, तो लोग प्रायः भौंचक्के और हैरान रह जाते हैं। कुछ उदाहरण लें। 22 फरवरी के अपने बयान में आपने कहा था कि आप पुनः चुनाव के विरूद्ध हैं तथा अल्मोड़ा से 26 जनवरी को जारी बयान में आपने कुछ कारणों का भी जिक्र किया। आपने स्पष्ट रूप में अपनी बात पलट दी। फिर पुनः मुझे बंबई के कुछ

मित्रों ने बताया कि आपने पहले उनसे कहा था कि आपको मेरे चुनाव लड़ने पर कोई आपत्ति नहीं है--बशर्ते कि मैं वाममार्गी प्रतियोगी के रूप में खड़ा होऊं। अल्मोड़ा से जारी बयान में आपने यह कहा कि हमें व्यक्तियों को भूलकर सिर्फ सिद्धांतों और लक्ष्यों को याद रखना चाहिए। आपको यह महसूस नहीं हुआ कि आप उस समय व्यक्तियों को भूलने की बात कर रहे हैं जबकि कुछ व्यक्तियों से ही संबंधित मुद्दा सामने है। सुभाष बोस के पुनः चुनाव में खड़े होने के मामले में आप व्यक्तियो को नीचा दिखाकर सिद्धांतों को ऊंचा कर रहे हैं। यदि मौलाना आजाद पुनः चुनाव के लिए खड़े होते हैं, तो आपको लंबी प्रशस्ति लिखने में हिचकिचाहट नहीं होती। यदि सुभाष बोस बनाम सरदार पटेल या किसी अन्य की बात हो, तो सुभाष बोस को पहले व्यक्तिगत बातों का खुलासा करना होगा। जब त्रिपुरी में शरत बोस कुछ बातों पर शिकायत करते हैं, तो (अपने आपको गांधीजी के कट्टर समर्थक कहने वाले लोगों के व्यवहार के प्रति) वे आपके अनुसार व्यक्तिगत प्रश्न उठा रहे हैं तथा उन्हें सिद्धांतों और कार्यक्रमों की बातों तक ही सीमित रहना चाहिए। मैं स्वीकार करता हूं कि मेरी अल्पबुद्धि इसको समझने में अक्षम है।

अब मैं व्यक्तिगत प्रश्न कर आऊं, जो मेरे विषय में आपकी दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाता है। आपने कहा है कि अपने बयान में मैंने अपने सहयोगियों को गलत कहा है। आप उनमें शामिल नहीं थे– और फिर यदि मैंने दोष लगाए, तो वे दूसरों पर थे। अतः आप अपने बारे में नहीं बोल रहे, बल्कि दूसरों का पक्ष ले रहे थे। वकील अपने मुवक्किल की अपेक्षा वाकपटु होते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब मैंने सरदार पटेल (तथा राजेनबाबू और मौलाना) से त्रिपुरी में बात की, तो उन्होंने मुझे यह आश्चर्यजनक समाचार सुनाया कि मेरे विरूद्ध उन्हें जो शिकायत है, वह कार्यकारिणी की बारदोली बैठक से भी पहले से पिछली जनसरी से है। जब मैंने बताया कि लोगों को सामान्यतः यही विश्वास है कि मुझ पर आरोप या मुझसे शिकायत मेरे चुनावी बयान के बारे में हैं, तो उन्होंने कहा कि वह तो अतिरिक्त शिकायत है। अतः आपके मुवक्किल उस मुद्दे को उतना महत्व नहीं देते, जितना एक वकील के रूप में आप देते हैं। त्रिपुरी में जब सरदार पटेल तथा अन्य लोग आखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक के लिए गए, तो उन्होंने वायदा किया था कि बैठक के बाद पुनः मिलेंगे--लेकिन वे लोग नहीं आए यह जानने के लिए कि कार्यकारिणी की बारदोली बैठक से पहले क्या बात पता चली, जिसकी उन्होंने चर्चा की थी मैं इस मुद्दे को आगे नहीं बढ़ा पाया। किंतु मेरे भाई शरत ने सरदार पटेल से इस विषय में बातचीत की, तो उन्हें बताया गया कि उनकी मुख्य शिकायत सितंबर 1938 में दिल्ली में हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में मेरे रवैये के प्रति थी, जिसमें समाजवादियों ने वॉक--आउट किया था। इस दोषारोपण से मुझे व मेरे भाई को अति आश्चर्य हुआ--किंतु एक बात स्पष्ट हो गई कि सरदार पटेल व अन्य लोगों को मुख्य बातों से कोई सरोकार नहीं

था, जिन्हें आपने इतना महत्व दिया। वास्तविकता यह है कि जब मैं त्रिपुरी में था; तब बहुत से सदस्यों ने (मैं आपको बता दूं कि मेरे समर्थकों ने नहीं) मुझे बताया कि 'शिकायती मुद्दा' तो वास्तव में भुलाया जा चुका था, लेकिन आपके बयानों ने उसे पुनर्जीवित कर दिया। इस संदर्भ में मैं आपको बता दूं कि अध्यक्ष के चुनाव के बाद से आपने लोगों में मेरी इज्जत को इतना कम कर दिया है, जितना कि त्यागपत्र देने वाले 12 सदस्य भी नहीं कर पाए थे। यदि मैं इतना बड़ा खलनायक हूं; तो यह आपका अधिकार ही नहीं, बल्कि कर्तव्य है कि आप जनता के समक्ष मेरी असलियत पेश करें—पर शायद आपको यह ध्यान आ जाए कि यह शैतान इतने बड़े नेताओं, जिसमें आप और महात्मा गांधी तथा प्रांतीय सरकारें भी शामिल हैं, के विरोध के बावजूद पुनः चुनाव जीत गया। आखिर कुछ बात तो रही होगी। उसने अपने अध्यक्षकाल में देश की कुछ तो सेवा की होगी, तभी तो वह बिना किसी संगठन की सहायता व अनेक विरोधों के बावजूद इतने वोट हासिल कर सका।

22 फरवरी के अपने बयान में आपने आगे कहा है कि "मैंने कांग्रेस अध्यक्ष कों सुझाव दिया हे कि यह पहला और अति आवश्यक मुद्दा है, जिस पर विचार किया जाना चाहिए। किंतु अभी तक इसे हल करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है।" इन पंक्तियों को लिखने से पहले क्या तनिक भी यह विचार आपको नहीं आया कि इस गलतफहमी को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि सरदार पटेल व अन्य सदस्यों की एक बैठक बुला ली जाए, जबकि 22 फरवरी को कार्यकारिणी की बैठक होनी ही थी? क्या आप सोचते हैं कि मैं कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थित होने से बच रहा था? यह सत्य है कि मैंने 15 फरवरी को महात्मा गांधी के साथ इस मुद्दे पर विचार-विमर्श किया, यद्यपि उन्होंने एक बार इसका संकेत दिया था। उस समय आपके आदेश का अनुपालन करके मै। सिद्धांतों और कार्यक्रम को व्यक्तिगत मुद्दे की अपेक्षा अधिक महत्त्व दे रहा था। आपको बता दूं कि जब महात्मा गांधी ने मुझे बताया कि सरदार पटेल व अन्य लोग उस समिति में मुझे सहयोग नहीं देंगे—तो मैंने उन्हें बताया कि जब हम 22 तारीख को मिलेंगे, तो इन विषयों पर बात करेंगे और मैं उनसे सहयोग प्राप्त करने की कोशिश करूंगा। आप इस बात से शायद सहमत होंगे कि असहमति, यदि कोइ है, तो वह महात्मा गांधी के संदर्भ में नहीं; बल्कि कार्यकारिणी के सदस्यों से संबद्ध है तथा इसलिए कार्यकारिणी से इस विषय में बात की जानी आवश्यक है।

उपर्युक्त बयान में आप मुझसे अपेक्षा रखते थे कि मै। लिखित रूप में इस बात की व्याख्या करूं कि वाममार्गी और उदारवादी शब्दों के क्या अर्थ हैं। मैंने सोचा कि आप ही ऐसे अंतिम व्यक्ति हैं, जो मुझसे यह प्रश्न पूछ रहे हैं। क्या आप आचार्य कृपलानी तथा स्वयं अपने द्वारा हरिपुरा में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष पेश

की जाने वाली रिपोर्ट को भूल गए हैं? क्या आपने अपनी रिपोर्ट में यह नहीं कहा था कि उदारवादी वाममार्गियों को दबाने की कोशिश कर रहे हैं? क्या महज आपको ही यह सुविधा प्राप्त है कि जहां आवश्यकता हो वहां आप वाममार्गी व उदारवादी शब्दों का प्रयोग करे लें–तो क्या अन्य लोगों को इन शब्दों के प्रयोग की इजाजत नहीं?

आगे अपने मुझ पर यह आरोप लगाया है कि मैं राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर अपनी नीति स्पष्ट नहीं कर रहा। मेरे विचार में मेरी एक नीति है, चाहे वह ठीक हो या गलत। त्रिपुरी के अपने संक्षिप्त अध्यक्षीय भाषण में मैंने इसका स्पष्ट उल्लेख किया था। भारत और विदेश की स्थितियों के मद्देनजर मेरे विचार से हमारी मुख्य समस्या–हमारा एकमात्र कर्तव्य यही है कि हम लोग ब्रिटीश सरकार के सम्मुख स्वराज की मांग को उठाएं। इसके साथ–साथ हमें प्रांतीय लोगों को एक साथ पूरे भारत में आंदोलन छेडने की एक ठोस योजना देकर उनका मार्गदर्शन करना पड़ेगा। मेरे विचार से मैंने त्रिपुरी से पूर्व अपने विचार का स्पष्ट संकेत उस समय आपको दिया था, जब हम शांति निकेतन और फिर बाद में आनंद भवन में मिले थे। जो मैंने अभी लिखा है, वह तो कम–से–कम निश्चित नीति ही है। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि आपकी नीति क्या है? अभी हाल ही के पत्र में आपने राष्ट्रीय मांग पर प्रस्ताव पास किए जाने की त्रिपुरी कांग्रेस की चर्चा की है और आप उसे अधिक महत्व दे रहे हैं। खेद के साथ मुझे कहना पड़ रहा है कि इतनी खूबसूरती से व्यर्थ का प्रस्ताव पारित करना मुझे उचित नहीं जान पड़ता। इस प्रकार हम कहीं नहीं पहुंच पाएंगे। यदि स्वराज हेतु हमें ब्रिटीश सरकार से झगड़ना है और हम समझते हैं कि यह मौका भी ठीक है, तो हमें स्पष्ट कहना चाहिए और कार्य आगे बढाना चाहिए। आप एक से अधिक बार मुझे यह बता चुके हैं कि अल्टीमेटम देने का विचार आपको पसंद नहीं। पिछले 20 वर्ष से महात्मा गांधी बार–बार ब्रिटिश सरकार को अल्टीमेटम देते आ रहे हैं। इसी अल्टीमेटम देने तथा आवश्यकता पड़ने पर युद्ध छेड़ने की तैयारी के कारण ही वे ब्रिटिश सरकार से इतना कुछ पाने में कामयाब हुए हैं। यदि आप वास्तव में यह मानते हैं कि अपनी राष्ट्रीय मांग सामने रखने का समय आ गया है तो अल्टीमेटम देने के अतिरिक्त और क्या मार्ग है? अभी उस दिन राजकोट के मुद्दे पर महात्मा गांधी ने अल्टीमेटम दिया है। क्या आपको अल्टीमेटम देने का विचार इसलिए पसंद नहीं, क्योंकि यह मैं सुझा रहा हूं? यदि ऐसा है, तो फिर स्पष्ट रूप से बिना हिचक के कहने में क्या कठिनाई है?

संक्षेप में, मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि आंतरिक राजनीति के विषय में आपकी नीति क्या है? मुझे याद है कि आपके किसी बयान में मैंने पढ़ा था कि आपका विचार है कि राजकोट और जयपुर का मुद्दा सब मुद्दों पर छाया रहेगा। आप जैसे प्रमुख नेता के द्वारा ऐसी टिप्पणी पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ। मैं समझ नहीं पा रहा हूं

कि कैसे कोई अन्य मुद्दा स्वराज के मुख्य मुद्दे को ढंक लेगा। इतने बड़े देश में राजकोट एक छोटी–सी जगह है। राजकोट की अपेक्षा जयपुर कुछ बड़ा शहर है, लेकिन जब ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध देश के संघर्ष का मुद्दा उठता है, तो ये सब बहुत ही छोटे पड़ जाते हैं। फिर, हम इस बात को कैसे भूल सकते हैं कि भारत में 600 के लगभग प्रांत हैं । यदि हम मुख्य संघर्ष को भूलकर इन छोटी–मोटी टालू नीतियों को अपनाते रहेंगें, तो हमें नागरिक स्वतंत्रता और राज्यों में उत्तरदायी सरकार पाने में कम–से–कम 250 वर्ष लग जाएंगे। क्या उसके पश्चात ही हम स्वराज के विषय में सोचेंगे?

अंतर्राष्ट्रीय मामलों में आपकी नीति शायद अधिक अस्पष्ट है। मुझे यह देखकर अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि कुछ अरसा पहले आपने भारत में यहूदियों को शरण देने संबंधी प्रस्ताव को कार्यकारिणी के सम्मुख रखा। उस समय आपने स्वयं को अपमानित महसूस किया, जब कार्यकारिणी ने (संभवतः महात्मा गांधी की स्वीकृति से) से इसे अस्वीकार कर दिया। विदेश नीति के मामले में राष्ट्र के भले का विचार करके ही कोई निर्णय लेना चाहिए। सोवियत रूस का उदाहरण लें– अंदरूनी राजनीति में कम्युनिजम होने के बावजूद वह अपनी विदेश नीति पर भावनाओं को हावी नहीं होने देना चाहता। यही कारण है कि वह अपने हितों को दृष्टि में रखते हुए फ्रेंच साम्राज्यवाद से समझौता करने में भी नहीं हिचकिचायां फ्रैंको–सोवियत समझौता व चेकोस्लोवाक–सोवियत समझौता ऐसे ही उदाहरण हैं। आज भी सोविएत रूस ब्रिटिश राजशाही से समझौता करने को आतुर है। अब आप की विदेश नीति क्या है? कृपया बताएं।

संवेदनशीलता और नैतिकता से विदेश नीति नहीं निर्धारित होती। हर समय पिछली बातों को उठाते रहना उचित नहीं। जर्मनी व इटली जैसे देशों की भर्त्सना करते रहना भी उचित नहीं और ब्रिटेन तथा फ्रेंच उपनिवेशवाद को अच्छे आचरण का प्रमाणपत्र देना भी आवश्यक नहीं।

पिछले लंबे समय से मैं प्रत्येक संबद्ध व्यक्ति से, जिसमें आप और महात्मा गांधी भी शामिल हैं, यह मांग कर रहा हूं कि हमें अंतर्राष्ट्रीयके रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। जन–आंदोजन खड़ा कर दिया– हालांकि आपको मेरे स्वास्थ्य का पता था; फिर आपका तार, जो आपने मुझे भेजा, मुझे मिलने से पहले ही प्रेस में प्रकाशित हो गया। त्रिपुरी से लगभग पंद्रह दिन पूर्व तक कांग्रेस के मामलों में अनिश्चय की स्थिति बनी रही, जो कि कार्यकारिणी के सदस्यों के त्यागपत्र से उत्पन्न हुई थी। तब क्या आपने उसके विरोध में एक भी शब्द कहा? क्या आपने संवेदना भरा एक भी शब्द मुझे कहा? अपने हाल ही के पत्रों में से एक पत्र में आपने लिखा है कि आप जो लिखते

या बोलते हैं, उसे किसी का प्रतिनिधित्व नहीं माना जाना चाहिए। दुर्भाग्यवश आपको कभी यह आभास नहीं हुआ कि आप दूसरों के समक्ष उदारवादियों के लिए क्षमायाचक की भूमिका में उपस्थित होते हैं। उदाहरण के लिए आप अपना 26 तारीख का अंतिम पत्र लें। उसमें आपने कहा है कि "आज मैंने समाचारपत्रों में आपका बयान पढ़ा। मुझे डर है कि इस प्रकार का तर्कपूर्ण बयान हमारी अधिक सहायता नहीं करेंगा।"

आज जब हम पर हर ओर से आक्रमण हो रहा है—अनावश्यक रूप से अपमानित किया जा रहा है, जैसा कि वे कह रहे हैं—आपने विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा, आपने मुझे सहानुभूति का भी एक शब्द नहीं कहा। किंतु जब मैं अपने पक्ष में कुछ बात कहता हूं, तो आपकी प्रतिक्रिया होती हे कि ऐसे तर्कपूर्ण बयान लाभकारी नहीं। मेरे विरोधियों द्वारा लिखे तर्कपूर्ण बयानों पर क्या आपने कुछ कहा? शायद आप उन पर आंखें सेंकते हैं।

22 फरवरी को दिए बयान में आपने पुनः कहा है कि "ऐसी प्रवृत्ति बन गई है कि स्थानीय कांग्रेसी झगड़े भी सामान्य तौर–तरीके से निपटाए नहीं जा रहे, बल्कि सीधे उच्च पदस्थ लोगों को हस्तक्षेप हो रहा है–जिसके परिणामस्वरूप कुछ विशिष्ट गुटों व पार्टियों के साथ पक्षपात हो रहा है और अनिश्चय की स्थिति बढ़ रही है। कांग्रेस के काम में व्यवधान पड़ रहा है।.....यह देखकर मुझे अत्यधिक दुःख होता है कि हमारे संगठन के मूल में नई–नई विधियां लागू की जा रही हैं, जिससे सामान्य विवाद बढ़कर उच्चधिकारियों तक फैल रहे हैं"

इस प्रकार के दोषारोपण को पढ़ कर दुःखद आश्चर्य हुआ, क्योंकि आपने सभी तथ्यों की जानकारी प्राप्त किए बिना बयान जारी किया। कम–से–कम आप मुझसे तो तथ्यों की जानकारी ले ही सकते थे। मैं नही जानता, ऐसा लिखते समय आपके मस्तिष्क में क्या था। एक मित्र ने मुझे बताया कि उस समय आप दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मामलों पर विचार कर रहे थे। यदि ऐसा है, तो मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं कि दिल्ली के विषय में मैंने वही किया, जो मुझे उचित लगा।

इस संदर्भ में कि उच्चधिकारी हस्तक्षेप करते हैं, आपका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। शायद आप वह सब भूल चुके हैं, जो आपने कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में किया था; या शायद अपनी ओर अंगुली उठाना कठिन कार्य है। 22 फरवरी को आपने मुझ पर यह आरोप लगाया कि मैं उच्च पद पर बैठकर हस्तक्षेप कर रहा हूं। क्या आप भूल गए कि 4 फरवरी को आपने मुझे एक पत्र लिखा था, जिसमें मुझ पर अनिश्चित और निष्क्रिय अध्यक्ष होने का दोष लगाया था। आपने लिखा, "आप अध्यक्ष की अपेक्षा प्रवक्ता का कार्य अधिक कर रहे हैं।" सबसे खेदजनक दोषारोपण तो यह था कि मैं विघटनकारी के रूप में कार्य रहा हूं और किसी गुट या पार्टी का पक्ष ले रहा हूं। तो क्या कांग्रेस

संगठन के कार्यकारी प्रमुख की (यदि व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं तो) यह जिम्मेदारी नहीं है कि वह प्रेस में इतने आरोप लगाने से पूर्व कम–से–कम जांच पड़ताल तो कर लेता?

यदि चुनाव विवाद को कोई पूर्ण रूप में देखे, तो यही सोचेगा कि चुनाव पूरा होने के पश्चात सब कुछ भुला दिया जाएगा; कुठारी दबा दी जाएगी–जैसा कि बाक्सिंग के पश्चात होता है– प्रतिद्वंद्वी आपस में हाथ मिला लेंगें। किंतु सच्चाई और अहिंसा के बावजूद ऐसा नहीं हुआ। परिणाम को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार नहीं किया गया। मेरे विरूद्ध शिकायतों को पाला जाता रहा और बदले की भावना पनपती रही। कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों की ओर से आपने मेरे विरूद्ध डंडा उठा लिया। आपको यह सब करने का पूरा अधिकार था। किंतु आपको क्या यह विचार कभी नहीं आया कि मेरे पक्ष में भी कुछ कहा जा सकता है? क्या मेरी अनुपस्थिति में कार्यकारिणी के सदस्यों को डॉ. पट्टाभि को अध्यक्ष पद के लिए चुनना उचित था? क्या सरदार पटेल द्वारा चुनावी प्रचार में महात्मा गांधी के नाम और अधिकार का प्रयोग करना उचित था? क्या विभिन्न क्षेत्रों में चुनावी मत प्राप्त करने के लिए कांग्रेसी मंत्रालयों का दुरूपयोग सही था?

इस तथाकथित बदनामी के संबंध में मैं जो मुझे कहना था, पहले ही कह चुका हूं–प्रेस बयान में भी और त्रिपुरी में कमेटी के समक्ष की गई टिप्पणियों में भी। किंतु मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहूंगा। क्या आप भूल गए कि जब लार्ड लोथियन भारत–यात्रा पर आए थे, तो उन्होंने जनसमूह के समक्ष यह टिप्पणी की थी कि फेडरल स्कीम के विषय में सभी कांग्रेसी नेता पंडित नेहरू से सहमत नहीं हैं? इस टिप्पणी का महत्व या औचित्य क्या है?

अपने 22 फरवरी के बयान में आपने शिकायत की है कि उच्च पदाधिकारियों में आपसी शक और विश्वास की कमी है। मैं आपको बता दूं कि अध्यक्ष के चुनाव तक यह शक बहुत कम मात्रा में था। कार्यकारिणी के सदस्यों में विश्वास की कमी आपके शासनकाल की अपेक्षा कुछ कम ही थी। आपके ही अनुसार हमने कभी भी परिणामस्वरूप त्यागपत्र देने का विचार नहीं बनाया, जबकि आप ऐसा विचार कई बार बना चुके थे। मेरे विचार से तो यह सारी मुसीबत तब शुरू हुई, जब मैंने चुनाव जीत लिया। यदि मैं हार जाता, तो जनता को इस प्रकार का तथाकथित 'बदनामी' सुनने को न मिलती।

आपको यह घोषणा करते रहने की आदत है कि आप अलग–थलग हैं तथा आप किसी का प्रतिनिधित्व नहीं करते और न ही आप किसी पार्टी से संबद्ध हैं। प्रायः आप इस बात को ऐसे दुहरो हैं, जैसे कि आपको इस बात पर अभिमान है या फिर आप इससे बहुत प्रसन्न हैं। कभी आप स्वयं को समाजवादी–कट्टर समाजवादी–कहते हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि एक समाजवादी किस प्रकार एक व्यक्तिवादी हो सकता है!

–जैसा कि आपय प्रायः घोषणा किया करते हैं। दोनों बाते एक–दूसरे के विपरीत हैं। आप जैसे व्यक्तिवादी द्वारा समाजवाद कैसे लाया जा सकता है–यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है। गुटनिरपेक्षवादी होने का लेबल लगाकर व्यक्ति सब गुटों में प्रसिद्धि पा सकता है। किंतु उसकी कीमत क्या है? यदि कोई व्यक्ति किन्हीं विशिष्ट सिद्धांतों या विचारों में विश्वास रखता है, तो उसे वास्तविक जीवन में भी वही कर दिखाना चाहिए। यह कर पानी तभी संभव है, जब वह पार्टी या संगठन से संबद्ध हो। मैंने तो किसी भी देश में बिना पार्टी या संगठन के समाजवाद को पनपते नहीं देखा। यहां तक कि महात्मा गांधी की भी अपनी पार्टी है।

एक और विषय जिस पर आप प्रायः अड़े रहते हैं, उस पर भी मैं कुछ कहना चाहूंगा–अर्थात् राष्ट्रीय एकता। मैं ओर मेरे विचार से पूरा देश इसके लिए समर्पित है। किंतु इसकी भी एक निश्चित सीमा है। जिस एकता की बात हम करते हैं, उसे कार्यों की एकता से कायम रखना चाहिए ; न कि निष्क्रियता से । हर अवस्था में विघटन बुराई ही नहीं हैं, बल्कि उन्नति के लिए कई बार यह आवश्यक हो जाता है। जब रूस की डेमोक्रेट पार्टी बोल्शेविक्स के व्यर्थ के बोझ से मुक्ति मिली। उसने महसूस किया कि उन्नति का मार्ग अंततः खुल ही गया। भारत में जब उदारवादियों ने कांग्रेस से स्वयं को अलग कर लिया, तो किसी भी प्रगतिवादी व्यक्ति ने इस विघटन को बुरा नहीं माना। परिणामतः जब 1920 में बहुत –से कांग्रेसियों ने कांग्रेस से अपने को हटा लिया, तो शेष कांग्रेसियों ने उनका शोक नहीं मनाया। ऐसे विघटन उन्नति में सहायक होते हैं। बाद में हमने एकता को पूजा बना लिया। इसमें काफी खतरा है। इसे कमजोरी के कवच के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। समझौतों का बहाना बनाया जा सकता है, जो कि पूर्णतया उन्नति–विरोधी है। आप अपना ही उदाहरण लें। आप गांधी–इर्विन समझौते के विरूद्ध थे; किंतु जब कार्यालयों कों स्वीकृति मिल गई, तो फिर आप इसे स्वीकार कर बैठे । तर्क के लिए मान लें कि कांग्रेस फेडरल स्कीम को मान गई होती, तो अपने दृढ़ सिद्धांतों के बावजूद शायद एकता के कारण उसे भी स्वीकार कर लिया जाता। उस समय राजनीतिक आस्था का ध्यान भी नहीं रहता। क्रांतिकारी आंदोलन में एकता अपने–आप में अंत नहीं है, बल्कि एक साधन हैं यदि यह उन्नति में सहायक है, तभी यह स्वीकार्य है। यदि यह प्रगति में बाधा बनता है, तो यह बुराई बन जाता है। क्या मैं पूछ सकता हूं कि यदि कांग्रेस बहुमत से फेडरल स्कीम को स्वीकार कर लेती, तो आप क्या करते? आप उस निर्णय को स्वीकार कर लेते या उसके विरूद्ध विद्रोह करते?

इलाहाबाद से प्रेषित 4 फरवरी का आपका पत्र बहुत रोचक था, जिससे स्पष्ट होता है कि तब आप मेरे विरूद्ध उतने नहीं थ, जितने कि बाद में हो गए। उदाहरण

के लिए आपने उस पत्र में लिखा है, "मैंने आपको पहले भी बताया है कि आपके चुनाव लड़ने से लाभ भी हुआ है और हानि भी हुई है।" बाद में आपने विचार बना लिया कि मेरा पुनः चुनाव लड़ना गलत था। फिर आपने लिखा है कि "हमें भविष्य को वृहद दृष्टिकोण से देखना होगा न कि संकुचित व्यक्तिगत दृष्टि सें निश्चय ही हममें से किसी के लिए भी इसमें उलझना बेकार है, क्योंकि जैसा हम चाहते थ, वैसा कुछ नहीं हुआ। जो भी हो, हमें अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित रहना ही है।" इससे स्पष्ट होता है कि आपने पहले दोषारोपण वाले मुद्दे को इतना महत्व नहीं दिया, जितना कि बाद में दिया। केवल यही नहीं, जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं, इस मुद्दे पर विद्रोह भी धीरे–धीरे बाद में बढ़ और उसे आपने स्वयं ही बढ़ाया। इस संबंध में शायद आपको याद हो कि जब हम शांति निकेतन में मिले थे, तब मैंने आपको सुझाव दिया था कि यदि सब कोशिशों के बावजूद हम कार्यकारिणी के सदस्यों का सहयोग प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं, तो हमें कांग्रेस को चलाने के उत्तरदायित्व से बचना नहीं है। तब आप मुझसे सहमत थे। बाद में किन कारणों से, मुझे मालूम नहीं, आप दूसरे पक्ष से जा मिले। निश्चय ही आप कुछ भी करने को स्वतंत्र हैं, किंतु फिर आपके साजवाद और वामपंथ का क्या होगा?

4 फरवरी के अपने पत्र में आपने एक से अधिक बार आरोप लगाया है कि मेरी अध्यक्षता में एक बार भी फेडरेशन जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार नहीं किया गया। यह बड़ा अजीब आरोप मुझ पर लगाया जा रहा है, क्योंकि आप स्वयं ही छह माह तक देश से बाहर थे। क्या आप जानते हैं कि श्री भूलाभाई देसाई द्वारा लंदन में दिए गए भाषण पर जब हंगामा खड़ा किया गया था, तब मैंने कार्यकारिणी को सुझाव दिया था कि हमें फेडरेशन के खिलाफ प्रस्ताव पारित करना चाहिए? पुरे देश में फेंडरेशन–विरोधी प्रचार किया जाना चाहिए? किंतु मेरे उस प्रस्ताव को अनावश्यक माना गया। क्या आप जानते कि सितंबर में जब दिल्ली में कार्यकारिणी की बैठक हुई, तो यह आवश्यक समझा गया कि फेडरेशन की भर्त्सना करने के लिए प्रस्ताव पारित किया जाना चाहिए और इसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने भी समर्थन दिया?

अन्य जो दोष आपने अपने पत्र में मुझ पर लगाया, वह यह है कि मैंने कार्यकारिणी कें मुद्दे में बहुत शांत रूख अपनाया है–बल्कि मैंने अध्यक्ष की अपेक्षा प्रवक्ता की भूमिका अधिक निभाई है। ऐसा बयान दिया जाना उचित नहीं था। क्या यह कहना अनुचि होगा कि कार्यकारिणी के अधिकांश समय पर आपका अपना नियंत्रण था? यदि कार्यकारिणी में आप जैसा बात करने वाला एक भी सदस्य होता, तो मुझे नहीं लगता कि हम कभी अपना कार्य भी पूरा कर पाते। फिर आपका व्यवहार ऐसा था कि आप प्रायः अध्यक्ष के कार्यों में हस्तक्षेप करते रहते थे। आपको बाहर करने के उपरांत

ही मैं स्थिति से निपट सकता था, लेकिन उससे हम दोनों का विरोध खुले–आम उजागर होता। कड़वा सत्य तो यह है क कभी–कभी तो आपने कार्यकारिणी में एक बिगड़ैल बच्चे की भांति आचरण किया और अपना धैर्य खो बैठे। अब इतने व्यर्थ के वाद–विवाद के पश्चात आप किस निर्णय पर पहुंचे हैं? आप घंटों तक आगे बढ़–चढ़ कर बोलते रहेंगे, फिर अचानक पीछे हट जाते हैं। सरदार पटेल व अन्य लोग बड़ी चतुराई से आपसे कार्य करा लेते हैं। वे आपको खुली छूट देते हैं कि आप लगातार बोलते चले जाएं। फिर वे अचानक आप पर जिम्मेदारी डाल देंगे कि आप उनके प्रस्ताव का प्रारूप तैयार करें। एक बार यदि आप प्रारूप तैयार करते हैं, तो आप प्रसन्न हो जाते हैं– चाहे वह किसी का भी प्रस्ताव क्यों न हो। मैंने तो आपको कभी अंत तक अपने विचार पर स्थिर रहते नहीं देखा।

एक अन्य अद्भूत आरोप जो मुझ पर लगाया गया, वह यह है कि पिछले वर्षों में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय की बहुत दुर्दशा हुई है। मैं नही जानता कि आपकी राय में अध्यक्ष के कर्तव्य क्या हैं। मेरे विचार में वह किसी क्लर्क या सचिव से ऊपर की वस्तु है। अपने अध्यक्ष–काल में आप सचिव के कार्य अधिक करते थे। किंतु यह तो कोई कारण नहीं है कि अन्य अध्यक्ष भी वही कार्य करें। इसके अतिरिक्त मेरी मुख्य कठिनाई यह थी और महासचिव मेरे अनुकूल व्यक्ति नहीं था। यह अतिशयोक्ति नहीं होगा कि महासचिव मेरे प्रति उतना वफादार नहीं था, जितना कि किसी सचिव को अध्यक्ष के प्रति होना चाहिए (मैं जानबूझकर इसे इतना घटा कर कह राह हूं)– वास्तविकता तो यह है कि कृपलानीजी मेरी इच्छा के विरूद्ध मुझ पर थोप दिए गए थे। शायद आपको याद हो कि मैंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय के एक हिस्से को कलकत्ता ट्रांसफर कराने की भरसक कोशिश की थी, ताकि मैं ठीक प्रकार से कार्य का निरीक्षण करने में सक्षम हो सकूं। आप सबने अपने मुंह मोड लिए और अब अचानक आप लोग अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय के बारे में दोष ढूंढने चल निकले। यदि आपके अनुसार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय की स्थिति बहुत बिगड़ गई है, तो इसके लिए दोषी मैं नहीं, बल्कि महासचिव हैं। आप मुझ पर केवल यह दोष लगा सकते हैं कि मेरे अध्यक्ष–काल में महासचिव के कार्य में बहुत कम हस्तक्षेप हुआ और इसके परिणास्वरूप महासचिव ने अधिक शक्ति का प्रयोग किया। परिणामस्वरूप, यदि कांग्रेस कमेटी के कार्यालय की दशा बिगड़ी; तो उसका उत्तरदायित्व महासचिव पर है, न कि मुझ पर।

मुझे आश्यर्च है कि तथ्यों की जानकारी के बिना आपने मुझ पर दोष लगाया है कि मैंने बंबई–व्यापार–संघर्ष बिल को उसकी वर्तमान दशा में पारित होने से रोकन के लिए कुछ नहीं किया । आपने वस्तुतः ाद कें दिनों में मुझसे संबंधित मामलों में

तथ्यों की जानकारी किए बिना दोषारोपण करने की कला में निपुणता हासिल कर ली है– कभी–कभी तो सार्वजनिक तौर पर भी। यदि आप चाहते है कि आपको पता चले कि इस संदर्भ में मैंने क्या किया, तो बेहतर होगा कि आप सरदार पटेल से पूछें। केवल एक कार्य जो मैंने नहीं किया–वह यही था कि इस मुद्दे पर मैंने उनसे संबंध समाप्त नहीं किया। यदि यह गलती है, तो मैं क्षमा चाहता हूं। वैसे क्या आप जानते हैं कि बंबई सी. एस. पी. ने इस बिल को अपना पूर्ण समर्थन दिया था? आपकी बात करें, तो क्या मैं जान सकता हूं कि आपने उस बिल को पारित होने से रोकने के लिए क्या किया? जब आप बंबई वापस पहुंचे, तो आपके पास उसका विरोध करने का पर्याप्त समय था और मेरा विश्वास है कि कई श्रमिक संगठन आपसे मिले भी थे; उन्हें आपने आश्वस्त भी किया था। तब आपकी स्थिति मुझ से बेहतर थी, क्योंकि आपका प्रभाव मेरी अपेक्षा गांधीजी पर अधिक था। यदि आप प्रयत्न करते तो जहां मैं विफल रहा, वहां आप सफल हो सकते थे। कया आपने वैसा किया?

एक और विषय जिस पर आप प्रायः मुझसे रूष्ट रहते हैं – वह है साझा मंत्रिमंडल का विचार। एक सैद्धांतिक राजनीतिज्ञ के रूप में आपका निश्चित मत है कि संयुक्त मंत्रिमंडल उचित है। क्या इस प्रश्न पर अंतिम निर्णय सुनाने से पहले आप एक कार्य करेंगे? आप दो सप्ताह के लिए असम की यात्रा पर जाएं और वहां से लौटकर मुझे बताएं कि वर्तमान साझा सरकार प्रगतिवादी है या प्रतिक्रियावादी संस्था है? इलाहाबाद में बैठे रहकर समझदारी की बातें करना, जिनका वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं, कहां तक उचित है? सादुल्ला मंत्रिमडल के पतन के बाद जब मै। असम गया, तो मुझे एक भी कांग्रेसी ऐसा नहीं मिला; जिसने कांग्रेस के साझा मंत्रिमंडल की मांग न की हो। वास्तविकता यह है कि वह प्रांत प्रतिक्रियावादी मंत्रिमंडल कें अधीन कई शिकायते पाले हुए है । स्थिति निरंतर बिगड़ रही है और भ्रष्टाचार तेजी से बढ़ रहा है। कांग्रेसी लोगों ने असम में तब सुख की सांस ली, तब उनमें आत्मविश्वास लौटा, जब उन्हें नए मंत्रिमंडल के आगमन की आशा बंधी। यदि आप पूरे देश में सरकार से निकल जाने की नीति को स्वीकृति दे दे तो, मैं उसका स्वागत करूंगा–साथ ही बंगाल तथा असम जैसे प्रांतो के कांग्रेसों भी उसका स्वागत करेंगे। किंतु यदि कांग्रेस पार्टी सात प्रांतों में सरकार में बने रहने को स्वीकृति दे सकती है, तो शेष प्रांतों में भी साझा मंत्रिमंडल को स्वीकृति दे सकती है। यदि आप असम की प्रगति से परिचित होते, तो सभी कठिनाइयों और अवरोधों के बावजूद साझा मंत्रिमंडल द्वारा कार्य संभालने के बाद आप अपना विचार अवश्य बदल लेते।

मुझे डर है कि बंगाल के बारे में आप कुछ नहीं जानते। दो वर्ष की अपनी अध्यक्षता में आपने इस क्षेत्र का दौरा करने का विचार कभी नहीं बनाया; जबकि इस

प्रांत को आपके दोरे की अधिक आवश्यकता थी, क्योंकि यह उस समय शोषण के दौरे से गुजर रहा था। क्या आपने कभी यह जानने की कोशिश की कि हम मंत्रिमंडल के दौरान इस प्रांत की क्या दशा हुई? यदि आप उस समय कुछ करते, तो आज सिद्धांतवादी राजनीतिज्ञ की भांति ने बोल रहे होते। तब आप मेरी इस राय से सहमत होते कि यदि प्रांत को सुरक्षित रखना है, तो हम मंत्रिमंडल को हटा दिया जाना चाहिए तथा वर्तमान परिस्थितियों में एक बेहतर साझा मंत्रिमंडल का गठन किया जाना चाहिए। किंतु ऐसा कहने के साथ-साथ मैं बताना चाहूंगा कि मेरी राय में साझा मंत्रिमंडल का प्रस्ताव इसलिए पैदा हुआ, क्योंकि पूर्ण स्वराज का संघर्ष रोक दिया गया। कल ही पूर्ण स्वराज का संघर्ष शुरू कर दें, तो साझा मंत्रिमंडल की मांग खत्म हो जाएगी।

अब मैं आपके 20 तारीख के तार की चर्चा करूंगा, जो आपने मुझे दिल्ली से भेजा था। उसमें आपने लिखा था कि "अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए तथा राष्ट्रीय समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में कार्यकारिणी का गठन करना आवश्यक है।" कार्यकारिणी के तत्काल गठन के सभी समर्थक हैं, किंतु आपके तार से जो एकबात मुझे महसूस हुई-वह यह थी कि आपकों मेरी कठिनाइयों के मद्देनजर मुझसे जरा-सी भी सहानुभूति नहीं थी। आप भली-भांति जानते थे कि यदि पंत प्रस्ताव पारित न हुआ होता, तो कार्यकारिणी का गठन 13 तारीख को ही हो गया होता। जब वह प्रस्ताव पारि हुआ, कांग्रेस को मेरे गंभीर रूप से बीमार होने का पता था, फिर महात्मा गांधी त्रिपुरी में नहीं पहुंचे थे और हम लोगों का मिलना निकट भविष्य में कठिन था। मैं जान सकता हूं कि यदि कार्यकारिणी के गठन के बिना एक माह बीतता है, तो लोग स्वाभाविक रूप से बेचैन तो होंगे ही-किंतु विरोध त्रिपुरी सम्मेलन के ठीक एक सप्ताह बाद शुरू हुआ। जैसा मत-विभाजन के मामले में हुआ था, एक बार फिर आपने ही यह विरोध मेरे विरूद्ध प्रारंभ किया । क्या महात्मा गांधी के बिना कार्यकारिणी का गठन संभव था? मैं गांधीजी से कैसे मिल सकता था? क्या आप भूल गए कि पिछले वर्ष कार्यकारिणी की बैठक हरिपुरा कांग्रेस के लगभग छह सप्ताह बाद हुई थी? क्या आप सोचते हैं कि आपका तार प्रेस में प्रकाशित होने के बाद गिने-चुने लोगों के एकवर्ग वे प्रेस द्वारा मेरे विरूद्ध छेड़ा गया आंदोलन उचित था? क्या मैं जान-बूझकर कार्यकारिणी के गठन से बचने का प्रयास कर रहा था? यदि मेरे विरूद्ध छेड़ा गया आंदोलन उचित नहीं था, तो क्या आपने एक जन-नेता होने के नाते यह जरूरी समझा कि उस वक्त, जबकि मैं बीमारी की हालत में बिस्तर पर पड़ा था, आप मेरी ओर से दो शब्द बोलते?

आपके द्वारा मुझ पर लगाए इस आरोप कि मेरी अध्यक्षता में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की दुर्दशा हुई-की चर्चा मैं पहले भी कर चुका हूं। इस संबंध में एक शब्द और कहना चाहूंगा। तब क्या आपको ख्याल नहीं आया कि महासचिव की

आलोचना करने के साथ–साथ आप मेरी व सभी कार्यकर्ताओं की आलोचना भी कर रहे हैं?

अपने तार में आपने राष्ट्रीय समस्याओं की गंभीरता का संकेत किया है, जिस कारण आप चाहते हैं कि तत्काल कार्यकारिणी का गठन हो जाना चाहिए–हालांकि आप कहते हैं कि आप उस समिति में शामिल नहीं होना चाहते। कृपया बताएं कि वे गंभीर राष्ट्रीय समस्याएं क्या हैं? पहले पत्र में आपने लिखा था कि सबसे गंभीर समस्या राजकोट और जयपुर की हैं। क्योंकि महात्माजी उन समस्याओं को हल करने में जुटे थे, इसलिए कार्यकारिणी या अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का हस्तक्षेप अवांछित था।

फिर आपने अपने तार में पुनः अंतर्राष्ट्रीय स्थिति की चर्चा की है। मैंने समाचारपत्रों में देखा कि आपके यह कहने के बाद–ऐसे लोग जिन लोगों को अंतर्राष्ट्रीय मामलों की समझ नहीं है और जो अंतर्राष्ट्रीय मामलों को समझना ही नहीं चाहते ओर जो अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को भारत के लाभ के लिए इस्तेमाल करने के इच्छुक ही नहीं हैं–वे अचानक बोहेमिया और चेकोस्लोवाकिया के मामले में चिंतित हो उठे हैं। निश्चय ही मुझ पर आक्रमण करने का यह सरल उपाय था। पिछले दो माह में यूरोप में कोई ऐसी महत्वपूर्ण घटना नहीं घटी, जिसकी अपेक्षा नहीं की गई थी। चेकोस्लोवाकिया में जो हुआ, वह म्युनिख–समझौते का ही असर था। वास्तविकता तो यह है कि यूरोप से प्राप्त सूचना के आधार पर मैं पिछले छःमाह से कांग्रेसी मित्रों से बराबर कह रहा हूं कि यूरोप में वसंत ऋतु में संकट पैदा होगा, जो गर्मियों तक चलेगा। इसलिए मैं अपनी ओर से कदम उठाए जाने की बात पर बल दे रहा हूं–और वह कदम हैः ब्रिटिश सरकार को पूर्ण स्वराज के लिए अल्टीमेटम दे दिया जाए। मुझे याद है कि जब बार हाल ही में मैंने अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों पर आपसे चर्चा की (शांति निकेतन या इलाहाबाद में) और ब्रिटिश सरकार के सामने अपनी राष्ट्रीय मांग को रखने के लिए इसे एक तर्क रूप में इस्तेमाल किया, तो आपका उत्तर था कि अंतर्राष्ट्रीय विवाद अभी कुछ वर्ष तक चलते रहेंगे। अचानक आप अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के विषय में अत्यधिक उत्साहित दिखाई पड़ रहे हैं। किंतु मै। आपको बता दूं कि आपका या गांधीवादी गुट का कोई इरादा नहीं हैं कि वे अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को भारत के पक्ष में इस्तेमाल करें। आपके तार में स्पष्ट है कि अंतर्राष्ट्रीय संकट को देखते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक तत्काल बुलाई जानी आवश्यक है। किसलिए? केवल लंबा–चौड़ा प्रस्ताव पारित करने के लिए, जिसका परिणाम कुछ नहीं?– या आप अपना मन बदलकर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को यह बताएंगे की अब हमें पूर्ण स्वराज की ओर बढना चाहिए एवं ब्रिटिश सरकार के सामने पूर्ण स्वराज की मांग रखते हुए एक अल्टीमेटम तैयार करना चाहिए? नहीं, मैं चाहता हूं कि या तो हम अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को गंभीरता से लें और

अपने लाभ हेतु अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों से लाभ उठाएं या फिर उस पर चर्चा करना बिल्कुल छोड़ दें। यदि वास्तव में हम कुछ करना नहीं चाहतें, तो तमाशेबाजी की क्या आवश्यकता है?

मुझे सूचना मिली है कि जब आप दिल्ली में थे, तो आपने महात्माजी को इस आशंय का संदेश दिया था कि वे इलाहाबाद जाकर मौलाना आजाद से मिलें। संभव है कि यह सूचना गलत भी हो। यदि ऐसा नहीं है, तो क्या आपने उन्हें यह सुझाव भी दिया कि वे एक बार धनबाद भी अवश्य जाएं? 24 को जब मेरे सचिव ने आपसे फोन पर प्रेस की इस रिपोर्ट का खंडन किया कि महात्माजी डॉक्टर की राय के मुताबिक धनबाद जाने में असमर्थ हैं, तो अपने कोई इच्छा व्यक्त नहीं की कि उन्हें धनबाद जाना चाहिए– जबकि आप इस बात के लिए बहुत उत्सुक थे कि मुझे जल्दी गांधीजी की इच्छानुसार कार्यकारिणी का गठन करना चाहिए। टेलीफोन पर आपने सूचना दी थी कि धनबाद उनके कार्यक्रम में नहीं है। क्या आपके लिए महात्माजी को धनबाद–यात्रा के लिए मनाना कठिन कार्य है? क्या आपने कोशिश की? आप कह सकते हैं कि उन्हें राजकोट के मामले में दिल्ली पहुंचना था। किंतु वे वायसराय से मुलाकात कर चुके थे और जहां तक सर मौरिस ग्वेर से मुलाकात का संबंध था, वह सरदार पटेल को करनी थी, न कि महात्माजी को।

राजकोट मामले के विषय में मैं कुछ और बातें कहना चाहता हूं। आपने समझौते की उन शर्तों पर पर्याप्त विचार किया, जिससे महात्माजी की भूख–हड़ताल समाप्त हो सकी। कोई भी भारतीय ऐसा नहीं है, जिसने महात्माजी के जीवित बच जाने से प्रसन्नता और सुख का अनुभव न किया हो। किंतु यदि हम समझौते की शर्तों को तर्क के आधार पर देखें, तो क्या पाएंगें? पहली बात–सर मौरिस ग्वेर जो फेडरल स्कीम के अभिन्न भाग थे, उन्हें मध्यस्थ बनाया गया। क्या यह स्कीम को चालाकीपूर्वक स्वीकृति देना ही नहीं था? दूसरे– सर मौरिस न तो हमारे पक्ष के व्यक्ति थे, न ही स्वतंत्र व्यक्ति थे। साफ तोर पर जाहिर है कि वे सरकारी आदमी थे। यदि ब्रिटिश सरकार के साथ किसी भी विवाद में मध्यस्थ के रूप में हम हाईकोर्ट के जज या सेशन जज को स्वीकार करते हैं, तो ब्रिटिश सरकार तो उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर ही लेगी। उदाहरण के लिए, प्रांतीय कैदियों को बिना मुकदमा चलाए जेल में रखने के मामले में सरकार सदा यही कहती है कि कागजात हाईकोर्ट अथवा सेशन के दो जजों के सम्मुख पेश किए गए हैं। किंतु इस बात को हमने कभी भी संतोषजनक हल के रूप में स्वीकार नहीं किया, फिर राजकोट के मामले में हम ऐसा क्यों नहीं कर पाए?

इस संबंध में एक और बात? जो मैं समझ नहीं पाया। शायद उस पर आप कुछ रोशनी डाल सकें। महात्मा गांधी वायसराय से मिलने गए। समय पर मुलाकाल

भी हुई। तो अब वे वहां किस इंतजार में हैं? सरदार पटेल को तो इंतजार करना है, क्योंकि सर मौरिस ग्वेर उनसे मिलना चाहते हैं। यदि वायसराय से मुलाकात के पश्चात भी गांधीजी दिल्ली में ही अटके रहते हैं, तो क्या इससे ब्रिटिश सरकार को महत्व अनावश्यक रूप से बढ़ेगा नहीं? 24 मार्च के अपने पत्र में आपने लिखा था कि महात्माजी कुछ दिन तक दिल्ली में ही व्यस्त रहेंगे। वे वहां से निकल नहीं सकते। मेरे विचार से तो दिल्ली में टिके रहने की अपेक्षा गांधीजी के पास और भी कई महत्वपूर्ण कार्य करने को पड़े हैं। संकट या अवरोध, जिसकी आपने इतनी शिकायत की है, वे तत्काल समाप्त हो सकते हैं–यदि महात्माजी थोड़ा–सा भी हाथ बंटाएं। इस विषय में आप खुद तो चुप्पी साधे रहते हैं । सारा दोष पर डाल दिया जाता है।

23 मार्च के पत्र में आपने कहा है कि बाद में कुछ लोगों से बातचीत के दौरान मैंने महसूस किया कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक आयोजित की जानी चाहिए। मैं नहीं जानता कि इस प्रकार सोचने वाले कौन लोग हैं? बैठक बुलाने का उनका क्या उद्देश्य है? शायद स्थिति को ठीक प्रकार समझना चाहते हों। समाचार तेजी से और दूर–दूर तक फैलता है। मुझे सूचना मिली हे कि कुछ एम. एल. ए. (केंद्रीय) अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्यों के हस्ताक्षर करा रहे हैं कि बैठक होनी चाहिए–जैसे कि मैं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक से बच रहा हूं और कांग्रेस के कार्यों में जानबूझ कर रूकावट डाल रहा हूं। क्या आपने दिल्ली में या अन्य स्थान पर ऐसा कोई समाचार नहीं सुना? यदि हां, तो क्या इस प्रकार का कार्य उचित एवं सम्मानजनक है?

उसी पत्र में, (23 मार्च) आपने राष्ट्रीय मांग प्रस्ताव की चर्चा भी की है और शरत ने उसका विरोध किया, इसकी भी चर्चा की है। जहां तक शरत के व्यवहार का प्रश्न हे, वे आपको इसके विषय में स्वयं लिखेंगे। किंतु इस विरोध के बावजूद यह कहना कहां तक उचित है कि प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ? कई लोगों से मैंने सुना है कि उन्होंने इस प्रस्ताव का विरोध किया। इसलिए नहीं कि उसमें कुछ गलत था, बल्कि इसलिए कि उसका व्यावहारिक महत्व कुछ नहीं था। यह वैसे ही प्रस्तावों में से एक था, जो कांग्रेस की प्रत्येक बैठक के बाद प्रस्तावित किया जाता है और सर्वसम्मति से पारित भी हो जाता है। पता नहीं आप उस प्रस्ताव के विषय में इतने उत्तेजित क्यों है? उसका व्यावहारिक महतव क्या है?

इसी संबंध में यह कहने से भी मैं स्वयं को नहीं रोक पा रहा हूं कि कांग्रेस के प्रस्ताव अधिक उलझन वाले और लंबे होते हैं। उन्हें थीसिस या निबंध कहा जाना चाहिए, न कि प्रस्ताव। प्रारंभ में हमारे प्रस्ताव, संक्षिप्त और व्यावहारिक होते थे। मैं तो कहूंगा कि यह नया आकार और प्रारूप आपने ही प्रदान दिया है। जहां तक मेरा संबंध

है, मैं तो लंबे थीसिस की अपेक्षा व्यावहारिक प्रस्ताव को ही अधिक पसंद करूंगा।

अनेक बार आपने अपने पत्र में कांग्रेस में इन दिनों पनप रही जोखिम उठाने की प्रवृत्ति का संकेत किया है। वास्तव में आपका उससे अभिप्राय क्या है? मुझे ऐसा लगता है कि आपके मस्तिष्क में कुछ खास व्यक्ति हैं। क्या आप नए स्त्री व पुरूषों द्वारा कांग्रेस में शामिल होकर महत्वपूर्ण स्थिति में आने के विरूद्ध हैं? क्या आप चाहते हैं कि कांग्रेस का नेतृत्व कुछ मुख्य लोगों के हाथों में ही सीमित रह जाए? यदि मेरी याद्दाश्त ठीक है, तो शायद संयुक्त प्रांत प्रांतीय कमेटी या कौंसिल ने इस संदर्भ में एक नियम बनाया था कि कांग्रेस के कुछ खास संगठनों में तीन साल से अधिक समय तक एक ही व्यक्ति को कार्य–भार नहीं संभाले रखना चाहिए। निश्चित रूप से यह नियम अधीनस्थ संगठनों पर लागू होना था– जबकि मुख्य संगठनों में एक ही व्यक्ति कई दशकों तक अधिकारी बना रह सकता था। आपके अनुसार तो एक प्रकार से हम सभी लोग जोखिम से खेलने वाले हैं, क्योंकि जीवन स्वयं एक दीर्घकालीन जोखिम है। मैंने सोचा था कि जो व्यक्ति स्वयं को प्रगतिवादी मानते हैं, वे कांग्रेस संगठनों के प्रत्येक पद पर नए लोगों का स्वागत करेंगे।

आपके लिए यह सोचने का कोई आधार नहीं है कि (यहां मैं आपके 24 मार्च के पत्र का जिक्र कर रहा हूं) शरत ने वह पत्र मेरी ओर से लिखा था। उनका अपना अलग व्यक्तित्व है। जब वे यहां से कलकत्ता लौटे थे उन्हें गांधीजी का तार मिला था, जिसमें उन्होंने उनसे लिखने का आग्रह किया था। यदि गांधीजी ने इस प्रकार टेलीग्राम न दिया होता, तो मेरे विचार से वे लिखते ही नहीं । मैं कहना चाहूंगा कि महात्माजी को लिखे उनके पत्र में कुछ बातें ऐसी हैं, जिनमें मेरी भावनाएं भी झलक रही हैं।

शरत को लिखे आपके पत्र के संदर्भ में मैंने जो कुछ बातें महसूस कीं, उनका जिक्र मैं अवश्य करूंगा। आपके पत्र से पता चलता है कि त्रिपुरी के माहौल और वहां जो कुछ घटा, उससे आपको बहुत आश्चर्य हुआ है। यद्यपि मैं स्वतंत्रतापूर्वक इधर–उधर घूम नहीं सकता, फिर भी स्वतंत्र स्त्रोतों से मेरे पास वहां के माहौल की बिगड़ती स्थिति की सूचना मिलती रही है। आप किसी स्थान की जानकारी प्राप्त किए बिना या कुछ सुने बिना कैसे वहां घूम सकते हैं–मुझे आश्चर्य होता है।

दूसरे, अपने टिप्पणी की है कि त्रिपुरी में व्यक्तिगत विवादों ने अन्य मुद्दों को बुरी तरह घेर लिया। आपका कहना ठीक है। बस, आप यह जोड़ना भूल गए होंगे– यद्यपि आप समिति में तथा खुले अधिवेशन में कुछ नहीं बोले, फिर भी आपने किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा इन व्यक्तिगत विवादों को अधिक उछाला और जनसाधारण की नजर में भी इसे मुख्य मुद्दा बना दिया।

शरत को लिखे पत्र में आपने लिखा है कि "किसी भी व्यक्ति का यह कहना मूर्खता है कि सुभाष की बीमारी नकली है और मेरे विचार से मेरे किसी भी सहयोगी ने ऐसा कुछ नहीं कहा"—आपका यह कहना बिल्कुल भी उचित नहीं है, क्योंकि त्रिपुरी में तथा उससे पहले से मेरे विरोधी इस विषय में एक आंदोलन छेड़े हुए थे। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि बाद में आप मेरे विरोधी बनते चले गए (इस पत्र क शुरूआत में भी मैंने जिक्र किया है)। मुझे नहीं लगता कि शरत ने त्रिपुरी के माहौल आदि के विषय में जो कुछ लिखा, वह बढ़ा—चढ़ा कर लिखा है।

आपने त्रिपुरी में मिली कुछ रिपोर्टों की भी चर्चा की है। आपको यह बात शोभा नहीं देती कि जो रिपोर्ट हमारे विरोध में है, वह आपको अधिक प्रभावित करती है। मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूं। क्या आप जानते हैं कि बंगाल ही एकमात्र प्रांत नहीं है, जहां टिकट को लेकर विवाद खड़ा हुआ है? क्या आप जानते हैं कि ऐसी ही शिकायत आंध्र प्रदेश में भी हुई थी? किंतु आपने केवल बंगाल का ही जिक्र किया । फिर, क्या आप जानते हैं कि जब मूल रसीदें खो जाने के बाद बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यालय से डुप्लीकेट रसीदें बनाकर दी गईं, तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने बंगाल कांग्रेस कमेटी को चेतावनी दी थी तथा उससे कहा था कि प्रतिनिधिमंडल को टिकट देते समय सावधानी से काम लें? क्या आपने यह भी जानने का प्रयास किया कि गलती अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी कार्यालय की थी अथवा बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यालय की थी?

फिर आपने प्रतिनिधियों को लाने के लिए बहुत—सा पैसा खर्च करने की बात कही है। क्या आप नहीं जानते कि किस ओर पूंजीपति या पैस वाले लोग हैं? क्या आपने लाहौर से लारियां भर—भर कर पंजाबी प्रतिनिधियों को लाने की बात नहीं सुनी? किसके इशारे पर उन्हें लाया गया? शायद डॉ. किचलू इस पर कुछ प्रकाश डाल सकें। पंजाब से आई एक प्रतिष्ठित कांग्रेस कार्यकर्ता ने, जो मुझसे पांच दिन पूर्व मिली; बताया कि उन्हें सरदार पटेल के निर्देश पर यहां लाया गया है। मैं नहीं जानता। फिर भी आपमें निष्पक्षता का कुछ तो भाव होना ही चाहिए था।

त्रिपुरी में कांग्रेस के मंत्रियों की भूमिका के विषय में भी मुझे दो टिप्पणियां करनी हैं। आखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिकांश सदस्यों द्वारा इस आशय की प्रार्थना की गई थी कि वोटिंग मतपत्र द्वारा की जानी चाहिए। मेरे कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि यदि वे खुले—आम कांग्रेस—मंत्रियों के विरूद्ध वोट देंगे, तो मुश्किल में पड़ जाएंगे। इसका अर्थ क्या है? दूसरे, मैं मंत्रियों द्वारा इस प्रकार के विघटनकारी प्रचार के खिलाफ हूं। इसमें दो राय नहीं कि उन्हें संवैधानिक अधिकार प्राप्त है—लेकिन यदि प्रत्येक प्रांत में ऐसा होने लगा—तो शीघ्र ही कांग्रेस संसदीय पार्टी में दरार पैदा

हो जाएगी। जब तक मंत्रियों को कांग्रेसी एम.एल.ए तथा एम. एल. सी. का एकजुट समर्थन प्राप्त नहीं होगा, वे कैसे कार्य कर सकते हैं?

क्या आप नहीं मानते कि त्रिपुरी कांग्रेस में (सदस्यों की समिति समेत) पुराने कांग्रेसियों ने जनता की नजरों में उदासीन भूमिका निभाई तथा मंत्रियों ने लोगों का मन जीत लिया? यदि शरत ने यही बात कह दी, तो क्या वे गलत थे?

यह बात सरासर अपमानजनक है कि आप शरत को लिखे पत्र में टिप्पणी करें "त्रिपुरी प्रस्ताव ने कांग्रेस–अध्यक्ष और गांधीजी के मध्य सहयोग की कल्पना की थी।"

उपर्युक्त पत्र में आपने कहा कि त्रिपुरी कांग्रेस में और उसके पहले आपने कांग्रेसियों में सहयोग पैदा करने के लिए बहुत प्रयत्न किया। क्या आपको यह दुःखद तथ्य बता दूं कि बाकी लोगों की राय इसके विपरीत है? उनके विचारानुसार त्रिपुरी कांग्रेस ने कांग्रेसियों के बीच जो दरारें पैदा की हैं, उसकी जिम्मेदारी आप पर है।

अब मैं आपसे कहूंगा कि कृपया आप अपनी नीति व कार्यक्रम स्पष्ट करें। अस्पष्ट सामान्य नीतियां नहीं; बल्कि स्पष्ट, सत्य और विस्तृत। मैं यह भी जानना चाहूंगा कि वास्तव में आप क्या हैं–समाजवादी, वामपंथी, केंद्रवादी, उदारवादी, गांधीवादी या कुछ और?

शरत को लिखे आपके पत्र में दो वाक्य प्रशंसनीय हैं– "जिस बात को मुझे अत्यधिक दुःख है; वह यह है कि व्यक्तिगत बातों ने सभी राजनीतिक मुद्दों को ढांप रखा है। यदि कांग्रेसियों में मतभेद हें, तो मुझे उम्मीद है कि वे उच्च पदों तक पहुंचेंगे तथा नीति व उद्देश्यों के मुद्दों तक भी पहुंच जाएंगे।" यदि आप केवल अपनी ही बात पर अड़े रहते, तो कांग्रेस की राजनीति में कितना अंतर पड़ा होता!

जब आप यह कहते हैं कि आप समझ नहीं पा रहे कि त्रिपुरी में क्या रूकावट थी, तो मैं आपकी सरलता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। वास्तव में त्रिपुरी कांग्रेस ने केवल पंत प्रस्ताव पारित किया था तथा उस प्रस्ताव पर तुच्छता और अनुचित होने का आरोप लगा। अध्यक्षीय चुनाव के पश्चात सत्य और अहिंसा के समर्थकों ने पूर विश्व को बता दिया कि वे बहुमत प्राप्त दल के मार्ग में बाधा नहीं डालेंगे और इसी भावनावश उन्होंने कार्यकारिणी से त्यागपत्र भी दिया। त्रिपुरी में उन्होंने कुछ नहीं किया और केवल बाधा उत्पन्न की । उन्हें ऐसा करने का पूरा अधिकार था; किंतु जिस बात को वे व्यवहार में ला नहीं सकते, उसके विषय में बात क्यों करते हैं?

इस लंबे पत्र को समाप्त करने से पहले कुछ बातें और कहना चाहूंगा। त्रिपुरी

में बंगाल के प्रतिनिधियों को टिकट दिए जाने संबंधी मुसीबत का आपने जिक्र किया है। उस दिन मैंने समाचारपत्रों में पढ़ा कि कलकत्ता के जन समारोह में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के एक सदस्य ने कहा कि उसने यू. पी. के कुछ प्रतिनिधियों से सुना–ऐसी ही समस्या यू. पी. में भी पैदा हुई थी।

क्या आप इस बात को स्वीकार नहीं करते हैं कि पंत प्रस्ताव पारित करने का मूल उद्देश्य महात्मा गांधी को मेरे विरूद्ध करना था? क्या आप ऐसी हरकत को उचित मानेंगे, जबकि महात्माजी व मेरे बीच, कम–से–कम मेरी ओर से, तो कोई अविश्वास पैदा नहीं हुआ। यदि पुराने योद्धा मुझसे झगड़ना चाहते थे, तो स्पष्ट रूप में वे सामने क्यों नहीं आए? उन्होंने महात्मा गांधी को इस बीच में क्यों खींचा? बेशक यह चालाकी भरा कदम था, किंतु क्या ऐसा कदम सत्य और अहिंसा से मेल खाता है?

मैं आपसे पहले भी पूछ चुका हूं कि क्या सरदार पटेल का यह घोषित करना उचित था कि मेरा पुनः चुनाव देश–हित में नहीं होगा? आपने एक शब्द भी इस विषय में नहीं कहा कि उन्हें अपने ये शब्द वापस ले लेने चाहिए। इस प्रकार आपने उनके द्वारा लगाए गए आरोप का समर्थन ही किया। अब मैं आपसे पूछना चाहूंगा कि महात्माजी की इस टिप्पणी से आप कहां तक सहमत हैं कि आखिरकार मैं देश का दुश्मन नहीं हूं। क्या आप समझते हैं कि यह टिप्पणी उचित है? यदि नहीं, तो क्या आपने मेरी ओर से महात्माजी को कुछ कहा? जब हम त्रिपुरी में थे, तो कुछ लोगों ने समाचारपत्रों में यह प्रकाशित करवा दिया था कि पंत प्रस्ताव को महात्माजी का समर्थन प्राप्त है। उनकी इस चतुराई से आप कहां तक सहमत हैं?

और अब पंत प्रस्ताव के बारे में आपका क्या विचार है? त्रिपुरी में अफवाह थी कि आप उसे लिखने वालों में से एक हैं। क्या यह सत्य है? क्या आप उस प्रस्ताव को पास करते हैं–हालांकि मतदान के समय आप तटस्थ रहे थे? उसके विषय में आपकी क्या राय है? क्या आप के विचार से वह अविश्वास –प्रस्ताव था?

मुझे दुःख है कि मेरा पत्र अनावश्यक रूप से लंबा हो गया है। निश्चय ही आपका हौसला जवाब दे देगा। किंतु मैं क्या करूं–इतनी सारी बातें थीं कि मुझे लंबा पत्र लिखना ही पड़ा। संभव है, मैं आपको पुनः पत्र लिखूं या शायद प्रेस में बयान जारी करूं। ऐसी रिपोर्ट मिली है कि कुछ लेखों में आपने मेरे अध्यक्ष–काल की तीव्र आलोचना की है। अभी यह खबर पक्की नहीं है। जब मै। आपका लेख पढ़ूंगा, तो उस विषय में कुछ कहने योग्य होऊंगा और तभी हम अपने कार्य की तुलना कर पाएंगे। विशेष रूप से इस विषय में कि दो वर्ष में आपने वामपंथ के कार्य को कितना आगे बढ़ाया और मैंने एक वर्ष की अवधि मैं कितना कार्य किया।

यदि मैंने कटु भाषा का प्रयोग किया हो या आपकी भावनाओं को ठेस पहुंचाई हो, तो कृपया मुझे क्षमा करें आप स्वयं कहते हैं कि स्पष्टवादिता जैसी श्रेयस्कर कोई चीज नहीं है और मैंने स्पष्टवादिता—शायद कठोर स्पष्टवादिता—से काम लिया है।

धीमी गति से मैं ठीक हो रहा हूं। आशा है आप भी स्वस्थ होंगे।

आपका शुभाकांक्षी

सुभाष

जवाहरलाल नेहरू की ओर से

व्यक्तिगत एंव गोपनीय
इलाहाबाद
3 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय सुभाष,

28 मार्च का तुम्हारा लंबा पत्र मिला और मैं जल्दी ही उसका उत्तर भी दे रहा हूं सबसे पहले तो मैं यह बता दूं कि तुमने पूर्ण स्पष्टता से लिखा और मुझे यह स्पष्ट बता दिया कि तुम मेरे विषय में तथा अन्य घटनाओं के विषय में क्या महसूस करते हो। स्पष्टवादिता से प्रायः कष्ट होता है, किंतु फिर भी यह वांछनीय है—विशेष रूप से उन लोगों के मध्य, जिन्हें मिलकर कार्य करना है। इससे व्यक्ति को दूसरे की नजर से अधिक स्वयं को आलोचनात्मक दृष्टि समझने का अवसर मिलता है। तुम्हारा पत्र इस दृष्टि से बहुत उपयोगी है और मैं इसके लिए तुम्हारा आभारी हूं।

टाइप किए 27 पृष्ठों के पत्र का उत्तर देना आसान कार्य नहीं है— जिसमें अनंत घटनाओं, विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों का जिक्र भी हो। मुझे डर है कि मेरा उत्तर जितना विस्तृत और पूर्ण होना चाहिए, शायद नहीं हो पाएगा। इन मुद्दों पर सही ढंग से चर्चा करने की कोशिश में व्यक्ति को पुस्तक या वैसी ही कोई चीज लिखनी पडेगी।

तुम्हारा पत्र विशेष रूप से मेरे आचरण पर अभियोग—पत्र है तथा मेरी विफलताओं का पर्यवेक्षण है। तुम स्वयं इस बात से सहमत होगे कि अभियोगी का उत्तर देना कितना कठिन कार्य है। किंतु जहां तक विफलताओं या कमियों का संबंध है, मैं कुछ कहना चाहूंगा। मुझे खेद है कि मुझमें वे सारी कमियां हैं। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि मैं तुम्हारे इस सत्य की प्रशंसा करता हूं कि 1937 में जब से तुम गिरफ्तारी से बाहर आए हो, तुमने तब से मेरी बहुत इज्जत की है—व्यक्तिगत रूप से भी और जनता में भी। इसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूं। व्यक्तिगत रूप से मुझे तुमसे हमेशा स्नेह रहा है तथा अब भी है और मैं तुम्हारी इज्जत भी करता हूं— हालांकि मैं तुम्हारे कार्यों से

कभी–कभी सहमत नहीं होता हूं। किसी हद तक मेरे विचार से हमारा आचरण भिन्न है। साथ ही, जीवन और उसकी समस्याओं के प्रति हमारी सोच भी एक नहीं है। अब मैं तुम्हारे पत्र का उत्तर दूंगा और पैराग्राफ का जवाब एक–एक करके दूंगा।

मैं भूल चुका हूं कि पिछले नवंबर में यूरोप से लौटने के बाद इलाहाबाद में तुमसे मिलने पर मैंने क्या कहा था। कलकत्ता से कराची जाते हुए तुम कुछ समय तक वहां रूके थे। मैं यह नहीं सोच पा रहा हूं कि उस समय गांधीजी की चर्चा क्यों की गई थी–तभी तो मैं कोई निश्चित उत्तर दे सकता हूं। मुझे यह भी ध्यान नहीं है कि प्रश्न क्या था। लेकिन शायद मेरा अभिप्राय यह रहा होगा कि भविष्य में मेरा कार्यकलाप विभिन्न मुद्दों पर गांधीजी की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा। तुम्हें याद होगा कि मैंने हरिपुरा से पहले और बाद में क्या कहा था। उस समय मैं कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में अपने संबंध में बहुत दु:खी था और सदस्यत छोड़ना चाहता था। इसका कारण यही था कि मुझे यह महसूस हो रहा था कि मैं कोई लाभकारी कार्य कर नहीं कर पा रहा हूं। गांधीजी भी समजातीय समिति के पक्ष में थे और मैं उसका एक भाग नहीं बन सकता था। उस समय मेरे सामने एक ही मार्ग था कि मैं स्वयं को चुपचाप अलग रख लूं और बाहर रहकर सहयोग देता रहूं या गांधीजी व उनके गुट को चुनौती दूं। मैंने महसूस किया कि भारत के लिए हमारे कार्य की दृष्टि से यह उचित नहीं होगा या फिर निश्चित रूप से विघटन होगा। यह कहना व्यर्थ है कि किसी भी कीमत पर एकता कायम रहनी चाहिए। कभी–कभी एकता दुखदायी सिद्ध होती है। उस समय उसे छोड़ देना ही हितकर है। यह उस समय की स्थितियों पर निर्भर करता है। मुझे पुर्ण विश्वास था कि गांधीजी को अलग करने से या कर देने से हम बहुत कमजोर हो जाएंगे और संकट की घड़ी उत्पन्न हो जाएगी। मैं इस संकट का सामना करने को तैयार नहीं था। उस समय मैं कुछ ऐसी स्थितियों को भी नापसंद करता था, जो तब पैदा हो रही थीं तथा गांधीजी के सामान्य रूख से भी अप्रसन्न था। कुछ मुद्दों के प्रति कुछ प्रांतीय मंत्रियों के रूख से भी मैं अप्रसन्न था।

मैं यूरोप चला गया और जब वापस लौटा, तो पुनः उसी समस्या से सामना हुआ। उसी समय तुम मुझसे मिले थे। शायद तभी मैंने तुम्हें बताया था, मेरे मन में क्या है। मेरा मत स्पष्ट था, लेकिन मेरा कार्य इसी बात पर निर्भर था कि गांधीजी का स्थितियों के प्रति रूख कया है। यदि उनका आग्रह अभी भी समजातीय कमेटी के लिए था, तो मेरा बाहर हो जाना ही ठीक था। यदि नहीं, तो मैं कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में सहयोग देने को तैयार था। इस मुद्दे पर मैं कांग्रेस का विघटन करने को तैयार नहीं था। मैं भारत से संकट से तथा अंतर्राष्ट्रीय संकट से चिंतित था। और यह महसूस कर रहा था कि कुछ माह बाद हमें बड़े संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। वह संघर्ष

गांधीजी के नेतृत्व और सहयोग के बिना प्रभावशाली नहीं हो सकता।

इस संघर्ष के प्रति मेरा विचार फेडरेशन के आधार पर नहीं था। मैं चाहता था कि कांग्रेस फेडरेशन को मृत मुद्दा आत्मनिर्णय तथा कांस्टीट्यूएंट असेंबली मांग पर ध्यान दे और विश्व संकट के परिप्रेक्ष्य में इसे सामने रखे। मेरा विचार था कि फेडरेशन के मुद्दे पर आवश्यकता से अधिक संघर्ष करने से यह मुद्दा खत्म होने वाला नहीं और यह हमारी सोच और क्रिया को कुंद कर रहा है और मूल मुद्दों पर कार्य करने से हमें रोक रहा है। जब मैं इंग्लैंड में था, तब तुमने एक बयान जारी किया था कि तुम अंत तक फेडरेशन के विरूद्ध संघर्ष करते रहोगे। यदि कांग्रेस ने उसे स्वीकार कर भी लिया, तो भी तुम्हारा संघर्ष जारी रहेगा। इस बयान का इंग्लैंड में विपरीत प्रभाव पड़ा। सबका कहना यही था कि यदि कांग्रेस–अध्यक्ष इस मुद्दे पर त्यागपत्र देने की सोच रहे था और उस बयान को समझ नहीं पाया। इस आधार पर मैंने दो प्रस्ताव बनाए। उन दोनों में कोई विशेष बात नहीं थी। केवल जोर किसी अन्य बात पर दिया गया था। जैसा कि तुम जानते हो, कार्यकारिणी के सभी प्रस्ताव इसी विचार से बनाए जाते हैं कि शेष सभी सदस्य भी उससे सहमत हों। स्वयं को खुश करने के लिए प्रारूप बनाना आसान कार्य है, लेकिन वह अन्य लोगों की स्वीकृति नहीं पा सकता। कार्यकारिणी के समक्ष इन प्रस्तावों को रखने का मेरा मुख्य उद्देश्य यही था कि पूरे देश को मानसिक रूप से अगली कांग्रेस में अधिक विस्तृत और दूरगामी प्रस्तावों को पारित करने के लिए तैयार करना है। मेरे प्रस्तावों को स्वीकार किया गया और मुझसे कहा गया कि उन पर कांग्रेस के समक्ष विचार किया जाना चाहिए।

इसी कार्यकारिणी में मैंने यहूदियों से संबंधित प्रस्ताव सुझाया था। तुम्हें याद होगा कि इससे पहले जर्मनी में यहूदियों की सामूहिक हत्या की जा रही थी। ऐसा पूरे विश्व में हो रहा था। मैंने महसूस किया कि हमें इस विषय पर अपना विचार व्यक्त करना चाहिए। तुमने कहा है कि तुम्हें तब बहुत आश्चर्य हुआ, जब तुमने देखा कि मैंने प्रस्ताव पारित कर यहूदियों के लिए शरण मांगी है। मुझे आश्चर्य है कि तुम इसके इतने विरोधी थे, जबकि जहां तक मुझे याद है, तुमने उस समय इस विषय में कोई निश्चित विचार व्यक्त नहीं किया था। लेकिन क्या मेरे प्रस्ताव को भारत में यहूदियों के लिए शरण खोजने की संज्ञा देना उचित है? पुराना प्रारूप मेरे सामने है, जो कहता है: 'समिति को उन यहूदियों को– जो विशेषज्ञ हैं या किसी कार्य में विशेष निपुण हैं–तथा उन यहूदियों को जो भारतीय मानदंडों को मानकर यहां रहने को तैयार हों.... 'नौकरियां देने में कोई आपत्ति नहीं। यहूदियों की सहायता करने की दृष्टि से यह प्रस्ताव नहीं रखा गया था (जबकि ऐसी सहायता–जहां तक संभव हो–दी जानी चाहिए) बल्कि अपने देश को सही कीमत पर वैज्ञानिक व औद्योगिक प्रशिक्षण प्राप्त लोग उपलब्ध कराना था।

वियना में नाजियों का आधिपत्य स्थापित होने के उपरांत कई देशों ने वहां अपने विशेष आयोग भेजे, ताकि वहां से अच्छे व्यक्तियों को चुनकर लाया जा सके। तुर्की ने ऐसे विशेषज्ञों से बहुत लाभ उठाया। मुझे भी यही लगा कि टेक्नीशियनों वे विशेषज्ञों के चुनाव का यह सही मौका है। कम वेतन पर उनके यहां आ जाने से हम अन्य लोगों के वेतन भी कर सकते थे। वे एक अवधि–विशेष के लिए यहा आएं, न कि स्थाई तौर पर रहने के लिए। फिर कुछ गिने–चुने लोग ही आते: इससे निश्चित लाभ तो हमें होता ही–साथ ही, वे हमारे राजनीतिक दृष्टिकोण व मानदंड को भी स्वीकारते।

कांग्रेस के अध्यक्षीय चुनाव के पश्चात दिल्ली में मेरे भाषण की तुमने चर्चा की है। मुझे खेद है कि जिस रिपोर्ट की चर्चा तुमने की है, उसे मैंने नहीं देखा–हालांकि कुछ लोगों ने मुझे बताया था। वास्तविकता यह है कि मैंने तुम्हारे अध्यक्षीय चुनाव के विषय में कुछ नहीं कहा। मैं दिल्ली और पंजाब कांग्रेस की समस्याओं और झगड़ों का जिक्र कर रहा था। मैंने कहा था कि पद की लालसा की वजह से प्रचार हो रहा है, इसलिए मैंने उसकी भर्त्सना की थी। संभव है; पत्रकार के मस्तिष्क में तुम्हारा चुनाव रहा हो–जो कुछ मैंने कहा, उसे उसने तोड़–मरोड़ कर पेश किया हो। जो लोग बैठक में उपस्थित थे,उनसे मैंने पूछा तथा उन्होंने उससे अपनी सहमति व्यक्त की, जो कुछ मैंने कहा था।

तुम्हारा यह कहना बिल्कुल ठीक है कि तुम्हारी अपेक्षा डॉ. पट्टाभि का प्रचार बहुत ज्यादा हुआ। चुनाव के लिए प्रचार में मैं कोई बुराई नहीं देखता। मैं यह समझ नहीं पा रही कि तुम्हारे इस कथन का आशय क्या है कि डॉ. पट्टाभि के लिए मत प्राप्त करने में कांग्रेस मंत्रालयों की मशीनरी का उपयोग किया गया। मैं नहीं जानता इस उद्‌देश्य के लिए क्या मशीनरी है, यू. पी. में तो मैंने इसे कार्यरत नहीं देखा– तुम्हारा प्रचार तो अवश्य हुआ। मैं नही जानता कि हमारे मंत्रियों ने कैसे मतदान किया, किंतु मैं यह सोचने पर विवश हूं कि आधे से अधिक लोगों ने डॉ. पट्टाभि को अपना मत नहीं दिया। शायद इससे भी कम लोगों ने दिया हो। एक मंत्री ने मतदान से इंकार किया। एक ने खुले–आम तुम्हारा प्रचार किया और सामान्य राय यही थी कि वे तुम्हारे पक्ष में काफी मत प्राप्त करने में सफल भी हुए।

लोगों के मध्य तुम्हें नीचा दिखाने का तुम्हारा आरोप बिल्कुल गलत है। मैंने दिल्ली में या कहीं भी ऐसा कुछ नहीं किया।

अब मैं अपने उस बयान पर आता हूं, जो मैंने कार्यकारिणी के 12 सदस्यों के त्यागपत्र देने पर दिया था। दो दिन तक तर्क–वितर्क होता रहा। तब कहीं जाकर मैंने यह कदम उठाया, जबकि कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों का रूख अधिक आक्रामक था। बैठक से पूर्व मैंने इसे रोकने की भी कोशिश की थी। दुबारा भी मैंने ऐसा ही प्रयास

किया। किंतु कई बातों ने इसका पहले से अधिक कठिन बना दिया। तुम जानते हो कि तुम्हारे अध्यक्षीय बयान से सदस्यों पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति मैं कितना नाराज था। मैंने बार–बार तुम्हें समझाया था। जब तुम गांधीजी से मिलने जा रहे थे, तब भी मैंने विशेष रूप से तुम्हें बताया था कि राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने से पहले इस बा को स्पष्ट करना अति आवश्यक है। जयप्रकाश भी मेरी बात से सहमत थे। दो व्यक्तियों के मध्य शक और अविश्वास की दीवार होने पर रानीतिक परिचर्चा का कोई लाभ नहीं। तुमने अपने बयान में जो कहा, वह बिल्कुल अनुचित था। कांग्रेस–अध्यक्ष जैसे जिम्मेदार पद पर बैठने वाले व्यक्ति के लिए उचित नहीं है कि वह ऐसे बयान दे। सब लोग उसे जानते हैं, अतः उसकी किसी भी बात के प्रति वचनबद्ध हो जाते हैं। तुमने लोगों के नाम नहीं लिए यह सच है– किंतु तुम्हारे बयान को पढ़ने वालों ने यह निष्कर्ष निकाला कि उसमें कार्यकारिणी के सदस्यों की ओर संके है। इससे बड़ा अपमान एक व्यक्ति का और क्या हो सकता है कि वह जिस कार्य के लिए प्रतिबद्ध है, कहा जाए कि उससे ही भटक गया है तथा फेडरेशन के अंतर्गत मंत्रालयों का वितरण आपस में चुपचाप कर रहा है। वह बयान अद्भूत था, जिससे कई लोगों को कष्ट हुआ।

इस प्रकार के बयान से तुम्हारे ओर गांधीजी के बीच सहयोग में अड़चन पैदा हुई हैं। मैं उत्सुक था कि आप दोनों के मध्य सहयोग अवश्य होना चाहिए, वर्ना बहुत बड़ी क्षति होगी। इसीलिए मैंने तुम्हें विवश करने का प्रयास किया था कि यह रूकावट दूर होनी चाहिए, इसलिए तुम महात्माजी से बात करो। मैंने सोचा था कि तुम वह बात मान गए हों, लेकिन बाद में जयप्रकाश और गांधीजी से यह जानकर मैं बहुत हैरान हुआ कि तुमने इस विषय में कोई चर्चा तक नहीं की। मैं स्वीकारता हूं कि इस बात ने मुझे बहुत कष्ट पहूंचाया । इससे मुझे यह अनुभव भी हुआ कि तुम्हारे साथ कार्य करना कठिन है।

गांधीजी ने मुझे बताया कि तुम्हारे उनसे मिलने के बाद उन्हें आभास हुआ कि तुम उनका सहयोग पाने को उत्सुक नहीं हो–यद्यपि तुमने सरसरी तौर पर उनके सहयोग की चर्चा की थी। ऐसा लग रहा था कि तुम उन लोगों को मिलाकर कार्यकारिणी का गठन करने को उत्सुक थे जिनके विषय मे तुमने अपना मन पक्का कर लिया था (शायद उन्हें आश्वस्त भी किया हो) तुम ऐसा करने में पूर्णतया सक्षम थे, किंतु इससे स्पष्ट था कि तुम गांधीजी व उनके गुट के सहयोग की अपेक्षा कुछ और चाहते थे।

पंजाब, दिल्ली और आंध्र में नेल्लोर के चुनावों में तुम्हारें कार्य से मुझे आश्चर्य हुआ– कार्य से उतना नहीं; बल्कि जिस प्रकार तुमने उसे किया, उससे। तुमनै अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय को सूचित किए बिना ओर आंध्र में प्रादेशिक कमेटी

को बताए बिना कदम उठाए। दिल्ली में तुमने प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी को अग्रिम रूप में सूचित किए बिना कार्य किया। मेरे विचार से तुम्हारा दिल्ली का निर्णय ठीक नहीं था। किंतु वह उतना महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं है। मुझे लगा कि तुम व्यक्तियों व गुटों से प्रभावित होकर उस सामान्य कार्य–प्रणाली का उल्लंघन कर रहे हो, जो सामान्यतः कार्यालय द्वारा अपनाई जानी चाहिए। यह प्रणाली खतरों से भरपूर है।

तुमने कहा कि उच्चधिकारियों द्वारा हस्तक्षेप के क्षेत्र में कोई भी अध्यक्ष आपका मुकाबला नहीं कर सकता। मैं स्वीकार करत हूं कि मैं हस्तक्षेप करने वाला व्यक्ति हूं। किंतु जहां तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यो का प्रश्न हे, मुझे याद नहीं कि कभी मैंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय के कार्यों में दखल दिया हो– हालांकि उसे प्रभावित मैंने कई बार किया। मेरी नीति थी (इस संबंध में एक ज्ञापन भी जारी किया गया था) कि जब तक बहुत आवश्यक न हो या दूसरा मार्ग न रह जाए, तब तक प्रांतीय मुद्दों पर और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

जब विभिन्न कारणों से मैं अत्यधिक चिंतित था, तभी गांधीजी व वल्लभाई के नाम तुम्हारा तार मिला। उसका यही आशय निकाला गया कि तुम कार्यकारिणी की बैठक में हमसे मिलना नहीं चाहते, यहां तक कि रोमर्राका कार्य भी निपटाना नही चाहते। जैसा कि तुमने कहा–तुम्हारी इच्छा ऐसी नहीं थी, किंतु तार का तो यही आशय था। यह संभव था कि तुमसे और पूछताछ की जाती कि तुम्हारा मतलब क्या है– किंतु ऐसा करन निरर्थक था; क्योंकि ऐसा करने से तुम पर दबाव पडता कि तुम वह काम करो, जो तुम करना नहीं चाहते थे।

इन सबसे यही स्पष्ट होता है कि तुम अपनी पसंद के सहयोगियों के साथ कार्य करना चाहते हो और कार्यकारिणी के पुराने सदस्य बाधक हैं और तुम उन्हें नहीं चाहते हो, इसलिए उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। यदि वे ऐसा न करते तो तुम्हारे साथ अन्याय होता । देश व अपने को वे लोग धोखा देते तथा यह लोकतांत्रिक पद्धति के भी विरूद्ध होता । मैं समझ नहीं पा रहा कि वे कैसे अपने पदों पर बने रहते और उनके त्यागपत्रों से बाधा किस प्रकार उत्पन्न हो गई । त्यागपत्र न देने से कठिनाई खड़ी हो जाती–उससे तुम्हारे उस कार्य में बाध पैदा होती, जो तुम सोच रहे थे कि यह उचित है।

तुमने ठीक कहा है कि मैंने मूर्खतापूर्ण रवैया अपनाया। मैंने त्यागपत्र नहीं दिया, लेकिन ऐसा महसूस कराया, जैसे कि दे दिया हो। इसका कारण यह कि मैं अपने सहयोगियों के रूख से सहमत नहीं ाा। यह मेरा दृढ़ विश्वास था कि इन परिस्थितियों में मैं तुम्हें सहयोग नहीं दे सकता था, किंतु दूसरों के साथ भी संबंध तोड़ने पर उतारू

था। वास्तव में दूसरी बात अधिक उचित प्रतीी हुई, क्योंकि उससे अनावश्यक रूप में खिंचे चले आ रहे अध्याय का अंत संभव था। यदि तुम 'नेशनल हेरूल्ड' में मैंने जो लेख–श्रृंखला लिखी, उसके प्रारंभिक लेख पढ़ो, तो शायद तुम यह जान पाओ कि मेरा दिमाग तब क्या सोच रहा था।

22 फरवरी के मेरे बयान में त्यागपत्र के जिक्र का प्रश्न ही नहीं था। मेरा वह बयान व्यक्तिगत बयान था। उसे अन्यथा नहीं लिया जाना चाहिए था। मुझे विवश किया गया कि मैं भी अन्य लोगों के साथ त्यागपत्र दे दूं। मैंने मना किया था, मैंने तो उनका त्यागपत्र तब तक देखा भी नहीं था जब तक कि वह तुम्हारे पास पहुंच नहीं गया।

क्यां मैं थोड़ा स्पष्ट करूं कि पिछले दो माह से मेरे मन को किन बातों ने परेशान कर रखा है? मैं दो गांधीजी से संबंस–विच्छेद होता और मैं नहीं चाहता था कि ऐसा हो (ऐसा होना क्या आवश्यक था?–उसकी बात करना मैं यहां आवश्यक नहीं समझता। मुझे लग रहा था कि ऐसा होगा)। फिर, इससे वामपंथियों को भी धक्का पहुंचता। वामपंथ इतना शक्तिशाली नहीं था कि वह इस बोझ को अपने कंधों पर उठा सकता। फिर, जब कांग्रेस में वास्तविक प्रतिद्वंद्विता प्रारंभ होती, तो वह हार जाता और उसके प्रति प्रतिक्रिया भी होती। मुझे आशा थी कि डॉ. पट्टाभि की तुलना में तुम चुनाव जीत जाओगे। किंतु यह आशंका थी कि क्या तुम गांधीवादी के साथ इस स्पष्ट प्रतिस्पर्द्धा में कांग्रेस को अपने साथ रख पाओगे? यदि किसी कारणवश तुम कांग्रेस में बहुमत पा भी लोगे तो भी गांधीजी के बिना देश का पूर्ण समर्थन तुम्हें प्राप्त नहीं हो पाएगा। तथा कार्य करना कठिन हो जाएगा– साथ ही, तुम्हें संघर्ष करने में भी कठिनाई हो जाएगी। देश में पहले से ही अवरोध पैदा करने की प्रवृत्तियां पनप रही थीं और उन्हें नियंत्रित करने की अपेक्षा हम लोग उनमें इजाफा कर रहे थे। इसका अर्थ था कि हम अपने राष्ट्रीय संघर्ष को कमजोर कर रहे थे, जबकि आवश्यकता उसे मजबूत करने की थी।

इन दो कारणों से मैं तुम्हारे दुबारा चुनाव के विरूद्ध था। बंबई के कुछ मित्रों ने तुम्हें जो कुछ बताया, वह ठीक नहीं हैं। मैंने जो कहा था, वह यह था कि यदि तुम वास्तव में वामपंथी सिंद्धातों और नीतियों के प्रति वचनबद्ध हो; तो तुम्हारे चुनाव लडने का कुछ अर्थ है– क्योंकि तब चुनाव में विचारों और नीतियों की शिक्षा मिलेगी। किंतु व्यक्तिगत आधार पर इस चुनाव से कोई हानि या लाभ नहीं है। उपर्युक्त बातों के मद्देनजर तुम्हारा चुनाव लड़ना मुझे उचित नहीं लगा।

मेरी 26 जनवरी और 22 फरवरी की टिप्पणियों में अंतर है; किंतु उनमें दृष्टिकोण कें अतंर की झलक नहीं है। पहली टिप्पणी मैंने तुम्हारे चुनाव लड़ने से पूर्व

की थी। मैं, जहां तक संभव हो, पक्ष लेने से बच रहा था। मुझसे डॉ. पट्टाभि केलिए अपील करने को कहा गया था। मैं उस पर राजी नहीं हुआ था। इसलिए मेरे बयान को जान–बुझकर तोड़ा–मरोड़ा गया। बाद में कुछ बातें और मुझे पता चलीं। मैंने तुम्हारा चुनावी बयान देखा। और भी बहुत–सी घटनाएं घटीं, जिनका जिक्र मैंने ऊपर किया है। मुझे पता चला कि तुम बहुत–से पुराने सदस्यों के निकट संपर्क में हो, जो तुम पर बहुत–सा प्रभाव डाला रहे हैं। वे लोग व्यक्तिगत रूप में तो ठीक थें, किंतु मेरे विचार से वे वामपंथी विचारधारा के नहीं थे। इसीलिए मैंने उन्हें राजनीति की भाषा में अवसरवादी कहा है। किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र के लिए खतरों का सामना करना अच्छी बात है, किंतु राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में इस शब्द का निश्चित अर्थ है और किसी भी प्रकार वह संबद्ध व्यक्ति के लिए सम्मानजनक नहीं हो सकता। मैं इस अवसरवादिता को किसी भी रूप में पसंद नहीं करता और अपे उद्देश्यो की प्राप्ति में इसे हानिकारक मानता हूं। व्यर्थ के वाममार्गी नारे–जिनका वाममार्गी सिद्धांतों व उद्देश्यों से कोई मेल नहीं है–हाल ही में यूरोप में देखने में आए है। इससे फासीवाद का विकास हुआ और अधिकांश लोगों से दूरी भी कायम हो गई । ऐसी ही स्थिति भारत में भी हो सकती है। यह विचार मेरे मन–मस्तिष्क पर हावी था, इसलिए मैं चिंतित था–इस तथ्य को जानकर तो और भी ज्यादा कि अंतरर्राष्ट्रीय मुद्दों में तुम्हारी और मेरी राय अलग–अलग है। तुम नाजी जर्मनी व फासिस्ट इटली के विरोध के समर्थक नहीं हो, यह जानकर मुझे दु:ख हुआ। पूरी स्थिति को देखते हुए मैं वह दिशा नहीं खोज पाया, जिस ओर तुम हमें ले जाना चाहते हों।

मैं तुम्हारी दिशा से भली–भांति परिचित तो नहीं–हालांकि सामान्य संकेत से मैं पेरशान अवश्य हुआ हूं– इसलिए फरवरी के प्रांरभ में मैंने तुम्हें पत्र लिखा था और कहा था कि सब कुछ स्पष्ट में कहो। तुम्हारे पास तब वक्त नहीं था और बाद में तुम बीमार पड़ गए, लिहाजा मेरी परेशानियां बनी रहीं और वे सब मेरे मन को उलझाती रहीं। इन्हीं की झलक तुम्हें मेरे फरवरी के बयान में और बाद में 'नेशनल हेराल्ड' में लिखे लेख में मिली। विषम तत्वों के मेल से कार्यकारिणी का गठन करने की संभावना कोई स्पयट दृष्टिकोण नहीं था, किंतु उसका विरोध किया जाना भी तर्कसंगत नहीं था। मैं नहीं जानता कि इसमें मैं कैसे शामिल हो सकता था। पहली कार्यकारिणी से भी मुझे काफी परेशानियां थीं, तो भी कई मतभेदों के बावजूद हम एक–दूसरे को भली–भांति समझते थे और कई वर्षों तक मिल–जुलकर कार्य कर सके। ऐसी स्थिति में सदस्य बने रहने से मैं सहमत नहीं था–लघु कार्यकारिणी से भी मैं उन कुछ लोगों के बीच संबद्ध नहीं होना चाहता था, जो आपसी समझ से परे थे।

एक निजी पक्ष भी मैं स्पष्ट रूप से सामने रखना चाहूंगा। मुझे यह लग रहा

था कि तुम पुनर्चुनाव के लिए अत्यधिक उत्सुक थे। राजनीतिक दृष्टि से इसमें कोई बुराई भी नहीं थी--तुम अपना चुनाव पुनः कराने के इच्छुक हो भी सकते थे-- किंतु मुझे निराशा इसलिए हुई, क्योंकि मैं तुम्हें इन सब बातों से ऊपर उठ चुका व्यक्ति मानता था। मुझे लगता था कि यदि तुम इसके उलट कार्य करते, तो नीतियों और गुटों को अधिक प्रभावित कर पाते।

वल्लभभाई ने तुम्हारे बारे में जो कहा, उसका जिक्र करते हुए तुमने संकेत किया है कि मैंने तुम्हारे विषय में एक शब्द भी नहीं कहा। जहां तक चुनाव के समय दिए गए बयानों का प्रश्न हैं, उनमें से एक भी बयान मुझे पसंद नहीं है; फिर भी मेरी याददाश्त के मुताबिक मुझे काई ऐसा बयान याद नहीं, जिसमें मेरे हस्तक्षेप की आवश्यकता हो। वल्लभभाई का यह वाक्य कि तुम्हारा चुनाव लड़ना देश के लिए हितकर नहीं, वस्तुतः निजी रूप से तुम्हारे भाई को भेजे गए टेलीग्राम में प्रयुक्त हुआ था। मेरे विचार से एक व्यक्ति पत्र या तार में जो कहता है। और खुले--आम जो कहता है, उसका अर्थ बदल जाता है। इस तथ्य का यह संदेश तुम्हारे भाई को भेजा गया, महत्वपूर्ण है। इस टिप्पणी का अभिप्राय उनको अपमानित करना नहीं था। यदि वल्लभजी की मान्यता थी कि गांधीजी के नेतृत्व में भारत की भलाई है और तुम्हारे चुने जाने से उनका नेतृत्व मिलने में कठिनाई पैदा होती, तो वे एसो सोचने और कहने के लिए वैसे ही पूर्ण स्वतंत्र थे; जैसे हम गांधीजी का कितना ही सम्मान क्यों न करें, किंतु इस निर्णय पर पहुंच सकते हैं कि उनके नेतृत्व से देश को खतरा हो सकता है और हानि पहुंच सकती है।

मैंने तुम्हें लिखा था कि तुम्हारे पुनः चुने जाने से कुछ भलाई और कुछ बुराई हुई है। मेरी अब भी वही राय है--हालांकि लाभा की अपेक्षा हानि अधिक हुई है, क्योंकि इससे हमारे उच्च पदों पर बैठे लोगों में अवरोध पैदा हुआ है। भलाई इस अर्थ में हुई कि इसने पुराने नेताओं की योग्यता को हिलाकर रख दिया। इसमें जरा भी संदेह नहीं कि तुम्हें मिलने वाले मतों ने उनकी अयोग्यता के विरूद्ध मत दिया है। यह उनके उन तरीकों का भी विरोध है, जिन्हें उन्होंने अपनाया। मैंने बार--बार गांधीजी तथा अन्य लोगों से इस विषय में कहा था, किंतु उन्होंने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उस विरोध में कुछ बात तो थी, जिसने अध्यक्षीय चुनाव में अपना रूप स्पष्ट किया।

तुमने मुझे याद दिलाया है कि एक ओर मैं शीर्ष पद से तुम्हारे हस्तक्षेप का विरोध करता हूं, तो दूसरी ओर 4 फरवरी के पत्र में तुम्हें लिखा है कि तुम एक अकर्मण्य और शांत प्रकृति के अध्यक्ष हो। यह सत्य है--जिस हस्तक्षेप की मैंने चर्चा की है, वह तुम्हारे पुनः चुनाव से ठीक पहले और बाद का है। उससे पहले के कार्यकाल से उसका कोई संबंध नहीं है। जब मैं तुम्हारी रूख की ओर है। मुझे उम्मीद थी कि तुम

कार्यकारिणी को अपना नेतृत्व प्रदान करोगे—हालांकि मैं विभाजन के पक्ष में बिल्कुल नहीं था और न मैं प्रांतीय मामलों में अध्यक्ष के हस्तक्षेप को पसंद की करता हूं।

तुमने अपनी अनुपस्थिति में कार्यकारिणी की एक ऐसी बैठक की चर्चा की है, जिसमें उन्होंने तुम्हारे पीछे से डॉ. पट्टाभि को अध्यक्ष पद के लिए खड़ा करने का निर्णय लिया। मुझे लगता है कि इस विषय में वल्लभभाई के बयान से कुछ गलतफहमियां उठ खड़ी हुईं। मुझे प्रसन्नता है कि तुमन मुझे इसे स्पष्ट करने का मौका दिया है। जहां तक मुझे मालूम है, ऐसी कोई बैठक नहीं हुई। बारदोली में हुआ यह था कि मैंने और गांधीजी ने मौलाना आजाद पर जोर डाला था कि वे अध्यक्ष पद के लिए चुनाव में खड़े हो और वे मान भी गए थे— किंतु चुनाव लड़ने में हिचकिचा रहे थे। जिस दिन मै। बारदोली से रवाना होने वाला था (जिस दिन तुम गए थे), तब मैं गांधीजी व अन्य लोगों को अलविदा कहने गयां।

हममें से कुछ लोग गांधीजी की कुटिया के बरामदे में खड़े थे। शेष लोग कौन—कौन थे, भूल गया। पर मौलाना आजाद और वल्लभभाई का मुझे ध्यान है— मौलाना ने पुनः कहा कि वे इस जिम्मेदारी को उठाने में झिझक रहे हैं। तब वल्लभभाई ने कहा था कि यदि मौलाना मना कर देते हैं, तो हम डॉ. पट्टाभि को चुनाव लड़ने के लिए कह सकते हैं। मुझे डॉ. पट्टाभि का नाम सुझाया जाना उचित नहीं लगा, अतः इसका विरोध किए बिना मैंने पुनः इस बात पर जोर दिया कि मौलाना को चुनाव लड़ने के लिए वहां जाना चाहिए। उसके बाद मैं बारदोली से रवाना हो गया। इलाहाबाद पहुंचने पर मुझे एक तार मिला कि मौलाना मान गए हैं। वहां से मैं सीधे अल्मोड़ा चला गया और अध्यक्ष पद के चुनाव तक वहीं रहा।

प्रस्ताव से जुड़े मुद्दों के विषय में सच्चाई यह है। बातों को स्पष्ट कर लिया जाए—तुमसे अनेक दफे कहने के बाद मुझे यह महसूस होने लगा था कि इसके बिना गांधीजी का व तुम्हारा मिलकर कार्य करना असंभव है। इस विषय में मेरी और अधिक रूचि नहीं थी। इस बारे में गांधीजी, राजेंद्र बाबू या सरदार पटेल क्या सोचते हैं; वे स्वयं ही बात सकते हैं। जो आभास उन्होंने मुझे कराया, वह यह था कि वे इसे अत्यधिक महत्व देते हैं। त्रिपुरी पहुंचने पर भी मुझे यह बताया गया। मेरी निश्चित राय यही थी कि राजेंद्र बाबू द्वारा या अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा यह मुद्दा तुम्हारे समक्ष रखा जाए और इस विषय में कोई प्रस्ताव पारित न किया जाए। लेकिन अन्य लोग इससे सहमत नहीं थे। सुझाव यह मिला कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष पेश करने के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया जाए। कांग्रेस का सामना करने से बचने के लिए ऐसा विचार नहीं था, बल्कि यह तो बैठक से पूर्व मुद्दे को स्पष्ट कर लेने के लिए था। हमेशा की भांति मुझे ही प्रारूप तैयार करने को कहा गया। मैंने कहा कि जहां तक मुझसे संभव

होगा मैं आपका दृष्टिकोण प्रकट करने की कोशिश करूंगा—हांलाकि मैं इससे कतई सहमत नहीं हूं। मैंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लिए एक छोटा—सा प्रस्ताव तैयार कर दिया, जिसमें पुरानी कार्यकारिणी में और गांधीजी के नेतृत्व तथा नीतियों में विश्वास व्यक्त किया गया था और यह कहा गया था नीतियों में बिखराव नहीं आना चाहिए। विवादों और गांधीजी की इच्छानुसार कार्यकारिणी के गठन की चर्चा तक नहीं थी। वह प्रस्ताव पारित नहीं हुआ और बाद में राजेंद्र बाबू द्वारा संशाधित प्रस्ताव शायद दूसरों के विचार—विमर्श के पश्चात पेश किया गया। उस समय तक गोंविदवल्लभ पंत नहीं पहुंचे थे। मुझे यह प्रस्ताव पसंद नही आया—अतः मैंने वहां यह कहा भी। मैंने कहा कि मैं हालांकि यह नहीं मानता कि दोषारोपण वाला मुद्दा आपत्तिजनक है, लेकिन यहा यह बात मुझे अनावश्यक लग रही है, क्योंकि इससे अप्रसन्नता उत्पन्न होगी।......विशेष रूप से तब, जब तुम अस्वस्थ भी हो । मुझे बताया गया है कि इस प्रस्ताव में इन मुद्दों से संबंधित बहुत—सी महत्वपूर्ण बातें हैं; जिन्हें स्पष्ट किए बिना उनके सम्मान को धक्का पहुंचा है, जिन पर दोष लगाया गया है—साथ ही, यह भी कि उनके लिए ऐसा करना आवश्यक है और गांधीजी की नीतियों के मुताबिक भी यह बात उचित है। फिर उन्होंने यह भी बताया कि इसका बहुत हल्का सा जिक्र है और इसे व्यक्तिगत भी नहीं बनाया गया है। इसके बिना वे कुछ भी करने में असमर्थ हैं।

उसके बाद मैं कुछ नहीं कह सकता था। मैंने उन्हें बताया कि कुछ मामलों में यह प्रस्ताव दुर्भाग्यपूर्ण है। किंतु कुछ लोगों के सम्मान का प्रश्न था, इसलिए इससे मेरा अधिक वास्ता नही था। मैं इसकी बाबत बहस में नहीं पडूंगा।

इसके बाद क्या हुआ, मैं कुछ नहीं जानता। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में मुझे पता लगा कि गोविंदवल्लभ पंत वह प्रस्ताव पेश कर रहे हैं। तुम भी वहां उपस्थित थे। बाद में जब सब्जेक्ट्स कमेटी के सामने यह बात रखी गई, तो मैंने प्रस्ताव पेश करने वाले कुछ लोगों से बात की कि इसमें अभी भी कुछ परिवर्तन किए जा सकते हैं। मैंने यह बताया भी कि मूल प्रस्ताव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सामने रखने के लिए था, ताकि इस विवाद को समाप्त किया जा सके। अब क्योंकि यह कांग्रेस के समक्ष जा रहा है, तो इसे दूसरे रूप में पेश किया जाना चाहिए। पुनः मुझे बताया गया कि यह सम्मान का प्रश्न है और जब तक यह स्पष्ट नहीं हो जाता, तब तक सहयोग की बात सोची भी कैसे जा सकती है? तुम्हें याद होगा कि कांग्रेस से पूर्व उन्होंने तुम्हें बता दिया था कि वे तुम्हें सहयोग देने में असमर्थ हैं। वे इस प्रस्ताव को इस रूप में देख रहे थे कि शायद यह सहयोग प्राप्त करने का एक तरीका है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं था।

खुला अधिवेशन संपन्न होने से पूर्व जब तुम बीमार थे, तब मैंने प्रस्ताव को

संशोंधित करे का एक और अंतिम प्रयास किया था। मैं असफल रहा; क्योंकि श्री अणे के प्रस्ताव को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के समक्ष रखने की बात मान ली गई। श्री अणे का विचार था और उन्होनें हमें यह बताया भी कि उनके प्रस्ताव को बंगाल के बहुत से मित्रों ने पास कर दिया है। हमें तो यहां तक अनुभव हो रहा था (संभव है, यह गलत हो) कि तुमने भी उनके प्रस्ताव को पास कर दिया था। बाद में क्या हुआ, तुम जानते ही हो।

अगले दिन खुले अधिवेशन में सब्जेक्ट्स कमेटी के पंडाल में जब गोविंदवल्लभ पंत प्रस्ताव पेश कर रहे थे, तब सुरेश मजूमदार मेरे पास आए और उन्होंने सुझाव दिया कि प्रस्ताव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सम्मुख पेश किया जााना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने अणे के प्रस्ताव को पुनः उठाया। उन्होंने कहा कि एक रात पहले इस बारे में गलतफहमी भी पैदा हो गई थी और अब इस प्रस्ताव को शीघ्र ही स्वीकृति मिल जाएगी। मैंने उन्हें इस मसले में अपनी असमर्थता बताई, क्योंकि पंत समय उस प्रस्ताव को पेश करने की तैयारी में थे। मैंने कई बार हर संभव प्रयास करके देख लिया था कि उन्हें संबंधित गुटों से संपर्क करना चाहिए। बाद में उन्होंने क्या किया, इसकी जानकारी मुझे नहीं है।

त्रिपुरी की घटनाओं के परिदृश्य में क्या हुआ और प्रतिनिधियों के कैप में क्या घटा–इसकी जानकारी मेरी अपेक्षा तुम्हें अधिक है। विशेष मौकों के अतिरिक्त मैं बहुत कम समय के लिए अपनी कुटिया से बाहर निकला और मुझसे मिलने भी बहुत कम लोग आए। मैं मिस्त्र के प्रतिनिधियों के साथ व्यस्त था।

तुमने मेरे 'मुवक्किलों' की चर्चा की है। मुझे भय है कि मेरे ये 'मुवक्किल' मेरी वकालत के बावजूद बहुत प्रसन्न नहीं हुए। मैं उनमें अप्रिय हो गया। बहुत बड़ी 'बहादुरी' का काम यह हुआ कि मैंने सब संबद्ध लोगों को अप्रसन्न कर दिया।

दोषारोपण वाला यह प्रस्ताव असंवैधानिक था या अनुचित, इसका निर्णय तुम्हें करना है। इस विषय में मेरी राय का अधिक महत्व नहीं है। मैं तो केवल कांग्रेस का कार्य चलता हुआ देखना चाहता हूं और आज हम जिस दुविधा में घिरे हैं, उसे हटा हुआ देखना चाहता हूं। यह जानकर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारा विचार है कि मैंने तुम्हारे विरोध में आंदोलन छेड़ा। गांधीजी से वार्तालाप के पश्चात मैं सक्रिय हुआ और बहुत देर तक इस स्थिति पर विचार करता रहा यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से इतना प्रभावित हुआ, जितना कि मुझे नहीं होना चाहिए। यूरोप में स्थिति बहुत बिगड़ चुकी है। शायद युद्ध भी छिड़ सकता है। मेरा विचार है कि हमें घटनाओं की प्रतीक्षा शांतिपूर्वक नहीं करनी चाहिए। शरत ने गांधीजी को जो तार भेजा, उससे स्पष्ट है कि वह उनसे मिलने नहीं आ रहा। अतः उस समय कुछ करना संम्भव नहीं, जब घटनएं

तेजी से घट रही हों। फिर मैंने तार भेजने का निर्णय किया। बाद में मैंने वह गांधीजी तथा एक–दो अन्य लोगों को भी दिखाया। वह किसी पत्रकार को मैंने दिया या दिखाया नहीं। वास्तविकता तो यह है कि उस समय महात्माजी व एक–दो अन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त मैंने किसी से उसकी चर्चा तक नही की। अब तक मैंने उसे किसी को नहीं दिखाया। संभव है कि किसी को किसी अन्य से इसकी उड़ती–उड़ती खबर मिली हो और उसने प्रेस को दे दी हो।

तुम सोचते हो कि कार्यकारिणी के 12 सदस्यों का त्रिपुरी अधिवेशन से पूर्व त्यागपत्र दे देना तथा बाद में कांग्रेस की स्थिति का तुलना करना क्या उचित नहीं हैं? उनके त्यागपत्र देने से कोई अवरोध पैदा नहीं होना चाहिए–बल्कि यदि वे त्यागपत्र न देते और कार्य करते रहने पर बल देते, तो अवरोध की संभावना अधिक थी। प्रतिवाद–स्वरूप त्यागपत दे देने के अतिरिक्त, व्यक्तिगत रूप में तथा लोकहित में, उनके पास अन्य रास्ताा नहीं था।

जब मैंने दिल्ली से तुम्हें तार भेजा था, तो मैं अच्छी तरह जानता था कि तुम वहां नहीं आ पाओगे। मैं सोचता था कि तुम्हं सुझाव दूं कि गांधीजी को तुमसे मिलने धनबाद जाना चाहिए। मेरा विचार है कि यदि तुम आमंत्रित करते, तो वे अवश्य वहां पहुंचते। स्वाभाविक था कि वे बिना बुलाए वहां जाने में झिझक रहे थे। त्रिपुरी प्रस्ताव सही था या गलत–कदम तुम्हं ही उठाना था, जब तक कि वे यह नहीं जानते की तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी, वे कोई कदम नहीं उठा सकते थे। शायद तुम्हारा विचार था कि वे धनबाद जाने में असमर्थ थे। जब तुम्हारे सचिव ने मुझे यहां फोन किया, तब गांधीजी दिल्ली रवाना होने के लिए स्टेशन जाने की तैयारी में थे। यदि निकट भविष्य में मुलाकात संभव नहीं, तो तुम दोनों को पत्राचार द्वारा स्थिति स्पष्ट कर लेनी चाहिए। तुम्हारा यह कहना सरासर अन्याय है कि मैंने दिल्ली से तुम्हं जो तार भेजा, वह तुम्हें नीचा दिखाने के लिए था या तुम्हारे विरूद्ध आंदालेन छेड़ने के उद्देश्य से था।

यह पत्र बहुत लंबा हो गया है। मैंने इसे तुम्हारा पत्र पाने के बाद एक ही बैठक में लिखा है। अभी भी बहुत–से ऐसे मुद्दे हैं, जो तुमने उठाए हैं और जिनके विषय में मैं कुछ कह सकता हैं। मुझे अपनी उन कमियों पर चर्चा करने की कोई आवश्यकता नहीं, जिनका तुमने जिक्र किया है। मैं उन्हं स्वीकार करता हूं और उन पर शार्मिदा हूं। तुम्हारा यह कहना भी ठीक है कि अपने अध्यक्ष–काल में मैंने एक सचिव या क्लर्क के रूप में अधिक कार्य किया । यह मेरी पुरानी आदत है कि मैं स्वयं का क्लर्क और सचिव हूं, लेकिन इस प्रकार मैंने दूसरों का अधिकार कभी छीना नहीं। यह भी सत्य है कि मेरी वजह से कांग्रेस के प्रस्ताव बहुत लंबे और शब्दाडंबर वाले होते थे; कार्यकारिणी में भी मैं बोलता अधिक था। मैंने अपने आचरण के अनुसार कार्य नहीं

किया– यह भी मैं स्वीकार करता हूं।

मुझे तुम्हारे 'लेफ्ट' और 'राइट' शब्दों के प्रयोग पर आपत्ति है, क्योंकि तुम उनका उचित इस्तेमाल नहीं करते। सचमुच ऐसी भी तमाम चीजें हैं। 'लेफ्ट' और 'राइट' शब्द जो हैं, वे कांग्रेस व देश में भी उपस्थिति हैं। किंतु यदि इनका सही प्रयोग नहीं किया गया, तो ये भ्रांति पैदा कर सकते हैं।

मेरे विचार से मैंने ऐसा कभी नहीं कहा है कि राजकोट और जयपुर के मुद्दों ने बाकी सब बातें को आच्छादित कर लिया है। शायद मैंने कहा था कि राजकोट अर्थात गांधीजी का उपवास तथा उसके विभिन्न अर्थ कई प्रकार से प्रमुखता पा रहे हैं।

जहां तक बंबई–व्यापार संघर्ष बिल का संबंध हैं, मैं उनके पश्चात भारत पहुंचा था।तब तक नियम बन चुका था। बंबई में फायरिंग हो चुकी थी। मैं यह बात अपने बचाव–स्वरूप नहीं कह रहा, बल्कि तथ्य के रूप में बता रहा हूं।

उत्तर प्रदेश में हमने नियम बनाया था कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह प्रदेश कांग्रेस कमेटी का हो या गांव की समिति का, दो वर्ष से अधिक समय तक अध्यक्ष नही रह सकता।

तुमने विभिन्न प्रांतों से त्रिपुरी में प्रतिनिधियों को लाने में भ्रष्टाचार का जिक्र किया है। जहां तक मेरे अपने प्रदेश का सवाल है, मेरा विश्वास है कि ऐसा 'कुछ हुआ' था– हालांकि इस विषय में मै। निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता । संभव है, अन्य जगह भी ऐसा ही किया गया है। क्या मैं प्रत्येक प्रदेश में जांच का सुझझव दे सकता हूं? इससे हमारी संस्था की इज्जत में वृद्धि होगी?

पंत प्रस्ताव के विषय में तुमने मेरी राय मांगी है। मैं नहीं मानता कि वह अविश्वास–प्रस्ताव था; किंतु यह एक ऐसा प्रस्ताव था, जो तुम्हारे निर्णयों में विश्वास की मांग कर रह था। दूसरे रूप में , यह गांधीजी में विश्वास व्यक्त करने का प्रस्ताव था।

मैं समाजवादी हूं, या व्यक्तिवादी? क्या इन दोनों विशेषणें मे विरोध होना आवश्यक हैं? क्या हम लोग ऐसे संगठित व्यक्ति हैं कि हम स्वयं को एक शब्द या वाक्य में परिभाषित कर सकें? मेरे विचार से मै। स्वाभाविक रूप से तथा प्रशिक्षण के तौर पर व्यक्तिवादी हूं, जबकि बौद्धिक रूप से समाजवादी हूं– इससे कुछ भी कार्य चाहे क्यों निकाला जाएं। मेरा विश्वास है कि समाजवाद व्यक्तिवाद को दबाता नहीं; बल्कि मैं तो इस ओर आकर्षि ही इसलिए हुआ, क्योंकि यह असंख्य लोगों को आर्थिक और सांस्कृतिक गुलामी से आजाद करा सकता है। किंतु यह व्यर्थ का विषय है और इतने

लंबे पत्र के बाद इस पर चर्चा करना उचित भी नहीं। इस बात को इस रूप में समाप्त करते हैं कि मैं एक असंतुष्ट व्यक्ति हूं, जो स्वयं से और विश्व से संतुष्ट नहीं है तथा जिस संसार में वह रहता है, वह भी उसे पसंद नहीं करता।

प्रातःकाल के समय मै। राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर कुछ भी कहने का साहस नहीं कर पा रहा हूं। नियमानुसार मै। इन पर चुप भी नहीं रह सकता– जैसा तुम्हारा अनुमान है कि मैं बहुत अधिक बोलता हूं और लिखता उससे भी अधिक हूं। फिलहाल मैं इसे यही छोड़ता हूं– किंतु इतना अवश्य कहूंगा कि जब मैं जर्मनी या इटली जैसे देशों की आलोचना करता हूं, तो इसका अर्थ यह नहीं कि मैं ब्रिटिश या फ्रांसीसी उपनिवेशों को अच्छे आचरण का प्रमाणपत्र दे रहा हूं।

मैंने एक–दो दिन पहले ही तुम्हें अपने उन लेखों को श्रृंखला भिजवाई है, जो मैंने त्रिपुरी से पहले 'नेशनल हेराल्ड' में दिए। एक मिल नहीं पाया था। अब मैं अलग से पूरा सेट भेज रहा हूं। 'फ्री प्रेस जनरल' या अन्य किसी पत्र के लिए फिलहाल मैंने कोई लेख नहीं लिया है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
जवाहर
श्री सुभाषचंद्र बोस
कांग्रेस अध्यक्ष
पोस्ट ऑफिस–झीलगुड़ा
जिला–मानभूम

जवाहर लाल नेहरू के लिएं

झीलगुड़ा पोस्ट ऑफिस
जिला–मानभूमि
बिहार,

15 अप्रैल, 1939

मेरे प्रिय जवाहर,

मैं नहीं जानता कि हमारे पत्र–व्यवहार की प्रतियां गांधीजी तक आप भिजवा रहे हो या नहीं, जैसे वे अन्य लोगों को भेज रहे हैं। यदि वे आपको प्राप्त नहीं हुई, तो मैं आपको वर्तमान स्थिति से परिचित कराना चाहूंगा। उसके बाद मैं आपकी प्रतिक्रिया जानना चाहूंगा तथा आपकी सलाह भी लेना चाहूंगा कि मुझे आगे क्या करना चाहिए।

महात्माजी लगातार समजातीय कार्यकारिणी पर जोर दे रहे हैं। मैं एक नहीं,

बल्कि अनेक कारणों से ऐसा नहीं कर सकता। फिर, कांग्रेस ने मुझे यह अधिकार भी नहीं दिया है कि मैं अपना कार्यक्रम निर्धारित करके उसकी घोषणा करूं।

मैं केवल एक खास विधि से कार्यकारिणी का गठन कर सकता हूं—अर्थात पंत प्रस्ताव के अनुसार कई वैकल्पिक सुझाव देने के पश्चात अंततः हार मानकर मैंने यह कहा कि कार्यकारिणी के गठन की जिम्मेदारी उन्हें ही संभालनी चाहिए, क्योंकि मैं उनकी राय के अनुसार समजातीय कार्यकारिणी का गठन नहीं कर सकता हूं। अपने अंतिम दो पत्रों में मैंने यही प्रार्थना की है कि उन्हें यह उत्तरदायित्व स्वीकार कर लेना चाहिए।

मैं नहीं जानता कि महात्माजी स्वंय कार्यकारिणी की घोषणा करेंगे या नहीं। यदि वे ऐसा करेंगे, तो अड़चन खत्म हो जाएगी। किंतु यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो क्या होगा? ऐसी स्थिति में यह अनिर्णीत रूप में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी क्या करेगी, मैं कह नहीं सकता।

मेरा विचार था कि यदि पत्र—व्यवहार द्वारा कोई समझौता संभव नहीं हो पाता, तो हमें गांधीजी से मुलाकात करके इस ओर अंतिम प्रयास कर लेना चाहिए। किंतु राजकोट को देखते हुए गांधीजी का कदम निश्चित ही नहीं है। यह भी पक्का नहीं कि कलकत्ता में वे अखिल भारतीय कमेटी में भी उपस्थित हो पाएंगें अथवा नहीं हालांकि उन्होंने मुझे तार द्वारा सूचित किया है कि वे वहां पहुंचने का भरसक प्रयास करेंगे।

अब यदि गांधीजी कार्यकारिणी का गठन करने से इंकार कर देते हैं, तो क्या मुझे गांधीजी से मिलने का समय निकालने की दृष्टि से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को स्थगित कर देना चाहिए? क्या अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य इस स्थगन को स्वीकृति देंगे? या फिर मुझ पर विलंब का दोषारोपण करेंगें? कई लोगों का विचार है कि जब तक हम आपस में मिलकर कोई समझौता नहीं कर लेते, तब तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक नहीं होनी चाहिए। यह स्थगन तब आवश्यक हो जाएगा यदि महात्माजी 27 से पूर्व कलकत्ता नहीं पहुंच पाएंगे, जहां कार्यकारिणी की बैठक रखी गई है। अब स्थगन के विषय में आपकी क्या राय हैं?

मैं पूरा पत्र व्यवहार आप तक भिजवा दूंगा यदि गांधीजी ने वह आप तक अभी नहीं भेजा है।

एक और बात, क्या आप कुछ घंटों के लिएए यहां आ सकते हैं? तब हम बातचीत कर सकते हैं। मैं आपकी सलाह ले सकता हूं कि आगे क्या किया जाना चाहिए।

यह पत्र संक्षिप्त है और जल्दी में लिखा गया है तथा इसे मैं एक मित्र के हाथों भिजवा रहा हूं।मैं नहीं जानता कि अंतिम स्थिति स्पष्ट कर पाया हूं या नहीं। आशा करता हूं कि सफल हुआ हूं।

यदि आप यहां आने का समय निकाल पाते हैं ,तो समय बचाने के लिए आप तूफान एक्सप्रेस (8 डाउन) से आ सकते हैं, जो 4 बजकर 30 मिनट पर धनबाद पहुंचती है। फिर आप बंबई मेल से रवाना हो सकते हैं, जो धनबाद से मध्यरात्रि में रवाना होती है। जामदोबा धनबाद से 9 मील की दूरी पर स्थित है। कार आपको स्टेशन पर मिल जाएगी।

आपका स्नेहकांक्षी

सुभाष

जवाहरलाल नेहरू की ओर से

मेरे प्रिय सुभाष,

17 अप्रैल, 1939

आपक 15 अप्रैल का पत्र अभी मिला। गांधीजी और आपके मध्य पत्र–व्यवहार की प्रतियां प्यारेलाल मुझ तक भेजवा रहा है। मैं यह नहीं जानता कि सभी पत्रों की प्रतियां मुझे भेजी गईं या नहीं। किंतु प्रारंभ की कुछ मुझे अवश्य प्राप्त हुई हैं।

मैं यह स्वीकारता हूं कि इस बात से मैं बहुत निराश हुआ हूं–समझ नहीं पा रहा हूं कि क्या किया जाना चाहिए । तुम्हारे सुझावों और गांधीजी के सुझावों में कोई सामंजस्य भी नहीं देख पा रहा हूं, इसलिए कुछ भी कहने करने में असमर्थ हूं। इन परिस्थितियों में स्वयं को असहाय महसूस कर रहा हूं। यह भी सत्य है कि हममें से कोई भी अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता और इस अवरोध को समाप्त करने से अपने को अलग नहीं कर सकता। यह व्यक्तिगत मामला नहीं हैं, न ही यह संबद्ध व्यक्तियों के सम्मान का प्रश्न है; बल्कि इस संकट की घड़ी में कांग्रेस और भारत किस प्रकार कार्य कर रहें हैं, यह देखने का प्रश्न है।

तुम्हारा यह सुझाव है कि में तुमसे मिलूं। यह सुझाव अचानक मिला, इसलिए मै। आश्चर्य–चकित हूं। आगामी कुछ दिनों तक मै। कई कार्यों में व्यस्त हूं। अंतः यह समझ नहीं पा रहा कि उनका क्या करूं। किंतु तुम्हें मना भी नहीं कर सकता– विशेष रूप से तब, जबकि प्रश्न इतना गंभीर हो। मैं हर संभव प्रयास करूंगा कि तुमसे मिल सकूं। तुम्हें सूचित करूंगा कि मैं अब आ सकता हूं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

जवाहर

श्री सुभाषचंद्र बोस
कांग्रेस अध्यक्ष
झीलगुड़ा
(बिहार)

जवाहरलाल नेहरू को

झीलगुड़ा पोस्ट ऑफिस
अप्रैल 20, 1939

मेरे प्रिय जवाहर,

आज मैंने महात्माजी को दो तार भेजे हैं जिनमें एक को मैंने पत्र में पुनः लिखा भी है। यहां मैं अपने पत्र और तारों की प्रतियां भिजवा रहा हूं।

तार के संदर्भ में पत्र–व्यवहार प्रकाशित न करने के लिए मैंने आपका नाम इस्तेमाल किया है। आशा है कि आप इसका प्रतिवाद नहीं करेंगे।

गांधीजी के ज्वर के प्रति मैं चिंतित हूं। आशा है, वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। यदि ज्वर बना रहता है (ईश्वर न करे), तो हमें क्या करना होगा? इस बारे में कृपया मुझे कोई सलाह दें। मुझे चिंता इसलिए है कि अब वे काफी कमजोर हो चुके हैं। इस विषय में मुझे अवश्य लिखें। मैं कल अर्थात् 21 तारीख को कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हूं।

आपका स्नेहाकांक्षी
सुभाष बोस

बोस–टैगोर का पत्र–व्यवहार

रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से

शांति निकेतन

मेरे प्रिय सुभाष

जब मुझे आपका पत्र मिला, मैं आपको निमंत्रण–पत्र भेजने ही वाला था। मुझे बेहद प्रसन्नता हुई। कृपया मुझे सूचित करें कि आपको यहां आने में कब सुविधा होगी। मैं आपके स्वागत के लिए तैयार रहूंगा। देशवासियों के साथ मैं भी आपको शुभकामनाएं देता हूं।

आपका
रवींद्रनाथ
20.11.38

रवींद्रनाथा टैगोर को

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

वर्ष 1938 के लिए कार्यकर्ता अध्यक्ष का कलकत्ता का पता:
अध्यक्ष:
38/2 एल्गिन रोड, कलकत्ता
सुभाषचंद्र बोस
टेलीफोन : पार्क 59
कोषाध्यक्ष:
तार-सुवासबोस
जमनालाल बजाज
महासचिव :
जे. बी. कृपलानी
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन इलाहाबाद

टेलीफोन: 341, तार : कांग्रेस

वर्धा
14.12.38

मननीय महोदय,

आपके कृपा-पत्र क़ा उत्तर देने में देरी के लिए क्षमा-प्रार्थी हूं। जनवरी मध्य में शांति-निकेतन आना चाहता हूं। शीघ्र ही आपको निश्चित तिथि की सूचना दूंगा और तिथि आपकी सुविधानुसार ही निश्चत करूंगा।

आपका आज्ञाकारी,
सुभाषचंद्र बोस

रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से

शांति निकेतन

मेरे प्रिय सुभाष

जनवरी मध्य में आपके आगमन की प्रतीक्षा करूंगा। दिसंबर में यहा लोगों की बहुत भीड़-भाड़ हो जाती है। सारी छुट्टियां बहुत व्यस्तता-भरी होती हैं। यह बस जनवरी के है। जो लोग कांग्रेस को चलाते हैं, वे किसी उद्देश्य के तहत नीतियां निर्धारित करते हैं। मै। राजनिति में मंच से बहुत दूर हूं। मैं नहीं जनता उद्देश्य क्या है। इसलिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करने के अतिरिक्त मेरा अन्य अधिकार नहीं है-क्योंकि मैं इस क्षेत्र का नहीं हूं।

दूसरी बात, मैं आपके पास इसलिए आया था कि बंगाल के भविष्य का नियंत्रण आप लें– हमारी आपसी विचार–विनिमय बढ़ाने की दृष्टि से। यदि किसी को लगता है कि अध्यक्ष पद में चुनाव के साथ यह मैत्री बढ़ाए, तो मैं मानता हूं कि इससे आपको हानि पहुंचेगी। मैं बिना किसी बंधन के आपसे संबंध स्थापित करना चाहूंगा।

आज बंगाल की स्थिति दयनीय है। मैं चाहता हूं कि किसी योग्य व्यक्ति को बंगाल प्रदेश का मार्ग–दर्शन सौंप दिया जाए जिसके इर्द–गिर्द बंगाली लोग एकत्रित हों। इस एकता के बलबूते पर ही बंगाल एक बार पुनः अपनी योग्यता जाहिर कर पाएगा। इसी उद्देश्य से मैं थियेटर में आपका स्वागत करना चाहता हूं। इस प्रकार हम उस उपलब्धि की अपेक्षा अधिक सफल हो सकते हैं, जो कांग्रेस द्वारा होनी है। यह अनुभव मुझे बंगाल–विभाजन के समय हुआ। जिस तरह से बंगाल ने अपनी इच्छा उस समय जाहिर की, वैसा आज तक इतिहास में कभी नहीं हुआ। वह जागरूकता एक बार पुनः पैदा करने की आवश्कता है। उसके लिए मैं आप पर निर्भर करता हूं। अन्य सभी रास्तों की अपेक्षा मैं इस मार्ग पर चलना पसंद करूंगा। यह मेरी हार्दिक इच्छा है, जो मैं आपको बताना चाहता था।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपने यहां आने की इच्छा व्यक्ति की है।

आपका
रवींद्रनाथ टैगोर
19.1.39

बोस के लिए टैगोर का आव्हान

21 जनवरी 1939 में शांति निकेतन में आम्रकुंज स्थल पर आयोजित एक सार्वजनिक अभिनंदन समारोह में सुभाषचंद्र बोस का स्वागत करते हुए रवींद्रनाथ टैगोर का भाषण:

प्रिय सुभाषचंद्र

जो आज हम कहने जा रहे हैं, वह हमारे ऋषि–मुनि सदियों से कहते आ रहे हैं। स्वागत के जो शब्द सुन रहे हैं। वही शब्द उन्होंने आने वाले उन लोगों के लिए कहे थे–जिनका विश्व इंतजार करता है। वे शब्द कभी पुराने नहीं पड़ेंगे। आपका जो जगह–जगह स्वागत हुआ है; देशवासिंयों ने जो आपको सम्मानजनक पद सौंपा है, उस पद का अर्थ उनके वेद–वाक्यों में सन्निहित है। उनके संदेश ने आपको इस सम्मानजनक स्थान पर ला खड़ा किया है। मेरे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि इस अवसर के द्वारा आप मुझे जान पाएंगे। मेरे इस वाक्य से आप हैरान हुए होंगे कि मैं

तो आपको जानता हूं। ठीक है, किंतु वह पूर्ण सत्य नहीं है– क्योंकि मुझे जानने में देश में कई अड़चनें हैं। बंगाल मुझे आधा ही जान पाया है। अभी तक मुझे अंग्रेजीों का नौकर ही माना जाता है। बस यही मेरा परिचय बनकर रह गया है। यह जानने में विलंब हो रहा है कि मेरे देश ने मुझे किसी और उद्देश्य से आमंत्रित किया है, उसे मानने से मस्तिष्क झिझक सकता दूसरे के पूरक हैं। शब्द और अर्थ एक–दूसरे से संबंधित हैं। इस प्रकार मैंने कला की देवी के चरणों में बैठकर अर्थ खोजा है। आप एक अरसे से मुझे देख रहे हैं। आपको कुछ प्रसन्नता भी हुई होगी। समय–समय पर आपको कष्ट भी हुआ होगा। लेकिन अर्थ की चाहिए। उस अर्थ की खोज का मैं भक्त हूं, अन्यथा आप पूर्णता में मुझे समझ नहीं पाएंगे।

यदि आप अभिव्यक्ति और मूल–तत्व को मिलाकर देखें, तो आप समझ पाएंगे कि मेरे अंदर की एकता भले के लिए है। यह मेरा सौभाग्य ही है कि कभी–कभी शब्द और अर्थ की पुकार मुझे एक साथ आंदोलित करती है। युवावस्था में मैं इस पुकार को सुन सकने के कारण ही यहां तक पहुंचा हूं। उसके बाद में साधना में उतर गया, जिसका लोगों को आभास तक नहीं हुआ। किसी को उसे देखने की आवश्यकता नहीं थी, अतः उन्होंने देखा भी नहीं। वे देखने में असफल रहे, क्योंकि उन्होंने मेरे ऊपरी दर्शन किए। मैं देखने में अस्पष्ट लगता हूं। मैं मूल–तत्व का अन्वेषी हूं। उस कार्य में मेरी सफलता आप लोगों तक पहुंच चुकी है–किंतु यदि आप आकर निरीक्षण करेंगे, तो देखेंगे कि यह कार्यक्षेत्र मेरा अपना है। आप अपनी भलमनसाहत की वजह से ऐसा नहीं कर पा रहें, बल्कि आपको पूरे विश्व का अनुभव है। आपने देखा है–यूरोप में आपने देखा कि किस प्रकार खोजी लोग मूलतत्व की खोज में साधनारत हैं। आपने देखा है कि कार्य और बलिदान के जरिये किस रह उन्होंने विकास किया है। विभिन्न दृष्टियों के जरिए उन्होंने जीवन को क्या–क्या दिया है। इन सबके मध्य ही व्यक्ति की मानवता की पहचान है। वही कार्य कर सकें–तो आपको प्रसन्नता ही होगी। मैं आपको गौरव के साथ वह जागरूकता प्रदान करना चाहता हूं। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि यहां आप देश के नेता के रूप में पधारे हैं ओर देश ने आपको स्वीकृति प्रदान की है। आपको यह जानना होगा कि देश के लिए किस प्रकार की साधना यहां हो रही है: उसे आपको पहचान देनी होगी, स्वीकार करना होगा। यदि आप उसे स्वीकार कर लेते हें, तो कार्य की पूर्णता का अनुभव होगा। यहां कई कमियां भी है। मैंने काफी–कुछ सहा है। मेरा दुःख असीम है। 40 वर्षों तक मैंने बहुत कष्ट के साथ, दुःख के साथ, गरीबी में, उधार में दबकर कार्य किया है। बहुत–सी बदनामी, अपशब्द व घोर निराशा सही है। यह मेरा सौभाग्य है कि आज मैंने आपको अपने कार्यक्षेत्र में आमंत्रित किया है। किसी और कारण से नहीं, बल्कि आपको अपने से परिचित कराने के लिए है।

मैंने पूरे मन से आपको देश का नेता स्वीकार किया है। अपनी इसी भावना को मैं जनता के सम्मुख कहना चाहता हूं। आप बंगाली राष्ट्र के नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं। बाकी देश के विषय में मैं कुछ नहीं जानता। अपनी इच्छा मैं उन पर लाद नहीं सकता । मैं बंगाली हूं, बंगाल को जानता हूं। बंगालियों की आवश्यकता अत्यधिक है। इसलिए यदि मैं इस उद्देश्य के लिए आपका आव्हान करता हूं, तो आपको इसका उत्तर देना होगा। मैं आपको राष्ट्रीय–हित के लिए कलकत्ता में 3 फरवरी को आमंत्रित करता हूं। यहां आप हमारे मित्र के रूप में आए हैं। यदि हमारी परिस्थितियों को देखकर आप हमारे कष्ट दूर कर सकते हैं, तो कृपया कीजिए। मैं समय निकाल लूंगा। आप समय–समय पर यहां आते रहें। आज मैं अतिप्रसन्न हूं कि आज आपने राष्ट्रीय कर्तव्यों के बोझ से दबे होने के बावजूद हमारे साथ कुछ समय बिताना स्वीकार किया।

यहां मैंने उन लोगों का सम्मान करने की व्यवस्था की है, जिन्हें देश में तिरस्कृत किया गया। विद्यार्थी, जो बेकार शिक्षा पद्धति के शिकार बने–वे व्यक्ति, जिन्हें कई प्रकार की गुलामी सहनी पड़ी–उन्हें शांति उपलब्ध नहीं हुई, तथा सौदर्य व स्वतंत्रता से दूर रखा और दिया और कुछ नहीं गया, बस केवल पाठ याद कराए जाते रहे। मैंने यथाशक्ति उन लड़के–लड़कियों को जेल से आजाद करने का प्रयास किया है। आप उस प्रसन्नता की प्रशंसा करेंगे, क्योंकि आप स्वयं जेल में रह कर कष्ट का अनुभव कर चुके हैं। हमारे सब बच्चे वैसी ही जेल भुगत रहे हैं। मैं जानता हूं कि वह कितना कष्टकारी और दुखदायक है। जिस समय बच्चों का मस्तिष्क प्रकृति से जुड़ा होना चाहिए, जिस समय उन्हें प्रसन्नता में डूबे रहना चाहिए, पेड़–पौधों में खेलना–कूदना चाहिए; पशु–पक्षियों के साथ खेलना चाहिए; उस समय उनसे चक्की चलवाई जा रही है। हमने देखा है कि उन्हें कैसी शिक्षा प्रदान की जा रही है। हम तोतों का गुट तैयार कर रहे हैं–बोलने वाले पक्षियों का। वे पक्षी पिंजरे में कैद हैं, जिन्होंने कुछ विदेशी वाक्यांश याद कर लिए हैं। मैं हार गया हूं। मैं जा पाना चाहता था, उसमें मैं असफल हुआ या सफल–पता नहीं, लेकिन मैं उन्हें प्रसन्नता और आजादी का स्वाद चखाना चाहता था। इस वातावरण में जो प्रसन्नता लड़के–लड़कियों को मिल रही है, वह उनका अधिकार है। आखिर इसीलिए तो वे पैदा हुए हैं। फूल क्यों खिलते हैं? दिन खत्म होने पर पक्षी क्यों चहचहाते हैं? क्या उन्हें अपना खूबसूरत समय कक्षाओं में बैठकर रेखांकित पदों को याद करने में ही व्यर्थ गंवाना होगा? यदि व्यक्ति को सौंदर्य के आनंद से वंचित रखा जाए, तो यह उसका कितना बड़ा दुर्भाग्य है! इसीलिए मैंने यह सब शुरू किया । मैं हार गया, क्योंकि एक अकेला व्यक्ति कब तक बोझ उठा सकता है? मैंने हर प्रकार का कष्ट उठाया है। मैं यह नहीं कह सकता कि कोई उपलब्धि नहीं है, किंतु मेरी संतुष्टि के लायक नहीं।– प्रसन्नता, आह्लाद, कला और हर चीज से जोड़ा है। मैंने स्वतंत्रता और प्रसन्नता का स्वाद चखाने का प्रयत्न किया

है। इसमें नवीनता है। देशवासी मुझसे पूछते हैं कि मेरा पाठ्यक्रम क्या है? कौन–कौन सी पुस्तकें आप पढ़ते–पढ़ाते हैं? व्याकरण कितना सिखाते हैं? क्या आप इन्हें सब कुछ याद कराने में सफल हुए हैं? आपके पास भवन कितने हैं? लोग सरस्वती को खींच–खींच कर कारागार में डालना चाहते हैं। वह सब यहां देखने को नहीं मिलता, तो वे दुःखी होते हैं। मैं कहता हूं कि हमारे राष्ट्र के पास जो खजाना और साधना है, उसे उन्होंने पूरी तरह रिक्त कर दिया है। जो कार्य मैंने शुरू किया, वह पूर्ण नहीं हो पाया है। यह किसी आयोग को ऐच्छिक कार्य नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ने में मैं असफल रहा हूं। वह मेरी शक्ति से बाहर की चीज है। यदि आप राष्ट्रीय दृष्टीकोण से मेरे कार्य को स्वीकृति देंगे और अपनाएंगे, तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।

टैगोर के आव्हान पर बोस की प्रतिक्रिया

21 जनवरी, 1939 को शांति निकेतन में रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा सम्मान किए जाने पर सुभाषचंद्र बोस ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्ति की:

गुरूदेव,

इस बार मेरे यहां आने को एक नया अर्थ मिला है। पिछले कई वर्षों से शायद दो बार–मैं यहां आ चुका हूं। किंतु मेरे आज के आगमन का नया महत्व है। सिद्धांततः मेरे यहां आने के दो कारण हैं। पहला, आपने मुझे आमंत्रित किया है–और दूसरा कारण यह है कि मुझे अपने अंदर से यहां आने की प्रेरणा मिली।

यह आशा करना अनुचित है कि साधारण भारतीय आसानी से यह समझ पाएंगे कि आपकी समेकित साधना क्या है। उन साधारण लोगों में से एक मैं भी हूं। इसलिए मैं आपकी साधना की महानता और उत्कृष्टता को एक हठयोगी उत्साह के रूप में ग्रहण कर पाऊंगा, क्योंकि इस ठीक से समझने की समझ एक दिन में पैदा नहीं होती। समझ धीरे–धीरे आती है और पूरा जीवन लग जाता है। फिर भी मुझे विश्वास है कि यदि हम इसी राह पर चलते रहें, तो यह विस्तृत आकार अवश्य लेगी।

आपके हृदय में दुख और अवसाद हैं। शायद इसलिए कि आपके देशवासी आपको समझ नहीं पाए हैं। वे आपकी साधना को जान नहीं पाए हैं। किंतु क्या इस कारण आपको अपने देशवासियों को दोष देना चाहिए? यदि वे आपको इतनी आसानी से समझ पाते, तो आपके बराबर होते! जिस सत्य को रचनाकार जानता है, उसे समझने में साधारण व्यक्ति को काफी समय लगता है। हम केवल यह दावा कर सकते हैं कि हम अपने मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। हम पूरे मन से रचनाकार के सत्य को पहचानने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम अपनी योग्यता के अनुसार आपकी साधना को समझने का प्रयास कर रहे हैं। इस विषय में आप देशवासियों को दोष नहीं दे सकते।

यह प्रत्येक देश और प्रत्येक व्यक्ति में देखा गया है कि साधारण लोग कभी भी उस व्यक्ति की सराहना नहीं करते, जो नया मार्ग अपनाता है और जो व्यक्तियों का सामना सच्चाई से करवाता है–उल्टे वे साधना के मार्गी और सत्य के खोजी को ही परेशान करते हैं। इसलिए हमारे देशवासियों के चरित्र में जिन गुणों की खोज आपने की, वे केवल हमारे देशवासियों में ही नहीं; बल्कि मानव–मात्र में पाए जाने वाले गुण हैं। मानव मस्ष्कि कितना भी बेचारा क्यों न हो– हममें से जो आशावादी हैं, वे महसूस करते हैं कि पूरी गरीबी, चालाकी और गंदगी के पीछे दिव्यता छिपी है और जिस वास्तविक साधना को आज हमारे देशवासी समझ नहीं पा रहे, उसे एक दिन अवश्य समझेंगे और उसे अपनाएंगे।

समय–समय पर प्रश्न उठाया जाता है– हम लोगों में चर्चा भी चलती है–शायद यह आपके साथ भी हुआ हो कि आपके बाद आपकी साधना का क्या होगा? उस दिन कलकत्ता में मैंने इस प्रश्न उत्तर देने का प्रयत्न किया था। मैं यह कहना चाहूंगा कि सत्य पर आधारित कोई भी साधना कभी समाप्त नहीं हो सकती। जब तक आपके देशवासी समझ नहीं पाएंगे कि आप उन्हें क्या सिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं, उन्हें समझाने में सफल नहीं हो पाएंगे और तब तक आपकी दिखाई पड़ने वाली व्यावहारिक साधना समाप्त नहीं होगी। एक दिन जब आपके जीवन में परिलक्षित सच्चाई और साधना भारतीय लोगों के ह्रदय में सच्चाई और साधना की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक आपके शांति–निकेतन की आवश्यकता और उपयोगिता बनी रहेगी। तब तक हर हालत में शांति–निकेतन बना रहेगा। केवल यही नहीं, बल्कि यह साधना भारत के कोने–कोने में स्वीकारी भी जाएगी।

हममें से वे लोग, जो अपना अधिकांश समय देश के राजनितिक जीवन में लगाते हैं; अंततः जीवन की रिक्तता के विषय में बहुत गहराई से विचार करते हैं। हमें उस खजाने की प्रेरणा की आवश्यकता है, जो मस्तिष्क को पुष्ट करता है और जिसके बिना कोई भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र ऊंचाइयों पर नहीं पहुंच सकता। क्योंकि हम जानते हैं कि यदि हम साधना वाली सच्चाई और प्रेरणा पा लेंगे, तो अपने कार्य–जीवन में पूर्णता और सफलता पा सकेंगे और बाहय जीवन में सफल हो जाएंगे।

इसमें कोई शक नहीं कि आज हम राष्ट्रीय स्वतंत्रता पाने के लिए अथव प्रयास कर रहें हैं, किंतु हमारा लक्ष्य इससे भी महान हैं । हम व्यक्तिगत और राष्ट्रीय जीवन में पूर्णता पाना चाहते हैं। हमारी इच्छा है कि देश का प्रत्येक स्त्री–पुरूष तथा पूरा राष्ट्र हर दृष्टि से सच्चाई को पहचान सके। राजनीतिक स्वतंत्रता इस खोज में केवल एक माध्यम है। जो आदर्श आज हमारे सामने है, जिस स्वप्न ने आज हमें घेर रखा है–वह बहुत महान है। मैं नहीं जानता कि हम लोग उस स्वप्न और आदर्श को

वास्तव में कितना पा सकेंगे। हमें नहीं मालूम कि इस उद्देश्य के लिए हम लोंगो में कितनी शक्ति है। जितनी भी शक्ति और क्षमता हमलोंगों के पास है, उसी से हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयासरत हैं। इसके साथ ही, जितनी शक्ति और क्षमता व्यक्तिगत रूप से हमारे पास है, उसको देखते हुए हमने जो मार्ग चुना है—वह सच्चाई का मार्ग है। जो लोग हमारा अनुगमन करेंगे; वे निश्चित ही हमसे अधिक ताकतवर, शक्तिशाली और सक्षम होंगे। हम इस आशा के साथ कार्य करे रहे हैं कि वे हमारी गलतियों और भूलों को सुधारने के योग्य बनेंगे। आपने राष्ट्र केवल राष्ट्र ही क्यों, पूरी मानवता को आदर्श दिखाया है। आपने केवल पथ ही नहीं दिखाया, बल्कि उस पर चलने का निर्देश भी दिया है। अतः आपके प्रयास केवल पत्र और साहित्य तक ही सीमित नहीं रहे, आपकी साधना अनंत की आराधना ही नहीं रही; बल्कि आपने बाहय सच्चाई के लिए अंतरात्मा को भी लगा दिया है। हम आपके समक्ष स्वयं को विनयपूर्वक सौंपना चाहते हैं—क्योंकि हमारे जीवन का और हमारे राष्ट्र का भी उद्देश्य यही है। अपने जीवन काल में हम इस उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे अथवा नहीं, लेकिन अंतर्मन से तो हमने इसे स्वीकार कर ही लिया है। हम इसका अनुपालन करने का प्रयास करेंगे और भविष्य में भी करते रहेंगे। हममें से कुछ लोग, जो थोड़ा—बहुत कार्य कर रहे हैं, आपेस असीम प्यार, उत्साह और प्रेरणा पाकर धन्य हैं। इसके अतिरिक्त; तब हमें हर प्रकार की कठिनाई और खतरे का सामना करना पड़ता है, जब हम कारागार का कष्ट झेलते हैं। जब हम कुंठित होते हैं और मानसिक रूप से कमजोर हो जाते हैं, तब हम उस अनंत स्नेह और प्रेरणा को याद करते हैं; जो हमें हमारे देशवासियों, देश के नेताओं तथा स्वीधीनता संग्रामियों से मिली हैं । तब हमें महसूस होता है कि हमें तिगुना आर्शीवाद प्राप्त है—लिहाजा, अस्थाई खतरों व कठिनाइयों की कोई परवाह नहीं।

हम लोग बलिदान का अर्थ गलत रूप में ग्रहण करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे इसमें बहुत दुःख और कष्ट है—जबकि वास्तविक बलिदान में कोई कष्ट नहीं है। कोई भी व्यक्ति दुःख के आभास के साथ बलिदान नहीं कर सकता। बलिदान में अनंत सुख की अनुभूति ने आपके जीवन को बहुत परिवर्तित किया है, वही प्रसन्नता और उत्साह हमें भी प्रेरणा दे। जीवन के हर क्षण में हम आपसे आशीर्वाद की कामना करते हैं—क्योंकि हमें मालूम है कि जब तक हमें आपका आशीर्वाद प्राप्त होता रहेगा, हमें यह आभास रहेगा कि हम सही मार्ग पर चल रहे हैं। हम सभी को यह महसूस होता है कि हमारी यात्रा में आपके आशीर्वाद का महत्वपूर्ण स्थान है।

रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से

श्री सुभाषचंद्र बोस

उत्तरायण

मेरे प्रिय सुभाष

अपरिहार्य कारणों से तथा शारीरिक कमजोरी के लगातार बढ़ने से मैं फिलहाल स्वागत–समारोह को स्थगित करने के लिए बाध्य हूं। पूरी रिपोर्ट आपको सुरेन तथा सुधाकांत से मिल जाएगी।

कृपया दिमाग में हल्की–सी भी यह शंका पैदा न होने दें कि आपके प्रति मेरी श्रद्धा और प्रेम में कोई कमी आई है। यहीं समाप्त करता हूं। 27.1.39.

आपका,
रवींद्रनाथ टैगोर
देशनायक
रवींद्रनाथ टैगोर

सुभाषचंद्र

बंगाल के कवि के रूपि मैं 'लोगों का नेता' होने का सम्मान आपको प्रदान करता हूं। गीता से हमें यह भरोसा मिला है कि समय–समय पर बुराई का नाश करने के लिए प्रभु अवतार लेते हैं। जब देश की आत्मा पर हर दिशा से बदकिस्मती का आक्रमण हो रहा हो, उसका रूदन सामने आ रहा हो; तो उसे बचाने वाले आगे आते हैं।

पापी ताकतों के आंतरिक व बाहय षड्यंत्र के कारण, हम लोग उन शक्तियों का मुकाबला करने में और उनके आक्रमण से स्वयं को बचाने में असमर्थ हैं।

राष्ट्रव्यापी संकट की घड़ी हमें हमें शक्तिशाली व्यक्तित्व की सेवाओं की आवश्यकता है। निडर आत्मविश्वास से पूर्ण एक ऐसे जन्मजात नेता की आवश्यकता है, जो हमारी प्रगति को खतरा पैदा करने वाले दुर्भाग्य का सामना कर सकें।

सुभाषचंद्र! मैंने वह भोर देखी है, जो आपकी राजनीतिक साधना की शुरूआत की साक्षी है। अनिश्चय के उस धुंधले प्रकाश में मेरे ह्रदय में दुविधा थी और मैं आपको इस रूप में, जिस रूप में आप आज हैं; स्वीकार करने में झिझक रहा था। ....आज आप दोपहरी का सूर्य बन चुके हैं, इसमें शक–सुबहा की कोई गुंजाइश नहीं। इन वर्षों में आपको बहुत से अनुभव भी हुए होंगे। आज आपमें परिपक्व मस्तिष्क और अबाध क्षमता है कि जो कार्य आपने शुरू किया है, उसे पूरा भी कर सकते हैं। आपकी शक्ति में जेल–यात्रा, बीमारी, सजा आदि के कारण इजाफा हुआ होगा। इन्होंने आपकी सहानुभूति का दायरा बढ़ाने में सहायता की होगी, आपकी दृष्टि को विस्तार प्रदान किया होगा; ताकि क्षेत्रों की सीमाओं से हटकर आप इतिहास के परिदृश्य पर गहन दृष्टि डाल सके।

बंगाली मस्तिष्क यदि तार्किक नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। अपने मानसिक सुख के लिए वह तर्क–वितर्क करने में सुख की अनुभूति करता है और अपनी बुद्धि की स्वतंत्रता पर गर्व करता है–साथ ही, शक की हर योजना का स्वयं ही विरोध करता है। कोई भी व्यावहारिक प्रस्ताव, कोई संगठन अपने विध्वंसकारी धर्मसंकट में सुरक्षित नहीं है; किंतु यह समय व्यर्थ के दिमागी खेल में व्यस्त होने का और चीजों को विध्वंस की ओर ले जाने का नहीं है। यही इच्छा, जो बंगाल की है, उसके तहत हम लोग आपसे कहते हैं कि आप हमारे मार्गदर्शक बनें और चाहते हैं कि शक्ति से आप अपना स्थान बनाएं। उस रचना से लोगों की आत्मा आपके व्यक्तित्व में अपनी झलक देखेगी। इस इच्छा–शक्ति का आभास मुझे बंगाल–विभाजन–आंदोलन के समय हुआ। जो तलवार इसके जीवित शरीर को दो हिस्सों में काटने को उठी, उसे इसके प्रतिरोध ने रोक दिया। उस दिन बंगालियों ने केवल बैठकर तर्क–वितर्क ही नहीं किया, बल्कि शक्तिशाली औपनिवेशिक ताकत के खिलाफ हानि–लाभ पर विचार किया। उसने दृढ़ निश्चय किया और बाधा हट गई।

बाद की पीढ़ी में हमने इस इच्छा शक्ति का दर्शन बंगाल के युवाओं के हृदय में किया है। वे उस अग्नि को लेकर पैदा हुए हैं, जो स्वतंत्रता की मशाल जला सकती है। किंतु उन्होंने स्वयं को जला लिया और मार्ग से भटक गए। दुर्भाग्यपूर्ण गलती के निष्फल होने से उन्होंने शहीदी में अपनी उदारता का परिचय दिया–ऐसी उदारता, जो भारत के किसी अन्य प्रांत में देखने को नहीं मिली। यह तथ्य हमारे इतिहास में सदा जगमगाता रहेगा कि इन नाजवानों ने अपने देश की एकता के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी। वे देश को अविभाज्य देखना चाहते थे।

कमजोरी के निषेधात्मक प्रमाण–पत्र द्वारा हमारे युवावर्ग के मस्तिष्क में निराशावाद को पनपने नहीं देना चाहिए। जहां भी शक्ति ने अपनी छाप छोड़ी है, हमें समझ लेना चाहिए कि वहीं सच्चाई भी रही होगी। यह वर्ग उन जीवित बीजों की भांति है, जो भविष्य की आशा अपने गर्भ में छिपाए हुए है। आपके जीवन का कार्य यही होगा कि बंगाल की धरती की वे सभी नवजात आशाएं आपके प्रयासों से फलें–फूलें, जो फिलहाल अस्पष्टता पर गर्व करता है– साथ ही, शक की हर योजना का स्वयं ही विरोध करता है। कोई भी व्यावहारिक प्रस्ताव, कोई संगठन अपने विध्वंसकारी धर्मसंकट में सुरक्षित नहीं है; किंतु यह समय व्यर्थ के दिमागी खेल में व्यस्त होने का और चीजों को विध्वंस की ओर ले जाने का नहीं है। यही इच्छा, जो बंगाल की है, उसके हत हम लोग आपसे कहते हैं कि आप हमारे मार्गदर्शक बनें और चाहते हैं कि शक्ति से आप अपना स्थान बनाएं। उस रचना से लोगों की आत्मा आपके व्यक्तित्व में अपनी झलक देखेगी। इस इच्छा–शक्ति का आभास मुझे बंगाल–विभाजन–आंदोलन के समय हुआ।

जो तलवार इसके जीवित शरीर को दो हिस्सों में काटने को उठी, उसे इसके प्रतिरोध ने रोक दिया। उस दिन बंगालियों ने केवल बैठकर तर्क–वितर्क ही नहीं किया, बल्कि शक्तिशाली औपनिवेशिक ताकत के खिलाफ हानि–लाभ पर विचार किया। उसने दृढ़ निश्चय किया और बाधा हट गई।

बाद की पीढ़ी में हमने इस इच्छा शक्ति का दर्शन बंगाल के युवाओं के हृदय में किया है। वे उस अग्नि को लेकर पैदा हुए हैं, जो स्वतंत्रता की मशाल जला सकती है। किंतु उन्होंने स्वयं को जला लिया और मार्ग से भटक गए। दुर्भाग्यपूर्ण गलती के निष्फल होने से उन्होंने शहीदी में अपनी उदारता का परिचय दिया–ऐसी उदारता, जो भारत के किसी अन्य प्रांत में देखने को नहीं मिली। यह तथ्य हमारे इतिहास में सदा जगमगाता रहेगा कि इन नौजवानों ने अपने देश की एकता के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी। वे देश को अविभाज्य देखना चाहते थे।

कमजोरी के निषेधात्मक प्रमाण–पत्र द्वारा हमारे युवावर्ग के मस्तिष्क में निराशावाद को पनपने नहीं देना चाहिए। जहां भी शक्ति ने अपनी छाप छोड़ी है, हमें समझ लेना चाहिए कि वहीं सच्चाई भी रही होगी। यह वर्ग उन जीवित बीजों की भांति है, जो भविष्य की आशा अपने गर्भ में छिपाए हुए है। आपके जीवन का कार्य यही होगा कि बंगाल की धरती की वे सभी नवजात आशाएं आपके प्रयासों से फलें–फूलें, जो फिलहाल अस्पष्टता के धुंधलके में हैं। साथ ही, आपका कार्य यह भी होना चाहिए कि आप बंगाली विशिष्टताओं को पहचानकर उन्हें स्थाई मूल्य दिलाएं; उनकी योग्यता, कल्पना, समझ तथा ग्राहयता को सही दिशा दें–ताकि वे राष्ट्र–निर्माण में रचनात्मक कार्य कर सकें।

जन्मजात नेता कभी भी अकेले नहीं पड़ते। वे कभी भी पलायनवाद में विश्वास नहीं रखते। भविष्य के सूर्योदय का सतत संदेश उनके जीवन से अभिप्रेत होता रहता है....।

मुझे आशा है कि आप हमारी मातृभूमि के लिए आशा की नई किरण लेकर आए हैं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप बंगाल के नेतृत्व का कार्य–भार संभालें और देशवासियों को सही दिशा में ले जाएं.....।

किसी भी व्यक्ति को यह दुखद भूल न करने दें कि वह प्रांतीयतावाद में ही अटक कर रह जाए। बंगाल को भारत से अलग–थलग न समझें । यह न सोचने लगें कि मैं अपने प्रांत को, एक राज्य को गद्दी बना लूं– जिस पर एक शानदार व्यक्ति बैठ जाए, जो स्वयं को नए युग के राजनीतिक इतिहास का प्रतिनिधि मान लें...।

आपका अथक प्रयास यही होना चाहिए कि आप अपने देशवासियों को

दृढ़प्रतिज्ञ बनाएं—उनमें जीवित रहने और संघर्ष करने की इच्छाशक्ति जगाएं—वे आपके जीवन से उदाहरण लेकर प्रेरणा प्राप्त करें व शक्तिशाली बनें । बंगाल को एक स्वर में स्वीकार करने दें कि यह पद आपको है। ...... विजय द्वारा आत्मसम्मान अर्जित करके वे आपको एक योग्य नेता के रूप में सम्मानित करें।

बहुत पहले एक बैठक में मैंने अपने नेता को, बंगाल जिसकी खोज में था, संदेश दिया था। कई वर्षों के अंतराल के बाद, इस बैठक में मैं उसे अपनी बात कह रहा हूं, जो अब पूर्ण प्रकाश में आया है। शायद मैं आने वाले संघर्ष में उनके साथ न रह पाऊं। मैं उन्हें आशीर्वाद देता हूं और यह जानते हुए विदा लेता हूं कि उन्होंने देश के कष्ट को अपना बनाया है। उसका फल उन्हें देश की स्वतंत्रता के रूप में मिलेगा।

(यह संभाषण रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा जनवरी 1939 में लिखा गया था और प्रकाशित भी हुआ था। न जाने किन कारणों से यह प्रसारित नहीं हो पाया और टैगोर ने बोस के स्वागत के लिए जो योजना बनाई थी, स्थगित कर दी गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात यह समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ। टैगोर 1941 में दिवंगत हुए और बोस ने यह अभिभाषण नहीं देखा। शांति निकेतन में बोस का स्वागत करते समय टैगोर ने आशु—भाषण दिया था। बोस ने उसका उत्तर भी दिया, जो बाद में समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ। वे भाषण इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या 95 पर प्रकाशित किए गए हैं।—संपादक)

रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से

सुभाषचंद्र बोस,
कलकत्ता

मेरे प्रिय सुभाष,

कुछ दिन पहले कलकत्ता आने के बाद मुझे अपने देशवासियों की मानसिकता को देखने का मौका मिला है। पूरा देश आपके इंतजार में है। यदि झिझक के कारण आप इस मौके को चूक जाते हैं, तो यह मौका आपको दुबारा नहीं मिलेगा। बंगाल से प्राप्त होने वाली शक्ति से आप वंचित रह जाएंगे। दूसरी ओर, दूसरा पक्ष आपकी शक्ति को खत्म करने का प्रयास करता रहेगा। किसी भी कारणवश यह भूल मत कर बैठें। यह मैं आपके लिए नहीं कह रहा, बल्कि देश के लिए कह रहा हूं। कृपया दृढ़तापूर्वक महात्माजी से जल्दी से जल्दी उनका उत्तर पाने का प्रयत्न करें। यदि वे विलंब करते हैं, तो आप इस आधार पर अपना पद त्याग सकते हैं। उन्हें बताएं कि आप भविष्य के कार्यक्रम का जल्दी ही निर्णय लेना चाहते हैं, इसलिए इस विषय में दरी ठीक नहीं । आशा है आपका स्वास्थ्य प्रगति कर रहा होगा। आज ही शांति निकेतन लौट रहा हूं।

यही समाप्त करता हूं।

2.4.39
आपका,
रवींद्रनाथ टैगोर

(टैगोर ने गलती से पत्र में 3.4.1939 की जगह 2.4.1939 तारीख डाल दी। बोस के त्यागपत्र पर टैगोर ने उन्हें बधाई संदेश भेजा, वह इस पुस्तक के पृष्ठ पर छापा गया हैं।–संपादक)

रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से

उत्तरायण
शांति निकेतन, बंगाल

मेरे प्रिय सुभाष,

आपकी बीमारी की जानकारी से चिंतित हूं । बार–बार आपका बीमार पड़ना देश के लिए चिंता का विषय है।

मेरे विचार से योजनाबद्ध कांग्रेस हाउस का आपका विचार सही है। ऐसे हाउस की अति आवश्यकता है। मुझे आशा है कि लोगों के सहयोग द्वारा इसकी नींव सही ढंग से रखी जाएगी। इस हाउस के पूरा होने पर हम अपने भाग्य और प्रतिष्ठा को बढ़ता देख पाएंगे। यही समाप्त करता हूं। 27.5.39

आपका,

रवींद्रनाथ टैगोर

अन्य पत्र
ई. वुड्स के लिए

आर्टिलरी मैनसन
विक्टोरिया स्ट्रीट
लंदन, एस. डब्ल्यू–1
रविवार
16.1.38

प्रिय श्रीमती वुड्स,

सार्जेंट बजाज के पते पर पत्र और तार मिला। बहुत–बहुत धन्यवाद। जब से यहां पहुंचा हूं, सुबह से मध्य रात्रि तक अत्यधिक व्यस्त रहता हूं। इसी कारण आपको

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

पत्र लिखने में विलंब हुआ।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि कल रात मेरी प्रेजीडेंट की वेलेरा से मुलाकात हुई। हमने लंबी बातचीत की।

19 तारीख को मैं स्वदेश लौट जाऊंगा।

आज मैं कैम्ब्रिज और कल ऑक्सफोर्ड जा रहा हूं।

जो कष्ट आपने उठाया, उसके लिए सादर प्रणाम तथा धन्यवाद

आपका शुभचिंतक
सुभाषचंद्र बोस

श्रीमती वैटर को

होटल ग्रांड ब्रैटग्ने
'ली पेटिट पैलेस' एथेंस
21.1.38 रात्रि

प्रिय श्रीमती वैटर,

क्षमा चाहता हूं कि लंदन जाते समय म्यूनचेन से निकलते हुए मैं आपको पत्र नहीं लिख पाया। ज्यादा दुख इस बात का है कि चाहते हुए भी वियना नहीं आ सका। इंग्लैंड में अंतिम क्षण तक मेरा पूरा समय लग गया। यात्रा हर दृष्टि से सफल यात्रा थी। वे मेरा अधिक समय लेना चाहते थे–किंतु में दे नहीं पाया, क्योंकि दूसरी ओर महात्मा गांधी तत्काल मेरा स्वदेश लौटता चाहते थे। इस कारण वियना का विचार छोड़ना पड़ा। क्षमा चाहता हूं। भारत में कठिन समय और कठोर परिश्रम मेरा इंतजार कर रहा है।

नेपल्स में और यहां मौसम खराब था। इसलिए देरी से यहां पहुंचा। आज की रात हम यहां (एथेंस में) रहेंगें कल राज बसरा (ईराक) में रहेंगे और अगली रात जोधपुर (भारत) में होंगे। 24 तारीख को दोपहर तक मैं कलकत्ता पहुंच जाऊंगा।

सभी मित्रों को मेरा नमस्ते कहें और मेरी शुभकामनाएं दें। आपका स्वास्थ्य कैसा है, डॉ. वैटर कैसे हैं? दोनों को सादर प्रणाम।

सदैव आपका शुभेच्छु,
सुभाषचंद्र बोस

रास बिहारी बोस की ओर से

25.1.38
टोकियो

मेरे प्रिय सुभाष बाबू,

भारत से समाचारपत्र पाकर मुझे यह सुखद समाचार मिला कि आगामी कांग्रेस सत्र के लिए आप अध्यक्ष चुने गए हैं। मैं हार्दिक शुभकामनाएं भेजता हूं। एक बंगाली होने के नाते, मुझे आप पर गर्व है। अंग्रेजों के भारत पर कब्जा करने में कुछ हद तक बंगाली भी जिम्मेदार थे। अतः मेरे विचार से बंगालियों का यह मूल कर्तव्य बनता है कि वे भारत को आजादी दिलाने में अधिक–से–अधिक बलिदान करें। भारत के स्वीधीनता संग्राम में बंगाली अपने बलिदान और कठिनाइयों द्वारा नेतृत्व प्रदान करेंगे–यह मेरा दृढ़ मत है। अतः मैं आशा करता हूं कि आप उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कांग्रेस को उचित नेतृत्व प्रदान करेंगें।

वर्तमान समय में कांग्रेस संकट की घड़ी से गुजर रही है। यह एक संवेधानिक संगठन हे और सरकार को सहयोग दे रही है। अपने देश में कोई भी संवैधानिक और वैधानिक संस्था ऐसी नहीं है, जो स्वतंत्रतापूर्वक कार्य कर सके; क्योंकि संविधान और नियमों का निर्माण शासक वर्ग अपने लाभ और हित के लिए करता है। ब्रिटिश दृष्टिकोण से असंवैधानिक और अवैधानिक संस्था ही देश को आजादी के संघर्ष में नेतृत्व प्रदान कर सकती है।

अवज्ञा आंदोन के दौरान कांग्रेस असंवैधानिक संस्था बन गई थी। अतः वह अनंत कार्य कर सकती थी, किंतु अब वह पुनः हानि–रहित संस्था बनकर रह गई है। सत्य कहें, तो कांग्रेस और अन्य उदारवादी गुटों में कोई अंतर नहीं है। यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि आज तक कांग्रेसी सर सुरेंद्रनाथ बनर्जी के तब के उस कृत्य की आलोचना क्यों करते रहे हैं, जब उन्होंने पद स्वीकार किया था। आज कांग्रेसी स्वयं वही कार्य कर रहे हैं, जो सर सुरेंद्रनाथ तथा अन्य उदारवादियों ने तथाकथित सुधारों के नाम पर किया था, बल्कि इसका श्रेय तो उस समय के उदारवादियों को ही है, क्योंकि उन्होंने ही सभी राजनीतिक बंदियों के लिए सामान्य क्षमा–दान की मांग उठाई थी। अभी तो केवल गिने–चुने राजनीतिक बंदियों को ही रिहा किया गया हे, जबकि उस समय सभी राजनीतिज्ञ बंदियों को तत्काल क्षमा कर दिया गया था। देश को सही दिशा में ले जाने के लिए आज कांग्रेस को क्रांतिकारी मानसिकता से काम लेना होगा। इस समय यह एक विकासशील संस्था है–इसे विशुद्ध क्रांतिकारी संस्था बनाना होगा। जब पूरा शरीर दूषित हो, तो अंगों पर दवाई लगाने से कोई लाभ नहीं होता।

अहिंसा की अंधी वंदना का विरोध होना चाहिए और मत परिवर्तित होनी चाहिए। हमें हिंसा अथवा अहिंसा–हर संभव तरीके से अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। अहिंसक वातावरण भारतीय पुरूषों को स्त्रियोचित बना रहा है। वर्तमान विश्व में कोई भी राष्ट्र यदि विश्व में आत्मसम्मान के साथ जीना चाहता है, तो उसे अहिंसावादी

दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए। हमारी कठिनाई यह है कि हमारे कानों में बहुत लंबे समय से अन्य बातें भर दी गई हैं। वह विचार पूरी तरह निकाल दिया जाना चाहिए। परलोक की अपेक्षा हमें इहलोक के बारे में पहले सोचना चाहिए–जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा भी दी है। दरिद्रनारायण को पहले भोजन, कपड़ा और मकान उपलब्ध कराया जाना चाहिएं पहले वे इस दुनिया की खुशियां ले सकें, तभी हम परलोग की बात कर सकेंगे। मुसलमान कहते हैं: पीर, अमीर तथा फकीर–ताकि व्यक्ति दुनिया का सामना कर सके। यदि आप फकीर नहीं बन सकते, तो अमीर बन जाएं और जीवन को जिएं। यदि आप अमीर नहीं बन सकते, तो पीर बन जाइए। इसका अर्थ है काफिर को मार डालों और विश्व के लोग तुम्हें या तुम्हारी कब्र को ईश्वर की भांति पूजेंगें गीता भी यही बताती हैं। अतः हमें अपना बलिदान देना चाहिए, ताकि भावी पीढ़ी आनंदमय जीवन जी सके।

कांग्रेस को सिर्फ एक बात पर ध्यान देना चाहिए, वह है सैन्य–तैयारी। आज भी ताकतवर ही सही है–इसे हमें याद रखना चाहिए। आध्यात्मिक वाक्यों से स्वयं को धोखा देते रहना उचित नहीं है। कांग्रेस को सबसे पहले सैन्य–नियंत्रण के लिए आंदोलन करना चाहिए–सेना के प्रत्येक अंग के नियंत्रण के लिए। शिक्षा, सफाई आदि से ही कभी स्वतंत्रता मिलने वाली नहीं है। शक्ति आज की वास्तविक आवश्यकता है। इस विषय पर आपको अपनी पूरी शक्ति लगानी चाहिए। डॉ. मुंजे ने अपना मिलेटरी स्कूल स्थापित करके कांग्रेस की अपेक्षा अधिक काग्र किया है। भारतीयों को पहले सैनिक बनाया जाना चाहिए। उन्हें अधिकार हो कि वे शस्त्र लेकर चल सकें।

अगला महत्वपूर्ण कार्य हिंदू–भाईचारा है। भारत में पैदा हुए मुस्लिम भी हिंदू हैं; तुर्की, पर्शिया, अफगानिस्तान आदि के मुसलमानों से उनकी इबादत–पद्धति भिन्न हैं हिंदुत्व इतना कैथोलिक तो है कि इस्लाम को हिंदुत्व में समाहित कर ले–जैसा कि पहले भी हो चुका है। सभी भारतीय हिंदू हैं– हालांकि वे विभिन्न धर्मों में विश्वास कर सकते है। जैसे कि जापान के सभी लोग जापनी हैं; चाहे वे बौद्ध हों, या ईसाई।

कांग्रेस को चाहिए कि वह पैन–एशिया आंदोलन को अपना समर्थन दे। भारत को चीन–जापान विवाद में जापान का उद्देश्य समझे बिना उसकी आलोचना नहीं करनी चाहिए। जापान भारत का तथा अन्य एशियाई देशों का मित्र है। उसका मुख्य लक्ष्य एशिया से ब्रिटेन के प्रभाव को समाप्त करना है। इसकी शुरूआत उसने चीन से की है।

कांग्रेस का दृष्टिकोण विश्वव्यापी होना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का अध्ययन करके उसे भारत के लाभ व हित में प्रयोग करना चाहिए। हमें ब्रिटेन के शत्रुओं से मैत्री करनी चाहिएं यह हमारी विदेश नीति होनी चाहिए। वास्तविक राजनीति में

संवेदनाओं का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। लाभ ही मूल धारणा या आधार होना चाहिए। कई कारणों से जापान आजकल इंग्लैंड, रूस और अमरीका की आंखों की किरकिरी बना हुआ है। वे किसी–न–किसी प्रकार जापान को नीचा दिखाना चाहते हैं। जापान की अवनति से एशिया के एकजुट होने और स्वतंत्र होने की आशा मिट जाएगी। कांग्रेस ने जापान–विरोधी आंदोलन शुरू करके बहुत भारी गलती की है। हमें याद रखना चाहिए कि एक समय ऐसा भी आ सकता है, जब इंग्लैड जापान से मैत्री कर लेगा और भारतीयों द्वारा जापान के दुर्दिन में चलाए गए जापान–विरोधी आंदोलन का फायदा उठाकर भारत पर नियंत्रण पा लेगा। इसलिए भारतीयों के लिए यही नीति उचित है कि वे जापान का समर्थन कर इन मौकों का फायदा उठाएं और विश्व–राजनिति में अपना प्रभुत्व बढ़ाएं तथा ब्रिटेन से जितना फायदा संभव हो, ले।

किसी गुलाम देश के स्वतंत्रता–आंदोलन में डिक्टेटरशिप अत्यधिक जरूरी है– जैसे युद्ध के समय डिक्टेटरशिप आवश्यक है, उसी प्रकार आजकल भारतीय स्वतंत्रता–संग्राम में भी डिक्टेटरशिप आवश्यक है। अवज्ञा आंदोलन के समय डिक्टेटरशिप काफी बढ़ी थी, इसलिए आंदोजन ने काफी सफलता भी पायीं शांति–काल में प्रजातंत्र ठीक है, किंतु यदि युद्ध–काल में भी वह बना रहे, तो देश अवश्य ही संकट में पड़ सकता हे।

हमें यह मालूम नहीं कि जीवन कैसे जीया जाए और जीवन का बलिदान कैसे किया जाए। यही मुख्य कठिनाई है। इस संदर्भ में हमें जापानियों का अनुसरण करना चाहिए। वे अपने देश के लिए हजारों की संख्या में मरने को तैयार हैं। यही जागृति हममें भी आनी चाहिए। हमें यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु को कैसे गले लगाया जा सकता है। भारत की स्वतंत्रता की समस्या तो स्वतः हल हो जाएगी।

मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है। आलोचना, रूकावटों व कठिनाइयों के बावजूद आप आगे बढ़ते जाइए, राष्ट्र को सही मार्ग दिखाइए। आपको व भारत को सफलता अवश्य मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी,

रासबिहारी बोस

पुनश्च : आपकी पुस्तक का जापानी भाषा में अनुवाद करके एक पत्रिका में श्रृंखलाबद्ध छापा जा रहा है। मैं पुनः जोर देकर कहता हूं कि हमें थल, जल और वायु सेना पर अपना नियंत्रण करना चाहिए। बाकी विभागों पर अंग्रेजों को राज करने दें।

बासंती देवी को

38/2 एल्गिन रोड,
कलकत्ता

वर्धा
6.2.38

आदरणीय माताजी,

आज मैं कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हूं वहां से मैं 11 तारीख को चलूंगा और 13 तारीख को हरिपुरा पहूंचूंगा।

क्या आप हरिपुरा नहीं आएंगी? यदि आप आ सकें, तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। कारण का अनुमान आप आसानीसे लगा सकती हैं। जिस व्यक्ति के चरणों में बैठकर मैंने राजनीति का पाठ पढ़ा, वह आज हमारे बीच नहीं है। यदि आज वे हमारे साथ होते, तो कितने प्रसन्न होते। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं, आप समझ जाएंगी। कृपया इस पत्र का उत्तर शीघ्र दें– यदि आप कलकत्ता में नहीं हैं–क्योंकि मैं 11 तारीख को यहां से रवाना हो जाऊंगा।

कृपया मेरा सादर प्रणाम स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी,
सुभाष

पुनश्च : कृपया न भूलें 'आत्मवत् मान्यते जगत' (मनुष्य अपनी ही आकृति में विश्व के दर्शन करता है)।

एच. वी. कामथ के लिए

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता

टेलीफोन : पार्क 679

प्रिय श्री कामथ,

आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई । मैं आपको बधाई देने के लिए टेलीफोन करता, लेकिन मुझे यह पक्का मालूम नहीं था कि आप नौकरी छोड़ चुके हैं। आपके कार्यमुक्त होने तक मैं प्रतीक्षा करूंगा।

जब आप सेवा–निवृत्ता हो जाएंगे, तो आपसे मिलने को मैं उत्सुक रहूंगा। पता

नहीं, उस समय मैं कहा रहूं—शायद यात्रा में रहूं। उपर्युक्त पत से मेरी खबर मिल जाएगी। हरिपुरा के मार्ग में यह पत्र मैं ट्रेन में लिख रहा हूं।

कांग्रेस में मैं आपका हार्दिक स्वागत करूंगा। मैं आपको बताना चाहता हूं कि मेरा मानना यह है कि सेवा की हानि देश का लाभ है।

मातृभूमि की सेवा में आपका सहयोगी,

ह/ सुभाषचंद्र बोस
नागपुर मेल
12.2.38

विल रिचर की ओर से
श्रीयुत सुभाषचंद्र बोस,

1, वुडबर्न पार्क
एल्गिन रोड पोस्ट आफिस
कलकत्ता
1 मार्च, 1938

प्रिय श्री बोस,

मेरे पुराने पत्र में भारतीय सुरक्षा में सहयोग की भावना व्यक्त की गई थी। मैं आपको कुछ और बातें लिखना चाहता हूं।

सबसे पहले तो मैं आपको बता दूं—देर से ही सही, मेरी पत्नी और मैं बेगस्टीन की अपनी यात्रा से पूर्ण संतुष्ट है तथा आपके व आपके मित्रों के साथ बिताए दिनों से बहुत प्रसन्न भी। आपकी कृपा के लिए पुनः धन्यवाद। आशा है कि हमने आपके उपचार और कार्य में अधिक व्यवधान नहीं डाला। दुर्भाग्यवश हमारे उपमहाद्वीप समाचारपत्रों में भारतीय राजनीति, विशेष रूप से हरिपुरा बैठक, की अधिक चर्चा नहीं हुई।

आपने कहा है कि आप से इंश्योरेंस पर कुछ पुस्तक पढ़ना पसंद करेंगें। ये पुस्तके प्रायः इंश्योरेंस की शाखा विशेष से संबद्ध होती हैं। ऐसी पुस्तकें अभी मुझे नहीं मिल हैं; जो विभिन्न शाखाओं से संबद्ध हो। इसलिए मैं आपको पिटमैन्स द्वारा प्रकाशित इंश्योरेंस की पुस्तकों की सूची भेज रहा हूं, जिसमें से आप अपनी इच्छानुसार पुस्तकों का चयन कर सकते हैं।

बिड़ला कंपनी मेरे विचार से रूबी है; जिसमें अन्य इटालियन इंश्योरेंस कंपनी, एसीकुरेजियोनी जेनराली भी दिलचस्पी ले रही है।

हमने उपमहाद्वीपीय बैंकिंग की चर्चा की, जिस पर इस विषय में मैंने अपने

मित्रों से भी बात की थी। उन्होंने मुझे राय दी कि दो मुख्य स्विस बैंक इस उद्देश्य के लिए ठीक हैं—इंश्योरेंस क्रेडिटंस्टाल्ट अथवा श्वजिरीशे बैंकवेरीन। ये दोनों ही ज्यूरिख में है। मैं बैंक के महाप्रबंधक को जानता हूं। मेरा समूह दोनों से व्यापारिक संबंध रखता है। इसलिए मैं आपकी ओर से, यदि आप चाहें तो, उनसे बातचीत कर सकता हूं।

बहरहाल, हमारे वार्तालाप की रिपोर्ट मुख्यालय में पहुंच गई है। इसलिए मैं यह कहना चाहूंगा कि हम सभी लोग, जहां तक हमसे संभव होगा, आपकी सहायता करेंगे। शीघ्र ही हम एक ऐसी योजना आपके सम्मुख रखेंगे, जो आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ–साथ हमारे लिए भी ठीक हों।

इस बीच ज्यूरिख, विएना और बर्लिन गया था। दुर्भाग्य से मेरी पत्नी को वहां तेज नजला हो गया। अभी तक वह ठीक नहीं हुई हैं। इसी वजह से हमारे वियना से लौटने के बाद 'भी वह अभी तक मिस फ्यूलॉप मिलर ओर मिस शेंक्ल से संपर्क नहीं कर पाई। मुझे विश्वास है कि अब तक वह आपके भतीजे को कुछ फोटो जरूर भेज चुकी होगी। अगली बार जब मैं वियना जाऊंगा, वायदे के मुताबिक तस्वीरे आपको भी अवश्य भेजूंगा।

मेरी शुभकामनाएं व सादर प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी
विल रिचर

संलग्न
38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
22.3.38

प्रिय प्रिय दीदी,

क्षमा चाहता हूं कि एक लंबे अरसे से मैं आपको पत्र नहीं लिख पाया–किंतु मेरा विश्वास है कि मैं दया का पात्र हूं, क्योंकि मैं रात–दिन भाग–दौड़ में व्यस्त हूं। यह पत्र जल्दबाजी में लिख रहा हूं, फिर भी आशा करता हूं कि मैं अपने विचार स्पष्ट रूप से भली–भांति व्यक्त कर पाऊंगा।

कल, सीता ने मुझे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया। वहां संतोष सेन से भी भेंट हुई। पहली बार डॉ. सेन से मेरी मुलाकात वियना में हुई थी। उसके बाद यहां हुई। उनके बारे में मेरी राय बहुत–अच्छी है–एक व्यक्ति व एक चिकित्सक दोनों ही रूपों में। उस राय पर मैं अभी भी कायम हूं। लंबी बात को छोटी करके लिख राह हूं। सीता और संतोष विवाह करना चाहते हैं। लंबे अरसे से वे एक दूसरे को जानते हैं। धीरे–धीरे उनकी मैत्री प्रगाढ़ हुई है।

परिणामस्वरूप वे महसूस करते हैं कि उन्हें विवाह के बंधन में बंध जाना चाहिए। सीता के निर्णय व चरित्र के प्रति मेरा अनंत विश्वास है। पहले भी इस विषय में मैं आपको लिख चुका हूं। उनका यह निर्णय उनकी परिपक्वता का हासिल है और मैं समझता हूं कि यह निर्णय उचित भी है। जितना मैं उन दोनों को जानता हूं, मुझे विश्वास है कि वे सुखी वैवाहित जीवन जीएंगे। निजी रूप से मुझे उनके शुभचिंतक होने के नाते तब अत्यधिक प्रसन्नता होगी–जब आप और डॉ. साहब उपर्युक्त प्रस्ताव को स्वीकार कर अपना आशीर्वाद देंगे।

मेरा पत्र बहुत छोटा और संक्षिप्त है–किंतु ऐसा केवल इसलिए है, क्योंकि दो कार्यों के बीच के खाली वक्त में मैं यह पत्र लिख रहा हूं। इस विषय पर अपनी ओर से गंभीरतापूर्वक लिख रहा हूं। वास्तविकता तो यह है कि जब वियना में मैंने संतोष की मेज पर सीता का चित्र देखा, तभी मुझे इसका हल्का–सा आभास हुआ था–ओर मैं हमेशा ही इस प्रस्ताव को सही और उपयुक्त मानता रहा हूं।

अब आपका स्वास्थ्य कैसा है? आशा है, डॉ. साहब और लीला भी ठीक होंगे। मैं बिल्कुल स्वस्थ्य हूं–हालांकि काम बहुत अधिक है।

आपका स्नेहाकांक्षी
सुभाष

सीता धर्मवीर को

38/2, एल्गिन रोड
कलकत्ता,
22.3.38

मेरी प्रिय सीता,

तुम्हारा पत्र ठीक है। मेरा पत्र भी जा रहा है। इसे देख लेना। यदि ठीक समझो, तो अपने पत्र के साथ डाक में डाल देना।

मुझे खेद है कि तुम्हें लंबा पत्र नहीं लिख पाया, लेकिन आशा है यही पर्याप्त होगा। कहावत है कि बहादुरी बुद्धिमत्ता की आत्मा है। उत्तर पाने को उत्सुक हूं। यदि कोई उत्तर आए, तो कृपया मुझे सूचित करना।

प्यार सहित,
आपका शुभाकांक्षी
सुभाष

श्रीमती नाओमी वैटर के लिए

वर्ष 1938 के लिए कार्यकर्ता

अध्यक्ष:
सुभाषचंद्र बोस
टेलीफोन : 341
कोषाध्यक्ष
टेलीग्राम : कांग्रेस
जमनालाल बजाज
संदर्भ : इलाहाबाद
महासचिव
जे. बी. कृपलानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद
कैंप :
38/2 एल्गिन रोड,
कलकत्ता
26.3.38

मेरी प्रिय श्रीमती वैटर,
मुझे खेद है कि एक जमाने से आपको पत्र नहीं लिखा।

मेरा एक मित्र श्री एम. घोष यूरोप की यात्रा पर अपनी पत्नी सहित निकल रहे हैं। वे वियना जाकर वहां की जीवन पद्धति देखना चाहते हैं। श्री घोष अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापकों में से एक श्री मनमाहेन घोष के पौत्र हैं। मैं आपका आभारी रहूंगा, यदि आप श्रीमती व श्री घोष को वहां घुमाने में सहायता कर देंगे। यदि श्री फास्टिर इन दिनों विएना में हैं, तो कृपया इन्हें उनसे मिला दें—क्योंकि श्री घोष वहां व्यापारिक संबंध स्थापित करने के भी इच्छुक हैं। आजकल विएना का समाचार सुनकर आश्चर्य होता है। यहा कें समाचारपत्रों में आस्ट्रियाई समाचारों की भरमार है तथा वियना के चित्र भी छपते रहते हैं। आशा है, आप सभी स्वस्थ होंगे। डॉ. वैटर को शुभकामनाएं व आपको सादर प्रणाम।

सदैव आपका शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस
श्रीमती एन. सी. वैटर

श्रीमती नाओमी वैटर के लिए

वर्ष 1938 के लिए-कार्यकर्ता

सुभाषचंद्र बोस
टेलीफोन : 341
कोषाध्यक्ष
टेलीग्राम : कांग्रेस
जमनालाल बजाज
संदर्भ : इलाहाबाद
महासचिव
जे. बी. कृपलानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद

कैंप :
38/2 एल्गिन रोड,
अथवा वुडबर्न पार्क
9.4.38

प्रिय श्रीमती वैटर,

अपने मित्र को आपके पास भेजने में मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। श्री जी. बी. सील, जो लंदन जाते हुए मार्ग में विएना घूमने आए हैं, मैंने राय दी कि ये आप से और डॉ. वैटर से मिलें और मेरी हार्दिक शुभकामनाएं आप तक पहुंचा दें। संभव है, इनके प्रवास की अल्पावधि मैं आप इन्हें वियना की एक–दो जगह दिखला सकें।

खेद है, लंबे समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया–किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि मैं आपको भुला चुका हूं।

सादर प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस

खेद है मैं विएना में रूक नहीं पाया । आशा है, फिर आऊंगा और आप से मिलूंगा।

पी. बी. सील
होटल मार्टिनेज,
केन्स

संतोष सेन के लिए
भारतीय डाक एवं तार विभाग

20 मई, 1938
तार
बंबई, 21 21 संतोष सेन,
48, हनुमान रोड,
नई दिल्ली
शादी के शुभ अवसर पर शुभकामनाएं। खेद है, स्वयं नहीं पहुंच पाऊंगा। पत्र भेज रहा हूं–सुभाष बोस।

सीता धर्मवीर के लिए

पर्णकुटी
यरवदा हिल
पूना
21.5.38

मेरी प्रिय सीता,

बहुत दुःख है कि मैं तुम्हारी शादी के शुभ अवसर पर लाहौर नहीं पहुंच सकूंगा। इस संबंध में बंबई से मैंने तुम्हें तार भी भेजा था। मैं बंबई वापस 23 और 24 को पहुंचूंगा। आशा है, तुम मेरी असमर्थता महसूस कर निराश नहीं होओगी। उस दिन मन से मैं तुम्हारे साथ होऊंगा।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह तुम दोनों की झोली आशीर्वादों से भर दे, तुम्हें लंबा और खुशहाल जीवन प्रदान करेः ताकि तुम मातृभूमि की सेवा कर सको।

कृपया यह पत्र संतोष को पढ़ा देना। मैं दिल्ली भी पत्र लिख रहा हूं, किंतु वह वहां शायद नहीं मिले।

मैंने तुम्हें एक छोटा–सा उपहार भेजा है–उसे स्वीकार करोगी, तो प्रसन्नता का अनुभव करूंगा।

प्यार सहित–

तुम्हारा शुभेच्छु,
सुभाष

अतुलचंद कुमार के लिए

38/2, एल्गिन रोड
कलकत्ता; 3.6.38

प्रिय अतुल बाबू,

18 जुलाई, 1938

मेरे प्रिय सुभाष,

बंबई से यात्रा करे हुए ट्रेन में लिखा तुम्हारा 8 मई का पत्र मिला। तुमने मुझे लिखा है कि जैसे ही निगम में कोई पद रिक्त होगा, तो तुम शीघ्र ही मुझे नामित करोगे। मौलाना आजाद ने तुम्हें बताया होगा कि डॉ. के. एस. रॉय ने अपना त्यागपत्र मुझे भेजा है। कृपया अपना नामांकन मुझे शीघ्र भिजवा दो, ताकि मैं उसे तथा डॉ. के एस. रॉय के त्यागपत्र को निगम और कांग्रेस म्यूनिसिपल एसोसिएशन के सम्मुख पेश कर सकूं।

इस विषय में एक बात स्पष्ट करना चाहूंगा– मैं निगम या कांग्रेस म्यूनिसिपल के सम्मुख तब तक जाना नहीं चाहता, जब तक कि नामांकन वाला तुम्हारा पत्र मुझे नहीं मिल जाता। यदि मुझे नामित करने में तुम्हें कोई कठिनाई हो, तो कृपया मुझे सूचित करो–ताकि मैं डॉ. के. एस. रॉय का त्यागपत्र उन्हें वापस भिजवाऊं, जो वे मेरे पास छोड़ गए थे।

लौटती डाक से पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
बी. सी. रॉय

विश्वनाथ दास के लिए

वर्ष 1938 के कार्यकर्ता
अध्यक्षः अध्यक्ष का कलकत्ते का पता :
सुभाषचंद्र बोस
38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता
कोषाध्यक्ष
टेलीफोन : पार्क 59
जमनालाल बजाज
तार : सुवासबोस
महासचिव
जे. बी. कृपलानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद
टेलीफोन : 341, तार : कांग्रेस

कई वर्षों से मैं मालदा नही आया हूं। पिछले वर्ष जब आने की कोशिश की, तो कार्यालय के कुछ आवश्यक कार्य आ पड़े। इसलिए तुम्हारे आग्रह को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार तो कर लिया है, किंतु कई कारणों से मेरा 11 या 12 तारीख को आना संभव नहीं हो पाएगा। यदि मेरा सुविधानुसार तारीखें निश्चित हो पातीं, तो मुझे मालदा आने में बहुत प्रसन्नता होती। कृपया बाद में मुझ से विचार–विमर्श करके तारीख निश्चित करें।

मेरी ओर से मालदा जिले के सभी सहयोगी कार्यकर्ताओं कों शुभकामनाएं दें
आपका शुभाकांक्षी

सुभाषचंद्र बोस

श्रीयुत अतुलचंद्र कुमार

एम. एल. ए.

सीता धर्मवीर को

23.6.38

(वर्धा जाते समय मार्ग में)

मेरा प्रिय सीता,

क्षमा चाहता हूं कि तुम्हारे लाहौर के 23 मई के पत्र का उत्तर नहीं दे पाया। संभवतः तुम अब दिल्ली में हो। यह कहना आवश्यक नहीं समझता कि लाहौर न जा पाने से मुझे कितनी निराशा हुई थी। आशा है, दिल्ली में कभी मुलाकात होगी।

साथ में संतोष के लिए भी कुछ पंक्तियां लिख रहा हूं।

कलकत्ता में कई लोगों से मुलाकात हुई, जो संतोष को जानते हैं और उनके संबंधी हैं। कुछ लोग तुम्हारी शादी के अवसर पर मौजूद भी थे।

आशा है, तुम स्वस्थ हो और हर चीज ठीक चल रहा होगा। समय–समय पर कृपया पत्र लिखती हो। प्यार–

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष

पुनश्च : मैं स्वस्थ हूं।

बी. सी. रॉय की ओर से

36, वैलिंग्टन स्ट्रीट

कलकत्ता

15 अगस्त, 1938

मेरी प्रिय विश्वनाथ बाबू,

इस पत्र के साथ मैं रेजाउल करीम की पुस्तक की प्रति भेज रहा हूं। देश की सांप्रदायिक स्थिति को देखते हुए इस प्रकार की पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। मैं लेखक को भली–भांति जानता हूं। वह पूर्णतः राष्ट्रवादी हैं और मुझे विश्वास है कि यदि यह पुस्तक जनता में लोकप्रिय हुई, तो सांप्रदायिकता को खत्म करने में सहायक होगी। यदि आप अपने प्रांत में इस पुस्तक का उपयोग कर सकें तो मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी। इस प्रकार लेखक को सहायता और उसके कार्य में उसे प्रोत्साहन भी मिलेगा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस

सम्मानीय श्रीयुत विश्वनाथ दास
प्रधानमंत्री, उड़ीसा

अपर्णा देवी की ओर से

2, बेलताला रोड
23.8.38

सुभाष बाबू,
मैं 'कीर्तनपदावली' भिजवा रही हूं, जिसे हमने संकलित किया है।
आशा है, आप स्वस्थ हैं।

आपकी
अपर्णा दी

बी. सी. रॉय को

2 सितंबर, 1938

मेरे प्रिय डॉ. राय

मैं उस बयान की प्रति भिजवा रहा हूं, जो मैं प्रेस के लिए जारी करवाना चाहता हूं। आशा है कि मैंने तथ्यों को सह रूप में पेश किया है। यदि आपकी राय इसके विपरीत हो, तो कृपया मुझे सूचित करें।

आपका

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

सुभाषचंद्र बोस

कुछ मित्रों से बातचीत के दौरान पता चला है कि हाल ही में श्रीयुत प्रभुदयाल हिम्मतसिंगका के बंगाल लेजिस्लेटिव असेंबली से त्यागपत्र दे देने के बाद उस पद को भरने के तरीके के विषय में कुछ गलतफहमी पैदा हो गई है। ऐसी गलतफहमी कि डॉ. बी. सी. रॉय को इस पद के लिए नामित किया जा सकता था। किंतु वास्तविकता यह है कि मैं नजरबंद था और जब डॉ. बी. सी. रॉय विधानसभा चुनावों की देख–रेख कर रहे थे, तब दो प्रतियोगियों में बूराबाजार की सीट के लिए समझौता हुआ था। वे प्रतियोगी थे श्रीयुत प्रभुदयाल हिम्मतसिंगका और श्रीयुत ईश्वरदास जालान। इस समझौते के अनुसार श्रीयुत प्रभुदयाल बाबू एक या दो वर्ष के लिए सदस्य रहेंगे तथा उसके बाद वे त्यागपत्र दे देंगे। उनके स्थान पर श्रीयुत ईश्वरदास जालान को नामित किया जाएगा। डॉ. बी. सी. रॉय भी इस समझौ से वाकिफ थे।

कुछ माह पूर्व जब प्रभुदयाल बाबू त्यागपत्र देने को सोच रहे थे, तब श्रीयुत जालान ने डॉ. बी. सी. रॉय से मुलाका की और उनसे कहा कि वे श्रीयुत जालान की उम्मीदवारी को स्वीकृति देंगे। डॉ. रॉय ने श्रीयुत जालान को कांग्रेस असेंबली पार्टी के नेता श्रीयुत शरत चंद्र बोस से संपर्क करने की सलाह दी, क्योंकि वे श्रीयुत जालान की सहायता करने की स्थिति में नहीं थे। प्रभुदयाल बाबू ने त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने जनता में बयान दिया कि उन्होंने श्रीयुत जालान के हित में अपना त्यागपत्र दिया है। जब बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी समिति के सामने यह मुद्दा उठा, तो उन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद और मुझे लेकर एक उपसमिति बना दी कि हम लोग एक उपयुक्त व्यक्ति को नामित करें। उन दिनों मैं इन्फ्लूएंजा से ग्रस्त था। जब यह खबर बाहर तक फैल गई कि श्रीयुत जालान को नहीं चुनने की संभावना बन सकती है, तो बूराबाजार में उत्सुकता जागी। वहां के कुद लोग मौलाना से मिले और उनके साथ स्थिति पर विचार–विमर्श करने के बाद उन्होंने मुझे फोन पर बताया कि स्थितियों पर गौर करने के पश्चात वे महसूस करते हैं कि श्रीयुत जालान को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। मैंने इस रॉय से सहमति व्यक्त की। इस प्रकार श्रीयुत जालान को कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में नामित किया गया। इस संदर्भ में मैं बता दूं कि बहुत पहले से मैं डॉ. राय को कहता आ रहा था कि उन्हें असेंबल अथवा निगम में आ जाना चाहिए। इस बयान के अनुसार मैंने डॉ. के. एस. रॉय (भूतपर्व एल्डरमैन ऑफ कलकत्ता कारपोरेशन) को अपने पद से त्यागपत्र देने की प्रार्थना की और उनके ऐच्छिक त्यागपत्र के परिणामस्वरूप रिक्त हुए पद पर डॉ. राय को निग में लाने में सफल हुए। यदि किसी समय डॉ. रॉय ने इच्छा व्यक्त की कि वे असेंबली में आना चाहते हैं, तो संभव होगा, किंतु उपर्युक्त परिस्थितियों में डॉ. राय को बूराबाजार चुनावी क्षेत्र से असेंबली के लिए चुना जाना संभव नहीं था।

अमिता पुरकायस्थ (गुहा) के लिए

वर्धा के मार्ग में
3.9.38

प्रिय बहन,

तुम्हारे दोनों पत्र समय पर मिल गए थे, किंतु उनका उत्तर नहीं पाया। गलती मेरी है—कृपया मुझे क्षमा करो। कार्य की अधिकता की वजह से पत्रों के उत्तर देने में विलंब हो जाता है, किंतु पत्र प्राप्त कर मुझे अत्याधिक प्रसन्नता होती है। इस समय में वर्धा की यात्रा पर हूं। इसलिए गाड़ी में कुछ आराम है। 6 तारीख को कलकत्ता लौटूंगा। अगले ही दिन मद्रास की यात्रा पर निकल पड़ूंगा।

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे विशेष हर्ष हुआ । तुम कुछ कार्य करना चाहती हो और मुझसे पूछा है कि किस क्षेत्र में कैसा कार्य करूं, ताकि देश की सेवा कर सकूं। कितनी महिला कार्यकर्ता ऐसे प्रश्न पूछती हैं? हमारे देश में महिला कार्यकर्ताओं की कमी है। इस आवश्यकता को तुम पूरा करोगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। कुछ कार्यकर्ता कुछ दिन कार्य करते हैं, लेकिन फिर वे अन्य कामों में लग जाते हैं। ऐसा महिला कार्यकर्ता अधिक करती हैं। सामाजिक और पारिवारिक कारणों से महिला कार्यकर्ता अधिक समय तक सक्रिय नहीं रह पातीं। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत कारण भी होते हैं। रूचि और उत्साह की कमी, शादी घरेलू कामकाज भी इसके कारण हैं।

इसलिए पहले मैं कहना चाहूंगा कि सेवा को मिशन के रूप में स्वीकार करो। अपने मन में निश्चित कर लो कि देश—सेवा तुम्हारे जीवन का मुख्य उद्देश्य होगा। क्या तुम ऐसा कर पाओगी? मैं ऐसा कोई कारण नहीं देख रहा कि तुम ऐसा नहीं कर पाओगी।

अब कार्य का प्रश्न है। तुमने पूछा है कि तुम्हं क्या करना चाहिए। प्रश्न का उत्तर तो तुमने स्वयं दे दिया है। तुम्हें कांग्रेस का कार्य करना होगा—निश्चय ही हर प्रकार से, क्योंकि देश को स्वतंत्र कराए बिना कोई की बड़ा कार्य या कोई भी हान कार्य करना संभव नहीं है।

स्वतंत्रता प्राप्त करना केवल पुरूषों का ही कार्य नहीं है—यह स्त्रियों का भी कार्य है। 'समाज का आधा हिस्सा महिलाएं हैं—'इसलिए यदि महिलाएं जागरूक न हुईं, तो देश भी जागरूक नहीं होगा।' केवल महिला कार्यकर्ता ही समाज में स्त्रि यों को जागरूक बना सकती हैं। इसलिए तुम्हें इस क्षेत्र में आना ही चाहिए। रूकावटों और कठिनाइयों से तुम्हें घबराना नहीं चाहिए। कार्य—क्षेत्र में बेशक कई कठिनाइयां आएंगी।

यदि ऐसी रूकावटें हमें हतोत्साहित करेंगी, तो व्यक्ति कोई महान उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाएगा। कितनी महिलाएं उच्च शिक्षा पा सकती हैं? क्या तुम उच्च शिक्षा पाने के बाद देश के लिए कार्य नहीं करोगी? उस स्थिति में हम किस पर निर्भर करेंगे?

तुमने 'महिला कल्याण संगठन' बनाया है। यह बहुत अच्छी बात है। कृपया अशिक्षित महिलाओं को शिक्षित करने का प्रयास करो। साथ–साथ उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दो, ताकि निर्धन महिलाएं कुछ धनोपार्जन कर सकें। फिर घर–घर जाकर महिलाओं को शारीरिक प्रशिक्षण दिलाओं। उन्हें लाठी और तलवार चलाना भी आना चाहिए। शरारती तत्वों द्वारा महिलाओं को बल[उठां ले जाने तथा तंग करने की घटनाएं देश में आए–दिन घटती रहती हैं। ऐसा किसी अन्य देश में नहीं होता। हमारे यहां महिलाएं अभी तक कमजोर हैं। हमें महिलाओं को शक्तिशाली बनाना है। यही तुम्हारा कार्य है। हमें महिलाओं को शक्तिशाली और बहादुर बनाना है, तभी वे शक्तिशाली नायक पैदा करेंगी।

मैंने बहुत कुछ लिखा है। अब समाप्त करता हूं। समय–समय पर मुझे पत्र लिखती रहो। तुम्हारा समाचार पाकर प्रसन्न होऊंगा। मैं लगातार लिख पाने में असमर्थ हूं। इसके लिए तुम क्षमा करोगी। भगवान तुम्हारा भला करें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस

बी. सी. रॉय की ओर से

38, वैलिंगटन स्ट्रीट, कलकत्ता
10 सितंबर, 1938

मेरे प्रिय सुभाष,

तुमने जो प्रारूप मुझे भेजा है, उसमें कुछ संशोधन करके उसे वापस लौटा रहा हूं। वे संशोधन निम्न प्रकार हैः

1. यह वास्तविक नहीं है कि मैंने ईश्वरदास जालान और प्रभुदयाल के मध्य समझौते को स्वीकृति दी थी। उन्होंने व्यवस्था कर लेने के बाद मुझे सूचित मात्र किया।

2. जालान ने मुझसे यह नहीं पुछा था कि उनके और प्रभुदयाल के मध्य समझौता उचित है या नहीं। उन्होंने तो मुझसे यही पूछा था कि क्या मैं उनकी उम्मीदवारी को स्वीकृति प्रदान करता हूं? मेरा उत्तर था कि वे कांग्रेस असेंबली पार्टी नेता श्रीयुत शरतचंद्र बोस से संपर्क करें।

3. यह स्थिति उचित नहीं है कि यह कहा जाए कि आपने मुझे कहा था कि

यदि मैं असेंबली या निगम में जाना चाहूं। आपको कोई आपत्ति न हो– स्थिति यह नहीं है। जहां तक मेरा संबंध है : स्थिति यह थी कि यदि आप मुझे दोनों जगहों में से किसी भी जगह ले जाना चाहें, तो मैं कांग्रेस के हित में प्रसन्नापूर्वक अपनी सेवाएं देने को तैयार हूं।

तुम्हारे इस नोट में कुछ बों ऐसी भी हैं, जिनके विषय में मेरा व्यक्तिगत ज्ञान शून्य है। उदाहरण के लिए– 'बूराबाजार के कुछ क्षेत्रों में उत्सुकता थी, 'बूराबाजार के कुछ लोग मौलाना से मिले' आदि–आदि। जिस विषय का मुझे व्यक्तिगत रूप से ज्ञान था और जिस बातों को मैं उचित नहीं मान रहा था, उन्हीं में मैंने संशोधन किया है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
बी. सी. रॉय

सीता सेन के लिए

द्वारा एन. डी. पारीख
26, मैरीन ड्राइव, फोर्ट, बंबई
10.10.38; (तार : द्वारा – पैनडैंट बंबई)

प्रिय सीता,

मुझे अफसोस है कि मैं दिल्ली से रवाना होने से पूर्व बहुत चाहने पर भी तुमसे नहीं मिल पायां आखिरी दिन मैं अत्यधिक व्यस्त था और बहुत से कार्यक्रमों से घिरा था। जिस दिन वहां से चला, उस दिन सुबह तुमसे मिलना चाहता था, लेकिन समय नहीं मिला पाया। कुल मिलाकर, मैं बहुत निराश था कि चाहने पर भी तुमसे नहीं मिल पाया। किंतु इसके लिए मैं और मेरा कार्यक्रम जिम्मेदार हैं। बहरहाल अगली बार सही।

इस बार मुझे निश्चित रूप से मलेरिया है। शायद कानपुर में भी मलेरिया ही था, कौन जाने? बहरहाल, हमने एम. पी. को घेर लिया हैं

मैं 15 या 16 तारीख को कलकत्ता के लिए रवाना होऊंगा। आशा है, दिल्ली में मौसम अब कुछ ठंडा हुआ होगा। जब मैं वहां था, तो बहुत गर्मी थी। मुझे गर्मियां बिल्कुल भी पसंद नहीं हैं।

विनय को प्यार और तुम सब को शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभेच्छु,
सुभाषचंद्र बोस

(अस्पष्ट) के लिए, जमनालल बजाज के पत्रों में

38/2, एल्गिन रोड
कलकत्ता, 21 अक्तूबर, 1938

बंबई और वर्धा में मेरी जमनालालजी से उनके त्यागपत्र के विषय में विस्तृत चर्चा हुई। मैंने बार–बार बताया था कि कई कारणों से मैं उनके त्यागपत्र को स्वीकार नहीं कर पा रहा हूं। फिर, मेरे विचार से कार्यकारिणी के सदस्य भी मेरा राय से सहमत थे। वे कारण निम्न हैं;

1. यद्यपि मैं स्वीकार करता हूं कि जमनालालजी को कुछ समय तक पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है, किंतु इसके लिए उन्हें त्यागपत्र देने की आवश्यकता नहीं। जब सदय बीमार हो जाते हैं, तो वे आवश्यक विश्राम कर लेते हैं–लेकिन त्यागपत्र नहीं देते।

2. उनका विकल्प खोज पाना अत्यधिक कठिन कार्य होगा।

3. आठ माह का समय बीत चुका है और जब केवल चार माह का समय शेष हैं, फिर इस अवस्था में त्यागपत्र क्यों?

4. इस समय त्यागपत्र देने से अनेक अफवाहें और अंतर्कथाएं फैलंगी, उनमें से कुछ कार्यकारिणी के लिए घातक होंगी।

वर्धा में मुझे जमनालालजी ने बताया कि नागपुर का एक समाचारपत्र यह प्रकाशित कर चुका हे कि वे कार्यकारिणी से त्यागपत्र दे रहे हैं, क्योंकि कांग्रेस पार्टी का मुख्यालय संतोषजनक कार्य नहीं कर पा रहा है– इसलिए जमनालालजी को प्रधानमंत्री बनाना आवश्यक हो गया है।

इस रिपोर्ट ने मेरे पहले अनुमानों को सही ठहराया। मैंने जमनालालजी को बताया था कि-ऐसी सरासर गलत अफवाहों के कारण कार्यकारिणी को विवश होकर यह बयान देना पड़ेगा कि वे त्यागपत्र क्यों दे रहे हैं। ऐसे बयान के बारे में हम क्या कहेंगे? यह कहना सत्य नहीं होगा कि वे शारीरिक व मानसिक रूप से थके हुए हैं–इसलिए उन्हें आराम की आवश्यकता है–अतः उन्होंने त्यागपत्र दिया है। क्योंकि तब जनता तत्काल पूछेगी कि पंडित जवाहरलाल नेहरू 5 माह तक बाहर रहे, किंतु उन्होंने तो त्यागपत्र नहीं दिया।

वर्धा में हमारी मुलाकात के अंत में जमनालालजी ने मेरे तर्क की प्रशंसा की थी। मैंने उन्हें बताया था कि जितने समय तक आराम करना आवश्यक होगा, तब तक के लिए हम उन्हें पूर्ण विश्राम करने देंगे। लेकिन उन्हें त्यागपत्र देकर हमें दुविधा में नहीं डालना चाहिए। उन्होंने महसूस किया कि मुझे अंतिम उत्तर देने से पहले वे आपसे बात करना चाहेंगें अतः मैंने उन्हें बताया कि मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि आपके वर्धा लौटने तक वे कार्यभार संभाले।

मुझे प्रसन्नता होगी, यदि आप उन्हें यह सुझाव दें कि इन परिस्थितियों में उन्हें त्यागपत्र देने पर जोर नहीं देना चाहिए।

प्रणाम,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस

एम. एन रॉय की ओर से
22 अक्तूबर, 1938

मेरे प्रिय मित्र,

पिछले सप्ताह जब में लखनऊ में था, तब मुझे बताया गया कि लाला शंकरलाल किसी कार्य की वजह से आजकल यहां हैं और तुम्हारे निर्देशानुसार मुझसे मिलना चाहते हैं । दुर्भाग्यवश मैं प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी के कार्य में अति व्यस्त था; उनके पास भी समय का अभाव था– अतः हमारी मुलाकात नहीं हो पाई। यहां लौटने पर आज उनका एक पत्र मिला; जिसके साथ एक प्रारूप संलग्न है, जिस पर हस्ताक्षर करने का मुझसे आग्रह किया गया है। यह सर्कुलर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तथा प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी के सभी सदस्यों को भेजा जाएगा। इसका उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में वाम गुट बनाना है। उन्होंने लिखा है कि मेरा नाम श्रीयुत सुभाषचंद्र बोस के सुझाव पर सूची में शामिल किया गया है। जिन लोगों से हस्ताक्षर करवाने हैं, उनकी सूची भी संलग्न है।

यह कहना आवश्यक नहीं है कि मैं इस कदम का स्वागत करता हूं तथा आपको पूर्ण सहयोग देने का वायदा करता हूं–जैसा कि पहले भी करता रहा हूं। यह एक गंभीर प्रयास है, जिसकी सफलता प्रारंभिक कदमों पर ही निर्भर है। इसलिए यह सोचकर कि आप इन पर उचित ध्यान देंगे, मैं एक दो सुझाव देना चाहता हूं। चूंकि यह प्रारूप है, इसलिए जिनसे हस्ताक्षर करवाए जाने हैं–वे भी इसमें संशोधन आदि कर सकते हैं।

वैसे मैं इस प्रारूप में कही गई प्रत्येक बात से सहमत हूं, फिर भी मेरे विचार में दो–तीन संधोधन या परिवर्तन इसे और बेहतर बना देंगे। इसलिए सुझाव देने की हिम्मत कर पा रहा हूं:

1. अनुच्छेद पांच में प्रयुक्त शब्द 'सांप्रदायिक' हटा देना चाहिए। अल्पसंख्यकों को संवैधानिक सुरक्षा दिलाने के मसले को बिना शर्त सैद्धांतिक स्वीकृति देना सांप्रदायिकता को बढ़ावा देना नहीं है। राष्ट्रीय एकता के लिए भी यह खतरा नहीं है और न लोकतंत्र के ही विरूद्ध है।

2. अगले अनुच्छेद का प्रारंभिक वाक्य भी हटा दिया जाना चाहिए। वह वाक्य घोड़े के आगे गाड़ी जोतने के समान है। उससे ऐसा लगता है कि हम औपनिवेशिक नियंत्रण में रहते हुआ भी भारत की नागरिक स्वतंत्रता पा सकते हैं। जबकि नागरिक स्वतंत्रता मिलना हमारे आंदोलन की सफलता पर निर्भर है।

3. अनुच्छेद 9 में कांग्रेस के चरित्र का जो वर्णन किया गया है, उससे मैं सहमत नहीं हूं। मेरे विचार से वाम दल का कार्य कांग्रेस को भारतीय जनता की क्रांतिकारी लोकतांत्रिक पार्टी में बदलने का है। ऐसा करके ही हम वर्तमान नेतृत्व कर पाने में सफल होंगे। कांग्रेस के पूर्ण स्वतंत्रता के कार्यक्रम को समझने के लिए रानजनीतिक सत्ता हथियाने की खातिर भारत की शोषित और दमित जनता की अपनी राजनैतिक पार्टी का होना अति आवश्यक है। लोकतांत्रिक क्रांतिकारी नेतृत्व तथा प्रगतिवादी सामाजिक विचारधारा द्वारा कांग्रेस लोगों की सेवा कर सकती है। इस प्रारूप में कुल मिलाकर यह बात कही गई है। इसलिए यह पैराग्राफ इसमें ठीक नहीं।

4. संख्या 4 में 'समय की मांग' के अंतर्गत सांप्रदायिक संगठनों वे नेताओं से वार्तालाप के स्थान पर' .... से मैं सहमत नहीं । इसे भी हटा दिया जाना चाहिए। हम इस तथ्य को नकार नहीं सकते कि सांप्रदायिक ताकतों व संगठनों का भी अपना महत्व है। इन ताकतों के प्रभाव से लोगों को मुक्त कराने के लिए हमें सांप्रदायिक संगठनों व नेताओं के प्रभावों को कम करना होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें उनके कार्यों व मांगों में विचार–विमर्श के द्वारा उनको सबके सामने स्पष्ट रूप में माना होगा।

5. 'समय की मांग' में 'एक शक्तिशाली स्वयंसेवी शक्ति के निर्माण' की बात वस्तुतः प्रयासों को दुहरानें का अर्थ दे रहा है। यदि हमारा उद्देश्य स्वतंत्रता–सेन तैयार करना है, तो हमें कांग्रेस के सदस्यों को क्रियाशील बनाना होगा। स्वैच्छिक त के निर्माण के विचार से ऐसा आभास होता है कि कांग्रेस के सामान्य सदस्यों पर प्रभावशाली युद्ध के लिए निर्भर नहीं रहा जा सकता।

6. मैं स्वीकार करता हूं कि हस्ताक्षर करने वाले लोगों की सूची के विषय में मुझे कुछ उलझन है। गांधीवादी विचारधारा से जुड़े लोगों को मिलाकर वाम दल बनाने की कोई सार्थकता नहीं है । इस संदर्भ में मैं आपका ध्यान कामरेड मसानी के नेतृत्व में सी. एस. पी. के रूख की ओर आकर्षित करने पर विवश हूं, जो उन्होंने कम्युनिस्टों के प्रति अपनाया था। कांग्रेस के अंदर ही क्रांतिकारी वाम दल का निर्माण करना खतरनाक है। कामरेड मसानी का बंबई औद्योगिक–संघर्ष बिल तथा सामान्य हड़ताल के प्रति अपनाया गया रवैया वाम दल की योजना के अनुकूल नहीं है। यदि मैं वास्तव में वाम दल के निर्माण को सहायता पहुंचना नहीं चाहता; तो मेरे लिए यह बहुत कठिन

कार्य है कि मैं ऐसे लोगों का साथ दूं, जिनका रवैया फासिस्टवादी ताकतों को सहायता देना हो। मुझे आशा है कि आप अपने प्रभाव द्वारा कम्युनिस्ट–विरोधी और सी. एस. पी. की अवसरवादी नीतियों पर नियत्रंण करने में सफल हो पाएंगे–तभी आपकी प्रेरणा से प्रारंभ किए गए कार्य को सफलता मिल पाएगी भले ही वे प्रयास वास्तविक नेतृत्व के बिना ही किए जा रहे हों।

इन टिप्पणियों के साथ मैं वाम दल के प्रति अपनी वफादारी की घोषणा करता हूं और यदि मेरे सुझाव स्वीकार न भी किए गए, तो भी घोषणा–पत्र पर हस्ताक्षार करने की स्वीकृति देता हूं। यद्यपि मुझे आशा है कि वे आपके सुझावों के अनुसार घोषणा–पत्र में परिवर्तन लाने को अवश्य तैयार हो जाएंगे।

आपका शुभाकांक्षी
एम. एन. रॉय

पत्र की एक प्रति लाला शंकरलाल को सूचनार्थ प्रेषित कर दी है।

निम्न नोट को पद सख्या 6 में 'गांधीवादी विचारधारा' के साथ जोडना है– यदि मैं अन्य लोगो की सूची समर्थन में दूं, तो वह इस कार्य के लिए अधिक उपयोगी रहेगा। आपसे सूचना मिलने के पश्चात मैं कुछ नामों का सुझाव दूंगा।

सेवा मे,

सुभाषचद्र बोस,
38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता

।निक दूरबीन' के लिए
1938 के लिए कार्यकर्ता
अध्यक्ष: अध्यक्ष का कलकत्ता का पता :
सुभाषचंद्र बोस 38/2, एल्गिन रोड,
कोषाध्यक्ष कलकत्ता
जमनालाल बजाज टेलीफोन
पार्क 59
महासचिव तार
सुवासबोस
जे. बी. कृपलानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

स्वराज भवन, इलाहाबाद
टेलीफोन : 341, तार : कांग्रेस

संदेश

बंगाल और असम में एक राष्ट्रवादी मुस्लिम दैनिक समाचारपत्र की अति आवश्यकता है। बंगाल के लोगों, विशेष रूप से मुस्लिम जनता में स्वतंत्रता के संदेश को फैलाने के लिए इसकी जरूरत है। स्वतंत्रता की प्रकृति, स्वतंत्रता–प्राप्ति के साधन, स्वतंत्रता प्राप्त होने पर साधारण जनता को क्या आर्थिक लाभ मिलेंगे–ये सब बातें यदि बंगाल की मुस्लिम जनता में प्रचारित की जाएं, तो वे भी स्वतंत्रता आंदोजन के प्रति अवश्य आकर्षित होंगे। तब उन्हें पता चलेगा कि कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी राष्ट्रीय संस्था है; अतः यदि स्वतंत्रता पानी है, तो कांग्रेस में शामिल होने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।

मुस्लिम बंगाल के लिए राष्ट्रीय दैनिक 'दूरबीन' का प्रकाशन मौलवी रेजाउल करीम के संपादन में किया जा रहा है। मैं इस अखबार को शुभकामनाएं देता हू और इसकी तरक्की की कामना करता हूं।

सुभाषचंद्र बोस
23.10.38

अमला नंदी (शंकर) के लिए

1938 के लिए कार्यकर्ता

अध्यक्षः अध्यक्ष का कलकत्ता का पता :
सुभाषचंद्र बोस 38/2, एल्गिन रोड,
कोषाध्यक्ष कलकत्ता
जमनालाल बजाज टेलीफोन
पार्क 59
महासचिव तार
सुवासबोस
जे. बी. कृपलानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद
टेलीफोन : 341, तार : कांग्रेस

11.11.38

प्रिय अमला,

तुम्हारी पुस्तक 'सात सागरेर पारे' ने मुझे नए प्रकार की खुशी दी है। यूरोप के कुछ संभ्रांत व्यक्ति भारतीय सिंद्धातों को कितनी इज्जत देते हैं, उसकी व्याख्या तुम्हारी पुस्तक में कई स्थानों पर हुई है। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह तुम्हें उन लोगों की कोटि में खड़ा करे, जो भविष्य में भारतीय संस्कृति व साधना के लिए सम्मान का कारण बनेंगे।

हमेशा की तरह मेरी हार्दिक शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस

प्रिय सुश्री अमला नंदी

कलकत्ता

एम. एन. रॉय की ओर से

13, मोहिनी रोड, देहरादून
1 फरवरी, 1939

मेरे प्रिय मित्र,

यह आवश्यक नहीं था कि मैं बधाई संदेश भेजूं। ऐसी औपचारिकताओं की अपेक्षा अन्य कई गंभीर कार्य हमें करने हैं। मैं नहीं जानता कि मेरी ओर से दिया गया कोई सुझाव स्वागत योग्य है या नहीं। मैं जनता में या व्यक्तिगत रूप से तुम्हारे पत्राचार में उसे व्यक्त नहीं करता हूं। किंतु मालदा से तुम्हारा विचार सुनने के बाद मैं इसे अपना कर्तव्य समझता हूं कि निम्न पंक्तियां लिखूं।

मेरे विचार में, गांधीजी के बयान के बाद तुम्हारे पास कोई विकल्प नहीं बचा है। मैं नहीं जानता, उस बयान ने तुम पर क्या प्रभाव डाला है। मैं इसे गांधीवादी रूप में युद्ध की घोषणा मानता हूं—अर्थात असहयोग जो कि कांग्रेस की अंदरूनी शक्तियों द्वारा जानबूझकर यह रूकावट पैदा की जा रही है, ताकि तुम्हें और तुम्हारे सहयोगियों को नीचा दिखाया जा सके। गांधीजी के बयान का स्पष्ट अर्थ यह हैं कि कांग्रेस—अध्यक्ष के रूप में तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं है तथा जिन्होंने तुम्हारे चुनाव का विरोध किया, वे ठीक थे। उस असंगतता का तार्किक निर्णय यही है कि आपको कांग्रेस की

एकता के लिए और गांधीजी के नेतृत्व में अपना बलिदान देना चाहिए। मेरा निश्चित धारणा है कि इस प्रकार का बलिदान एकता के लिए अत्यधिक मूल्यवान है, पर कांग्रेस को अत्यधिक हानि पहुंचा सकता है। यह सोचना सरासर गलत है कि सुधारवादी गांधीवादी नेतृत्व को कायम रखना ही एकमात्र उपाय है और यही कांग्रेस की एकता का एकमात्र उपाय है। वास्तव में क्रांतिकारी संगठन की एकता, विकास और शक्ति के लिए यह अति आवश्यक है कि समय–समय पर ऐसे तत्वों को निकाल बाहर किया जाए, जो अपनी इच्छा को पूरे संगठन पर लाद देते हैं। इस चुनाव ने यह सिद्ध कर दिया है कि कांग्रेस के अधिकांश लोगों का विश्वास पुराने नेताओं पर से उठ चुका है। यह आपका उत्तरदायित्व है कि आप अधिकांश व्यक्तिओं के निर्णय कों तार्किक रूप में पेश करें । उस हौसले व धैर्य से काम करें, जो महान संस्था के चुन गए से अपेक्षित हैं।

जहां तक यह प्रश्न है कि आपको क्या करना चाहिए–मैं यही सुझाव देना चाहूंगा, जो पिछले वर्ष आपके चुनाव के बाद दिया था कि इस वर्ष ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि आप स्वयं को इस पद पर बनाए न रखें। मैं आपके समर्थक वामपंथियों के बयान से अचंभित हूं कि उनका मानना है कि आपको उन पुराने नेताओं से सहयोग प्राप्त करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए, जो बहुमत के विश्वास को झुठना रहे हैं। इस वर्ष के अध्यक्षीय चुनाव के परिणाम का महत्व गांधीजी के स्वयं के चरित्र पर स्पष्ट आक्षेप है। यह उनकी हार है। इस स्थिति में क्या किया जाना चाहिए, इस बारे में संशय की कोई गुंजाइश नहीं है। कांग्रेस को नया नेतृत्व प्रदान किया जाना चाहिए था; जो गांधीवादी सिंद्धांतों और लक्ष्यों से पूर्णतः मुक्त हो, जो कि अब तक कांग्रेसी राजनीति का निर्धारण करते आए हैं। गांधीवादी सिद्धांतों को उपनिवेशवाद–विरोधी ईमानदार राजनीति के साथ जोड़ा नहीं जा सकता। वाममार्ग के लक्ष्यों को इस प्रकार की किसी भी परिकल्पना से मिलाया नहीं जा सकता।

विघटन से घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरी ओर, अलगाव की आड़ी रेखा खींचने में कोई हानि नहीं है। मुट्ठी–भर नेता, जिन्हें संगठन में अंधविश्वास प्राप्त है; वे कांग्रेस को उसके उद्देश्यों से दूर ले जा रहे हैं। जब बहुमत के समर्थन द्वारा एक नया नेतृत्व कार्य करने को तैयार है और कांग्रेस को सही मार्ग पर लाने की कोशिश में है, तब कांग्रेस के पुराने नेताओं को यह सोचना चाहिए कि वे कांग्रेस के प्रति वफादार रहना चाहते हैं या व्यक्तिगत अभिमान के कारण इसे छोड़ देना चाहते हैं।

संक्षेप में, आप अभी भी कार्यकारिणी में पुराने नेताओं को अवसर प्रदान कर सकते हैं कि वे अपने प्रभुत्व के समाप्त हो जाने के बावजूद सेवा कर सकते हैं। किंतु यदि उन्हें आपके बहुमत के समर्थन से अध्यक्षीय चुनाव जीतने के बाद कार्यकारिणी

के चुनाव में हस्तक्षेप करने की छूट दी जाए, तो यह कदम आत्मघाती होगा। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण जो बात है; वह यह है कि कांग्रेस के नए नेता में ऐसा साहस और ऐसी प्रतिबद्धता होनी चाहिए कि वह गांधीजी की इच्छाओं के बावजूद तब स्वंतत्र रूप में कार्य कर सकें, जब देश में क्रांतिकारी आंदोजन की आवश्यकता हों।

इस तथ्य को सामने रखकर कि हारा हुआ अवसरवादी गुट युवा वामदल के नेतृत्व के कार्यों में बाधा उत्पन्न करने में हर संभव शक्ति का प्रयोग करेंगा, ताकि उसे नीचा दिखा सके—हमें चाहिए कि हम कार्य को संगठित रूप में करें, न कि किसी बहुत बड़े राजनीतिक प्रदर्शन पर बल दें। वाममार्ग की विजय का उत्सव मनाना जल्दबाजी होगी। दुर्भाग्य से संवैधानिककता बड़े नेताओं के छोटे—से क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि मंत्रालयों को स्वीकार कर लेने के कारण यह संगठन के उच्च एवं निम्न पदों तक फैल चुका है। जो लोग वाममार्गियों के साथ दिखाई देते हैं, वे भी सुधारवादी कारणों से भ्रष्ट हैं। पुरे देश की जिला कांग्रेस कमेटियां ऐसे ही तत्वों के नियंत्रण में हैं। इस नियंत्रण से आज भी क्षेत्रीय स्वनियंत्रित संगठन लाभ उठा रहे हैं। नए वाममार्गी नेता का प्रथव कर्तव्य यही होगा कि वह इन लघु संस्थाओं को ऐसे अवांछित तत्वों के नियंत्रण से बचाए। दूसरे शब्दों में, सबसे पहले संगठन की समस्या को हल करना होगा।

इस प्रकार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिवालय का गठन सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। नीचे से ऊपर तक संगठन के निर्माण का उत्तरदायित्व अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिवालय का होना चाहिए। ऐसे केंद्रीकृत निर्देशन व नियंत्रण द्वारा उन प्रांतीय झगड़ों और शत्रु—गुटों का अंत संभव हो सकता है, जो फिलहाल कांग्रेस में उपस्थित है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी कें संगठन सचिव का पद किसी अनुभवी व्यक्ति को सौंपा जाना चाहिए।

कठोर और निर्णायक कदमों का सुझाव देने में मैं उन समस्याओं कों कम करके नहीं आंक रहा, जो सामने उपस्थित होने वाली हैं। मुझे लगता है कि नई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का उदारवाद के प्रति रूझान रहेगा। इससे इस स्पष्ट नीति में बाधा पैदा होगी कि आप के सहयोगियों को बहुसंख्या में कार्यकारिणी में शामिल किया जाए। आपको देशबंधु के अनुभव को दुहराना होगा और आपातकाल के लिए तैयार रहना होगा। इस कठिनाई का सामना करने के उद्देश्य से आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की वर्तमान कार्य—पद्धति का अनुगमन नहीं कर सकते।

किंतु अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा पैदा की गई कठिनाइयों को पार करने की एक लोकतांत्रिक पद्धति भी है। यह सदस्यों के बहुमत (मेरा अभिप्राय मूड से है) को नहीं दर्शाती। वह मार्ग यही है कि आप विशेष अधिवेशन बुलाएं, जो कि निश्चित रूप से आपकी नीति को आखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के विरूद्ध पेश

करेंगी। इस विशेष अधिवेशन में निर्णयात्मक बहुमत, जिसे निश्चित रूप से आमंत्रित किया जाएगा, वामपंथियों द्वारा ही प्राप्त किया जाएगा—जिसके द्वारा जिला कांग्रेस कमेटी के नियंत्रण का कार्य, नीचे की समितियों पर नियंत्रण स्थापित करके तथा प्राइमरी सदस्य का राजनीतिक स्तर बढ़ा कर किया जाएगा।

अंत में; कांग्रेस द्वारा जिस नीति का अनुपालन आप करवाना चाहते हैं, वह उस प्रस्ताव में पूर्ण रूप से वर्णित होनी चाहिए जिसे कांग्रेस अधिवेशन में परिचर्चा के लिए पेश किया जाना है। इस प्रकार आप पुराने नेताओं की वास्तविकता को उजागर करने का अवसर पाएंगे।

यह प्रस्ताव कार्यकारिणी के समक्ष पेश किए जाने हैं जिसके वर्तमान गठन के मुताबिक वे आप द्वारा अध्यक्षीय चुनाव में पेश की गई स्पष्टवादिता के कारण उन प्रस्तावों को पारित नहीं करेंगे। उस स्थिति में आपको अपने प्रस्ताव सीधे कांग्रेस के समक्ष पेश करने होंगे तथा पुराने नेताओं की स्पष्ट नीति का खुले—आम विरोध करने पर मजबूर होना पड़ेगा। इस प्रकार वास्तविका मुद्दे स्पष्ट होंगे और उच्च राजनीतिक स्तर पर विवाद उठ खड़ा होगा। इससे आंदोलन के विकास में बहुत मदद मिलेगी।

यह कहना आवश्यक नहीं है कि मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं। जब भी मेरे सहयोग की आवश्यकता हो, मुझे पर निर्भर कर सकते हो। पत्र—व्यवहार में अधिक नहीं कहा जा सकता तथा कई सुझावों में विस्तुत वार्तालाप अपेक्षित है, जो मिलने पर ही संभव है। इस माह के मध्य में मेरी कलकत्ता आने की संभावना है। तब हम व्यक्तिगत रूप से उन मुद्दों पर चर्चा कर सकेंगे। मैं यह जानना चाहूंगा कि आप मुझसे क्या अपेक्षा रखते हैं?

शुभकामनाओं और हार्दिक बधाई के साथ,

आपका शुभाकांक्षी,
एम. एन. रॉय

मुस्तफा अल नाहस पाशा के लिए

डी. एल. टी.
मुस्ताफा अल नाहस पाशा
हेलियोपोलिस
काहिरा

मिस्त्र

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से मैं आपको और आपके सहयोगियों को कांग्रेस के सालाना अधिवेशन में त्रिपुरी में 10 मार्च को सादर आमंत्रित करता हूं और बाद में कुछ दिन मिस्त्र के नेता के रूप में यहां ठहरने का आमंत्रण देता हूं। आपकी यात्रा से दोनों देशों के बीच सद्‌भावना को शक्ति मिलेगी और हमारे देशवासियों के लिए यह प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा। आपके प्रवास के दौरान भारत आपको हार्दिक स्वागत व सम्मान प्रदान करेगा।

सुभाष बोस
अध्यक्ष

सुभाषचंद्र बोस
38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
7 फरवरी, 1939

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी महासचिव के लिए

वर्ष 1938 के लिए कार्यकर्ता
अध्यक्षः अध्यक्ष का कलकत्ता का पता :
सुभाषचंद्र बोस
38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता
कोषाध्यक्ष
जमनालाल बजाज — टेलीफोन
पार्क 59
महासचिव — तार
सुवासबोस
जे. बी. कृपलानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद
टेलीफोन : 341, तार : कांग्रेस
सेवा में,
कार्यकारी महासचिव
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

इलाहाबाद
28 फरवरी, 1938

प्रिय मित्र,

आप जानते ही हैं कि मिस्त्र का प्रतिनिधिमंडल त्रिपुरी कांग्रेस में भाग लेने जा रहा है। कांग्रेस अधिवेशन के बाद हमें उनके लिए दस दिन की यात्रा का कार्यक्रम बनाना है। कृपया महत्वपूर्ण प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों से यह पूछने के लिए परिपत्र भेज दें कि क्या वे इस प्रतिनिधिमंडल को अपने प्रदेशों में आमंत्रित करना चाहेंगे? क्या वे अपने प्रांत में उनका खर्च वहन कर पाएंगे? आपको उनसे यह भी कहना है कि वे उन्हें अधिकतम सुविधाएं उपलब्ध कराएं। लाहौर, दिल्ली, लखनऊ, आगरा, इलाहाबाद, बनारस, पटना, कलकत्ता, मद्रास , नागपुर आदि शहरों में ही घूमने लायक समय उनके पास होगा। मार्ग के स्थानों को हमें छोडना होगा। वे लगभग पंद्रह दिन भारत में रहेंगे। इनमें से 3–4 दिन वे त्रिपुरी में बिताएंगे। प्रांतीय कांग्रेस कमेटियां आपको त्रिपुरी के पते पर अपने उत्तर भिजवा सकती हैं। मैंने स्वागत समिति से त्रिपुरी में उनके रहने की व्यवस्था करने के लिए कह दिया है।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाषचद्र बोस

एम. एन. रॉय की ओर से

3 बी, स्टोर रोड
बालीगंज
कलकत्ता
5 मार्च, 1939
सेवा में,
सुभाषचंद्र बोस
अध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
त्रिपुरी

प्रिय मित्र,

अपनी यात्रा से इंफ्लूएंजा लेकर लौटा हूं। यह जानकर बहुत कष्ट हुआ कि आप भी बीमार थे। इसलिए हमारा पुनः मिलना संभव नहीं हो पाया तथा हम शेष विषयों पर बातचीत नहीं कर पाए। मुझे विश्वास है कि 6 तारीख के त्रिपुरी सम्मेलन में आपके

समर्थकों द्वारा पेश किया जाने वाला प्रस्ताव स्वीकृत हो जाएगा। बिस्तर पर पड़ा होने के कारण मैं 6 तारीख से पहले त्रिपुरी नहीं पहुंच सकता। इसलिए मैंने प्रस्तावों के प्रारूप कामरेड जयप्रकाश नारायण को भिजवा दिए हैं। मेरे विचार से यह उन लोगों द्वारा प्रायोजित होना चाहिए, जिन लोगों को भविष्य में कांग्रेस के मार्गदर्शन का उत्तरदायित्व संभालमा है। उन प्रारूपों की प्रतियां संलग्न हैं। मुझे विश्वास है कि इन प्रस्तावों के पक्ष में बड़ी संख्या में मत (प्रतिनिधियों का) प्राप्त होगा। यदि अन्य वाममार्गी दलों ने भी अपना समर्थन दिया, तो बहुमत अवश्य प्राप्त हो जाएगा।

मैं 7 तारीख को बंबई मेल से त्रिपुरी पहुंचूंगा। आशा करता हूं कि अत्यधिक श्रम के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ेगा नहीं।

आपका शुभाकांक्षी
एम. एन. रॉय

जैकब गुणानिधि विश्वास के लिए

वर्ष 1938 के लिए कार्यकर्ता
अध्यक्ष:
सुभाषचंद्र बोस
कोषाध्यक्ष
जमनालाल बजाज
महासचिव

जे. बी. कृपलानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद

झीलगुड़ा पोस्ट ऑफिस
जिला मानभूम
बिहार
14.4.39

मेरे प्रिय श्री विश्वास,

जब से मैंने समाचारपत्रों में नए मनोनीत काउंसलरों की सूची देखी है, तभी से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था। जब आप काउंसलर थे, तब उन्होंने आपको

सच्चाई व स्पष्टवादिता से कार्य करने के लिए दंडित किया। आपके चरित्र की जानकारी मुझे हैं अतः मुझे विश्वास है कि इस बार आपका नाम शामिल न होने से आप परेशान नहीं होंगे।

मैं वर्ष 1924 से निगम से संबद्ध रहा हूं। आपको मालूम ही है कि मुझे किसी की खुशामद या बिना वजह प्रशंसा करने की आदत नहीं है। बिना बढ़ा–चढ़ाकर बात कहने के बावजूद मैं यह कह सकता हूं कि यह मेरे अनुभव में पहली बार देखने में आया है कि जब मनोनीत क्रिश्चन काउंसलर ने निगम के अपने कर्तव्यों को एक सचचे क्रिश्चयन के रूप में पूरा किया हो। आपकी समझ की मैं कद्र करता हूं। मुझे विश्वास है कि हमारी अभिन्न मैत्री और भी गहरी होगी।

वापसी पर आपसे मिलने की प्रतीक्षा में हूं। मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य में हम लोग सहयोग करेंगे और अन्य क्षेत्रों में मिल–जुलकर कार्य करेंगे।

मैं तेजी से स्वास्थ्य–लाभ कर रहा हूं।

सादर,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस

अमियनाथ बोस के लिए

जामदोबा
17.4.39

मेरे प्रिय अमि,

पिछले दो माह से मैं बिस्तर पर हूं यह सबसे लंबी व बुरी बीमारी है। मुझे ब्रोंको–न्यूमोनिया कुछ और बीमारियों के साथ हो गया है (लीवर और आंतों में संक्रमण है)। इस बिमारी के साथ–साथ राजनीतिक संकट के कारण मानसिक उद्वेग भी है। मुझे किसी भी प्रकार का शारीरिक अथवा मानसिक आराम नहीं मिल पाया। तेज बुखार होने के बावजूद बिस्तर में कार्य करना पड़ता है। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि मैं कभी स्वस्थ नहीं हो पाऊंगा। किंतु संकट की घड़ी बीत गई है। मैं स्वस्थ होने को हूं। 21 तारीख को मैं कलकत्ता जाऊंगा। वहां बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी की वार्षिक बैठक और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक भी है। तापमान सामान्य है, कमजोरी लंबे समय तक चलेगी। यदि जा सका, तो गर्मियों में परिवर्तन के लिए जाऊंगा। देखते हैं, क्या होता है!

आपके कागजात मिल गए हैं। अतः आपने बयान और उसके उत्तर में जारी बयान (जो कि अध्यक्षीय चुनाव के पहले और बाद में जारी किए गए थे) साथ ही कांग्रेस का लेखा–जोखा भी देखा होगा। पुराने नेताओं का मानना है कि मुझे चुनाव में 25 या

30 प्रतिशत मत प्राप्त होंगे; इसलिए नतीजे से उन्हें धक्का लगा हैं। उन लोगों में बेचैनी का आलम है। उन्हें लगा कि न केवल सात प्रांतीय सरकारें उनके हाथों से फिसली जा रही है, बल्कि गांधीवादियों को लगा कि उनका 20 वर्ष का कार्य एक दिन में धुल गया। उनका सारा नजला मुझ पर गिरा। देशबंधु के बाद से किसी ने भी उन्हें इतनी बुरी तरह नहीं हराया था। तब गांधीजी ने बयान जारी किया। उन्होंने पुराने नेताओं को बचाते हुए कहा कि उनकी हार मेरी हार है। केंद्रवादियों की राय बदलने लगी। वे हमें समर्थन देने का बाध्य थे किंतु जैसा कि उन्होंने बताया, वे गांधीजी को निकाल बाहर करने को तैयार नहीं थे।

मेरी अस्वस्थता उस समय की सबसे बुरी घटना थी। त्रिपुरी निश्चय ही हमारी हार थी। किंतु जैसा कि बंबई के मेरे एक मित्र ने मुझे बताया था, यह बिस्तर में पड़े एक ऐसे बीमार आदमी का मसला है; जो (1) पुराने नेताओं के 12 महारथियों, (2) जवाहरलाल नेहरू, (3) सात प्रांतीय सरकारों (जो पुराने नेताओं का प्रचार करने में संलग्न हैं) तथा (4) महात्मा गांधी के नाम, प्रभाव व सम्मान से संघर्ष कर रहा था। उन्होंने इस हार को नैतिक विजय की संज्ञा दी।

हार की वजह सी. एस. पी. (कांग्रेस समाजवादी पार्टी) के नेतृत्व द्वारा धोखा दिया जाना भी था और कार्यों में हुई गलतियों के भी काराण। अब सी. एस. पी. की जड़ें हिल गई हैं, क्योंकि उसके नेताओं की त्रिपुरी नीति के कारण कार्यकर्त्ताओं में विद्रोह की भावना पैदा हो गई है। कम्युनिस्ट पार्टी भी सी. एस. पी. नेताओं द्वारा निर्धारित नीतियों (सी. एस. पी. नेताओं के साथ गुप्त समझौता) का बिल्कुल उलट हुआ।

संकट की इस घड़ी में मुझे व्यक्तिगत रूप में किसी व्यक्ति ने इतनी हानि नहीं पहुंचाई, जितनी पंडित नेहरू ने। यदि वे हमारा साथ देते, तो हमें बहुमत प्राप्त होता। यदि वे तटस्थ भी रहते, तो भी हमें बहुमत मिलता। किंतु त्रिपुरी में उन्होंने पुराने नेताओं का साथ दिया। मेरे विरूद्ध उनके प्रचार ने मुझे 12 महारथियों के कार्यों से भी ज्यादा हानि पहुंचाई। कितने दु:ख की बात है यह!

फिलहाल भविष्य अनिश्चित है। मेरे और गांधीजी के बीच वार्तालाप चल रहा है। किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगें या नहीं, अभी कहना कठिन है। यह भी संभव है कि अंततः मुझे त्यागपत्र देना ही पड़े।

जनता की नजर में सी. एस. गिरी है। किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि इससे एम. एन. रॉय को लाभ हुआ है। वे आजकल बंगाल की यात्रा पर हैं। हर जगह उनका सम्मान किया जा रहा है। बंगाल में उनके प्रति सहानुभूति है, किंतु क्या वे कोई पद पा सकेंगे? यह उनके समर्थकों पर निर्भर है कि वे किन लोगों से समझौता करते हैं।

वे अति व्यक्तिवादी है। इसलिए मिलकर कार्य करने में असमर्थ हैं। यही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी है।

अध्यक्षीय चुनाव और उसके बाद की घटनाएं कितनी भी दुर्भाग्यशाली क्यों न हो, लेकिन उन्होंने राजनीतिक जागरूकता को प्रखर किया है। बाद में ये प्रगति के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। हमारा भविष्य फिलहाल कुछ भी हो, लेकिन अंततः है उज्जवल। एक यथार्थवादी के रूप मेंमैं यह कह रहा हूं। 90 प्रतिशत प्रगतिशील और क्रांतिकारी शक्तियां हमारे साथ है।

मुझे खेद है कि अध्यक्षीय चुनाव के बाद जवाहर की स्थिति खराब हुई है–विशेष रूप से त्रिपुरी में उनके रवैये के कारण उनके अपने प्रशंसक ही उनसे खफा हो चुके हैं। प्रतिनिधियों ने डेढ़ तक उन्हें सुनने से इंकार किया, वे तभी शांत हुए जब मेजदादा (शरदचंद्र बोस) ने उनसे शांत रहने की अपील की। ऐसा कभी नहीं हुआ था। आज एक कभी नहीं।

प्यार,
सदैव आपका,
सुभाष

एम. एन. रॉय की ओर से
3 बी, स्टोर रोड
बालीगंज, कलकत्ता
18 अप्रैल, 1939

प्रिय मित्र,

विजयनगरम जिला कांग्रेस कमेटी ने मुझे उस ज्ञापन की प्रति भेजी है, जो उन्होंने तुम्हारे सम्मुख पेश किया। मुझसे कहा गया है कि विचारवादियों के मुद्दे को उठाने की आवश्यकता के बारे में आपकसे कहूं। यदि मैं उनसे इस विषय में न्याय नही चाहता होता, तो निश्चय ही मैं ऐसा नहीं कर पाता और संबद्ध गुट का सदस्य न होता। विजयनगरम जिला कांग्रेस संगठन दो वर्षों से वामपंथी के नियंत्रण में था। पी. सी. सी. उन्हें हटाने की कोशिश में है और इस प्रयास में वह हर प्रकार का हथकंडा अपनाने को तैयार है। फिर भी क्रांतिकारियों के नियंत्रण को कमजोर करना संभव नहीं हुआ, क्योंकि वे अच्छा कार्य कर रहे थे तथा सभी सदस्यों का विश्वास उन्हें प्राप्त था। इस विषय का विस्तृत वर्णन ज्ञापन में किया गया है। मुझे आशा है कि आप समय निकालकर इसे पूरा पढ़ेंगें और ऐसे निर्देश जारी करेंगे, जिससे क्रांतिकारियों को दक्षिणपंथियों के षड्यंत्रकारी आक्रमण से बचाया जा सके। यह बता दूं कि इस जिले के सभी तेरह प्रतिनिधियों ने आपके पक्ष में मत दिया और इस कारण भी डी.सी.सी. उन पर आक्रमण

कर रही है।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपका स्वास्थ्य अब ठीक है। आप अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने योग्य हो गए हैं। आप बहुत कठिन परिस्थितियों से घिरे हैं तथा उपनिवेशवाद–विरोधी सभी लोगों से आपको पक्का और सही समर्थन मिलना आवश्यक है। मैं पूर्ण सहयोग का वायदा दोहराता हूं तथा इस तथ्य से भी परिचित हूं कि किन्हीं कारणों से (जिनसे मै अनभिज्ञ हूं) आपको मेरी वफादारी के प्रति संशय हैं वास्तविकता यह है कि मुझे यह रिपोर्ट मिली है कि हाले ही में मित्रों से वार्तालाप के दौरान आपने मुझे एक कैरियरिस्ट के रूप में परिचित कराया। मुझे उस पर विश्वास नहीं हो रहा । फिर भी मैं आपके उस प्रयास का स्वागत करूंगा, जो आप इस भावना को हटाने के लिए करेंगे। मुझे विश्वास है आप उचित समझेंगे, तो ऐसा अवश्य करेंगे।

शुभकामनाओं और हार्दिक बधाई सहित,

आपका शुभेच्छु,
एम. एन. रॉय

श्रीयुत सुभाषचंद्र बोस
जामदोबा

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी महासचिव के लिए

वर्ष 1938 के लिए कार्यकर्ता
अध्यक्ष : अध्यक्ष का कलकत्ता का पता :

सुभाषचंद्र बोस
कोषाध्यक्ष
जमनालाल बजाज
पार्क 59
महासचिव
सुवासबोस
जे. बी. कृपलानी

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
टेलीफोन :

तार :

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद
टेलीफोन : 341, तार : कांग्रेस

झीलगुड़ा पोस्ट ऑफिस

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

जिला : मानभूम
18 अप्रैल, 39
सेवा में,
कार्यकारी महासचिव
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
इलाहाबाद

प्रिय मित्र,
आज ही मैंने आपको निम्न तार भेजा है:

कृपया सभी प्रादेशिक कांग्रेस कमटियों को तार द्वारा सूचित करें कि 23 अप्रैल को 'युद्ध विरोधी दिवस' के रूप में मनाएं। आज ही प्रेस सूचना भी जारी की है-- सुभाष बोस।

आज जो बयान प्रेस में जारी किया, उसकी प्रति भी इसके साथ भेज रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी,
सुभाषचंद्र बोस

सीता सेन के लिए

झीलगुड़ा पोस्ट ऑफिस
जिला : मानभूम
बिहार
18 अप्रैल, 39

मेरी प्रिय सीता,

तुम्हारे पहले बच्चे के जन्म पर बधाई का पत्र मैं बहुत पहले लिख चुका होता, जब लीला से मुझे यह समाचार मिला। उसने बताया कि तुमने काफी तकलीफें उठाई, किंतु अब पहले से बेहतर हो। मुझे आशा है कि अब तुम और तुम्हारा बच्चा दोनों ही स्वस्थ होंगें।

पिछले दो माह से मैं बहुत कष्ट में हूं--विशेष रूप से संकट की घड़ी में अपने स्वास्थ्य के बिगड़ जाने के कारण। बहरहाल संकट टल गया है। मैं ठीक हो रहा हूं और जीवन के संघर्ष के लिए एक बार फिर तैयार हो गया हूं। 21 तारीख को मैं कलकत्ता जा रहा हूं।

संतोष के पिछले पत्र का उत्तर न दे पाने के कारण मैं उससे क्षमा चाहता

हूं, जो उसने मेयो अस्पताल या किसी के विषय में लिखा था। मैं इस विषय में सहायता करने को तैयार था—हालांकि मैं नहीं जानता कि कोई परिणाम निकलेगा इसका या नहीं। किंतु अवांछित घटनाओं ने मुझे घेर लिया है : यह भी नहीं जान पर रहा कि सिर के बल खड़ा हूं या पैरों के बल।

मैं नही जानता कि फिर कब तुम्हें पत्र लिख पाऊंगा क्योंकि मैं उद्देश्य प्राप्ति के लि प्रयत्नरत हूं। किंतु कृपया समय—समय पर अपनी सूचना मुझे देती रहना।

प्यार सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाषचंद्र बोस

बोस—गांधी पत्राचार 1940—41
38/2 एलगिन रोड,
कलकत्ता,
23—12—1840

प्रिय महात्माजी,

महादेवभाई प्रेसीडेंसी जेल में मुझसे मिले तो मैंने उनके जरिये आपको एक संदेश भेजा। मैंने उनसे आपको यह बताने का अनुरोध किया कि अगर आप आंदोलन शुरू करते हैं तो हमारी यथायोग्य सेवायें पूरी तरह आपके जिम्मे सौंप दी जाएगीं। मैंने उन्हें आपसे बंगाल विवाद के निपटारे के लिए पहल करने का अनुरोध करने को भी कहा था, ताकि यह प्रांत आंदोलन में अपनी पूरी ताकत लगा सके। चूंकि आप सर्वेसर्वा (डिक्टेटर) नियुक्त किए गए थे, इसलिये आप कांग्रेस की ओर से आसानी से इस मामले में हस्तक्षेप कर सकते हैं, मैंने ऐसा ही सोचा।

उस समय मेरी दिली अपेक्षा थी कि आप जन—आंदोलन शुरू करें, जैसा 1921, 1930 और 1932 में किया था। यद्यपि महोदवभाई ने मुझे बताया कि आप व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा के बारे में विचार कर रहें हैं। अभी यह स्पष्ट है कि आपके द्वारा शुरू किया गया आंदोलन जन संघर्ष है। अगर सरकार ने युद्ध—विरोधी भाषण की अनुमति दे दी तो मुझे लगता है कि यह आंदोलन समाप्त हो जाएगा। फिर भी, जहां तक हमारी रानीतिक सोच के अनुरूप हमारे वश में होगा, हम आंदोलन की संकुचित व्यापकता और ढांचे के बावजूद इसमें सहयोग करना चाहेंगे। हम जानना चाहते है कि क्या आपको हमारा यथायोग्य सहयोग स्वीकार होगा और अगर सहयोग स्वीकार होता है तो आप हमसे क्या काम लेना चाहेंगे। आपको जो सहयोग अर्पित किया गया है वह

इस मायने में बिना शर्त है कि हमारी कांग्रेस आलाकमान से जो भी शिकायत हो, हमारे रास्ते में बाधक नहीं होगी। अगर और जब आलाकमान हमारे साथ अनुचित और अन्यायपूर्ण ढंग से पेश आएगी तो हमारी प्रतिक्रिया तदनुरूप होगी। हम उसका विरोध करेंगे जैसे इस समय हम मौलाना अबुल कलाम आजाद की मनमानी और स्वेच्छाचारी कार्रवाई का विरोध कर रहे हैं। लेकिन इसके कारण देश के सामने जो महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, उनकी अनदेखी हम कतई नहीं कर सकते और उनमें आप हमारी राजनीतिक सोच के अनुरूप हमारा पूरा सहयोग पा सकते हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप हमारा सहयोग स्वीकार करें।

बंगाल की स्थिति के बारे में मैंने महोदव भाई को बताया था कि अगर आप एकता चाहते हैं तो यह आपकी इच्छा मात्र से हो सकती है और इसके लिये केवल आपके और मेरे भाई शरत बाबू की बातचीत जरूरी है। तब से स्थिति खराब हुई है। आपने इस मामले में मौन और विरक्त रहना पसन्द किया है।

मौलाना कथित आनुशासनिक कार्रवाई के बौराहे रास्ते पर सिर के बल चल रहे हैं। मुझे इससे कोई परेशानी नहीं है क्योंकि अगर वे चाहते हैं तो हम उनसे उन्हीं के तरीके से सामना कर लेंगे। वे हमारी सार्वजनिक प्रतिष्ठा को जरा भी नुकसान नहीं पहुंचा सकते और वो इस प्रांत की जनता के सामने अपने को ही हास्यास्पद बना रहे हैं और ऐसा करके कांग्रेस के नाम को धूल में मिला रहे हैं। मैं पूरी नम्रता के साथ कहना चाहते हैं कि हम उनका सामना करने को पूरी तरह सक्षम हैं। चूंकि लगता है कि मौलाना के कामकाज को आपकी मौन स्वीकृति है, मैं इस मामले में आपके हस्तक्षेप का अभ्यर्थी नहीं हूं। मैं बस इतना चाहता हूं कि हम पर थोपे गए इस दुर्भाग्यपूर्ण तमाशे के बावजूद, महत्वपूर्ण मुद्दों से संबंधित मामलों में हम सहयोग करें और जहां तक हमारा संबंध है, हम सहयोग देने के लिए आतुर हैं। मैं आपको पूरी ईमानदारी से सहयोग अर्पित कर रहा हूं।

मैं यह पत्र एक संबंधी के जरिये भेज रहा हूं, जो नागपुर जा रहे हैं। मैंने उन्हें पत्रोत्तर के लिये वहां रूकने को कहा है। आपका स्वास्थ्य कैसा है? अखबारों से फिर बेचैनी पैदा करने वाली खबरें मिल रही हैं। मैं स्वास्थ्य–लाभ कर रहा हूं, लेकिन सुधार धीमी गति से हो रहा है।

सादर प्रणाम,
सस्नेह आपका,
सुभाष चन्द्र बोस
महात्मा गांधी
वर्धा।

सेवाग्राम
वर्धा,
29 12 40

प्रिय सुभाष,

स्वस्थ या अस्वस्थ, आप अदम्य हैं। धूम-धडाका करने से पहले स्वस्थ तो हो लीजिये।

मौलाना साहब से मेरा सलाह-मशविरा नही हो रहा है लेकिन जब मैं फैसले के बारे मे अखबारो मे पढता हू तो उसे स्वीकार किए बगैर नही रह सकता। मुझे इस बात पर अचरज होता है कि आप अनुशासन और अनुशासनहीनता मे अतर नहीं करते।

लेकिन मैं आपसे सहमत हू कि जहा तक लोकप्रियता का सवाल है मौलाना साहब आप दोनो मे से किसी की बराबरी नही कर सकते लेकिन अन्तरात्मा का लोकप्रियता से ऊचा स्थान है। मुझे पता है कि बगाल मे दोनो के बगैर ठीक से कामकाज चलाना कठिन है। मै यह भी जानता हू कि आप काग्रेस के बगैर भी अपना काम कर सकते हैं। लेकिन काग्रेस को इस बडी असुविधा के होते हुए किसी तरह काम सभालना है।

सुरेश ने मुझे लिखा था कि शरत आ रहे हैं। मै प्रतीक्षा कर रहा हू। वे जब चाहे आ सकते हैं, आप भी। आप जानते हैं यहा आपकी अच्छी देखभाल होगी।

जहा तक ब्लॉक के सविनय अवज्ञा मे शरीक होने का सवाल है, मै सोचता हू कि आपके और मेरे बीच तो आधारभूत मतभेद है, ऐसे मे यह सभव नही है। जब तक हम मे से कोई एक-दूसरे के दृष्टिकोण से सहमत नही होता, हमारे रास्ते अलग ही रहेगे। चाहे हमारा गतव्य स्थान समान दिखायी दे, लेकिन केवल दिखायी ही दे।

तब तक हम एक ही परिवार का सदस्य होने के नाते, जो हम हैं भी, एक-दूसरे के प्रति स्नेह प्रकट करे।

आपका
बापू

38/2, एलगिन रोड,

कलकत्ता,
10 1 1941

प्रिय महात्माजी,

मुझे 29 दिसम्बर का आपका पत्र पाकर खुशी हुई। विषयवस्तु से उतनी नहीं,

जितनी उसमें उल्लिखित आपके विचारों के स्पष्टीकरण से। इस पक्ष से, ह्रदय से और ईमानदारी से सहयोग देने की केवल मेरी व्यक्तिगत इच्छा नहीं है बल्कि मेरा साथ देने वाले अनेक लोगों की यह इच्छा है। ऐसा करने के लिये अपने राजनीतिक सिद्धान्तों और मान्यताओं का परित्याग करना न तो आवश्यक है और न ही वांछनीय। जैसा कि आप जानते हैं पिछले संघर्षों में बहुतों ने पक्के गांधीपंथियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया जबकि अनेक महत्वपूर्ण सवालों पर उनसे मतभेद था। ऐसा फिर क्यों नहीं हो सकता हैं? मैं आपसे अपने फैसले पर पुनर्विचार करने की प्रार्थना करता हूं।

आपके पत्र में एक वाक्य ऐसा है जिसका महत्त्व मुझे पक्का विश्वास नहीं है कि मैं सही ढंग से समझ सका हूं। आपने कहा है– 'जब तक हम में से कोई एक–दूसरे के दृष्टिकोण से सहमत नहीं होता, हमारे रास्ते अलग ही रहेंगें, चाहे हमारा गंतव्य स्थान समान दिखायी दे, लेकिन केवल दिखायी ही दे।' क्या इसका तात्पर्य यह है कि हमारे राजनीतिक लक्ष्य अलग–अलग हैं? ऐसा कैसे हो सकता है? कृपया मुझे बताएं, ठीक–ठीक मतलब है आपका?

अनेक ऐसे लोग हैं जो पत्र–व्यवहार के इस विषय पर हमारे विचार जानने को उत्सुक हैं और उनमें से कुछ हमारे बीच सहमति की अपेक्षा करते हैं। यहां कया मुझे इस पत्र व्यवहार को उन्हें दिखाने की और आवश्यक हुआ तो इसे प्रकाशित करने की अनुमति है? अब तक मैंने केवल दो–तीन मित्रों को ही दिखाया है।

मुझे आशा है आप स्वस्थ हैं। कुल मिलाकर मैं बेहतर हूं, लेकिन कुछ शिकायतें जाने का नाम नहीं लेतीं।

सादर प्रणाम,
सस्नेह आपका,
सुभाष
महात्मा गांधी
सेवाग्राम

प्रेषक जवाहरलाल नेहरू
आनन्द भवन,
इलाहाबाद
11 जुलाई, 1939
श्री सुभाष चन्द्र बोस

बम्बई

प्रिय सुभाष,

आपका 8 जुलाई का पत्र मुझे अभी–अभी मिला है। मुझे लगता है हम जितने स्पष्ट तौर पर अनेक विषयों पर असहमत हैं, उतने ही इस विषय पर भी। इस संबंध में बहस करने का कोई लाभ नहीं । मेरा अपना ख्याल यहथा कि कामथ ने इस मामले में गलत रूख अपनाया था। आपने मुझे पर खास इरादा रखने का आरोप लगाया हैं, जो न मेरे लिये उचित है और न आपके लिये। जब तक कामथ के विचार इतने जोरदार ढंग से व्यक्त न किए गए हों कि योजना समिति के उनके काम में आड़े आएं, तब तक मेरी यह बात बिल्कुल बेमानी थी कि उनके क्या विचार हैं। मेरा ख्याल है, मैंने जनवरी में ही योजना सनिति जिस पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है, उसकी बजाय वे सार्वजनिक जीवन के प्रचार संबंधी पक्ष से बहुत अधिक आकृष्ट हुए थे। अगर यही उनकी इच्छा थी, जिसके लिये वे पूरी तरह अधिकृत थे, तो योजना समिति में उनके लिये कोई स्थान नहीं था।

आपने ए. के. साहा का उल्लेख किया है और सुझाव दिया है कि उन्हें संयुक्त सचिव नियुक्त किया जाना चाहिए था। योजना समिति के सदस्य के नाते साहा को अवैतनिक महासचिव नियुक्त किया जा सकता था, लेकिन योजना समिति की सदस्यता से इस्तीफा दिये बगैर वेतनभोगी संयुक्त सचिव नियुक्त नहीं किया जा सकता था। हम सदस्यता से उनका इस्तीफा नहीं चाहते थे, क्योंकि उन उप–समितियों में उनके अनुभव का हम लाभ उठाना चाहते थे, जिनके वे सदस्य हैं। संयुक्त सचिव होने पर वे किसी उपसमिति का सदस्य भी नहीं हो सकते थे। मैं नहीं सोचता कि उन्हें महासचिव बनाना संभव था क्योंकि इसके लिये तकनीकी ज्ञान नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक स्थितियों और भारत की जनता की व्यापक जानकारी की आवश्यकता थी। मैं उनके लिये किसी प्रांतीय सरकार में उपयुक्त स्थान दिलाने की पूरी कोशिश कर रहा हूं।

मुझे दुख है कि आप मुझे समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। शायद यह कोशिश के लायक भी नहीं है।

सस्नेह आपका,
जवाहरलाल नेहरू

बोस–टैगोर पत्राचार
प्रेषित रवीन्द्र नाथ टैगोर
बर्तवान स्टेशन
11.12.39

मानानीय,

लम्बे अर्से से मैं आपके पास आने की सोच रहा हूं। बात करने के ढेर सारे विषय हैं–मुझे आपकी सलाह की जरूरत है। अगर मुझे समय पर पता चल गया होता कि आप कलकत्ता में मेरा इंतजार करेंगे, तो मैं पूर्वी बंगाल से अवश्य ही जल्द लौट आया होता। जब मैं कलकत्ता लौटा तो मुझे मालूम हुआ कि कलकत्ता में मेरा इंतजार करने के बाद आप शांति निकेतन लौट गए। मैं अभी उत्तर प्रदेश से लौट रहा हूं–मैं अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूं। आशा है कि तो–तीन दिन में मैं ठीक हो जाऊंगा। आने से पहले मैं तार भेजकर आपकी अनुमति ले लूंगा। कृपया मेरा सादर प्रणाम स्वीकार करें।

विनीत,
सुभाष चन्द्र बोस

प्रेषित रवीन्द्र नाथ टैगोर के सचिव
टेलीग्राम
कलकत्ता 12 दिसम्बर, 1939

सचिव रवीन्द्र नाथ टैगोर शांति निकेतन
क्या कवि पन्द्रह को कलकत्ता पहुंच रहे हैं?

सुभाष बोस

जेल से शरत चन्द्र बोस को पत्र
सेंसर किया गया और स्वीकृत
अस्पष्ट, 28/10 स्वीकृत
डी.सी. एस. बी. के स्थान पर
अस्पष्ट
प्रेसीडेंसी जेल,
लेफ्टि, कर्नल, कलकत्ता
आई. एम. एस.
24.10.1940

प्रिय मेजदादा,

मैंने अभी हाले ही में आपके देहरादून के पते पर अपना विजया प्रणाम भेजा। आपको अब तक वह पत्र मिल चुका होगा।

इन दिनों मैं आपको भेजे गए, मौलाना अबुल कलाम आजाद के पत्र के बारे में सोच रहा हूं और संयोगवश स्वर्गीय वी. जे. पटेल की वसीयत को लेकर मौलाना

अबुल कलाम आजाद और सरदार वल्लभ भाई द्वारा एक–दूसरे की प्रशंसा के बारे में।

पहले के बारे में मैं आपकी प्रतिक्रिया नहीं जानता लेकिन में इसके बारे में यथायोग्य प्रतिक्रिया दे रहा हूं। चूंकि अगला अधिकवेशन शुरू होने वाला है, मैं नहीं चाहता कि आप बंगाल विधानसभा से त्यागपत्र दें। लेकिन आप सुविधाजनक समय पर इस्तीफा दे सकते हैं और कांग्रेस आलाकमान को यह चुनौती दे सकते हैं कि वे सबसे अच्छे व्यक्ति को विरोध में खड़ा कर परीक्षण के तौर पर चुनाव करवा लें। आगामी अधिवेशन का अंतिम दिन सुविधाजनक समय होगा, बशर्ते अगले अधिवेशन से पहले पुनर्निवाचन के लिए समय उपलब्ध हो। सुविधाजनक समय पर आपके त्यागपत्र की घोषणा उससे कुछ पहले की जाए।

फिर भी, यह अपेक्षाकृत छोटी बात है। जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, वह यह सवाल है कि हम किधर जा रहे हैं, मेरा आशय कांग्रेस से है। एक–एक कर के लोग कभी–कभी नहत्वपूर्ण लोग जिन्होंने सेवा की है, कष्ट झेला है और त्याग किया है–ऊब कर कांग्रेस को छोड़ रहे हैं। इस नुकसान की भरपाई के लिए दूसरे संगठनों से गठबंधन करने जैसा कुछ नहीं किया गया है और न निकट भविष्य में ऐसी कोई संभावना है और मैं कांग्रेस में किसी नये व्यक्ति को शामिल होते भी नहीं देखता हूं।

महात्मा गांधी ने शायद स्पष्ट अनुभव किया कि विघटन की इस प्रक्रिया का उनकी पार्टी के लिये दुखद परिणाम होगा और बिना शर्त सहयोग लेने के अपने मूल दृष्टिकोण से मुकर के और उसके स्थान पर उन्होंने चयनात्मक व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करके, स्वयं को और अपने अनुयायियों को सहारा देने का प्रयास किया। लेकिन क्या यह आंखों में धूल झोंकना नहीं है? यह न तो सहयोग है और न जनसंघर्ष है। इससे किसी को भी खुशी नहीं है और यह हमें जहां का तहां रोके रखेगा और इस अभियान को स्वराज से कुछ लेना–देना नहीं है। यह केवल देशवासियों के एक खास वर्ग को झांसा दे सकता है, जिनको आसानी से इस सोच का धोखा दिया जा सकता है कि गांधीजी कुछ सार्थक करने जा रहे हैं।

सहयोग समझ में आ सकता है। अपनी असंगतियों के बावजूद रायवाद भी समझ में आ सकता है। जनसंघर्ष भी समझा जा सकता है। लेकिन यह क्या है? न आम, न गुठली, न कोई आभास।

अपने पाखंडी दम्भ (पटेल वसीयत मामला), लोकतंत्र के उल्लंघन और राजीतिक बुराइयों (हैदराबाद रियासत की प्रजा को सलाह) के लिये अपने विलक्षण और अबोधगम्य फार्मूले के साथ गांधीवाद का वर्तमान दौर, कुछ हद तक वीभत्स हो गया है। यह सोचने को बाध्य होना पड़ता है कि भारत के राजनीतिक भविष्य के लिए कौन

बड़ा खतरा है–ब्रिटिश नौकरशाही या गांधीपंथी श्रेणीबद्ध संगठन। यथार्थवाद विहीन आदर्शवाद के, जिसकी एकमात्र अन्तर्वस्तु ढोंगी प्रकृति की खोखली भावुकता हो, परिणामों के मामले में कभी फलदायक नहीं होता।

झांसा पट्टी का यह खेल किसी को धोखा नहीं दे सकता, न तो सरकार को और न जनता को– क्योंकि दुनिया के लोग उतने बेवकूफ नहीं होते, जितना हमारा यह पुरोहित तंत्र समझता है। हमें शांत दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना है। वह दिन दूर नहीं जब इस मार्के के गांधीवाद का पर्दाफाश होगा। मुझे इससे खुशी हुई कि आपने मौलाना के आदेश को यथायोग्य तिरस्कार–भाव से लिया।

आशा है वहां मेजबौदीदी और आप सभी स्वास्थ्य लाथ कर रहे होंगे। आप कब वापस लौट रहे हैं? इसमें जल्दबाजी न कीजिए, पहले स्वस्थ हो लीजियें। मैं देखता हूं कि वहां अखबार वाले आपके पीछे पड़े हैं। क्या फारवर्ड ब्लॉक के लोग भी आपके पीछे पड़े हैं? उन इलाकों में जनता का हमें बहुत अच्छा समर्थन है। मुझ पर केंन्द्रीय सभा का चुनाव लड़ने का दबाव पड़ा है और मैं राजी हो गया हूं। इतना ही।

आपका प्रिय स्नेहभाजन,

सुभाष

पुनश्च :– कुछ दिन पहले मैंने विजया उपहार के लिए धन्यवाद करते हुए मौलाना को तार भेजा। सु.च.बो.

श्रीयुत शरत सी. बोस,
रायल होटल,
देहरादून, यू. पी.

सेंसर किया गया और स्वीकृत
अस्पष्ट, 4.11 स्वीकृत
डी.सी. एस. वी. के स्थान पर अस्पष्ट

लेफ्टि, कर्नल,	प्रेसीडेंसी जेल,
आई. एम. एस.	कलकत्ता
अधीक्षक	31.10.40

प्रिय मेजदादा,

आपको मेरा विजया का पत्र और उसके बाद भेजा गया पत्र अवश्य मिल गया होगा। पता नहीं देहरादून से मेजबौदीदी ओर आपको कैसा लाभ पहुंचा है। आशा है लाभ हुआ होगा।

आपने अखबारों में केन्द्रीय सभा में मेरे निर्वाचन के बारे में पढ़ा होगा। आशा करता हूं आलाकमान इससे जरूरी सीख लेने में नहीं चूकेगीं।

कांग्रेस की राजनीति के बारे में मैं जितना ही सोचता हूं, उतना ही मेरा विश्वास पक्का होता जाता है कि भविष्य में हमें आलाकमान का विरोध करने में अधिक ताकत और समय लगाना चाहिए। जब स्वराज मिलता हे, तब अगर सत्ता ऐसे घटिया, प्रतिशोधी और बेईमान लोंगो के हाथों में चली गयी तो देश का क्या होगा? अगर हमने अभी विरोध क्यों करना चाहिए, इसका दूसरा कारण यह हे कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के बारे में उनकी कोई धारणा नहीं है। अगर स्वतंत्र भारत को पुनर्निर्माण गांधीपंथी, अहिंसक सिद्धांतों पर हुआ तो गांधीवाद स्वतंत्र भारत काक गर्त्त में ले जाएगा। भारत तब सभी लुटेरी ताकतों को स्थायी रूप से नियंत्रित करेगा। हमें अभी कांग्रेस आलाकमान का विरोध करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और इसके लिये जहां भी और जब भी संभव हो, हमें अन्य राजनीतिक दलों के साथ गठबंधन करना चाहिए।

पिछले सप्ताह से बड़ी आंत (कोलोन) और एपेंडिक्स के नीचे पेट में दर्द के कारण मैं स्वस्थ नहीं रहा हूं। वैसे, दर्द अब कम है। मैं इसे वूडबर्न पार्क के पते पर भेज रहा हूं क्योंकि मुझे पता नहीं आप कब लौटेंगे। प्रणाम,

आपका प्रिय स्नेहाभाजन,
सुभाष
प्रेषित श्रीयुत शरत सी. बोस,
कलकत्ता

सेंसर किया गया और स्वीकृत
अस्पष्ट, 26/11
डी.सी. एस. वी. के स्थान पर

प्रेसीडेंसी जेल,
कलकत्ता 15.11.40

प्रिय मेजदादा,

अपने मुकदमें को सार–संक्षेप देते हुए और इसमें निहित अवैधता और अन्याय के बारे में लिखकर मैं आज अमिय को हवाई डाक से भेज रहा हूं। मैं चाहता हूं कि आप उन्हें इसी विषय पर विस्तृत पत्र लिखकर हवाई डाक से भेजें। मैं चाहता हूं कि अमिय संसद में और बाहर के मेरे मित्रों को जानकारी दे। यह काम आसानी से भारतीय समझौता से इंडिया लीग आदि में कुमारी अगाथा हैरिसन, कृष्ण मेननन तथा अन्य मित्रों के जरिये किया जा सकता है।

अनेक लोग इसमें बहुत रूचि लेंगे बशर्ते जानकारी हो। उदाहरणस्वरूप मिस्टर थर्टल एम. पी. लेंसबरी के दामाद, जो कलकत्ता में आपके अतिथि थे– या

मिस्टर ग्रीनवूड एम. पी. जो अभी मंत्रिमंडल में हैं और जिन्होंने 1938 में लंदन में मेरे सार्वजनिक स्वागत की अध्यक्षता की थी या 'न्यूज क्रानिकल' के मिस्टर वर्नन बार्टलेट एम. पी. जिनसे पहली बार मैं क्रानिकल हाऊस में सर वाल्टर लेटन द्वारा दिये गए लंच में मिला था और जो कलकत्ता में मेरे साथ चाय में शरीक हुए या मिस्टर सोरेनसेन एम. पी. जो भारतीय मामलों के अथक प्रश्नकर्ता हैं और जिनसे मेरा परिचय लंदन में हुआ था।

मुझे पता नहीं आजकल हवाई डाक को लंदन पहुंचन में कितना समय लगता है। अगर विलम्ब होना कमोबेश निश्चित हो तो कृपया इसके स्थान पर लम्बा समुद्री तार भेजें।

मैं अमिय से कह रहा हूं कि वे बस इतना करें कि मेरा पत्र दो–तीन मित्रों को दे दें, वे बाकी काम कर लेंगे। अमिय को इस मामले में और अधिक परेशान होने की जरूरत नहीं है।

आपका प्रिय स्नेहभाजन,

सुभाष

श्रीयुत शरत सी. बोस
1, वूड बर्न पार्क
कलकत्ता

सेंसर किया गया और स्वीकृत
अस्पष्ट, 20/11
डी.सी. एस. वी. के स्थान पर
अत्यावश्यक

प्रेसीडेंसी जेल,
कलकत्ता 17.11.40

प्रिय मेजदादा,

मेरे दोनों सीनियर एडवोकेट बीमार पड़ गए हैं–मेरा आशय बरद बाबू और संतोष बाबू से हैं। आशा है कि वे शीघ्र ठीक हो जाएंगे। अलीपुर में मेरा मुकदमा 23 तारीख को आएगा, बरद बाबू वहां का मुकदमा देखते हैं। अगर बरद बाबू 23 तारीख तक ठीक नहीं हुए तो उस दिन के लिए कृपया कोई इन्तजाम कीजिऐ।

आशा है आपको अब तक 24.10 और 31.10 के मेरे पत्र पत्र मिल गए होंगे। अब वर्धा तमाशे को दूसरा दृश्य शुरू हो गया है।

पिछले दो–तीन दिनों से मुझे साइटिका किस्म का दर्द कमर में था। मैं अब भी मुक्त भाव से चल–फिर सकता हूं और अब तक चिन्ता की कोई बात नहीं है। आशा है कि आप स्वस्थ होंगे। मां कैसी हैं?

आपका प्रिय स्नेहभाजन,
सुभाष

श्रीयुत शरत सी. बोस
1, वूडबर्न पार्क,
कलकत्ता
स्वीकृत
अस्पष्ट
लेफ्टि कर्नल आई एम एस
अधीक्षक
प्रेसींडेसी जेल

नेताजी को जयप्रकाश नारायण का गुप्त पत्र 1940

नेताजी जब भारत से निष्क्रमण की तैयारी कर रहे थे, तो उन्हे जयप्रकाश नारायण का, जो उस समय जेल मे थे, निम्नलिखित गुप्त पत्र विशेष सदेशवाहक के जरिये मिला। बिना तारीख का यह पत्र जयप्रकाश की हसलिपि में ओर स्याही से लिखा था। लेखक ने स्पष्टता सुरक्षा के कारणो से पत्र में हस्ताक्षर नही किया था। कलकत्ता के नेताजी भवन में एक बार आने पर जयप्रकाश ने मूल पत्र को स्वय अपना बताकर इसकी पहचान पत्र नेताजी रिसर्च ब्यूरो के अभिलेखागार मे सुरक्षित रखा है। —सम्पादक

प्रिय कामरेड

मैं यह पत्र यथेष्ट चिन्ता के बगैर नही लिख रहा हूं चिन्ता, क्योकि मुझे पता नहीं है कि आपको इस पाकर कैसा लगेगा। मुझे पता नहीं था कि जब मैं कहूंगा कि मेरे मन मे कभी भी आपके प्रति दुर्भावना नही थी, तो आप इसे कितनी गभीरता से लेंगे। कुछ राजनीतिक मतभेद थे, जिन्हे मैंने छिपाने की कोशिश की। लेकिन इससे अधिक कभी कुछ नहीं था। दूसरी ओर, मैंने हमेशा आपके साहस और दृढनिश्चय की सराहना की है। और अब, जब मेरे मन में यह बात बैठ गयी है, मैं आपकी दूरदर्शिता ओर पूर्वबोध की सराहना करता हूं।

यहा मैं अपने मन की पुरानी बातों को दोहरा रहा हू। हाल की घटनाओ ने मेरी पूरी सोच को परिस्थिति के अनुकूल कर दिया है। मैं स्वीकार करता हूं कि समझौता—विरोधी सम्मेलन तथा आपकी और स्वामीजी की नीति न्यायसगत सिद्ध हुई है। पहला अवसर मिलते ही मै सार्वजनिक तौर पर ऐसा कहूंगा।

मैं अत्यन्त महत्वपूर्ण सुझाव देने के लिए आपको लिख रहा हू और आपसे

अनुरोध है, आप इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करें। यह सुझाव हमारे भावी कार्य की पूरी दशा–दिशा और भारत में क्रांतिकारी आंदोलन के विकास से संबंधित है। मैंने यहां स्वामी जी से इस पर बात की है और उनकी प्रतिक्रिया अनुकूल है। विस्तार में बातचीत अभी होनी है, जिसका परिणाम मैं सही समय पर लिख भेजूंगा। मैंने यह सुझाव बाहर के सी. एस. पी. के मित्रों को भेजा है। संभवतया उनमें से कुछ तथा अनुशीलन के मित्र इस संबंध में आपसे मिलें।

इस सुझाव की चर्चा करने से पहले मैं संक्षेप में अपने दृष्टिकोण से आपको अवगत कराना चाहूंगा कि मैं वर्तमान स्थिति और निकट भविष्य को किस रूप में देखता हूं।

मेरे ख्याल से अभी हमारा मूल उद्देश्य, ऐसी कार्य–दिशा तय करना हे जो आधारभूत तौर पर कांग्रेस से स्वतंत्र हो। कांग्रेस के सविनय अवज्ञा आंदोलन आरम्भ करने से इस उद्देश्य का महत्व या तात्कालिकता तनिक भी कम नहीं होगी। इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि अगर सविनय अवज्ञा का आरंभ होता है तो वह साम्राज्यवाद से कुछ रियायतें लेने के अलावा किसी बड़े उद्देश्य के लिये नहीं होगा। जैसा जवाहर लाल का कहना हे, 'दिल्ली संकल्प न तो मृत हुआ है और न दफन।' जैसे ही ब्रिटिश सरकार समझौते की कोई इच्छा प्रदर्शित करेगी, उसे तुरन्त पुनर्जीवित कर लिया जाएगा। इसलिये हर हालत में हमारे सामने निश्चित संभावना है, ऐसी कांग्रेस की, जो साम्राज्यवाद से मेल–मिलाप कर ही लेगी, जिसकी कम या अधिक कीमत, दोनों पक्षों की आवश्यकतों के अनुरूप तय होगी।

अब तक हमारे काम की मूलभूत मान्यता थी कि कांग्रेस राजनीतिक कार्य का प्रमुख तंत्र है–साम्राज्यवाद के विरूद्ध एक बहुवर्गीय मोर्चा (मजदूर और राष्ट्रीय बुर्जुआ जिसके दो छोर हैं)। अब से हमारा काम पूरी तरह इस विपरीत मान्यता के अनुसार आगे बढ़ेगा कि कांग्रेस राजनीतिक काम–काज का अब मुख्य आधार नहीं रही। मेरा यह कहना नहीं है कि कांग्रेस की जनता पर पकड़ समाप्त हो गयी है (यद्यपि इसका विपरीत अधिक सही है कि पिछले कुछ वर्षो में कांग्रेस पर जनता की जो भी पकड़ थी, वह समाप हो गयी है) या साम्राज्यवाद का विरोध करने में इसकी भूमिका समाप्त हो गयी है। वास्तव में, वर्तमान स्थिति में ऐसे ही विरोध की संभावना है लेकिन इसका उद्देश्य दिल्ली संकल्प की मांग में से थोड़ा–बहुत पूरा करने का होगा। वर्तमान परिस्थितियों में कांग्रेस को हमारे द्वारा प्रभावित किए जाने की कोई संभावना नहीं है

यहां पर कांग्रेस में हुए परिवर्तन का उल्लेख करना आवश्यक है। वास्तव में यह अब भी व्यापक आधार वाला जन–संगठन है, लेकिन इसका नेतृत्व एक ऐसे गुट के हाथों में सिमट गया है, जो जन–विरोधी (श्रमिक–विरोधी, किसान–विरोधी, कुछ हद

तक लोकतंत्र–विरोधी भी), और सिद्धांत तथा सहानुभूति के मामले में पूरी तरह बुर्जुआ है। किसान, मजदूर और वाम राष्ट्रीय प्रभाव अलग–थलग पड़ गए हैं। इन परिस्थितियों में जन क्रांतिकारी आंदोलन के लिए कांग्रेस से कुछ अपेक्षा करना बहुत बड़ी मूर्खता होगी तथा अगर और जब कांग्रेस का संघर्ष शुरू होगा तो उसे 'क्रांतिकारी मोड़' देने की हम अस्पष्ट रूप से भी अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। हमें इसकी पूरी संभावना खारिज कर देनी होगी।

इस बात के और भी कारण है कि हम क्यों अभी कांग्रेस के बगैर राजनीतिक जन आंदोलन का आधार तैयार करें। कांग्रेस का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति था। यह उद्देश्य सामान्य तौर पर केवल क्रांतिकारी तरीके से ही पूरा किया जा सकता था, और कांग्रेस से अपेक्षा थी कि वह काफी दूर तक क्रांतिकारी मार्ग पर (अपनी ढुलमुल नीति के साथ) चलेगी। फिर भी, वर्तमान परिस्थितियों में, इस बात की पूरी संभावना है कि उसी हद तक इस उद्देश्य की पूर्ति होगी जहां तक इस समय की कांग्रेस की इच्छा होगी और वह भी साम्राज्यवाद के साथ समझौते के जरिये। निस्संदेह समझौते के लिये दबाव की जरूरत होगी और निस्संदेह कांग्रेस दबाव डालना जारी रखेगी (किसी किस्म की सीधी कार्रवाई की हद तक)।

जा सत्ता श्री राजगोपालाचारी लाखों भारतवासियों के खून–पसीने से 'हथियाने' की आशा करते है, वह पूर्ण स्वराज नहीं हो सकता। यह आजादी उतनी ही होगी, जितनी श्री राजगोपालाचारी और उनकी 'कांग्रेस' ब्रिटिश सैनिक और आर्थिक संरक्षण बनाए रखने की अपनी इच्छा के अनुरूप हिम्मत कर सकते हैं, (ताकि विदेश के हमले से और देश के अन्दर की 'अव्यवस्था' से 'आजादी' बचाये रख सकें और आर्थिक यथास्थिति बनाए रख सकें) यह बहुत बड़ी आशा नहीं है कि इस तरह की व्यवस्था वैसी खास परिस्थितियों में ब्रिटिश शासन वर्ग के लिए अरूचिकर नहीं होगी, जो देर–सवेर उत्पन्न हो।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हम एक दौर के अंतिम मुकाम पर पहुंच गए हैं। साम्राज्यवाद के विरूद्ध भारतीय जनता (राष्ट्रीय बुर्जुआ, शहरी मध्यवर्ग, किसान और मजदूर) का संयुक्त अभियान एक छोर पर है। राष्ट्रीय बुर्जआ और मध्य वर्ग का एक वर्ग (ऊपरी तबका) संघर्ष (राष्ट्रीय सुरक्षा आदि के नाम पर) छोड़ रहा है। वे साम्राज्यवाद से थोड़ी बहुत सत्ता हथिया कर उस पर काबिज हो सकते हैं, लेकिन उनसे साम्राज्यवाद के सभी अवशेषों क ध्वस्त होने तक लड़ने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। साम्राज्यवाद के अवशेषों और लोकतांत्रिक क्रांति चलाने का जिम्मा मजदूरों, किसानों और निम्न मध्यवर्ग पर पड़ता है। इस तरह भारत जैसे देश में दूसरे दौर में किसान वर्ग की भूमिका सर्वाधिक होगी और यह दौर मुख्य रूप से भूमि–संबंधी क्रांति का दौर

होगा। इसका तात्पर्य यह है कि बुर्जुआ क्रांति (भूमि–संबंधी क्रांति भी इसका अंग है) की अवधि अभी समाप्त नहीं हुई है तथा सर्वहारा वर्ग की या समाजवादी क्रांति का दौर अभी नहीं आया है। लेकिन बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रांति (साम्राज्यवाद के विरूद्ध संयुक्त मोर्चे के संघर्ष की अवधि) का पहला अध्याय समाप्त हो गया है, तथा दूसरा और अंतिम अध्याय, भूमि–संबंधी क्रांति का, शुरू हो रहा है।

यहां फिर मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूं कि भूमि–संबंधी क्रांति इस मायने में सचमुच शुरू हो गयी है कि किसानों ने जमींदारों की जमीन पर कब्जा करने, गांवों से उनको बाहर भगाने, बड़ी जोतों की अधिकार में लेने और उसे आपस में बांटने के मामले में पहल की है। 1927 में चीन में जिस तरह हुआ, उस तरह का घटनाक्रम अभी वास्तव में शुरू नहीं हुआ है। लेकिन जो मैं बताना चाहता हूं, वह यह है कि भारतीय क्रांति के इससे पहले का दौर समाप्त हो गया है, और हम दूसरे दौर का सूत्रपात करने के लिये सकारात्मक और स्पष्ट तौर पर तैयारी और काम करें।

कुछ हलकों में तत्काल परिषदों (सोवियतों) की स्थापना करने की बात चल रही है। स्टालिन के शब्दों में यह 'पराजित करने की छलांग है–पूरे मंच पर छलांग भरना। निस्संदेह किसान सभाएं तो बनी हुई है और वे ही जगह–जगह पर उठ खडी होंगी, इस समय सर्वाधिक भूमिका अदा करेंगी और वास्तविक किसान परिषदों (सोवियतों) की सुव्यवस्थित अग्रदूत होगी। (हमें इसके लिये 'सोवियत' शब्द उधार लेने की जरूर नहीं है। किसान सभा शब्द काफी बढ़िया है, आसानी से समझ में आता है और इसकी क्रांतिकारी परम्परा रही है)।

इसका यह निहितार्थ है कि हमें मुख्य रूप से अपना ध्यान कांग्रेस से हटाकर किसान सभा की ओर देना है। यह तथ्य कि किसान सभाएं बड़ी संख्या में नहीं हैं और उनकी संगठन उतना व्यापक नहीं है जितना कि कांग्रेस का, हमारा इरादा बदल नहीं सकता। सही दृष्टिकोण ओर सही नारों के सहारे बड़े पैमाने पर जाल बिछाया जा सकता है।

किसान सभाओं पर मेरे जोर देने का यह तात्पर्य नहीं है कि हम सर्वहारा वर्ग की क्रांति के लिए साथ–साथ होने वाले काम और अपनी अन्य गतिविधियों की अवहेलना करेंगे। मजदूर वर्ग के आंदोलन पर हमें सर्वाधिक ध्यान देते रहना है।

कुछ लोग इस सवाल से चिन्ता में पड़ जाते हैं कि हमें कांग्रेस को छोड़ना चाहिए या उसमें रहना । मेरे लिये इस सवाल का महत्व नहीं है। प्रमुख बात यह है कि कांग्रेस हमारे लिये अब क्रांतिकारी कार्रवाई का माध्यम नहीं रही और कि हमें इसलिये ऐसी कार्रवाई के लिये, एक स्वतंत्र आधार तैयार करना होगा। हम तब तक

कांग्रेस में बने रह सकते हैं, जब तक यह किसी रूप में लाभकारी है। लेकिन हमज न समूहों से नहीं कह सकते कि वे अपनी आर्थिक और राजनीतिक मुक्ति के लिए कांग्रेस की ओर नजर टिकायें। जनसमूह को कांग्रेस से बांधे रखना, उनके प्रति सबसे बड़ा अपकार होगा और क्रांति में बाधा डालने जैसा होगा। लोगों की कांग्रेस पर निर्भरता को दूर करना हमारा स्पष्ट कर्तव्य हैं इसके लिये हमें लोगों से यह कहने की जरूर नहीं है कि वे कांग्रेस के खिलाफ हो जाएं। फिर भी, हम दो काम अवश्य करें : एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक । वर्तमान कांग्रेस नेतृत्व के चरित्र के बारे में सीधे–सादे शब्दों में लोगों को अवश्य बतायें (नकारात्मक)। हम संघर्ष के लिये उनके अपने साधन तैयार करें और उन्हें पूरी तरह उनपर निर्भर रहने की सीख दें।

जैसा मैं समझता हूं यही हमारे काम हैं, और पहली बा जो हमें करनी है वह है–एक क्रांतिकारी सिद्धांत तैयार करना अर्थात क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी। जहां तक मेरी अपनी पार्टी, सी. एस. पी. का संबंध है, इसका ढांचा हमारे उद्देश्य के लिये बहुत अनुपयुक्त हो गया है। यह समय सभी क्रांतिकारी तत्वों को एक साथ एक क्रांतिकारी पार्टी में लाने का स्वर्णिम अवसर हैं इस बात पर कि हम सम कुछ नये सिरे से शुरू करेंगे, देश की अनेक क्रांतिकारी धाराओं को संगठित करना संभव होना चाहिए। मेरा सुझाव यह है कि सी. एस. पी., अनुशीलन, फारवर्ड ब्लॉक, कीर्ति, लेबर पार्टी और दूसरे ऐसे दलों या तत्वों को लेकर हम एक नयी क्रांतिकारी पार्टी बनाएं। एक पार्टी, जो पूरी तरह मार्क्सवाद–लेनिनवाद पर आधारित हो और अन्य सभी रानजीतिक संगठनों और पार्टियों से अलग हो। मेरा ख्याल है कि अगर आप चाहें तो यह बिल्कुल संभव है। सी. एस. पी. को केवल नयी पार्टी को ओट और मंच प्रदान करने और खासकर जब तक हम लोग संभव समझें, कांग्रेस के अंदर काम करने के वास्ते, जारी रखा या नहीं रखा जा सकता है।

जिन तत्वों को लेकर नयी पार्टी बनायी जानी है, उनमें मैंने सी. पी. का उल्लेख नहीं किया है क्योंकि सी. पी. अपने संविधान और सी. आई. के संविधान की वजह से किसी अन्य समाजवादी पार्टी में अपनी विशिष्टता का विलय नहीं कर सकती। अगर वे ऐसा चाहें तो वह केवल दूसरी पार्टी में प्रवेश पाने और उसे अपने अधिकार में लेने (तोड़ने) के लिये अवसर प्राप्त करना होगा इसलिये नयी पार्टी को सी. पी. से भिन्न होना चाहिए लेकिन दोनों के बीच कामचलाऊ गठबंधन होना चाहिए।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मैं नयी पार्टी की कल्पना सी. आई. विरोधी के रूप में करता हूं। वास्तव में मास्को से हमारा सम्पर्क होना चाहिए और हमें अपनी क्रांति में सोवियत सहायता भी लेनी चाहिए। फिर भी, इसे अपनी नीतियों पर चलने को स्वतंत्र रहना है, मास्को के रहने पर नहीं।

मेरा सोचना है कि नयी पार्टी पूर्णकालिक क्रांतिकारियों की पूरी तरह भूमिगत पार्टी हो। इसकी गतिविधियों में जरूरी है (मैं यह वाक्य पूरा नहीं कर सकता, आप समझ जाएंगे)।

संक्षेप में यह मेरा प्रस्ताव है। मैं इसके बारे में बहुत गंभीर हूं और आपसे इस पर पूरी गंभीरता से विचार करने का अनुरोध करता हूं। मैं अगले महिने के अंत तक बाहर आ जाऊंगा। मैं आपके मुकदमे के दौरान आप से मिलने की कोशिश करूंगा। इस बीच, वहां, कृपया मित्रों, खासकर अनुशीलन के मित्रों से इस बात पर विचार–विमश करें। आप स्वामीजी के जरिये अपने अंतरिम सुझाव से अवगत करा सकते हैं। अगर हम इस योजना को कार्यान्वित करने में समर्थ हो हैं तो हम देश में बड़े पैमाने पर कुछ कर सकेंगे।

इस पार्टी के अलावा हमें संघर्ष के लिये और सत्ता हथियाने के लिये जन–साधनों की जरूरत है। इस सिलसिले में मेरी नजर किसान और मजदूर सभाओं पर मुख्य रूप से है। इन सभी को किसानों और मजदूरों के संघों के एक शक्तिशाली संघ (किसानों और मजदूरों की परिषदों की कांग्रेस) में संगठित करना होगा। इस संघ को बनाना, निकट भविष्य में हमारे उद्देश्यों में से एक होना चाहिए।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक है और आप आवश्यक विश्राम कर रहे हैं। हम सब यहा बिल्कुल ठीक हैं।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका कामरेड

लार्ड लिनलिथगो को पत्र

38/2 एलगिन रोड,
कलकत्ता,
29 दिसम्बर, 1940

महामहिम

बहुत हिचकिचाहट के बाद मैंने बंगाल की स्थिति के बारे में महामहिम को लिख भेजने का फैसला किया है, वैसे मैं अभी अस्वस्थ ही हूं। यह मामला अत्यधिक महत्व का है और इस पर अविलम्ब ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही, सौभाग्यवश महामहिम अभी बंगाल में हैं और स्थिति को मौके पर समझना तथा मैं जो कहने जा रहा हूं, उसे सत्यापित करना आसान होगा। यह दुर्लभ अवसर है और सार्वजनिक हित में मैं इसे गंवाना नहीं चाहता हूं। महामहिम, आपका समय लेने और ध्यान आकृष्ट करने के अनाधिकार हस्तक्षेप करने की यही मेरी सफाई है।

2. भारत सरकार अधिनियम 1935 के अंतर्गत, प्रान्तीय स्वायत्तता के बावजूद, गवर्नर जनरल–इन–कांउसिल के प्रांतीय मामलों में निश्चित तौर पर उत्तरदायित्व है। लेकिन महामहिम, इस संवैधानिक व्यवस्था से प्रांतीय मामले में आपकी जांच–पड़ताल के लिये अपने आप पर्याप्त कारण उत्पन्न नहीं होता है। फिर भी, युद्ध के कारण केन्द्रीकरण की दिशा में भारत में संवैधानिक परिवर्तन हुए हैं और भारत सरकार ने पूरे ब्रिटिश भारत के प्रशासन का प्रत्यक्ष उत्तरदायित्व अपने हाथों में ले लिया है।

3. मैं अब सीधे उस मुद्दे पर आता हूं जो महाहिम, आप के सामने रखना चाहता हूं। अप्रैल 1937 से बंगाल पर ऐसे मंत्रिमंडल का शासन है, जो प्रमुख रूप से साम्प्रदायिक दृष्टिकोण और उद्देश्य से काम करता है।

इस नियम के समर्थन में एक गठबंधन–शायद अलिखित गठबंधन है, एक ओर मुस्लिम विधायकों और दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार तथा ब्रिटिश व्यापारी समुदाय के बीच। साम्प्रदायिक सवालों पर मुसलमानों को खुली छूट है, जबकि राजनीतिक मसलों में राज्यपाल और ब्रिटिश व्यापारी समुदाय की इच्छा हावी रहती है। जो लोग इन दोनों पक्षों में से किसी के साथ नहीं हैं, उनके लिये 1937 से बंगाल के प्रशासनिक नक्शे में कोई स्थान नहीं है। उन्हें अलग रखा जाना बहुत मायने नहीं रखता, अगर प्रशासन यथोचित कुशलता, शुचिता और निष्पक्षता से संचालित होता। लेकिन दुर्भाग्य है कि स्थिति ऐसी नहीं है। लगता है, घोर साम्प्रदायिकता, प्रशासन का मूलभूत सिद्धांत है, जिसके दूसरे लक्षण हैं–अक्षमता और भ्रष्टाचार।

4. यहां पर मैं जल्दी में यह बता दूं कि उपर्युक्त ढंग से बंगाल मंत्रिमंडल की आलोचना कने में हिन्दू महासभा के मानसिक दृष्टिकोण से मेरी कई समानता नहीं है। मेरे जैसे लोग मुसलमानों को हर चीज में, जिसमें उनकी दिलचस्पी हो, उचित हिस्सा देने को तैयार हैं। अतीत में अपने काम से काम रखने के कारण, साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वाले हिन्दुओं के एक वर्ग में हैं, कई बार हम अलोकप्रिय हुए हैं। इस समय शायद भारत में हम एकमात्र ऐसी पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अब भी दो प्रमुख सम्प्रदायों के बीच की खाई पाटने की आशा करती है और अब भी भारतीय मुसलमानों के बहुत बड़े वर्ग की सद्‌भावना प्राप्त करने का दावा कर सकती है।

5. इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि इस देश में ब्रिटिश शासन के शुरू होने के समय से बंगाल भारतीय राष्ट्रीयता का उदगम–स्थल रहा है। हिन्दू बंगाल ने खासकर पिछले दशकों में, लगातार राष्ट्रीयता को ध्यान में रखकर ही विचार और प्रयास किया है, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू महासभा आंदोलन कभी यहां पांव नहीं जमा सका। लेकिन आज यहां मुस्लिम साम्प्रदायिकता की अपरिहार्य प्रतिक्रिया के रूप में हिन्दू बंगाल में साम्प्रदायिकता प्रवाहित हो रही है। अनन्त भंवरों वाले इस

साम्प्रदायिक जलावर्त्त के सामने राष्ट्रीयता में विश्वास रखनेवाले लोग लाचार दिखं रहे हैं।

6. यह कहा जा सकता है कि बंगाल के हिन्दू 1937 से कष्ट झेल रहे हैं या कि उनमें साम्प्रदायिकता जड़ें जमा रही है या प्रशासन साम्प्रदायिकता, अक्षमता और भ्रष्टाचार से ग्रस्त हैं, ये बातें ब्रिटिश सरकार या ब्रिटिश व्यापारी वर्ग या आमतौर पर मुसलमानों के लिये प्रत्यक्ष महत्व नहीं रखती। लेकिन यह क़ेवल सरसरी तौर पर सही है। मेरा कहना है कि यद्यपि आज बंगाल के हिन्दू कष्ट और संकट में हैं। स्थिति इस तरह बन ही है कि बहुत जल्द अन्य सम्प्रदायों पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। दूसरी भाषा में कहा जा सकता है कि बंगाल में मुस्लिम मंत्रिमंडल ऐसा छल्लानुमा हथियार चला रहा है जो शीघ्र ही पलटवार करेगा और जब बंगाल में सिंध संकट दोहराया जाएगा तो स्थिति बेकाबू हो जाएगी।

7. महामहिम, मैं आपका ध्यान बंगाल में स्थिति के गंभीर और संभावित प्रभावों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं, इसलिये नहीं कि हिन्दुओं के बुरे दिन चल रहे हैं, बल्कि इसलिये कि अगर इसका तुरन्त निराकरण नहीं किया गया तो पूरे प्रांत की शांति पर संकट गहरा सकता है।

8. वर्तमान परिस्थितियों में संभावित उपायों में से एक और शायद सबसे बढ़िया उपाय है, एक ऐसी सरकार का होना, जिस पर दोनों प्रमुख सम्प्रदायों का भरोसा हो और जो पूरे प्रांत के हित में काम करे। न्याय, शुचिता और कुशलता पर आधारित प्रशासन, आदर्श समाधान होगा। इस समय यद्यपि हमारे ऐसे मंत्री हैं, जो अपने को हिन्दू कहते हैं लेकिन उनके पीछे लीग नहीं हैं, जिससे कुल मिलाकर हिन्दू सम्प्रदाय का वर्तमान सरकार पर भरोसा नहीं है। अनुसूचित जाति के मामले में उनके अधिकांश प्रतिनिधि बंगाल विधान सभा में विपक्ष में बैठे हैं और अनुसूचित जाति के दो मंत्री विधानसभा में अनुसूचित जाति के विपक्षी सदस्यों को तोड़ नहीं सके हैं, यद्यपि वे उदारतापूर्वक उपकार और सहायता करने की स्थिति में हैं। जहां तक मुसलमानों का संबंध है, यही कहना उचित होगा कि उनका एक प्रभावशाली वर्ग वर्तमान प्रतिक्रियावादी प्रशासन से बहुत असंतुष्ट है। प्रमाणस्वरूप, कृषक–प्रजा पार्टी, जिसका अनुसरण नगण्य नहीं है, लगातार विपक्ष के साथ है।

9. महामहिम, आप पर इस मामले में बड़ी जिम्मेदारी है प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूप में। प्रत्यक्ष जिम्मेदारी संवैधानिक व्यवस्थाओं से होती है। परोक्ष जिम्मेदारी इस कारण है कि वर्तमान मंत्रिमंडल अपने अस्तित्व के लिये पूरी तरह राज्यपाल और ब्रिटिश व्यापारी वर्ग के समर्थन पर निर्भर हैं।

10. महामहिम, अगर आप बंगाल की स्थिति से संतुष्ट हैं, चाहे जो भी कारण हो, तो मुझे ओर कुछ नहीं कहना है और इस पत्र की पूरी तरह उपेक्षा कर दी जा सकती है, लेकिन हम यह तथ्य जानते हैं कि स्थिति गंभीर संभावनाएं लिये हुए है और ब्रिटिश सरकार तथा ब्रिटिश व्यापारी वर्ग, दोनों को अपने हित में इस मामले पर ध्यान देना चाहिए। हौलवेल स्मारक सत्याग्रह के मामले में ब्रिटिश समुदाय ने दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाया, जिसकी बहुत सराहना की गयी। और यह भी संभव है कि वह समुदाय फिर आज राजनीतिक दूरदर्शिता दिखाने में नहीं हिचके।

11. दूसरा उपाय जो मुझे सूझता है, वह है युद्धकाल में संविधान का स्थगन। लेकिन उस उपाय के बारे में मैं अभी कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि अन्य उपाय उपलब्ध हैं।

12. अगर ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश व्यापारी वर्ग वही भूमिका अदा करते रहें जों वे बंगाल के सार्वजनिक जीवन में 1937 से कर रहे हैं, तो स्थिति लगातार बिगड़ती हुई, ऐसे मुकाम पर पहुंच जाएगी जब स्थिति बेकाबू हो जाएगी। अगर दुर्भाग्यवश वैसा होता है तो हमें कम से कम यह संतोष तो होगा कि हमने मामले की ओर समय रहते इस देश के सर्वोच्च सरकारी अधिकारी का ध्यान खींचा था।

भवदीय

सुभाष चंद्र बोस

38/2 एलगिन रोड,
कलकत्ता
दिनांक : 3 जनवरी, 1941

महामहिम

पहली तारीख के मिस्टर लैथवेट के पत्र के जरिये महामहिम आपका संदेश पाने पर मैं आपको धन्यवाद देता हूं। बंगाल की स्थिति के बारे में एक और मुद्दा है, जिसे लगता है महामहिम आपके ध्यान में मुझे लाना चाहिए।

2. कोई दो महीने पहले, बंगाल सरकार ने सभी सभाओं, जुलूसों, प्रदर्शनों आदि पर जो सार्वजनिक जीवन के अपरिहार्य हैं, पाबंदी लगाते हुए नयी अधिसूचना जारी कीं यह आदेश 1939 में युद्ध छिड़ने के समय जारी बंगाल सरकार ने आदेश से अधिक सख्त है।

3. पूछे जाने पर सरकारी प्रवक्ता आमतौर पर बताते हैं कि तथाकथित पाबंदी, वास्तव में पाबंदी नहीं है– क्योंकि सभाएं आदि संबंधित अधिकारियों से आवश्यक

अनुमति लेकर आयोजित की जा सकती हैं। लेकिन मेरी पीढ़ी के लोगों नें, जो बीस वर्ष से सार्वजनिक जीवन में हैं, सभाएं आदि आयोजित करने के लिये कभी अधिकारियों को आवेदन नहीं दिया है और हम उस दस्तूर को अब भी नहीं छोड़ेगें। सरकार भी इससे अनजान नहीं है। परिणास्वरूप, यह अधिसूचना वास्तव में सभी सार्वजनिक सभाओं आदि पर पाबंदी है।

4. महामहिम, आपको स्मरण होगा कि पिछले वर्ष मैंने सितम्बर 1939 के आरंभ में बंगाल सरकार द्वारा लगायी गयी पाबंदी की जानकारी केन्द्रीय अधिकारियों को दी थी। उसके बाद मैंने माननीय मुख्यमंत्री और माननीय गृहमंत्री, दोनों से उस अनोखी अधिसूचना को वापस लेने और ब्रिटिश भारत के अन्य हिस्सों की तरह व्यवस्था करने की अपील की थी। मैंने बताया था कि यह बात कितनी बेतुकी है कि मैं दिल्ली समेत पूरे देश में भाषण देने में समर्थ हूं लेकिन बंगाल में प्रवेश करने के साथ ही मुझे मुंह बन्द करना पड़ता है। मैंने यह भी बताया कि दूसरी सरकारों की तरह बंगाल सरकार राजद्रोही, युद्ध विरोधी भाषणों के मामले में कार्रवाई कर सकती हैं और यह केवल अनुचित ही नहीं अनावश्यक भी है कि सभी सभाओं आदि पर व्यापक पाबंदी लगा दी जाए। मेरी अपीलों का कोई असर नहीं हुआ और पांच महीने तक प्रतीक्षा करने के बाद अन्ततः हमने मात्र चिढ़ में पाबंदी का विरोध करना शुरू किया। शुरू में हमारे कुछ लोग गिरफ्तार किए गए लेकिन उसके बाद शीघ्र सुबुद्धि जगी और अधिकारियों ने उसके बाद हमारी सभाओं में हस्तक्षेपं नहीं किया। मुझे नहीं लगता कि इस अनोखे व्यवहार से बंगाल सरकार की प्रतिष्ठा बढ़ी।

5. बिल्कुल वही स्थिति आज पैदा हुई है और अपनी अबोधगम्य नीति से बंगाल सरकार सविनय अवज्ञा आंदोलन को ही आमंत्रित कर रही है। महामहिम, आप से ही मैं पूछना चाहता हूं कि इन परिस्थितियों में कोई स्वतंत्रता–प्रेमी व्यक्ति क्या कर सकता है या उसे क्या करना चाहिए, खासकर जब हव स्थानीय सरकार को प्रेरित करने में विफल रहा हो।

6. हमारी सरकार ने प्रेस (समाचारपत्रों) को भी नहीं बख्शा है। पहली बात तो यह कि यहां दैनिक सेंसरशिप दूसरे प्रांतों की अपेक्षा बहुत अधिक सख्त है, जो विभिन्न प्रांतों के समाचारपत्रों की तुलना से जाहिर हो जाएगा। लेकिन जे बात महत्वपूर्ण है, वह यह कि मामूली बहाने पर सरकार ने अधिसूचना के जरिये उस आंदोलन से संबंधित सभी समाचारों के प्रकाशन पर रोक लगा दी। गांधीपंथी सत्याग्रह से संबंधित समाचारों के प्रकाशन के बारे में भारत सरकार की वर्तमान नीति से इसकी कितनी विषमता है।

7. लगभग एक महीना पहले, जब बंगाल की जेलों में कुछ राजनीतिक कैदी

भूख हड़ताल पर थे तो बंगाल सरकार ने अधिसूचना के जरिये भूख हड़ताल से संबंधित सभी समाचारों, सूचनाओं आदि के प्रकाशन पर रोक लगा दी । अपने बीस वर्षों के अनुभव के दौरान मुझे किसी ऐसी घटना की जानकारी नहीं हैं। इस घटना का सबसे खेदजनक पहलू यह है कि यह बात 'लोकप्रिय' मंत्रिमंडल के तत्वावधान में हुई है। इसमें कोई अचरज नहीं कि इस प्रांत की जनता में ऐसे 'लोकप्रिय' मंत्रिमंडल के प्रति उत्साह नहीं है।

8. जब कुछ उनके अनुकूल होता है तो बंगाल सरकार व्यवहार में एकरूपता की बात करती है। लेकिन जब इस प्रांत के मुकाबले दूसरे जगह व्यवहार बेहतर होता है, तो यह तर्क सुविधापूर्वक भुला दिया जाता है।

9. यह पत्र लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य, स्थिति को सुधारने की मांग करना नहीं है, बल्कि महामहिम आपको सूचित करना है ताकि हम यहां जो कठिनाइयां झेल रहें हैं, उसे कम से कम समझा तो जाए।

भवदीय

सुभाष चन्द्र बोस

भारत के महामहिम वायसराय और गवर्नर जनरल।

मेरी राजनीतिक वसीयत और सरकार को पत्र

प्रेषित : अधीक्षक, प्रेसीडेंसी जेल

अधीक्षक,

प्रेसीडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

मैं आपके ध्यान में आज सवेरे चौवालीस सेल (फोर्टीफोर सेल्स) में काम पर तैनात वार्डर के आदेश पर एक कैदी की पिटाई की शिकायत लाना चाहा हूं। कैदी मेरा परिचारक है। पिटाई तड़के लगभग उस समय हुई जब जेलर पहली बार गश्त लगाते हैं।

मैंने अपने कैदी–परिचारक से तथ्यों का पता लगाने की कोशिश की और मुझे जा पता चला है, वह संक्षेप में इस प्रकार है :

जेलर जब उसके सेल से गुजरे तो वह विलम्ब से उठा। उसका कहना हे कि उसने जान–बूझ कर उपेक्षा नहीं की। वार्डर ने कैदी ओवरसियर, पारावाला और एक अन्य कैदी को उसकी 'धुलाई' अर्थात पिटाई, करने का आदेश दिया। पिटाई, जेलर

के वहां (फोर्टीफोर सेल्स) से जाने के बाद हुई।

कैदी ने जो बताया उस पर मैं विश्वास करता हूं, क्योंकि वह वास्तव में ऊंचा सुनता है। मुझे अक्सर चीखना पड़ता है, ताकि वह सुन सके। असल में, मैं उसके बहरेपन की शिकायतें करने और उसका स्थानान्तरण कराने की बात सोच रहा था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि वह शिष्ट है और अपना काम ठीक से करता है।

मेरा ख्याल था कि 1940 में 'धुलाई' प्रथा समाप्त हो गयी है। जो मैंने पता लगाया है, उससे लगता है कि यह असामान्य घटना नहीं है लेकिन जेल संहिता में इसकी व्यवस्था नहीं है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि इस मामले का सरकारी तौर पर संज्ञान लें।

सधन्यवाद,

सुभाष सी. बोस

15.7.40

प्रेषित : अधीक्षक, प्रेसीडेंसी जेल

प्रेषित

अधीक्षक

प्रेसीडेंसी जेल

17.7.40

प्रिय महोदय,

गले की खराबी, नाक की तकलीफ, इन्फ्लुएंजा आदि के निवारण के लिये मैं नियमित रूप से नाक में स्प्रे करने वाली दवा ले रहा हूं, जिससे लाभ भी हुआ है। इस समय की जरूरी दवा खत्म हो गयी है। इस उपदान में मेंथोल आदि होता है और मेरे भाई डा. सुनील सी. बोस ने यह नुस्खा दिया था। में उनसे नुस्खा लिखवाकर मंगवाना चाहता हूं और मुझे विश्वास है कि जेल अस्पताल से यह दवा दी जा सकती है। क्या आप डा. बोस (पार्क 679) को अपने कर्मचारी से टेलीफोन करवाकर अपने पास नुस्खा लिखवाकर भेजने को कहेंगें? इससे एक दिन में लिखित रूप में नुस्खा मिल जाएगा अन्यथा क्या पता, मेरी चिट्ठी उन तक कब पहुंचेगी? दस दिन पहले मैंने जो चिट्ठी घर भेजी थी, वह अभी तक नहीं मिली है, क्योंकि जो चीजें मांगी गयी थीं, वे अभी तक नहीं मिली हैं।

धन्यवाद,

भवदीय,

सुभाष सी. बोस

आप कृपया नुस्खा लिखा हुआ पिछला कागज देखेंगे, जो आपके घर से भेजा गया था। बताया गया है कि उसमें नाक में छिड़कने वाली दवा की भी उल्लेख है।
ह. अस्पष्ट
17/7

नुस्खे का आखिरी कागज भेजा जा रहा है। इसमें तो पाचनक्रिया की दवा का नुस्खा है, नाक में छिड़कनेवाली दवा का नहीं। जरूरी पड़ताल और उपयोग के बाद इसे वापस भेज दें।
एस. सी. बोस
17/7
देखा और वापस किया। व्यवस्था की
ह. अस्पष्ट
17/7
भेंट आवेदन अमान्य किया

(प) कुमारी इला बोस—दो बार

(पप) कल्याण बोस

पी.सी. रू. 35—8—9 शेष

ह. अस्पष्ट
17/7
प्रेषित :
माननीय गृहमंत्री
बंगाल सरकार,
द्वारा : अधीक्षक, प्रेसीडेंसी जेल
प्रिय महोदय,

मैंने अभी—अभी हौलवेल स्मारक के संबंध में समाचारपत्रों आदि पर लगायी गयी पाबन्दी पर श्री जे. हाशमी के स्थगन प्रस्ताव पर आज की तारीख के 'दि स्टेट्समैन' में बंगाल विधान सभा में आपके भाषण की रिपोर्ट पढ़ी है। मुझे नहीं पता कि 'दि स्टेट्समैन' की रिपोर्ट सही है या नहीं। यह उसके प्रति बिल्कुल असत्य और फलस्वरूप अनुचित है, जो जेल में होने के कारण उत्तर नहीं दे सकता। फिर भी, अपना विरोध दर्ज कराने से पहले यह सही होगा कि मैं आपके भाषण की सत्यापित प्रतिलिपि प्राप्त कर लूं इसलिये मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि कृपया अपने भाषण की सत्यापित प्रतिलिपि मुझे उपलब्ध करा दें।

अगर मुझे समय से यह नहीं मिली तो मैं 'दि स्टेट्समैन' की रिपोर्ट के आधार पर आपको लिख भेजूंगा।

भवदीय

सुभाष सी. बोस

प्रेसीडेंसी जेल

19.7.40

प्रेषित

अधीक्षक

प्रेसीडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

मैंने पांच तारीख को अपने स्थिति के मुद्दे पर माननीय गृहमंत्री को पत्र लिखा था। सरकार से उस पत्र का निश्चित उत्तर नहीं मिलने तक, कुछ मुद्दों को और जो आपके अधिकार क्षेत्र में आता हो, आप सुलझा सकते हैं।

1. साहयर्च का प्रश्न

मुझे पांच तारीख से अलग रखा गया है और स्वयं तक ही सीमित रखा गया है। मैं कई बार मौखिक रूप से इसका विरोध कर चुका हूं और एक बार मैंने लिखा है कि मुझे मेरे जैसी कानून के तहत कैद दूसरे लोगों के साथ एक घंटे या प्रतिदिन इसी तरह साहयर्च की अनुमति दी जाए। इस तरह का अलगाव जो स्थायी व्यवस्था सी लगती है, पूरी तरह अवैधानिक है और मुझ पर अब तक कभी नहीं लागू हुआ है, चाहे मैं लम्बी अवधि के लिये ही जेल में रहा हूं।

2. दैनिक व्यायाम का प्रश्न

इस वार्ड में क्षेत्र छोटा होने के कारण शायद ही टहलने की कोई सुविधा है इसलिए आपसे मेरा अनुरोध है कि शाम को ताला बन्द होने के बाद मुझे जेल के अहाते में टहलने की अनुमति दी जाए। भारत या बर्मा में ऐसा कोई जेल नहीं है, जहां कभी इससे वंचित किया गया है, उदाहरण के तौर पर मैं कुछ जेलों के नाम बता रहा हूं।

1. अलीपुर सेंट्रल जेल, कलकत्ता

2. बहरमपुर जेल, बंगाल

3. सिवनी जेल, सी. पी. (जेल की दीवारों के बाहर)

4. जबलपुर सेंट्रल जेल, सी. पी

5. आर्थर रोड जेल, बम्बई

6. मांडले जेल

7. रंगून जेल बर्मा

8. इनसीन जेल

3. भेंट

भेंट के लिये मेरा एक आवेदन अस्वीकृत कर दिया गया है। मुझे पक्का मालूम है कि मेरे कुछ संबंधियों ने अब तक भेंट के लिये आवेदन दिये हैं और चूंकि उन्हें मुझसे भेंट करने की अनुमति नहीं दी गयी है—मैं यह मान रहा हूं कि उन्हें अनुमति नहीं दी गयी है इसलिये मैं आपका आभारी रहूंगा अगर आप कृपया सही अधिकारियों से पूछताछ कर पता करें कि मेरे किन संबंधियों पर पाबंदी है। हमारा परिवार बहुत बड़ा है और जहां तक भेंट का संबंध है, मैं सहजता से उन सब से भेंट की मांग कर सकता हूं, जिन पर पाबंदी नहीं है।

मेरे भाई श्री शरत चन्द्र बोस के साथ भेंट विशेष तौर पर गृह मंत्रालय में सरकार द्वारा सीधे व्यवस्था की गयी थी।

इनमें से जो प्रश्न इस समय आपके अधिकार क्षेत्र में पूरी तरह नहीं है, उन्हें सही अधिकारी के सामने रखें

सधन्यवाद,

भवदीय

सुभाष सी. बोस
प्रेसीडेंसी जेल
23.7.40

प्रेषित

अधीक्षक
प्रेसीडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

हमारी अभी–अभी जो बातचीत हुई, उसी के संदर्भ में मैं जल्दबाजी में कुछ मांगों का उल्लेख कर रहा हूं, जिनके बारे में आपसे अनुरोध है कि आप विचार करें और स्वीकृत करें (वास्तव में जहां आवश्यक हो सरकार की स्वीकृति के बाद)। आप कृपया इस बात पर ध्यान देंगे कि मैं फिजूल की कोई मांग नहीं कर रहा हूं। वास्तव में, इसमें एक भी ऐसी मांग नहीं है, जिसकी अनुमति पिछली सरकारों ने नहीं दी है।

1. आहार और अन्य भत्ते, कारावास की पूर्व अवधियों के जितना ही (मेरा ख्याल है कि 1924–27 में आहार भत्ता 6/10 रू. और बाद की अवधि में 4/8 रू. प्रतिदिन)।

2. पहले की तरह ही समान सुविधाएं, पत्र लिखने का कागज, लिखने की कापियां, चाकू समेत चीनी के बर्तन की सफाई के मामले में, सूटकेस, कपड़े आदि जैसा अन्य सामान, जेल की आम पाबन्दियों के व्यवधान के बगैर।

3. विशेष दैनिक अखबार की सप्लाई में कोई पाबंदी नहीं (जैसे 1936–37 के पिछले कारावास के दौरान मुझे सभी अखबार दिए गए)।

4. सभी साहित्य जिसे सरकार ने प्रतिबंधित या अवैध घोषित नहीं किया है।

5. मेरे द्वारा लिखे जाने वाले पत्रों की संख्या के मामले में उदार नीति, जैसे कि 1936–37 के पिछले मौके पर यह संख्या प्रति सप्ताह चार से पांच थी।

6. मेरे खर्च पर ग्रामोफोन की सप्लाई। इसके उपयोग का समय निश्चत ही ऐसा होगा कि जेल के कामकाज में इससे बाधा नहीं पड़े।

7. समय–समय पर अधीक्षक की अनुमति से मुझे अपने डॉक्टर भ्राता–डॉ. सुनील सी. बोस से परामर्श करने की अनुमति दी जाए।

8. व्यायाम और भेंट से संबंधित प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। व्यायाम के मामले में मुझे सुबह–शाम नदी किनारे टहलने की अनुमति दी जाए, इसके लिये कार का खर्च मेरा अपना होगा। 1937 में ऐसी अनुमति दी गयी थी।

भेंट के मामले में मुझे 1937 की तरह दोपहर बाद घर जाने की अनुमति दी जाए। अगर इस पर आपत्ति की जाती है तो मुझे प्रतिदिन भेंट की अनुमति दी जाए। इस तरह की भेंट करने की अनुमति वार्ड में किसी पुलिस अधिकारी की गैरमौजूदगी में दी जाए। (दिसम्बर 1936 और 1937 के आरंभ में मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मुझे प्रतिदिन भेंट की छूट थी, जहां मैं सरकारी कैदी था और भेंट के समय कोई उपस्थित नहीं रहता था। बाद में मुझे रोजाना भेंट के लिये घर जाने की अनुमति थी।

जेल में रोजाना भेंट के मामले में यह वांछनीय है कि वह वार्ड में हो क्योंकि इससे न तो मुझे और न किसी अन्य को असुविधा होती है। नजरबन्द या सरकारी कैदी होने के नाते मुझे आमतौर पर जेलों में अपने वार्ड में ही भेंट की अनुमति दी गयी है, जहां मैं कैद रहता था। अगर आवश्यक हो तो मैं इसके अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि 1921 और 1922 में इसी जेल के इसी वार्ड में लेफ्टि कर्नल हैमिल्टन ने स्वर्गीय सी. आर. दास को रोजाना भेंट की अनुमति दी थी यद्यपि उस समय उन पर मुकदमा चल रहा था और बाद में उन्हें सजा दी गयी।

मैंने यहां वैसे ही सुझाव दिये हैं जो मेरी वर्तमान स्थिति के अनुकूल है। अर्थात जेल में बन्द और मैं इसे बहुत जल्दबाजी में लिख रहा हूं। इसमें निहित मान्यता यह है कि मेरी स्थिति सरकारी कैदी की है। इसके अलावा मैं केवल यही कहूंगा कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न व्यायाम और भेंट से संबंधित है। मुझे बताते हुए खेद है कि इस कैद का मेरे स्वास्थ्य और धैर्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

सरकार की आसानी के लिये मेरा कहना है कि व्यायाम और भेंट के मामले में अगर मुझे उपर्युक्त सुविधाएं दी जाती हैं और मेरे ऊपर भरोसा हो तो मैं भी भरोसा कर सकता हूं। महामहिम सर जान एंडर्सन की सरकार ने, जो 'शक्तिशाली' सरकार के रूप में जानी जाती थी, मुझे जब उपर्युक्त सुविधाएं दीं तो मुझे शिकायत का कोई मौका नहीं मिला।

सधन्यवाद,

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
7.8.40

प्रेषित

अधीक्षक,
प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

अपनी लगभग कालकोठरी जैसा सजा का बार–बार विरोध करने के बाद सरकार ने किसी दूसरे वार्ड से श्रीयुत अमरेन्द्र एन. बोस. को इस वार्ड में रखने का आदेश दिया है। मेरा मानना है कि यह आदेश मुझे साहचर्य देने के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हुई है। इससे केवल सरकार यह कह सकेगी कि मैं कालकोठरी की सजा नहीं भुगत रहा हूं।

2. मैंने केवल साधारण अनुरोध किया था कि थोड़ी देर के लिये संगति की

इच्छा होने पर मुझे प्रतिदिन कोई घंटाभर के लिये राजनीतिक कैदी वार्ड (मेरा आशय वार्ड 17 से है) में जाने की अनुमति होनी चाहिए। इसकी अनुमति नहीं दी गयी है, पता नहीं किन कारणों से। इस वार्ड में हत्या, धोखाधड़ी आदि के आरोपी कैदी हैं, जो देखने में अच्छे–भले सहचर हैं लेकिन वैसे लोग नहीं जो वार्ड 17 में मुकदमा चलाये बगैर जेल में हैं। (अगर मैं अपना वार्ड नहीं छोड़ सकता हूं तो उन्हें टोलियों में यहां आने की अनुमति दी जाए)।

3. एक दूसरी बात भी है जिसे सरकार आसानी से स्वीकृत कर सकती है, बशर्ते वे चाहते हों कि कैद की ऐसी स्थितियों का मेरे दिमाग पर बुरा असर न पड़े। वे मुझे मेरे खर्च पर रेडियों दे सकते हैं जिसका उपयोग मैं इस शर्त पर करूंगा कि जेल के सामान्य कामकाज में बाधा नक पड़े। इससे किसी को नुकसान नहीं होगा, लेकिन मुझे राहत और विश्राम मिलेगा। इस समय दुनियाभर के सभ्य देशों में जेलों में रेडियों और सिनेमा की अनुमति दी जाती है। वास्तव में हाल ही में इस जेल के अंदर साधारण कैदियों के हित में सिनेमा दिखाया गया था। अगर सरकार हमें सरकार हमें अपराधकर्मियों से भी अधिक बुरी श्रेणी का नहीं मानती, तो मेरा ख्याल है कि मुझे रेडियो रखने की अनुमति दी जाए, जिसके लिये मैं इस पत्र से व्यक्तिगत अनुरोध कर रहा हूं।

अगर इस मामले में उच्च अधिकारियों की स्वीकृति की आवश्यकता हो तो आप कृपया इसे आवश्यक आदेश के लिये उन्हें भेज दें, जिसके लिये मैं आभारी रहूंगा।

सधन्यवाद,

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
22.8.40

प्रेषित

अधीक्षक,
प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

मेरी भेंट के संदर्भ में, मांग पुस्तिका में मैंने आपकी टिप्पणी देखी है। आपके द्वारा यहां भेट की अनुमति न देने के खिलाफ मैं एक बार आवश्य विरोध करूंगा और आप ऐसे समय भेंट का अनुरोध अस्वीकार कर रहे हैं, जब किसी अन्य समय की अपेक्षा मुझे इस वक्त भेंटों की अधिक आवश्यकता है।

2. जेल के अन्दर किसी व्यक्ति के लिये भेंट एक आम बात है। जेल

अस्पताल में या उसकी कोठरी (सेल) में ज बवह बीमार हों। अगर जेल के अंदर भेंट पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी जाय तो इसका अर्थ यह होगा कि जब तक कोई बीमार हो, उसे किसी सें भेंट करने नहीं दी जायेगी। यह स्पष्ट रूप से एक असंभव स्थिति है। वर्तमान मामले में, आप मुझसे अस्पताल के रोगी की तरह बर्ताव करें, केवल डॉक्टरी चिकित्सा के मामले में ही नहीं, बल्कि अन्य मामलों में भी।

3. बंगाल की जेलों में बितायी गयी अपेक्षाकृत छोटी अवधियों में मैं कभी–कभार ही बीमार पड़ा हूं लेकिन मुझे पक्का पता है कि जेल के अन्दर अनेक लोगों को भेंट की सुविधा मिली है, इसी वार्ड में (और यहां स्थानांरित होने पर अलीपुर सेंट्रल जेल में, स्वर्गीय देशबन्धु सी.आर.दास को दोपहर बाद घंटों परिवार के सदस्यों से रोजाना भेंट की अनुमति दी गयी थी)

4. भेंट के समय जब भी मैं बीमार रहा हूं, मुझे वही सुविधायें मिलीं और जेल अधिकारियों की ओर से इस सवाल पर लेशमात्र भी आपत्ति नहीं की गयी–उदाहरणस्वरूप बर्मा के मांडले, रंगून और इनसीन जेलों में, सी. पी. के सिवनी और जबलपुर जेलों में।

इसलिये मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि इस मामले पर पुनर्विचार करें और मुझे यहां भेंट करने दें। इस सप्ताह मुझे भेंट से वंचित करना सजा देना है, खासकर जब एक बार फिर मैं बिल्कुल अकेला हूं। अगर पुनर्विचार के बाद भी आपका उत्तर नकारात्मक हो तो अगर इस मामले को कृपया सरकार को भेज दें तो मैं आभारी रहूंगा।
भवदीय

सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
30.8.40

प्रेषित

अधीक्षक,
प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

सरकार से मुझे अपने वकीलों से सलाह–मशविरा करने की जो अनुमति मिली है, उसके संदर्भ में सर्वप्रथम मैं अपने नियुक्त अटॉर्नी से भेंट करना चाहूंगा और उनसे मामले पर विचार–विमर्श करने के बाद अपनी भावी कार्य–दिशा तय करूंगा।

मैं यह मानकर चल रहा हूं कि इस भेंट में सामान्य तौर–तरीके का पालन होगा और यह निजी होगी जिसमें कोई अधिकारी उपस्थित नहीं रहेगा।

मेरे अटॉर्नी मेसर्स; मित्रा एंड मित्रा, सोलिसिटर्स, 5, हेस्टिंग्स स्ट्रीट, कलकत्ता, के श्री नृपेन्द्र सी. मित्रा हैं। मित्रा एंड मित्रा कम्पनी का नाम टेलीफोन सूची में है। श्री मित्रा हर सवेरे लगभग साढ़े ग्यारह बजे अपने कार्यालय में होते हैं। उनका निवास एन. सी. मित्रा, 2 बी अभय गुहा रोड, कलकत्ता, भी टेलीफोन सूची में है। कल छुट्टी का दिन होने के कारण मैं आज दोपहर बाद भेंट का आयोजन पसन्द करूंगा।

सधन्यवाद,

भवदीय

सुभाष सी. बोस

प्रेषित

अधीक्षक,

प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

आपको आज सुबह एक पत्र लिखने के बाद मैंने 'हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड' में देखा कि चीफ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट द्वारा मेरे खिलाफ एक वारंट जारी किया गया है और मेरे ऊपर दो विषयों के हत आरोप लगाए गए हैं। इससे यह और भी जरूरी हो गया है कि मैं अपने कानूनी सलाहकारों से तुरन्त मिलूं। इसलिये मैं आपका आभारी रहूंगा अगर मेरे अटार्नी के साथ मेरी भेंट आज दोपहर बाद तय की जाए।

भेंट के समय किसी तरह की गलतफहमी या अप्रिय बात न हो इसलिये अगर आप यहां यह कह दें कि भेंट सामान्य तौर–तरीके के अनुसार निजी होगी, तो मैं आपका आभारी रहूंगा।

सधन्यवाद,

भवदीय

सुभाष सी. बोस

प्रेसिडेंसी जेल

312.8.40

प्रेषित

अधीक्षक,

प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

पी. डब्ल्यू डी. के प्रतिनिधि ने हाल ही में मुझे एक टिप्पणी दिखायी, जिसके अनुसार रेडियो सेट के लिये 22 रूपये की लागत से 'अर्थ कनेक्शन' लेना अपरिहार्य रूप से आवश्यक है। मैंने रेडियो सप्लायर से दो बार परामर्श किया है और उन्होंने

आश्वासन दिया है कि पी. डब्ल्यू डी. द्वारा जो 'अर्थ कनेक्शन' की सिफारिश की गयी है वह आवश्यक नहीं है। मैं निजी अनुभव से भी जानता हूं कि घर पर मेरे रेडियो सेट के लिये यह जरूरी नहीं था। रेडियो सप्लायर बड़े पैमाने पर इस काम में विशेषज्ञ हैं और अपना काम जानते हैं। इसके अलावा, अगर वे गलत परामर्श देकर या गलत फिटिंग करके नुकसान पहुंचाते हैं तो उन्हें घाटा उठाना होगा। इन परिस्थितियों में, मुझे नहीं लगता कि उनकी सलाह की उपेक्षा की जाए। क्या आप कृपया इस मामले पर विचार करेंगे और अगर आवश्यक हुआ तो पी. डब्ल्यू. डी. के साथ मामले को उठायेंगे?

आखिरी किन्तु कम महत्वपूर्ण नहीं, बात है कि यहां मेरा प्रवास अस्थायी हैं और जैसी पी. डब्ल्यू डी. ने सिफारिश की है, इस दृष्टि से स्थायी कनेक्शन अनावश्यक लगता है।

भवदीय

सुभाष सी. बोस

20.9.40

प्रेषित

अधीक्षक,

प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

मैंने दुर्गा पूजा के संबंध में नियमों और प्रतिबंधों के बारे में उप–जेलर की टिप्पणी देखी है। मेरे लिये यह अप्रत्याशित है।

दुर्गा पूजा के मामले में रियायतें, 1926 में मांडले जेल में बंगाल के नजरबन्दों की भूख हड़ताल के बाद दी गयी थीं। उस समय हमें पूजा के अनुष्ठान के लिये पूरी सुविधाएं दी गयी थीं और सरकार ने पूजा भत्ता भी स्वीकृत किया था। उस समय एक ही स्वगृहीत नियंत्रण था, जिसका हमने पालन किया। यद्यपि हमें संगीत की अनुमति मिली थी, लेकिन हमने सुनिश्चित किया कि यह यथासंभव धीमी आवाज में सम्पन्न हो।

दुर्गा पूजा के संबंध में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने की जरूरत है:

(1) देश के इस हिस्से में यह हिन्दुओं का महान राष्ट्रीय त्यौहार है।

(2) यह सामूहिक पूजा है इसलिये इसे केवल 'पूजा' नहीं बल्कि 'उत्सव' भी कहा जाता है।

(3) दुर्गा पूजा के लिये तीन पुजारी जरूरी हैं। चंडी–पाठ तो दो से कम में

नियमानुसार असंभव है और वह तभी संभव है जब एक पुजारी को 'चंडी—पाठ' का ही भार सौंप दिया जाए, जो वे अक्सर इनकार कर देते हैं, क्योंकि वह थकानेवाला होता है।

(4) पूजा का समय और अवधि, खगोलशास्त्रीय गणना से निर्धारित की जाती है। उदाहरण के तौर पर सबसे महत्वपूर्ण अनुष्ठान है, 'संधि पूजा' जो शुक्लाष्टमी को होती है—पूजा का समय अवसर रात में होता है (मुझे अभी तक पता नहीं, इस वर्ष 'संधि पूजा' का समय क्या है)।

फलस्वरूप, जेल में दुर्गा पूजा का आयोजन तभी संभव है जब निम्नलिखित अतिरिक्त रियायतें दी जाएं:

(1) दुर्गा पूजा चूंकि सामूहिक प्रकृति की होती है अतः सभी इच्छुक हिन्दू कैदियों को इसमें शरीक होने की अनुमति दी जाए। यहां यह उल्लेखनीय है कि अलीपुर सेंट्रल जेल में ईद त्यौहार के दौरान मुस्लिम कैदियों को और क्रिसमस त्यौहार के दौरान ईसाई कैदियों को इसी तरह की सुविधायें दी जाती हैं। किसी भी हालत में, कोई कारण नहीं है कि सभी हिन्दू राजनीतिक कैदियों को इसमें शरीक होने न दिया जाए।

(2) कम से कम दो पुजारियों की अनुमति दी जाए।

(3) उन्हें खगोलशास्त्रीय गणना से निर्धारि पर अनुष्ठान करने की अनुमति दी जाए, चाहे वह जो भी समय हो।

(4) न्यूनतम संगीत की अनुमति दी जाए। संगीत 'आरती' आयोजन के लिये अनिवार्य है (पूजा भत्ते के प्रश्न पर हमारे विचाराधीन दर्जे के सामान्य प्रश्न के साथ विचार किया जाना चाहिए)।

अगर इन रियायतों की अनुमति नहीं दी जाती है तो इसका अर्थ यह होगा कि सरकार असल में जेल में दुर्गा पूजा की अनुमति नहीं देती है। हमने 1926 में पंद्रह दिन की भूख हडताल करके जेल में अत्यधिक कष्ट उठाकर जो रियायतें पायीं थीं, वैसा न करना उन्हें नाजायज ढंग से रद्द करना होगा। इसके अलावा, इसका अर्थ होगा कि नौकरशाहों के शासन में जो रियायतें मिली थीं, उनहें लोकप्रिय मंत्रिपरिषद सरकार वापस ले रही है।

ऐसी स्थिति के परिणाम स्वाभाविक तौर पर हमारे लिये गंभीर होंगे। कृपया इस मामले पर पूरी छानबीन के साथ विचार करें और अगर आवश्यकता हो तो उच्च अधिकारियों के सामने इस उठायें।

सधन्यवाद,

भवदीय
सुभाष सी. बोस
20.9.40

पुनश्च : दुर्गा पूजा शुक्ल पक्ष की षष्ठी को आरंभ होती है और दशमी को समाप्त होती है–लेकिन इन पांच में से तीन दिन अधिक महत्वपूर्ण है।

सु.च.बो.

प्रेषित
माननीय गृह मंत्री,
बंगाल सरकार

प्रिय महोदय,

मुझे यह तथ्य आपके ध्यान में लाना है कि आजकल चल रही मुझसे जुड़ी दो सुनवाइयों में अदालत में जनता को जाने की खुली छूट नहीं है जबकि आम जनता में यह धारणा बनाई गई है कि सुनवाइयां 'सार्वजनिक' हैं, बंद कमरे की नहीं।

दुर्भाग्य से, मेरी नजर में यह तथ्य कल ही अपने लोगों से भेंट–मुलाकत के दौरान आया वरना मैं पहले ही बतौर नागरिक अपने अधिकारों के लिये कदम उठा चुका होता।

सरकार इन दो में कोई एक काम कर सकती है:

1. जनता में यह घोषणा करे कि सुनवाई बंद कमरे में होगी और फिर जनता को बाहर रखें। ऐसी स्थिति में हमें मालूम होगा कि कैसी प्रतिक्रिया करनी हैं।

2. खुली सुनवाई की व्यवस्था करे और जनता को अदालत में आने की खुली छूट दे।

लेकिन सरकार सार्वजनिक बताकर जनता को बाहर नहीं रख सकती। चित भी मेरी, पट भी मेरी यह नहीं हो सकता।

मैं ऐसे एक महत्वपूर्ण मामले से परिचित हूं, जिसमें मेरे एक करीबी रिश्तेदार, एक महत्वपूर्ण नेता के खिलाफ मुकदमे की सुनवाई कर रहे थे। पुलिस सुनवाई से जनता को दूर रखना चाहती थी पर उन्होंने इसकी इजाजत नहीं दी तब पुलिस ने दलील दी कि आदालत में पर्याप्त जगह नहीं है। इसके बाद सुनवाई कर रहे मजिस्ट्रेट ने बाहर खुले में एक पेड़ के नीचे अदालत लगा दी। इस तरह उन्होंने जनता को खुली सार्वजनिक सुनवाई को देखने की पूरी स्वतंत्रता प्रदान की। हर सार्वजनिक सेवा में लगे

व्यक्ति को, चाहे वह बड़े पद पर हो या छोटे इसी भावना का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति को जनता की सेवा करनी है, न कि पुलिस से आदेश लेना है।

मैं इस खबर पर अविश्वास नहीं क सकता कि पुलिस लोगों को अदालत में जाने की खुली इजाजत नहीं दे रही थी—क्योंकि मुझसे खुद बंकशाल अदालत में एक पुलिस सार्जेंट दो बार बदसलूकी कर चुका है। आखिकार उसे अपने होश में आना पड़ा था क्योंकि मैं बिफर उठा और अदालत से संरक्षण की मांग कर बैठा।

पुलिस के हस्तक्षेप के कारण मेरे रिश्तेदारों को सुनवाई में उपस्थित होने में सबसे अधिक कठिनाई हो रही हैं यह मेरे लिये बर्दाश्त के बाहर है कि मेरे रिश्तेदारों सहित सामान्य लोगों को जो सुनवाई के दौरान उपस्थित रहना चाहते हैं, छोटे—मोटे पुलिस सार्जेंट और उस जैसे अन्य लोग अपमानित करें।

जब तक इस मामले का निपटारा उपर्युक्त सुझावों के मुताबिक मेरे लिये संतोषजनक नहीं हो जाता, मैं 3 और 28 तारीख की सुनवाइयों में, अदालत में (बंकशाल कोर्ट और अलीपुर कोर्ट) जाने सं इंकार करता हूं। जिन बातों का हमने नौकरशाही शासन में नहीं सहा, उन्हें अब कतई नहीं सहेंगे सिर्फ इसलिये कि अब एक 'लोकप्रिय' सरकार कायम है। बेशक, मैं अपने इस रूख का नतीजा भी भुगतने को तैयार हूं, चाहे वह मेरे लिये कितना ही दुखद या कष्टदायक हो।

इस मामले पर तत्काल ध्यान दिया जाए क्योंकि अदालत में उपस्थित होने की अगली तारीख 3 की ही हैं।

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
1.10.40

प्रेषित

सुनवाई मजिस्ट्रेट
अलीपुर

प्रिय महोदय,

इसी पहली तारीख को मैं माननीय गृहमंत्री को, अलीपुर और बंकशाल अदालतों में अपने मुकदमों की सुनवाई के दौरान मौजूद रहने को इच्छुक मेरे रिश्तेदारों और आम जनता के मामले में पुलिस के हस्तक्षेप के सवाल पर चिट्ठी लिख चुका हूं। उसके बाद, मुझे इस जेल के अधीक्षक के जरिये सरकार से सूचना प्राप्त हुई है

कि निर्देश जारी किए जा चुके हैं जिनसे शिकायत की वजह दूर हो जाएगी। मुझे उम्मीद है कि चूंकि यह आपके अधिकार में है, आप कृपया ध्यान रखेंगे कि मेरी सुनवाई के समय काम पर तैनात पुलिसवाले सलीके से पेश आएं।

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
22.10.40

प्रेषित

माननीय गृह मंत्री
बंगाल सरकार
द्वारा अधीक्षक, प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

मैं करीब चार महिने से भारत रक्षा कानून की एक ऐसी धारा के तहत जेल में हूं, जिसमें न्यायिक अदालत में मुकदमा चलाना आवश्यक नहीं है। इसके अलावा, मैं पिछले दो महीने विचाराधीन कैदी रहा हूं, यानी एक धारा के तहत बिना मुकदमा चलाए कैद और उसी कानून की दूसरी धारा के तहत मुकदमा चलाना—यह प्रशासकीय आदेश और न्यायिक प्रक्रिया का सम्मिश्रण है, जो सिर्फ अप्रत्याशित ही नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से गैरकानूनी और नाजायज है।

2. यही नहीं, जब जमानत की अर्जिया सुनवाई मजिस्ट्रेट के समक्ष रखी गई तो सरकारी वकील ने अनुमानतः स्थानीय सरकार के निर्देशों के तहत उनका विरोध किया। लिहाजा, अर्जियां खारिज कर दी गई। यह न्यायिक कार्यवाही में बेजा सरकारी हस्तक्षेप का सबूत है। यह हस्तक्षेप इसलिये और अधिक आपत्तिजनक है क्योंकि स्थानीय सरकार, भारत रक्षा कानून के तहत मामलों के संबंध में भारत सरकार के निर्देशों का पालन नहीं कर रही हैं।

3. जब मुझ पर मुकदमा चल रहा है, तो मुझे इस तरह जेल में जबरन बंदी बनाकर रखना अन्यायपूर्ण, नाजायज और गैरकानूनी है। एक बार मुझे भारत रक्षा कानून करने देना चाहिए। आखिर कैसे उसी भारत रक्षा कानून के तहत मुझे फिर बिना मुकदमा चलाए बंदी बनाया जा सकता है?

4. यह आश्चर्यजनक और दुखदायी है कि यह सब एक 'लोकप्रिय' सरकार के तत्वावधान में हो रहा है। मैं यह भी देख रहा हूं एकदम यही सरकार इस्लाम में आस्था रखने वाले नागरिकों, खासकर मुस्लिम लीग के सदस्यों के मामलों में कैसे पेश आ रही है। सरकार को ढाका जिले के मौरापाड़ा के मौलवी की अचानक रिहाई जैसी

अनेकानेक मिसालें देने की जरूरत नहीं है। ऐसा हर मामला फौरन मेरी नजर में आता रहा है।

5. इन और ऐसी तमाम बातों पर गौर करते हुए सरकार को मुझे फौरन रिहा कर देना चाहिए। भारतीय विधान सभा में मेरा चुनाव भी मांग करता है कि मुझे 5 नवंबर से शुरू हो रही उसकी बैठकों में हिस्सा लेने की इजाजत दी जानी चाहिए, बशर्ते मेरा स्वास्थ्य अनुमति दे। अगर बर्मा सरकार किसी आरोपसिद्ध कैदी को धारा सभा की बैठकों में जाने की छूट दे सकती है तो क्या बंगाल के 'लोकप्रिय' मंत्रिमंडल को वह सुविधा उसे नहीं मुहैया कराना चाहिए जो आरोपसिद्ध कैदी नहीं हैं?

6. अंत में, मेरे स्वास्थ्य की मौजूदा हालत में मुझे बंदी बनाए रखना सरकार की बदले की नीतियों के अलावा कुछ नहीं है और मेरी समझ से बाहर है।

यह चिट्ठी पूरी गंभीरता से लिखी गई है और मेरा निवेदन है कि इस पर उचित ध्यान दिया जाए।

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
30.10.40

प्रेषित

अधीक्षक,
प्रेसिडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

. मैंने आज ही माननीय गृहमंत्री को अपनी लगातार जेल हिरासत के बारे में लिखता हूं। मैं चाहता हूं कि उस चिट्ठी के साथ, सरकार को बंदी का आदेश वापस लेने से इंकार करने के मेरे लिये परिणामों की भी जानकारी होनी चाहिए। इसलियें मैं इस निवेदन के साथ रहा हूं कि कृपया संभव गोपनीयता बरतते हुए इसे सरकार के ध्यान में लाएं। मैं इसे आपके दफ्तर में बंद लिफाफे में भेज रहा हूं ताकि कोई दूसरा इसे न देख सके। यह पत्र कोई धमकी नहीं है और मुझे उम्मीद है कि इसे ऐसा माना भी नहीं जाएगा। इसका आशय कुछ ऐसी संभावनाओं पर स्पष्ट संवाद करना है जो जल्दी ही मेरे लिये टालना असंभव हो जा सकता है।

मैं यह उम्मीद नहीं करता कि सरकार माननीय गृहमंत्री को लिखे मेरे पत्र में चर्चित या निहित बातों से द्रवित हो उठेगी। इसलिये मैं पिछले दो महीनों से इसी

उधेड़बुन में हूं कि मुझे क्या कदम उठाना चाहिए। मेरे लिये एक अन्यायपूर्ण कार्रवाई के खिलाफ नैतिक विरोध दर्ज करने के सिवाय कोई विकल्प नहीं बचा है और उस विरोध के साक्ष्य के तोर पर अनशन पर बैठने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया है। इस अनशन का 'लोकप्रिय' मंत्रिमंडल पर कोई असर नहीं होगा, क्योंकि मैं न तो ढाका के मौरापाड़ा का मौलवी हूं, न ही इस्लाम का अनुयायी। लिहाजा, मेरे मामले में यह अनशन आमरण अनशन बन जाएगा। मैं जानता हूं कि इससे भी सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ेगा और इस बारे में मुझे कोई भ्रम भी नहीं है। यह 'लोकप्रिय' सरकार सभी लालफीताशाही वाली सरकारों की तरह सरकारी प्रतिष्ठा का सवाल उठाएगी और चिरपरिचित दलील पेश की जाएगी कि सरकार को अनशन से बाध्य नहीं किया जा सकता। ऐसे ही मसले पर कार्क के लॉर्ड मेयर टेरेंस मैकस्वीनी ने भूख हड़ताल की थी तो मैं इंग्लैंड में ही था। समूचा देश हिल उठा था। संसद में सभी राजनीतिक दल और महामहिम राजा तक विचलित हो उठे थे लेकिन लॉयड जॉर्ज की सरकार अड़ी हुई थी। नतीजतन, राजा को सार्वजनिक घोषणा करनी पड़ी कि मंत्रिमंडल के रूख के कारण मैं शाही विशेषधिकार पर अमल नहीं कर सकता। मैं यह सब आपको और सरकार को यह यकीन दिलाने के लिये गिना रहा हूं कि मैंने पूरी स्थिति पर ठंडे दिमाग और तार्किक ढंग से सोचा–विचारा है और कि मैं हल्के ढंग से नहीं सोच रहा हूं।

इस तरह मैं अनशन से किसी संतोषजनक परिणाम की उम्मीद तो नहीं कर रहा हूं मगर मुझे सरकार के एक भेदभावपूर्ण कदम के खिलाफ नैतिक विरोध दर्ज करने का संतोष होगा। ब्रिटेनवासी और ब्रिटिश सरकार लोकतंत्र और स्वतंत्रता के पवित्र सिद्धांतों की रक्षा की बातें करती रही हे, मगर उनके घर के पास ही उनकी नीति, उनके कथन को झुठला रही है। वे नाजीवाद को खत्म करने में हमारा सहयोग चाहते हैं मगर वे खुद आला नाजीवाद में लिप्त हैं। मेरा विरोध इस अभागे देश में उनकी नीतियों में निहित पाखंड को उजागर करेगा–साथ ही इससे प्रांतीय सरकार की नीति भी उजागर होगी जो खुद को 'लोकप्रिय' बताती हैं लेकिन असलियत में उसके कान पर तभी जूं रेंग सकता है जब कोई मुसलमान सामने हो। संयोग से, मुझे यह भी संतोष होगा कि मेरे अनशन और उसके परिणाम का असर भारत के बाहर भी होगा क्योंकि मैं उन भारतीयों में से हूं, जो देश की सीमाओं के बाहर भी जाने जाते हैं।

विचार योग्य एकमात्र दूसरा विषय यह है कि क्या यह समाधान समस्या से बदतर नहीं है। मैं इस पर कई दिन और रातें सोचकर बिता चुका हूं। इस सवाल पर मेरा जवाब यह है कि मौजूदा स्थितियों में जीवन शायद ही जीने योग्य है। इस क्षणभंगुर संसार में सिद्धांतों के अलावा सब कुछ नष्ट हो जाता है। ये सिद्धांत तभी जीवित रह सकते हैं जब कोई उनके लिये जान न्यौछावर कर देता है तो सिद्धांत मर नहीं जाता

बल्कि वह दूसरे व्यक्ति में अवतरित होता है और सिर्फ कष्टसाध्य साधना से ही कोई उद्देश्य पुष्पित–पल्लवित हो सकता है। प्रकृति का नियम है कि समान, समान को आकृष्ट करता है और भूतात्मा अनेक आत्माओं को प्रेरित करती है। लिहाजा, मेरे भीतर. अगर कुछ महत्व का है तो मेरी मृत्यु से न तो मेरा देश और न ही मानवता उसे गंवाएगी, इसके विपरित ईश्वर की इच्छा हुई तो उसे और ऊंचा नैतिक आधार मिलेगा क्योंकि आखिरकार सर्वश्रेष्ठ बलिदान वही है जब कोई बिना किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाए, स्वेच्छा से अपना जीवन न्यौछावर कर दे।

यह पत्र अंत करने के पहले एक बात और। मैं कई बार लंबे समय तक जेल में रहा हूं और इसके पहले भी अनशन कर चुका हूं। मैं उन हरकतों को जानता हूं जो अति उत्साही अधिकारी कई बार अनशन तुड़वाने के लिये करते हैं। स्वाभाविक तौर पर मैं उन सब के लिये तैयार हूं। किसी भी सूरत में मैं जबरन भोजन कराने की अनुमति नहीं दूंगा। मुझे जबरन भोजन कराने का किसी को नैतिक अधिकार नहीं है। यह बात टेरेंस मैकस्वीनी के मामले में ब्रिटिश सरकार और बाद में 1926 में हमारे अनशन के दौरान भारत सरकार के सामने उठी था । तब से जेल संहिता के प्रावधानों से संबंधित कुछ आदेश जारी हुए हों तो वह मुझ पर लागू नहीं होंगे।

मैं दोहराना चाहता हूं कि काली पूजा के पवित्र दिन को लिखा गया यह पत्र धमकी या अंतिम चेतावनी न समझा जाए। यह पूरी विनम्रता से लिखा गया अपनी आस्था का उद्घोष भर है। इसलिये इसे गोपनीय दस्तावेज मानकर सरकार को गोपनीय ढंग से ही प्रेषित किया जाना चाहिए। मेरी सिर्फ यही इच्छा है कि सरकार मेरे दिमाग में चल रही बातों को जान लें। ताकि वह मेरे इरादों और अपने फैसले के, मेरे लिये होने वाले परिणामों को समझ सके।

आपके समरूप शिष्टाचार के लिये धन्यवाद।

भवदीय

सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
30.10.40

प्रेषित अधीक्षक,

भारतीय विधान सभा
प्रेषित
माननीय अध्यक्ष,
भारतीय विधान सभा,

नई दिल्ली

प्रिय महोदय,

मैं अभी–अभी भारतीय विधान सभा के लिये ढाका प्रमंडल चुनाव क्षेत्र से निर्विरोध चुना गया हूं। आपको शायद मालूम होगा कि मैं भारत रक्षा कानून की धारा 26 के तहत बिना मुकदमा चलाए 2 जुलाई, 1940 से जेल हिरासत में हूं। बिना मुकदमे के इस बंदी के अलावा, मुझ पर भारत रक्षा कानून की एक दूसरी धारा के तहत मुकदमा चल रहा है और इस तरह मैं करीब दो महीने से विचाराधीन कैदी भी हूं। मेरी ओर से सुनवाई मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश की गई जमानत की अर्जिया मंजूर नहीं की गई क्योंकि सरकारी प्रवक्ता ने उनका विरोध किया।

संवैधानिक कानून के प्रावधानों के अनुसार मैं विधान सभा के सत्र के दौरान गिरफ्तारी और बंदी से निरापदता का दावा करता हूं इसलिये मेरा आपसे ऐसे कदम उठाने का आग्रह हे ताकि मैं नई दिल्ली में नवंबर 1940 के पहले सप्ताह में शुरू हो रहे सभा के सत्र में उपस्थित हो पाऊं।

मेरे दावे के खिलाफ यह दलील दी जा सकती है कि भारतीय संविधान में उपर्युक्त उल्लिखित निरापदता का कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है। उस सूरत में मैं यह कहना चाहूंगा कि यह अधिकार किसी भी संविधान में निहित होता है और भारतीय संविधान कोई अपवाद नहीं हो सकता।

महोदय, आपको यह मालूम होगा कि हाल में एक दोषसिद्ध कैदी को, जो बर्मा विधान सभा के सदस्य थे, सभा की बैठक में उपस्थित रहने की अनुमति दी गई थी। बेशक, जब मैं दोषसिद्ध कैदी नहीं हूं तो उसमें कम का दावा तो नहीं ही कर सकता हूं।

सस्नेह
सुभाष चंद्र बोस
प्रेसिडेंसी जेल
1.11.40, कलकत्ता

प्रतिलिपिः माननीय उपाध्यक्ष

भारतीय विधान सभा
नई दिल्ली
अधीक्षक,
प्रेसीडेंसी जेल

प्रिय महोदय,

1. मुझे उम्मीद है कि मैंने काली पूजा के दिन 30 अक्तूबर को आपको जो गोपनीय पत्र लिखा था, उसे आपने तुरंत सरकार को प्रेषित कर दिया होगा। यह पत्र भी उसी क्रम में है और इन दोनों पत्रों को माननीय गृहमंत्री को उसी तारीख यानी 30 अक्तूबर को लिखे मेरे पत्र के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

2. चूंकि मैंने आपको लिखा इसलिये भारत सरकार ने भारतीय विधान सभा में पेश पंडित एल.के. मैत्रा, एम.एल.ए. (मध्य), के स्थगन प्रस्ताव के संदर्भ में यह साफ कर दिया कि मेरी गिरफ्तारी और बंदी की जिम्मेदारी पूरी तरह बंगाल सरकार पर है, जिसे उसके समर्थक एक 'लोकप्रिय' मंत्रिमंडल द्वारा नियंत्रित और संचालित होने का दावा करते हैं। यह भी स्पष्ट है कि यह 'लोकप्रिय' सरकार मेरे साथ जो सलूक कर रही है, वह इस देश में अजूबा और अप्रत्याशित है और भारत रक्षा कानून के मामलों में संबंधित भारत सरकार के निर्देशों का उल्लंघन है। मुझे यह जानक दुख होता है कि यह 'लोकप्रिय' सरकार भारत रक्षा कानून का प्रयोग देश की रक्षा के लिये नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया की रक्षा के लिये कर रही है जो निहायत गैरकानूनी और नाजायज हैं।

3. कल मेरे वकीलों ने जमानत की अर्जी पेश की तो बंकशाल अदालत के सुनवाई मजिस्ट्रेट ने अर्जी मंजूर कर ली मगर यह टिप्पणी करने पर बाध्य हुए कि उनके आदेश पर अमल रूका रहेगा क्योंकि सरकार ने मुझे भारत रक्षा कानून की धारा 26 के तहत बिना मुकदमे के बंदी बना रखा है। मैं न्यायिक प्रक्रिया में कार्यपालिका के हस्तक्षेप की इससे अधिक मिसाल नहीं पा सकता। भारत रक्षा कानून देश की रक्षा के लिये बना है या ऐसी ही गैरकानूनी और अन्यायपूर्ण हरकत की रक्षा के लिये?

4. मुझे दुख है कि इस सरकार ने भारत के लिये विदेश मंत्री को भी मेरी गिरफ्तारी और बंदी के बारे में गलत जानकारी देकर दूसरी बड़ी भूल की है। जैसा कि विदित है कि ब्रिटिश संसद (हाउस ऑफ कामन्स) में मिस्टर सोरेनासेन के प्रश्न के जवाब में विदेश मंत्री ने प्राप्त सूचना के आधार पर ऐलान किया कि में हॉलवेल स्मारक मामले के सिलसिले में हिरासत में हूं। अगर पूरी सच्चाई बयान की जाती तो इस विषय पर इंग्लैंड में ही अच्छी–खासी चर्चा होती क्योंकि वहां संसद में और उसके बाहर मेरे दोस्त हैं।

5. मैं जिसे अपना जायज अधिकार मानता हूं उसकी रक्षा का मेरे पास एक ही रास्ता बचा है कि मैं अपना नैतिक विरोध दर्ज करूं क्योंकि बाकी सभी रास्ते मेरे लिये 'लोकप्रिय' सरकार ने बंद कर दिए हैं। लिहाजा, जैसा कि आपको 30 अक्तूबर को सूचित किया जा चुका है और काली पूजा के दिन मैंने जो शपथ ली है, उसके अनुसार मैं जल्दी ही उपवास शुरू कर दूंगा। मैं सही समय पर तारीख की औपचारिक

सूचना सरकार को भेज दूंगा, लेकिन ऐसा उपवास शुरू करने की पूर्व संध्या पर ही होगा। चूंकि मैं पिछले महीने की 30 तारीख को ही लिख चुका हूं, इसलिये सरकार को पहले से ही पर्याप्त सूचना है।

मैं आभारी रहूंगा, अगर आप इस पत्र को गोपनीय रखेंगे और जितनी जल्दी हो सके, सरकार को गोपनीय ढंग से इसे प्रेषित कर देंगे।

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसिडेंसी जेल
14.11.40

प्रेषित

सचिव
बंगाल सरकार,
16.11.40
राजनीतिक विभाग

प्रिय महोदय,

मैं समझता हूं कि मैंने 29 अक्तूबर को श्री बी. पी. पाहन; एमएलए को जो पत्र लिखा था, उसे विशेष शाखा ने रोक लिया है। मैं आपसे इस मामले पर गौर करने का अनुरोध करता हूं।

कल मैंने तीन पत्र मिस्टर आर्थर ग्रीनवुड, एमपी श्री शरत चंद्र बोस (कलकत्ता) और श्री ए. एन. बोस (लंदन) को लिखे। अगर इनमें एक भी रोका गया तो मैं बंगाल सरकार से अपील करूंगा और अगर बंगाल सरकार विशेष शाखा की कार्रवाई की पुष्टि करती है, तो भारत सरकार से अपील करूंगा।

भवदीय
सुभाष सी. बोस
'मेरी राजनीतिक वसीयत'

प्रेषित

महामहिम राज्यपाल, बंगाल,
माननीय मुख्यमंत्री
और
मंत्रिपरिषद,

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

महामहिम और सज्जनों!

मैं यह (पत्र) माननीय मंत्री को संबोधित अपने पत्र दिनांक 30 अक्तूबर, 1940 (जिसकी प्रतिलिपि माननीय मुख्यमंत्री को अग्रसारित की गयी थी) और प्रेसीडेंसी जेल के अधीक्षक को अपने गोपनीय पत्रों, दिनांक 30 अक्तूबर और 14 नवम्बर, जिन्हें बाद में सरकार को अग्रसारित किया गया था, के संबंध में लिख रहा हूं। इसमें मैं अपने जीवन के सर्वाधिक भाग्यनिर्णायक कदम उठाने के लिये प्रेरित करने वाले विचारों का भी लिखित रूप में उल्लेख करूंगा।

मुझे अब कोई आशा नहीं है कि आपके हाथों मुझे छुटकारा मिलेगा। इसलिये, मैं आपसे दो अनुरोध करूंगा, जिनमें से दूसरे का उल्लेख पत्र के अन्त में होगा। मेरा पहला अनुरोध है कि हय पत्र सावधानीपूर्वक सरकार के अभिलेखागार में सुरक्षित रखा जाए, ताकि यह मेरे उन देशवासियों के लिये (मेरा) संदेश है और इसलिये ये मेरी राजनीतिक वसीयत है।

मुझे किसी सरकारी सफाई या कैफियत के बगैर 2 जुलाई, 1940 को भारत रक्षा कानून की धारा 129 के अंतर्गत, बंगाल सरकार के आदेशानुसार गिरफ्तार किया गया। बाद में, सरकारी स्त्रोतों का पहला स्पष्टीकरण भारत संबंधी विदेशमंत्री माननीय मिस्टर एमेरी की ओर से आया, जिन्होंने हाउस ऑफ कामन्स में बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहा कि यह गिरफ्तारी कलकत्ता में हौलवेल स्मारक को ढहाने के आंदोलन के संबंध में हुई है।

माननीय मुख्यमंत्री ने बंगाल विधान सभा की एक बैठक में इस घोषणा की वस्तुतः पुष्टि की और बताया कि हौलवेल स्मारक सत्याग्रह ही मेरी रिहाई में आड़ें आ रही है। सरक़ार ने जब उस स्मारक को हटाने का फैसला किया तो विधान सभा सदस्य श्री नरेन्द्र नारांयण चक्रवर्ती और मुझे छोड़कर उस संबंध में बिना मुकदमा चलाये गिरफ्तार सभी लोगों को रिहा कर दिया गया। यह सब रिहाई अगस्त 1940 के अंत में हुई और लगभग उसी समय भारत रक्षा कानून की धारा 26 के अंतर्गत मेरी स्थायी नजरबंदी का आदेश जारी हुआ, जो धारा 129 के अन्तर्गत जारी मूल आदेश के स्थान पर था, जिसमें अस्थायी नजरबंदी का प्रावधान था।

काफी निराले ढंग से धारा 26 में जारी नये आदेश के साथ खबर आयी कि मेरे खिलाु दो मजिस्ट्रेटों के सामने भारत रक्षा कानून की धारा 38 के अन्तर्गत मुकदमा शुरू किया जा रहा है। मेरे तीन भाषणों के लिये और साप्ताहिक पत्रिका 'फारवर्ड ब्लॉक' में जिसका मैं सम्पादक रहा था, बाहर से मिले लिखे के प्रकाशन के लिये। इनमें से दो भाषण फरवरी 1940 में और तीसरा अप्रैल के अंत में दिया गया था। इस तरह

सरकार ने भारत रक्षा कानून की एक धारा के अंतर्गत मुझे बिना मुकदमा चलाये स्थायी तौर पर नजरबंद करके और साथ–साथ उसी कानून की दूसरी धारा के अंतर्गत न्यायिक अधिकरण में मुझ पर मुकदमा चला कर अनूठी और अभूतपूर्व स्थिति पैदा कर दी। इस घटना से पहले मैंने कार्यपालिका के आदेश और न्यायिक प्रक्रिया का ऐसा सम्मिश्रण नही देखा था। ऐसी नीति गैरकानूनी और अन्यायपूर्ण है तथा विशुद्ध रूप से मात्र प्रतिशोध की परिचायक है।

इसमें यह गौर करने में चूक नहीं हो सकती है कि तथाकथित अपराध किए जाने के लम्बे अरसे बाद मुकदमा चलाया गया था। ना यह बात अनदेखी रह सकती हे कि 'फारवर्ड ब्लॉक' में (प्रकाशित) संबंधित लेख के लिये पत्रिका को पांच सौ रूपये की जमानत की जब्ती और दो हजार रूपये की नयी जमानत की राशि जमा करा के दंडित किया जा चुका था। इसके अलावा पत्रिका पर यह प्रहार लम्बे अरसे के बाद अचानक किया गया, जबकि पत्रिका को उस अरसे में सरकार की प्रक्रिया के अनुसार कोई चेतावनी नहीं दी गयी थी।

बंगाल सरकार के रवैये की पोल पूरी तरह बत खुल गयी, जब जमानत पर मेरी रिहाई की अर्जियां न्यायिक जांच करने वाले दो मजिस्ट्रेटों के सामने पेश की गयीं सरकारी प्रवक्ताओं ने दोनों अर्जियों का जोरदार विरोध किया। पिछले मौके पर दोनों में से एक मजिस्ट्रेट श्री वली–उल–इस्लाम ने जमानत की अर्जी मंजूर कर दी लेकिन बाध्य होकर टिप्पणी की कि यह आदेश तब तक निष्प्रभावी रहेगा, जब तक सरकार भारत रक्षा कानून के तहत बिना मुकदमा चलाये मेरी नजरबंदी का अपना आदेश वापस न ले लें। इस प्रकार यह बात सूरज की रोशनी की तरह साफ है कि सरकार न्यायिक अधिकरणों के स्वनिर्णय में बाधा डालती हे और विधि–प्रशासन में हस्तक्षेप करती है। स्थानीय सरकार की कार्रवाई तब और भी आपत्तिजनक लगती है जब यह याद किया जाए कि वह ऐसे मामलों में भारत सरकार के निर्देशों की अवज्ञा करने की आदी है।

सरकार की नीति का दूसरा दिलचस्प पहलू है, मेरे खिलाफ एक साथ दो मजिस्ट्रेटों के पास मुकदमा चलाना। अगर इरादा मेरे एक से अधिक भाषण किसी न्यायालय में पेश करने का था तो यह दो मजिस्ट्रेटों का सहारा लिये बगैर पूरा किया जा सकता था, क्योंकि पिछले बारह महीनों में खासकर कलकत्ता की सीमाओं में अनगिनत भाषण दिये हैं। इसलिये, आम आदमी यह सोचने को मजबूर है कि सरकार मुझे दोषी सिद्ध करने के लिये इतनी उत्सुक है कि उन्होंने कानूनी कमान में दो–दो प्रत्यंख चढ़ा रखी है।

अंतिम, किन्तु कम महत्वपूर्ण नहीं, सरकार की कार्रवाई किसी निष्पक्ष व्यक्ति को पूरी तरह दुर्भावनापूर्ण लगती है, क्योंकि कार्यवाही तथाकथित पूर्वाग्रहग्रस्त कार्य

करने के लम्बे अरसे के बाद शुरू की गयी। अगर विचारार्थ कार्य, वास्तव में पूर्वाग्रह ग्रस्त थे, तो सरकार को बहुत पहले कार्रवाई करनी चाहिए थी अर्थात उसी समय ब तथाकथित अपरा किए गए थे।

क्या मैं आपसे भारत रक्षा कानून के तहत गिरफ्तार और बंदी मेरे मेरे जैसे लोगों के प्रति, मुसलमानों के प्रति आपके रूख की क्षणभर के लिये तुलना करने का अनुरोध करूं? अब तक कितने मामलों में भारत रक्षा कानून के तहत पकड़े गए मुसलमानों को अकारण, अचानक रिहा कर दिया गया है? मौरपाड़ा के मौलवी का उदाहरण सबसे ताजा है, जनमानस में इतना ताजा कि उसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। क्या हम यह समझें कि आपके शासन में मुसलमानों के लिये एक कानून है और हिन्दुओं के लिये दूसरा और कि मुसलमानों से संबद्ध मामला हो तो भारत रक्षा कानून के अलग मायने हैं? अगर ऐसा है तो सरकार इस आशय की घोषणा कर दे।

क्षण भर के लिये कहीं ऐसा तर्क या सुझाव न दिया जाए कि मुझे बन्दी बनाए जाने के लिये स्थानीय सरकार नहीं, भारत सरकार जिम्मेदार है। मैं आपको याद दिला दूं कि मेरे बारे में एक स्थगन प्रस्ताव के संबंध में , जिसे अभी हाल ही में भारतीय विधान सभा में पंडित एल. के. मैत्रा ने पेश किया था। भारत सरकार की ओर से कहा गया कि यह मामला केन्द्रीय सभा में नहीं उठाया जाना चाहिए क्योंकि मुझे बंगाल सरकार ने बंदी बनाया है। मेरा विश्वास है कि मंत्रिमंडल की ओर से बंगाल विधान सभा में ऐसा ही मान लिया गया था। और हम यह नहीं भूल सकते कि यहां बंगाल में हम एक 'लोकप्रिय' मंत्रिमंडल के हितकर संरक्षण में रहते हैं।

भारतीय विधान सभा में मेरे हाल के निर्वाचन से एक और मुद्दा सामने आया है—विधायिका के सत्र के दौराने, विधायिका के सदस्यों की गिरफ्तारी में 'निरापदता'। प्रत्येक संविधान में हय अधिकार निहित है, चाहे कानून में इसका स्पष्ट प्रावधान हो या नहीं और यह अधिकार लम्बे संघर्ष के बाद संस्थापित हुआ है। अभी हाल में , बर्मा सरकार ने एक सजायफ्ता कैदी नहीं हूं फिर भी मुझे अपने 'लोकप्रिय' मंत्रिमंडल द्वारा इस अधिकार से वंचित किया गया है।

अगर सरकार के समर्थन में उनका बचाव करने वाले, कैप्टन रैमजे, संसद सदस्य के पूर्वोदाहरण की दुहाई देने का प्रयास करेंगें, तो मै। उन्हें बताऊं कि कैप्टन रैमजे के मामले का बिल्कुल भिन्न आधार है। उन पर गंभीर आरोप लगाये गए हैं, लेकिन चूंकि हमें सभी तथ्य नहीं मालूम हैं , इसलिये इसके पक्ष या विरोध में तर्क देना मुश्किल है। फिर भी, कोई यह कह सकता है कि अगर कैप्टन रैमजे की गिरफ्तारी न्यायसंगत नहीं है और अन्ततः उन्हें छुटकारा नहीं मिलेगा, तो उस बात कोबल मिलेगा

जो मिस्टर केमेडी (ब्रिटेन में अमरीकी राजदूत) और दूसरों द्वारा कही गई बतायी जाती है कि इंग्लैंड में लोकतंत्र समाप्त हो गया है। बहरहाल, कैप्टन रैमजे को हाउस ऑफ कामन्स की सम समिति द्वारा अपने मामले की जांच कराने का मौका मिला था।

मेरे मामले में, आमतौर पर अब दो व्यापक मुद्दों—पर विचार करने की जरूरत है। पहला तो यह कि क्या भारत रक्षा कानून की कोई मान्यता है—नीतिगत या लोकप्रिय? दूसरा, कि क्या मेरे मामले में, इस कानून को जिस स्थिति में यह अभी है, उचित ढंग से लागू किया गया है? दोनों प्रश्नों के उत्तर नकारात्मक हैं।

भारत रक्षा कानून की कोई नीतिगत मान्यता नहीं है क्योंकि वह जनता के प्राथमिक अधिकारों और स्वतंत्रता का उल्लंघन करता है। इसके अलावा, वह अनिवार्यतया युद्धकालीन उपाय है और जैसा सर्वविदित है, भारत को भारतीय जनता या भारतनीय विधायिका की सहमति के बगैर युद्धरत घोषित किया गया और उसे युद्ध में ढकेल दिया गया। इसके अलावा, यह कानून उस दावे वे प्रतिकूल है, जो ब्रिटेन में जोरदार ढंग से पेश किया जा रहा है कि वह (ब्रिटेन) स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिये लड़ रहा है और अंत में, केन्द्रीय सभा में भारत रक्षा अधिनियम या भारत रक्षा कानून को अंगीकार किए जाने में कांग्रेस पार्टी का समर्थन नहीं था। इन परिस्थितियों में, यह पूछना अनुचित नहीं होगा कि क्या भारत रक्षा कानून का अधिक उपयुक्त नाम 'भारत दमन कानून' या 'अन्याय रक्षा कानून' नहीं होना चाहिए।

इस सरकार की ओर से यह तर्क दिया जा सकता है कि भारत रक्षा अधिनियम चूंकि केन्द्रीय विधायिका का अधिनियम है, इसलिये सभी प्रान्तीय सरकारों पर इसके तहत बनाए गए सभी कानूनों को लागू करने का दायित्व है, लेकिन ऊपर काफी कुछ कहा गया है जो इस आरोप को सही ठहराता है कि कानून जिस भी रूप में है, उसे मेरे मामले में उचित ढंग से लागू नहीं किया गया है। इसमें स्पष्ट रूप से अवैधता और बेइसाफी हुई है। मेरे हिसाब से, इतने अजीब व्यवहार का केवल एक ही कारण हो सकता है कि सरकार खुलकर मेरे खिलाफ प्रतिशोध की नीति अपना रही है, जिसके कारण बिल्कुल अस्पष्ट हैं।

दो महीने से अधिक समय से यह सवाल बार—बार इस बात के लिये मेरी अन्तरात्मा को झकझोरता है कि इस उलझन की स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए। क्या मुझे परिस्थितियों के दबाव के आगे झुक जाना चाहिए और जो कुछ होता है उसे स्वीकार करना चाहिए—मुझे उसका विरोध करना चाहिए जो अनुचित, अन्यायपूर्ण और अवैध है? पूरी गंभीरता से विचार—विमर्श करने के बाद में इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि परिस्थितियों के आगे झुकने का सवाल ही नहीं उठता है। अपने साथ अन्याय किए जाने के आगे झुकना, वही अन्याय करने से अधिक जघन्य अपराध है इसलिये, विरोध तो मैं

अवश्यक करूंगा।

लेकिन इतने दिनों से विरोध चल रहा है और विरोध के सभी सामान्य तौर–तरीके निःशेष हो गए हैं। समाचारपत्रों में और मंचों पर आंदोलन, सरकार को आवेदन, विधान सभा में मांग, कानूनी उपायों की छानबीन–क्या इन सब को आजमाया नहीं जा चुका है और उन्हें निष्प्रभावी नहीं पाया गया है? एक ही रास्ता रह जाता है–कैदी का आखिरी हथियार अर्थात भूख हड़ताल या उपवास। तर्क की ठंडी रोशनी में मैंने इस कदम के पक्ष–विपक्ष की जांच–परख की है और इससे होने वाले लाभ–हानि को सावधानीपूर्वक तोला हैं। मुझे इस मामले में कोई भ्रम नहीं हैं और मैं पूरी तरह जानता हूं कि इसका तात्कालिक ठोस लाभ शून्य होगा, क्योंकि वर्तमान संकट में सरकार और नौकरशाही के व्यवहार से मैं पर्याप्त परिचित हूं। इस क्षण मेरी कल्पना व्यवस्था हृदयहीन होती है जिस कारण उसे प्रेरित नहीं किया जा सकता यद्यपि वह सहारे के लिये प्रतिष्ठा का मिथ्या भाव अपनाती है।

वर्तमान स्थितियों में जीवन मेरे लिये असहय है। अवैधता और अन्याय से समझौता करते हुए अपने सतत अस्तित्व का क्रय, मेरी प्रकृति के ही प्रतिकूल है। यह कीमत चुकाने के बजाय मैं जीवन ही समाप्त कर दूंगा। सरकार पाशविक बल के सहारे मुझे जेल में बंद रखने पर दृढ़ है। मेरा उत्तर है: 'मुझे रिहा करो या मैं जीने से इंकार कर दूंगा और यह फैसला मुझे करना है कि मैं जीना पसन्द करूंगा या मृत्यु का वरण'।

भले ही कोई तात्कालिक ठोस लाभ नहीं हो, कोई पीड़ा, कोई त्याग कभी निरर्थक नहीं जाता। केवल पीड़ा और त्याग के जरिये ही कोई उद्देश्य फलता–फूलता और सफल होता है और हर युग और काल में वही चिरन्तर नियम चता है। 'जहां शहीद का लहू गिरता है, वह धरती पुण्य–स्थली बन जाती है।'

इस नश्वर विश्व में सब कुछ मिट जाता है और मिट जाएगा–लेकिन विचार, आदर्श और स्वप्न नहीं मिटते । किसी विचार के लिये एक व्यक्ति की मृत्यु हो सकती हैं, लेकिन उसकी मृत्यु के बाद वह विचार हजारों जिन्दगी में अवतरित हो सकता है। विकास का चक्र इसी तरह चलता रहता है तथा एक पीढ़ी के विचार, आदर्श और स्वप्न, अगल पीढ़ी को विरासत में मिलते हैं। पीड़ा और त्याग के बगैर इस विश्व में कभी कोई विचार फलीभूत नहीं हुआ है।

किसी को इस अनुभूति से बढ़कर क्या तसल्ली मिल सकती है कि वह किसी सिद्धांत के लिये जिया और मरा है? किसी व्यक्ति को इस ज्ञान से अधिक कार्य को पूरा करने के लिये उसी की प्रकृति की हजारों आत्माओं को जनक होना होगा? उसका अंतःकरण इस निश्चितता से बेहतर किस प्रतिफल की कामना कर सकता है कि उसका

संदेश पहाड़ियों और घाटियों के ऊपर तथा विस्तृत मैदानों के ऊपर से लेकर उसके देश के हर कोने तक तथा सागरों से होकर सुदूर देशों तक फैल जाएगा? किसी का जीवन इस पूर्णता से अधिक उत्कर्षकारी क्या प्राप्त कर सकता है कि वह अपने लक्ष्य की वेदी पर शांतिपूर्वक अपना बलिदान करें।

इस तरह यह स्पष्ट है कि पीड़ा और बलिदान से किसी को हानि नहीं हो सकती है। अगर वह इस सांसारिक धरती का कुछ खोता है तो अमरे जीवन का उत्त्राधिकारी होकर वह बदले में बहुत कुछ पा लेगा।

यह अंतःकरण की क्रियाविधि है। व्यक्ति की मृत्यु निश्चित है, ताकि राष्ट्र जीवित रहे। आज मुझे मरना है, ताकि भारत जीवित रहे तथा स्वतंत्रता और गौरव प्राप्त कर सके।

अपने देशवासियों से मेरा कहना है, 'भेले नहीं, मनुष्य के लिये सबसे बड़ा अभिशाप है गुलाम रहना। भूलें नहीं कि सबसे घोर अपराध है, अन्याय और गलतबात से समझौता करना। चिरन्तर नियम को याद रखें: अगर नया जीवन चाहते हैं तो जीवनदान करना होगा। और याद करें कि सबसे बड़ा सद्गुण है अन्याय और अनौचित्य के विरूद्ध लड़ना, चाहे कोई भी कीमत चुकानी पडें।'

आज की सरकार से मेरा कहना है, 'साम्प्रदायिकता और अन्याय के रास्ते पर अपनी अंधी दौड़ पर लगाम लगायें। अभी भी वापस लौटने का वक्त है। ऐसा छल्ला न फेंक जो पलट वार करे और बंगाल में दूसरा सिंध न बनाएं।

मेरा लिखना समाप्त हो गया है। मेरा दूसरा और अन्तिम अनुरोध है कि मेरे उपवास के साथ बलपूर्वक हस्तक्षेप न करें, बल्कि मुझे शान्तिपूर्वक अपने अन्त तक पहुंचने दें। सरकार ने टेरेंस मैकस्वीनी और जतीन दास के मामले में, महात्मा गांधी के मामले में ओर 1926 में मेरे अपने मामले में उपवास के साथ हस्तक्षेप न करने का फैसला किया था। मुझे आशा है कि इस बार भी ऐसा ही होगा–अन्यथा मुझे बलपूर्वक खिलाने के प्रयास का मैं अपनी पूरी ताकत से विरोध करूंगा, चाहे उसके परिणाम अधिक कठोर तथा अनर्थकारी क्यों न हो। में 29 नवम्बर, 1940 को अपना उपवास आरंभ करूंगा।

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसीडेंसी जेल,
26.11.1940

पुनश्च : अपने पहले के उपवासों की तरह मैं केवल नमक के साथ पानी लूंगा लेकिन

बाद में अगर मुझे ऐसा महसूस हुआ तो वह भी बंद कर दूंगा।
सु.च.बो.

प्रेषित

मानननीय मुख्यमंत्री
और
मंत्रिपरिषद

प्रिय महोदय,
यह (पत्र) आपको मेरी अंतिम अपील है।

1. मैं सरकार को यह अनुरोध करते हुए लिख चुका हूं कि वे मुझे जबरन खिलाने से बाज आएं और यह सूचित करते हुए कि अगर फिर भी ऐसा करने का प्रयास किया जाता है तो मैं पूरी ताकत से इसका विरोध करूंगा, यद्यपि इसके परिणाम 'अधिक कठारे और अनर्थकारी' हों। प्रेसीडेंसी जेल के अधीक्षक को अपने गोपनीय पत्र दिनांक 30 अक्टूबर में और सरकार को अपने पत्र दिनांक 26 नवम्बर में मैंने अपनी स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर दी है इसलिये मुझे तब आश्चर्य हुआ जब मुझे जेल अधिकारियों से संकेत मिले कि मेरे मामले में जबरन खिलाने पर अब भी विचार हो रहा है।

2. मैं इस विषय पर अपने उपर्युक्त दोनों पत्रों में जो तर्क दे चुका हूं, उन्हें नहीं दोहराऊंगा, लेकिन मैं अपनी स्थिति एक बार फिर सार–संक्षेप में उल्लेख करूंगा।

3. पहला तो यह कि सरकार वही साम्प्रदायिकता का पुट लिये अन्याय और अवैधता के जरिये मेरे जीवन को असहय बनाने के लिये जिम्मेदार है।

4. इन परिस्थितियों में सरकार को मुझे जबरन खिलाने का कोई नैतिक अधिकार भी नहीं है। मेरी जानकारी में ऐसा कोई कानून नहीं है, जो सरकार को इस मामले में बल प्रयोग का अधिकार देता है। सरकार का कोई विभागीय आदेश कानून का स्थान नहीं ले सकता है, खासकर ज बवह व्यक्ति के प्राथमिक अधिकारों और स्वतंत्रता का उल्लंघन करें।

5. मेरे बार–बार अनुरोध करने के बावजूद अगर मुझे जबरन खिलाने का कोई प्रयास किया गया तो इसके लिये प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष तौर पर जिम्मेदार सभी लोग उसके जरिये मुझे नुकसान या दुख, शारीरिक या मानसिक, पहुंचाने के लिये दीवानी या फौजदारी तौर पर उत्तरदायी होंगे।

6. सिद्धांत के उपर्युक्त बिन्दुओं के अलावा, उपवास शुरू करने के पहले या बाद की मेरी शारीरिक स्थिति मेरे मामले में जबरन खिलाने को पूरी तरह नकार देती

है। यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाना चाहिए कि ऐसी परिस्थितियों में, जबरन खिलाना इसमें निहित उद्देश्य के ही खिलाफ होगा और मेरा जीवन बचाने के बदले इससे मेरे जीवन का शीघ्र अंत हो जाएगा। इसको ध्यान में रखकर दीवानी और फौजदारी दायित्व स्वाभाविक रूप से और बढ़ जाएगा।

7. इस संबंध में मैं आपको सूचित कर दूं कि जबरन खिलाने पर मेरे लिये इसके परिणामस्वरूप हुए असहय, दीर्घकालीन घोर व्यथा, प्राणपीड़ा से छुटकारा पाने के उपाय करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। यह छुटकारा केवल आत्महत्या से ही मिल सकता है और इसकी जिम्मेदारी पूरी तरह सरकार पर होगी। ऐसे व्यक्ति के लिये जिसने जीवन से मुह मोड़ लिया है, अपने जीवन का अंत करने के सैकड़ों उपाय हैं और दुनिया की कोई ताकत उसकी मृत्यु रोक नहीं सकती। मैंने सबसे शांतिपूर्ण उपाय चुना है और मुझे कम शांतिपूर्ण या अधिक कठोर उपाय करने के लिये बाध्य करना निरी पाशविकता होगी। जो कदम मैंने उठाया है, वह कोई साधारण उपवास नहीं है। यह महीनों के गंभीर सोच–विचार का परिणाम है जिसकी पुष्टि अंततः काली पूजा के पावन दिवस पर प्रार्थनापूर्वक किए गए संकल्प से की गयी है।

8. मैंने अनेक बार इससे पहले भूख हड़ताल की है, लेकिन यह उपवास असाधारण किस्म का है, जैसा मैंने पहले कभी नहीं किया था।

9. आदमी केवल भोजन के सहारे जिन्दा नहीं रहता है। उसे नैतिक और आध्यात्मिक संपोषण की भी आवश्यकता होती है, जिससे वंचित किए जाने पर आप उससे जीवित रहने की अपेक्षा नहीं कर सकते मात्र अपनी योजना पर अमल के लिये या उसे अपनी चाल के अनुकूल बनाने के लिये।

10. मैं अपने 26 नवम्बर के पत्र में पहले ही कह चुका हूं कि मुझे आपसे दो अनुरोध करने हैं– पहला कि मेरे 26 नवम्बर के पत्र को, जो मेरी राजनीतिक विरासत है, सरकार के अभिलेखागार में सुरक्षित रखा जाए और दूसरा, कि मुझे शांतिपूर्वक अपना मरण वरण करने दें। क्या यह आपसे बहुत बडी मांग है,

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रेसीडेंसी जेल,
2/5.12.1940

प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद को पत्र

38/2, एलगिन रोड,

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

कलकत्ता
9.12.40
प्रेषित
माननीय मुख्यमंत्री
और मंत्रिपरिषद,
(द्वारा अपर सचिव, बंगाल सरकार)

प्रिय महोदयगण,

पिछले 5 दिसम्बर को अपराहन साढ़े चार बजे प्रेसीडेंसी जेल के अधीक्षक मेरे कक्ष (सेल) में आए और अभिवादन तथा हाल–चाल पूछने के बाद उन्होंने कहा, 'मुझे आपको घर भेजने का आदेश मिला हें एम्बुलेंस तैयार है।' इस वक्तव्य का अर्थ सबसे बड़े बेवकूफ को भी स्पष्ट होना चाहिए।

अगली सुबह मुझे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि सरकार ने भारत रक्षा कानून की धारा 26 के तहत नजरबंदी के आदेश को केवल 'स्थगित' (वापस नहीं) किया हैं।

तब भी यह मान लिया गया कि हर हालत में मुकदमे वापस ले लिय गए हैं। अब लगता है कि वैसा मानना भी गलत था।

मुझे अच्छा लगता अगर यह सब मुझे जेल में रहते बता दिया जाता। फिर भी, मैं सरकार से अनुरोध करता हूं कृपया मुझे सूचित करें।

(1) क्या वे भारत रक्षा कानून की धारा 26 के तहत आदेश को 'वापस' लेंगे;

(2) क्या वे मेरे खिलाफ चल रहे दो मुकदमे वापस लेंगे;

उनका उत्तर मिल जाने पर मैं तय करूंगा कि क्या मैं जेल वापस लौट जाऊंगा और स्वास्थ्य लाभ के बाद फिर भूख–हड़ताल करूंगा या मैं तुरन्त ऐसा करूंगा।

यह उल्लेखनीय है कि दोनों मुकदमों से संबंधित कानूनी स्थिति बेहद अंसगत है, क्योंकि मैं न तो पुलिस हिरास में हूं और न जेल की हिरासत में।

जो भी हो, पांच तारीख को सरकार ने जो शिष्टाचार दिखाया है, उसके लिये धन्यवाद।

भवदीय
सुभाष सी. बोस
प्रतिलिपि प्रेषित माननीय प्रधानमंत्री, बंगाल सरकार।

अन्य पत्र
प्रेषित एम. एन. रॉय
3बी स्टोर रोड
बॉलीगंज
कलकत्ता
12 जून, 1939

प्रिय सुभाष बाबू,
कल रात के आप के सुझाव के अनुसार लिखा गया बयान संलग्न है। मेरी समझ से यह पर्याप्त है। अगर ठीक लगे तो आप प्रेस को जारी कर सकते हैं। अन्यथा कृपया सूचित करें।
भवनिष्ठ
एम. एन. राय
एम. एन. राय का बयान, कलकत्ता, 12 जून, 1939

मुझे श्री के. एफ. नरीमन से, वाम रूझान वाले कांग्रेसजनों के एक सम्मेलन में हिस्सा लेने का निमंत्रण मिला है, जो फारवर्ड ब्लॉक के गठन पर चर्चा के लिये बंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक की पूर्व संध्या पर आयोजित होगा। चूंकि श्रीयुत सुभाष चद्र बोस ने कांग्रेस के भीतर सभी वाम रूझान वाले तत्वों के एकजुट होने वाले मंच के रूप में फारवर्ड ब्लॉक के गठन की मंशा की घोषणा की हैं, इसलिये भारी विवाद खडा हो गया है और विभिन्न वाम गुटों और प्रमुख वामपंथियों से श्रीयुत बोस के प्रस्ताव पर अपना रूख स्पष्ट करने की मांग हो रही है। मैं पहले ही एकाधिक मौकों पर इस विषय पर अपने विचार जाहिर कर चुका हूं। लीग ऑफ रेडिकल कांग्रेसमैन का रूख भी सार्वजनिक हो चुका है। कांग्रेस में सभी वामपंथी तत्वों के लिये एक साझा मंच बनाने की योजना, सभी वामपंथियों से समर्थन और सहयोग की पात्र है, जो आंदोलन के व्यापक हित को किसी खास गुट के हित से ऊपर रख सकते हों। इस प्रस्तावित ब्लॉक के मंच पर साझा उद्देश्य के लिये आप इच्छा से सहयोग किया जा सकता है, क्योंकि श्रीयुत बोस पहले से विद्यमान वामपंथी गुटों का नए संगठन में विलय नहीं चाहते हैं। इसलिये लीग ऑफ रेडिकल कांग्रेसमैन और मैं खुद, श्रीयुत बोस द्वारा सराहनीय उद्देश्य से शुरू किए गए आंदोलन को प्रश्रय देने के उद्देश्य से प्रस्तावित

सम्मेलन में भाग लेंगे ताकि ये ताकतें अधिक कारगर ढंग से कार्य कर सकें और हमारे स्वतंत्रता संग्राम के भविष्य को प्रभावित कर सकें। मैं पहले भी सार्वजनिक रूप से कह चुका हूं और एक बार फिर दोहरा रहा हूं कि गांधीवाद को पूर्ण अस्वीकृति और संघर्ष के दूसरे तरीकों की हिमायत ही उग्र वामपंथ के इस मंच के मुख्य कार्यक्रम होने चाहिए। जिसमें यह पक्ष ही कांग्रेस में वैकल्पिक नेतृत्व के रूप में उभरे जहां तक मैं सार्वजनिक बयानों से समझ सका हूं, फारवर्ड ब्लॉक का यह रूख नहीं है। हम, वास्तव में अपने नजरिये पर जोर देंगे। लेकिन हमारा सहयोग इस शर्त के साथ नहीं होगा कि फारवर्ड ब्लॉक वह स्वीकार ही करे जिसे हम कारगर वामपंथ के लिये अधिकतम कार्यक्रम पर सहयोग करने को तैयार होंगे अगर उसे बंबई में होने वाले प्रस्तावित सम्मेलन में आम सहमति से अंतिम रूप दिया जाएं।

प्रेषक एम. एन. रॉय

13 मोहनी रोड
देहरादून
13 अक्तूबर, 1939

प्रिय मित्र,

मैं आपका ध्यान 'फारवर्ड ब्लॉक' के 28 अक्तूबर के अंक की एक टिप्पणी की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं, जिसमें कार्यसमित्ति में कांग्रेसी मंत्रियों के इस्तीफे से संबंधित प्रस्ताव पर मेरे मंतव्य की टेलीग्राफ रिपोर्ट की चर्चा है। यहां संलग्न दस्तावेज के मूल पाठ में आप देखेंगे कि वह टिप्पणी उचित नहीं है और मेरे साथ हुए अन्याय को दूर करने के लिये जो भी जरूरी हो, करेंगे।

भवनिष्ठ
एम. एन. राय

प्रेषित
सीता धर्मवीर को

ट्रेन
12.11.39

प्रिय सीता,

मैं पिछले कुछ समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया हूं। मैं अब असम और पूर्वी बंगाल की नौ दिनों की यात्रा के बाद घर लौट रहा हूं। मैं भला-चंगा हूं, इससे बेहतर होने की उम्मीद नहीं कर सकता।

मुझे उम्मीद है कि आप सभी सकुशल हैं–खासकर लीला। मैं यहां कुछ पंक्तियां दीदी के लिये लिख रहा हूं। मुझे नहीं मालूम कि वे लाहौर में हैं या लीला

के साथ दिल्ली चली गई हैं।

आप सब को प्यार,

सस्नेह
सुभाष

प्रेषित अमिय चक्रवर्ती

38/2 एलगिन रोड
कलकत्ता
बर्दवान स्टेशन
11.12.39

आदरणीय,

आपकी चिट्ठी पाकर मुझे खुशी हुई। मैं आज ही यू. पी. से लौटा हूं। बहुत जल्दी ही मैं शांतिनिकेतन आ रहा हूं। मुझे उम्मीद है कि आप वहां कुछ अधिक समय रूकेंगे। क्या कविवर या आपकी कलकत्ता आने की कोई संभावना है? मेरी सेहत अभी अच्छी नहीं है। मुझे इंफ्लुएंजा–सा लग रहा है। शायद दो–तीन दिनों में ठीक हो जाऊं। मेरा हार्दिक अभिवादन स्वीकार करें।

सर्वदा आपका
सुभाष चंद्र बोस

प्रेषक

एम. अन्नपुर्णय्या
राजामुंदरी
15.1.40

प्रिय सुभाष बाबू,

मैं संघर्ष और हमारे ब्लॉक के कांग्रेस से अलग होने के मुद्दों पर गंभीरा से विचार कर रहा हूं। मैंने कुछ दोस्तों से भी विचार–विमर्श किया है। मैं संघर्ष में आंध्र प्रदेश की सहभागिता और उसमें अपनी व्यक्तिगत भूमिका के बारे में गंभीरता से विचार कर रहा हूं। मैं इस पत्र में चार बिन्दुओं पर जोर दे रहा हूं, जो मेरे दिल से निकले हैं:

1. यह मेरी सुविचारित राय है कि आहवान हमें कुछ जल्दी देना चाहिए।

2. मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि एक न एक दिन हमारा अलग होना अनिवार्य लगता है मगर इसके लिये सबसे उपयुक्त और मनोवैज्ञानिक मौका चुनना होगा। उन्हें अपनी सुविधा के अनुसार हमें बाहर निकाल देने से बेहतर यही है कि हम

अपनी सुविधा से बाहर निकल जाएं। लेकिन मैं गंभीर निवेदन करूंगा कि इन दोनों बातों पर हमारी कार्यकारिणी की बैठक में समग्र रूप से विचार होना चाहिए और तभी अंतिम फैसला लिया जाना चाहिए।

3. जहां तक तीसरी बात, आंध्र में संघर्ष की है मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि हम चार जगहों पर स्थानीय मुद्दों को लेकर संघर्ष शुरू कर सकते हैं और एक आम संघर्ष अन्य जिलों में शुरू किया जा सकता है। लेकिन हमारी सबसे बड़ी अड़चन कोष को लेकर है। हम आप से संघर्ष के लिये मदद के रूप में 1,000 रूपये देने का आग्रह करते हैं।

4. मेरे बारे में आप जानते हैं कि मैं ब्लॉक और आपके लिये कुछ भी करने को तैयार हूं लेकिन मैं पैसे के अभाव में पंगु–सा हूं। आपकी सलाह के मुताबिक मैंने बीमा का सभी काम बिल्कुल छोड़ दिया है। क्या मैं जान सकता हूं कि आप मेरे पारिवारिक खर्च के लिये दिसंबर 1940 तक 1,000 रू. दे पाएंगे? मैं इसे अपनी पत्नी को सौंपकर मुक्त भाव से ब्लॉक के काम के लिये घूम सकूंगा। इससे समय, चिंता और असुविधा से बहुत हद तक बचा जा सकेगा और मैं अपना पूरा समय और ऊर्जा, पार्टी के काम में लगा सकूंगा।

इस तरह मैं आपसे सिर्फ 2,000 रूपये देने का अनुरोध कर रहा हूं, आधा पार्टी के काम और संघर्ष के लिये और आधा मेरे परिवार के खर्च के लिये। अगर आप इतनी रकम की व्यवस्था कर दें तो मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि मैं अपना पूरा समय, ध्यान और ऊर्जा पार्टी को दे सकूंगा और आंध्र में संभावनाओं को देखते हुए मुझे यकीन है कि 1940 के अंत तक ब्लॉक तेलुगु देश में काफी मजबूत और प्रभावशाली हो जाएगा। इतनी रकम हमारे काम के लिये पर्याप्त नहीं होगीं लेकिन इतनी जमा–पूंजी के साथ हम और जरूरी रकम उगाहने में सक्षम हो जाएंगे। मैं बखूबी जानता हूं कि फिलहाल पैसे के मामले में आपके हाथ तंग हैं। फिर भी, मैं आप से आग्रह करूंगा कि किसी तरह इसकी व्यवस्था करने की कोशिश करें।

मेरे पास आपको आश्वस्त करने के लिये इससे ज्यादा और कुछ नहीं है कि आपके साथ ही डूब जाऊंगा या पार लग जाऊंगा। हर तरफ की राय यही है कि आप का दौरा यहां काफी सफल रहा है इसलिये मैं आप से फरवरी में हमें दस दिन देने का आग्रह करता हूं, बशर्ते आप आ सकें। हमें कम से कम दस दिन तो अवश्य दें। इस महीने के अंत तक दौरे की तारीखें तय कर दें। मुझे यह भी बताएं कि आप हमारी कार्यकारिणी की बैठक कब और कहां तय करेंगे।

अगर आप पैसे भेजते हैं तो मुझे तार केन्द्र ताकि मैं आकर ले सकूं या कृपया

वहां से किसी संदेशवाहक को भेंजे। आप कह सकते हैं कि मेरा घर गोदावरी स्टेशन से कुछ ही गज की दूरी पर है और कोई रेलवे का कुली या संदेशवाहक आपको मेरे घर पहुंचा सकता है।

अगर मेरी मदद करना आपके लिये संभव ने हो तो भी मुझे खबर कर दें। उस हालत में मैं अपने घर चला जाऊंगा और राजनीतिक काम के साथ–साथ काम भी करता रहूंगा। कृपया मुझे उलझन में न रखें। लाला शंकरलाल ने भी मुझे पार्टी का पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनने की सलाह दी थी और मुझसे कहा था कि वे मेरे लिय 1,000 रूपये की व्यवस्था कर सकते हैं। उनके मुताबिक यह रकम ज्यादा नहीं हैं। मेरी उनसे दोबारा बात नहीं हुई।

कृपया मुझे इस पते पर फौरन पत्र लिखें: मैनेजिंग एजेंट्स, द नेशलन केमिकल एंड फार्मास्युटिकल वस, राजामुंदरी। लिफाफे के भीतर एक लिफाफा रखें और उस पर मेरा नाम लिख दें।

मैं सचमुच बेहद दुखी हूं कि मुझे अपनी व्यक्तिगत बातों से आपको परेशान करना पड़ रहा है लेकिन मेरे पास कोई चारा नहीं है। मुझे इसके लिय क्षमा करें, मैं आभारी रहूंगा।

आपका विश्वासभाजन

एम. अन्नपुर्णय्या

पुनश्च : सार संक्षेप : (1) कृपया हमारी कार्यकारिणी की बैठक 26 के बाद रखें। (2) फरवरी में आंध्र के दौरे के लिये दस दिन दें। (3) कृपया 1,000 रू. आंध्र में संघर्ष के लिये और 1,000 रू. मेरे पारिवारिक खर्च के लिये दें। इस पत्र को गोपनीय रखें। (4) पत्र में लिखे पते पर गौर करें।

कृपया फौरन पत्र लिखें। मैं इस पर इसलिये जोर दे रहा हूं कि आपके कहे अनुसार ही आप 'जवाब देने में सुस्त' हैं:

एम. अन्नपुर्णय्या

प्रेषक डा. सत्यपाल
2, एबोट रोड,
बी. ए., एम. बी., एम. एल. ए.
लाहौर,
चिकित्सक और दंत शल्य–चिकित्सक 23.
1.1940

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

प्रिय श्रीयुत सुभाष सी. बोस

श्री हबीबुल्ला और श्री फजल हुसैन, जो आखिल पंजाब मुस्लिम छात्र फेडरेशन के प्रतिनिधि हैं, आपसे अपनी सुविधानुसार शीघ्र ही पंजाब आने के लिये अनुरोध करने वाले हैं। अगर आप उनका अनुरोध स्वीकार कर लें तो मैं बड़ा आभारी रहूंगा। छात्र आंदोलन में आपकी गहरी रूचि है और मुझे विश्वास है कि आप फेडरेशन के सदस्यों की भावनाओं को महत्त्व देंगे तथा हमारे बीच अपनी उपस्थिति से हम सभी को उपकृत करेंगें।

सादर,

भवनिष्ठ

सत्यपाल

प्रेषक अकबर शाह

बदराशी

नौशेरा

19.2.40

प्रिय कामरेड,

आपकी चिट्ठी मिले अरसा हो गया। लगता है, कि आप लम्बे दौर पर थे। मैं दो–एक चिट्ठियां लिख चुका हूं। पता नहीं, वे आपको मिली भी कि नहीं।

इस प्रांतभर के कामरेड संघर्ष के पक्ष में हैं। मुझे नहीं लगता कि रामगढ़ के प्रस्तावित फारवर्ड ब्लॉक सम्मेलन की समाप्ति से पहले इस सिलसिले में आपसे हमें निर्देश मिलेगा। हर हालत में इस पर कुछ निश्चित ही लिख भेजें।

रामगढ़ अधिवेशन के लिये फारवर्ड ब्लॉक के टिकट पर हमारे कोई 13 प्रतिनिधि होंगे। सदन में इस बार हमें बहुमत की अपेक्षा थी, लेकिन दक्षिणपंथियों के सत्ता में होने के कारण वे किसी ने किसी तरह हमारे नामांकन पत्रों को नामंजूर करने या हमारी हार का बंदोबस्त करने में काफी सक्रिय रहे। हर हालत में हमारी ताकत बढ रही है, हमारे संगठन का चारों ओर विस्तार हो रहा है।

पेशावर सिटी में हम उन असंगठित समाजवादियों पर निर्भर थे, जो फारवर्ड ब्लॉक में शामिल हुए थे, लेनिक जैसा होता है, वे अलग हो गए, लेकिन उन्होंने कोई समाजवादी पार्टी नहीं बनायी है।

दक्षिणपंथ के कुछ गंभीर सदस्य, पेशावर सिटी में हमारे साथ हो सकते हैं। लालकुरती वाले एक भूतपूर्व जनरल ने हमें संकेत दिया है कि वे बड़ी संख्या में लालकुरती वालों को लेकर हमारे साथ आने वाले कुरती वाला कोई स्वयंसेवक नहीं

है। अगर वे स्वयंसेवक कोर के प्रधान के रूप में हमारे साथ हो लेते हैं तो मुझे पक्का विश्वास है कि हम इस शहर में बहुत शक्तिशाली हो जाएंगे।

कृपया साप्ताहिक फारवर्ड ब्लॉक के मैनेजर को निर्देश दे दें कि संलग्न कागज पर जिनके नाम हैं, उन्हें पत्रिका भेज दिया करें।

अकबर शाह

प्रेषक प्रो. एन. जी. रंगा; एमएलए
मद्रास कार्यालय:
उपाध्यक्ष,
किसान और खेतिहर मजदूरों
अखिल भारतीय किसान सभा, का दक्षिण भारतीय फेडेरेशन,
नीदुबरोलु (डाकघर) एस. आई. 57,
वरदा मुतिअप्पन स्ट्रीट

जी. टी. नीदुवरोल,
20.2.40

प्रिय सुभाष बाबू,

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि आंध्र और मद्रास सिटी में फारवर्ड ब्लॉक दिन दूना, रात चौगुना बढ़ रहा है। इसका श्रेय 26 तारीख के आयोजन के मसले पर सी. एस. पी. और सी. पी. के बिल्कुल गलत नेतृत्व और हम दोनों पर उनके बेवकूफाना हमले को जाता है। हमारे सभी किसान भाई लोग अब दक्षिणपंथ की ओर वामपंथियों के झुकाव को रोक देने पर कृतसंकल्प हैं और इसलिये फारवर्ड ब्लॉक को आगे बढ़ाने में पूरा प्रयास करने का आश्वासन दिया है। उन सभी को पता है कि फारवर्ड ब्लॉक की, और इन सब अग्रवर्ती अभियान (फारवर्ड ड्राइव) के पीछे मैं हूं और इसलिये मैं आश्वस्त हूं कि अगले कुछ सप्ताह में आंध्र और तमिलनाडु में फारवर्ड ब्लॉक सबसे शक्तिशाली वामपंथी ताकत हो जाएगां

प्रसंगवश, हमने आखिरकार अखिल भारतीय किसान सभा का अगला अधिवेशन पलासा में आयोजित करने का फैसला किया है, जहां के लिये बी. एन. आर. पर कलकत्ता से एक रात की यात्रा है। खुला अधिवेशन 25 या 26 तारीख को होगा और मैं आकर आपको विशेष संदेश देने के लिय व्यग्र हूं। अगर संभव हो तो हम आपको समारोह का उद्घाटन करने के लिये आमंत्रित कर सकते हैं।

1 अप्रैल या अगर आवश्यक हुआ तो 28 मार्च को हमारे आंध्र किसान संस्थान का उद्घाटन समारोह हमारे गांव में होगा। मेरी बड़ी इच्छा है कि आप आएं और इसका

उद्घाटन करें, हम अपने संगठन के विकास के लिये सौ छात्रों को प्रेशिक्षित करने जा रहे हैं। स्कूल में दो दिन का आपका प्रवास बहुत उपयोगी होगा इसलिये मेरा अनुरोध है कि वह सप्ताह अर्थात 26 मार्च से एक अप्रैल तक आप आंध्र के लिये सुरक्षित रखें।

मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि कामरेड अन्नापूर्णय्या आपको पलासा के बारे में लिख चुके हैं

मैं कल नेल्लोर जिले के 26 तारीख तक के दौर पर जा रहा हूं और सेलम 28 तारीख को जाऊंगा। मैं 6 मार्च को दिल्ली में रहूंगा और तब रामगढ रवाना हो जाऊंगा, जहां हमारी मुलाकात होगी।

सस्नेह रंगा

प्रसंगवश, मौलाना आजाद ने 'पहला संदेश' अच्छा दिया है। इससे हमें ताकत मिलती है। इस तरह, आप उनके वामवाद के बारे में अंततः सही साबित हुए। मैंने आज, अगामी संघर्ष के पक्ष में उनकी उक्तियों का स्वागत करते हुए एक वक्तव्य जारी किया है।

समझौते के खिलाफ रामगढ़ में महान रैली की जरूरत के बारे में आप के पक्ष की ताकत बढ़ाने पर मैं दूसरा वक्तव्य जारी करने जा रहा हूं लेकिन यह काफी नहीं है। हम केवल संघर्ष ही नहीं चाहते, बल्कि ऐसा संघर्ष चाहते हैं, जिसे बेकार न कर दिया जाए। संक्षेप में, हम किसी ऐसी राजनीति से संतुष्ट नहीं होंगे, जो हमें इस युद्ध और हमारे राष्ट्रीय प्रयास के फलस्वरूप पूर्ण स्वराज न दिला सके। मुझे आशा है, कि आप हमारे राष्ट्रीय संघर्ष का नेतृत्व करेंगे। मुझे पूरा भरोसा है कि आप हमारे रामगढ़ सम्मेलन को इस आश्वासन के प्रति प्रतिबद्ध करा पायेंगे कि समाजवादी गणराज्य अर्थात किसान मजदूर राज की परम उपलब्धि का मार्ग प्रशस्त करने के लिये हम स्वतंत्रता चाहते हैं । अगर हम यह संकल्प सुनिश्चित नहीं करते तो हमें अपने को दूसरों से भिन्न बताने की दिशा में वास्तविक प्रगति नहीं मिल सकेगी।

हमारे मद्रास फारवर्ड ब्लॉक के किसान मजदूर राज के आदर्श को 26 के संकल्प में शामिल करने का विरोध कने पर ही सी. पी. को पूरे दक्षिण में गंभीर परेशानी उठानी पड़ रही है।

जो कुछ भी हो, जब तक फारवर्ड ब्लॉक और किसान सभा वाले साथ हैं, दूसरे वामपंथियों को अपने स्वगृहीत एकपक्षीय राष्ट्रीय सुदृढ़ीकरण में पैठने से अन्ततः रोका जा सकता है।

प्रेषक इन्दुलाल याज्ञनिक

प्रार्थना समाज
अस्तोदिया रोड
अहमदाबाद
20.2.40

प्रिय सुभाष बाबू,

मुझे कल यह जानकर खुशी हुई कि आप हमारे प्रांतीय किसान सम्मेलन का उद्‌घाटन करेंगे, जिसकी अध्यक्षता 20–21 अप्रैल को स्वामीजी करेंगे। हम इस सम्मेलन को गुजरात के राजनीतिक इतिहास की युगांतरकारी घटना का स्वरूप देने का प्रयास करेंगे।

अब मैं यह जानने को इच्छुक हूं कि क्या आप सम्मेलन के पहले या बाद में जल्दी में गुजरा के दौरे के लिये कुछ दिन निकाल सकेंगे?

क्या मेरे लिये गुजरात रैली में भाग लेना जरूरी है या आप मुझे यहां के मेरे काम के लिये छुट्‌टी दे सकते हैं? मुझे तुरन्त बाद आंध्र में किसान सम्मेलन में भाग लेना है।

भवनिष्ठ

इन्दुलाल याज्ञिक

प्रेषक : कैरोल पोटी
बर्नगुर
20 फरवरी, 1940

प्रिय महोदय,

अपार हर्ष और विनम्र शिष्टता की भावना से मैं आपको अपना संदेश भेजने का अनुरोध कर रही हूं जो भविष्य में मेरे लिये प्रेरक होगा। मैंने कवि रवीन्द्र नाथ, महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू आदि अनेक लब्धप्रतिष्ठित स्त्री–पुरूषों से संदेशों का संग्रह किया है और आपका संदेश मेरे संकलन के लिये बहुमूल्य होगा।

मैं 14 वर्ष की अमरीकी लड़की हूं। मैं छह महीने पहले हिन्दुस्तान आयी हूं। मेरी इच्छा आप से मिलने की है। लेकिन चूंकि आप पूरे भारत का व्यापक दौरा कर रहे थे, मेरे लिय आप से मिलना संभव नहीं हुआ। शायद यह मेरा दुर्भाग्य हैं मैं शीघ्र भारत से रवाना हो जाऊंगा। इसलिये मैं आपसे आग्रह करती हूं कि यथासंभव शीघ्र संदेश भेज दें।

एक वापसी का डाक टिकट संलग्न है।

मुझे आपके स्वास्थ्य की चिंता है।

मैं हूं
आपकी आज्ञाकारी,
कैरोल पोटी,
श्रीयुत सुभाष चन्द्र बोस
कलकत्ता

पुनश्च : मैं अपने मित्र श्री विभूति भूषण घोषाल के साथ रूकी हूं । उनके पते पर लिखें। पता निम्नलिखित है:

कैरोल पोटी
द्वारा श्री विभूति भूषण घोषाल
195, प्रमाणिक घाट रोड
पो. बर्नगुर
कलकत्ता।

प्रेषक : लाला शंकर लाल
अध्यक्ष : 'फारवर्ड ब्लॉक'
महासचिव
श्रीयुत सुभाष चन्द्र बोस
लाला शंकर लाल
तार: 'टीआरओआईसी'
पो. बा. नं. 21
फोन नं. 7286
नयी दिल्ली 21 फरवरी, 1940

प्रिय बोस,

मैनें 16 तारीख को आपको निम्नलिखित तार भेजा:

'कृपय 5,000 का चेक भेजें रामगढ़ का काम शुरू करना जरूरी'।

लेकिन दुर्भाग्यवश कोई उत्तर नहीं मिला। मुझे पता है कि आप अवश्य व्यस्त होंगे और कुछ कठिनाइयां भी होंगी, लेकिन समय बहुत कम है। कृपया यथाशीघ्र चेक भेजने की व्यवस्था करें।

भवनिष्ठ
लाला शंकर लाल

प्रेषक : एम. एन. मुखर्जी

17 हरीश मुखर्जी रोड
एमएलए
कलकत्ता
फोन पार्क 1203
22 फरवरी, 1940
प्रिय सुभाष बाबू,

मुझे पटना से भेजा आपका पत्र मिला, जिसमें आपने इच्छा व्यक्त की है कि बिहार सभा का सदस्य होने के नाते मैं बिहार परिषद के चुनाव में श्री खलील अहमद के पक्ष में मतदान करूं। तदनुसार, मुझे अन्य उम्मीदवार को, जो मेरे पुराने और सम्मानित मित्र हैं, और जिन्होंने मेरा समर्थन मांगा था, लिखना पड़ा कि मैं श्री खलील अहमद के बारे में कुछ नहीं जानने पर भी आपकी इच्छा का अनुपालन करूंगा। उसके बाद मुझे श्री पी. आर. दास का एक पत्र मिला जिसकी प्रतिलिपि संलग्न है। आपका पत्र पाने से पहले मेरा इरादा राय बहादुर श्यामनंदन सहाय के पक्ष में मतदान करना था। आशा है कि आपको श्री दास का पत्र मिला गया है और मुझ पर श्री खलील अहमद के पक्ष में मतदान करने का दबाव नहीं डालेंगे।

भवनिष्ठ
मुनीद्रनाथ मुखर्जी
श्रीयुत सुभाष चन्द्र बोस
38/2, एलगिन रोड,
स्थानीय

प्रेषक : स्वामी सहजानन्द सरस्वती
अखिल भारतीय किसान सभा
महासचिव
श्री सीतारामाश्रम
स्वामी सहजानन्द सरस्वती   डाकघर और
टेलीफोन बिहटा
शिविर मधुपुर
ई. आई. आर.
ई. आर. आर.
पटना

दिनांक 28.2.1940

संख्या........

प्रिय सुभाष बाबू,

मैं हजारीबाग जिले से सप्ताहभर के दौरे पर गिरिडीह जा रहा हूं, जो 5.3.40 को समाप्त होगा।

आप अपने दौर पर यू. पी. जाएंगे। मुझे खेद है कि फरवरी के अंतिम सप्ताह में गया ओर मुंगेर के कुछ हिस्सों में आपक दौरा आयोजित नहीं हो सका। शीलभद्रजी ने इस संबंध में मोतीहारी से तार भेजा था लेकिन उसका वहां कोई उत्तर नही मिला। शायद रामगढ़ में आपके देर तक ठहर जाने के कारण। मुझे इसकी जानकारी नहीं है कि रामगढ़ में समझौता–विरोधी सम्मेलन को लेकर क्या किया जा रहा है। शीलभद्रजी फिर वहां गए है और पंडित धनराज शर्मा भी।

आपने अखबारों में समझौता–विरोधी सम्मेलन के संबंध में शायद मेरा वक्तव्य पढ़ा होगा। आपको कैसा लगा? क्या आप इसकी उपयोगिता और समयानुकूलता के कायल हुए? यहां बिहार में सभी ने इसकी बहुत जरूरत महसूस की और जब मैंने वक्तव्य जारी किया तो उन्होंने राहत की सांस ली। हमारे समाजवादी मित्रों ने भी इसकी सराहना की ओर उन्होंने मुझे इसकी आवश्यकता के बारे में बताया। सम्मेलन के खिलाफ बहुत ही गैरजिम्मेदार किस्म का बेलगाम प्रचार चल रहा था और मेरे वक्तव्य से कम से कम अभी तो सभी अटकलबाजी और शरारत थम गयी है।

क्या आप सम्मलेन के लिये कुछ सौ स्वयंसेवक नहीं रखेंगे? मेरे ख्याल में ऐसा करना बहुत जरूरी है। अगर हां, तो उनकी वर्दी कैसी होगी? क्या आपने इस पर विचार किया हैं? मेरी राय में, अगर यह लाल हो तो हमारी रैली में काम आएगी। क्या रामगढ़ में हमारी मुलाकात से पहले कुछ सौ ऐसी वर्दी तैयार करवा लेंगे? हमारी रैली के बारे में मुझे पक्की जानकारी नहीं है। वास्तव में, आपकी कुछ सौ वर्दियां हमारे बहुत काम आएंगी।

हमारे समारोह की कार्यवाही आदि के बारे में क्या करना है? क्या स्वागत भाषण और अध्यक्षीय भाषण भी छपा होना चाहिए? मेरा ख्याल है कि दोनों भाषणों का पहले से तैयार और छपा होना उचित और आवश्यक है। ऐसे नाजुक समय में अलिखित जुबानी भाषण ठीक नहीं होगा। अगर आप सहमत हों तो मैं छोटा भाषण तैयार कर लूं लेकिन उसे छपाया कहां जाए? कलकत्ता में, पटना में या और कहीं?

मुझे संदेह है कि यह पत्र आपको यू.पी. रवाना होने से पहले मिल पाएगा।
भवनिष्ठ

स्वामी सहजानन्द सरस्वती
प्रेषित : मियां अकबर शाह
बदराशी
नौशेरा
29.2.40
प्रिय कामरेड,

यहां की स्थिति से अवगत कराने के लिये मैं जब–तब आपको लिखता रहा हूं। मैं आपको लिख चुका हूं कि मेरी हार के लिये उन्होंने कैसे अशोभनीय तरीके अपनाये।

मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं कि इस प्रांत से कुछ प्रतिनिधि रामगढ़ जाएं, लेनिक मेरा ख्याल है कि कुछ ही शरीक होंगे।

मैंने कुछ दिन पहले नयी सूची भेजी है और आशा है कि आप उनके नाम पर साप्ताहिक फारवर्ड ब्लॉक भेजने के लिये मैनेजर को हिदायत दे चुके होंगे।
अकबर शाह
प्रेषक : इंदुलाल याज्ञनिक
दि हिन्दुस्तान न्यूजपेपर्स लिमिटेड
प्रोपराइटर्स
दि एडवोकेट इंडिया प्रेस
प्रकाशन
हिन्दुस्तान और प्रजामित्र
टेलीफोन नं. 21172
सचित्र गुजराती प्रातः दैनिक
तार 'हिन्दप्रजा',
हिन्द–प्रजा
पो.बा. नं. 1940
सचित्र गुजराती सांध्य दैनिक 21,
दलाल स्ट्रीट, फोर्ट
प्रजामित्र केसरी
बम्बई
सचित्र गुजराती साप्ताहिक 2
मार्च, 1940

प्रिय सुभाष बाबू,

मैं कल यहां पहुंचा और अहमदाबाद में 29 फरवरी को आपका जो तार मिला, उसका उत्तर देने की जल्दी में हूं। मुझे लाला शंकरलाल का टेलीफोन जल्द रामगढ़ आने के बारे में मिला लेकिन मेरा पूरा समय गुजरात आंदोजन का स्वरूप निर्धारित करने और प्रांतीय किसान सम्मेलन की सफलता सुनिश्चित करने के लिये जोर–शोर से तैयारी करने में चला जाता है, जो मेरे जिले में 20–21 अप्रैल को आयोजित होगा और आप इस सम्मेलन का उद्घाटन करने को सहमत हो गए हैं।

अगर मैं रामगढ़ अधिवेशन में शरीक होता हूं तो मुझे पन्द्रह तारीख तक बम्बई से जरूर रवाना होना होगा और मैं पहली अप्रैल के आसपास तक गुजरात वापस लौट सकूंगा, जिससे प्रांतीय सम्मेलन के आयोजन के लिय केवल तीन सप्ताह का समय रहेगा।

इन परिस्थितियों में मैं पूरी गंभीरता से आपसे विनती करता हूं कि मुझे रामगढ़ जाने से छुटकारा दें। कृपया लाला शंकरलाल और अनरू मित्रों को स्थिति पूरी तरह और साफ–साफ समझा दें ताकि वे रामगढ़ में मेरी अनुपस्थिति को गलत नहीं समझें।

भवनिष्ठ

इंदुलाल याज्ञिक

प्रेषित : श्री सुभाष चन्द्र बोस बाबू जी, कलकत्ता

प्रेषक : नानिक जी. मोटवाने

भारत सरकार, बम्बई सरक़ार, सेना, रेलवे

भारतीय राज्यों, नगरपालिकाओं आदि के ठेकेदार

शिकागों टेलीफोन और रेडियो कम्पनी, लिमिटेड

टेलीफोन और रेडियो इंजीनियर्स तथा लाउडस्पीकर विशेषज्ञ

टेलीग्राम:	प्रधान कार्यालय	शाखाएं:	25, चौरंगी
'चिफोन'	129 महात्मा	हजरतगंज,	कलकत्ता
	गांधी रोड,	लखनऊ	टेलीफोन
	पोस्ट बाक्स 459,	दि माल,	कल 1953
	फोर्ट	लाहौर	
	बम्बई		

आपका संदर्भ कलकत्ता

हमारा संदर्भः एन.जी.एम./जी.आर./21/5498 25 मार्च, 1940

श्री सुभाष चन्द्र बोस,
38/2 एलगिन रोड,
कलकत्ता

आदरणीय श्री सुभाष चन्द्र बोस

मैंने बम्बई से आपको अनेक पत्र लिखे हैं, लेकिन आपसे जवाब कभी नहीं मिला।

इस बार जब मैं रामगढ़ कांग्रेस से कलकत्ता आ रहा था, तो हमारे पारस्परिक मित्र श्री नाथालाल पारिख ने मुझे आपसे सम्पर्क करने तथा आपका संरक्षण पाने का प्रयास करने को कहा।

मुझे रामगढ़ में आप से कुछ ही मिनटों के लिये उस समय मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जब आप अपने विजय–जुलूस में जा रहे थे और जब मुझे आपको फिल्माने को सौभाग्य मिला था। जैसा कि मैंने पहले भी दो जुलूसों में किया है, तो आप मुझे देखकर मुस्कुराएं तथा मेरे प्रति आपकी सहानुभूति दिखी। इसी से उत्साहित होकर फिर यह पत्र लिख रहा हूं।

प्रत्येक प्रांत में कांग्रेस, लाउडस्पीकर की सभी फरमाइश हमसे करके मेरी और मेरे संगठन की सहायता करती है। कलकत्ता में अपने कार्यालय से पूछताछ करने पर पता चला कि इस मामले में हम आपके वरदहस्त से वंचित रहे हैं।

मेरे संगठन की जो भी त्रुटियां हों, आप कृपया उनकी अनेदखी करते हुए, अन्य कांग्रेसी प्रान्तों की तरह हमें अपना संरक्षण प्रदान करें।

हमारी दरें मामूली और जायज होंगी। मेरा विश्वास है कि इसके बाद हमें आपका संरक्षण मिलेगा और आप देखेंगे कि हमारी सेवाएं संतोषजनक हैं।

विश्वास है, आप इस मामले पर गौर करेंगे और मेरा अनुरोध स्वीकार करेंगे।
सम्मान,

भवनिष्ठ
नानिक जी. मोटवाने

प्रेषक : करीम ए. चश्मा
तारः बागान (गार्डन) कलकत्ता
फोन : पी. के. 1333

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

चश्मा चाय कम्पनी
टी प्लांटर्स एंड डीलर्स

पट्टाधारीः कुचिल्ला टी. ई.

कोडः बेंटलेज एंड ए.बी.सी. 5वां और 6ठा संस्करण
संदर्भ संख्या 40/68 17,
फूलबागान रोड, एंटली,
कलकत्ता
दिनांक : 9 अप्रैल, 1940
चश्मा ब्रांड
स्पोर्टसमैन (खिलाड़ी)
फ्लेवर्स (सुगंधित)
मोहम्मडन स्पोर्टिंग,
लूज (खूला)
ऑल काइंड्स (सभी किस्म)

प्रेषक
श्री सुभाष चंद्र बोस,
38/2 इलिग्न रोड,
कलकत्ता
महोदय,

यह पत्र लिखने की छूट लेने के लिये मुझे क्षमा करें, आशा है आप इसका बुरा नहीं मानेंगे।

मेरे बड़ी इच्छा है क मैं आपके नाम से सर्वोत्तम किस्म की चाय का ब्रांड शुरू करूं जिसके पैकेट पर आपका चित्र हो। इस ब्रांड का नाम मैं 'सुभाष बोस टी' रखना चाहता हूं। इसे विधिवत रजिस्टर्ड कराया जाएगा और इस संबंध में सारी औपचारिकताएं पूरी होने पर उसके नमूने आपके उपयोग के लिये दिये जाएंगे। इसलिये मेरा अनुरोध है कि उपर्युक्त पर अपनी अनुमति देने की कृपा करें। मुझे पूरी आशा है कि मेरी यह प्रार्थना निरर्थक नहीं होगी।

कष्ट देने और आप के बहुमूल्य समय में हस्तक्षेप करने के लिये क्षमाप्रार्थी हूं।

भवदीय

करीम ए. चश्मा
प्रोपराइटर

प्रेषक : गगनविहारी एल. मेहता
गगनविहारी एल. मेहता
13 अप्रैल, 1940
प्रिय सुभाष बाबू,

मुझे आपका 11 अप्रैल का पत्र, आपके अदिनांकित औपचारिक पत्र के साथ मिला। मैं इसे बम्बई स्थित अपने प्रधान कार्यालय को, इस पर विचार करने और हमारे रंगून एजेंडा को आवश्यक निर्देश जारी करने के लिए अग्रसारित कर रहा हूं। उनसे सूचना मिलने पर मैं आपको जानकारी दे दूंगा।

हाल ही में मेरा एपेंडिसाइटिस का आपरेशन हुआ और तब से स्वास्थ्य लाभ रक रहा हूं। बदलाव के लिये शीघ्र ही बाहर जाने वाला हूं।

भवनिष्ठ
गगनविहारी एल. मेहता

श्रीयुत सुभाष चन्द्र बोस
कलकत्ता
प्रेषक अगाथा हैरिसन
भारतीय समझौता (कांसिलियेशन) ग्रुप
अध्यक्ष
कार्ल हीथ 2
क्रैलबोन कोर्ट,

उत्तर भेजें एलबर्ट ब्रिज
रोड, एस. डब्ल्यू 11
अवैतनिक सचिव

बैटरसी 2400

अगाथा हैरिसन को 20 अप्रैल, 1940

प्रिय सुभाष बोस,

मेरा ख्याल है, कि आप और आपके भाई पिछले सप्ताह हुए सी. एफ. एंड्रूज की स्मृति (मेमोरियल) संबंधी 'ऑर्डर ऑफ सर्विस' देखना चाहेंगे। उनका देहान्त बहुत दुखद है क्योंकि हमने सुना था कि उनकी हालत में 'सुधार' हो रहा है। पिछले कुछ

वर्षों में उनके साथ इतनी निकटता से काम करना ऐसा सौभाग्य रहा जिस हृदय में संजोयी हूं अभी – अभी हवाई डाक से जो पत्र मिले हैं, उनसे पता चला कि आप कलकत्ता में स्मरण सेवा में उपस्थित थे, खुशी हुई।

भवनिष्ठ

अगाथा हैरिसन

प्रेषक : मेघनाद साहा

प्रिय सुभाष बाबू

कुछ दिन पहले आपने कृपा करके मुझसे कलकत्ता नगर में सुधार के लिये योजनाएं मांगी थी। में इस पर विचार कर रहा हूं। इस बीच दुनिया में जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं, उनका हमने बहुत पहले ही अनुमान लगा लिया था।

मैं एक आवेदन की प्रति संग्लन कर रहा हूं जो कलकत्ता नगर निगम के रजिस्ट्रार के माध्यम से भेजा जाएगा। हम इस वर्ष साइंस कालेज की रजत जयन्ती मना रहे हैं और हम एक वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रदर्शनी आयोजित करना चाहते हैं। हमने इसके लिये नगर निगम को पच्चीस हजार रूपयसे के योगदान के लिये आवेदन किया है। पूरा ब्यौरा आवेदन की प्रति में हैं, जो संलग्न है। अगर आप अपना प्रभावशाली संरक्षण देकर कृपया हमारी सहायता करें तो मैं बहुत आभारी रहूंगा। हमने मेयर श्री ए. आर. सिद्दिकी से बात कर ली है और उनका रूख सहायक ही नहीं, उत्साहवर्द्धक भी है। अगर हम यह प्रदर्शनी समुचित ढंग से आयोजित कर सकें तो यह कलकत्ता के नागरिकों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत होगा। हमने अपने आवेदन में न्यूनतम राशि का उल्लेख किया है, जो हम चाहते हैं और मुझे आशा है कि हमें पूरी रकम दी जाएगीं

श्रीयुत सुभाष चन्द्र बोस

एल्डरमैन, कलकत्ता नगर निगम,

38/2 एलगिन रोड,

कलकत्ता

रजत जयंती

विज्ञान और टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय कॉलेज

(यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी)

(शिलान्यास 27 मार्च, 1914 को)

सचिवगण

प्रो.एम.एन. साहा

प्रो. बी. सी. गुहा

92, अपर सर्कुलर रोड
अपर सर्कुलर रोड
टेलीफोन, रिजेन्ट 159 और 160

92,

कलकत्ता 1940

प्रो. के. पी. चट्टोपाध्याय
35, बालीगंज सर्कुलर रोड
टेलीफोन, अलीपुर 397

मुख्य कार्यकारी अधिकारी
कलकत्ता नगर निगम
कलकत्ता।
महोदय,

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंस की रजत जयंती समिति की ओर से हम निगम से वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रदर्शनी के लिये पच्चीस हजार रूपये के योगदान की मांग कर रहे हैं। प्रदर्शनी का आयोजन, यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के रजत जयंती समारोह के दौरान दिसम्बर 1940 में करने का प्रस्ताव है। प्रदर्शनी कम से कम तीन–चार सप्ताह खुली रहेगी जिसमें कलकत्ता के नागरिकों समेत आम जनता बिना किसी भेदभाव के आ सकेगी।

1. आपको ज्ञात होगा कि यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी की स्थापना 27 मार्च, 1914 को हुई थी और पिछले वर्ष इसने 25 वर्ष पूरे किए। विश्वविद्यालय ने कॉलेज की रजत जयंती उपयुक्त ढंग से मनाने के लिये एक समिति गठित की है। समिति ने फैसला किया है कि वैज्ञानिक और औद्योगिक एक प्रमुख आयोजन होगा, जिसे बाद में कलकत्ता नगर के लिये स्थायी वैज्ञानिक और औद्योगिक संग्रहालय के रूप में विकसित किए जाने की आशा है, जो केवल इस नगर में नहीं, बल्कि इस प्रांत में और पूरे भारत में भी अपनी किस्म का पहला होगा।

2. विज्ञान की अब राष्ट्रीय जीवन में इतनी प्रभावी भूमिका हे कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती तथा विज्ञान की जानकारी केवल पेशेवर वैज्ञानिकों के लिये ही नहीं, आम नागरिक के लिये भी आवश्यक है। इस जरूरत को पूरा करने के लिये पश्चिमी देश पिछले पच्चीस वर्षों से विज्ञान संग्रहालयों की स्थापना कर रहे हैं। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध है—म्यूनिख का दियूत्सेस संग्रहालय, साउथ केनसिंगटन, लंदन का विज्ञान संग्रहालय और न्यूयार्क का विज्ञान संग्रहालय। इन संग्रहालयों में विज्ञान की प्रत्येक शाखा के प्रमुख प्रयोगों को अच्छी तरह रूपांकित परिवेश में प्रदर्शित किया जाता है तथा

दर्शकों और छात्रों को मामूली शुल्क पर संग्रहालयों का निरीक्षण करने और कभी–कभी स्वयं प्रयोग करने दिया जाता है। बार–बार किसी प्रतिष्ठित विशेषज्ञ द्वारा दर्शकों के लिये किसी वैज्ञानिक विषय की व्याख्या, तैयार मॉडलों और प्रयोगों की सहायता से की जाती है। ये संग्रहालय शिक्षा के मान्य केन्द्र बन गए हैं और सालभर में वहां लाखों दर्शक जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, म्यूनिख दियूत्सेस संग्रहालय में हर वर्ष दस लाख से अधिक लोग आते हैं तथा स्कूलों और कॉलेजों से आनेवाले छात्रों की टोलियों को वहां मेज पर लिखकर रखे निर्देशों के अनुसार प्रयोग करते हुए देखा जाना आम बात है। एक बार शुरू होने के बाद इन पर बहुत खर्च की आवश्यकता नहीं होती। वास्तव में, इनमें अधिकांश आत्मनिर्भर हो गए हैं।

3. इस मामले में फ्रांस अब तक जर्मनी और इंग्लैंड तथा अमरीका से पीछे था, लेकिन 1936 में जब पेरिस में लोकप्रिय मोर्चा (पापुलर फ्रंट) सरकार बनी तो उन्होंने विज्ञान संग्रहालयों के महत्व को पहचाना तथा विख्या वैज्ञानिक पेरिन के अनुरोध पर बड़े पैमाने पर प्रदर्शित आयोजित की गयी तथा अनुसंधान महल नामक विशेष रूप से निर्मित भवन में प्रदर्शित किया गया। इसको देखने लगभग नब्बे लाख फ्रैंक की आमदनी हुई। प्रदर्शनी को उसके बाद स्थायी संग्रहालय बना दिया गया और अब उसका उपयोग युवकों के लिये ही नहीं, वयस्कों के लिये भी शिक्षा संस्थान के रूप में किया जा रहा है।

4. यह खेद का विषय है कि महान कलकत्ता नगर में ऐसा कोई संगठन नहीं है, जो आम आदमी को शिक्षित कर सके और जो निसंदेह जनसाधारण के लिये वैज्ञानिक शिक्षा का महान स्थल हो। इसलिये रजत जयंती समिति ने सोचा कि वह इस मामले में वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रदर्शनी आयोजित करके पहल करेगी तथा उसने कलकत्ता और बाहर के वैज्ञानिकों से सहयोग का अनुरोध किया। उनमें से कइयों ने कृपा करके मामले में सहयोग करने का वचन दिया है। विश्वविद्यालय ने लगभग बारह हजार रूपये का अनुदान मंजूर किया है और 92, अपर सर्कुलर रोड स्थित अपने परिसर और मैदान को, संगठन के जिम्मे सौंप दिया है। फिर भी, यह महसूस किया जा रहा है कि अगर प्रदर्शनी समुचित ढंग से आयोजित करनी है तो अधिक रकम की जरूरत होगी। वास्तव में हमारा अनुमान पचास हजार रूपये का है। चूंकि आशा है कि यह प्रदर्शनी विज्ञान के मामले में कलकत्ता की आम जनता के लिये प्रेरणा का स्त्रोत साबित होगी। हम आपसे पच्चीस हजार रूपये का अनुदान चाहते हैं, ताकि प्रदर्शनी पूरी तरह सफल साबित हो। इस सिलसिले में यह उल्लेखनीय है कि कलकत्ता नगर ने पूरे देश में मौलिक वैज्ञानिक अनुसंधान के केन्द्र के रूप में उचित ही बहुत प्रतिष्ठा हासिल की है। यहां की वैज्ञानिक शिक्षा और अनुसंधान कार्य के स्तर की तुलना किसी अन्य स्थान

के सर्वश्रेष्ठ कार्य से की जा सकती है। कलकत्ता, विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सर्वदा अग्रणी केन्द्र रहेगा इसलिये यह उचित ही है कि भारत का पहला वैज्ञानिक संग्रहालय कलकत्ता में शुरू और स्थित हो।

5. जिस अनुदान की हमने मांग की है, उसे 1932 के कलकत्ता नगर निगम अधिनियम के अंतर्गत निगम को मिले विशेष अधिकारों के तहत उसे देने की इजाजत है। इस अधिनियम की धारा 477 के अंतर्गत, यह नगर निगम (उपधारा 13) के अधिकार में हैं कि वह न केवल तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दे बल्कि शिक्षा के प्रसार (उपधारा 15) के लिये प्रदर्शनी के लिये होने वाली लागत में भी योगदान करे। कानूनी दृष्टिकोण से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हमने जो अनुदान मांगा है, वह पूरी तरह अधिनियम के अनुकूल हैं।

हमें खुशी होगी अगर आप हमारे आवेदन को कृपया उपयुक्त अधिकारी या अधिकारियों के समक्ष रखें।

भवदीय

प्रेषितः कांतिलाल पारिख

25–6–40

26, मरिन ड्राइव,
बम्बई

प्रिय कांतिलाल,

आशा है कि आप सकुशल होंगे। लम्बे अर्से से आपका कोई समाचार नहीं मिला है। आपको शायद याद हो कि आपने कुछ समय पहले मुझसे उधार लिया था। क्या आप कृपा कर मुझे कुछ पैसे अभी दे सकते हैं? अगर आप ऐसा कर सकते हैं तो मुझे खुशी होगी और थोड़ी राहत मिलेगी।

मैं कल तक कलकत्ता रवाना हो रहा हूं। मेरा पता आपको मालूम है–38/2 एलगिन रोड, कलकत्ता। सभी को स्नेह।

सस्नेह,
सुभाष

प्रेषित एम. एम. एच. इस्पाहनी

14.10.40

प्रिय हसन,

सार्वजनिक काम से अपनी लम्बी और अनिवार्य अनुपस्थिति के कारण मैं

सोचता हूं कि मुझे कलकत्ता नगर निगम के एल्डेरमन पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। इससे मुझे अपनी क्षुब्ध अन्तरात्मा से राहत मिलेगी और पार्टी को सदस्यों की इच्छानुसार काम करने का मौका मिलेगा। मैंने पार्टी सचिव श्रीयुत इन्द्र भूषण बोएद के जरिये इस सवाल की चर्चा की है और मैं उनकी सलाह की प्रतीक्षा कर रहा हूं अगर पार्टी इस विचार का समर्थन करती है तो मुझे आशा है कि आपको कोई आपत्ति नहीं होगी, क्योंकि इससे बेहतर विकल्प नहीं है।

चूंकि मैंने एक निश्चित जिम्मेदारी ली थी और चूंकि हम मिल कर काम कर रहे हैं, इसलिये यह उचित ही है कि मैं आपको और आपके जरिये आपकी पार्टी को सूचित करूं

भवदीय
सुभाष सी. बोस
एम. ए. एच. इस्पाहनी
पार्षद
कलकत्ता नगर निगम
5 कैमक स्ट्रीट
कलकत्ता

प्रेषितः बाद बाबू,
प्रेसीडेंसी जेल
29.10.40
प्रिय बरद बाबू,

आज सवेरे अखबार खोलने पर मेरे मन में सबसे पहले स्वर्गीय बाबू सूर्य कुमार शोम का ख्याल आया जो न केवल देशबन्धु दास के सहशिष्य थे बल्कि मेरे आदरणीय मित्र भी थे। उनके मैमनसिंह घर की उदार मेजबानी का मैं कितनी ही बार भागीदार रहा हूं, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मेरी पिछली यात्रा के दौरान खाली घर ही मेरी मेजबानी के लिये तैयार था। सूर्य बाबू के असामयिक निधन से जो रिक्तता आयी है, वह उनके अपने चुनाव क्षेत्र में अपूर्ण रहेगी।

आगे लिखने से पहले, मैं आपसे आग्रह करूंगा कि मेरे पक्ष में अपनी उम्मीदवारी वापस लेने के लिये श्रीयुत मजुमदार, श्रीयुत नियोगी और श्रीयु गुहा को मेरा हार्दिक धन्यवाद दे दें। श्रीयुत गुहा का आज सवेरे अखबारों में जो पत्र आया है, उसके लिये उन्हें खासतोर पर मेरा धन्यवाद कर दें। मैं उनके हृदय की विशालता की बड़ी सराहना करता हूं, जिसे उस वक्तव्य में अभिव्यक्ति मिली है। जिसमें कूट–कूट

कर सच्चाई भरी है। और आप उन्हें आश्वासन दे दें कि मेरी से उनके प्रति उदारता में कभी कोई कमी नहीं होगी।

बन्दी होने के कारण मेरे लिये मित्रों और सहकर्मियों से सलाह करना संभव नहीं रहा है कि मुझे केन्द्रीय विधान सभा का चुनाव लड़ना चाहिए या नहीं और मेरे इस अचानक लिये फैसले से वे हतप्रभ तो नहीं हैं? जेल से लिखी चिट्ठी में मैं उन सभी बातों को अभिव्यक्त नहीं रक सकता, जिनके कारण मैंने ऐसा किया है लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि राजनीतिक सोचवाले सभी लोग सहजबुद्धि से समझ जाएंगे कि किन कारणों से मैंने यह फैसला किया है और वे इसको दिल से सही मानेंगे। मैं इस पत्र में ऐसी दो–एक बातें ही लिखूंगा। मैं आपसे ये बातें अगली कानूनी भेंट के दौरान कह सकता हूं लेकिन वह मेरे लिये सही या उचित नहीं होगा, इसीलिये यह पत्र लिख रहा हूं।

अन्य बातों के अलावा, मेरा चुनाव मौलान अबुल आजाद और उन सभी को, जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, एक संकेत होगा। बी. पी. सी. सी. पर हमले में उनके पूरी तरह घबरा जाने और अपनी स्थिति हास्यास्पद बना लेने के बाद मौलाना ने सोचा कि हमारी अनुपस्थिति का वे लाभ उठायेंगे और वैधानिक मोर्चे पर हमला करेंगे ताकि हमारी सार्वजनिक हैसियत कमजोर हो। एक बार फिर उनका भ्रम दूर होगा। उनके ताजा हमले से–जिसे मैं विजया उपहार कहता हूं–देश में हमारी ताकत और प्रतिष्ठा बढ़ी है तथा उन लोगों का असली चरित्र और अधिक उजागर हुआ है, जो बातें तो सत्य और अहिंसा की करते हैं, लेकिन वास्तव में उनका आचरण असत्य, हिंसा और घृणा पर आधारित होता है। इस संबंध में कलकत्ता के भूतपूर्व मेयर और बंगाल कांग्रेस संसदीय पार्टी के उपनेता श्रीयुत संतोष के. बसु का चुनौतीपूर्ण पत्र देशभर में बार–बार पढ़ा जाना चाहिए। इस समय मैं मौलाना के साथ अपने कटु अनुभव के बारे में कुछ नहीं कहूंगा, उसे मैं दूसरे दिन के लिये सुरक्षित रखता हूं। लेकिन यह पूछना प्रांसगिक होगा कि देश में इस समय मौलाना के कितने अनुयायी हैं। नेता कहलाने से पहले हर कोई कांग्रेस में कुछ अनुयायी लाता है। मुझे संदेह है कि अनुयायियों के बारे में मौलाना कोई दावा कर सकते हैं।

मौलाना और आलाकमान के साथ अपने संबंधों के मामले में अब तक हमारी नीति आक्रामक नहीं रही है और हम उसी नीति पर चलेंगे। लेकिन हम आत्मरक्षा तो करेंगे ही। फलस्वरूप, हर हमले का कारगर जवाबी हमला होगा–मौलाना को यह मालूम होना चाहिए और जवाबी देशभर में, जहां हमारे मित्र और समर्थक हैं, होगा। अगर आलाकमान के साथ लड़ाई लम्बी और कटु होती है तो हम इसके लिये बिल्कुल तैयार हैं। हम देश में अपनी हैसियत जानते हैं। साथ ही, हमारे साथ युवा वर्ग है, जिसे कष्ट

झेलने के मामले में असीम धैर्य और क्षमता है। इसलिये हम सफलता के मामले में इत्मीनान से हैं। हम आजकल अधिक महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर व्यस्त हैं, लेकिन मौलाना को यह नहीं समझना चाहिए कि उसके चलते हम आलाकमान की विध्वंसकारी हरकतों से अपने घरों की रक्षा नहीं कर पायेंगे।

मेरा निर्वाचन यह संकेत भी देगा कि मैं केन्द्रीय विधानमंडल से तटस्थ रहने की नीति के सख्त खिलाफ हूं। संभवतया, कांग्रेस पार्टी की सार्वजनिक कर्तव्य की इसी आपराधिक अवहेलना के कारण भारत रक्षा अधिनियम अपने वर्तमान स्वरूप में पारित हो सका और केन्द्रीय विधानमंडल में जनता की आवाज असल में सुनायी ही नहीं दी—यह कहना जरूरी नहीं है कि मैं कांग्रेस आलाकमान की आत्मघाती नीति का अनुसरण नहीं करूंगा।

कुल मिलाकर, मेरा निर्वाचन अन्य निहितार्थों के साथ संकेत देने का प्रतीकात्मक कार्य होगा कि हम मौलाना और उनके चौगुटे की चुनौती का सामना देश के हर हिस्से में और हर मोर्चे पर करने को तैयार हैं। हम भारत में जनमत के सच्चे प्रतिनिधि होने का दावा करते हैं और उन लोगों की अपेक्षा बेहतर कांग्रेसी होने का दावा करते हैं, जिनके पांव लड़खड़ाने लगे हैं। अगर अधिक सबूत की जरूरत हुई तो हम अपने आचरण से यह साबित भी कर देंगे कि हमारा दावा पूरी तरह सही है।

सादर,

भवनिष्ठ

सुभाष सी. बोस

प्रेषित सार्दुल सिंह कवीशर

प्रेसीडेंसी जेल

कलकत्ता

4.11.10

व्यक्तिगत—प्रकाशन के लिये नहीं

प्रिय सरदारजी,

आज सवेरे मैंने आपको निम्नलिखित तार भेजा है, आशा है कि वह आपको यथासमय मिल जाएगा।

सार्दुल सिंह कवीशर

लाहौर

संदर्भ : आज की प्रेस रिपोर्ट। आशा है कि आप महात्मा गांधी के उपवास का जोरदार विरोध करेंगे विराम पत्र अलग से सुभाष बोस।

आज सवेरे के अखबारों में खबर छपी है कि महात्मा गांधी ने उपवास करने

का फैसला किया है और कि उन्होंने सरकार को इसकी सूचना दे दी है। इससे पहले, अखबारों में खबर छपी थी, जिसमें इस बात का संकेत था कि पूरी संभावना है कि गांधीजी फिर उपवास करें—फलस्वरूप किसी को इस ताजा खबर से यह नहीं लगना चाहिए कि यह अकस्मात हो रहा है।

मैं इस सवाल पर अपना दृष्टिकोण बताने के लिये आपको यह पत्र लिख रहा हूं ताकि आप इससे सहमत हों—वैसे मुझे पक्का विश्वास है कि आप सहमत होंगे—आप इन परिस्थितियों में जैसा भी जरूरी समझें, करें बिना किसी संदेह या हिचकिचाहट के, कि गांधीपंथी लोगों में उसकी यात्रा में उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी।

राजकोट उपवास की विफलता के बाद, मैंने सोचा कि वह अंतिम गांधीपंथी उपवास था—लेकिन स्पष्ट रूप से ऐसा समझना मेरी गलती थी। महात्माजी अपनी भारी भूलों के बाद भी नहीं बदलेंगे। यह उपवास अगर नैतिक बलप्रयोग नहीं है तो क्या है और अहिंसा के अग्रदूत को इसका सहारा क्यों लेना चाहिए। उपवास के सवाल पर वे अन्दर का प्रकाश देख सकते हैं, इस बात से हिंसा की प्रकृति नहीं बदली जा सकती। इससे नैतिक बलप्रयोग या हिंसा को अहिंसा में रूपान्तरित नहीं किया जा सकता। हमारा रूख बिल्कुल भिन्न है। हमारी अहिंसा तात्विक या अलौकिक नहीं है, इसलिये हमारे लिये उपवास या भूख—हड़ाल वर्जित नहीं हैं असल में मैंने पहले भी की है और अगर ऐसा करने को मुझे बाध्य किया गया तो फिर कर सकता हूं।

जब जतीन दास ने भूख हडताल की और अपने प्राण त्याग दिये तो महत्माजी के पास उनके लिये दो श्रद्धेय वचन भी नहीं थे। वास्तव में, उन्होंने एक मित्र को लिखा कि अगर मुझे मुंह खोलना पड़ा तो वह अप्रीतिकर ही होगा लेकिन महात्मा गांधी जब चाहे, खुद भूख हड़ताल कर सकते हैं और हमें मानना होता है कि उनके मामले में नैतिक बल प्रयोग, परिष्कृत होकर अहिंसा हो जाता है। आखिर हमारे भोलेपन की भी कुछ सीमा है। जो लेग पहले बिल्कुल अंध भक्त थे, वे भी अब आंखे खोलने लगे हैं।

महात्मा की भूख हड़ताल पर मेरी मुख्य आपत्ति यह है कि पूरा अधिकार अपने हाथ में लेकर, कांग्रेस को नपुंसकता की स्थिति में पहुंचाने के बाद, वे जन—आंदोलन के विकल्प के रूप में भूख हड़ताल कर रहे हैं। सविनय अवज्ञा के मामले में व्यक्तिग रूप से मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी अगर सामान्य राजनीतिक तरीके के पूरक के रूप में निजी या राष्ट्रीय सम्मान और न्याय की रक्षा के लिये वे अपने अस्त्र का उपयोग करें, लेकिन जन—आंदोलन के बदले नहीं। हम देखे हैं कि जैसा राजकोट में हुआ, वैसे ही यहां है क जब जन—आंदोलन को जानबूझ कर नष्ट कर दिया गया है तो उपवास किया जाता है। ऐसे उपवास से, सबका ध्यान जनता के हृदय में संजोये उद्देश्य या आंदोलन से हटकर, उपवास करने वाले एक व्यक्ति पर जा सकता है। मुद्दे को

इस तरह रास्ते से हटने से जन–उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती, भले यह एक व्यक्ति की लोकप्रियता बढ़ा सके या उनके लिये अधिक सहानुभूति जुटा सके। स्थिति भिन्न होती अगर परिहार्य परिस्थितियों के दबाव के कारण हुए जन–आंदोलन के परिणामस्वरूप स्वाभाविक तौर पर उपवास किया जाता।

क्षणभर के लिये हम इस पर विचार करें कि महात्माजी ने अब तक उपवास के जरिये क्या हासिल किया है। कष्ट का निस्संदेह अन्तर्भूत नैतिक महत्व है–लेकिन उसके अलावा उनके उपवासों से गिनाने योग्य कोई वस्तुनिष्ठ लाभ नहीं हुआ है। पूना के उपवास से अनुसूचित जातियों को कुछ अधिकार मिला, लेकिन वह उद्देश्य भी पूर साम्प्रदायिक पंचाट की उनकी अन्तर्निहित स्वीकृति से और अनुसूचित जातियों के मामले में पृथक मतदाता सूची की आंशिक स्वीकृति से दब गया। फलस्वरूप, उपवास के क्षेत्र में उपलब्धि का उनका रिकार्ड व्यावहारिक तौर पर शून्य है। फिर भी, जब तक उपवास ने जन–आंदोलन का स्थान ले लिया तब तक कोई विरोध नहीं किया गया, मदद ही की गयी। उपवास को अब जन आंदोलन को ध्वंस और नष्ट करके उसके विकल्प के रूप में अपनाया जा राह है। परिणामस्वरूप, हम जो जन–आंदोलन में विश्वास करते हैं, इस अपना नैतिक समर्थन नहीं दे सकते बल्कि यह हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि हम खुले तौर पर इस उपवास की निन्दा करें– गांधीपंथी हलकों से गलतफहमी या दुर्व्यवहार के खतरे के बावजूद।

इस मामले में सार्वजिनक तौर पर मेरे लिये कुछ कहना उचित नहीं होगा क्योंकि मैं स्वतंत्र नहीं हूं और न इस सिलसिले में मेरा नाम घसीटा जाना चाहिए। लेकिन इस मामले में आप पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि मेरी अनुपस्थिति में आप अखिल भारतीय फारवर्ड ब्लॉक के अध्यक्ष हैं और जनता स्वाभाविक तौर पर आपसे पत्र नेतृत्व की अपेक्षा करेगीं इस पत्र को लिखने का एक और उद्देश्य आपको यह आश्वासन देना है कि अगर इस मामले में आप वही करते हैं, जो मैं स्वतंत्र रहने पर करता तो आपको मेरा पूरा समर्थन होगा।

आपका

सुभाष सी. बोस

दो शब्द और तथा मेरा पत्र समाप्त। एम. गांधी ने अक्सर कहा है कि वे ब्रिटिश सरकार को उलझन में नहीं डालना चाहते। क्या यह उपवास उस सरकार को उलझन में नहीं डालेगा? और क्या यह सरकार से अधिक जनता को उलझन में नहीं डालेगा, क्योंकि उपवास के समय वे जेल में नहीं होंगे?

सादर,

एस.सी.बी
सरदार सार्दुल सिंह कविशर
चैम्बरलेन रोड
लाहौर

प्रेषितः अमिय बोस
हवाई डाक द्वारा
प्रेसीडेंसी जेल
कलकत्ता
15.11.40
प्रिय अमिय,

कई महीनों से मैंने आपको पत्र नहीं लिखा है। अपनी गिरफ्तारी के बाद मेरे पास कुछ खास लिखने को था भी नहीं, लेकिन आप जो पत्र और तार अपने घर भेजते रहे हैं, उनसे आपके बारे में नियमित जानकारी मिलती रही हैं। मेरी यही अनवरत प्रार्थना है कि ईश्वर आपको सकुशल रखें।

आज मुझे आपको कुछ खास लिखना हैं—अतः यह पत्र लिख रहा हूं। आपने जुलाई के पहले सप्ताह में, मेरी गिरफ्तारी और बंदी के बारे में मिस्टर सोरेनसेन के पूछे गए प्रश्न पर भारत—संबंधी विदेश मंत्री मिस्टर एमेरी का उत्तर 'दि टाइम्स' में पढ़ा है। उसके बाद विदेशमंत्री एस.ओ.एस. द्वारा यह बताया गया कि मुझे कलकत्ता में हौलवेल स्मारक को हटाने के लिये किए गए सत्याग्रह से उत्पन्न स्थिति के संबंध में हिरासत में लिया गया था। यह किसी भी तरह पूर्ण सत्य नहीं है।

असलियत यह है कि हौलवेल स्मारक को उसके बाद सरकार द्वारा हटा भी लिया गया है। मेरे एक मित्र और मुझे, छोड़कर हौलवेल स्मारक सत्याग्रह के सिलसिले में गिरफ्तार सभी लोगों को रिहा कर दिया गया है। उनकी रिहाई हुए ढाई महीने हो चुके हैं । इस अवधि में मैं बना मुकदमा चलाये भारत रक्षा कानून की धारा 26 के तहत बंदी हूं और उसी कानून की धारा 38 के तहत मुझ पर कुछ महीने पहले दिये गए तीन भाषणों और साप्ताहिक 'फारवर्ड ब्लॉक' के लिए एक लेख के लिये, जो मेरा लिखा नहीं था, दो मजिस्ट्रेटों के सामने मुकदमे चल रहे हैं। आप समझते होंगे कि यह अनोखी प्रक्रिया है। सरकार ने मुझे अब तक इस बात का अस्पष्ट संकेत भी नहीं दिया है कि हौलवैल स्मारक सत्याग्रह के समाप्त हो जाने और मेरे खिलाफ कानूनी कार्यवाही शुरू कर दिये जाने के बाद बिना मुकदमा चलाये बंद क्यों जारी हैं सरकार के इरादे की जांच के लिये सुनवाई मजिस्ट्रेट के सामने जमानत की अर्जियां दी गयीं और सरकारी

प्रवक्ताओं ने इनका विरोध किया–जिससे जाहिर होता है कि कार्यपालिका, कानून की प्रक्रिया में मनमान हस्तक्षेप कर रही है। परसों एक सुनवाई मजिस्ट्रेट ने खुलेआम घोषणा की कि वे जमानत देंगे और उन्होंने ऐसा किया भी–लेकिन उन्होंने साथ ही कहा कि जब तक सरकार धारा 26 के तहत बंदी का आदेश वापस नहीं लेती, जमानत संबंधी उनका आदेश निष्फल रहेगा। मेरी समझ में कोई बात नहीं आती, सिवाय इसके कि मैं प्रतिशोधी नीति का शिकार हूं।

मैं आपसे जो चाहता हूं, वह इस प्रकार है; मैं चाहता हूं कि आप इन तथ्यों (और मेजदादा को जो तथ्य आपके पास भेजने को कह रहा हूं) को इंडियों लीग, भारतीय समझौता ग्रुप, स्वराज और भारतीय राजनीतिक ग्रुप के मित्रों की जानकारी में लाएं ताकि वे संसद और बाहर के हमारे मित्रों को सूचित कर सकें। मैं नही चाहता कि आप इस काम में अपनासमय बरबाद करें या अपनी पढ़ाई से ध्यान बटाएं। आप इस पत्र को टाइप करा के उपर्युक्त संगठनों को भेज सकते हैं और जो भी जरूरी होगा, वे करेंगे। आपका काम वहीं समाप्त होगा है। मैं व्यक्तिगत तौर पर अनेक एम. पी. को जानता हूं–अधिकतर लिबरल और लेबर पार्टियों के – जैसे मिस्टर सोरेनसेन, मिस्टर थर्टल (लैंड्सबरी के दामाद), मिल विलक्निसन, कर्नल वेजवूड, आई. एल. पर्स, मिस्टर वर्नन बार्टलेट, लार्ड सैमुएल, लार्ड स्नेल, लार्ड लिस्टोवेल, लार्ड फैरिगंडन–इसके अलावा, वर्तमान मंत्रिमंडल के लेबर सदस्य। मैं अलग से मिस्टर आर्थर ग्रीनवुड को भी लिख रहा हूं। आपको याद होगा, 1938 में मेरी यात्रा के दौरान कैक्सटन हॉल में मेरा जो सार्वजनिक स्वागत हुआ था, उस समारोह की अध्यक्षता मिस्टर ग्रीनवुड ने की थी। संसद से बाहर जिनकी इसमें दिलचस्पी हो सकती है और जो मेरे व्यक्तित्व को जानते हैं, उनमें लंदन के प्रो. लास्की, सर वाल्टन लेटन, मिस्टर विकहम स्टूड, मिस्टर बेसिल मैथ्यूज और मिस्टर हौरेबिन, कैम्ब्रिज के प्रो. रेड्डेवे और प्रो. फॉय, ऑक्सफोर्ड के मिस्टर बर्टेंड रसेल और प्रो. लिंड्से आदि हैं । जो जरूरी है, वह है उन्हें उपर्युक्त जानकारी उपलब्ध कराना।

मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगा, मैं पत्र यही समाप्त करता हूं। आशा हे कि यह पत्र आपको मिल जाएगा। अगर नहीं भी मिलता है तो भी मुझे भरोसा है कि दूसरे माध्यमों से यह जानकारी इंग्लैंड पहुंच जाएगी। मैं मेजदादा से कह रहा हूं कि आपको मेरे मुकदमे की विस्तृत जानकारी भेज दें, मैंने तो इस पत्र में संक्षिप्त रूपरेखा ही प्रस्तुत की है। इतना ही।

श्रीयुत अमियनाथ बोस

सस्नेह

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

(कैम्ब्रिज, क्वीन्स कॉलेज के)
सुभाष
द्वारा, लॉयड्स बैंक लि.
6 पाल माल,
लंदन एस. डब्ल्यू.

प्रेषितः अर्थुर ग्रीनवुड
हवाई डाक द्वारा
प्रिय मिस्टर ग्रीनवुड,

15.11.40

मुझे पक्का विश्वास है कि आप को यह जानने में दिलचस्पी होगी कि इस देश में भारत रक्षा कानून कैसे चलाया जा रहा है। मैं यहां स्वयं अपने मामले के बारे में चर्चा करूंगा।

पिछले जुलाई महीने में मुझे अचानक भारत रक्षा कानून की धारा 129 के तहत गिरफ्तार किया गया और जेल ले जाया गया। सरकार की ओर से मेरी गिरफ्तारी के कारण के बारे में तब तक कोई सफाई नहीं दी गयी जब तक कि ब्रिटिश संसद (हाउस ऑफ कामन्स) में मिस्टर सोरेनसेन के प्रश्न के उत्तर में भारत संबंधी विदेशमंत्री मिस्टर एमेरी ने यह उत्तर नहीं दिया कि गिरफ्तारी कलकत्ता में हौलवेल स्मारक को ढहाने या हटाने के आंदोलन के संबंध में हुई। उसके बाद, बंगाल के मुख्यमंत्री में बंगाल विधानसभा में घोषणा की कि हौलवेल स्मारक सत्याग्रह ही मेरी रिहाई में आडे आता है।

थोडे ही दिन बाद, बंगाल सरकार को हमारी मांग की तर्कसंगति समझ में आयी और उसने स्मारक को हटाने का आदेश दिया। इसके हटाये जाने के साथ ही हौलवेल स्मारक सत्याग्रह के सिलसिले में जेल में डाले गए सभी लोगों को रिहा कर दिया—सिवाय मेरे और मेरे एक मित्र के। धारा 129 के आदेश को भारत रक्षा कानून की एक अन्य धारा 26 के तहत के आदेश के रूप में बदल दिया गया, जिसमें बिना मुकदमा चलाये मेरी स्थायी बंदी का प्रावधान था। इसके साथ ही, उसी कानून की धारा 38 के तहत, कई महीने पहले दिये गए मेरे तीन भाषणों और एक साप्ताहिक पत्रिका 'फारवर्ड ब्लॉक' जिसका मैं सम्पादक था में छपे बाहर के लेख के लिये, संपादक पर दो मुकदमे चलाये गए। कई महिने पहले प्रकाशित इस लेख के लिये सरकार बिना चेतावनी 500 रूपये की जमानत राशि जब्त कर चुकी थी और हमसे दो हजार रूपये की अतिरिक्त राशि अमा करवा चुकी थी।

पिछले ढाई महिने से इस तरह मैं उस कानून की एक धारा के तहत बन्दी हूं और उसी कानून की दूसरी धारा के तहत दो अदालतों में मुझ पर मुकदमे चलाये जा रहे हैं। आप आसानी से समझ सकते हैं कि ऐसी कार्यवाही कितनी अभूतपूर्व और अनुचित है। इसके सिवाय मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि मैं प्रतिशोधी नीति का शिकार हूं और कि सरकार किसी भी तरह मुझे जेल में रखने पर आमादा है।

सरकार कानून की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने की भी दोषी है। जब सुनवाई मजिस्ट्रेट के सामने मेरी जमानत की अर्जियां पेश की गयीं तो सरकारी प्रवक्ताओं ने दोनों अदालतों में अर्जी का विरोध किया। परसों एक मजिस्ट्रेट ने घोषणा की कि वह जमानत देने जा रहा है, लेकिन आदेश तब क निष्फल रहेगा, जब तक कार्यपालिका धारा 26 के तहत जारी आदेश वापस नहीं लेती है। इस पर गौर किया जाना चाहिए कि भारत रक्षा कानून के संचालन में बंगाल सरकार, भारत सरकार के निर्देशों का पालन नही कर रही है।

यहां इस प्रान्त में भौचक्का करने वाली बातें हो रही हैं। अगर कोई मुसलमान हो तो उनके लिये भारत रक्षा कानून के अलग मायने हैं। गैर मुसलमानों को ही दंडित किया जा रहा है। भारत रक्षा कानून के तहत गिरफ्तार और जेल में बंद अनेक मुसलमानों को अचानक रिहा कर दिया, केवल इस कारण कि उनकी इस्लाम में आस्था थी या वे मुस्लिम लीग के सदस्य थे।

पिछले महीने के लगभग अंत में मैं भारतीय विधान सभा के लिय निर्विरोध चुना गया। संसदीय परम्परा के अनुसार मैंने विधान सभा की बैठकों में उपस्थित होने की छूट मांगी, लेकिन 'निरापदता' की मांग अब तक पूरी नहीं की गयी है। हाल में बर्मा में एक सजायाफ्ता कैदी के मामले में, बर्मा सरकार ने उन्हें उस विधान सभा की बैठकों में उपस्थित होने की अनुमति दी।

मैंने किसी तरह की अतिश्योक्ति का सहार नहीं लिया है और केवल अपनी जानकारी के तथ्यों का उल्लेख किया हैं। उपर्युक्त तथ्यों से किसी के लिये भी इस बात की कल्पना करना कठिन नहीं होना चाहिए कि मुझसे कम महत्वपूर्ण और प्रभावशाली लोगों के मामले में किस प्रकार का अन्याय होता होगा। आखिर इसका इलाज क्या है?

हाल ही में आपको यह सुनकर सदमा पहुंचा होगा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू को भारत रक्षा कानून के अंतर्गत चार वर्ष की जेल की सजा दी गयी है, लेकिन केवल इस प्रान्त में हजारों ऐसे मामले हैं, जहां लोगों को बिना मुकदमा चलाये 1931 से 1938 तक हिरासत में रखा गया है। स्वयं मुझे 1932 से 1937 तक लगातार कैद

और असल में निर्वासन भुगतना पड़ा । फिर पंडित नेहरू के मामले से सबको यह समझने में आसानी होगी कि उनकी जैसी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा वाले नेता के साथ इस तरीके का व्यवहार किया जाता है तो आम राजनीतिक कार्यकर्ता का क्या हश्र होता है।

क्या ऐसी परिस्थितियों में यह कोई आश्चर्य की बात होगी कि मनुष्य होने के नाते हम इस समय की समस्याओं पर आप से आंख नहीं मिला सकते?

मैं उपर्युक्त परेशानियां से छुटकारा पाने की उम्मीद में नहीं लिख रहा हूं। मुझे याद है कि कार्क लार्ड मेयर, टेरेंस मैकस्वीनी का मामला, जो शाही विशेषाधिकार से भी नहीं रिहा हो सके क्योंकि तत्कालीन प्रधानमंत्री लायड लार्ड आड़े आ गए और भारत में इतना असहाय महसूस करते है, से लगता है हम सभी एक विनाशकारी व्यवस्था के पूरी तरह खिलाफ हैं। जब तक यह व्यवस्था नहीं बदलती, व्यक्ति को स्वतंत्रता का जन्मसिद्ध अधिकार केसे मिल सकता है?

ऐसे संकट के समय मैं आपका बहुमूल्य समय केवल इसलिये लेने की जुर्रत कर रहा हूं क्योंकि मुझे लगता है कि चूंकि आप मुझे व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, इसलिये मैं जो कह रहा हूं उस पर आपको भरोसा होगा और आप क्षणभर के लिये स्थिति का दूसरा पहलू भी देख सकेंगे और उसके कारण, आज हमारी जो दुर्दशा है, उसको समझ पाएंगे।

हार्दिक सम्मान के साथ,

भवदीय,
सुभाष सी. बोस

मिस्टर आर्थर ग्रीनवुड, एम. पी.
उप नेता
संसदीय लेबर पार्टी और
मंत्रिमंडल सदस्य,
व्हाइटहॉल,
लंदन, एस. डब्ल्यू

प्रेषित

आर्थर मूर
व्यक्तिगत
प्रेसींडेंसी जेल
कलकत्ता
17.11.40

सुभाष चन्द्र बोस के दस्तावेज-II

प्रिय मिस्टर आर्थर मूर,

यह पत्र अप्रत्याशित स्थान से है। परिस्थितियों ने मुझे आपका अखबार पहले से अधिक नियमित रूप से पढ़ने का मौका दिया है, जबकि (जेल से) बाहर रहने पर मेरे पास बहुत कम फुरसत रहती थी। यह आपसे सिर्फ यह कहने के लिये है कि समकालीन ज्वलंत विषयों पर आपके अनेक लेखों की मैं सराहना करता हूं। आप के उन लेखों में वास्तविकता और विवेचनात्मक क्षमता दिखती है जिनका इन दिनों कभी–कभी दुर्भाग्य से अभाव रहता है। आप जो लिखते हें उनमें उनसे सार्थकता आती है और इसलिये वे तब भी ध्यान आकृष्ट करते हैं जब कोई व्यक्ति किसी खास दृष्टिकोण पर पूरी तरह सहमत नहीं भी हो। एच. जी. वेल्स के प्रति और सरकारी विज्ञप्तियों के प्रति आपका दृष्टिकोण इसके उदाहरण हैं।

एक बार खाने की मेज पर आपने कहा था कि विदेश नीति और अन्तरराष्ट्रीय मामलों पर आपके लेखों की मैं प्रशंसा करता हूं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि अभी हाल ही में आपका यह कहना सही था कि घटनाओं ने आपके दृष्टिकोण को तर्कसंगत सिद्ध किया है और इसलिये आपकी बात सुनी जानी चाहिए लेकिन मुझे संदेह है कि ऐसा होगा।

आशा है कि मध्य पूर्व की हवाई यात्रा आपके लिये सुखद ही होगी।

भवनिष्ठ

एस. सी. बोस

मिस्टर आर्थर मूर
द्वारा, दि स्टेट्समैन

चौरंगी स्वक्वायर
कलकत्ता
प्रेषित मुकुन्दलाल सरकार
सेंसर किया गया और स्वीकृत
अस्पष्ट
कृते डी. सी. एस. बी.
स्वीकृत
अस्पष्ट
लेफ्टि. कर्नल. आई. एम. एस.
सुपरिटेंडेंट,
प्रेसीडेंसी जेल
पूरी तरह व्यक्तिगत

प्रेसीडेंसी जेल
21.11.40

प्रिय मुकुन्द बाबू,

आपका 11 नवम्बर का पत्र पाकर खुशी हुई जो मुझे परसों मिला।

आशा है कि अब आप ठीक होंगे।

आपने जब जेल में मुझसे भेंट की, तब मैं ठीक था। उसके बाद से मैं साइटिका या उस जैसी बीमारी से ग्रस्त हूं। अब तक यह मामूली है—और मैं इसे रोकने का भरसक प्रयास कर रहा हूं। मुझे अब भी पहले के बड़े दौरों की याद है और नहीं चाहता हूं कि वैसा अनुभव फिर हो।

मैं जेल से बाहर के अपने मित्रों को कैसे संदेश भेज सकता हूं जबकि मैं आजाद नहीं हूं?

मुझे सरदार सार्दुल सिंह का पत्र मिला और आशा है कि उन्हें भी मेरा पत्र मिला होगा। मुझे अधिक खुशी होती अगर गांधीजी को भेजे तार में उन्होंने मेरा नाम न दिया होता। किसी के बारे में गलतफहमी हो सकती है अगर वह पूरी तरह अपनी बात नहीं समझा पाए, जो जेल से कर पाना बेहद मुश्किल है।

बड़ी हिचकिचाहट के बाद मैं आपको कुछ सलाह दे रहा हूं। यह केवल आपके लिये है और इसे गोपनीय समझा जाना चाहिए और किसी को बताने के लिये नहीं है। अगर मैं आजाद रहता, तो मैं सामान्य तौर पर निर्देश जारी कर सकता िा। लेकिन यहां रहते हुए मैं ऐसा नहीं कर सकता—क्योंकि इससे गलतफहमी पैदा हो सकती है। हम वर्धा के आदेश का पालन नहीं करते इसलिये इसका कोई महत्व नहीं है कि गांधीजी क्या करते हैं, आप पर आंदोलन में कूद पड़ने और गिरफ्तारी देने का कोई दायित्व नहीं है। आप पहले की तरह ही रहिये। अतीत में हम ने ही मेहनत की और कष्ट झेला, जबकि दूसरों ने लाभ उठाया लेकिन यह सब कितने दिन चेलगा?

इतना ही।

हार्दिक अभिवादन के साथ,

भवनिष्ठ
सुभाष सी. बोस
श्रीयुत मुकुन्दलाल सरकार,
37, कालेज—स्ट्रीट,
कलकत्ता